मुदा करात्तमोदकं सदा विमुक्तिसाधकं, कलाधरावतंसकं विलासिलोकरञ्जकम्। अनायकैकनायकं विनाशितेभदैत्यकं, नताशुभाशुनाशकं नमामि तं विनायकम्॥

राजा – सूर्य देव

वर्षलग्नम् इष्ट २५।२०

६ के. | ४ | ७ | ५ | ३मं. | ८ | २ गु. | ९ | ११ श. | १ | १०ं. | १२ बु.शु.रा.सू.चं.

प्रणम्य शिरसा देवं गौरीपुत्रं विनायकम् ।
भक्तावासं स्मरेन्नित्यमायुष्कामार्थसिद्धये ॥
प्रथमं वक्रतुण्डं च एकदन्तं द्वितीयकम् ।
तृतीयं कृष्णपिङ्गाक्षं गजवक्त्रं चतुर्थकम् ॥
लम्बोदरं पञ्चमं च षष्ठं विकटमेव च ।
सप्तमं विघ्नराजेन्द्रं धूम्रवर्णं तथाष्टमम् ॥
नवमं भालचन्द्रं च दशमं तु विनायकम् ।
एकादशं गणपतिं द्वादशं तु गजाननम् ॥

श्री गणेशाय नमः



द्वादशैतानि नामानि त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः ।
न च विघ्नभयं तस्य सर्वसिद्धिकरं परम् ॥
विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम् ।
पुत्रार्थी लभते पुत्रान् मोक्षार्थी लभते गतिम् ॥
जपेद् गणपतिस्तोत्रं षड्भिर्मासैः फलं लभेत् ।
सवत्सरेण सिद्धिं च लभते नात्र संशयः ॥
अष्टभ्यो ब्राह्मणेभ्यश्च लिखित्वा यः समर्पयेत् ।
तस्य विद्या भवेत् सर्वा गणेशस्य प्रसादतः ॥

मंत्री– सूर्य देव

जगत् लग्नम् इष्ट ५७।०९

१२ बु.शु.श.रा. | १० | १ सू. | ११ श | ९ | २ गु. | ८ | ३ | ५ | ७ चं. | ४ मं. | ६ के.

॥ विवाह पंच शलाका चक्रम्॥

कृ. रो. मृ. आ. पु. पु. श्ले.
भ. अ. रे. उ. पू. श. ध.
म. पू. उ. ह. चि. स्वा. वि.
श्र. अ. उ. पू. मू. ज्ये. अनु.

पुष्पाञ्जलि पञ्चाङ्गम्

वर्ष के प्रथम दिन से -सिद्धार्थी संज्ञक संवत्सर। तदोपरान्त दिनांक ११ मार्च २०२६ से रौद्र प्रारंभ।

॥ अन्येषु सप्त शलाका चक्रम्॥

कृ. रो. मृ. आ. पु. पु. श्ले.
भ. अ. रे. उ. पू. श. ध.
म. पू. उ. ह. चि. स्वा. वि.
श्र. अ. उ. पू. मू. ज्ये. अनु.

युधिष्ठिर संवत् ५१६४ | विक्रम् संवत् २०८२ | शालिवाहन शकः १९४७

सृष्टि संवत् १९५५८८५१२७ । श्री कृष्ण जन्म संवत् ५२३१। कलियुग संवत् – ५१२७ ।
आद्य शंकराचार्य जन्म संवत् २५३२। वीर निर्वाण सं २५५१–५२। बंगला सन् १४३१–३२
अग्रेजी दिनांक ३० मार्च २०२५ से १९ मार्च २०२६ तक

॥ दिन का चौघड़िया ॥

वारा:	रवि	चंद्र	मंग.	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
६–७.३०	उद्धेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
७.३०–९	चर	काल	उद्धेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
९–१०.३०	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्धेग	अमृत	रोग
१०.३०–१२	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्धेग
१२–१.३०	काल	उद्धेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
१.३०–३	शुभ	चर	काल	उद्धेग	अमृत	रोग	लाभ
३–४.३०	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्धेग	अमृत
४.३०–६	उद्धेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल

विंशोत्तरी मतानुसारेण आय–व्यय चक्रम्

राशि	मेष	वृष	मिथु	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि	धनु	मकर	कुंभ	मीन
आय	१४	८	१४	८	११	१४	८	१४	११	५	५	११
व्यय	११	५	२	१४	११	२	५	११	२	५	५	२

अष्टोत्तरी मतानुसारेण आय–व्यय चक्रम्

राशि	मेष	वृष	मिथु	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि	धनु	मकर	कुंभ	मीन
आय	२	११	१४	८	११	१४	११	२	५	८	८	५
व्यय	१४	५	२	२	११	२	५	१४	५	१४	१४	५

॥ रात का चौघड़िया ॥

वारा:	रवि	चंद्र	मंग.	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
६–७.३०	शुभ	चर	काल	उद्धेग	अमृत	रोग	लाभ
७.३०–९	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्धेग
९–१०.३०	चर	काल	उद्धेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
१०.३०–१२	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्धेग	अमृत
१२–१.३०	काल	उद्धेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
१.३०–३	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्धेग	अमृत	रोग
३–४.३०	उद्धेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
४.३०–६	शुभ	चर	काल	उद्धेग	अमृत	रोग	लाभ

लाभ–खर्च जानने की प्रथम रीति – अपनी राशी के ऊपर लिखे लाभ खर्च दोनों अंकों के योग में से १ घटाकर ८ का भाग देने पर शेष १ में लाभ, २ में सुख, ३ में क्लेश, ४ में कष्ट, ५ में लोकोपवाद, ६ में सम्मान, ७ में विजय एवं ० में हानि समझना चाहिये।

लाभ–खर्च जानने की द्वितीय रीति– राशि के सामने लिखे लाभ अंक को विंशोत्तरी एवं अष्टोत्तरी दोनों से लेकर योग करें। इसी प्रकार खर्च का भी योग करें। इन योग फलों में जो अधिक हो तदानुसार वर्ष में आय या व्यय समझना चाहिये।

अधिकतम् मूल्य 142/ रु

भोपाल नगरस्य अक्षांस २३।१६, रेखांश ७७।२५, पलभा ५।१२।। दृश्य ग्रह गणितेन निर्मित धर्म शास्त्रोक्त पंचांगम्

श्री गणेशाय नमः

आशीर्वाद एवं मार्गदर्शक

पं. श्री जगदीश प्रसाद मिश्र
करैरा जिला शिवपुरी (म. प्र.)

महर्षिपाणिनिसंस्कृत-एवं-वैदिकविश्वविद्यालयः
(संस्कृतशिक्षणप्रशिक्षणज्ञानविज्ञानसंवर्द्धनकेन्द्रम्)
देवासमार्गः, उज्जयिनी (मध्यप्रदेशः) 456010

आज़ादी का अमृत महोत्सव

राष्ट्रियशोधसङ्गोष्ठी
भारतीय कालगणना
2079 वैक्रमाब्दः चैत्रशुक्ल एकादशी, मङ्गलवासरः, दिनाङ्कः 12 अप्रैल 2022

प्रमाणपत्रम्

प्रमाणीक्रियते यत्श्रीमता/श्रीमत्या राजेश कुमार मिश्र (पुष्पांजलि पञ्चाङ्गम्) महाभागेन/महाभागया महर्षिपाणिनिसंस्कृतवैदिकविश्वविद्यालस्य संस्कृतशिक्षणप्रशिक्षणज्ञानविज्ञानसम्वर्द्धनकेन्द्रम् इत्यस्य तत्त्वावधाने भारतीयकाल गणना इति विषयाधारिता एकदिवसीया राष्ट्रियशोधसङ्गोष्ठी आयोजिता।

अस्यां शोध सगोष्ठ्यां 'सूर्य सिद्धान्त, आर्य सिद्धान्त एवं आधुनिक खगोल विज्ञान महायुग कालगणना में भेद एवं समाधान' इति विषयमधिकृत्य विशिष्ट व्याख्यानं/शोधपत्रवाचनमकरोत इति प्रमाणयति।

आचार्यः विजयकुमारः सी.जी.
कुलपतिः

डॉ. मनमोहन उपाध्यायः
निदेशकः

पंचांगकर्ता – आचार्य राजेश मिश्र
संपर्क सूत्र – 9685901030
प्रकाशक – श्री मती मंजू मिश्र
प्रकाशन – पुष्पांजलि वेदांग पीठ
गजानन धाम, मणि विहार के सामने,
चिंतामन गणेश रोड, उज्जैन

करवद्ध निवेदन

नई पीढ़ी को भारतीय महिनों के नाम याद रहें, वे भारतीय संस्कृति से जुड़े रहें, यह हम सभी का परम कर्तब्य है। अतः इस प्रकार का कोई भी कलेंडर हर घर में होना चाहिये।

श्री गणेशाय नमः

भारतीय सनातन पद्धति के अनुरूप भारत में प्रकाशित प्रथम कैलेंडर

पुष्पांजलि सनातन पंचांग

संस्कारी संतान – परिवार का गौरव। ॥ संस्कारी नागरिक – राष्ट्र का गौरव

शालिवाहन शकः १९४६
कलियुग संवत् ५१२६, वीर निर्वाण २५५०
वंगला सन् १४३०

चैत्र शुक्ल पक्ष
विक्रम संवत् २०८१

अप्रैल 2024

श्रीसूर्य उत्तरायन वसंत ऋतुः

दिनांक 9 अप्रैल से 23 अप्रैल सन् 2024

सूर्य मीन में, पंचमी से मेष में

संवत् वर्ष फल

॥ अथ संवत्सरावली ॥

श्री गणेशाय नमः। संवत्सरावली महात्म्य। जो मनुष्य चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को संवत्सर का फल सुनता है वह धनाड्य, निरोगी, राजकुल में विजयी, बुद्धिमान और सुखी होता है। इस दिन घर को स्वच्छ कर ध्वजा बंधन कर पंचांग स्थित श्री गणेश जी का पूजन कर रात्रि में मंगल गीत आयोजन करना चाहिये।

काल नाम संवत्सर फल– काल वर्ष में सब मनुष्य सुखी रहेंगे, अन्न अधिक हो किन्तु रोग फैले। **सिद्धार्थ नाम संवत्सर फल** –सिद्धार्थ वर्ष में प्रजा ज्ञान वैराग्य से युक्त हो। सम्पूर्ण पृथ्वी पर प्रसन्नता रहे और जल अन्न प्रचुर हो। **राजा भौम फल**– भीषण अग्निकांड, जनहानि, चोर भय, रोग व्याधि और कम वर्षा का योग है। **मंत्री शनि फलम्** – शासक वर्ग में नम्रता न रहने से वे जनता को दुःखदाई रहेंगे। कम वर्षा होने से मनुष्य दुःखी रहेंगे। **सस्येश भौम फलम्**– मंगल सस्येश होने से पालतू जानवरों में रोग होने की संभावना है। जल नहीं वर्षे एवं खेती नष्ट होने की संभावना वनती है। **दुर्गेश शुक्र फलम्**– शुक्र दुर्गेश होने से शासकों को सुख योग है। व्यापार में लाभ एवं वनोपज पर्याप्त होगी। **धनेश चंद्र फलम्**– चन्द्रमा धनेश होने से क्रय विक्रय में लाभ होता है। वस्त्र, सुगंध तेल इत्यादि में लाभ होता है। शासकों को सुख मिलता है। **रसेश गुरु फलम्**– गुरु रसेश होने से सब सुखी रहेंगे। धास पर्याप्त होगी। शासकों को नये–नये वाहन सुख प्राप्त होंगे। **धान्येश रवि फलम्**–धान्येश सूर्य होने से रबी फसल कमजोर रहने की संभावना है। इससे अनाज मंहगा होगा। बुखार फैलने की संभावना है। **नीरसेश भौम फलम्** – मंगल नीरसेश होने से मूंगा, लाल वस्त्र, लाल चंदन एवं तांबा इत्यादि लाल रंग की वस्तुयें मंहगी होने की संभावना है। **फलेश शुक्र फलम**– शुक्र फलेश होने से पृथ्वी पर खूब घास–फूस पैदा होगी। फल–फूल पैदा होंगे। शासकों को सुख भोगने को मिलेगा। ब्राम्हण वेद परायण होंगे। **मेघेश शुक्र फलम**– शुक्र मेघेश होने से अच्छी वर्षा का योग होता है। जनता शासकों से सुखी रहती है। सब धनी हो जाते हैं। **वरूण नाम मेघस्य फलम्** – वरूण मेघ होने से ब्राम्हणों का आदर होगा। जनता खुश रहेगी तथा पर्याप्त वर्षा होगी। **रोहिणी वास फलम्**– तट पर रोहिणी होने से शुभ वर्षा होगी और अन्न – धन की वृद्धि होगी॥

इस पंचांग का उद्देश्य

छात्रों एवं युवाओं को आधुनिक शिक्षा के साथ–साथ भारतीय सनातन ज्ञान परंपरा से परिचित कराना है। अतः प्रत्येक सनातन परिवार में इस प्रकार के तिथि कैलेंडर को रखना हम सभी का कर्तव्य है।

चैत्र शुक्ल पक्ष

रवि	नूतन वर्ष एवं नवरात्र के पावन पर्व पर हार्दिक शुभ कामनाएें	14 अप्रैल 2024 षष्ठी 11.50 दिन तक श्री स्कन्द षष्ठी आर्द्रा 1.39 रात तक	21 अप्रैल 2024 त्रयोदशी 1.13 रात तक प्रदोष व्रत उ फा 5.08 शाम तक
सोम		15 अप्रैल 2024 सप्तमी 12.16 दिन तक कमला सप्तमी जैन पुनर्वसु 3.07 रात तक	22 अप्रैल 2024 चतुर्दशी 3.29 रात तक हस्त 8.00 रात तक
मंगल	9 अप्रैल 2024 प्रतिपदा चैत्र नवरात्र प्रारम्भ ज्योतिष दिवस रेवती 7.32 प्रातः तक अश्विनी 5.09 रातअंत तक सृष्टि उत्पत्ति दिवस 8.36 रात तक	16 अप्रैल 2024 अष्टमी 1.27 दिन तक दुर्गा अष्टमी व्रत पुष्य 5.15 रात तक	23 अप्रैल 2024 पूर्णिमा 5.22 रात तक हनुमान जयंती चित्रा 10.33 रात तक
बुध	10 अप्रैल 2024 द्वितीया 5.40 शाम तक संत झूलेलाल जयंती भरणी 3.10 रात तक	17 अप्रैल 2024 नवमी 3.15 दिन तक श्रीराम नवमी आश्लेषा दिनरात	पंचक – पिछली तिथि से चल रहा पंचक योग 9 अप्रैल को समाप्त 7 :32 प्रातः।
गुरु	11 अप्रैल 2024 तृतीया 3.12 दिन तक गणगौर व्रत कृतिका 1.44 रात तक	18 अप्रैल 2024 दशमी 5.32 शाम तक आश्लेषा प्रातः 7.55 तक	मूल – 9 अप्रैल को मूल दिनरात। 16 अप्रैल को मूल 5:15 रात से रातअंत। 17 अप्रैल को मूल दिनरात। 18 अप्रैल को मूल दिनरात। 19 अप्रैल को मूल सू.उ. से 10:55 दिन तक।
शुक्र	12 अप्रैल2024 चतुर्थी 1.20 दिन तक विनायकी 4 व्रत रोहिणी 12.58 रात तक	19 अप्रैल 2024 एकादशी 8.05 रात तक कामदा एकादशी व्रत मघा 10.55 दिन तक	
शनि	13 अप्रैल2024 पंचमी 12.12 दिन तक मृगशिर 12.55 रात तक	20 अप्रैल 2024 द्वादशी 10.42 रात तक पू.फा. दिन 2.03 तक मदन द्वादशी	प्रयागराज में कुंभ मेला जनवरी 2025 में लगेगा

सूर्योदय-सूर्यास्त 9 अप्रैल को 6:15 - 6:42, 13 अप्रैल को 6:11 - 6:43, 17 अप्रैल को 6:8 - 6:45, 21 अप्रैल को 6:4 - 6:46

शुभ चौघड़िया – अमृत, लाभ, शुभ, चर।। अशुभ चौघड़िया – उद्वेग, रोग, काल।

चंद्र राशि स्थिति

9 अप्रैल को मीन 7:32 प्रातः तक।
10 अप्रैल को मेष का दिनरात।
11 अप्रैल को मेष 8:44 दिन तक।
12 अप्रैल को वृष का दिनरात।
13 अप्रैल को वृष 12:51 दिन तक।
14 अप्रैल को मिथुन का दिनरात।
15 अप्रैल को मिथुन 8:43 रात. तक।
16 अप्रैल को कर्क का दिनरात।
17 अप्रैल को कर्क का दिनरात।
18 अप्रैल को कर्क 7:55 प्रातः तक।
19 अप्रैल को सिंह का दिनरात।
20 अप्रैल को सिंह 8:51 रात. तक।
21 अप्रैल को कन्या का दिनरात।
22 अप्रैल को कन्या का दिनरात।
23 अप्रैल को कन्या 9:20 दिन तक।

शुभ योग

9 अप्रैल को अमृतसिद्धियोग प्रातः 7:32 वजे से 4:09 रात तक
10 अप्रैल को रवियोग रात्रि 3:10 से रात्रिअंत। सर्वार्थसिद्धी रात्रि 3:10 वजे से रातअंत।
11 अप्रैल को रवियोग सू. उ. से रात्रि 1:44 तक।
12 अप्रैल को रवियोग रात्रि 12:58 से रात्रिअंत।
13 अप्रैल को रवियोग सू. उ. से रात्रि 9:02तक, पुनः रात्रि 12:55 से रात्रिअंत।
14 अप्रैल को रवियोग सू. उ. से रात्रि 1:39 तक।
15 अप्रैल को सर्वार्थसिद्धी रात्रि 3:07 वजे से रातअंत।
16 अप्रैल को रवियोग रात्रि 5:15 से रात्रिअंत। सर्वार्थसिद्धी रात्रि 5:15 वजे से रातअंत।
17 अप्रैल को रवियोग सू. उ. से रात्रि 7:54 तक।
18 अप्रैल को रवियोग सू. उ. सेरात्रिअंत।
19 अप्रैल को रवियोग सू. उ. से दिन 10:55 तक। सिद्धयोग दिन 10:55 वजे से रातअंत।
20 अप्रैल को त्रिपुष्कर योग दिन 2।03 से रात्रि 10:42 तक
21 अप्रैल को रवियोग सायं 5:08 से रात्रिअंत। सर्वार्थसिद्धी सायं 5:08पर्यन्त। अमृतसिद्धियोग सायं 5:08 वजे से रातअंत।
22 अप्रैल को रवियोग सू. उ. से रात्रि 8:00तक।

वर्ष में गुरु–शुक्र अस्त का समय

गुरु अस्त – 5 मई से 2 जून 2024 तक
शुक्र अस्त – 2 मई से 18 जून 2024 तक
पुनः शुक्रास्त 18 मार्च से 23 मार्च 2025 तक

मेष संक्रांति फल – ता. 13 को 9.02 रात में मेष संक्रांति प्रारंभ होगी। भगवान सूर्य मेष राशि में प्रवेश करेंगे। मंदाकिनी संज्ञक संक्रांति वराह वाहन पर सवार वृष उपवाहन कुमारी अवस्था की है। संक्रांति के प्रभाव से सभी खाद्यान्नों में महंगाई होगी। यह संक्रांति सैनिक वर्ग को सुखदायी है, साथ ही राक्षासी संज्ञक होने से दुष्ट वर्ग को सुखकारी है।

दिन का चौघड़िया

समय	रवि	चंद्र	मंग.	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
६–७.३०	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
७.३०–९	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
९–१०.३०	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
१०.३०–१२	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
१२–१.३०	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
१.३०–३	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
३–४.३०	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
४.३०–६	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल

रात का चौघड़िया

वाराः	रवि	चंद्र	मंग.	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
६–७.३०	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
७.३०–९	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
९–१०.३०	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
१०.३०–१२	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
१२–१.३०	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
१.३०–३	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
३–४.३०	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
४.३०–६	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

मास फल – इस माह मीन राशि में चतुर्ग्रही योग का प्रभाव रहेगा। एक राशि में 4–5 ग्रहों का जमावड़ा शुभ नहीं होता। सूर्य, चंद्र, राहु–शुक्र का ग्रहण दोष एवं मंगल शनि की युति का प्रभाव अशांति कारक है। गुरु बुध की युति धार्मिक उन्माद बढ़ाएगी। राजनेताओं के आरोप–प्रत्यारोप से सामाजिकता पर प्रतिकूल असर पड़ेगा। शेयर धातु एवं खाद्यान्नों के प्रभाव सामान्य रहेंगे। प्राकृतिक प्रकोप एवं गर्मी के प्रकोप का प्रभाव परिलक्षित होगा।

वार दिशा शूल

वार के सामने लिखी एवं दाईं दिशा में दिशाशूल होता है। परन्तु पीछे एवं वायें यात्रा शुभ होती है।

रवि	पश्चिम
चंद्र	पूर्व एवं अग्निकोण
मंगल	उत्तर एवं वायव्य
बुध	उत्तर एवं ईशान
गुरु	दक्षिण
शुक्र	पश्चिम एवं नैऋत्य
शनि	पूर्व एवं ईशान

नूतन संवत्सर के दिन पंचांग पूजन

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को प्रातः नित्यकर्म से निवृत्त होकर भवन पर ध्वजा बंधन कर, मुख्य द्वार पर स्वस्तिक बनाकर पंचांग स्थित श्री गणेश, रिद्धि–सिद्धि, शुभ–लाभ एवं पंचांग का पूजन करना चाहिये। भगवान की कृपा से वर्ष भर में आने वाली समस्याओं के शुभ समाधान प्राप्त होंगे।

नवरात्र प्रतिपदा के दिन घट स्थापन मुहूर्त्त

विष्णुधर्म के अनुसार चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को सूर्योदय से चार घंटा के बीच घट स्थापना करना चाहिये। यदि उस समय वैधृति योग या चित्रा नक्षत्र हो तो अभिजित् काल (मध्यान्ह) में घट स्थापन शुभ होता है। इस वर्ष वैधृति योग होने से दोपहर में 11.48 से 12.36 के बीच शुभ मुहूर्त्त है।

वार दोहद

यदि दिशाशूल के दिन यात्रा आवस्यक हो तो नीचे लिखे पदार्थ खा कर यात्रा शुभ होती है।

रवि	पान या आम
चंद्र	खीर, दर्पण देखें
मंगल	गुड़ या कांजी
बुध	धनियां या दही
गुरु	जीरा या दही
शुक्र	दही या दूध
शनि	अदरक,तिल–भात

पंचांगकर्ता– पं. जगदीश प्रसाद मिश्र–आचार्य राजेश मिश्र
प्रकाशन – पुष्पांजलि वेदांग पीठ
१३३, मास्टर्स रेजीडेंसी, रोहित नगर,बावड़िया कला, भोपाल। संपर्क – 9685901030
Email - panchang.pushpanjali@gmail.com

मूल्य
छात्रों को भारतीय ज्ञान परंपरा से परिचित रखने हेतु काल गणना (पंचांग) को अधिक से अधिक परिवारों तक इस पी.डी.एफ. को फारवर्ड करने के लिये आपका अमूल्य सहयोग.

ग्रह राशि परिवर्तन

श्री सूर्य देव

१३/०४/२०२५	मेषे रवि रात्रि ३:१४ समये।
१४/०५/२०२५	वृषे रवि रात्रि १२:०४ समये।
१५/०६/२०२५	मिथुने रवि प्रातः ६:३९ समये।
१६/०७/२०२५	कर्के रवि सायं ५:३० समये।
१६/०८/२०२५	सिंहे रवि रात्रि १:५४ समये।
१६/०९/२०२५	कन्यायां रवि रात्रि १:५१ समये।
१७/१०/२०२५	तुलायां रवि दिन १:४९ समये।
१६/११/२०२५	वृश्चिके रवि दिन १:३८ समये।
१५/१२/२०२५	धनुषे रवि रात्रि ४:१९ समये।
१४/०१/२०२६	मकरे रवि दिन ३:०५ समये।
१२/०२/२०२६	कुंभे रवि रात्रि ४:०५ समये।
१४/०३/२०२६	मीने रवि रात्रि १२:५७ समये।

श्री गुरुदेव

वर्ष प्रारंभ में वृषभ राशि में

१०–अप्रै	मृगशिरायां गुरु सायं ५:४१
१४–मई	गुरु मिथुने रात्रि ९:२१
१०–जून	गुरु अस्त पश्चिमेः सा १९:४८
१३–जून	आर्द्रायां गुरु रात्रि १०:१४
७–जुला	गुरु उदय पूर्वेः प्रातः ५:०३
१२–अग	पुनर्वसे गुरु रात्रि ३:४८
१८–अक्टू	गुरु कर्के सायं ५:१८ समये।
११–नव	गुरुवक्री ४:००।
५–दिस	गुरु मिथुने रात्रि ७:०२
१०–मार्च	गुरुमार्गी १०:२१।

श्री शनि देव

वर्ष प्रारंभ में मीन राशि में संचरण

०५ अप्रै	शनि उदय पूर्वेः प्रातः ५:१६
२८ अप्रै	उत्तरभाद्रपदे शनि प्रातः ७:४९
१२ जुला	वक्री शनि रात्रि ५:१६ समये
०३ अक्टू	पूर्वभाद्रपदे शनि दिन ४:३९
२७ नव	मार्गी शनि रात्रि ५:३३ समये।
२० जन	उत्तरभाद्रपदे शनि दिन ८:२७
१० मार्च	शनि अस्त पश्चिमेः सायं १९:२०

श्री भौम देव

०२ अप्रै	कर्के भौमः रात्रि १२:४२
०६ जून	सिंहे च भौमः रात्रि १:४७
२८ जुला	कन्यायां भौमः रात्रि ७:३४
१३ सित	तुलायां भौमः रात्रि ८:५८
२७ अक्टू	वृश्चिके भौमः दिन ३:२४
०७ दिस	धनुषे च भौमः रात्रि ८:०३
१५ जन	मकरे भौमः रात्रि ४:२२
२३ फर	कुंभे भौमः दिन ११:५३

श्री शुक्र उदयास्त

वर्ष प्रारंभ में उदय

13 / 12 / 2025 शुक्र अस्त
01 / 02 / 2026 शुक्र उदय

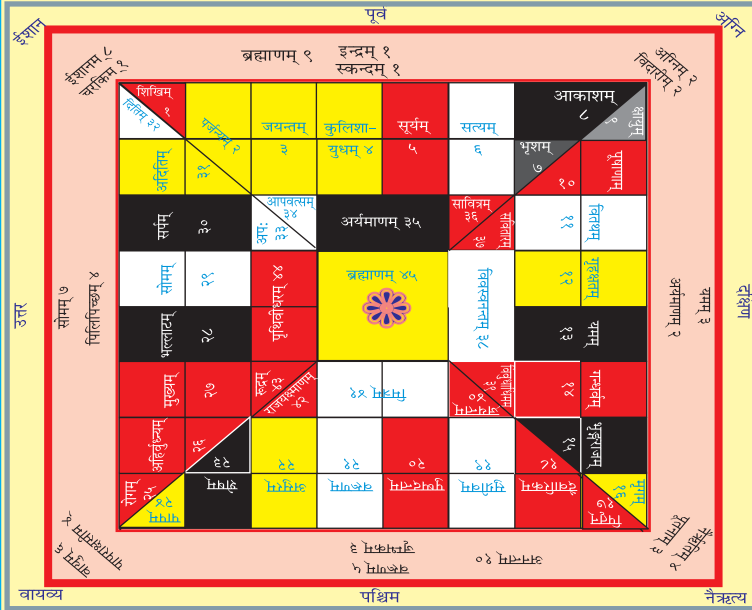
श्री राहु देव – वर्ष प्रारंभ मीन में, १८ मई २०२५ से कुंभ में।

श्री केतु देव – वर्ष कन्या में, १८ मई २०२५ से सिंह में।

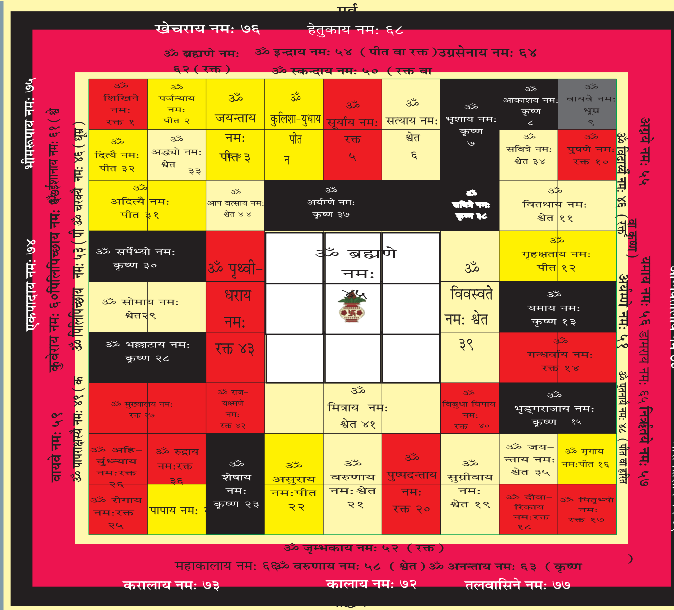
भारत एक विशाल देश है, अतः सुदूर अक्षांशों के स्थानों में ग्रहों के उदयास्त काल में तीन–चार दिन तक का अंतर होता है। अतः विद्वानों को चाहिये कि अपने निकटतम् स्थान के पंचांग से निर्णय करें।

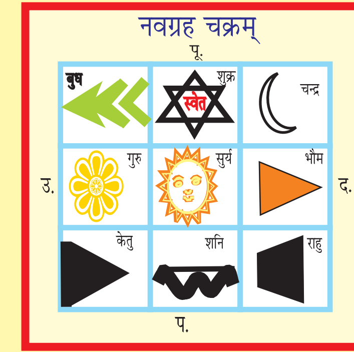
यूट्यूब चैनल-Acharya Rajesh Mishra में प्ले लिस्ट में वास्तु कल्प के वीडिओ का अवलोकन कर कुशल वास्तु विद् वन सकते हैं।

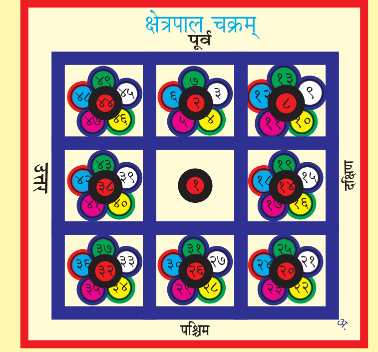
चतु:षष्टिपदं वास्तुमण्डलचक्रम्



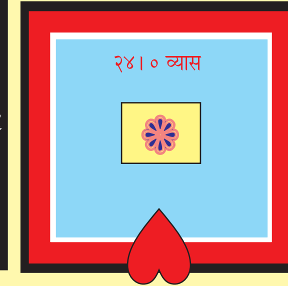
गृह वास्तु चक्रम्



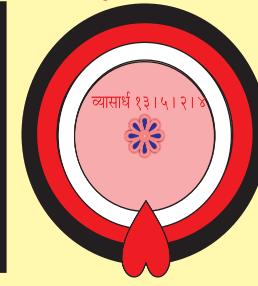




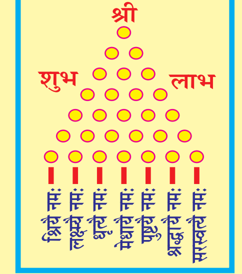
चतुरस्त्रकुण्डस्वरूपम्



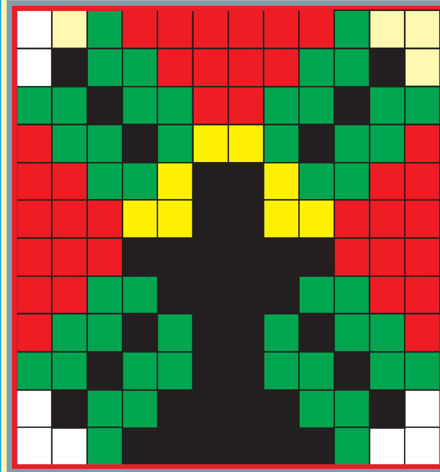
वृत्तकुण्डस्वरूपम्



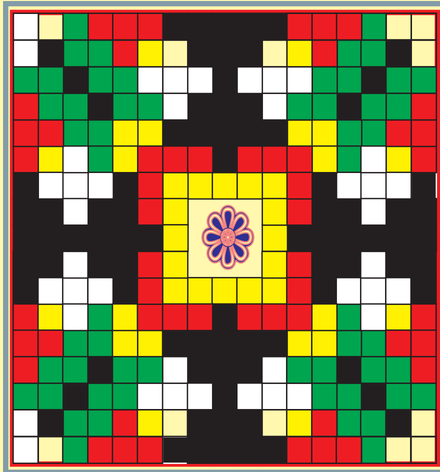
वसोर्द्धारा चक्रम्



एकलिङ्गतोभद्र चक्रम्



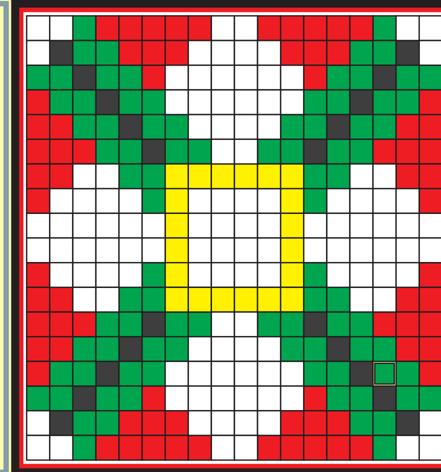
चतुर्लिङ्गतोभद्र चक्रम्



षोडशमातृका चक्रम्



सर्वतोभद्र चक्रम्



चौसठयोगिनी चक्रम्



पुरुषसूक्तम्

ॐ सहस्त्रशीर्षा पुरु षः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात्।
स भूमि ँ सर्वत स्पृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥ १ ॥
पुरुष ऐवेद ँ सर्व यद्भूतं यच्च भाव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति॥ २ ॥
एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्च पूरुषः।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥ ३ ॥
त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरूषः पादोऽस्येहाभवत् पुनः।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि ॥ ४ ॥
ततो विराडजायत विराजो अधि पूरुषः।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः ॥ ५ ॥
तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्।
पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये ॥ ६ ॥
तस्माद्यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दा ँ सि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत॥ ७ ॥
तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्मज्जाता अजावयः ॥ ८ ॥
तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः।
तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये ॥ ९ ॥
यत्पुरूषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखं किमस्यासीत् किं बाहू किमूरू पादा उच्येते ॥ १० ॥
ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्‌बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां ँ शूद्रो अजायत ॥ ११ ॥
चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत ॥ १२ ॥
नाभ्या आसीदन्तरिक्ष ँ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२ अकल्पयन् ॥ १३ ॥
यत्पुरूषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः ॥ १४ ॥
सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबघ्नन् पुरुषं पशुम् ॥ १५ ॥
यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥१६ ॥

श्रीसूक्तम्

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्त्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह॥ १ ॥
तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥ २ ॥
अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम्।
श्रियं देवीमुप ह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ॥ ३ ॥
कां सोस्मितां हिरण्यप्रकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तांतर्पयन्तीम्।
पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोप ह्वये श्रियम् ॥ ४ ॥
चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।
तां पद्मनीमीं शरणम् प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे॥ ५ ॥
आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसानुदन्तु मायांतरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः॥६ ॥
उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतोसु राष्ट्रेस्मिन्कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥ ७ ॥
क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे ग्रहात् ॥ ८ ॥
गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ ९ ॥
मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः॥ १० ॥
कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥ ११ ॥
आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे ग्रहे।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥ १२ ॥
आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह ॥ १३ ॥
आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह ॥ १४ ॥
ताम आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम्॥ १५ ॥
यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्।
सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् ॥ १६ ॥

करवद्ध निवेदन

नई पीढ़ी को भारतीय महिनों के नाम याद रहें, वे भारतीय संस्कृति से जुड़े रहें, यह हम सभी का परम कर्तब्य है। अतः इस प्रकार का कोई भी कलेंडर हर घर में होना चाहिये।

श्री गणेशाय नमः

पुष्पांजलि सनातन पंचांग

संस्कारी संतान - परिवार का गौरव। 卐। संस्कारी नागरिक - राष्ट्र का गौरव

शालिवाहन शकः १९४६
कलियुग संवत् ५१२६, वीर निर्वाण २५५०
वंगला सन् १४३०

वैशाख

विक्रम संवत् २०८१

अप्रैल-मई 2024

सूर्य उत्तरायन ग्रीष्म ऋतुः | दिनांक 24 अप्रैल से 23 मई सन् 2024 | सूर्य मेष में, सप्तमी से वृषभ में

कृष्ण पक्ष				शुक्ल पक्ष		
सूर्योदय-सूर्यास्त 25 अप्रैल को 6:1 - 6:48 29 अप्रैल को 5:58 - 6:50 3 मई को 5:56 - 6:52 7 मई को 5:53 - 6:53	28 अप्रैल 2024 चतुर्थी 8:25 दिन तक। मूल 4:53 रात तक	5 मई 2024 द्वादशी 5:44 सायं तक प्रदोष व्रतं। सेन जयंती उत्तरभाद्रपद 7:58 रात तक	रवि	मूल 14 मई को मूल 1:10 दिन से रातअंत। 15 मई को मूल दिनरात। 16 मई को मूल सू.उ. से 6:14 सायं. तक। 24 मई को मूल 10:13 दिन से रातअंत। पंचक इस पक्ष में नहीं है।	12 मई 2024 पंचमी 2:11 रात्रि तक श्री आदिशंकराचार्य जयंती आर्द्रा 10:33 दिन तक।	19 मई 2024 एकादशी 1:49 दिन तक। मोहिनी एकादशी व्रत हस्त 3:16 रात तक
पंचक 2 मई को पंचक प्रारंभ 2:38 दिन। 3 मई को पंचक दिनरात। 4 मई को पंचक दिनरात। 5 मई को पंचक दिनरात। 6 मई को पंचक समाप्त 5:43 सायं.।	29 अप्रैल 2024 पंचमी 8:02 दिन तक। पूर्वाषाढ़ 4:49 रात तक	6 मई 2024 त्रयोदशी 2:41 दिन तक। मासिक शिवरात्रि व्रतं। रेवती 5:43 सायं. तक।	सोम		13 मई 2024 षष्ठी 2:56 रात्रि तक श्री रामानुजाचार्य जयंती पुनर्वसु 11:30 दिन तक	20 मई 2024 द्वादशी 3:58 दिन तक। प्रदोष व्रतं। मधुसूदन पूजन चित्रा दिनरात वृद्धि
	30 अप्रैल 2024 षष्ठी 7:13 प्रातः तक, सप्तमी 5:42 रातअंत तक उत्तराषाढ़ 4:17 रात तक	7 मई 2024 चतुर्दशी 11:42 दिन तक। अश्विनी 3:33 दिन तक	मंगल		14 मई 2024 सप्तमी 4:22 रात्रि तक गंगा सप्तमी। अर्यमा सप्तमी पुष्य 1:10 दिन तक।	21 मई 2024 त्रयोदशी 5:41 सायं तक श्री नृसिंह अवतार। चित्रा 5:49 प्रातः तक
24 अप्रैल 2024 प्रतिपदा तिथि वृद्धि दिनरात स्वाती 12.42 रात तक	1 मई 2024 अष्टमी 4:11 रात्रि तक। शीतलाष्टमी स्कन्दपुराणोक्त श्रवण 3:19 रात तक	8 मई 2024 अमावस्या 8:52 दिन तक भरणी 1:35 दिन तक	बुध		15 मई 2024 अष्टमी तिथि वृद्धि दिनरात आश्लेषा 3:28 दिन तक	22 मई 2024 चतुर्दशी 6:50 सायं तक कदली व्रत स्वाति 7:50 प्रातः तक
25 अप्रैल 2024 प्रतिपदा प्रातः 6.49 तक गलंतिका बंधन विशाखा 2.25 रात तक	2 मई 2024 नवमी 2:01 रात्रि तक पंचक प्रारंभ 2:38 दिन धनिष्ठा 1:56 रात तक	मूल 26 अप्रैल को मूल 3:41 रात से रातअंत। 27 अप्रैल को मूल दिनरात। 28 अप्रैल को मूल सू.उ. से 4:53 रात तक। 5 मई को मूल 7:58 रात से रातअंत। 6 मई को मूल दिनरात। 7 मई को मूल सू.उ. से 3:33 दिन तक।	गुरु	9 मई 2024 प्रतिपदा द्वतीया क्षय रात 4.17 तक सम्राट विक्रमादित्य जयंती कृत्तिका 11:58 दिन तक	16 मई 2024 अष्टमी 6:23 प्रातः तक मां वगलामुखी जयंती मघा 6:14 सायं. तक	23 मई 2024 पूर्णिमा 7:25 रात्रि तक बुद्धपूर्णिमा। कूर्म अवतार विशाखा 9:18 दिन तक
26 अप्रैल 2024 द्वितीया 7:48 प्रातः तक। अनुराधा 3:41 रात तक	3 मई 2024 दशमी 11:30 रात्रि तक। शतभिषा 12:11 रात तक		शुक्र	10 मई 2024 तृतीया 2:55 रात्रि तक श्रीपरशुराम जयंती। अक्षय तृतीया रोहिणी 10:51 दिन तक।	17 मई 2024 नवमी 8:48 दिन तक जानकी जयंती पूर्वाफाल्गुनीं 9:17 रात तक	सूर्योदय-सूर्यास्त 11 मई को 5:51 - 6:55 15 मई को 5:49 - 6:57 19 मई को 5:48 - 6:59 23 मई को 5:46 - 7:1
27 अप्रैल 2024 तृतीया 8:20 दिन तक। संकष्टी श्री गणेश 4 व्रतं। ज्येष्ठा 4:31 रात तक	4 मई 2024 एकादशी 8:42 रात्रि तक। वरूथिनी एकादशी व्रत सर्वे। पूर्वभाद्रपद 10:10 रात तक		शनि	11 मई 2024 चतुर्थी 2:11 रात्रि तक विनायकी श्री गणेश 4 व्रतं मृगशिरा 10:20 दिन तक	18 मई 2024 दशमी 11:21 दिन तक उत्तराफाल्गुनी 12:22 रात तक	

चंद्र राशि

24 अप्रैल को तुला का दिनरात।
25 अप्रैल को तुला 7:60 रात. तक।
26 अप्रैल को वृश्चिक का दिनरात।
27 अप्रैल को वृश्चिक 4:31 रात तक।
28 अप्रैल को धनु का दिनरात।
29 अप्रैल को धनु का दिनरात।
30 अप्रैल को धनु 10:42 दिन तक।
1 मई को मकर का दिनरात।
2 मई को मकर 2:38 दिन तक।
3 मई को कुंभ का दिनरात।
4 मई को कुंभ 4:41 दिन तक।
5 मई को मीन का दिनरात।
6 मई को मीन 5:43 सायं तक।
7 मई को मेष का दिनरात।
8 मई को मेष 7:09 रात. तक।
9 मई को वृष का दिनरात।
10 मई को वृष 10:32 रात. तक।
11 मई को मिथुन का दिनरात।
12 मई को मिथुन 5:09 रात. तक।
13 मई को कर्क का दिनरात।
14 मई को कर्क का दिनरात।
15 मई को कर्क 3:28 दिन तक।
16 मई को सिंह का दिनरात।
17 मई को सिंह 4:03 रात. तक।
18 मई को कन्या का दिनरात।
19 मई को कन्या का दिनरात।
20 मई को कन्या 4:34 दिन तक।
21 मई को तुला का दिनरात।
22 मई को तुला 2:60 रात. तक।
23 मई को वृश्चिक का दिनरात।

शुभ योग

25 अप्रैल को सर्वार्थसिद्धी रात्रि 2:25 वजे से रातअंत।
26 अप्रैल को सर्वार्थसिद्धी रात्रि 3:41 तक।
28 अप्रैल को सर्वार्थसिद्धी रात्रि 4:53तक
29 अप्रैल को रवियोग रात्रि 4:49 से रात्रिअंत।
30 अप्रैल को रवियोग सू. उ. से रात्रि 4:17 तक।
5 मई को सर्वार्थसिद्धी रात्रि 7:58 तक
7 मई को अमृतसिद्धियोग दिन 3:33 तक
8 मई को सर्वार्थसिद्धी दिन 1:35 वजे से रातअंत।
10 मई को रवियोग दिन 10:51 से रात्रिअंत।
11 मई को रवियोग सू. उ. से प्रातः 6:60 तक, पुनः दिन 10:20 से रात्रिअंत।
12 मई को रवियोग सू. उ. से दिन 10:33तक।
13 मई को रवियोग दिन 11:30 से रात्रिअंत। सर्वार्थसिद्धी दिन 11:30 वजे से रातअंत।
14 मई को रवियोग सू. उ. से दिन 1:10तक। सर्वार्थसिद्धी दिन 1:10 वजे से रातअंत।
16 मई को रवियोग सायं 6:14 से रात्रिअंत।
17 मई को रवियोग सू. उ. सेरात्रिअंत। सिद्धयोग रात्रि 9:17 तक
18 मई को रवियोग सू. उ. से रात्रि 12:22तक।
19 मई को द्विपुष्कर योग रातअंत 3।16 से रातअंत अमृतसिद्धियोग रात्रि 3:16 तक
21 मई को रवियोग प्रातः 5:49 से रात्रिअंत।
22 मई को रवियोग सू. उ. से प्रातः 7:50तक।
23 मई को सर्वार्थसिद्धी दिन 9:18 वजे से रातअंत।

भद्रा एवं अन्य कुयोग

24 अप्रैल को व्यतिपात् रा. 5:07 वजे तक। से रातअंत। 25 अप्रैल को व्यतिपात् सू.उ.. से रा. 4:54 वजे तक। 26 अप्रैल को भद्रा रात्रि 8:05 से रात्रिअंत (स्वर्ग)। 27 अप्रैल को भद्रा सू. उ. से दिन 8:20(स्वर्ग)।30 अप्रैल को भद्रा प्रातः 7:13 से सायं 6:35 (पाताल)। 3 मई को भद्रा दिन 12:47 से रात्रि 11:30 (भूमि)। 4 मई को वैधृति दि. 11:06 वजे तक।से रातअंत। 5 मई को वैधृति सू.उ. से प्रा. 7:38 वजे तक। 6 मई को भद्रा दिन 2:41 से रात्रि 1:10 (स्वर्ग)।11 मई को भद्रा दिन 2:30 से रात्रि 2:11 (स्वर्ग)।14 मई को भद्रा रात्रि 4:22 से रात्रिअंत (भूमि)।15 मई को भद्रा सू. उ. से सायं 5:21(भूमि)।18 मई को भद्रा रात्रि 12:37 से रात्रिअंत (पाताल)। 19 मई को भद्रा सू. उ. से दिन 1:49(पाताल)। 20 मई को व्यतिपात् दि. 12:09 वजे तक। से रातअंत। 21 मई को व्यतिपात् सू.उ.. से दि. 12:36 वजे तक। 22 मई को भद्रा सायं 6:50 से रात्रिअंत (स्वर्ग)। 23 मई को भद्रा सू. उ. से प्रातः 7:15(स्वर्ग)।

वृष संक्रांति फल –ता. 14 मई को 5.52 शाम को वृष संक्रांति होगी। भगवान सूर्य वृष राशि में प्रवेश कर महोदरी संज्ञक संक्रांति का निर्माण करेंगे। यह संक्रांति घोटक वाहन पर सवार, सिंह उपवाहन लिए कृष्ण वस्त्र धारण किए हुए वृद्धावस्था में बैठी हुई स्थिति में प्रवेश कर रही है। इस संक्रांति के प्रभाव से अन्नादि के भाव स्थिर सूचक रहेंगे। यह संक्रांति चंडाल वर्ग को सुखद चोर तस्कर, ठगों को भी शुभकारी है।

मास फल – इस माह सूर्य, गुरु, शुक्र का त्रिग्रही योग तथा मंगल राहु की युति का प्रभाव अशांति एवं तटीय क्षेत्रों में तनाव की स्थिति निर्मित कर सकता है। देश में सत्ता-संघर्ष के साथ आरोप-प्रत्यारोप का दौर जारी रहेगा। केंद्रीय मंत्रिपरिषद में बदलाव देखने को मिलेंगे। सभी खाद्य पदार्थों में तेजी के साथ शेयर सोना, चांदी आदि गोता लगाकर सुधरते नजर आएंगे। वाहन दुर्घटनाओं में वृद्धि का संकेत ग्रह दे रहे हैं।

 ।। श्री गणेशाय नमः ।। 

卐 विषयानुक्रमणिका 卐

 ।। ॐ घृणिः सूर्याय नमः ।। 

भारतवर्ष में प्राचीन काल से प्रचलित कालगणना के प्रमुख संवत्

भारतवर्ष के प्राचीन साहित्य में लगभग ४७ संवतों का वर्णन मिलता है। इनमें से प्रमुख संवतों की आब्दा इस वर्ष निम्न लिखित है।

१ - सृष्ट्याब्द : १९५५८८५१२६ वर्ष
२ - चतुर्युग संवतः ३८९३१२७ वर्ष
३ - श्रीकृष्ण जननाब्दः ५२३१ वर्ष
४ - युधिष्ठिर संवत्: ५१६४ वर्ष
५ - कलि संवत् : ५१२७ वर्ष
६ - लौकिकाब्द (महर्षि संवत्) : ५१०३ वर्ष
७ -शककाल (हर्ष विक्रमादित्य) २६०१ वर्ष
८- विक्रम संवत् : २०८२ वर्ष
९ - शालिवाहन शकः १९४७ वर्ष।

शककाल आब्दा एवं युधिष्ठिर संवत् का प्रत्यक्ष प्रमाण

शककाल आब्दा विक्रम संवत् तक ही प्रचलित रही। इसका उपयोग वराहमिहिर कृत वृहत्संहिता के सप्तर्षिचाराध्याय के श्लोक क्रमांक ३ में सप्तर्षि मण्डल की आकाशीय स्थिति जानने के लिये युधिष्ठिर के स्वर्गारोहण काल से ब्यतीत २५२६ वर्षो को इस शककाल में जोडकर प्रति १००-१०० वर्ष में सप्तर्षि मण्डल का मघा नक्षत्र से चालन कर वर्तमान स्थिति ज्ञात करने का आदेश है।

आसन्मघासु मुनयः शासति पृथ्वीं युधिष्ठिरे नृपतौ।
षड्द्विकपंचद्वियुतः शककालस्तस्य राज्ञश्च।।३।।
एकैकस्मिन्नृक्षे शतं शतं ते चरन्ति वर्षाणाम्।

गणना :- २५९९+२५२६= ५१२५ इसमें १०० का भाग देने पर ५१.२५ हुये। इसमें से नक्षत्र चक्र २७ घटाने पर शेष २४.२५ यानि मधा के आगे से २५वां नक्षत्र या मधा से २ नक्षत्र पहले का नक्षत्र पुष्य में वर्तमान में सप्तर्षि मण्डल वर्तमान काल में प्रत्यक्ष दिखाई दे रहा है। जिन विद्वानों को स्वयं प्रमाण देखना है वे १५ अप्रैल से १५ जून के बीच पंचांग में जिस दिन पुष्य नक्षत्र लिखा हो उस रात्रि में चन्द्रमा से उत्तर दिशा में सप्तर्षि मण्डल प्रत्यक्ष देख सकते हैं। चूंकि सप्तर्षि मण्डल आकार में वृहत् होता है इसलिये आश्लेषा नक्षत्र के दिन भी चंद्रमा के ठीक उत्तर में दिखाई देगा।

यहां यह विवरण इसलिये देना पड रहा है कि शककालाब्द को शालिवान शक समझने का भ्रम पाश्चात्य विद्वान सर विलियम जोन्स को हो चुका है। इन दोनों संवतों में ६५४ वर्ष का अन्तर है। भ्रम के कारण विक्रम सम्वत प्रारंभ करने वाले परमार वंशीय विक्रमादित्य के अस्तित्व को नकार दिया गया। एक ईशवी पूर्व जन्मे वराहमिहिर को पांचवीं-छटवीं शताब्दी में जन्म होना सिद्ध कर दिया गया।

 अथ शुभ संवत्सरावली 

।। अथ संवत्सरावली ।।

श्री गणेशाय नमः। अथ संवत्सरावली महात्म्य। जो मनुष्य चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को संवत्सर का फल सुनता है वह धनाड्य, निरोगी, राजकुल में विजयी, बुद्धिमान और सुखी होता है। इस दिन घर को स्वच्छ कर ध्वजा बंधन कर पंचांग स्थित श्री गणेश जी का पूजन कर रात्रि में मंगल गीत आयोजन करना चाहिये।

।। अथ संवत्सरावली ।। श्री गणेशाय नमः। स जयति सिन्धुर वदनो देवो यत्पादपंकज स्मरणम्। वासरमणिरिव तमसां राशिन्नाशयति विघ्नानाम्।। अस्मिन् संवत्सरे अद्य श्री ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय परार्धे श्री श्वेत वाराह कल्पे वर्तमान कल्पारंभतः ससन्ध्यतः षण्मनवो व्यतीताः। वर्तमानस्य सप्तम वैवस्वतमनोः सप्तविंशति महायुगानि गतानि। अष्टाविंशति महायुगस्य कृतादि युगत्रयं व्यतीतम्। सृष्टितो गताब्दाः १९५५८८५१२६ वर्तमान कलियुगस्य ५१२६ वर्षाणि गताः। विक्रमादित्य राज्यकालातत्संवत्सराः गताः २०८२ शकारंम्भतश्च १९४७ व्यतिताब्दाः।

सिद्धार्थ नाम संवत्सर फलम् –सिद्धार्थ वत्सरे भूयो ज्ञान वैराग्य युक्प्रजा। सकलावसुधा भाति बहु सस्यार्घ वृष्टिभिः। ।सिद्धार्थ वर्ष में प्रजा ज्ञान वैराग्य से युक्त हो। सम्पूर्ण पृथ्वी पर प्रसन्नता रहेंगे। और जल अन्न अच्छे हों। ।६६।।

राजा रवि फलम्– सूर्ये नृपे स्वल्प फलाश्च मेघाः स्वल्पं पयो गौ जनेषु पीड़ा। स्वल्पं सुधान्यं फलम वृक्षाश्चौराग्नि बाधा निधनं नृपाणां।। कम दुग्ध, कम वर्षा और वृक्षों में फल कम लगेंगे। जनता में पीड़ा, चोर तथा अग्नि भय, देश–प्रदेश के शासकों को कष्ट होगा।

मंत्री रवि फलम्– नृपभयं गदतोपि हि तस्करात्प्रचुरधान्यधनादि महीतले। रसचयं हि समर्धतमं तदा रविरमात्यपदं हि समागतः।। शासकों का भय, रोग और चोरों का भय बढ़ेगा। पृथ्वी पर धन धान्य अधिक होगा। रसों का संग्रह तथा महँगाई कम होगी।

सस्येश बुध फलम्– जलधरा जलराशिमुचो भृशं सुख समृद्धि युतं निरूपद्रवम्। द्विजगणः श्रुतिपाठकरः सदा प्रथम सस्यपतौ सति वोधने।। बुध के सस्येश होने से उत्तम वर्षा होगी। सुख समृद्धि वढ़ेगी। किसी प्रकार का उपद्रव नही होगा। ब्राम्हण लोग वेद पाठ करेंगे।

दुर्गेश शनि फलम्– रविसुते गढ़पालिनिविग्रहे सकलदेशगताश्चलिता जनाः। विविध वैरिविशेषितनागराः कृषिधनं शभैर्मषितंभुविः।। शनि दुर्गेश होने से संसार में नाना भांति से अशान्ति होगी। टिड्डी तथा चूहों का आतंक होगा।

धनेश भौम फलम्–असममौल्यकरोधरणीसुतः शरदितापकररस्तुषधान्यहत्। सहसि मासि भवेद्विगुणं तदा नरपतिर्जन शोक विधायकः।। भौम धनेशहोने से तेजी मंदी हो। गहूं कम हो। मार्गशीर्ष मास में विक्रय करने से संग्रहीत वस्तु में दुगुना लाभ होगा। शासक को कष्ट होगा।

रसेश शुक्र फलम्– यजन याजनकोत्सबकोत्सुका जनपदा जलतोषित मानषाः। सुख सुभिक्ष सुमोदवती धरा धरणिपा हतपाप गणप्रियाः।। शुक्र के रसेश होने से लोग यजन याजन तथा उत्सबादि करने के लिये उत्सुक रहेंगे। उनके मन संतुष्ट रहेंगे। पृथ्वी पर सुख–सुभिक्ष होगा।

धान्येश चंद्र फलम्– चंद्रे धान्याधिपे जायते प्रजा वृद्धिः प्रजायते। गोधूमाः सर्षपाश्चैव गोक्षु क्षीरं तदा बहु।। चंद्रमा धान्येश होने से प्रजा में वृद्धि होगी। दूधऔर अनाजों का उत्पादन अधिक हाकगा।

नीरसेश बुध फलम्– चित्र वस्त्रादिकं चैव शंख चंदन पूर्वकम्। अर्घवृद्धि प्रजायेत नीरसेशो बुधो यदि।। बुध के नीरसेश होने से छींट के कपड़े, शंख, चंदन आदि सस्ते होंगे।

फलेश शनि फलम्– यदि शनि फलपः फलहा भवेज्जनित पुष्पगणस्य दमः सदा। हिम भयंवर तस्कर जन्तु भीर्जनपदो गदराशि महाकुलः।। शनि के फलेश होने से फल–फूलों की पैदावार कम होगी। ओले वर्षा की संभावना है। चोरियां वढ़ने तथा बीमारियां फैलने की संभावना है।

मेघेश रवि फलम्– जलदपे यदि वासरपे तदा सरसि बैरमते जनता रसम्। यव चक्षेणु निवार सुशालिभिः सुखचयं सुलभं भुवि वर्तते।। सूर्य मेघेश होने से जवा, चना, निवारू और चाबल अच्छे उत्पन्न होगे। सब लोग सुखी होंगे।

नीलक मेघ फलम्– सत्पयोदिशति गोकुलपूर्णा वस्त्रताखिलमहिपरिपूर्णा। नीलनाम्नि जलदे जलवृष्टिर्जायते सकलमानवतुष्टिः।। नीलमेघ होने से जल वर्षा अच्छी होगी। दूध,कपास का उत्पादन भी बढ़ेगा।

तक्षक नाम नाग फलम् – द्वादसनागान्यमध्ये तक्षक संज्ञक नागस्यफलम् – तक्षकाभिध नागेन्द्रो जायते यत्र वर्षके। तत्र मध्यम वृष्टिः स्याद्वग्रहानृपतेर्मतिः।। तक्षक नाग होने से वर्षा मध्यम होगी। शासकों में विग्रह होगा।

रोहिणी वास फलम्– संधि संस्थं यदा ब्राह्मभं जायते। खंड वृष्टिस्तदा सर्ब धान्यात्ययः।। रोहिणी वास संधिगत होने से खंड़ वृष्टि या कम वर्षा का योग है।

आर्द्रा प्रवेश तिथि फल– द्वादश्यां शिव नक्षत्रं प्रविश्चेद्दिवाकरः। नाना विधंशुभं तर्हि जनः प्राप्नोति निश्चतम्।। द्वादशी का हो तो मनुष्यों को नाना प्रकार के शुभफल मिलें।

आर्द्रा प्रवेश रविवार फलम्– दिनपति वारे पशुपति धिष्ण्ये। दिनपति वेशेसति पशुनाशः।। रविवार के दिन सूर्य आर्द्रा पर आने से पशुओं का नाश या रोग होने का योग है।

आद्रा प्रवेश नक्षत्र फलम्– अर्कस्य रौद्र संवेशे भरणीचंद्रभंइ यदि। तर्हि स्याद्रोग बाहुल्यं शुभंनैव कदाचन।। भरणी नक्षत्र हो तो रोगबाहुल्य हो और शुभ्रा कुछ नहीं हो।।

आर्द्रा प्रवेश योगफलम्– सुकर्म नाम योगके यदीशभां विर्व्रजेत्। तदा समस्त भूसुराः सुकर्म कर्तुमुद्यताः।। सुकर्मा में हो तो सम्पूर्ण ब्राह्मण लोक अच्छे कामों के करने में उद्यत (तैयार) हों।।

वर्ष लग्न फलम्– सिंह लग्ने दक्षिणस्यांदंष्ट्राभय मुदीर्यते। धान्ये समर्घता मासष्ट्कं यावद्धनं महत्। पश्चिमायां धातु वस्तु फलादीनां महर्घता। उत्तरस्यां महावृष्टिः सुखंराज्ये प्रजासुच।। पूर्वस्यामर्द्ध निष्पत्तिः श्रेयोग्रे मास पञ्चकात्। मध्यदेशेराजयुद्धंमासपञ्चकमुद्धतम्।। सिंह में दक्षिण में दाढ़भय, धान्य में समर्घता और छः मास तक महाधन की प्राप्ति हो। पश्चिम में धातु की वस्तु और फल महँगे हों, उत्तर में महावृष्टि और राजा प्रजा में सुख हो। पूर्व में आधी उपज हो, आगे पांच मास में कल्याण हो, मध्य देश में 5 मास राजयुद्ध रहेगा।।

अथ विंशोपकः – वर्षा ११, धान्य ११, तृण ५,शीत १३, तेज १७, वायु १३,वृद्धि १५, क्षय १५, विग्रह ११,क्षुधा ११, तृषा ९, निद्रा १५,आलस्य १५, उद्यम १३, शांति १५,क्रोध १३, दंभ ५, लोभ ३,मैथुन १५, रस ९, फल १३,उत्साह ११, उग्रा १३, पाप ११,पुण्य ११, व्याधि ७, आचार ३,अनाचार ५, मृत्यु ३, जन्म ७,देश ९, देश स्वास्थ्य १५, चोर भय १३,चोर नाश १५, अग्नि ५, अग्नि शांत ११,वृक्षादि उद्भिज १३, मनुष्यादि जरायुज ३, सर्पादिअंड़ज ३,मखमलादि स्वेदज ९।। श्री परब्रम्हं अर्पणमस्तु।।

वर्षा विचार

आर्द्रा प्रवेश
२२ जून प्रातः ६:१५

१ चं शु.
२
३ गु.बु.सू.
४
५ मं.के
६
७
८
९
१०
११ रा.
१२ श.

वर्षा प्रवेश
२१ जून दिन ८:०७

१ चं शु.
२
३ गु.बु.सू.
४
५ मं.के
६
७
८
९
१०
११ रा.
१२ श.

नीलक संज्ञक मेघ होने, वर्षा के विंशांपक ११, धान्य के विंशांपक ११ होने, वर्षा प्रवेश के समय लग्नेश चंद्र की शुक्र के साथ केन्द्र में स्थिति होने एवं आद्रा प्रवेश लग्न में गुरु, बुध होने से उत्तम वर्षा का योग बन रहा है। रोहिणी वास तट पर होने से मध्यम वर्षा का योग है। कुल मिलाकर अच्छी वर्षा से फसलों का अच्छा उत्पादन होने का योग है।

नक्षत्र	दिनांक से	वर्षा के वाहन
आर्द्रा	२१/२२ जून से	मूषक वाहनं अल्प वृष्टि। पु. पु.योग अनावृष्टि। अग्निनाड़ी।
पुनर्वसु	५ /६ जुलाई से	अश्व वाहनं पर्वते वृष्टि। स्त्री. नपु.योग अल्पवृष्टि। सौम्यनाड़ी
पुष्य	१९/२० जुला.से	चातक वाहनं सुवृष्टि। स्त्री. पु.योग सुवृष्टि। नीरानाड़ी।
आश्ले	२/ ३ अगस्त से	गदर्भ वाहनं अल्प वृष्टि। स्त्री. नपु.योग अल्पवृष्टि। जलनाड़ी।
मघा	१६/१७ अग. से	मण्डूक वाहनं सुवृष्टि। स्त्री. पु.योग सुवृष्टि। अमृतनाड़ी।
पू.फा.	३०/३१ अग. से	महिष वाहनं सुवृष्टि। स्त्री. नपु.योग अल्पवृष्टि। चण्ड़नाड़ी।
उ.फा.	१२/१३ सित. से	जम्बूक वाहनं अनावृष्टि। स्त्री. पु.योग सुवृष्टि। वायुनाड़ी।
हस्त	२६/२७ सित. से	चातक वाहनं सुवृष्टि। स्त्री. नपु.योग अल्पवृष्टि। अग्निनाड़ी।

वर्षा ज्ञानार्थे सप्त नाड़ी चक्रम्

नाड़ी	चण्डा	वायु	अग्नि	सौम्य	नीरा	जल	अमृत
नाड़ी स्वामी	शनि	सूर्य	मंगल	गुरु	शुक्र	बुध	चन्द्र
नक्षत्र	कृति.मघा. अनु.धनि.	रोहि.पूफा. ज्ये.शत.	मृग.उफा. मूल.पूभा.	आर्द्रा.हस्त पूषा.उभा.	पुनर्व.चित्र. उषा.रेव.	पुष्य. स्वा. अभि.अश्वि.	आश्ले.विशा. श्रव.भरणी
नाड़ी फल	आंधी तूफान	तेज हवा	बिजली या उमस	गर्मी एवं वर्षा	बादल	सामान्य वर्षा	अति वर्षा

नाड़ी चक्र से वर्षा देखने की विधि

वर्षा का विचार मुख्य रूप से सूर्य के आर्द्रा नक्षत्र से उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र तक करना चाहिये। जिस समय एक नाड़ी में दो से अधिक ग्रह हों या नाड़ी स्वामी बैठा हो तो उपरोक्त चण्डादि नाड़ी के नाचे लिखे अनुसार आंधी, हवा या वर्षा का योग होता है।

वर्षा जानने के अन्य योग

– यदि सूर्य मंगल की युति हो अल्प वर्षा होती है।

– यदि गोचर में मंगल सूर्य से आगे चल रहे हों तो सूखे की स्थिति होती है।

– मंगल के राशि परिवर्तन के समय, गुरु उदय के समय, शुक्र अस्त के समय, शनि के उदय, अस्त, वक्री–मार्गी तथा राशि परिवर्तन के समय वर्षा योग होता है।

।। अथ मकर संक्रांति फलम् ।।

मकर संक्रान्ति फलम्- माघ कृष्ण ११ बुधवासरे २१:३० समये ३७:०८ घटी मकरसंक्रान्ति प्रवेश: तस्य पुण्यकाल परादिवसे। वार नाम मंदाकिनी संज्ञक संक्रांति सैनिकवर्ग, राजनैतिक लोगों, अधिकारियों को शुभकारी है। तस्य काले अनुनक्षत्र नाम मंदाकिनी संज्ञक संक्रांति सैनिकवर्ग, पुलिष आदि को सुखद। मुहूर्त्त ३० अनाज मूल्य समता।

कौलव करण फल- वराह वाहनं, वृष उपवाहनं, हरित वस्त्रं, खड्ग आयुधं, ताम्र पात्रं, भिक्षा भक्षणं, चंदन लेपनं, सर्प वर्ण, मौलश्री पुष्पं, मोती भूषणं, हरित कंचुकी, कुमारी अवस्था, उतिष्ठा स्थिति। मंहगाई भाव सूचक।

माध मास फल- सर्बे भवति सुखिन:। संसार में सभी लोग सुखी होंगे।

कृष्ण पक्ष-फल :-चौर पाखण्डी दुर्बुद्धि व्याध पूर्वक दुर्जनान्। सदैव सुख यत्येषां संक्रांति: कृष्ण पक्षजा।। सूर्य संक्रान्ति कृष्ण पक्ष में हाने से चोर, पाखण्डी, दुर्बुद्धी तथा प्रेम पूर्वक रहने वाले दुर्जनों के लिए हमेशा सुखकारी होती है।

वाहन फलम् - व्याघ्र:स्याद्यदि वाहनं दिनकृतश्चंड़प्रचंड़स्फुर। दृंष्ट्रा विंध्यवनस्थलीषु बिलयं यांति प्रयाणोद्यमा:। आरण्या: खलुजीविनोति विपुलं सौख्यं जयं पुष्टतां। सद्यो वागुरिकां मृगादि बहढ़लं लाभं लभंतेतुलं। यदि सूर्य का वाहन व्याघ्र हो तो सूर्य प्रचंड़ रूप धारण करें। विंध्याचल सर्बत के जंगल की भूमि पर व्याघ्रों का बिलय हो, जंगल में रहेंगेने वाले जीवन प्राप्त करते हैं। तथा जय सुख, और पुष्टता प्राप्त करते हैं। शिकारियों को अनेक मृगों का लाभ होता है।

उपवाहन फल- सुभिक्षं सर्बदेशेषु राजविग्रहमेव च। गृह गृहे च मांगल्य वाजिस्थे च दिवाकरे। सूर्य यदि अपने उप वाहन घोड़े पर स्थित हो तो पूरे देश में सस्ताई हो अर्थात् महंगाई खत्म हो और राजाओं में फूट हो, प्रत्येक घर में शुभ मांगलिक कार्य हो।

वस्त्र-फल:- सुभगा वनिता निपीड़नं, बहढ़मूल्यं खलु पीतमंबरे। व्रजतीहमहर्षतां निशा यदि पीतांबर धारको रवि:। यदि सूर्य पीला वस्त्र धारण किये हढ़ए हो तो सौभाग्यवती स्त्रियां परेशान हों, वस्तु के मूल्य अधिक हो, रातों रात महंगाइ बढ़े।

विलेपन-फल:-सत्केसरालं बिललाटभानु, वंकुप्रदेशोत्थनृपाधि भंगे। समाप्नुयुर्माथुर भामिनीनां, तदुद्यमानामपि पीड़नं स्यात्। यदि सूर्य केसर/कुंकुम का ललाट पर लेप किये हढ़ए हो तो बंग प्रदेश के राजा का राज्य भंग हो, माथुर स्त्रियों क समापन होवे, केसर, कुंकुम महंगी होने से व्यापारी लोगों को पीड़ा हो।

पुष्प-फल:- यदि कमल वन प्रकाशकारीभजति च जातिलत्तासुगंधि पुष्पं। भवति हि तन्महर्घताशं शरदि च तत्कुसुमोद्यमा: प्रयांति। यदि सूर्य जाति नाम के पुष्प को धारण करता है तो लताओं में अच्छी गंध वाले पुष्प होते हैं और जाति आदि पुष्प अधिक भाव (महंगे) को प्राप्त हो।

भोजन-फल:-भास्करश्च परमात्रभोजनो दुग्ध शलिघृतशर्करादय:। यांतिमूल्यमतुलंत्वभीरभू संभवा अपि जना विनशा। सूर्य यदि पायस (खीर) का भोजन किये हढ़ए हो तो दूध,ख चाबल, चीन, घी आदि की अत्यधिक मूल्य वृद्धि (महंगाई) होती है। इससे लोगों का नाश होता है।

शस्त्र-फल:-गदायुधं यदा हरे विंशिष्ट युद्ध संभव। कलिंगबंगदेशयोर्जयस्तुरुष्क भूभुजां। यदि सूर्य गदा को धारण किये हढ़ए हो तो कलिंग और बंगाल निवासियों में एक विशिष्ट युद्ध की संभावना होवे तथा तुरुष्क (तुर्की) राजाओं की विजय हो।

जाति-फल:- दिनमणेरहि जातिरतोभृशं, जगतिसर्पभयं न भवेत् क्वचित्। सुमातीव भजंति च गारुडा, बहढ़विधां मृतिमत्र फणाभृत:। यदि सूर्य अहि अर्थात् सर्प जाति को धारण किये हढ़ए तो संसार में किसी को सर्प का भय नहीं हो, और मंत्र के द्वारा सर्प का जहर उतारने वाले बहढ़त सुख प्राप्त करें, अनेकों सर्पो का नाश हो।

अवस्था-फल:- दिनमणिस्तु कुमार शरीरयुत: कृतचौल विधीन्व्रतबंधयुतान्। बहढ़ले खनक क्रियमाण शिशून् परिपीड़यतीहबिवाह्य सुतान्। यदि सूर्य कुमार अवस्था को धारण किये हढ़ए हो तो बच्चे जड़ूला, योसबीत आदि से युत हों, तथा सेंध लगाने वालों के द्वारा अबिवाहित बच्चे पीड़ित होवें।

अलंकार-फल- यदि सुमौक्तिकं कंजबंधुना समवधार्यते प्राणनाशनं। भवति निश्चितं ताम्रपर्णिक तट निवासिनां भूभुजामिह। यदि सूर्य अच्छे मोती को धारण किये हढ़ए हो तो ताम्र पर्णि के तट पर निवास करने वाले राजा लोगों की निश्चित रूप से मृत्यु की प्राप्ति हो।

दिशा गमन एवं दृष्टि फल - भानुरियादिशमंबुपतेश्चेन्मृत्युभयं यवना उपयांति। अन्य नृपास्त्रपरिक्षत गात्रा रक्त जलौघ नदी कृत भूम्य:।। यदि सूर्य पश्चिम दिशा में गमन करें तो यवनों को भय और मृत्यु प्राप्त हो, अन्य राजा अस्त्रादि से शरीर में घाव प्राप्त करें तथा भूमि पर जल की तरहेंगे रक्त बहे। दर्शनमार्गगता यदि भानोर्वायुदिशा यवनामृतिभाज:। अन्यनृपास्रशराहतगात्रारोदन निर्गत कज्जल रागा:।।

दृष्टि फल- यदि सूर्य वायव्य (उत्तर-पश्चिम) दिशा की तरफ देखे तो यवन देशवासी मृत्यु को प्राप्त हो तथा अन्य राजा अस्त्र शस्त्र द्वारा अपने शरर को घायल होता देखकर रुदन करे, एवं रुदन के कारण कज्जल निकले।

वर्षेस्मिन् ग्रहण विवरणम्

इस वर्ष भारत में दो चंद्र ग्रहण दिखाई देंगे। परन्तु कोई भी सूर्य ग्रहण दृश्य नहीं है।

१- खग्रास चंद्र ग्रहण

भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा, रविवार - दिनांक ०७ सितम्बर २०२५

यह ग्रहण भारत, पाकिस्तान, अरब देश, रूस के देश, जापान, आस्ट्रेलिया, म्यानमार इत्यादि देशों में दिखाई देगा। पू

ग्रहण नक्षत्र - पूर्व भाद्रपद । **ग्रहण राशि** - कुंभ ।

ग्रहण स्पर्श समय - रात्रि ९:५७ । **मध्य** - रात्रि ११:४० । **मोक्ष समय** - रात्रि ०१:२६

ग्रहण का राशिफल : -

शुभ फल - धनु, तुला, कन्या, वृष, मेष (इन राशियों से ग्रहण की राशि ३, ५, ६,१०,११ वीं है)

मिश्रित - मकर, सिंह, मिथुन (इन राशियों से ग्रहण की राशि २, ७, ९ वीं है)

नेष्ठ फल - कर्क, वृश्चिक, मकर मीन (इन राशियों से ग्रहण की राशि १, ४, ८,१२ वीं है)

२- खग्रास चंद्र ग्रहण

फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा, मंगलवार - दिनांक ०३ मार्च २०२६

यह ग्रहण भारत के बंगाल से पूर्व के सभी राज्यों में जिन स्थानों पर सूर्यास्त शाम ६:४७ से पहले होगा वहां दिखाई देगा। दक्षिण अफ्रीका, दक्षिण अमेरिका, म्यानमार एवं वंगलादेश के पूर्वी भाग में दिखाई देगा। पू

ग्रहण नक्षत्र - पूर्वा फाल्गुनी । **ग्रहण राशि** - सिंह

ग्रहण स्पर्श समय - रात्रि ९:५७ । **मध्य** - रात्रि ११:४० । **मोक्ष समय** - रात्रि ०१:२६

ग्रहण का राशिफल :-

शुभ फल - मिथुन, मेष, मीन, वृश्चिक, तुला।

मिश्रित - कन्या, धनु, कुंभ।

नेष्ठ फल - सिंह, वृषभ, मकर, कर्क।

सूतक काल -सूर्य ग्रहण में १२ घंटे पहले से तथा चंद्र ग्रहण में ९ घंटे पहले से सूतक लग जाता है।

विदेशों में दृश्य ग्रहण

खंडग्रास सूर्य ग्रहण - दिनांक २१ सितम्बर २०२५। यह ग्रहण न्यूजीलेंड, आस्ट्रेलिया, प्रशांत महासागर एवं अंटार्कटिका महासागर क्षेत्रों में दिखाई देगा।

खग्रास सूर्य ग्रहण - दिनांक १७ फरवरी २०२६। यह ग्रहण अंटार्कटिका महासागर में खग्रास तथा हिन्द महासागर एवं प्रशांत महासागर में खंड ग्रास दिखाई देगा।

यह राशिफल केवल चंद्र राशि के आधार पर है। वास्तविक फल हेतु जन्म कुंडली से विचार करें।

वार्षिक राशिफल

मेष राशिफल – इस वर्ष मेष राशि वाले जातको को गुरु के गोचर के अनुसार वर्ष प्रारंभ से दिनांक १४ मई २०२५ तक धनलाभ योग बन रहा है। तत्पश्चात् रोग भय योग बन रहा है। । शनि के गोचर से २९ मार्च २०२५ तक साढ़े साती शनि के प्रभाव से मानसिक क्लेश तथा किसी अनर्थ का योग है। राहु के गोचर अनुसार वर्ष प्रारंभ से दिनांक १८ मई २०२५ तक राहु के गोचर से कष्ट हानि योग है। तत्पश्चात् राहु के गोचर से कष्ट हानि योग है। केतु के गोचर के अनुसार वर्ष प्रारंभ से दिनांक १८ मई २०२५ तक केतु के गोचर से विजय सुख तत्पश्चात् केतु के गोचर से विजय सुख के योग बनते हैं। अत: नेष्ठ ग्रहों की शांति हेतु जप–दानादि करें।

वृष राशिफल – इस वर्ष वृष राशि वाले जातको को गुरु के गोचर के अनुसार वर्ष प्रारंभ से दिनांक १४ मई २०२५ तक अरिष्टभय योग बन रहा है। तत्पश्चात् १५ मई से १७ अक्टूबर एवं ५ दिसम्बर २५ से वर्ष अंत तक धनलाभ योग बन रहा है। । शनि के गोचर से २९ मार्च २०२५ तक सुख वित्तलाभ योग बन रहा है। राहु के गोचर अनुसार वर्ष प्रारंभ से दिनांक १८ मई २०२५ तक राहु के गोचर से धनलाभ खुशी योग है। तत्पश्चात् राहु के गोचर से धनलाभ खुशी योग है। केतु के गोचर के अनुसार वर्ष प्रारंभ से दिनांक १८ मई २०२५ तक केतु के गोचर से धनहानि, शोक तत्पश्चात् केतु के गोचर से धनहानि, शोक के योग बनते हैं। अत: नेष्ठ ग्रहों की शांति हेतु जप–दानादि करें।

मिथुन राशिफल – इस वर्ष मिथुन राशि वाले जातको को गुरु के गोचर के अनुसार वर्ष प्रारंभ से दिनांक १४ मई २०२५ तक देहपीड़ा, भय योग बन रहा है। तत्पश्चात् १५ मई से १७ अक्टूबर एवं ५ दिसम्बर २५ से वर्ष अंत तक अरिष्टभय योग बन रहा है। शनि के गोचर से २९ मार्च २०२५ तक वैमनस्य योग बन रहा है। राहु के गोचर अनुसार वर्ष प्रारंभ से दिनांक १८ मई २०२५ तक राहु के गोचर से कलह योग है। तत्पश्चात् राहु के गोचर से कलह योग है। केतु के गोचर के अनुसार वर्ष प्रारंभ से दिनांक १८ मई २०२५ तक केतु के गोचर से भय कष्ट तत्पश्चात् केतु के गोचर से भय कष्ट के योग बनते हैं। अत: नेष्ठ ग्रहों की शांति हेतु जप–दानादि करें।

कर्क राशिफल – इस वर्ष कर्क राशि वाले जातको को गुरु के गोचर के अनुसार वर्ष प्रारंभ से दिनांक १४ मई २०२५ तक सर्बसुख योग बन रहा है। तत्पश्चात् १५ मई से १७ अक्टूबर एवं ५ दिसम्बर २५ से वर्ष अंत तक देहपीड़ा, भय योग बन रहा है। शनि के गोचर से २९ मार्च २०२५ तक हानि पापकर्म योग बन रहा है। राहु के गोचर अनुसार वर्ष प्रारंभ से दिनांक १८ मई २०२५ तक राहु के गोचर से पापरति योग है। तत्पश्चात् राहु के गोचर से पापरति योग है। केतु के गोचर के अनुसार वर्ष प्रारंभ से दिनांक १८ मई २०२५ तक केतु के गोचर से सुख लाभ तत्पश्चात् केतु के गोचर से सुख लाभ के योग बनते हैं। अत: नेष्ठ ग्रहों की शांति हेतु जप–दानादि करें।

सिंह राशिफल – इस वर्ष सिंह राशि वाले जातको को गुरु के गोचर के अनुसार वर्ष प्रारंभ से दिनांक १४ मई २०२५ तक अति दीनता योग बन रहा है। तत्पश्चात् १५ मई से १७ अक्टूबर एवं ५ दिसम्बर २५ से वर्ष अंत तक सर्बसुख योग बन रहा है। । शनि के गोचर से २९ मार्च २०२५ तक ढ़ैया शनि के प्रभाव से रोग तथा शत्रु वृद्धि योग है। राहु के गोचर अनुसार वर्ष प्रारंभ से दिनांक १८ मई २०२५ तक राहु के गोचर से रोगभय योग है। तत्पश्चात् राहु के गोचर से रोगभय योग है। केतु के गोचर के अनुसार वर्ष प्रारंभ से दिनांक १८ मई २०२५ तक केतु के गोचर से बैर हानि तत्पश्चात् केतु के गोचर से बैर हानि के योग बनते हैं। अत: नेष्ठ ग्रहों की शांति हेतु जप–दानादि करें।

कन्या राशिफल – इस वर्ष कन्या राशि वाले जातको को गुरु के गोचर के अनुसार वर्ष प्रारंभ से दिनांक १४ मई २०२५ तक सुख सम्मान योग बन रहा है। तत्पश्चात् १५ मई से १७ अक्टूबर एवं ५ दिसम्बर २५ से वर्ष अंत तक अति दीनता योग बन रहा है। शनि के गोचर से २९ मार्च २०२५ तक भय पीड़ायोग बन रहा है। राहु के गोचर अनुसार वर्ष प्रारंभ से दिनांक १८ मई २०२५ तक राहु के गोचर से विपत्ति योग है। तत्पश्चात् राहु के गोचर से विपत्ति योग है। केतु के गोचर के अनुसार वर्ष प्रारंभ से दिनांक १८ मई २०२५ तक केतु के गोचर से रोगभय तत्पश्चात् केतु के गोचर से रोगभय के योग बनते हैं। अत: नेष्ठ ग्रहों की शांति हेतु जप–दानादि करें।

तुला राशिफल – इस वर्ष तुला राशि वाले जातको को गुरु के गोचर के अनुसार वर्ष प्रारंभ से दिनांक १४ मई २०२५ तक रोग कष्टयोग बन रहा है। तत्पश्चात् १५ मई से १७ अक्टूबर एवं ५ दिसम्बर २५ से वर्ष अंत तक सुख सम्मान योग बन रहा है। शनि के गोचर से २९ मार्च २०२५ तक वित्तलाभ योग बन रहा है। राहु के गोचर अनुसार वर्ष प्रारंभ से दिनांक १८ मई २०२५ तक राहु के गोचर से लक्ष्मी प्राप्ति योग है। तत्पश्चात् राहु के गोचर से लक्ष्मी प्राप्ति योग है। केतु के गोचर के अनुसार वर्ष प्रारंभ से दिनांक १८ मई २०२५ तक केतु के गोचर से बैर कष्ट तत्पश्चात् केतु के गोचर से बैर कष्ट के योग बनते हैं। अत: नेष्ठ ग्रहों की शांति हेतु जप–दानादि करें।

वृश्चिक राशिफल – इस वर्ष वृश्चिक राशि वाले जातको को गुरु के गोचर के अनुसार वर्ष प्रारंभ से दिनांक १४ मई २०२५ तक सुख सम्मान योग बन रहा है। तत्पश्चात् १५ मई से १७ अक्टूबर एवं ५ दिसम्बर २५ से वर्ष अंत तक रोग कष्टयोग बन रहा है। शनि के गोचर से २९ मार्च २०२५ तक धन पुत्र कष्ट योग बन रहा है। राहु के गोचर अनुसार वर्ष प्रारंभ से दिनांक १८ मई २०२५ तक राहु के गोचर से हानि शोक योग है। तत्पश्चात् राहु के गोचर से हानि शोक योग है। केतु के गोचर के अनुसार वर्ष प्रारंभ से दिनांक १८ मई २०२५ तक केतु के गोचर से सुयश धनलाभ तत्पश्चात् केतु के गोचर से सुयश धनलाभ के योग बनते हैं। अत: नेष्ठ ग्रहों की शांति हेतु जप–दानादि करें।

धनु राशिफल – इस वर्ष धनु राशि वाले जातको को गुरु के गोचर के अनुसार वर्ष प्रारंभ से दिनांक १४ मई २०२५ तक शोक कष्ट योग बन रहा है। तत्पश्चात् १५ मई से १७ अक्टूबर एवं ५ दिसम्बर २५ से वर्ष अंत तक सुख सम्मान योग बन रहा है। शनि के गोचर से २९ मार्च २०२५ तक ढ़ैया शनि के प्रभाव से पीड़ा तथा शत्रुओं की वृद्धि योग है। राहु के गोचर अनुसार वर्ष प्रारंभ से दिनांक १८ मई २०२५ तक राहु के गोचर से बैर शोक योग है। तत्पश्चात् राहु के गोचर से बैर शोक योग है। केतु के गोचर के अनुसार वर्ष प्रारंभ से दिनांक १८ मई २०२५ तक केतु के गोचर से भय शोक तत्पश्चात् केतु के गोचर से भय शोक के योग बनते हैं। अत: नेष्ठ ग्रहों की शांति हेतु जप–दानादि करें।

मकर राशिफल – इस वर्ष मकर राशि वाले जातको को गुरु के गोचर के अनुसार वर्ष प्रारंभ से दिनांक १४ मई २०२५ तक सुख, लाभ योग बन रहा है। तत्पश्चात् १५ मई से १७ अक्टूबर एवं ५ दिसम्बर २५ से वर्ष अंत तक शोक कष्ट योग बन रहा है। शनि के गोचर से २९ मार्च २०२५ तक सुख धनलाभ योग बन रहा है। राहु के गोचर अनुसार वर्ष प्रारंभ से दिनांक १८ मई २०२५ तक राहु के गोचर से धनागम निरोग योग है। तत्पश्चात् राहु के गोचर से धनागम निरोग योग है। केतु के गोचर के अनुसार वर्ष प्रारंभ से दिनांक १८ मई २०२५ तक केतु के गोचर से पापरति तत्पश्चात् केतु के गोचर से पापरति के योग बनते हैं। अत: नेष्ठ ग्रहों की शांति हेतु जप–दानादि करें।

कुंभ राशिफल – इस वर्ष कुंभ राशि वाले जातको को गुरु के गोचर के अनुसार वर्ष प्रारंभ से दिनांक १४ मई २०२५ तक व्यय, हानि योग बन रहा है। तत्पश्चात् १५ मई से १७ अक्टूबर एवं ५ दिसम्बर २५ से वर्ष अंत तक सुख, लाभ योग बन रहा है। शनि के गोचर से २९ मार्च २०२५ तक साढ़े साती शनि के प्रभाव से शोक एवं धनहानि का राहु के गोचर अनुसार वर्ष प्रारंभ से दिनांक १८ मई २०२५ तक राहु के गोचर से व्यय चिंता योग है। तत्पश्चात् राहु के गोचर से व्यय चिंता योग है। केतु के गोचर के अनुसार वर्ष प्रारंभ से दिनांक १८ मई २०२५ तक केतु के गोचर से पीड़ा, हानि तत्पश्चात् केतु के गोचर से पीड़ा, हानि के योग बनते हैं। अत: नेष्ठ ग्रहों की शांति हेतु जप–दानादि करें।

मीन राशिफल – इस वर्ष मीन राशि वाले जातको को गुरु के गोचर के अनुसार वर्ष प्रारंभ से दिनांक १४ मई २०२५ तक रोग भय योग बन रहा है। तत्पश्चात् १५ मई से १७ अक्टूबर एवं ५ दिसम्बर २५ से वर्ष अंत तक व्यय, हानि योग बन रहा है। । शनि के गोचर से २९ मार्च २०२५ तक साढ़े साती शनि के प्रभाव से भय युक्त मानसिकता योग है। राहु के गोचर अनुसार वर्ष प्रारंभ से दिनांक १८ मई २०२५ तक राहु के गोचर से कष्ट हानि योग है। तत्पश्चात् राहु के गोचर से कष्ट हानि योग है। केतु के गोचर के अनुसार वर्ष प्रारंभ से दिनांक १८ मई २०२५ तक केतु के गोचर से दुर्गति, कष्ट तत्पश्चात् केतु के गोचर से दुर्गति, कष्ट के योग बनते हैं। अत: नेष्ठ ग्रहों की शांति हेतु जप–दानादि करें।

शनि गोचरफल सूत्रम्

साढ़े साती शनि– शनि जिस राशि में भ्रमण करते हैं वह राशि एवं उससे आगे व पीछे की दोनों राशियो पर भी अपना प्रभाव रखते हैं। शनि एक राशि पर औसतन ढ़ाई वर्षों तक भ्रमण शील रहते हैं अत: तीनों राशियों पर कुल भ्रमण काल साढ़े सात वर्ष होने से यह अवधि साढ़े साती कहलाती है।

ढ़ैया शनि– यदि किसी की जन्म राशि से शनि का गोचर चौथी–आठवीं राशि में हो रहा हो तो उस जातक पर ढ़ैया शनि का प्रभाव होता है। इसका समय औसतन ढ़ाई वर्ष होता है।

शुभ–अशुभ प्रभाव– यदि शनि अशुभ स्थिति में हों तो पारिवारिक कलह, व्यवसायिक उलझनें, हानि, निकटतम् रिस्तेदारों से विरोध, खर्च वृद्धि, विना गलती के दोषारोपण, विघ्न–बाधाऐं, रोग, दुर्घटना, संकट, सुख में कमी इत्यादि फल प्रकट होते हैं। शुभ स्थिति में सर्व सुख, आर्थिक लाभ, यश एवं सम्मान प्राप्त होता है।

शनि पाद – जिस दिन शनि राशि परिवर्तन करते हैं उस दिन जन्म राशि से चन्द्रमा १, ६, ११ वें हो तो स्वर्ण पाद, २, ५, ९ वें चन्द्र में रजत पाद, ३, ७, १० में ताम्र पाद एवं ४, ८, १२ में लोह पाद से शनि का गोचर होता है। स्वर्ण पाद में सर्व सुख, चांदी पाद में लाभ कारक, ताम्र पाद में लाभ–हानि मिश्रित व लोह पाद में शनि का विनाशक प्रभाव होता है। जिनकी कुंडली में शनि बलवान हो, शुभ भावों अर्थात लग्न, पंचम या नवम भाव का स्वामी हो, ३, ६, ११ वें भाव में स्थित हो,शुभ ग्रहों से दृष्ट हो,कारक ग्रहो से युक्त हो, नवांश में वली या शुभ दृष्ट हो तो विशेष कुप्रभाव नहीं होता और यदि जन्म का शनि अशुभ हो तो स्वर्ण पाद में भी विशेष लाभ नहीं होता है।

मतान्तर से शनि पाद –शनि जिस नक्षत्र पर हो उस संख्या में जन्म नक्षत्र की संख्या को जोड़कर ४ का भाग देने पर यदि १ शेष हो तो सोने का, २ शेष हो तो लोहे का, ३ शेष हो तो तांबे का और ४ शेष हो तो चांदी का पाद होता है। स्वर्ण पाद में सुख हानि, लोह पाद में धन नाश, तांबा सामान्य एवं चांदी का पाया उत्तम लाभकारी होता है।

शनि वाहन– शनि के नक्षत्र से जन्म नक्षत्र तक गिनने पर जो संख्या हो उसमें ९ का भाग देने पर यदि १ शेष हो तो गंधर्व, २ शेष वचे तो अश्व, ३ में गज, ४ में मेष, ५ में सियार, ६ में सिंह, ७ में काग, ८ में मृग एवं ० या ९ शेष में मयूर वाहन होता है। इनमें अश्व, गज एवं मयूर वाहन शुभ होते हैं।

शनि शान्ति के उपाय– १. हनुमान जी महाराज की आराधना। २. शनि के बीज या वैदिक मंत्र का विधि पूर्वक जाप एवं दशांश हवन। ३. शनिवार के दिन व्रत रखना व तेल, उडद इत्यादि शनि से सम्बंधित काली वस्तुओं का दान। ४. पीपल की नियमित परिक्रमा कर तेल का दीपक जलाना। ५. व्यसनों से दूर रहना। ६. बुजुर्गों का आदर करने से शनि महाराज शांत होते हैं।

शनि के गोचर का द्वादश राशियों पर पाया

सम्पूर्ण वर्ष – संवत् २०८२

मीन राशि में गोचर रहेगा

स्वर्ण पाद	से सर्व सुख	– मीन, तुला, वृषभ।
रजत पाद	से धनलाभ सुख	– कुंभ, वृश्चिक, कर्क।
ताम्र पाद	से मिश्रित फल	– मिथुन, कन्या, मकर।
लोह पाद	से कष्ट फल	– धनु, सिंह, मेष।

पुष्पांजलि पंचांगम्

मास दशा सारणी

सौर मान से एक वर्ष ३६५ दिन ६ घंटे का होता है। अत: इतने समय बाद सूर्य पुन: उसी राशि पर लौट आते हैं। यदि दिन दशा में ३६० दिन लेते हैं तो शेष ५ दिन में किस ग्रह की दशा मानी जाय, इसलिये सूर्य संक्रान्ति से सूर्य की दशा २० दिन, चन्द्र ५१ दिन, भौम २८ दिन, बुध ५७ दिन, शनि ३७ दिन, गुरु ५९ दिन, राहू ४३ दिन, शुक्र दशा ७० दिन रहती है। सामान्यत: शुभ ग्रहों एवं जन्म राशि से शुभ भावेशों की दशा सुखद एवं अशुभ ग्रहों की दशा दुखद होती है।

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
शुक्रदशा–लाभ, दि. १४ अप्रैल से रविदशा–प्रवास	शुक्र –शुभाशुभ दि. १४ मई से रवि–मानहानि	राहूदशा–शुभाशुभ, दि. ६ अप्रैल से शुक्रदशा–मिश्रित	गुरुदशा–धर्मरति दि. २५ मार्च से राहूदशा–शुभ	गुरु दशा–मिश्रित, दि. २६ अप्रैल से राहू, यात्रा कष्ट	शनिदशा–शत्रुभय दि.२८ मार्च से गुरु सुख, लाभ	बुधदशा–धर्मरति, दि. २२ मार्च से शनिदशा–मिश्रित	बुधदशा–मिश्रित, दि. २१ अप्रैल से शनिदशा–पीड़ा	भौमदशा–व्यय, दि.२५ मार्च से बुधदशा– सुख	चन्द्रदशा–सुख, दि.२७ मार्च से मंगल– लाभ	चन्द्रदशा–मिश्रित, दि. २५ अप्रैल से मंगल–मिश्रित	सूर्यदशा– विजय, दि. १४ मार्च से चन्द्रदशा– शुभ
दि. ४ मई से चन्द्र– सुखद	दि. ३ जून से चन्द्र– मिश्रित	दि. १५ जून से सूर्य– शुभाशुभ	दि. ७ मई से शुक्र–लाभ, सुख	दि. ८ जून से शुक्र–मिश्रित	दि. २६ मई से राहूदशा–मिश्रित	दि. २८ अप्रैल से गुरु –लाभ,	दि. २८ मई से गुरुदशा–लाभ	दि. २१ मई से शनिदशा– मिश्रित	दि. २४ अप्रै से बुध– मिश्रित	दि. २३ मई से बुधदशा– मिश्रित	दि. २५ मई से मंगल–मिश्रित
दि. २४ जून से मंगल–मिश्रित	२४ जुलाई से मंगल–मिश्रित	दि. ५ जुलाई से चन्द्रा–बहु लाभ	दि. १६ जुलाई से सूर्यदशा–अपमान	दि. १७ अगस्त से सूर्यदशा–निरोग	दि. ८ जुलाई से शुक्र–प्रवलभाग्य	दि. २६ जून से राहूदशा–व्यय	२६ जुलाई से राहूदशा– मिश्रित	दि. २७ जून से गुरु –सुख, लाभ	दि. २० जून से शनि–देह सुख	१९ जुलाई से शनि–देहसुख	दि. २२ जून से बुधदशा–शुभ
दि. २२ जुला से बुधमिश्रितफल	दि. २१ अग. से बुधदशा–लाभ	दि. २५ अग. से मंगला– कष्ट	दि. ५ अगस्त से चन्द्रद– सुख	दि. ६ सित. से चन्द्र– व्यय	दि. १६ सित. से सूर्यदशा– व्यय	दि. ८ अगस्त से शुक्र –सुख, लाभ	७ सितम्बर से शुक्र मिश्रित	दि. २५ अगस्त से राहूदशा– मिश्रित	दि. २७ जुलाई से गुरुदशा–मिश्रित	२५ अगस्त से गुरुदशा– लाभ	१८ अगस्त से शनिदशा–व्यय
दि. १७ सित से शनि–शुभाशुभ	१७ अक्टू से शनि–शुभाशुभ	२२ सितम्बर से बुध –सुख हर्ष	२५ सितम्बर से मंगल– मिश्रित	२७ अक्टू से मंगल –धर्मरति	६ अक्टूबर से चन्द्रदशा–लाभ	१७ अक्टूबर से सूर्यदशा–धर्मरति	१६ नवम्बर से सूर्य– क्षेत्र लाभ	७ अक्टूबर से शुक्रदशा– मिश्रित	२४ सितम्बर से राहूदशा–मिश्रित	२३ अक्टूबर से राहूदशा– अशुभ	२४ सितम्बर से गुरु– सुख, लाभ
दि. २४ अक्टू से गुरु–मिश्रित	१३ नवम्बर से गुरु –मिश्रित	१८ नवम्बर से शनिदशा–कष्ट	२३ अक्टूबर से बुधदशा–व्यय	२४ नवम्वर से बुध–धनसुख	२६ नवम्बर से मंगलदशा–चिंता	दि. ६ नवम्बर से चन्द्रदशा–उत्सव	६ दिसम्बर से चन्द्र–भाग्यलाभ	१६ दिसम्बर से सूर्य–भाग्यहानि	दि.६ नवम्बर से शुक्र–सुख, लाभ	५ दिसम्बर से शुक्र–सुख लाभ	२२ नवम्बर से राहूदशा– मिश्रित
दि. २२ दिस से राहूदशा–कष्ट	२१ जन. से से राहू–मिश्रित	२५ दिसम्बर से गुरुदशा– सुख	१९ दिसम्बर से शनि– देह पीड़ा	२० जन. २०११ से शनि–शत्रुभय	२४ दिसम्बर से बुध–सुख, प्रतिष्ठा	२७ दिसम्बर से मंगल –पदोन्नति	२६ जनवरी से मंगलदशा–लाभ	दि. ५ जनवरी से चन्द्र–मिश्रितफल	१५ जनवरी से सूर्यदशा– अशुभ	१३ फरवरी से सूर्यदशा–मिश्रित	दि. ४ जनवरी से शुक्रदशा– मिश्रित
३ जन से से शुक्र– लाभ	दि. ५ मार्च से शुक्र –सर्वसुख	२२ फरवरी से राहूदशा–मिश्रित	१५ जनवरी से गुरु–धर्मरति	२६ फरवरी से गुरुदशा–मिश्रित	१९ फरवरी से शनि शत्रुभय	२४ जन वरी से बुधदशा–व्यय	२३ फरवरी से बुधदशा– लाभ	२५ फरवरी से मंगलदशा–व्यय	.४ फरवरी से चन्द्रदशा–सुख	५ मार्च से चन्द्र – मिश्रित	१५ मार्च से सूर्यदशा–शत्रुभय

।। सर्वतोभद्र चक्रम् ।।

पूर्व दिशा

ईशानकोण — दक्षिण दृष्टि वक्री — सम्मुख दृष्टि — वाम दृष्टि — अग्नि कोण

अआ	कृति	रोहि	मृग	आद्रा	पुन	पुष्य	श्ले	अआ
भरणी	उ	अ	व ब	कघङछ	ह	ड	ऊ	मघा
अश्विनी	ल	ऌ	वृष	मिथुन	कर्क	ॡ	म	पूफा
रेवती	च	मेष	ओ	नंदा र.मं.वार	औ	सिंह	ट	उफा
उभा	दथझ	मीन	रिक्ता शुक्रवार	पूर्णा शनिवार	भद्रा बु.चं.वार	कन्या	पषणठ	हस्त
पूभा	स श	कुंभ	अ:	जया गुरुवार	अं	तुला	र	चित्रा
शत	ग	ऐ	मकर	धनु	वृश्चिक	ए	त	स्वाती
धनि	ऋ	ख ष	ज	भधफढ	य	न	ॠ	विशाखा
इई	श्रवण	अश्लेषा	उ.षा.	पू.षा.	मूल	ज्येष्ठा	अनुराधा	इई

उत्तर — वाम दृष्टि — सम्मुख दृष्टि — दक्षिण दृष्टि — वायव्य कोण

दक्षिण — दक्षिण दृष्टि — सम्मुख दृष्टि — वाम दृष्टि — नैऋत्य

पश्चिम — वाम दृष्टि — सम्मुख दृष्टि — वक्री दक्षिण दृष्टि

इत्येष सर्वतोभद्र विस्तार: कीर्तियो मया। पूर्वशास्त्रानुसारेण यथोक्तं ब्रम्हयामले।। त्रिकालेषु त्रिलोकेषु यस्माद्बुद्धि: प्रकाशते। तत्त्रैलोक्यप्रदीपाख्यं चक्रमत्र प्रकाश्यते।। दीपो यथा गृहस्यान्तरूद्द्योतयति सर्वत:। तथेदं सर्वतोभद्र चक्रं ज्ञान प्रकाशकम्।। सर्वतोभद्रचक्र को भगवान शंकर ने पार्वती जी के समक्ष प्रगट किया था। इसका वर्णन ब्रम्हयामल शास्त्र में मिलता है। इसके दीपक रूपी गोचर ज्ञान से ज्योतिषी के बुद्धि स्वरूप गृह में तीनों लोकों के भूत, भविष्य एवं वर्तमान का ज्ञान इस तरह से हो जाता है, जैसे दीपक से अंधेरे घर में उजाला फैल जाता है। गोचर में ग्रह फल देखने में यह चक्र अतिशय उपयोगी है।

दृष्टि – वक्रगे दक्षिणा दृष्टिर्वामा दृष्टिश्च शीघ्रगे। मध्याचारे तथा मध्या ज्ञेया भौमादि पंचके।। जो ग्रह वक्री हों उनकी दृष्टि दाहिनी ओर के राशि, नक्षत्र, तिथि, अक्षर एवं स्वर इन पांचों को वेधते हैं। जो ग्रह अतिचारी हों वे नक्षत्रादि पांचों को वाम दृष्टि से वेधते हैं। जो ग्रह सामान्य गति से चल रहे हों वे सम्मुख दृष्टि से केवल नक्षत्र का वेधन करते हैं। इस चक्र में तीर चिन्ह द्वारा (->) दृष्टि स्पष्ट की गई है। उदाहरण के लिए यदि कोई ग्रह रोहिणी नक्षत्र में शीघ्र गति से चल रहा हो (अर्थात् अतिचारी हो) तो वाईं ओर के अक्षर 'व ब' एवं 'र' को, स्वर 'औ' को, राशि मिथुन एवं कन्या को तथा स्वाती नक्षत्र को वेधेगा। **राहूकेतू सदा वक्रौ शीघ्रगौ चन्द्रभास्करौ। गतेरेकस्वभावत्वादेषां दृष्टित्रयं सदा।** राहूकेतु की गति हमेशा वक्र होने एवं सूर्य–चंद्र की गति हमेशा शीघ्र होने से इन चारों ग्रहों की दृष्टि तीनों ओर होती है।

वक्र, अतिचार एवं सामान्य गति – इस पंचांग में प्रतिदिन के ग्रह स्पष्ट दिये गये हैं। आज के ग्रह स्पष्ट से आने वाले दिन का ग्रह स्पष्ट कम हो तो उस ग्रह को वक्री जानें। इस पंचांग में प्रतिदिन की गति दी है। नीचे मंगलादि पंच ग्रहों की गति लिखी है, मार्गी रहने पर यदि सम्वन्धित ग्रह की गति नीचे लिखी गति से अधिक हो उसे अतिचारी जानें, अन्यथाा सामान्य गति होगी। मंगल – गति ४६ कला। बुध – ११३ कला। गुरु – १४ कला। शुक्र – ७६ कला। शनि – ७ कला ४५ विकला।

नक्षत्रवस कुछ अक्षरों पर वेध – यदि आद्रा नक्षत्र पर वेध हो तो घ, ङ, छ को, हस्त पर वेध हो तो ष, ण, ठ को, यदि पूर्वाषाढ पर वेध हो तो ध, फ, ढ को और उत्तराभाद्रपद पर वेध हो तो थ, झ, को भी वेध हो जाता है।

जातक की राशि नक्षत्रादि निर्धारण – यश्मिन्नृक्षे भवेज्जन्म यो वर्णस्तत्र य: स्वर:। या तिथिस्तत्र योराशिर्विज्ञेयं जन्मकालत:।। जन्म के समय जो राशि हो वह राशि, जो नक्षत्र हो वह नक्षत्र, जन्म नक्षत्र जिस पाद में हो उसका अक्षर, उस अक्षर का जो स्वर हो वर स्वर, जिस तिथि में जन्म हो वह तिथि ये पांचों जन्मकाल से ही जानना चाहिये।

नवग्रहो की सौम्य क्रूरादि संज्ञा– गुरु, शुक्र सदा सौम्य अर्थात शुभ ग्रह हैं। सूर्य, शनि, मंगल, राहू और केतु ये पांच क्रूर ग्रह हैं। चन्द्रमा कृष्णपक्ष की दशमी से शुक्लपक्ष की पंचमी तक क्षीण होने से पाप ग्रह होता है, अन्य तिथियों में शुभ है। यदि बुध के साथ नवांश में क्रूर ग्रह हो तो बुध भी क्रूर हो जा ता है, अन्यथा शुभ होता है।

अथ संक्षिप्त वेध फल – गोचर में यदि किसी जातक के नाम अक्षर, नक्षत्र, जन्म तिथि, स्वर या राशि को सौम्य ग्रह से वेध प्राप्त हो शुभ होता है। यदि जातक के इन पांच अवयवों को क्रूर ग्रह वेधे तो जातक के लिये वह समय कई तरह से अशुभ होता है। यदि कुछ शुभ एवं कुछ अशुभ ग्रहों से वेध हो तो शुभाशुभ मिश्रित फल होता है। यदि सौम्य ग्रह उदित रहकर, क्रूर ग्रह से युक्त न हो, स्वराशि, मित्रराशि या उच्चादि स्थिति से वली होकर वेध करें तो अत्यंत शुभ समय होता है। यदि क्रूर ग्रह नीच, शत्रु राशि में या अस्त होकर निर्वल स्थित होकर वेध करें तो अत्यंत अशुभ होता है। चन्द्रे मिश्रफलं पुंषां रतिलाभश्च भार्गवे। बुधवेधे भवेत्प्रज्ञा जीव: सर्वफलप्रद:।। अर्कवेधे मनस्तापो द्रव्यहानिश्च भू सुते। रोगपीड़ाकार: सौरी राहूकेतु च विघ्नदौ।। शुभ चन्द्रमा के वेध से जय एवं रोग नाश, क्षीण चंद्र से बंधन, रोग एवं मनस्ताप, शुक्र वेध से राज्यकृपा, विवाह, पुत्र सुख, बुध के वेध से उत्तम बुद्धि एवं सम्मान, गुरु के वेध से सव प्रकार से सुख मिलता है। सूर्य के वेध से मानषिक कष्ट, मंगल के वेध से आर्थिक हानि, शनि के वेध से रोग तथा पीड़ा, राहू–केतू के वेध से सव कामों में विघ्न आते हैं। तिथिर्वेधेऽर्थनाशश्च राशिनां दु:खजं भयम्। अक्षरे शोकसन्ताप ऋक्षेतु व्याधिसंक्रम:।। स्वर वेधे भवेन्मृत्यु: पंचविद्धो न जीवति।। यदि अशुभ ग्रह से तिथि विधे तो अर्थ हानि, राशि विधे तो दु:ख, अक्षर विधे तो शोक, नक्षत्र विधे तो रोग, स्वर विधे तो मृत्यु भय, यदि पांचों विधे तो अत्यन्त नेष्ट होता है।

वस्तुओं की तेजी मंदी –जिन वस्तुओं के नाम के प्रथम अक्षर को शुभ ग्रह वेध करें उसका उत्पादन वढने से कीमत कम हो जाती है। जिन वस्तुओं पर क्रूर ग्रह का वेध हो उनका उत्पादन कम होता है, इसलिये वे महंगीं हो जाती हैं।

गोचरफल सूत्र

१. यदि वेध स्थान में वर्जित ग्रह के अलावा कोई अन्य ग्रह हो तो ग्रह का शुभाशुभ गोचरफल स्थगित रहता है, परन्तु विपरीत वेध में फल प्राप्त होता है। वेध का विचार जन्म राशि से करना चाहिये, परन्तु मतान्तर से कश्यपादि ने जन्मपत्री में ग्रह की अधिष्ठित राशि से विचार करने का कहा है, वो भी केवल हिमालय से बिन्ध्याचल तक के क्षेत्रों में। २. यदि कोई ग्रह जातक की जन्मकुण्डिली में शुभ हो तभी गोचर में शुभ फल प्राप्त होता है, अन्यथा नहीं। सूर्य एवं मंगल राशि या महादशा के पूर्व भाग में, गुरु शुक्र मध्य भाग में, बुध राशि के सम्पूर्ण भाग में, शनि चन्द्र व राहू केतु राशि भोग के अंत समय में फल प्रदान करते हैं।

	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ	पंचम	षष्टम्.	सप्तम्	अष्टम्	नवम्	दसम्	एकादश	द्वादश
सूर्य	स्थानहानि, यात्रा	भय हानि	सुख, धनलाभ	रोग, अपमान	दीनता, धनहानि	शत्रुनाश, सुख	यात्रा, धनहानि	रोग ग्रसित	कुबुद्धि, पाप	कार्यसिद्धि	धनलाभ, धर्म	धनहानि, पीड़ा
चन्द्र	पुष्टि अन्नलाभ	धनलाभ, सुख	दृव्यप्राप्ति, सुख	हानि, रोग	सुख	वित्त लाभ	सुख, लाभ	रोगचिंता, कष्ट	सम्मान	सुख, लाभ	विविधलाभ	हानि, कष्ट
मंगल	पीड़ा, भय	धनहानि, नेत्र कष्ट	धनलाभ, पराक्रम	शत्रुभय	रोगभय, लाभ	कृशता	भय, कष्ट	रोग, कुबुद्धि	सुख	शोक, चिन्ता	लाभ, सुख	हानि, शोक
बुध	दोषारोपण	धनलाभ	शत्रुभय	सुख प्राप्ति, धन	रोग, शोक	धन	हानि, कलह	धनधान्यलाभ	रोग, हानि	सर्व सुख	सुख आयवृद्धि	हानि, वाधा
गुरु	अरिष्ट भय	धनलाभ	रोग भय	व्यय, हानि	सुख, लाभ	शोक कष्ट	सुख, सम्मान	रोग, कष्ट	सुख, सम्मान	अति दीनता	सर्वसुख	देहपीड़ा, भय
शुक्र	सुख, शत्रुनाश	अर्थलाभ	अर्थलाभ	सुख, धनागम	रोग	पीड़ा, शत्रुवृद्धि	विपत्ति	सुख	लाभ	दु:ख	धनागम	लाभ
शनि	भय	शोक, धनहानि	सुख, धनलाभ	पीड़ा, शत्रुवृद्धि	धनपुत्र, कष्ट	वित्तलाभ, सुख	भय पीड़ा	रोग, शत्रुवृद्धि	हानि, पापकर्म	वैमनस्य	सुख, वित्तलाभ	क्लेश, अनर्थ
राहू	कष्ट, हानि	व्यय, चिन्ता	धनागम, निरोग	वैर, शोक	हानि, शोक	लक्ष्मी प्राप्ति	विपत्ति	रोगभय	पापरति	कलह	धनलाभ, खुशी	कष्ट, हानि
केतु	रोगभय	वैर, हानि	सुख, लाभ	भय, कष्ट	धनहानि, शोक	विजय, सुख	दुगर्ति, कष्ट	पीड़ा, हानि	पापरति	भय, शोक	सुयश, धनलाभ	वैर, कष्ट

मांगलिक कार्यों में त्याज्य २१ दोष

[१] **पंचांग शुद्धि का अभाव** – इसका विवरण विवाह मुहूर्त्त पृष्टों पर दिया गया है।

[२] **संक्रान्ति दिन एवं पुण्यकाल** – जब कोई ग्रह एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करता है, उसी का नाम संक्रान्ति है। परन्तु केवल सूर्य द्वारा राशि परिवर्तन करने की घटना के दिन का नाम संक्रान्ति ही लोक व्यवहार में प्रसिद्ध है। मकर संक्रान्ति के एक दिन पहले से एक दिन बाद तक अर्थात तीन दिन त्याज्य हैं। अन्य संक्रान्तियों में संक्रान्ति दिन ही त्याज्य है। पुण्यकाल– यदि सूर्यास्त के बाद कर्क या मकर संक्रान्ति (अर्की) हो तो दूसरे दिन स्नान-दान पुण्यकाल होता है। यदि सूर्यास्त के पहले कर्क या मकर संक्रान्ति (अर्की) हो तो उसी दिन स्नान-दान पुण्यकाल होता है। मेष, वृषादि अन्य संक्रान्तियों में अर्की के १६ घटी पहले से १६ घटी बाद तक पुण्यकाल होता है। परिहार – कोई परिहार नहीं।

[३] **पाप षड्वर्ग में लग्न** – १. होरा, २.देष्काण, ३. सप्तमांश, ४. नवमांश, ५. द्वादशांश एवं ६. त्रिशांश, को षड्वर्ग कहते हैं। यदि लग्न इन षड्वर्गों में से अधिकांश पाप ग्रहों के घर में में हो तो यह दोष होता है। परिहार – सूर्य चन्द्र बली लग्न से दोष परिहार हो जाता है।

[४] **पाप नवांश दोष** – यदि लग्न किसी पाप ग्रह के नवांश में हो तो यह दोष होता है। परिहार – यदि बुध, गुरु शुक्र में से कोई केन्द्र-त्रिकोण में हो तो नवांशजन्य दोष निवार्य हो जाता है।

[५, ६] **लग्न से छटें शुक्र व अष्टम मंगल** – लग्न से छठें, आठवें शुक्र एवं अष्टम् भाव में मंगल अत्यंत दोष कारक कहा गया है– छटें, आठवें शुक्र का परिहार– नीचराशिगते शुक्रे शत्रुक्षेत्रगतेपि वा। भृगु षट्कोत्थितो उदोषो नाश्ति तत्र न संसयः॥ भावार्थ– यदि शुक्र नीच, शत्रु क्षेत्री, या अस्त हो तो षष्टम –अष्टम दोष नहीं होता है। अष्टम मंगल का परिहार– अस्तगे नीचगे भौमे शत्रु क्षेत्रेगतेऽपि वा। कुजाष्टमोद्भवो दोषो न किंचिदपि विद्यते॥ भावार्थ– यदि मंगल नीच, शत्रु क्षेत्री, या अस्त हो तो अष्टम भौम दोष नहीं होता है।

[७] **लग्न कर्तरी दोष** – यदि लग्न के पहले वाली राशि में मार्गी एवं बाद वाली राशि में वक्री पाप ग्रह हों तो वे लग्न को केंची की तरह काटते हैं, इसलिए इसे लग्न कर्त्तरी दोष कहा जाता है। परिहार – यदि कर्तृरी दोष कारक ग्रह नीच, शत्रुक्षेत्री, या अस्त हो तो कर्तृरी दोष का परिहार हो जाता है। इसके अलावा यदि बुध, गुरु शुक्र में से कोई केन्द्र-त्रिकोण में हो तो कर्तृरी दोष का निवारण हो जाता है।

[८] **जन्म राशिसे अष्टम लग्न** – त्याज्यं चाष्टम् लग्नमेव जननाल्लग्ननाच्च राशेस्तयोः। (पूर्वकालामृत) जन्म राशि से अष्टम लग्न मुहूर्त्त शास्त्रों में अत्यंत अशुभ कही गई है। अथवा अष्टमेश लग्न में हो तो अत्यन्त अशुभ होता है।

[९] **जन्म राशि से अष्टम चन्द** – चन्द्रोऽप्यष्टमराशिगस्तदुभयोर्नित्यं दरिद्रप्रदः। (पूर्वकालामृत) जन्म राशि से अष्टम चन्द्रमा मुहूर्त्त शास्त्रों में अशुभ कहा गया है।

[१०] **त्रिक्गत चंद्र** – लग्नाद्द्वादशगेऽथवा रिपुगते चन्द्रेऽष्टस्थे तदा। रिःफाष्टारिगचन्द्रनामक महादोषस्तयोर्मृत्युकृत्। (पूर्वकालामृत) यदि लग्न में चन्द्रमा छठें, आठवें या वारहवें भाव में हो तो यह महादोष होता है। परिहार – नीचराशिगते चन्द्रे नीचांशगतेपि वा। चन्द्रे षष्टारि-रिफस्थे दोषो नास्ति न संशया॥ भावार्थ– यदि चंद्रमा नीच, शत्रुक्षेत्री, या अस्त हो तो षष्टम – द्वादस दोष नहीं होता है।

[११] **सग्रह चन्द** – दोषः सग्रहनामको निधनकृच्चन्द्रे ग्रहेणान्विते। दोषो नेति परे जगुः शशधरे सौम्यग्रहेणान्विते।। विवाह कालीन चन्द्रमा के साथ कोई ग्रह हो तो सग्रह चन्द्र दोष होता है। कुछ आचार्यों के मत से शुभ ग्रह युति दोष कारक नहीं होती है। प्रमाण पाप युक्त नक्षत्र के साथ दिए जा रहे हैं।

[१२] **दुर्मुहूर्त्त** – इसका वर्णन आगे मुहूर्त्त परिशिष्ठ खंड में देखें। परिहार – लग्न शुद्धि अर्थात् गुरु शुक्र या बुध के केन्द्र त्रिकोणस्थ होने पर, रवियोग या अमृत-सर्वार्थ सिद्धि योग होने पर दोष नष्ट हो जाता है।

[१३] **खार्जूल (एकार्गल) दोष** – इसका वर्णन पिछले पृष्ट पर विवाह लग्न शुद्धि में दिया गया है। परिहार – यह दोष कश्मीर क्षेत्र में वर्जित कहा गया है।

[१४] **ग्रहण दूषित नक्षत्र** – सूर्य या चन्द्र ग्रहण के समय जो नक्षत्र होता है, वह ग्रहण के कारण दूषित हो जाता है। सम्पूर्ण, आधा अथवा चौथाई ग्रास होने पर क्रमशः ग्रहण के दिन से आगे के ६ मास, ३ मास, १ मास तक मांगलिक कार्यों में वर्जित कहा गया है। परिहार – यदि पूर्ण चन्द्र उस नक्षत्र को भोग ले तो उससे आगे के समयमें दोष नहींहोता है।

[१५] **उत्पात दूषित नक्षत्र**– धूम्रकेतु के उदय में, ओले गिरने में, राष्ट्रीय विपत्ति में, भूकंप, विशाल उल्कापात या अन्य आकाशीय उत्पात, अति तूफान, अति वर्षा (वाढ़) इत्यादि के समय जो नक्षत्र हो, उस नक्षत्र को समस्त मांगलिक कार्यों में अगले ६ मास तक वर्जित करना चाहिए। परिहार – यदि पूर्ण चन्द्र उस नक्षत्र को भोगे तो दोष नहीं।

[१६] **वेध दूषित नक्षत्र**– इसका वर्णन विवाह लग्न शुद्धि में दिया गया है।

[१७] **पाप युति दूषित नक्षत्र** – इसका वर्णन पिछले पृष्ट पर विवाह लग्न शुद्धि में दिया गया है।

[१८] **विष घटी** – पंचमी को हस्त नक्षत्र तथा रविवार, सप्तमी को अश्विनी नक्षत्र तथा मंगलवार, षष्ठी को मृगशिर नक्षत्र तथा सोमवार, अष्टमी को अनुराधा नक्षत्र तथा बुधवार, दशमी को रेवती-शुक्रवार, एकादशी को रोहिणी-शनिवार का योग होने पर बिष योग होता है। बिष घटी परिहार – लग्न शुद्धि अर्थात् गुरु शुक्र या बुध के केन्द्र त्रिकोणस्थ होने पर, रवियोग होने पर या अमृत-सर्वार्थ सिद्धि योग होने पर दोष नहीं।

[१९] **लग्न दोष** – लग्नांशेऽभ्युदिते तदंशपतिना दृष्टे शुभे वा शुभैः । मित्रेणापि करग्रहस्तु शुभदो नो चेत् वरस्यान्तकृत्॥ (पूर्वकालामृत) यदि लग्न पर लग्नगत नवांशेश की दृष्टि या योग हो या लग्न अथवा नवांश राशि पर शुभ ग्रहों का दृष्टि योग हो या लग्न नवांशेश के मित्र ग्रहों की लग्न पर दृष्टि हो तो इन परिस्थितियों में लग्न शुभ होती है, अन्यथा लग्न दोष होता है।

[२०] **तिथि गंडान्त, नक्षत्र गंडान्त, लग्न गंडान्त** – पूर्णा तिथियों (५, १०, १५, ३०) के अन्त की और नन्दा (१, ६, ११) के प्रारम्भ की एक-एक घटी (२४ मिनट) तिथि गंडान्त काल समस्त मांगलिक कार्यों में निषेध कहा गया हें। ज्येष्ठा, रेवती, आश्लेषा के अन्त की दो घटी (४८ मिनट) एवं मूल, अश्विनी, मघा के प्रारम्भ की दो घटी नक्षत्र गंडान्त कहलाती हैं। ये भी सर्वत्र त्याज्य हैं। कर्क, वृश्चिक, मीन के अन्त की आधी घटी (१२ मिनट) एवं सिंह, धनु, मेष के प्रारम्भ की आधी घटी (१२ मिनट) लग्न गंडान्त कहलाती है। ये भी सर्वत्र त्याज्य हैं। त्रिगंडान्त परिहार– यदि वेध सिद्ध तिथि नक्षत्रादि हों एवं गुरु शुक्र बुध केन्द्रस्थ लग्न में दोष समन हो जाता है।

[२१] **क्रान्तिसाम्य दोष काल** – जब सूर्य और चंद्रमा के बीच कांति अंतर ३१ कला के अंदर हो तब यह दोष होता है। इस महादोष का कोई परिहार नहीं है।

इस प्रकार २१ दोष सर्वत्र त्याज्य कहे गये हैं।

बली लग्न एवं शुभ योगों से अनेक अशुभ योगों का परिहार

[१] बली लग्न से अनेक दोषों का परिहार –

विवाह, मुंडन, उपनयन आदि मांगलिक कार्यों में पंचाग शुद्धि (शुभ तिथि, वार, नक्षत्र, योग एवं करण) के पश्चात लग्न शुद्धि की जाती है। लग्न शुद्धि के बिना जो कुछ भी शुभ कार्य किया जाता है, उसका फल वैसे ही व्यर्थ जाता है जैसे ग्रीष्मकाल में बिना जल के नदी। सूत्र– लग्न वीर्यं विना यत्र यत्कर्म क्रियते बुधैः। तत्फलं विलयं याति ग्रीष्मे कुसरिता यथा॥ अन्य सूत्र– सर्वे दोषाः विनश्यन्ति लग्न शुद्धिर्यदा भवेत्।

(अ) मुहूर्त्त चिंतामणि के अनुसार –केन्द्रे कोणे जीव आये रवौ लग्ने चंद्रे वापि वर्गोत्तमे वा। सर्वे दोषा नाशमायन्ति चंद्र लाभे तद्वमुहूर्त्त नवांश दोषाः॥ भावार्थ– यदि गुरु केन्द्र या त्रिकोण में हों, सूर्य ग्यारहवें भाव में हों या लग्न वर्गोत्तम या चंद्र वर्गोत्तम में हों तो समस्त दोष नष्ट हो जाते हैं। यदि चंद्र ग्यारहवें भाव में हों तो नवांश दोष भी नष्ट होकर शुभ मुहूर्त्तकाल हो जाता है।

(ब) मुहूर्त्त चिंतामणि के अनुसार –त्रिकोणे केन्द्रे वा मदनरहिते दोषशतकं हरेत्सौम्याः शुक्रो द्विगुणमपि लक्षं सुरगुरु। भवेदाये केन्द्रेऽङ्गप उत लवेशो यदि तदा समूहं दोषानां दहन इव तूलं शमयति॥ भावार्थ–यदि बुध केन्द्र या त्रिकोण में हों तो सौ दोष, यदि शुक्र केन्द्र या त्रिकोण में हों तो एक हजार दोष और यदि गुरु केन्द्र या त्रिकोण में हों तो एक लाख दोषों का नाश करते हैं। यदि लग्नेश या नवांशेश ग्यारहवें भाव में हो तो दोषों का समूह उसी तरह नष्ट हो जाता है जैसे आग से रुई का ढेर।

(स) मुहूर्त्त चिंतामणि के अनुसार– अव्दायनर्त्तुतिथि मास भपक्षदग्धतिथ्यन्ध काणवधिरांगमुखाश्च दोषा। नश्यन्ति विद्गुरु शितेष्विह केन्द्रकोणो तद्वच्च पापविधुयुक्तनवांशदोषः॥ भावार्थ– यदि बुध, गुरु शुक्र ये केन्द्र या त्रिकोण में हों तो लुप्त संवत्सरादि वर्षदोष, अयन दोष, ऋतु दोष, रिक्तादि तिथि दोष, अधिक–क्षय मासादि दोष, दग्धतिथि दोष, अंध-वधिर-कांणादि लग्न दोष एवं पापग्रह की चंद्र से युति दोष , नवांश जन्य दोष, इन सभी दोषों का नाश हो जाता है।

[२] शुभ योगों से अशुभकाल का परिहार

अयोगे सुयोगऽपि चेत् स्ययात्तदानीमयोगं निहत्यै सिद्धिं तनोति (मुहूर्त्त चिंतामणि) भावार्थ–यदि किसी अशुभ योग के समय कोई शुभ योग आ जाये तो वह समय शुभ हो जाता है। रवियोग, अमृत सिद्धियोग, सर्वार्थ सिद्धियोग, कुमार योग, सिद्धयोग एवं आनन्दादि योगों में से शुभ योग में अशुभ एवं दोष युक्त समय का समन होकर वह समय शुभ हो जाता है।

(अ) दोष समूह नाशक रवियोग– रवियोगाः स्युर्दोषसङ्घविनाशकाः (मुहूर्त्तचिन्तामणि)। सूर्ययद्दशमे षष्टे तुर्ये विंशे त्रयोदशे। नवमे चन्द्र नक्षत्रे रवियोगःइशुभप्रदः॥ अनेक दोषसङ्घानां ध्वंसकोऽय मुदाहृतः॥ (मुहूर्त्तगणपति)। रवियोग में दोषों का समूह नष्ट हो जाता है। यह प्रबल शुभ योग होता है।

(ब) दोष समूह नाशक अमृतसिद्धि योग – अमृतः सिद्धियोगः स्यात् सर्वकार्यार्थसिद्धिदः। यथा सूर्यस्तमो हन्ति दोषसङ्घास्था त्वयम्।। (मुहूर्त्तगणपति)। जिस प्रकार सूर्य अन्धकार का नाश करता है, उसी प्रकार अमृत सिद्धियोग से दोष समुदाय का नाश होकर वह समय सभी कार्यों के लिए शुभ हो जाता है।

आहुति ग्रह मुख

एक वर्ष में सूर्य का सत्ताईस नक्षत्रों में संक्रमण एक निश्चित तारीख को होता है। अत: सूर्य किस तारीख से किस तारीख तक किस नक्षत्र में रहता है, यह नीचे लिखे चक्र से स्पष्ट है। नक्षत्र संक्रमण के दिन पंचांग में संक्रमण काल देखकर सूर्य नक्षत्र का निर्धारण करना चाहिये। बीच की तारीखों में चक्र में लिखा रवि नक्षत्र निसन्देह है। पंचांग में प्रतिदिन जो नक्षत्र लिखा रहता है वह चन्द्रमा का नक्षत्र होता है। हवन के समय सूर्य एवं चन्द्र नक्षत्र निर्धारण होने पर सूर्य नक्षत्र से हवन दिन के नक्षत्र तक गिनने पर तीन-तीन नक्षत्रों में कृमश: सूर्य, बुध, शुक्र, शनि, चन्द्र, मंगल, गुरु राहू, केतु के मुख में आहुति होती है। शुभ ग्रह बुध, शुक्र, चन्द्र, गुरु के मुख में आहुति शुभ होती है उस दिन हवन से शुभफल की प्राप्ती होती है। परन्तु क्रूर ग्रह शनि, सूर्य, मंगल, राहू या केतु के मुख में आहुति अशुभ होती है। नीचे लिखे चक्र की आड़ी पंक्ति में हवन के दिन का नक्षत्र एवं खड़ी पंक्ति में अंग्रेजी तारीख के अनुसार विद्यमान सूर्य नक्षत्र लिखे हैं। विवाह गुण मिलान की तरह ही इस सारणी से आहुति ग्रह मुख जानने में गणना

आहुति हेतु ग्रह मुख चक्र

हवन दिनांक	रवि नक्षत्र ↓	चन्द्र नक्षत्र → अशि	भर	कृति	रोहि	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश	मघा	पू.फा	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वा	विशा	अनु.	ज्ये	मूल	पू.षा	उ.षा.	श्रव	धनि	शत.	पू.भा	उ.भा	रेव
१४ अप्रैल से २७ अप्रैल	अश्विनी	सू	सू	सू	बु	बु	बु	शु	शु	शु	श	श	श	चं	चं	चं	मं	मं	मं	गु	गु	गु	रा	रा	रा	के	के	के
२७ अप्रैल से ११ मई	भरणी	के	सू	सू	सू	बु	बु	बु	शु	शु	शु	श	श	श	चं	चं	चं	मं	मं	मं	गु	गु	गु	रा	रा	रा	के	के
११ मई से २५ मई	कृतिका	के	के	सू	सू	सू	बु	बु	बु	शु	शु	शु	श	श	श	चं	चं	चं	मं	मं	मं	गु	गु	गु	रा	रा	रा	के
२५ मई से ८ जून	रोहिणी	के	के	के	सू	सू	सू	बु	बु	बु	शु	शु	शु	श	श	श	चं	चं	चं	मं	मं	मं	गु	गु	गु	रा	रा	रा
८ जून से २२ जून	मृगशिर	रा	के	के	के	सू	सू	सू	बु	बु	बु	शु	शु	शु	श	श	श	चं	चं	चं	मं	मं	मं	गु	गु	गु	रा	रा
२२ जून से ६ जुलाई	आर्द्रा	रा	रा	के	के	के	सू	सू	सू	बु	बु	बु	शु	शु	शु	श	श	श	चं	चं	चं	मं	मं	मं	गु	गु	गु	रा
६ जुलाई से २० जुलाई	पुनवसु	रा	रा	रा	के	के	के	सू	सू	सू	बु	बु	बु	शु	शु	शु	श	श	श	चं	चं	चं	मं	मं	मं	गु	गु	गु
२० जुलाई से ३ अगस्त	पुष्य	गु	रा	रा	रा	के	के	के	सू	सू	सू	बु	बु	बु	शु	शु	शु	श	श	श	चं	चं	चं	मं	मं	मं	गु	गु
३ अगस्त से १७ अगस्त	आश्लेषा	गु	गु	रा	रा	रा	के	के	के	सू	सू	सू	बु	बु	बु	शु	शु	शु	श	श	श	चं	चं	चं	मं	मं	मं	गु
१७ अगस्त से ३१ अग.	मघा	गु	गु	गु	रा	रा	रा	के	के	के	सू	सू	सू	बु	बु	बु	शु	शु	शु	श	श	श	चं	चं	चं	मं	मं	मं
३१ अगस्त से १३ सित.	पू.फा.	मं	गु	गु	गु	रा	रा	रा	के	के	के	सू	सू	सू	बु	बु	बु	शु	शु	शु	श	श	श	चं	चं	चं	मं	मं
१३ सितम्बर से २७ सि.	उ.फा.	मं	मं	गु	गु	गु	रा	रा	रा	के	के	के	सू	सू	सू	बु	बु	बु	शु	शु	शु	श	श	श	चं	चं	चं	मं
२७ सितम्बर से ११ अक्टू	हस्त	मं	मं	मं	गु	गु	गु	रा	रा	रा	के	के	के	सू	सू	सू	बु	बु	बु	शु	शु	शु	श	श	श	चं	चं	चं
११ अक्टूबर से २४ अक्टू	चित्रा	चं	मं	मं	मं	गु	गु	गु	रा	रा	रा	के	के	के	सू	सू	सू	बु	बु	बु	शु	शु	शु	श	श	श	चं	चं
२४ अक्टू. से ६ नवम्बर	स्वाति	चं	चं	मं	मं	मं	गु	गु	गु	रा	रा	रा	के	के	के	सू	सू	सू	बु	बु	बु	शु	शु	शु	श	श	श	चं
६ नवम्बर से २० नवम्बर	विशाखा	चं	चं	चं	मं	मं	मं	गु	गु	गु	रा	रा	रा	के	के	के	सू	सू	सू	बु	बु	बु	शु	शु	शु	श	श	श
२० नवम्बर से ३ दिसम्बर	अनुराधा	श	चं	चं	चं	मं	मं	मं	गु	गु	गु	रा	रा	रा	के	के	के	सू	सू	सू	बु	बु	बु	शु	शु	शु	श	श
३ दिसम्बर से १६ दिस.	ज्येष्ठा	श	श	चं	चं	चं	मं	मं	मं	गु	गु	गु	रा	रा	रा	के	के	के	सू	सू	सू	बु	बु	बु	शु	शु	शु	श
१६ दिसम्बर से २९ दिस.	मूल	श	श	श	चं	चं	चं	मं	मं	मं	गु	गु	गु	रा	रा	रा	के	के	के	सू	सू	सू	बु	बु	बु	शु	शु	शु
२९ दिसम्बर से ११ जन.	पूर्वाषाढ़	शु	श	श	श	चं	चं	चं	मं	मं	मं	गु	गु	गु	रा	रा	रा	के	के	के	सू	सू	सू	बु	बु	बु	शु	शु
११ जनवरी से २४ जन.	उत्तराषाढ़	शु	शु	श	श	श	चं	चं	चं	मं	मं	मं	गु	गु	गु	रा	रा	रा	के	के	के	सू	सू	सू	बु	बु	बु	शु
२४ जन. से ६ फरवरी.	श्रवण	शु	शु	शु	श	श	श	चं	चं	चं	मं	मं	मं	गु	गु	गु	रा	रा	रा	के	के	के	सू	सू	सू	बु	बु	बु
६ फरवरी से १९ फर.	धनिष्ठा	बु	शु	शु	शु	श	श	श	चं	चं	चं	मं	मं	मं	गु	गु	गु	रा	रा	रा	के	के	के	सू	सू	सू	बु	बु
१९ फरवरी से ४ मार्च	शत.	बु	बु	शु	शु	शु	श	श	श	चं	चं	चं	मं	मं	मं	गु	गु	गु	रा	रा	रा	के	के	के	सू	सू	सू	बु
४ मार्च से १७ मार्च	पू.भा.	बु	बु	बु	शु	शु	शु	श	श	श	चं	चं	चं	मं	मं	मं	गु	गु	गु	रा	रा	रा	के	के	के	सू	सू	सू
१७ मार्च से ३१ मार्च	उ.भा.	सू	बु	बु	बु	शु	शु	शु	श	श	श	चं	चं	चं	मं	मं	मं	गु	गु	गु	रा	रा	रा	के	के	के	सू	सू
३१ मार्च से १४ अप्रैल	रेवती	सू	सू	बु	बु	बु	शु	शु	शु	श	श	श	चं	चं	चं	मं	मं	मं	गु	गु	गु	रा	रा	रा	के	के	के	सू

अग्निहोत्र मुहूर्त्त

सूर्य उत्तरायन हों, शुक्र, गुरु मंगल और च्रन्द्रमा शत्रु ग्रही, नीच, अस्त या अन्य ग्रह से पराजित न हो। तिथि :- रिक्ता छोड़कर समस्त तिथियां शुभ हैं। नक्षत्र :- कृतिका, रोहिणी मृगशिरा, पुष्य, उ.फाल्गुनी, विशाखा, ज्येष्ठा, उ.भा., उ.षा. शुभ हैं। लग्न :- कर्क, मकर, कुंभ, मीन, इन राशियों के लग्न या नवांश में या जिस राशि में चन्द्रमा हो उस लग्न में अग्न्याधान नहीं करना चाहिये। अन्य लग्न जिसमें सूर्य, चंद्र, मंगल,गुरु ये केन्द्र त्रिकोण में हों, या धनु का गुरु या मेष का मंगल लग्न में हो, या मंगल सातवें या दशम में हो , सूर्य या चंद्रमा ३, ६, ११ हो तो याज्ञिक योग होने से अग्न्याधान शुभ होता है।

अग्निवास चक्र

जिस दिन होम करना हो उस दिन यदि शुक्ल पक्ष हो तो तिथि को यथावत् लें और यदि कृष्णपक्ष हो तो तिथि में १५ जोड़कर एक जगह लिख लें। रविवार से लेकर उस दिन के वार तक गिनें। वार संख्या में तिथि संख्या जोडकर योगफल में १ और जोड लें। अब इस योगफल में ४ का भाग देवें। यदि भागफल शून्य या तीन बचे तो अग्निवास पृथ्वी पर होने से शुभ होता है। यदि भागफल एक वचे तो अग्निवास आकाश में व दो बचने पर पाताल में होता है। आकाश एवं पाताल में अग्निवास होने पर हवन नहीं करना चाहिये।

प्रस्तुत अग्निवास चक्र में हवन के दिन जो वार हो उसके नीचे, पक्ष की तिथि के सामने मिलान करने पर बिना गणित किये अग्निवास ज्ञात हो जाता है। जब अग्निवास भूमि पर हो तभी हवन करना चाहिये।

दैनिक होम एवं नवरात्रि में देवी हवन में अग्निवास का विचार करने की आवश्यकता नहीं होती है।

तिथि		वार						
शुक्ल	कृष्ण	रवि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
१	२	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
२	३	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
३,	४	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी
४	१, ५	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी
५	६	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
६	७	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
७	८	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी
८	९	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी
९	१०	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
१०	११	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
११	१२	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी
१२	१३	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी
१३	१४	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
१४	३०	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
१५	×	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी

शिववास

तिथिं च द्विगुणी कृत्य पंचभिश्च समन्वितम्। सप्तभितु हरीभ्दिगं शेषं शिववास उच्यते॥ एके कैलाश वासं च द्वितीये गौरि सन्निधौ। तृतीये वृषभारूढं चतुर्थे च सभा स्थित: ॥ पंचमे भोजने चैव क्रीड़ायां तु षष्ठमे । शुन्ये श्मशाने चैव शिव वासं च योजयेत्॥ भावार्थ- शुक्ल प्रतिपदा से तिथि संख्या गिनकर दो का गुणा कर उसमें पांच जोड़कर सात का भाग देने पर यदि शून्य शेष हो तो श्मशान, १ शेष बचे तो कैलाश, २ शेष तो गौरी के समीप, ३ शेष तो वृषारूढ़, ४ शेष में सभा में, ५ शेष में भोजन और ६ शेष हो तो शिव वास क्रीड़ा रत होता है।

शुक्ल पक्ष	कृष्ण पक्ष	शिव वास	फल
१	×	श्मशान	मृत्युतुल्य(अशुभ)
२	१,३०	गौरी के समीप	सुख-संपदा प्रद
३	२	सभा में	संताप कारक
४	३	क्रीड़ा रत	कष्ट कारक
५	४	कैलाश पर	सुख-लाभ
६	५	वृषारूढ़	अभीष्ट सिद्धि
७	६	भोजनावस्था	पीड़ा कारक
८	७	श्मशान	मृत्युतुल्य(अशुभ)
९	८	गौरी के समीप	सुख-संपदा प्रद
१०	९	सभा में	संतापकारक
११	१०	क्रीड़ा रत	कष्टकारक
१२	११	कैलाश पर	सुख-लाभ
१३	१२	वृषारूढ़	अभीष्ट सिद्धि
१४	१३	भोजनावस्था	पीड़ा कारक
१५	१४	श्मशान	मृत्युतुल्य(अशुभ)

卐 नक्षत्र मिलान गुण विवोधक चक्रम् 卐

यदि अष्टकूटीय गुणों का योग १८ से कम हो तो मिलान शुभ नहीं माना जाता है, १८ से २७ तक शुभ और २७ से अधिक अत्यंत शुभ होते है।

वधू ↓ ॐ वर →			मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुंभ			मीन		
			अश्वि.	भरणी	कृति.१	कृ. ३	रोहि.	मृग.२	मृग.२	आर्द्रा	पुन.३	पुन.१	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उफा.१	उफा.३	हस्त	चित्रा२	चित्रा२	स्वाति	वि.३	वि.१	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उषा.१	उषा.३	श्रवण	धनि.२	धनि.२	शत.	पूभा.३	पूभा.१	उ.भा.	रेवती
मेष	अश्वि.	चूचेचोला	२८	३३	२८॥	१८॥	२१॥	२२॥	२६	१७	१९	२३॥	३१॥	२८	२१॥	२५ न.	१५॥ ना.न.	११ ना.ष.	९ यो.ना.ष.	१३ ष.	२२॥	२६॥ यो.	२२॥	१८॥ ष.	२५॥ ष.	१४ ना.ष.	१३ ना.न.	२५ न.	२३॥ न.	२५	२६	२०	२०	१५ ना.	१६ ना.	१४॥ ना.द्वि.	२४॥ द्वि.	२६ द्वि.
	भरणी	लिलूलेलो	३४	२८	२९	१९	२२॥	१४॥	१८	२६	२७	३१॥	२३॥	२५॥ ग.	२० ग.न.	१८ ना.न.	२६ न.	२१॥ ष.	२० ष.	४ ग.ना.ष.	१३॥ ना.ग.	२९॥	२१॥ ग.	१७॥ ग.ष.	१७॥ ना.ष.	१९ ग.ष.	२० न.ग.	१८ ना.न.	२६ न.	२७॥	२६	१० ग.ना.यो.	१० ग.ना.यो.	२० ग.	२४ यो.	२२॥ यो.द्वि.	१७॥ ना.द्वि.	२६॥ द्वि.
	कृति.१	अ	२७॥	२९	२८	१८	१०	१६॥	२०	२०	२१	२५॥	२६॥	२३॥ ना.	१६॥ ना.न.	२० ग.न.	२०॥	१५॥	१५॥	१८	२७॥	१५॥	१९॥	१५॥	१९॥	२५॥	२४॥	१८	१२	१३॥	११॥	२५	२५	२७	१९॥	१७॥	१९॥	११॥
वृष	कृति.३	इउए	१८॥	२०	१९	२८	२०	२६॥	१७॥	१७॥	१८॥	२२	२३	२०	१८॥	२२	२२	२१	२१	२३॥	२२॥	१०॥	१४॥	२०॥	२४॥	३०॥	२०	१३॥	७॥	१२	१०	२३॥	२९॥	३१॥	२३॥	२०	२२	१४
	रोहिणी.	ओवाविवु	२३॥	२३॥	११	२०	२८	३६	२५॥	२३॥	२२॥	२६	२७	१२	१०॥	२४॥	२७	२६	२६	२०	१९	१५॥	९॥	१५॥	२९॥	२३॥	१४	१९	११॥	१६	१७	२०	२४॥	२४॥	३०॥	२७	२७	१९
	मृग.२	वेवो	२३॥	१४॥	१८॥	२७॥	३५	२८	१९	२४	२२॥	२६	१९	२१	१९॥	१५॥	२४॥	२३॥	२६	१३	१२	२५	१८॥	२४॥	२१॥	२४॥	१५	१०	१७	२१॥	२५	१३	१९	२७	२९॥	२६	१८	२७
मिथु	मृग.२	क कि	२७	१८	२२	१९॥	२७	२०	२८	३३	३१॥	१९	१२	१४	२३॥	१९॥	२८॥	३१॥	३४	२१	१४	२७	२०॥	१४	११	१४	२३	१८	२५	२०	२३॥	११॥	१३	२१	२३॥	२५॥	१७॥	२६॥
	आर्द्रा	कूघङछ	१९	२७	२१	१८॥	२४॥	२६	३४	२८	२५	१२॥	२०॥	१३॥	२३॥	२९॥	२१॥	२४॥	२४॥	२८	२१	२७	२१	१४॥	१७	६	१६	२८	२८	२३॥	२३॥	१७॥	१९	१२	१७	१९॥	२६॥	२६॥
	पुन.३	केकोह	२०	२७	२३	२०॥	२२॥	२३॥	३१॥	२४	२८	१५॥	२२॥	१७	२२॥	२६॥	२१॥	२४॥	२५॥	२७॥	२०॥	२८	२२	१५॥	२१॥	७	१४	२७	२७	२२	२३	१७	१८॥	१४	१६	१८	२८	२७॥
कर्क	पुन.१	ही	२२॥	२९॥	२५॥	२२	२४	२५	१८	१०॥	१४॥	२८	३५	२९॥	१६॥	२०॥	१५॥	१८	१९	२१	२०॥	२८	२२	२०	२६	११॥	८	२१	२१	२६	२७	२१	१२॥	८	१०	१६	२६	२५॥
	पुष्य	हूहेहोडा	३०॥	२१॥	२६॥	२३	२५	१८	११	१८	२१॥	३५	२८	३०	१९॥	१५॥	२३॥	२६	२७	१२	११॥	२६॥	२१	१७	१८	२१	१७	११	२१	२६	२५	१३	४॥	१४॥	१८	२४	१८	२७
	आश्ले.	डीडूडेडो	२६॥	२४॥	२२॥	१९	११	१९	१२	१२	१५	२८॥	२९	२८	१५	१५॥	१८॥	२१	२१	२६	२५॥	१२॥	१७॥	१५॥	२०	२६	२२॥	१६	८	१३	१३	२६	१७॥	१९॥	११॥	१७॥	२१	१३
सिंह	मघा	ममीमेमो	२०	२०	१६॥	१७॥	९॥	१७॥	२१॥	२२॥	२०॥	१६॥	१९	१६	२८	३०	२७॥	१६॥	१६॥	२१॥	२४॥	११॥	१६॥	२२॥	२५॥	३३	२५	१९	८॥	३॥	४॥	१८॥	२४॥	२५॥	१८॥	१८॥	१९॥	१३
	पू.फा.	मोटाटीटू	२६	१८	२०	२१	२३॥	१५॥	१९॥	२८॥	२६॥	२२॥	१७॥	१६॥	३०	२८	३५	२२॥	२२॥	७॥	१०॥	२५॥	१८॥	२४॥	२३॥	२५॥	१९	१७	२४	१७॥	१८॥	४॥	१०॥	१९॥	२४॥	२४॥	१७॥	२५॥
	उफा.१	टे	१७॥	२६	२०	२१	२६	२४॥	२८॥	२०॥	२१॥	१७॥	२५॥	१९॥	२७॥	३५	२८	१७	१६	१३॥	१६॥	२५॥	१६॥	२२॥	३१॥	१७॥	९॥	२५	२५	२०	२०	११॥	१७॥	११॥	१५॥	१५॥	२६॥	२५॥
कन्या	उफा.३	टोपपी	११	२२॥	१६॥	२१	२६	२४॥	३१॥	२३॥	२४॥	२०	२८	२२	१७॥	२५	१८	२८	२७	२४॥	१६॥	२५॥	१६॥	१८	२७	१३	१४	२९॥	२९॥	२४॥	२४॥	१६	१६॥	१०॥	१४॥	१७॥	२८॥	२७॥
	हस्त	पूषणठ	९	२०	१७॥	२२	२५	२६	३३	२२॥	२४॥	२०	२८	२३	१८॥	२२॥	१६	२६	२८	२८	२०	२६॥	१८॥	२०	२६	१३	१५	२७	२८॥	२३॥	२४॥	१८॥	१९	८॥	१३॥	१६॥	२६॥	२७॥
	चित्रा२	पे पो	१३	५	१९	२३॥	२०	१२	१९	२७	२५॥	२१	१२	२७	२२॥	८॥	१४॥	२४॥	२७	२८	२०	१९	२६॥	२८	११	२५	२८	१४	२२	१७	१८॥	१५	१६	२४	१६॥	१९॥	१०॥	११॥
तुला	चित्रा२	र रा	२३॥	१४॥	२८॥	२३॥	२०	१२	१३	२१	१९॥	२०॥	११॥	२६॥	२५॥	११॥	१७॥	१७॥	२०	२९	२८	२७	३४॥	२३॥	६॥	२०॥	२८	१४	२२	२५	२६॥	२३॥	१८	२६	१८॥	१२॥	३॥	१२॥
	स्वाति	रूरेरोता	२८॥	२९॥	१७॥	१२॥	१५॥	२६	२७	२६	२८	२९	२७॥	१४॥	१३॥	२५॥	२५॥	२५॥	२७॥	२१	२८	२८	२०	९	२१॥	१६॥	२३	२७	१९	२२	२३	२६॥	२१	२०	२५	१९	१९॥	१२॥
	विशा.३	तितूते	२२॥	२२॥	२०॥	१५॥	१०॥	१८॥	१९॥	२१	२१	२२	२१	१८॥	१७॥	१९॥	१७॥	२७॥	१८॥	२७॥	३४॥	१९	२८	१७	१६	२०॥	२८	२२	१४	१७॥	१७॥	३०	२४॥	२६	२०	१४	१३	४॥
वृश्चि	विशा.१	तो	१६॥	१६॥	१४॥	१९॥	१४॥	२२॥	१२	१३॥	१३॥	१९	१८	१५॥	२१॥	२३॥	२१॥	१७	१८	२७	२२॥	७	१६	२८	२७	३१॥	२२॥	१६॥	८॥	१२	१२	२५	२४	२५॥	१९॥	१९	१८	९॥
	अनुरा.	ननानूने	२४॥	१५॥	१९॥	२४॥	२७॥	२०॥	१०	१५	२०॥	२६	१८	२१	२४॥	२०॥	२९॥	२५	२५	११	६॥	२०॥	१६	२८	२८	२९॥	१५॥	१३॥	२१॥	२५	२६	१२	११	२१	२४॥	२४	१८	२७
	ज्येष्ठा	नोयायीयू	१२	१८॥	२४॥	२९॥	२२॥	२२॥	१२	२	५	१०॥	२०	२६	३१	२३॥	१६॥	१२	११	२४	१९॥	१४॥	१९॥	३१॥	३०	२८	१४	१६॥	१६॥	२०	२०	२५	२४	१८	१०	९॥	२१	२१
धनु	मूल	येयोभभी	१२	२०	२४॥	१९	१३	१६	२१	१५	१२	८	१७	२३॥	२५	१९	९॥	१३	१३	२७	२७	२१	२६	२३॥	१५॥	१५	२८	२८	२६॥	१५	१५	२०	२८॥	२१॥	१४॥	१६	२५	२६
	पू.षा.	भूधफढा	२६	१८	१८	१२॥	१८	१०	१८	२७	२७	२३	१३	१७	१९	१७	२५	२८॥	२७	१३	१३	२७	२१	१७॥	१५	१७॥	२८	२८	३४	२२॥	२३	६	१४॥	२३॥	२८॥	३०	२३	३१
	उ.षा.१	भे	२४॥	२६	१२	६॥	१०॥	१७	२५	२७	२७	२३	२३	९	८॥	२४	२५	२८॥	२८॥	२१	२१	१९	१३	९॥	२३॥	१७॥	२६॥	३४	२८	१६॥	१४॥	१५	२३॥	२३॥	२९॥	३१	३१	२३
मकर	उ.षा.३	भोजजी	२७	२८॥	१४॥	१२	१६	२२॥	२०	२२	२२	२८	२८	१४	४॥	२०	२१	२४॥	२४॥	१७	२४	२२	१६	१३	२७	२१	१६	२३॥	१७॥	२८	२६	२६॥	१७	१७	२३	३०॥	३०॥	२२॥
	श्रवण	खिखूखेखो	२७	२६	१३॥	११	१६	२५	२२॥	२१	२२	२८	२६	१५	६॥	१८॥	२०	२३॥	२४॥	१९॥	२६॥	२२	१७	१४	२७	२२	१७	२३	१४॥	२५	२८	२८	१८॥	१८	२१	२८॥	२९॥	२२॥
	धनि.२	ग गि	२०	११	२६	२३॥	२०	१२	९॥	१६॥	१५	२१	१३	२७	१९॥	५॥	१२॥	१५	१७॥	१५॥	२२॥	२४॥	२९	२६	१२	२६	२१	७	१६	२६॥	२७	२८	१८॥	२३॥	१९	२६॥	१५॥	२२॥
कुंभ	धनि.२	गु गे	२०	११	२६	३०॥	२७	१९	१२	१९	१७॥	१२॥	४॥	१८॥	२५॥	११॥	१८॥	१७॥	१९	१७	१८	२०	२४॥	२५	११	२५	२९॥	१५॥	२४॥	१८	१८॥	१९॥	२८	३३	२८॥	१८॥	७	१४
	शत.	गोसासीसू	१५	२१	२८	३२॥	२५	२७	२०	१२	१३	६॥	१४॥	२०॥	२६॥	२०॥	१२॥	११॥	८॥	२५	२५	१९	२६	२६॥	२१	१९	२२॥	२४॥	२४॥	१८	१८	२४॥	३३	२८	१९	८॥	१७	१६
	पू.भा.३	सेसोद	१८	२५	२०	२४॥	३१॥	३१॥	२४॥	१७	१७	१२	२०	१२॥	१९॥	२५॥	१६॥	१५॥	१५॥	१७॥	१८॥	२६	२०	२०॥	२६॥	११	१५॥	२९॥	३०॥	२४	२३	२०	२८॥	१९	२८	१७॥	२२॥	२०
मीन	पू.भा.१	दी	१४॥	२१॥	१६	१९	२६	२६	२५॥	१८	१८	१७	२५	१७॥	१७	२३॥	१४॥	१६॥	१६॥	१८॥	११॥	१९	१३	१९	२५	९॥	१५	२९	३०	२९॥	२८॥	२५॥	१७	७॥	१६॥	२८	३३	३०॥
	उ.भा.	दूथझञ	२४॥	१६॥	१८॥	२१	२६	१८	१७॥	२५॥	२८	२७	१९	२१	१८॥	१६॥	२५॥	२७॥	२६॥	९॥	२॥	१९॥	१२	१८	१९	२१	२४	२२	३०	२९॥	२९॥	१४॥	६	१६	२१॥	३३	२८	३५
	रेवती	देदोचाची	२५	२४॥	११॥	१४	१७	२६	२५॥	२४॥	२६॥	२५॥	२७	१४	१३	२३॥	२३॥	२५॥	२६॥	१९॥	१२॥	११॥	४॥	१०॥	२७	२२	२६॥	२९	२१	२०॥	२१॥	२२॥	१४	१६	१८	२९॥	३४	२८

वर-वधु गुण मिलान में नाड़ी आदि ज्ञान हेतु अवकहडा चक्र

अक्षर	चू चे चो,ला	ली,लू ल,लो	अ ई उ ए	ओ वा वी वू	वे वो काकी	कू घ ङ छ	के को हा ही	हू हे हो डा	डी डू डे डो	मा मी मू मे	मो टा टी टू	टे टो पा पी	पू पा ण ठ	पे पो रा री
नक्षत्र	अश्वि.	भरणी	कृति.	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	पुनर्व.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा
राशि	मेष	मेष	मे१वृ३	वृष	वृ२मि२	मिथुन	मि३क१	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह	सिं१क३	कन्या	क२तु२
वर्ण	क्षत्री	क्षत्री	क्ष१वै३	वैश्य	वै२शू२	शूद्र	शू३ब्रा१	ब्राह्मण	ब्राह्मण	क्षत्री	क्षत्री	क्ष१वै३	वैश्य	वै२शू२
वश्य	चतुष्प.	चतुष्प.	चतुष्प.	चतुष्प.	च२मा२	मानव	मा३ज१	जलचर	जलचर	वनचर	वनचर	व१मा३	मानव	मानव
योनि	अश्व	गज	मेष	सर्प	सर्प	श्वान	मार्जा	मेष	मार्जा	मूषक	मूषक	गौ	महिष	व्याघ्र
राशि स्वामी	मंगल	मंगल	मं१शु३	शुक्र	शु२बु२	बुध	बु३चं१	चन्द्र	चन्द्र	सूर्य	सूर्य	सू१बु३	बुध	बु२शु२
गण	देव	मनुष्य	राक्षस	मनुष्य	देव	मनुष्य	देव	देव	राक्षस	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव	राक्षस
नाड़ी	आदि	मध्य	अंत्य	अंत्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अंत्य	अंत्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य
हंसके	अग्नि	अग्नि	अ१भू३	भूमि	भू२वा२	वायु	वा३ज१	जल	जल	अग्नि	अग्नि	अ१भू३	भूमि	भू२वा२
युंजा	पूर्व	पूर्व	पूर्व	पूर्व	पूर्व	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य

अक्षर	रू रे रो ता	ती तू ते ता	ना नी नू ने	नो या यी यू	ये यो भ भी	भू धा फ ढ	भे भो जा जी	खी खू खे खो	ग गी गू गे	गो स सी सू	से सो दा दी	दू थ झ त्र	दे दो चाची
नक्षत्र	स्वाती	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती
राशि	तुला	तु३वृ१	वृश्चि.	वृश्चि.	धनु	धनु	ध१म३	मकर	म२कुं२	कुंभ	कुं३मी१	मीन	मीन
वर्ण	शूद्र	शू३ब्रा१	ब्राह्मण	ब्राह्मण	क्षत्री	क्षत्री	क्ष१वै३	वैश्य	वै२शू२	शूद्र	शू३ब्रा१	ब्राह्मण	ब्राह्मण
वश्य	मानव	मा३की१	कीट	कीट	नर	नर१च२	चतुष्पद	च१॥ज२॥	ज२न२	नर	न३ज१	जलचर	जलचर
योनि	महिष	व्याघ्र	मृग	मृग	श्वान	वानर	नकुल	वानर	सिंह	अश्व	सिंह	गौ	गज
राशि स्वामी	शुक्र	शु३मं१	मंगल	मंगल	गुरु	गुरु	गु१श३	शनि	शनि	शनि	श३गु१	गुरु	गुरु
गण	देव	राक्षस	देव	राक्षस	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव	राक्षस	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव
नाड़ी	अंत्य	अंत्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अंत्य	अंत्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अंत्य
हंसके	वायु	वा३ज१	जल	जल	अग्नि	अग्नि	अ१भू३	भूमि	भू२वा२	वायु	वा३ज१	जल	जल
युंजा	मध्य	मध्य	मध्य	अंत्य	अंत्य	अंत्य	अंत्य	अंत्य	अंत्य	अंत्य	अंत्य	अंत्य	अंत्य

तारा का ज्ञान – अवकहडा चक्र से वर एवं कन्या के नाम के प्रथम अक्षर से अथवा नक्षत्र से राशी, राशी स्वामी, वर्ण, योनि, गण एवं नाड़ी जानकर क्रमशः भुकूट, ग्रहमैत्री, वर्ण, योनि, गण एवं नाडी गुण मिलान संख्या ज्ञात होती है. वर की तारा के लिए वर के नक्षत्र से कन्या के नक्षत्र तक गिनने पर जो संख्या मिले उसमें ९ का भाग देने पर शेष वर की तारा होती है, इसी प्रकार कन्या की तारा जानकर ९ का भाग देने पर वर-वधू की तारा संख्या ज्ञात

प्रीति (मित्र) षड़ाष्टक						वैर षड़ाष्टक					
मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	तुला	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	तुला
वृश्चि	तुला	मकर	धनु	मीन	वृष	कन्या	धनु	वृश्चिक	कुम्भ	मकर	मीन

भुकूट गुण ७

ॐ	वर राशि											
कन्या	राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	धनु	मक	कु.	मी.
	मे.	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०
	वृ.	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७
	मि.	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७
	क.	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०
	सिं.	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०
	क.	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७
	तु.	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०
	वृ.	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०
	धनु	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७
	मक	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७
	कु.	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०
	मी.	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७

वर का वर्ण

कन्या का वर्ण	वर्ण	ब्रा.	क्ष.	वै.	शूद्र
	ब्राह्मण	१	०	०	०
	क्षत्रिय	१	१	०	०
	वैश्य	१	१	१	०
	शूद्र	१	१	१	१

कन्या वश्य	वर का वश्य				
	चतु	मा	जल	वन	कीट
चतुष्पद	२	१	१	०	१
मानव	१	२	१	०	१
जलचर	१	१	२	१	१
वनचर	०	०	१	२	०
कीट	१	१	१	०	२

४ वर की योनि

कन्या की योनि	योनि	अश्व	गज	मेष	सर्प	श्वा	मा	मूष	गौ	महि	व्या	मृग	वान	नकु	सिंह
	अश्व	४	२	३	२	२	३	३	३	०	१	३	२	२	१
	गज	२	४	३	२	२	३	३	३	३	२	३	२	२	०
	मेष	३	३	४	२	२	३	२	३	३	१	३	०	३	१
	सर्प	२	२	२	४	२	१	१	१	२	२	२	२	०	२
	श्वान	२	२	२	२	४	१	१	२	२	१	०	२	२	१
	मार्जा	३	३	३	१	१	४	०	२	२	१	२	२	२	२
	मूषक	३	३	२	१	१	०	४	२	२	२	२	२	२	१
	गौ	३	३	३	१	२	२	२	४	३	०	३	२	२	१
	महिष	०	३	३	२	२	२	२	३	४	१	२	२	२	३
	व्याघ्र	१	२	१	२	१	१	२	०	२	४	१	१	२	२
	मृग	३	३	३	२	०	२	२	३	२	१	४	२	२	२
	वानर	२	२	०	२	२	२	२	२	२	१	२	४	२	२
	नकुल	२	२	३	०	२	२	२	२	२	२	२	२	४	२
	सिंह	१	०	१	२	१	२	१	१	३	२	२	२	२	४

५. ग्रह मैत्री — वर राशि स्वामी

कन्या के राशि स्वामी	स्वामी ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
	सूर्य	५	५	५	४	५	०	०
	चंद्र	५	५	४	१	४	॥	॥
	मंगल	५	४	५	॥	५	३	॥
	बुध	४	१	॥	५	॥	५	४
	गुरु	५	४	५	॥	५	॥	३
	शुक्र	०	॥	३	५	॥	५	५
	शनि	०	॥	॥	४	३	५	५

३. वर की तारा संख्या

कन्या	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	३	३	१ ॥	३	१ ॥	३	१ ॥	३	३
२	३	३	१ ॥	३	१ ॥	३	१ ॥	३	३
३	१ ॥	१ ॥	०	१ ॥	०	१ ॥	०	१ ॥	१ ॥
४	३	३	१ ॥	३	१ ॥	३	१ ॥	३	३
५	१ ॥	१ ॥	०	१ ॥	०	१ ॥	०	१ ॥	१ ॥
६	३	३	१ ॥	३	१ ॥	३	१ ॥	३	३
७	१ ॥	१ ॥	०	१ ॥	०	१ ॥	०	१ ॥	१ ॥
८	३	३	१ ॥	३	१ ॥	३	१ ॥	३	३
९	३	३	१ ॥	३	१ ॥	३	१ ॥	३	३

६.गण कूट

	वर का गण		
कन्या गण	देव	मनु	राक्ष
देव	६	५	१
मनु	६	६	०
राक्ष	०	०	६

८. नाड़ी कूट

	वर की नाड़ी		
कन्या नाड़ी	आ.	म.	अं
आदि	०	८	८
मध्य	८	०	८
अन्त्य	८	८	०

५. निसर्ग ग्रह मैत्री

ग्रहमैत्री	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
मित्र	चं.मं.गु.	सूर्य,बुध	सू.चं.गु.	सू.शु.	सू.चं.मं.	बु.श.	बु.शु.
सम	बुध	अन्य ग्रह	शुक्र,शनि	मं.गु.श.	शनि	मं.गु.	गुरु
शत्रु	शुक्र,शनि	----	बुध	चंद्र	बु.शु.	सू.चं.	सू.चं.मं.

अष्टकूट मिलान से विचारणीय विषय

वर्ण से वर-वधू के मध्य आपसी तालमेल, वश्य से परस्पर आदर भाव, तारा से स्वास्थ्य, योनि से सामजस्य, ग्रहमैत्री से वौद्धिक स्तर पर तालमेल, गण से आपसी मिजाज, भकूट से पारिवारिक मेलजोल, नाड़ी से परस्पर भौतिक स्वास्थ्य तालमेल का विचार किया जाता है।

तीन प्रकार के विष कन्या योग

१.सूर्य भौमार्कि वारेषु, तिथि भद्रा शताधिकम्।
आश्लेषा कृतिका चेत् स्यात्तत्र जाता बिषाङ्गना॥

यदि कन्या के जन्म के समय २ तिथि, आश्लेषा नक्षत्र और शनिवार हो या ७ तिथि, कृतिका नक्षत्र और शनिवार हो या ७,१२ तिथि, शतभिषा नक्षत्र और मंगलवार हो या १२ तिथि, विशाखा नक्षत्र और रविवार का योग हो तो

॥ विषकन्या योग ॥

तिथि	२	७	७, १२	१२
वार	शनिवार	शनिवार	मंगलवार	रविवार
नक्षत्र	अश्लेषा	कृतिका	शतभिषा	विशाखा

२. जनोर्लग्ने रिपुक्षेत्रे, संस्थितः पाप खेचरः।
द्वौ सौम्यावपि योगेश्मिन्, संजाता बिषकन्यकः॥

जिस कन्या के जन्म लग्न में एवं रिपु(छटे) भाव में पापग्रह (सूर्य,क्षीण चन्द्र, मंगल,शनि, राहू, केतु)हों एवं दो शुभ ग्रह हों तो बिषकन्या योग होता है। यदि पापग्रहों के साथ दो से अधिक शुभ ग्रह हों तो बिषकन्या योग नहीं होता है।

३. लग्ने शनैश्चरो यस्याः, सुतेऽर्को नवमे कुजः।
बिषाख्या सापि नोद्वाह्या त्रिविधा बिषकन्यकाः॥

यदि कन्या के लग्न में शनि, पांचवें सूर्य, नवें मंगल हो तो बिषकन्या होती है।

बिषकन्या योग परिहार

सावित्र्यादि व्रतं कृत्वा, वैधव्य विनिवृत्तये।
अश्वत्थादिभिरूद्वाह्य, दद्यात्तां चिरजीविने॥

ऐसी कन्या को ज्येष्ठ शुक्ल १४ को सावित्री का व्रत करने पर दोष शांत हो जाता है। विषकन्या का सर्वप्रथम पीपल से विवाह करके, जिस वर की कुण्डिली में अधिक आयु का योग हो ऐसे वर से विवाह करने की शास्त्राज्ञा है।

विवाह में कुंडली मिलान

जन्म राशि से मिलान करें या नाम राशि से ?

कार्य के अनुसार जन्म राशि या नाम राशि मुहूर्त्त में विचार

(अ) **विवाहे सर्वमांगल्ये, यात्रादौ ग्रहगोचरे।**
जन्मराशेः प्रधानत्वं, नाम राशिं न चिंतयेत्॥

भावार्थ – विवाह एवं अन्य मांगलिक कार्य, यात्रा एवं गोचर ग्रह फलादेश करने में जन्म राशि से ही विचार करना चाहिए।

(ब) **देशे ग्रामे गृहे युद्धे, सेवायां व्योहारके।**
नाम राशे प्रधानत्वं, जन्म राशिं न चिंतयेत्॥
काकिण्यां वर्गशुद्धौ च, वादे द्युते स्वरोदये।
मंत्रे पुनर्भूवरणे च, नाम राशेः प्रधानता॥

भावार्थ – देश या ग्राम में निवास हेतु कांकिणी विचार, गृह प्रवेश, वाद-विवाद, नौकरी, एवं दैनिक व्यवहार के कार्यो में नाम राशि से विचार करना चाहिये।

यदि वर या वधु में से किसी की जन्म राशि ज्ञात न हो तव क्या करें ?

मुहूर्त्त सग्रह दर्पण (वसिष्ठ)–

अज्ञात जन्मनां नृणां, नाम्नि भं परिकल्पयेत्।
तैनेव चिंतयेत् सर्वं, राशि कूटादि जन्मवत्॥९०॥
जन्मभं जन्म धिष्णयेन, नाम धिष्णयेन नामभम्।
व्यत्ययेन यदा योज्यं, दम्पत्योर्निधनं भवेत्॥९१॥

भावार्थ :- वर वधु में से किसी एक की अज्ञात जन्म राशि होने पर दोनों के प्रचलित नाम राशियों से कुंडली मिलान देखना चाहिये, अन्यथा अनिष्ट की संभावना होती है।

कितने गुण मिलने पर शुभ मिलान का आदेश करें ?

अष्टकूटों के कुल गुण ३६ में से आधे १८ गुण मिलान होने पर शुभ होने की परम्परा है। मुहूर्त्त गणपति के श्लोक क्रमांक १३ में –

गुणाधिको समुद्वाह कर्त्तव्यो वर कन्ययोः।।

यह लिखकर केवल अधिक गुण मिलान का आदेश किया है। न्यूनतम गुण संख्या का स्पष्ट उल्लेख नहीं है। मुहूर्त्त चिंतामणि के किसी भी श्लोक में न्यूतम् गुण मिलान संख्या का आदेश नहीं है। इसकी श्री योगेश्वर पाठक की टीका में न्यूनतम् १८ गुण का एक श्लोक मिला है –

अशुभोऽष्टादशाल्पश्चेत्, शुभस्त्वष्टादशाधिकः।
गुणयोगः शुभोऽतीव, सप्तविंशाधिकः स्मृतः॥

अन्यत्र सूत्र : – **गुणै षोडशभिर्निन्दं, मध्यमा विंशतिस्तथा।**
श्रेष्ठं त्रिशद् गुणं यावत्, परतस्तूत्तमोत्तमः॥

भावार्थ :- १६ तक गुण मिलान निंदनीय हैं। १७ से २० तक गुण मिलान मध्यम हैं। २३ तक गुण श्रेष्ठ हैं। २३ से अधिक गुण मिलान उत्तरोत्तर उत्तम हैं। (मंगलीक, षडाष्टक इत्यादि का सपरिहार शुभ हो तो उसके वाद शुभ कुंडली मिलान का आदेश करें)

नाड़ी दोष परिहार

(१) – **मुहूर्त्त संग्रह दर्पण**– विवाह प्रकरण, श्लोक ८४

नाड़ी दोषस्तु विप्राणां, वर्ण दोषस्तु क्षत्रिणः।
गण दोषस्तु वैश्यानां, योनि दोषस्तु पाद्जान्॥८४॥

भावार्थ : – ब्राम्हण वर्ण के लिये नाड़ी दोष, क्षत्रिय को वर्ण दोष, वैश्य के लिये गणदोष और क्षुद्रों को योनि दोष त्याज्य है।

(२) – **राश्यैक्ये चेद् भिन्नमृक्षं द्वयोः, स्यान्नक्षत्रैक्ये राशि युग्मं तथैव।**
नाड़ी दोषो नो गणानां च दोषो, नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभं स्यात्॥८८॥

मुहूर्त्त कल्पद्रुमः– ऋक्षं भिन्नं राशिरोयदि स्याद, राशि द्वन्द्वं चैकमृक्षं यदापि।
नक्षत्रैक्ये पादभेदो यदि स्यान्, नाड़ी दोषो नो गणास्यापि दोषः॥१९॥

भावार्थ– यदि वर एवं कन्या की राशी एक ही हो तथा नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों अथवा नक्षत्र एक ही हों तथा नक्षत्र चरण भिन्न-भिन्न हों तो नाड़ी और गण दोष नहीं होता है।

(३) **ज्योतिष चिंतामणिः– रोहिण्यार्द्रा मृगेन्द्रागनी पुष्य श्रवण पौष्णभम्।**
अहिर्बवुध्न्यर्क्षमे तेषां नाड़ी दोषो न विद्यते॥

भावार्थ – रोहिणी, मृगशिर, आर्द्रा, ज्येष्ठा, कृतिका, पुष्य, श्रवण, रेवती एवं उत्तराभाद्रपद नक्षत्रों में दोनों का एक नक्षत्र हो तो नाड़ी दोष नहीं होता है।

(४) – **हेमाज्य रत्नगोदानं मृत्युंजय जपं तथा।**
कुर्यादावश्यके द्वाहे नाड़ी दोषापनुत्तये॥

भवार्थः– अति आवश्यकता में स्वर्णादि रत्न एवं गोदान तथा मृत्युंजय जाप कराने से नाड़ी दोष की शान्ति कराई जा सकती है।

दुष्ट भकूट – षडाष्टक, नवमपंचम एवं द्विर्द्वादशदोष परिहार

यदि वर एवं कन्या की राशियां परस्पर छटवीं-आठवीं, नवम-पंचम या द्वितीय-द्वादश हो तो मिलान निषेध होता है।

परिहार –(१) प्रोक्ते दुष्टभकूटेति राश्योरेकाधिपत्यके।
मैत्र्या चोद्वाहनं श्रेष्ठं ह्येकनाडी न चेत्तयोः॥
राशिपौ वैरभावेऽपि मैत्रो चेत् स्यात्तदंशयोः।
नाड़ी पश्येच्च ताराणां शुद्धमुद्वाहनं शुभम्॥

यदि वरकन्या की राशियों का स्वामी एक ग्रह हो या परस्पर मित्रता हो या दोनों की नाड़ी एक न हो तो दुष्टकूट दोष न होकर मिलान शुभ होता है। इसी प्रकार यदि वरकन्या के नवांश स्वामियों में मित्रता तथा राशि नाथों में शत्रुता रहने पर भी नाड़ी एवं तारा शुद्धि हो तो विवाह शुभ होता है।

(२)**मुहूर्त्तगणपतिः– ताम्रं द्विर्द्वादशे दद्यात् सुवर्णं च षडष्टके।**
गोयुग्मं नवपंच्याख्ये स्वर्णं वर्णादिदूषणे॥

द्विर्द्वादश योग में तांबा, षडाष्टक में सोना, नवमपंचम दोष में दो गायें एवं वर्णादि दोष में सोना दान कर विवाह शुभ होता है।

मंगलीक योग एवं परिहार

लग्ने व्यये च पाताले, जामित्रे चाष्टमे कुजे।
कन्या भर्तुर्विनाशाय, भर्ता कन्या विनाशदः॥

अर्थात लग्न या चंद्र से १, ४, ७, या १२ वें भाव में मंगल होने पर जन्म कुंडली मंगलीक होती है। कन्या के मंगलीक हाने पर वर को हानि या वर के मंगलीक होने पर कन्या को हानिकारक होता है।

(१) **कुज दोष वती देया, कुज दोष वते किल।**
नास्ति दोषो चानिष्टं दम्पत्यो सुख वर्धनम्॥

भावार्थ– वर कन्या दोनों के मंगलीक होने पर विवाह शुभ है।

(२) **शनि भौमोऽथवा कश्चित्, पापो व तादृशो भवेत्।**
तेष्वेव भवनेष्वेव, भौम दोष विनाश कृत्॥

भावार्थ– यदि एक की जन्म कुण्डली में मंगल दोष हो और दूसरे की कुण्डली में उन्हीं स्थानों में मंगल, शनि, सूर्य, राहू, केतु पाप ग्रह हो तो मंगल दोष भंग हो जाता है।

(३) **राशीमैत्रं यदा याति गणैक्यं वा यदा भवेत्।**
अथवा गुण बाहुल्ये भौम दोषो न विद्यते॥

भावार्थ– यदि राशि मैत्री एवं एक ही गण हो या २७ से अधिक गुण मिले हों तो मंगल दोष अविचारणीय होता है।

(४)**ज्योतिष रत्नमाला :– सप्तमे वाऽष्टमे भौमे, गुरुणा चेन्निरीक्षितः।**
तदा तु सर्वसौख्यं स्यात्, भौमदोषो विनश्यति॥

भावार्थ :– सप्तम् या अष्टम् में वैठे मंगल पर यदि गुरु की दृष्टि हो तो मंगल दोष समाप्त होकर सर्व सुख प्रदायक हो जाता है।

(५) **अस्त नीचस्थ संधिश्च, बलहीनं भौमः यदा।**
जीव पर्श्योयुर्तिराहु, भौम दोषो तदा नहि॥

भावार्थ– अस्त, संधिगत या नीच राशि गत, इस प्रकार बलहीन मंगल का दोष नगण्य होता है, अथवा गुरु से दृष्ट या राहु से युत मंगल की स्थिति में भी मंगल दोष नहीं होता है।

(६) **अजे लग्ने व्यये चापे, पाताले वृश्चिके कुजे।**
द्यूने मृगे कर्कीचाष्टौ, भौमदोषो न विद्यते॥

भावार्थ– यदि मेष राशि का मंगल लग्न में, वृश्चिक का चौथे भाव में,मकर का सातवे में, कर्क का आठवे में या धनु का मंगल वारहवे भाव में हो तो भौम दोष नहीं होता है।

ग्रह मैत्री से गण, योनि, वर्ण एवं षडाष्टकदोष परिहार

बृहज्जयोतिःसार–गणदोषो योनिदोषो वर्णदोषः षडाष्टकम्।
चत्वारि नैव दुष्यंति, राशी मैत्री यदा भवेत्॥

ग्रह मैत्री होने पर चारों दोष शान्त होकर विवाह शुभ होता है। गण दोष विशेष में – मैत्र्यां राशीशयोरंशस्वामिनोर्वरकन्ययोः। न तत्र गणदोषः स्वाद्विवाहः शुभदो मतः॥ अर्थात यदि वरकन्या के राशि या नवांश के स्वामियों में मित्रता हो तो गणदोष नहीं होता है।

विवाह लग्न शोधन विधि

(१) मुहूर्त्त ग्रंथों के अनुसार विवाह लग्न से ३, ६, ८, ११ वें सूर्य, राहू, केतु व शनि शुभ होते हैं। ३, ६, ११ वें मंगल, २, ३, ११ वें चंद्र, १, २, ३, ४, ५, ६, ९, १०, ११ वें गुरु तथा बुध तथा १, २, ४, ५, ९, १०, ११ वें स्थान में शुक्र शुभ होते है।

(२) त्रिविक्रम संहिता के अनुसार –

त्याज्या लग्ने अब्दयो मंदः षष्टे शुक्रेन्दु लग्नपाः।

रन्ध्रे चंद्रादयः पंच, सर्वे अब्ज गुरु समौ॥

भावार्थ– लग्न में चंद्र या पापग्रह न हों, लग्न से छटे घर में शुक्र चंद्र या लग्नेश न हों, आठवें स्थान में चंद्र, मंगल, बुध, गुरु शुक्र व लग्नेश न हों सप्तम् भाव में कोई भी ग्रह नहीं होना चाहिए। परिहार स्वरूप सातवें चंद्र तथा गुरु सम फल करते हैं, १२वें शनि, ३ रे शुक्र, चतुर्थ में राहू, दशम भाव में मंगल का दोष यथोचित दानादि से शांति हो जाती है। इसलिये पंचांग में विवाह लग्न के साथ जहां दान लिखा हो वहां दानादि करवाना चाहिए।

(३) लग्न कर्तृरी दोष, अष्टम मंगल, छटें–बारहवें चंद्र, एवं छटें–आठवें शुक्र इत्यादि दोषों का परिहार संबंधित ग्रह के निर्बल होने या बुध–गुरु–शुक्र के केन्द्र या त्रिकोण में हो जाता है।

विवाह लग्न में पंचेष्ठ बल – लग्न में ग्रहों के जो शुभ स्थान बताये गये हैं, उनमें ग्रह रहने पर प्रत्येक ग्रह को एक बल प्राप्त होता है। लग्न में सूर्यादि ९ ग्रहों में से कम से कम ५ ग्रह शुभ स्थान में होने पर लग्न को ५ अंक बल प्राप्त होने पर लग्न ग्राह्य हो जाती है। इसे ही पंचेष्ट बल कहते हैं।

विवाह लग्न में विंशोपक बल – उपरोक्त पंचेष्ट बल पद्धति में प्रत्येक ग्रह को एक समान बली माना गया है, जवकि वास्तव में प्रत्येक ग्रह का नैसर्गिक बल पृथक–पृथक होता है । मुहुर्त चिंतामणि के अनुसार चंद्र बल–५, सूर्यबल–३।३०, मंगलबल–१।३०,गुरुका बल–३, शनि, राहू, और केतु का बल मंगल के समान (डेढ़–डेढ़) होता है। नैसर्गकि बल लेने के कारण विंशोपक पद्धति, पंचेष्ट से सूक्ष्म है। समस्त ग्रहों के नैसर्गिक बल का योग २० होने से यह विंशोपक कहलाता है। इस पद्धति में १० बल प्राप्त होने पर लग्न ग्राह्य हो जाती है।

विवाह मुहूर्तों में १० दोष – (१) लत्ता (२) पात (३) युति (४) वेध (५) जामित्र (६) मृत्युवाण (७) एकार्गल (८) उपग्रह (९) क्रान्सिाम्य और (१०) दग्धा तिथि, कृमानुसार दश दोष होते हैं। सीधी रेखा (।) दोष अभाव अर्थात् गुण की सूचक है तथा वक्र रेखा (ऽ) दोष सूचक होती है।

गोधूलि लग्न

कुलिकः क्रांतिसाम्यं च लग्ने षष्ठाष्टमे शशी।

तदा गोधूलिका त्याज्यः पंच दोषश्च दूषितः।।

विवाह मुहूर्त्तों में पंचांग शुद्धि के साथ–साथ लग्न में चन्द्र एवं पापग्रह शुद्धि, षष्ठ भाव में चन्द्र शुद्धि तथा अष्टम में चन्द्र–मंगल शुद्धि देखकर तथा क्रांतिसाम्य काल छोड़कर गोधूलि लग्न स्वीकार की गई है। गुरुवार को सूर्यास्त के उपरान्त एवं शनिवार को सूर्यास्त के पहले कुलिक होने से उस समय गोधूलि लग्न त्याज्य है।

गोधूलि लग्न समय– सूर्यास्त काल से आधा घटि (१२ मिनट) पहले व १२ मिनट वाद तक, जिस समय गाय आदि चौपाये अपने–अपने घरों को लौटते हुए अपने खुरों से मार्ग में धूल उड़ाते हुए आते हैं, उस काल को मुहूर्त्त शास्त्रों में गोधूलि कहा है।

विवाह आदि शुभ मुहूर्त्तों में पंचांग शुद्धि

(१) तिथि शुद्धिः–

जन्म तिथि, माता पिता का श्राद्ध दिन, रिक्ता तिथियां, अमावस्या, तिथि क्षय, तिथि वृद्धि, को त्यागकर अन्य तिथियां मांगलिक कार्यों में शुभ होती हैं। या जिस मुहूर्त्त में जिन तिथियों को ग्राह्य किया गया हो वे तिथियां ।

(२) वार शुद्धि–

अशुभ या क्रूर ग्रह के वारों जैसे रवि, मंगल एवं शनि को छोड़कर शेष चारों वार मुहूर्त्त शास्त्रों में शुभ कहे गये हैं। या जिस मुहूर्त्त में जिन वारों को ग्राह्य किया गया हो वे वार।

(३) नक्षत्र शुद्धि–

जन्म नक्षत्र में मांगलिक कार्य वर्जित होता है। एवं जिस मुहूर्त्त में जिन नक्षत्रों को ग्राह्य किया गया हो वे नक्षत्र।

(४) योग शुद्धि–

व्यतिपात योग का सम्पूर्ण काल, परिघ योग का पहला आधा भाग, व्याघात योग के प्रारम्भ की ९ घटी, गण्ड एवं अतिगण्ड योग के प्रारम्भ की ६ घटी, शूल योग के प्रारम्भ की ५ घटी, बिषकुंभ एवं वज्र योगों के प्रारम्भ कीं ३ घटी समस्त मांगलिक कार्यों में त्याज्य होतीं हैं। शेष समय शुभ होता है।

(५) करण शुद्धि–

करणों में विष्टी अर्थात भद्रा काल को अशुभ माना जाता है।

भद्रा किन कार्यों में शुभ होती है ?

युद्धे, भूपतिदर्शने भयपदे घाते च पाते हठे, वैद्यस्यागमने जलप्रतरणे शत्रौः समुच्चाटने। संघट्टे गदमज्जने गजमृगोष्ट्राष्वादिके संग्रहे, स्त्रीसेवा ॠतुमज्जने च शकटे भद्रा सदा गृह्यते॥

भावार्थ – युद्ध, राजदर्शन, आक्रमण, घातकार्य, हठ, वैद्य को बुलाना, तैरना, शत्रु से मुकावला, चिकित्सा, पशुक्रय, वाहन लेना देना, प्रेम, स्नान आदि में भद्रा शुभ होती है।

भद्रा परिहार

(१) मुहूर्त्त चिंतामणिः– कुंभे कर्कद्वये मर्त्ये स्वर्गेऽब्जेक्जात्त्रयेऽलिगे।

स्त्री धनुर्जूकनक्रेऽधो, भद्रा तत्रैव तत्फलम्॥

भावार्थ– यदि कुंभ, कर्क, मीन या सिंह राशि में चंद्रमा हो तो भद्रा मनुष्य लोक में रहती है। यदि मेष, वृष, मिथुन या वृश्चिक राशि में चंद्र हो तो भद्रा वास स्वर्ग में व शेष राशियों में भद्रा पाताल में होता है। भद्रा का वास जहां होता है, वहीं उसका फल होता है। इसके अलावा दिन में तिथि के उत्तरार्ध की भद्रा और रात्री में पूर्वार्ध की भद्रा शुभ कही गई है। एवं मुहूर्त्त चिंतामणि एवं भविष्य पुराण के अनुसार ''पुच्छे जयावहाः'' अर्थात पुच्छ में अवश्य विजय एवं कार्य सिद्धि होती है।

(२) मुहूर्त्त गणपतिः– **तिथेः पूर्वार्धजा रात्रौ, दिने भद्रा परार्धजा।**

भद्रा दोषो न तत्र स्यात्, कार्येऽत्यावश्यके सति।।२२

भावार्थ – तिथि के प्रथम अर्ध भाग की भद्रा रात में तथा दूसरे अर्ध भाग की भद्रा दिन में शुभ होती है।

भद्रा का पुच्छ काल

यदि एक तिथि का औसतन भोगकाल ६० घटी मान लिया जाय तो साढ़े सात घटी का एक प्रहर बनता है। भद्रा का पुच्छकाल पक्ष एवं तिथियों के विभिन्न प्रहरों की अन्तिम तीन घटी में विद्यमान रहता है, जो कि इस कोष्टक में स्पष्ट है। **प्रहर के प्रारम्भ की गणना** तिथि के प्रारम्भ समय से की जाती है।

कृष्ण पक्ष में

तिथि	प्रहर	पुच्छ घटी
३	सातवें प्रहर	४९ घटी ३० पल से ५२ घटी ३० पल
७	दूसरे प्रहर	१२ घटी ०० पल से १५ घटी ०० पल
१०	पांचवें प्रहर	३४ घटी ३० पल से ३७ घटी ३० पल
१४	चौथा प्रहर	२७ घटी ०० पल से ३० घटी ०० पल

शुक्ल पक्ष में

तिथि	प्रहर	पुच्छ घटी
४	आठवें प्रहर	५७ घटी ०० पल से ६० घटी ०० पल
८	प्रथम प्रहर	४ घटी ३० पल से ७ घटी ३० पल
११	छटवें प्रहर	४२ घटी ०० पल से ४५ घटी ०० पल
१५	तीसरे प्रहर	१९ घटी ३० पल से २२ घटी ३० पल

विवाहाङ्ग कार्य गणेश पूजन, तेल , मण्डप

– मुहूर्त्तगणपति एवं अन्य ग्रन्थों के अनुसार, विवाह के नक्षत्र के अलावा अन्य सौम्य नक्षत्रों में (अश्विनी, भरणी,आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य और आश्लेषा नक्षत्रों को छोडकर), वरकन्या को चन्द्रवल के दिन शुभ तिथि में, गणेश पूजन, तेल, अंकुरार्पण, कंकणादि आभूषण, वेदी, एवं मण्डप रोपना चाहिए। घर से वाहर निकलते समय जो वाम दिशा पड़े, उस दिशा में चार-चार हाथ चौड़ी एवं एक हाथ ऊँची सुन्दर वेदी का निर्माण करना चाहिए। वेदी का प्रथम स्तम्भ गाढ़ते समय यदि सिंह, कन्या, तुला के सूर्य हों तो ईशान कोण में गाढना चाहिए। यदि वृश्चिक धनु मकर के सूर्य हों तो वायव्य कोण में, कुम्भ, मीन, मेष में नैऋत्य में और वृष, मिथुन कर्क के सूर्य होने पर प्रथम स्तम्भ अग्निकोण में गाढ़ना चाहिए। विवाह के दिन से सम दिनों (छटवां दिन त्यागकर) में या पांचवें-सातवें दिन शुभ नक्षत्र वार में मण्डप विसर्जन शुभ होता है।

विवाह संस्कार – शुभ मास- मेष, वृष, मिथुन, वृश्चिक, मकर एवं कुम्भ के सूर्य में। देवशयनकाल त्यागकर। शुक्र गुरुके उदयकाल में। कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी से शुक्ल पक्ष की प्रथमा तक पांच दिन छोड़कर। रोहिणी, मृगशिरा, मघा, उत्तराफाल्गुनी, स्वांति, अनुराधा, मूल, उत्तरभाद्रपद एवं रेवती (कात्तायनोक्त चार नक्षत्र अश्वि, हस्त, चित्रा, श्रव. एवं घनिष्ठा) नक्षत्रों में। व्यतिपातादि अशुभ योगों के शास्त्रोक्त अशुभकाल को त्याग कर। शकुनादि चार करण त्यागकर। लत्तादि दस दोष विचार कर विवाह शुभ है।

वधू प्रवेश मुहूर्त्त – मास– विवाह से विषम मास या २, ४, ५,६, ७, ८, १०, १२, १४ वें दिन। तिथि- १, २, ३, ५, ७, ८, १०, १२, १३, १५ शुभ हैं। भद्रा काल छोड़कर। वार- सोम, बुध, गुरु शुक्र शुभ। नक्षत्र- तीनों उत्तरा, रोहिणी, अश्विनी,हस्त, पुष्य, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा,स्वांती, श्रवण, धनिष्ठा, मूल। लग्न- २, ३, ५, ६, ८, ९, ११, १२,लग्न शुभ। केन्द्र त्रिकोण में शुभ ग्रह हों, ३, ६, ११ में अशुभ ग्रह हों, लग्न से चतुर्थ एवं अष्टम स्थान शुद्ध (ग्रह रहित) हो।

द्विरागमन मुहूर्त्त – विविध- मेष, वृश्चिक, कुंभ के सूर्य में, विवाह के एक वर्ष के अंदर या विषम वर्षों में, गुरु-शुक्र उदित हों, एवं मलमास न हो। शुभ वारों में, तीनों उत्तरा, रोहिणी, मृगशिरा, पुर्नवशु, पुष्य, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, हस्त, चित्रा, स्वाती, रेवती, अश्विनी एवं मूल नक्षत्रों में द्विरागमन शुभ है।

नूतन वध्वा: पाककर्म मुहूर्त्त – तिथि- पर्व एवं रिक्ता त्यागकर। नक्षत्र- मृगशिरा, तीनों उत्तरा, कृषानु, शाक्र, श्रुतित्रये। वार- सोम, बुध, गुरु शुक्र शुभ। लग्न- स्थिर २, ५, ८, ११ लग्न। चतुर्थ एवं सप्तम् भाव शुद्ध व वली हो। षष्ट भाव ग्रह रहित हो। ऐसे शुभ समय में नव वधू से प्रथम वार भोजन वनवाकर, देवताओं को भोग लगाकर, ब्राह्मण भोजन कराना चाहिए।

विवाह के १० दोषों का वर्णन

१. लत्ता दोष – विवाह नक्षत्र से १२ वें नक्षत्र पर सूर्य, २२ वें नक्षत्र पर चंद्र, ३ रे नक्षत्र पर मंगल, ७ वें नक्षत्र पर बुध, ६ वें नक्षत्र पर गुरु, ५ वें नक्षत्र पर शुक्र, ८ वें नक्षत्र पर शनि, ९ वें नक्षत्र पर राहु लात मारते हैं।

२. पात – चण्डायुध दोष – साध्य, हर्षण, शूल, वैधृति, व्यतिपात, या गंड योग के समाप्ती काल के समय जो नक्षत्र विद्यमान होता है, वह पात दोष से दूषित होता है।

३. पाप युति दूषित नक्षत्र दोष एवं परिहार – जिस नक्षत्र में सूर्य, मंगल, शनि, राहू या केतु होते हैं, वह नक्षत्र पाप ग्रहों से युत होने के कारण युति दूषित होता है। ऐसे नक्षत्र में मांगलिक कार्य वर्जित होते हैं।

४. वेध दोष ,एवं परिहार- नक्षत्र वेध दो प्रकार का होता है, पहला पंच शलाका और दूसरा सप्त शलाका। इस पंचांग के मुख पृष्ट पर दोनों प्रकार के वेध जानने के चक्र दिए गये हैं। पंच शलाका वेध का विचार विवाह, दान, वधु प्रवेश एवं वर वरण एवं द्विरागमन में करना चाहिए। शेष मांगलिक कार्यों में सप्त शलाका वेध से विचार करना चाहिए।

५. जामित्र दोष एवं परिहार – विवाह नक्षत्र से ५५ वें नवांश या १४ वें नक्षत्र में ग्रह होने पर जामित्र दोष होता है। शुभ ग्रह जामित्र में विवाह की परम्परा है।

६. बाण दोष – बाण पांच होते हैं। यथा रोग बाण उपनयन में, अग्नि बाण गृह निर्माण में, राज बाण राज कार्यों में, चोर बाण यात्रा में तथा मृत्यु बाण का विचार विवाह में करना चाहिए। जिस समय सूर्य का गतांश १, १०, १९ या २८ होता है उस समय मृत्यु बाण होता है।

७. खार्जूल (एकार्गल) दोष – जिस समय व्याघात, गंड, व्यतिपात, विष्कुंभ, शूल, वैधृति, वज्र, परिघ, अतिगंड में से कोई योग हो तथा सूर्य नक्षत्र से अभिजित् सहित गिनने पर चन्द्रमा व सूर्य के बीच नक्षत्र विषम संख्यक हों तो यह दोष होता है।

८. उपग्रह दोष – यदि सूर्य नक्षत्र से विवाह नक्षत्र ५, ७, ८, १०, १४, १५, १८, १९, २१, २२, २३, २४, २५ संख्या पर पड़े तो उपग्रह दोष होता है।

९. दग्धातिथि दोष – धनु व मीन के सूर्य में द्वितीया, वृष-कुम्भ में चतुर्थी, मेष-कर्क में षष्ठी, मिथुन-कन्या में अष्टमी, सिंह-वृश्चिक में दशमी, मकर-तुला के सूर्य में द्वादशी तिथि दग्ध होती है।

१० . क्रान्तिसाम्य दोष काल –जिस समय सायन सूर्य एवं सायन चन्द्र स्पष्ट का योग ६ या १२ राशि के तुल्य होता है, उस समय दोनों की क्रान्ति समान होने से यह योग क्रान्तिसाम्य कहलाता है। क्रान्तिसाम्य, सूर्य चंद्र क्रांतियों के बीच ३३ कला अंतर पर प्रारंभ और अंत होता है। कहते हैं कि अग्नि में लकड़ी जलने से बच सकती है, परन्तु क्रान्तिसाम्य काल में शुभ कर्म नहीं। यह अत्यन्त महा दोष काल होता है।

विवाह या अन्य कार्य में सूतक – अशौच निर्णय

(१) मुहूर्त्त संग्रह दर्पण, विवाह प्रकरण- **वध्वा वरस्यापि कुले त्रिपुरुषे नाशं व्रजेत् कश्चन निश्चयोत्तरम्। मासोत्तरं तत्र विवाह इष्यते शान्त्यार्थ वा सूतक निर्गमऽपरै: ।।१०३**

भावार्थ – विवाह के निश्चय हो जाने पर कन्या या वर के कुल में तीन पीढ़ी तक कोई मृत्यु को प्राप्त हो जाय तो, एक माह बाद विवाह करना शुभ है। परन्तु आवश्यकता में अशौच के बाद शान्ति करके शुभ है।

(२) मुहूर्त्त संग्रह दर्पण, विवाह प्रकरण- ब्रह्म पुराण – **व्रत यज्ञ विवाहेषु, श्राद्धे होमेऽर्चने जपे। आरब्धे सूतकं न स्याद्, अनारब्धे तु सूतकम्।।१०८ ॥ प्रारंभो वरणं यज्ञे, संकल्पो व्रत सत्रयो:। नांदीमुखं विवाहादौ, श्राद्धे पाक परिक्रिया॥१०९ ॥**

भावार्थ – व्रत, यज्ञ, विवाह, श्राद्ध, होम, हवन अनुष्ठान, जप का प्रारम्भ हो जाने के उपरान्त जन्म या मरण अशौच आ जाये तो सूतक नहीं माना जाता। ब्रह्म पुराण के अनुसार यदि पण्डित ने यजमान से मधुपर्क ग्रहण कर लिया हो तो उसके वाद सूतक नहीं माना जाता है। यज्ञ में ब्राम्हण वरण हो जाने पर प्रारंभ जानना, ब्रतबंध महायज्ञ में संकल्प हो जाने पर प्रारंभ जाना जाता है। विवाहादि का प्रारम्भ नान्दीमुख श्राद्ध से माना जाता है। यज्ञ में २१ दिन पूर्व, विवाह में १० दिन पूर्व, मुण्डन में ३ पूर्व एवं यज्ञोपवीत में ६ दिन पूर्व नांदीमुख श्राद्ध की शास्त्राज्ञा है। श्राद्ध में पाकक्रिया और ब्राम्हणों को निमंत्रण देने पर प्रारंभ माना जाता है।

लघु-गुरु मांगलिक संस्कार विभाजन

चूड़ा केशान्त सीमन्त, विवाहोपनयान बुधा:। गुरु मंगलं इत्याहुस्तद्, अन्य लघु मंगलम् ॥

भावार्थ – चूड़ाकर्म (मुंडन), सीमन्त पुंसवन, विवाह एवं उपनयन, ये चार वड़े संस्कार होते हैं तथा अन्य सभी छोटे श्रेणी के होते हैं।

अभिजित् मुहूर्त्त

जिस समय सूर्य ठीक याम्योत्तर वृत पर होते हैं वह समय मध्याह्न कहलाता है। मध्याह्न काल जानने के लिये दिनमान में ५ भाग देकर स्थानीय सूर्योदय में जोड़ लें। मध्याह्न काल से एक घटी पहले से एक घटी वाद तक का समय अभिजित् काल कहलाता है। यह नित्य प्रतिदिन शुभ समय होता है। एक घटी का मान २४ मिनट होता है। बुधवार के दिन अभिजित् मुहूर्त्त का त्याग करना चाहिये।

अबूझ एवं स्वयं सिद्ध मुहूर्त्त

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, अक्षय तृतीया, दशहरा, एवं कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा का अर्ध भाग ये साढ़े तीन स्वयं सिद्ध मुहूर्त हैं। इस दिन किसी भी शुभ कार्य के लिये पंचांग शुद्धि देखने की आवश्यकता नहीं होती है।

पंचक नक्षत्रों में क्या - क्या करना अशुभ है ?

धनिष्ठा के उत्तरार्ध से रेवती नक्षत्र तक साढ़े चार नक्षत्र का समय पंचक काल होता है। इनमें दाहक्रिया, दक्षिण दिशा की यात्रा, पलंग-पालना या खटिया का प्रथम उपयोग, घर पर छावनी डालना, मकान पर छत डालना इत्यादि कर्म पंचकों में वर्जित होते है। अन्य कार्यों में पंचकों का कोई दोष नहीं होता है।

द्विपुष्कर एवं त्रिपुष्कर योग

द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी तिथि, शनि, मंगल, रविवार, उ.फा., विशाखा, पू.भा., पुनर्वशु, कृतिका, उ.षा. नक्षत्र इन तीनों का जब योग हो तव त्रिपुष्कर नामक योग होता है। यह मृत्यु, विनाश या वृद्धि में तीन गुना फल देता है। यदि उपर्युक्त दिन व तिथियों में धनिष्ठा, चित्रा, मृगशिरा का योग हो तो द्विपुष्कर नामक योग दो गुना फल देता है।

××

क्षौरकर्म (हजामत, बाल बनवाना, नखदन्त कर्म) क्षौरकर्म में शुभवार

(१) क्षुरकर्म बुधै: प्रोक्तं त्यक्त्वा भौमं शनिं रविम् (मुहूर्त्तगणपति)। (२) ज्ञेन्दुशुक्रेज्यकानाम् (मुहूर्त्त चिन्तामणि)। मंगल, शनि एवं रविवार को छोडकर अन्य वारों अर्थात् सोम, बुध, गुरु शुक्रवार में हजामत वनवाना शुभ है। वारों के वारे में एक मत यह भी है कि, ब्राम्हण वर्ण को रविवार, क्षत्रियों को मंगलवार, वैश्य एवं क्षुद्रों को शनिवार के दिन क्षौर कर्म शुभ है।

क्षौरकर्म में सप्तवारों का फल – भानुर्मासं शनि: सप्त, भौमोऽष्टौ नाशयेत् सुखम्। वर्द्धयेद्वोधन: पंच, मासान् सप्त विशांपति: ॥ मुहूर्त्त गणपति के अनुसार रविवार में क्षौरकर्म (हजामत)बनवाने से एक मास तक, शनिवार में सात मास तक, मंगलवार में आठ मास तक सुख का विनाश होता है। बुधवार में हजामत बनवाने पर पांच मास तक, सोमवार में सात मास तक, शुक्रवार में ग्यारह मास तक सुख में वृद्धि होती है।

क्षौरकर्म में अशुभ तिथियां – अष्टमी प्रतिपत् षष्टी, रिक्ता पर्वाणि संत्येत्। चतुर्दशी त्वमावस्या क्षौरे त्याज्या तु सर्वथा। अर्थात् अष्टमी, प्रतिपदा, छट, रिक्ता, पर्व, चौदस व अमावस्या को हजामत नहीं बनवाना चाहिए।

क्षौर प्रतिबन्ध – भुक्तोऽभ्यक्तो व्रती यात्रारणोद्योगी कृताह्निक:। दत्कटाभरणी रात्रौ सन्ध्ययोरूभयोरपि॥ शुभेच्छुर्नवमे चाह्नि क्षुरकर्म न कारयेत्। प्राग्वया: स्नातको राजा योगीन्द्रो गर्भिणीपति:। सजीवत्पितृको नैते मुण्डया: प्राक्कथिता अपि॥

अर्थात् भोजन के वाद, उवटन लगाने के पहले, व्रत के दिन, यात्रा व युद्ध के समय, सन्ध्यादि करने के तत्काल वाद, दोनों संध्या के समय, रात्रि में व नवें दिन क्षौरकर्म नहीं करना चाहिए। अल्पअवस्था वाले को, स्नातक, राजा, मंत्री, योगी, गर्भवती के पति को, पिता के जीवित रहने वाले को तथा उत्कृष्ट आभूषणधरी को मुण्डन (चौलकर्म) नहीं करवाना चाहिए।

क्षौरकर्म अपवाद – अज्ञया विप्रराज्ञोवग्न्याधाने बन्धमोक्षणे। मृताशौचे तु दीक्षायां मुण्डनं स्यात्तु सर्वदा॥ उराजा या अधिकारी की आज्ञा से, अग्न्याधान्य में, जेल से छूटने में, मरण सूतक में, दीक्षा काल में यदि तिथिवार हजामत हेतु ग्रहणीय न हो तो भी मुण्डन कराना चाहिए। आधुनिक मत यह भी है कि, जो लोग प्रतिदिन हजामत बनवाते हैं, उनके लिए उपरोक्त तिथिवारों के प्रतिबन्ध नहीं हैं।

विवाह एवं अन्य मांगलिक कार्यों में १० दोष परिहार

युति दोष परिहार

मुहूर्त चिंतामणि: – **नश्यन्ति विद्गुरु सितेष्विह केन्द्र कोणे,**
तद्वच्च पाप विधु युक्त नवांश दोष:।।८९ ।।

भावार्थ– यदि बुध, गुरु या शुक्र, केन्द्र या त्रिकोण में हों तो पाप युति एवं नवांश दोष नष्ट हो जाते हैं।

मुहूर्त गणपति:– **स्वर्क्षस्थ: स्वोच्चगश्चंद्रो, मित्र क्षेत्र गतोऽपि वा।**
गुरुश्च स्वीयवर्गस्थो, बली केन्द्र गतो विधु:।।१४५
विलोकयन्ति चेद्दोषं, नाशयत्येष संग्रह:।
चंद्रर्क्षे पाप युक्कृत् स्याद्युति दोषस्तदोदित:।।१४६
धिष्णैक्ये राशि भेदेभ पापयुग् राशिगं त्यजेत्।।१४७

भावार्थ– यदि चंद्रमा स्वराशि (कर्क)या उच्च राशि (वृषभ)या मित्र राशि (मिथुन, सिंह, कन्या)में हो या बलवान होकर केन्द्रस्थ हो और उसे स्व वर्गीय गुरु की दृष्टि हो तो सग्रहचंद्र (युति दोष) नष्ट हो जाता है। यदि चंद्रमा व पाप ग्रह का एकही नक्षत्र हो परन्तु राशि भिन्न हों तो शुभ होता है।

मुहूर्त कल्पद्रुम: विवाह कुसुम श्लोक ५० –
चंद्र: सौम्येज्यान्वित: स्याच्छुभाय, नान्यै: रि:फाष्टारिगोऽपीह नेष्ट:।
पश्यंच्छीतांशुं गुरु: स्वीय वर्गे, केन्द्रे दोषं सग्रहाख्यं हिनस्ति।।५०।।

भावार्थ– यदि चंद्र की युति सौम्य ग्रहों (गुरु, शुक्र या शुभ युत बुध)से हो तो लग्न से चंद्रमा का ६.८.१२ दोष नही होता है। यदि चंद्रमा पर स्व वर्गीय गुरु की दृष्टि हो तो सग्रहचंद्र (युति दोष) नष्ट हो जाता है।

मुहूर्त प्रकाश – **स्वक्षेत्रग: स्वोच्चगो वा मित्र क्षेत्र गतो विधु:।**
युति दोषाय न भवेद्दम्पत्यो: श्रेयसे तदा।।

भावार्थ– यदि चन्द्र स्वक्षेत्री (कर्क राशि में), उच्चस्थ (वृष राशि में), या मित्र क्षेत्री (मिथुन, सिंह, कन्या राशि में)हो तो युति दोष का परिहार हो जाता है।

बहुदोष समूह परिहार

मुहूर्त्त चिंतामणि के अनुसार – **त्रिकोणे केन्द्र वा मदन रहिते दोष शतकं, हरेत्सौम्या: शुक्रो द्विगुणमपि लक्षं सुरगुरु। भवेदाये केन्द्रेऽङ्गप उत लवेशो यदि तदा , समूहं दोषानां दहन इव तूलं शमयति॥ ९१ ॥**

भावार्थ–यदि बुध केन्द्र या त्रिकोण में हों तो सौ दोष, यदि शुक्र केन्द्र या त्रिकोण में हों तो एक हजार दोष और यदि गुरु केन्द्र या त्रिकोण में हों तो एक लाख दोषों का नाश करते हैं। यदि लग्नेश या नवांशेश ग्यारहवें भाव में हो तो दोषों का समूह उसी तरह नष्ट हो जाता है जैसे आग से रुई का ढेर।

अव्दायनर्त्तुतिथि मास भपक्षदग्धतिथ्यन्ध काणवधिरांगमुखाश्च दोषा। नश्यन्ति विद्गुरुशितेष्विह केन्द्रकोणो तद्वच्च पापविधुयुक्तनवांशदोष:॥ भावार्थ– यदि बुध, गुरु शुक्र ये केन्द्र या त्रिकोण में हों तो लुप्त संवत्सरादि वर्षदोष, अयन दोष, ऋतु दोष, रिक्तादि तिथि दोष, अधिक–क्षय मासादि दोष, दग्धतिथि दोष, अंध–वधिर–कांणादि लग्न दोष एवं पापग्रह की चंद्र से युति दोष , नवांश जन्य दोष, इन सभी दोषों का नाश हो जाता है।

वेध दोष परिहार

मुहूर्त्तचिंतामणि: विवाह प्रकरणम्, श्लोक ५८ –
ऋक्षाणि क्रूर विद्धानि, क्रूर भुक्तादिकानि च।
भुक्त्वा चन्द्रेण मुक्तान, शुभार्हाणि प्रचक्षते।।५८।।

भावार्थ– जो नक्षत्र क्रूर ग्रह से वेधित, क्रूर ग्रह से भुक्त या भोग्य हो उस नक्षत्र को यदि च्रद्रमा ने भोगकर छोड़ दिया हो तो वह नक्षत्र शुभ हो जाता है।

मुहूर्त्तमार्तण्ड:– **लग्नेशे भवगे अथवा शशिनि सद्दृष्टे शुभे वाऽङ्गगे।**
होरायां च शुभस्य वा व्यध भयं नास्तीति पूर्वे जगु:।।४/१६।

भावार्थ– यदि लग्न स्वामी ग्यारहवें भाव में हो या चंद्रमा पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो या चंद्रमा को छोड़ कर शेष शुभ ग्रहों में से कोई ग्रह लग्न में हो, या लग्न में किसी शुभ ग्रह की होरा हो तो ग्रह वेध दोष नहीं होता है।

मुहूर्त्तगणपति: – **पाप वेधे च नक्षत्रं, सम्पूर्ण त्याज्यमेव हि।**
शुभ वेधे च तुर्या द्यौ:, पादयो र्द्वि तृतीय यो:।।१५/१३८
लग्ने शुभ ग्रहे वाथ, लग्नेशो लाभपोऽथवा।
सौम्यैर्दृष्टो युतो वापि, काल होरा शुभस्य वा।।१३९।।
वेध दोषस्तदा न स्याद्, विवाहादौ सतां मतम्।।१४०।।

भावार्थ– पाप ग्रह से वेधित सम्पूर्ण नक्षत्र का त्याग और शुभ ग्रह से वेधित नक्षत्र का पाद भेद होने पर नक्षत्र शुभ होताहै। यदि लग्न में शुभ ग्रह हो, लग्नेश या लाभेश पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो, लग्नेश या लाभेश से शुभ ग्रह की युति हो, या शुभ ग्रह की काल होरा हो तो विवाह आदि मांगलिक कार्यों में वेध दोष नहीं होता है।

मुहूर्त्तकल्पद्रुम:– **पीयूषांशौ शोभनै: संप्रदृष्टे, सद्धोरायां व तनुस्थे शुभेऽपि।**
लग्नेशे वा लाभगे वेधदोषो, भ्रष्टावेशो दूर दूरं प्रयाति।।१३/ ४२

भावार्थ– यदि चंद्रमा शुभ ग्रहों से दृष्ट हो और शुभ ग्रह का लग्न हो, लग्न में कोई शुभ ग्रह हो या लग्नेश लाभ स्थान में गया हो तो वेध दोष दूर हो जाता है।

मुहूर्त्त प्रकाश :– **लग्ने शुभ ग्रहो वाऽथ लग्नेशो ताभगोऽभवा।**
सौम्यैर्दृष्टो युतो वा अपि कालहोरा शुभस्य वा।।१०३।।

भावार्थ–यदि लग्न में शुभ ग्रह हो या लग्नेश ग्यारहवें भाव में हो या लग्नेश पर किसी शुभ ग्रह की दृष्टि हो या किसी शुभ ग्रह की होरा हो तो वेध दोष का परिहार होकर वेधित नक्षत्र शुभ हो जाता है।

आवश्यक कार्य में तिथि–नक्षादि बहुदोष दान पदार्थ परिहार

मुहूर्त्त गणपति: शुभाशुभ प्रकरण, श्लोक ३७,३८
तन्दुलांश्च तिथौ दुष्टे, वारे रत्नं सकाञ्चनम्।
गामृक्षे कनकं योगे, करणे धान्यमेव च॥ ३७॥
शंङ्खं रौप्य युतं चन्द्रे, तारायां सैन्धवं तथा।
नाड्यां हेमं नृपो दद्यात्, कार्ये आवश्यके यदि॥ ३८॥

आवश्यक कार्य में यदि तिथि दोष हो तो चावल दान, वार दोष में रत्न जड़ित स्वर्ण दान, नक्षत्र में गोदान, योग दूषित होने पर स्वर्ण दान, करण दोष में अनाज दान, चंद्रमा में दोष होने पर शंख दान,तारा दूषित होने पर सैंधा नमक, नाड़ी दोष होने पर स्वर्ण दान कर कार्य संपादन करना चाहिये।

मृत्युबाण दोष परिहार

मुहूर्त्त गणपति:– रात्रौ चौर रुजौ जह्याद्, दिवसे राज पंचकम्।
संध्ययो र्उभयो मृत्यु, सर्वदा वन्हि पंचकम्।।१६३

भावार्थ – रोग एवं चोर वाण रात्रि में निषिद्ध हैं। राजवाण एवं अग्निवाण दिन में त्याज्य हैं। दोनों संध्याकाल में मृत्युवाण त्याज्य हैं।

रवौ रोगं नृपं मन्दे, बुधे मृत्युं परित्यजेत्।
भौमे तु पावकं चौरं, लग्ने हीनबले न सत्।।१६४
(लग्ने पूर्ण बलो पेते, न दोष: पंचकस्य च)

भावार्थ– रविवार को रोगबाण, शनिवार को राजबाण, बुधवार को मृत्युबाण, मंगलवार को अग्निबाण तथा चोरबाण का त्याग करना चाहिये। यदि लग्न निर्बल हो तभी इन पंचबाणों का फल अशुभ होता है। यदि बली लग्न हो तो पंचबाणों का दोष नहीं होता है।

रोगे रोगं गृहे वन्हि, मार्गे तु चौर पंचकम्।
विवाहे मृत्यु संज्ञं च, सेवायां राज पंचकम्।।

भावार्थ – रोग में रोगबाण का, गृह निर्माण में अग्निबाण का, यात्रा में चोरबाण का, विवाह में मृत्युबाणका एवं नौकरी में राजबाण का त्याग करना चाहियं।

मुहूर्त्त प्रकाश:– यद्यर्कवारे किल रोग पंचकं सोमे च राज्यं क्षितिजे च वह्नि:।
शनौ च मृत्यु: सुरमंत्रिचौर्य्यं विवाहकाले परिवर्जनीयम्।।१०८

भावार्थ– रविवार को रोगबाण, सोमवार को राजबाण, मंगलवार को अग्निबाण, शनिवार को मृत्युबाण एवं गुरुवार को चोरबाण भरे हुए (सशल्य) होने से विवाह में अशुभ हैं। निष्कर्षत: इनके अलावा अन्य परिस्थितियों में पंचबाण रीते (खाली)होने से विशेष दोष कारक नहीं हैं।

रोगं चौरं त्यजेद्रात्रौ दिवा राजाग्नि पंचकम्।
उभयो: सन्ध्ययोर्मृत्यु अन्यकाले न निंदित:।।१०९।।

भावार्थ – रोग एवं चोर वाण रात्रि में निषिद्ध हैं। राजवाण एवं अग्निवाण दिन में त्याज्य हैं। दोनों संध्याकाल में मृत्युवाण त्याज्य है अन्य काल में नहीं।

नृपाख्यं नृप सेवायां गृहगोपे अग्नि पंचकम्।
याने चौरं व्रते रोगं त्यजेन्मृत्युं कर ग्रहे।।११०।।

भावार्थ – राजबाण नौकरी में, अग्निबाण घर छाने में, चोरबाण यात्रा में, रोगबाण यज्ञोपवीत में एवं मृत्युबाण विवाह में निषिद्ध है, अन्य कार्यों में निषिद्ध नहीं है।

प्रदेश भेद से लत्ता पातादि १० दोष परिहार

मुहूर्त्त चिंतामणि : – विवाह प्रकरण, श्लोक ६९ के अनुसार,
उपग्रर्क्षं कुरु वाह्लिकेषु कलिङ्ग बङ्गेषु च पातितं भम्।
सौराष्ट्र शाल्वेषु च लत्तित भं त्यजेत् तु विद्धं किल सर्व देशे॥ ६९॥

भावार्थ–लत्ता दोष मालवा व गुजरात में, पात दोष कुरुक्षेत्र एवं फिरोजपुर क्षेत्र में, एकार्गल दोष काश्मीर में, उपग्रह दोष पंजाव, हरियाणा, कुरुक्षेत्र व आगरा क्षेत्र में, युति दोष बंगाल में एवं वेध दोष सर्वत्र त्याज्य कहा गया है।

विवाह में गोचर से त्रिबल शुद्धि परिहार

(१) **सूर्य बल परिहार**

मुहूर्त्त चिंतामणि: गोचर प्रकरण, श्लोक १९ –

राश्यादिगौ रविकुजौ फलदो सितेज्यौ,
मध्ये सदा शशि सुतश्चरमेऽब्ज मंदौ ॥

भावार्थ – सूर्य और मंगल राशि के आदि भाग (प्रथम देष्काण, १ अंश से १० तक) में फल देते हैं।

गर्गाचार्य के अनुशार– **अनिष्ट स्थाने सूर्ये, शुभ राशि:पुरो भवेत्।**
त्रयोदश दिनं त्यक्त्वा, परं शुभमादिशेत ॥

अर्थात् जन्म राशि से सूर्य अशुभ स्थान में हो एवं सूर्य की अग्रिम राशि शुभ हो तो अशुभ राशि की संक्रान्ति से १३ दिन (यानि १३ अंश) पश्चात् उसे शुभ मानना चाहिए।

(२) **चन्द्र बल परिहार**

दैवज्ञकल्पद्रुम:– गर्भाधाने जन्मकाले, अभिषेके मौञ्जिबन्धने।
पाणिग्रहे प्रयाणे च , चंद्रो द्ववादशग: शुभ: ॥

अर्थात विवाह, गर्भाधान, स्त्रीप्रसंग, उपनयन, यात्रा, व्रत–उपवास आदि कार्यों में पुरुष को १२ वां चंद्र प्रशस्त है, स्त्री या वधू को नहीं।

(३) **गुरु बल परिहार**

ज्योतिर्निवंध : – रजस्वला यदा कन्या गुरु शुद्धिं न चिन्तयेत।
अष्टऽमेपि प्रकर्त्तव्यो, विवाह: स्त्रिगुणार्चनात् ॥

भावार्थ– कन्या के रजस्वलावती हो जाने पर ४, ८, १२वें गुरु तीन गुनी पूजार्चन एवं गौदान के वाद विवाह प्रसस्त है।

मुहूर्त्त चिंतामणि: – स्वोच्चे स्वभे स्वमैत्रे, वा स्वांशे वर्गोत्तमे गुरु।
रिष्फाष्टतुर्यगोऽ पीष्टो नीचारिस्थ: शुभोऽप्यसत् ॥

भावार्थ– अशुभ गुरु यदि उच्चराशि में, स्वराशि में, मित्रराशि में या स्व नवांश में हो तो वह शुभ होता है। नीचराशि में या शत्रु ग्रह की राशि में स्थित शुभ गुरु भी पूज्य होता है। विवाह संस्कार के समय यदि कन्या रजस्वला हो तो कूस्माण्ड सूक्त एवं युज्जानसूक्त से हवनादि कराकर विवाह कराना चाहिये।

अष्टकवर्ग से त्रिबल शुद्धि

सभी ज्योतिष ग्रंथों में स्पष्ट आदेश है कि गोचर की तुलना में अष्टकवर्ग शुद्धि सूक्ष्म होता है। लेकिन विस्त्रत गणना युक्त कुंडली के अभाव में वर कन्या के टीपना में सूर्य, गुरु, चंद्र की राशियों को देखकर विवाह लग्न शोधन होता रहा है। यह स्थूल साधन है। वर्तमान में कम्प्यूर प्रोग्राम, गणित करने में लगने वाले श्रम एवं समय वचाने का एक उत्तम साधन है, अत: उसमें संवंधित ग्रह के अष्टकवर्ग देखकर जातक को यदि उस राशि में **चार या चार से अधिक रेखा** प्राप्त हों तो ४, ८,१२ वें या पूज्य **सूर्य, गुरु, चंद्र शुभ होने से विवाह शुभ** कहना चाहिये।

राजमार्त्तण्ड : – सूक्ष्माष्टवर्ग संशुद्धि:, स्थूला शुद्धितु गोचरे:।
अष्टकवर्ग विशुद्धेषु, गुरु शीतांशु भानुषु।

सिंहस्थ गुरु का परिहार

मुहूर्त्त चिंतामणि: – शुभाशुभ प्रकरण, श्लोक ४९ – सिंहे गुरौ सिंहलवे विवाहो नेष्टोऽथ गोदोत्तरतश्च यावत्। भागीरथीयाम्यतटं हि दोषो नान्यत्र देशे तपनेऽपि मेषे।। ४९ मघादि पंचपादेषु, गुरु सर्वत्र निंदित: ।गंगा गोदान्तरं हित्वा, शेषांघ्रिशु न दोषक्रत्।।५०
मुहूर्त्त गणपति: सिंहराशिस्थिते जीवे, मेषेऽर्के न दूषणम।।

जव गुरु सिंह राशि में और सिंह के नवांश में हों तव केवल गोदावरी नदी से उत्तर और गंगा के दक्षिण तट पर्यन्त क्षेत्र में विवाह अशुभ है। अन्य क्षेत्र में दोष नहीं है। मघा के चारों चरण एवं पूर्वाफाल्गुनी के प्रथम चरण तक के पांच चरणों में सिंहस्थ गुरु सभी जगह त्याज्य है, परन्तु यदि मेष का सूर्य हो तो सिंहस्थ गुरु काल का किसी भी क्षेत्र में दोष नहीं है।

मकरस्थ गुरु का परिहार

मु.चिं.- रेवापूर्वे गण्डकीपश्चिमे च शोणस्योदग्दक्षिणे नीच इज्य:। वर्ज्यो नायं कौङ्कणे मागधे च गौडे सिन्धौ वर्जनीय: शुभेषु।।५२॥ भावार्थ – रेवा (नर्मदा) के पूर्व में, पटना के पास गंगा में मिलने वाली गण्डकी नदी के पश्चिम में, शोण नदी (अमरकंटक से निकलकर पटना से पहले गंगा में मिलने वाली सोन नदी) के उत्तर–दक्षिण में नीच के गुरु वर्जित नहीं हैं। यह मकर का गुरु कौङ्कण (महाराष्ट्र और गोवा के समुद्र तटीय जिले), मगध (विहार का दक्षिणी भाग), गौड (पश्चिम बंगाल), सिन्धु देश (पाकिस्तान का सिंध प्रान्त) में वर्जित है।

मु. गणपति :– मगधे गौड देशे च, सिंधु देशे च कौंकणे।
विवाहादि शुभे त्याज्यो, नान्यस्मिन् नक्रगो गुरु: ॥९२॥

भावार्थ – मकर (नीच राशि) के गुरु केवल मगध, गौड, सिंधु और कौंकण देशों में विवाहदि मांगलिक कार्य वर्जित हैं, अन्य क्षेत्रों में शुभ हैं।

कन्या के शीघ्र विवाह हेतु अनुष्ठान मंत्र

श्रीमद्भागवत् के दशम स्कन्ध के २२ वें अध्याय में दिये गये कात्यायनि देवी के मंत्र के यथा संभव संख्या में जाप करने या योग्य पंडित् से कराने पर कन्या के विवाह में आ रहीं वाधायें समाप्त होकर शीघ्र विवाह होता है। मंत्र इस प्रकार है –

कात्यायनि महामाये महायोगिन्यधीश्वरी।
नन्दगोपसुतं देवि पतिं मे कुरु ते नम: ।।

अर्थ – हे कात्यायनि देवि ! हे महामाया ! हे महायोगिनी ! हे अधिश्वरी ! आप श्री नन्दबाबा के पुत्र श्री कृष्ण को मेरा पति बनाईये। हे देवि में आपको नमस्कार करती हूँ।

वर के शीघ्र विवाह हेतु अनुष्ठान मंत्र

श्री दुर्गासप्तशती के अर्गलास्तोत्रम् का २४ वां श्लोक –

पत्नीं मनोरमां देहि, मनोवृत्तानुसारिणीम्।
तारिणीम् दुर्ग संसार, सागरस्य कुलोद् भवाम्।।

अर्थ – हे देवि ! मेरी मनोवृत्ति के अनुसार चलने वाली मनोहर पत्नी प्रदान करो जो इस दुर्गम संसार रूपी सागर से पार होने में सहायक हो तथा उत्तम कुल में उत्पन्न हुई हो।

मंत्र जाप विधि – स्नानादि से पवित्र होकर, अपने गृह में स्थित पूजाघर या पूजा स्थान में, पूर्वाभिमुख बैठकर, घी का दीपक जलाकर, श्रद्धा एवं विश्वास के ११ माला का जाप करें या ब्राह्मण से करवायें। अपवित्र रहते हुये जाप न करें।

गुरु एवं शुक्र अस्त काल में वर्जित कर्म

मुहूर्त्त गणपति के विवाह प्रकरण श्लोक क्रमांक ८० से ८४ तक तथा हेमाद्रि व निर्णयसिन्धु के अनुसार अनित्य कर्म जैसे महादान, अग्नि का आधान, यज्ञ, अपूर्व तीर्थ यात्रा एवं स्नान, अपूर्व देवता का दर्शन, वापी–तालाव निर्माणारम्भ, सुर प्रतिष्ठा, यज्ञोपवीत, सन्यास, वालक को प्रथम वार बाहर निकालना, राज्याभिषेक, प्रथम मुण्डन, कर्णवेध, सन्यास, वेदव्रत, व्रत का उद्यापन, वधू का प्रथम प्रवेश, अष्टका श्राद्ध, व्रतारम्भ, गृहारम्भ और गृहप्रवेश, विवाह, नामकरण, प्रायश्चित्त कर्म और उपाकर्म गुरु–शुक्रास्त में निषेध हैं। परन्तु अन्य मांगलिक कार्यों में गुरु–शुक्र अस्त का निषेध नहीं है।

परिहार – सामान्य परिस्थितियों में गुरु –शुकास्त दोष युक्त समय है। परन्तु अति आवश्यक परिस्थितियों में गुरु या शुक्र में से किसी एक के उदित रहने पर मांगलिक कार्य किए जा सकते हैं। प्रयोग परिजात में आचार्य लल्ल ने कहा है कि,

यद्येकस्यापि मूढ़त्वे, शुभ कर्म न दोषकृत।
द्वयो मूढत्मेवोक्तं, दोषत्वं गुरु शुक्रयो: ।।

ऐसा ही उल्लेख मुहूर्त्तचिन्तामणि की पियूषधारा टीका में भी है।

गुरु के नीचस्थ, अतिचारी, सिंहस्थ, धनाऽर्क या मीनाऽर्क में वर्जित कार्य

– यज्ञोपवीत, सन्यास, यक्ष और वेद की दीक्षा, विवाह, कर्णवेध, वास्तु पूजन, देव प्रतिष्ठा, मुण्डन, वधु प्रवेश वर्जित कहे गये हैं।

विवाह में त्रिज्येष्ठ निषेध

जन्ममासे जन्मभे च, न च जन्मदिने बुध:। ज्येष्ठमासे न ज्येष्ठस्य विवाहं कारयेत्क्वचित्। न कन्यावरयोर्ज्येष्ठे न ज्येष्ठो दोषमावहेत्।

अर्थात् जन्म मास, जनम नक्षत्र एवं जन्म वार को विवाह नहीं करना चाहिए। इसी प्रकार ज्येष्ठ मास में जेठे लडके या लड़की का विवाह न करें। ज्येष्ठ मास, ज्येष्ठ वर एवं ज्येष्ठ कन्या इन तीनों के योग होने पर तो विवाह कदापि नहीं करना चाहिए।

विवाह विषयक अन्य सूत्र

मुहूर्त्त कल्पद्रुम: – विवाह कुसुम – नैकस्य कन्या द्वितयं सहोस्थमं, देयं तथा सोदरस्य पुंसो:। शुभे न कार्यं पितृकर्म गेहे, द्विमंगलं सद्यविनाब्द भेदात् ॥३३॥

अर्थात् दो सगी बहनों का विवाह दो सगे भाइयों से नहीं करना चाहिये। ६ मासों के भीतर दो मांगलिक कार्य न करें। संवत्सर बदलने पर कर सकते हैं।

वशिष्ठ: – पुत्री विवाहात्परत: सदैव शुभप्रदं पुत्र विवाह कर्म ॥ अर्थात् पुत्री के विवाह के पश्चात् पुत्र का विवाह सब काल में शुभ होता है। इसमें ६ मास का प्रतिबंध नहीं है।

मुहूर्त्त चिन्तामणि– **सुतपरिणयात् षड्मासान्त: सुताकरपीडिनं, न च निजकुले तद्ध्वा मण्डनादपि मुण्डनम्। न च सहजयोर्दये भ्रात्रो: सहोदर कन्यके, न सहजसुतोद्वाहोऽब्दार्धे शुभे न पितृक्रिया ॥** भावार्थ लड़के की शादी के ६ माह के भीतर लड़के का विवाह नहीं करना चाहिए। और न ही अपने कुल में किसी का मुण्डन करना चाहिए। दो सहोदर वहनों का दो सगे भाईयों से विवाह नहीं करना चाहिए। ६ मास के भीतर दो वहनों का विवाह नहीं करना चाहिए। विवाहादि शुभ कार्य में माता या पिता का श्राद्ध नहीं पड़ना चाहिए।

शुभ विवाह

मुहूर्त्त वि. संवत् २०८२

शाके १९४७ (सन् २०२५-२६)

समय शुद्धि

अधिक मास - नहीं। गुरु सिंहस्थ - नहीं।
त्रयोदशदिन पक्ष -नहीं।
गुरु अस्त - दिनांक १० जून से ७ जुलाई २०२५ तक।
शुक्र अस्त - दिनांक १३ दिसंबर २०२५ से ०१ फरवरी २०२६ तक।

होलाष्टक- दिनांक २४ फरवरी २०२६ से ०३ मार्च २०२६ तक
देवशयन - दिनांक ६ जुलाई २०२५ से ०१ नवंबर २०२५ तक
धनु मलमास - दिनांक १६ दिसंबर २०२५ से १४ जनवरी २०२६ तक
मीन मलमास - दिनांक १४ मार्च २०२६ से वर्ष तक तक।

त्रिवल शुद्धि	शुभ	पूज्य	नेष्ठ
वर को सूर्य	३, ६, १०, ११	१,२,५,७,९	४,८,१२
कन्या को गुरु	२,५,७,९,११ स्व,मित्र या कर्क नवांश	१,३,६,१०	४,८,१२
दोनों को चन्द्र	१,२,३,५,६,७,९,१०,११	----	४,८,१२

गोचर			मास-तिथि वार	दिनांक	विवाह नक्षत्र	रेखा	सपरिहार शुभ लग्नें । ७ रेखा से कम की लग्नें अति आवश्यकता में ही लेवें	भद्रा, वेध, पापयुति, वेध, बाण, महापात, दग्धतिथि इत्यादि 10 दोष
गुरू	रवि	चंद्रमा						
वृष	मेष	तुला	वैशाख कृष्ण १ चंद्र	१४ अप्रैल २०२५	स्वाती	८	लग्न मिथुन प्रातः ९:४० से दिन ११:४४ वजे । गोधूलि लग्न। लग्न वृश्चिक रात्रि ८:५१ से रात्रि १०:५६ वजे (गुरु, दान)।	मृत्युबाण २७:४४ से रातअंत। स्वाते सूर्य जामित्र, । उपग्रह दोष सू.उ. से रा. १२:१६ तक। एकार्गल दो. सूर्योदय से २२:४०
वृष	मेष	वृश्चिक	वैशाख कृष्ण ३ बुध	१६ अप्रैल २०२५	अनुराधा	७	लग्न कुंभ रात्रि २:५२ से रात्रिअंत ४:१७ वजे ।	भद्रा—सू.उ.से दि.१:१९ वजे (स्व.)। व्यतिपातदोष सूर्योदय से रात १२:१९ वजे । अनुराधायां राहु लत्ता, पातदोषः,। एकार्गल दो. सूर्योदय से २४:१९
वृष	मेष	वृश्चिक। दि. ८:२४ से धनु	वैशाख कृष्ण ५ शुक्र	१८ अप्रैल २०२५	मूल	७	गोधूलि लग्न। लग्न वृश्चिक रात्रि ८:३५ से रात्रि १०:४० वजे (गुरु, दान)। लग्न कुंभ रात्रि २:४४ से रात्रिअंत ४:०९ वजे ।	परिघदोष सूर्योदय से दिन १२:६० वजे । मूले गुरु जामित्र, । उपग्रह दोष दिनरात। एकार्गल दो. सूर्योदय से २५:०५ । दग्धतिथि दिन ४:४६ वजे से रातअंत।
वृष	मेष	धनु	वैशाख कृष्ण ६ शनि	१९ अप्रैल २०२५	मूल	८	लग्न मिथुन प्रातः ९:२१ से दिन १०:२३ वजे ।	भद्रा—सा.६:२७ वजेसे रा.अंत (पा.)। उपग्रह दोष सू.उ. से दि. १०:२३ तक। दग्धतिथि सू.उ. से सायं ६:२५ वजे ।
वृष	मेष	धनु। सा. ६:०६ से मकर	वैशाख कृष्ण ७ रवि	२० अप्रैल २०२५	उ.षा.	८	गोधूलि लग्न। लग्न वृश्चिक रात्रि ८:२७ से रात्रि १०:३२ वजे (गुरु, दान)। लग्न कुंभ रात्रि २:३७ से रात्रिअंत ४:०१ वजे ।	भद्रा—सू.उ.से प्रा.६:५५ वजे (पा.)। उ.षाण्यां चंद्र लत्ता, शुक्र लत्ता, । उपग्रह दोष दि. ११:५० से रा.अं. तक।
वृष	मेष	मकर	वैशाख कृष्ण ८ चंद्र	२१ अप्रैल २०२५	उ.षा.	८	लग्न वृष प्रातः ७:१४ से प्रातः ९:०३ वजे ।	उ.षाण्यां चंद्र लत्ता, शुक्र लत्ता, । उपग्रह दोष दिनरात।
वृष	मेष	मीन	वैशाख कृष्ण १२ शुक्र	२५ अप्रैल २०२५	उ.भा.	७	लग्न मिथुन प्रातः ९:३० से दिन ११:०० वजे ।	कृष्णानंग चतुर्दिनम् ११:४० से रातअंत। वैधृति दोष दिन १२:२४ वजे से रातअंत। मृत्युबाण सूर्योदय से ९:३० तक। उ.भाद्रपदे केतु जामित्र, बुध शुक्र युति। । उपग्रह दोष सू.उ. से दि. ८:४९ तक।
वृष	मेष	वृष	वैशाख शुक्ल २ मंगल	२९ अप्रैल २०२५	रोहिणी	१०	लग्न वृश्चिक रात्रि ७:५२ से रात्रि ९:५७ वजे (चंद्र, गुरु, दान)। लग्न कुंभ रात्रि २:०१ से रात्रि ३:२६ वजे ।	
वृष	मेष	वृष। रा. ३:२० से मिथुन	वैशाख शुक्ल ३ बुध	३० अप्रैल २०२५	रोहिणी मृगशिर	१०, ९	लग्न मिथुन प्रातः ८:३७ से दिन १०:४१ वजे । लग्न वृश्चिक रात्रि ७:४८ से रात्रि ९:५३ वजे (चंद्र, गुरु, दान)।	भद्रा—रा.१२:४५से रा.अंत (स्व.)। अतिगंड दोष दिन १२:०७ वजे से दिन २:३१ वजे । मृगशिरे गुरु युति। ।
वृष	मेष	मिथुन	वैशाख शुक्ल ४ गुरु	१ मई २०२५	मृगशिर		निर्दोष लग्न अभाव है।	भद्रा—सू.उ.से दि.११:२६ वजे (स्व.)। मृगशिरे गुरु जामित्र, गुरु युति। उपग्रह दोष दि. २:२९ से रा.अं. तक। एकार्गल दो. सूर्योदय से ८:३८ ।
वृष	मेष	कर्क। दि. २:०६ से सिंह	वैशाख शुक्ल ८ चंद्र	५ मई २०२५	मघा	९	गोधूलि लग्न। लग्न वृश्चिक रात्रि ७:२८ से रात्रि ९:३३ वजे (गुरु, दान)। लग्न कुंभ रात्रि १:३७ से रात्रि ३:०२ वजे (चंद्र,दान)।	मघायां मंगल लत्ता, गुरु लत्ता। उपग्रह दोष सू.उ. से दि. २:६ तक।

गोचर			मास-तिथि वार	दिनांक	विवाह नक्षत्र	रेखा	सपरिहार शुभ लग्नें । ७ रेखा से कम की लग्नें अति आवश्यकता में ही लेवें	भद्रा, वेध, पापयुति, वेध, बाण, महापात, दग्धतिथि, 10 दोष
गुरू	रवि	चंद्रमा						
वृष	मेष	सिंह	वैशाख शुक्ल ९ मंगल	६ मई २०२५	मघा	९	लग्न वृष प्रातः ६:१५ से प्रातः ८:०४ वजे । लग्न मिथुन प्रातः ८:१४ से दिन १०:१७ वजे ।	व्याघात दोष रात १२:३४ वजे से रातअंत ४:१० वजे। मघायां मंगल, गुरु लत्ता, उपग्रह दोष दि. ३:५७ से रा.अं. तक।
वृष	मेष	सिंह। रा. १:०२ से कन्या	वैशाख शुक्ल १० बुध	७ मई २०२५	उ.फा.	७	गोधूलि लग्न। लग्न वृश्चिक रात्रि ७:२० से रात्रि ९:२५ वजे (गुरु, दान)।	भद्रा–रा.११:२४से रा.अंत (पा.)। उ.फाल्गुन्यां राहु जामित्र, केतु युति। उपग्रह दोष सू.उ. से शा. ६:२२ तक। एकार्गल दो. सूर्योदय से २५:०९ ।
वृष	मेष	कन्या	वैशाख शुक्ल ११ गुरु	८ मई २०२५	उ.फा. हस्त	८	गोधूलि लग्न। लग्न वृश्चिक रात्रि ७:१६ से रात्रि ९:२१ वजे (गुरु, दान)। लग्न कुंभ रात्रि १:२६ से रात्रि २:०१ वजे ।	भद्रा–सू.उ.से दि.१२:३२ वजे (पा.)। वज्र दोष रात २:०१ वजे से रात ३:१३ वजे। उ.फाल्गुन्यां राहु जामित्र, केतु युति। । हस्तें शनि वेधसूर्य लत्ता, पातदोषः,शुक्र जामित्र, शनि जामित्र, ।
वृष	मेष	कन्या	वैशाख शुक्ल १२ शुक्र	९ मई २०२५	हस्त	६	हस्त में शनिवेध	हस्त में शनिवेध, शुक्रवेध ५:४६ से दिन १०:४१ वजे तक। हस्ते सूर्य लत्ता, पातदोषः, शनि जामित्र, एकार्गल दो. सूर्योदय से २७:०२ ।
वृष	मेष	कन्या। दि. १:४७ से तुला	वैशाख शुक्ल १३ शनि	१० मई २०२५	स्वाती		निर्दोष लग्न अभाव है।	व्यतिपात दोष रातअंत ४:०५ वजे से रातअंत। स्वाते बुध जामित्र । उपग्रह दोष रा. ३:२१ से रा.अं. तक।
वृष	मेष	तुला	वैशाख शुक्ल १४ रवि	११ मई २०२५	स्वाती		निर्दोष लग्न अभाव है।	भद्रा–रा.८:०७से रा.अंत (पा.,१६:३६से स्व.)। व्यतिपातदोष सूर्योदय से रातअंत ५:०५ वजे । स्वाते पातदोषः, उपग्रह दोष सू.उ. से दि. १:११ तक। एकार्गल दो. सूर्योदय से २९:०५।
वृष	मेष	वृश्चिक	ज्येष्ठ कृष्ण १ मंगल	१३ मई २०२५	अनुराधा	७	लग्न कुंभ रात्रि १:०६ से रात्रि २:३० वजे ।	परिघ दोष प्रातः ५:५६ वजे से सायं ६:१० वजे। मृत्युबाण सूर्योदय से २३:११ तक। अनुराधायां राहु लत्ता, सूर्य जामित्र। उपग्रह दोष दिनरात।
गुरौ मिथुन रात्री ९:२१ वजे:	मेष	वृश्चिक	ज्येष्ठ कृष्ण २ बुध	१४ मई २०२५	अनुराधा		निर्दोष लग्न अभाव है।	अनुराधायां राहु लत्ता, सूर्य जामित्र, । उपग्रह दोष सू.उ. से दि. ११:४९ तक। एकार्गल दो. सूर्योदय से ६:३६
मिथुन	वृष	वृश्चिक। दि. २:०८ से धनु	ज्येष्ठ कृष्ण ३ गुरु	१५ मई २०२५	मूल		निर्दोष लग्न अभाव है।	भद्रा–दि.३:१९ वजेसे रा.४:०४ (स्व.,१६:३६से पा.)। मृत्युबाण २४:५७ से रातअंत। मूले गुरु जामित्र, दग्धतिथि रात ४:०६ वजे से रातअंत।
मिथुन	वृष	धनु। रा. १२:०५ से मकर	ज्येष्ठ कृष्ण ५ शनि	१७ मई २०२५	उ.षा.	८	गोधूलि लग्न। लग्न धनु रात्रि ९:१० से रात्रि १०:५३ वजे (राहु, गुरु, दान)। लग्न कुंभ रात्रि १२:५० से रात्रि २:१५ वजे । लग्न मेष रात्रिअंत ४:०४ से रात्रिअंत ५:२० वजे (शनि,दान)।	उ.षा. में गुरु वेध रात १२:०५ वजे से रातअंत ६:२६ वजे तक। उपग्रह दोष दिनरात।
मिथुन	वृष	मकर	ज्येष्ठ कृष्ण ५ रवि	१८ मई २०२५	उ.षा.		निर्दोष लग्न अभाव है।	उ.षा. में गुरु वेध प्रातः ५:४१ से प्रातः ६:२४ वजे तक। क्रान्तिसाम्य दोष दिन १:१२ से सायं ५:२१ वजे तक। उपग्रह दोष सू.उ. से शा. ६:५३ तक।
मिथुन	वृष	कुंभ। दि. १२:०७ से मीन	ज्येष्ठ कृष्ण १० गुरु	२२ मई २०२५	उ.भा.	७	लग्न मेष रात्रि ३:४४ से रात्रिअंत ५:०० वजे (शनि,दान)।	भद्रा–दि.२:२२ वजेसे रा.१:१३ (भू.)। उ.भाद्रपदे केतु जामित्र, शनि युति। उपग्रह दोष दिनरात। एकार्गल दो. सूर्योदय से २१:४६ ।
मिथुन	वृष	मीन	ज्येष्ठ कृष्ण ११ शुक्र	२३ मई २०२५	उ.भा. रेवती	७	लग्न मिथुन प्रातः ७:०७ से प्रातः ९:१० वजे । गोधूलि लग्न। लग्न धनु रात्रि ८:४६ से रात्रि १०:३० वजे (गुरु, दान)। लग्न मेष रात्रि ३:४० से रात्रिअंत ४:५६ वजे (शनि,दान)।	रेवती में केतु वेध। उ.भाद्रपदे केतु जामित्र, शनि युति। । रेवत्यां शुक्र युति। । उपग्रह दोष दिनरात।
मिथुन	वृष	मीन। दि. १:४२ से मेष	ज्येष्ठ कृष्ण १२ शनि	२४ मई २०२५	रेवती	६	अति आवश्यकता में लग्न मिथुन प्रातः ७:०३ से प्रातः ९:०६ वजे ।	कृष्णानंग चतुर्दिनम् १९:१४ से रातअंत। रेवती में केतु वेध। रेवत्यां शुक्र जामित्र शुक्र युति। । उपग्रह दोष सू.उ. से दि. १:४२ तक।

गोचर			मास–तिथि वार	दिनांक	विवाह नक्षत्र	रेखा	सपरिहार शुभ लग्नें । ७ रेखा से कम की लग्नें अति आवश्यकता में ही लेवें	भद्रा, वेध, पापयुति, वेध, बाण, महापात, दग्धतिथि, 10 दोष
गुरू	रवि	चंद्रमा						
मिथुन	वृष	वृष। दि. १:४१ से मिथुन	ज्येष्ठ शुक्ल २ बुध	२८ मई २०२५	मृगशिर	८	लग्न मिथुन प्रातः ६:४७ से प्रातः ८:५० वजे । गोधूलि लग्न। लग्न धनु रात्रि ९:१३ से रात्रि १०:१० वजे (चंद्र, गुरु, दान)।	शूल दोष रात ७:१३ वजे से रात ९:१३ वजे । मृगशिरे गुरु जामित्र, गुरु युति।
मिथुन	वृष	कर्क। रा. ९:४७ से सिंह	ज्येष्ठ शुक्ल ६ रवि	१ जून २०२५	मघा	९	लग्न मेष रात्रि ३:०५ से रात्रिअंत ४:२१ वजे (शनि,दान)।	व्याघात दोष प्रातः ९:१९ वजे से दिन १२:५५ वजे । उपग्रह दोष रा. ९:४७ से रा.अं. तक।
मिथुन	वृष	सिंह	ज्येष्ठ शुक्ल ७ चंद्र	२ जून २०२५	मघा	७,८	लग्न मिथुन प्रातः ६:२७ से प्रातः ८:३० वजे । गोधूलि लग्न। लग्न धनु रात्रि ८:०७ से रात्रि ८:३९ वजे (गुरु, दान)।	भद्रा—रा.८:३९से रा.अंत (भू.)। मघायां गुरु लत्ता, उपग्रह दोष दिनरात। एकार्गल दो. सूर्योदय से ८:२७
मिथुन	वृष	सिंह	ज्येष्ठ शुक्ल ८ मंगल	३ जून २०२५	उ.फा.		निर्दोष लग्न अभाव है।	भद्रा—सू.उ.से दि.९:१३ वजे (भू.)। वज्र दोष प्रातः ८:१४ वजे से प्रातः ९:२६ वजे । मृत्युबाण १८:३६ से रातअंत। उ.फाल्गुन्यां राहु जामित्र, केतु युति। उपग्रह दोष सू.उ. से रा. १:५ तक।
मिथुन	वृष	सिंह। प्रा. ७:४० से कन्या	ज्येष्ठ शुक्ल ९ बुध	४ जून २०२५	उ.फा.	६	लग्न धनु रात्रि ७:५९ से रात्रि ९:४२ वजे (गुरु, दान)। लग्न मेष रात्रि २:५३ से रात्रिअंत ३:४० वजे (शनि,दान)।	मृत्युबाण सूर्योदय से १९:४० तक,। उ.फाल्गुन्यां राहु जामित्र, केतु युति, शनि जामित्र। उपग्रह दोष रा. ३:४० से रा.अं. तक। एकार्गल दो. सूर्योदय से ८:३३
मिथुन	वृष	कन्या	ज्येष्ठ शुक्ल १० गुरु	५ जून २०२५	हस्त		हस्त में शनि वेध, निर्दोष लग्न अभाव।तदग्रे गुरू बृद्ध अस्त दोषकाल एवं देवशयनकाल प्रारंभ।	तदग्रे गुरू बृद्ध व्यतिपात दोष प्रातः ९:१७ वजे से रातअंत। हस्त में शनि वेध। हस्ते शनि जामित्र, । उपग्रह दोष सू.उ. से रा. ६:३७ तक।
कर्क	वृश्चिक	तुला	मार्गशीर्ष कृष्ण १३ मंगल	१८ नवम्वर २०२५	स्वाती		निर्दोष लग्न अभाव है।	कृष्णानंग चतुर्दिनम्। भद्रा—प्रा.७:१६ वजेसे रा.८:३१ (पा.)। मृत्युबाण सूर्योदय से १३:१५ तक,। स्वाते शुक्र जामित्र शुक्र युति। ।
कर्क	वृश्चिक	वृश्चिक। दि. ४:४६ से धनु	मार्गशीर्ष शुक्ल २ शनि	२२ नवम्वर २०२५	मूल	१०	लग्न तुला रात्रिअंत ४:०० से रात्रिअंत ६:०१ वजे ।	मूल में गुरु वेध दिन ४:४६ वजे से रात ११:२७ वजे तक।
कर्क	वृश्चिक	धनु	मार्गशीर्ष शुक्ल ३ रवि	२३ नवम्वर २०२५	मूल	१०	लग्न मकर दिन १०:३५ से दिन १२:०७ वजे । लग्न मिथुन रात्रि ७:०१ से रात्रि ७:२५ वजे (चंद्र, बुध, दान)।	शूल दोष दिन १२:०७ वजे से दिन २:०७ वजे ।
कर्क	वृश्चिक	धनु। रा. ४:२५ से मकर	मार्गशीर्ष शुक्ल ४ चंद्र	२४ नवम्वर २०२५	उ.षा.	६	लग्न तुला रात्रि ३:५२ से रात्रिअंत ५:५३ वजे ।	भद्रा—दि.८:२५ वजेसे रा.९:१९ (पा.)। गण्ड दोष दिन १२:३५ वजे से दिन २:५९ वजे। उ.षाण्यां पातदोषः,गुरु जामित्र। उपग्रह दोष रा. ९:५० से रा.अं. तक। एकार्गल दो. दिनरात।
कर्क	वृश्चिक	मकर	मार्गशीर्ष शुक्ल ५ मंगल	२५ नवम्वर २०२५	उ.षा.	८	लग्न कर्क रात्रि ९:०८ से रात्रि ११:१३ वजे (चंद्र,दान)।	क्रान्तिसाम्य दोष प्रातः ७:२४ से दिन ११:४८ वजे तक। उषाण्यां पातदोषः। उपग्रह दोष सू.उ. से रा. ११:५५ तक। एकार्गल दो. सूर्योदय से १२:४७
कर्क	वृश्चिक	कुंभ। रा. ८:२९ से मीन	मार्गशीर्ष शुक्ल ९ शनि	२९ नवम्वर २०२५	उ.भा.		निर्दोष लग्न अभाव है।	वज्र दोष प्रातः ९:२७ वजे से दिन १०:३९ वजे । उपग्रह दोष रा. २:२० से रा.अं. तक। दग्धतिथि रात ११:११ वजे से रातअंत।
कर्क	वृश्चिक	मीन	मार्गशीर्ष शुक्ल १० रवि	३० नवम्वर २०२५	उ.भा.	८	लग्न मकर दिन १०:०७ से दिन ११:४४ वजे । गोधूलि लग्न। लग्न कर्क रात्रि ८:४८ से रात्रि १०:५३ वजे । रेवती में लग्नाभाव।	व्यतिपातदोष रात ३:४२ वजे से रातअंत । उपग्रह दोष सू.उ. से रा. १:६ तक। एकार्गल दो. सूर्योदय से ७:१३ दग्धतिथि सू.उ. से रात ८:५९ वजे ।
कर्क	वृश्चिक	वृष	मार्गशीर्ष शुक्ल १४ गुरु	४ दिसम्वर २०२५	रोहिणी	८	लग्न कर्क रात्रि ८:३२ से रात्रि १०:३७ वजे ।	भद्रा—दि.८:३५ वजेसे सा.६:३९ (स्व.)। रोहिण्यां शुक्र जामित्र। उपग्रह दोष दि. २:५४ से रा.अं. तक।
गुरौ मिथुन रात्री ७:०२ वजे:	वृश्चिक	वृष। रा. १०:२१ से मिथुन	पौष कृष्ण १ शुक्र	५ दिसम्वर २०२५	रोहिणी मृगशिर		मृत्युबाण दोष	मृत्युबाण ८:३० से रातअंत। मृगशिरे शनि लत्ता, पातदोषः,सूर्य जामित्र, मंगल जामित्र, । उपग्रह दोष दिनरात।

गोचर			मास-तिथि वार	दिनांक	विवाह नक्षत्र	रेखा	सपरिहार शुभ लग्नें । ७ रेखा से कम की लग्नें अति आवश्यकता में ही लेवें	भद्रा, वेध, पापयुति, वेध, बाण, महापात, दग्धतिथि, 10 दोष
गुरू	रवि	चंद्रमा						
मिथुन	वृश्चिक	मिथुन	पौष कृष्ण २ शनि	६ दिसम्वर २०२५	मृगशिर	६	लग्न धनु प्रातः ८:०९ से प्रातः ८:५४ वजे (चंद्र,गुरुदान)।	क्रान्तिसाम्य दोष रात ५:११ से रातअंत वजे तक। मृत्युबाण सूर्योदय से ८:०९ तक,। मृगशिरे शनि लत्ता, पातदोषः,सूर्य जामित्र, मंगल जामित्र, । उपग्रह दोष सू.उ. से दि. ८:५४ तक।
मिथुन	वृश्चिक	सिंह	पौष कृष्ण ६ बुध	१० दिसम्वर २०२५	मघा		निर्दोष लग्न अभाव है। तदग्रे शुक्र बृद्ध अस्त कालांश प्रारंभ।	भद्रा—दि.१:४८ वजेसे रा.१:४४ (भू.)। वैधृतिदोष सूर्योदय से दिन १२:५२ वजे। तदग्रे विष्कुंभ दोष दिन २:०४ वजे तक। मघायां पातदोष, उपग्रह दोष रा. २:४९ से रा.अं. तक। एकार्गल दो. दिनरात।
मिथुन	मकर	कन्या	फाल्गुन कृष्ण ४ गुरु	५ फरवरी २०२६	उ.फा. हस्त	८,७	लग्न मेष दिन १०:४३ से दिन १२:०२ वजे (मंगल,शनि,दान)। लग्न वृष दिन १२:११ से दिन १:५९ वजे । गोधूलि लग्न। अति आवश्यकता में हस्ते लग्न तुला रात्रि ११:०४ से रात्रि १:०९ वजे । लग्न धनु रात्रि ३:४९ से रात्रिअंत ५:२९ वजे (शुक्र,गुरुदान)।	उ.फाल्गुन्यां गुरु लत्ता। हस्ते शनि जामित्र, हस्त में शनि वेध। उपग्रह दोष दिनरात। तुला एवं धनु लग्नें गुरु दृष्ट होने से शनिवेध परिहार एवं सहस्त्र दोष नाशक शुभ योग है।
मिथुन	मकर	कन्या	फाल्गुन कृष्ण ५ शुक्र	६ फरवरी २०२६	हस्त	७	अति आवश्यकता मे लग्न मिथुन दिन २:०५ से दिन ४:०९ वजे। लग्न तुला रात्रि ११:०० से रात्रि ११:४४ वजे ।	शूल दोष रात ११:४४ वजे से रात १:४४ वजे । हस्त में शनि वेध, शनि जामित्र। उपग्रह दोष दिनरात। मिथुन में स्थित एवं तुला लग्न गुरु दृष्ट होने से शनिवेध परिहार एवं सहस्त्र दोष नाशक शुभ योग है।
मिथुन	मकर	कन्या। दि. १:२९ से तुला	फाल्गुन कृष्ण ६ शनि	७ फरवरी २०२६	स्वाती		निर्दोष लग्न अभाव है।	भद्रा—रा.२:५७से रा.अंत (पा.)। गण्ड दोष रात ११:४६ वजे से रात २:१० वजे । स्वाती में राहु वेध। स्वाते पातदोषः,। उपग्रह दोष सू.उ. से रा. २:३४ तक। एकार्गल दो. सूर्योदय से २३:४६ एकार्गल दो.२३:४६ से २६:३४
मिथुन	मकर	तुला	फाल्गुन कृष्ण ७ रवि	८ फरवरी २०२६	स्वाती		स्वाती में राहु वेध, निर्दोष लग्नाभाव।	भद्रा—सू.उ.से दि.३:५८ वजे (पा.)। स्वाती में राहु वेध। बुधवेध रात १०:२७ वजे से रातअंत ५:०६ वजे तक। क्रान्तिसाम्य दोष सायं ६:३७ से रात ११:१३ वजे तक। स्वाते पातदोषः,। उपग्रह दोष रा. ५:६ से रा.अं. तक। एकार्गल दो. सूर्योदय से २४:१२ ।
मिथुन	मकर	वृश्चिक	फाल्गुन कृष्ण ८ मंगल	१० फरवरी २०२६	अनुराधा	८	लग्न मेष दिन १०:२३ से दिन ११:४३ वजे (मंगल,शनि,दान)। वृष—मिथुन दिन ११:५१ से दिन ३:५३ वजे (चंद्र, दान)। गोधूलि लग्न। तुला रात्रि १०:४५ से रात्रि १२:४२ वजे ।	व्याघात दोष रात १:४२ वजे से रातअंत ५:१८ वजे । मृत्युबाण २८:३८ से रातअंत। अनुराधायां चंद्र लत्ता, । उपग्रह दोष दिनरात।
मिथुन	मकर	वृश्चिक। दि. १:३९ से धनु	फाल्गुन कृष्ण १० गुरु	१२ फरवरी २०२६	मूल		संक्रांति दिवस दोष।	संक्रांति दिन। भद्रा—सू.उ.से दि.१२:१९ वजे (स्व.)। वज्र दोष रात ३:०४ वजे से रातअंत ४:१६ वजे। मूले पातदोषः,। उपग्रह दोष दिनरात।
मिथुन	कुंभ	धनु	फाल्गुन कृष्ण ११ शुक्र	१३ फरवरी २०२६	मूल	६	लग्न मेष दिन १०:१२ से दिन ११:३१ वजे । लग्न मिथुन दिन १:३८ से दिन ३:४१ वजे (चंद्र, दान)।	मूल में गुरु वेध प्रातः ९:३५ वजे से दिन ४:०९ वजे तक। मृत्युबाण २७:५० से रातअंत। मूले पातदोषः,। उपग्रह दोष दिनरात। एकार्गल दो. सूर्योदय से २७:२२ ।
मिथुन	कुंभ	कुंभ। दि. २:५५ से मीन	फाल्गुन शुक्ल २ गुरु	१९ फरवरी २०२६	उ.भा.	८	लग्न धनु रात्रि २:५४ से रात्रिअंत ४:३७ वजे (शुक्र,गुरुदान)।	उ.भाद्रपदे पातदोषः,शनि युति परिहार ।
मिथुन	कुंभ	मीन	फाल्गुन शुक्ल ३ शुक्र	२० फरवरी २०२६	उ.भा.	८	लग्न मेष प्रातः ९:४४ से दिन ११:०३ वजे । लग्न वृष दिन ११:१२ से दिन १:०० वजे । लग्न मिथुन दिन १:१० से दिन ३:१३ वजे ।	भद्रा—रा.१:४८से रा.अंत। उ.भाद्रपदे पातदोषः, शनि युति परिहार। दग्धतिथि दिन २:३३ वजे से रातअंत।
मिथुन	कुंभ	मीन। रा. ७:०३ से मेष	फाल्गुन शुक्ल ४ शनि	२१ फरवरी २०२६	रेवती	१०	लग्न मिथुन दिन १:०६ से दिन ३:०९ वजे । त्रय दिवस उपरान्त होलाष्टक दिनानि प्रारम्भ	भद्रा—सू.उ.से दि.१२:५६ वजे (भू.)। क्रान्तिसाम्य दोष रात ९:३४ से रात १:४१ वजे तक। उपग्रह दोष रा. ७:३ से रा.अं. तक। दग्धतिथि सू.उ. से दिन १२:५७ वजे ।
मिथुन	कुंभ	सिंह	फाल्गुन शुक्ल १५ मंगल	३ मार्च २०२६	मघा		निर्दोष लग्न अभाव है।	होलाष्टक। ग्रहण दिन। मृत्युबाण २४:५४ से रातअंत। मघायां मंगल जामित्र, । उपग्रह दोष दिनरात।

गोचर			मास–तिथि वार	दिनांक	विवाह नक्षत्र	रेखा	सपरिहार शुभ लग्नें । ७ रेखा से कम की लग्नें अति आवश्यकता में ही लेवें	भद्रा, वेध, पापयुति, वेध, बाण, महापात, दग्धतिथि, 10 दोष
गुरू	रवि	चंद्रमा						
मिथुन	कुंभ	सिंह। दि. १:५१ से कन्या	चैत्र कृष्ण १ बुध	४ मार्च २०२६	उ.फा.	८	लग्न धनु रात्रि २:०३ से रात्रि ३:४६ वजे (गुरुदान)। लग्न मकर रात्रि ३:५६ से रात्रिअंत ५:३० वजे (शुक्र,दान)।	शूल दोष प्रातः ८:५५ वजे से दिन १०:५५ वजे । मृत्युबाण सूर्योदय से २४:५० तक। उ.फाल्गुन्यां गुरु लत्ता, बुध जामित्र शुक्र जामित्र, सूर्य जामित्र। उपग्रह दोष सू.उ. से प्रा. ७:४२ तक।
मिथुन	कुंभ	कन्या	चैत्र कृष्ण २ गुरु	५ मार्च २०२६	हस्त		हस्त में शनि वेध। निर्दोष लग्न अभाव।	भद्रा—रा.५:२२से रा.अंत। गण्ड दोष प्रातः ७:४७ वजे से दिन १०:११ वजे । हस्त में शनि वेध। क्रान्तिसाम्य दोष रात १:४६ से रात ६:१४ वजे तक। हस्ते पातदोषः, शुक्र जामित्र, शनि जामित्र। एकार्गल, उपग्रह दोष सू.उ. से दि. ८:२० तक।
मिथुन	कुंभ	तुला	चैत्र कृष्ण ४ शनि	७ मार्च २०२६	स्वाती		स्वाती में मंगल राहु वेध। लग्नाभाव।	स्वाती में मंगल राहु वेध। उपग्रह दोष दि. ११:२० से रा.अं. तक। दग्धतिथि सू.उ. से रात ७:२४ वजे।
मिथुन	कुंभ	तुला	चैत्र कृष्ण ५ रवि	८ मार्च २०२६	स्वाती		स्वाती में मंगल राहु वेध। लग्नाभाव।	व्याघात दोष प्रातः ७:०६ वजे से दिन १०:४२ वजे । स्वाती में भौम राहु वेध। उपग्रह दोष दिनरात।
मिथुन	कुंभ	तुला। दि. ९:३२ से वृश्चिक	चैत्र कृष्ण ६ चंद्र	९ मार्च २०२६	अनुराधा	८	निर्दोष लग्न अभाव है।	भद्रा—रा.११:२७ से रा.अंत (स्व.)। अनुराधायां पातदोषः,। उपग्रह दोष सू.उ. से दि. ४:१४ तक। एकार्गल दो. सूर्योदय से ७:३७
मिथुन	कुंभ	वृश्चिक	चैत्र कृष्ण ७ मंगल	१० मार्च २०२६	अनुराधा	८	लग्न मिथुन दिन १२:३९ से दिन २:०२ वजे ।	भद्रा—सू.उ.से दि.१२:३९ वजे (स्व.)। वज्र दोष प्रातः ८:२१ वजे से प्रातः ९:३३ वजे । अनुराधायां पातदोषः,। उपग्रह दोष रा. ७:५ से रा.अं. तक।
मिथुन	कुंभ	वृश्चिक। रा. ९:५८ से धनु	चैत्र कृष्ण ८ बुध	११ मार्च २०२६	मूल	८	लग्न धनु रात्रि १:३५ से रात्रि ३:१८ वजे (गुरुदान)। लग्न मकर रात्रि ३:२९ से रात्रिअंत ५:०३ वजे (शुक्र, दान)।	मूले चंद्र लत्ता। उपग्रह दोष दिनरात। एकार्गल दो. सूर्योदय से ९:१०
मिथुन	कुंभ	धनु	चैत्र कृष्ण ९ गुरु	१२ मार्च २०२६	मूल		लग्न मेष प्रातः ८:२५ से प्रातः ९:४४ वजे ।	व्यतिपात दोष प्रातः ९:५५ वजे से रातअंत। मूल में गुरु वेध सायं ६:०० वजे से रात १२:४० वजे तक। मृत्युबाण २४:५० से रातअंत। मूले चंद्र लत्ता। उपग्रह दोष दिनरात।
मिथुन	कुंभ	धनु	चैत्र कृष्ण १० शुक्र	१३ मार्च २०२६	उ.षा.		निर्दोष लग्न अभाव है।	भद्रा—रा.७:१५ वजेसे रा.अंत (पा.)। व्यतिपातदोष सूर्योदय से दिन १०:२७ वजे । मृत्युबाण सूर्योदय से २४:५३ तक,। उ.षाण्यां गुरु जामित्र, । उपग्रह दोष दिनरात। एकार्गल दो. सूर्योदय से १०:२७
मिथुन	कुंभ	धनु। दि. ९:२८ से मकर	चैत्र कृष्ण १० शनि	१४ मार्च २०२६	उ.षा.		मीन संक्रांति दिन। खरमास प्रारंभ।	भद्रा—सू.उ.से दि.८:०७ वजे (पा.)। परिघ दोष दिन १०:३७ वजे से रात १०:१६ वजे । उपग्रह दोष दिनरात।

। इति विवाह मुहूर्त।

चैत्र शुक्ल पक्ष

चैत्र शुक्ल ६ गुरु। ३ अप्रैल २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से रात ९:४६ तक। ग्रह मुख आहुति बुध सूर्योदय से रात ५:५०। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से रात ९:४६ तक। रोहिणी में एवं मृगशिर में सूर्योदय से रात्रिअंत तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । मृगशिर में प्रातः ७:०२ बजे से रात्रिअंत तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – रोहिणी में सूर्योदय से प्रातः ७:०२ बजे तक मंत्र दीक्षा, । रोहिणी में एवं मृगशिर में सूर्योदय से रात्रिअंत तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, प्रसूति स्नान, जातकर्म, नामकरण, । मृगशिर में प्रातः ७:०२ बजे से रात्रिअंत तक सीमन्त पुंसवन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । मृगशिर में रात ९:३८ बजे से रात्रिअंत तक अन्नप्राशन, । {४} कृषि मुहूर्त –रोहिणी में सूर्योदय से प्रातः ७:०२ बजे तक धान्य विक्रय, । रोहिणी में एवं मृगशिर में सूर्योदय से रात्रिअंत तक धान्य रोपण, धान्य संग्रह, ईंधन स्थापन, । मृगशिर में प्रातः ७:०२ बजे से रात्रिअंत तक धान्य छेदन, कटाई, । मृगशिर में रात ९:३८ बजे से रात्रिअंत तक हल प्रवहण जुताई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – रोहिणी में सूर्योदय से प्रातः ७:०२ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, वैंक लॉकर खोलना, । मृगशिर में प्रातः ७:०२ बजे से रात्रिअंत तक पूंजी निवेश, । मृगशिर में रात ९:३८ बजे से रात्रिअंत तक धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –रोहिणी में सूर्योदय से प्रातः ७:०२ बजे तक नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त हैं। मृगशिर में प्रातः ७:०२ बजे से रात्रिअंत तक वाहन क्रय, राजसेवा, मुहूर्त हैं। मृगशिर में प्रातः ७:०२ बजे से रात ९:३८ बजे तक संपत्ति क्रय, मुहूर्त हैं। मृगशिर में रात ९:३८ बजे से रात्रिअंत तक यात्रा, मुहुर्त हैं। (रोहिणी में गुरु युति।)

चैत्र शुक्ल ७ शुक्र। ४ अप्रैल २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अभाव। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – आर्द्रा में सूर्योदय से रात ८:०९ बजे तक मंत्र दीक्षा, । {४} कृषि मुहूर्त –आर्द्रा में सूर्योदय से रात ८:०९ बजे तक ईंधन स्थापन, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (पुनर्वसु में मंगल युति।)

चैत्र शुक्ल ८ शनि। ५ अप्रैल २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से रात ७:३१ तक। ग्रह मुख आहुति शुक्र सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप रात ७:३१ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – पुनर्वसु में भद्रा पश्चात् प्रातः ७:३६ बजे से रात ७:२३ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । {४} कृषि मुहूर्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – पुनर्वसु में भद्रा पश्चात् प्रातः ७:३६ बजे से रात ७:२३ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (पुनर्वसु में मंगल युति।)

चैत्र शुक्ल ९ रवि। ६ अप्रैल २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति शुक्र सूर्योदय से रात ६:२६। शनि रात ६:२६ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से रात ७:२९ तक। पुष्य में रात ७:२१ बजे से रातअंत तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – पुष्य में रात ७:२१ बजे से रातअंत तक गृहछादन छत,, । {३} संस्कार मुहूर्त – पुष्य में रात ७:२१ बजे से रातअंत तक सीमन्त पुंसवन, शल्यक्रिया ऑपरेशन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, अन्नप्राशन, अक्षरारंभ, स्कूल प्रवेश, । {४} कृषि मुहूर्त –पुष्य में रात ७:२१ बजे से रातअंत तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, पशु क्रय विक्रय,। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – पुष्य में रात ७:२१ बजे से रातअंत तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –पुष्य में रात ७:२१ बजे से रात. अंत तक यात्रा, वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), मुहूर्त हैं।

चैत्र शुक्ल १० चंद्र। ७ अप्रैल २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – पुष्य में सूर्योदय से प्रातः ६:२५ बजे तक अग्न्याधान, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – पुष्य में सूर्योदय से प्रातः ६:२५ बजे तक जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, अक्षरारंभ, स्कूल प्रवेश, । {४} कृषि मुहूर्त –पुष्य में सूर्योदय से प्रातः ६:२५ बजे तक हल प्रवहण जुताई, बीज बोवनी, धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, पशु क्रय विक्रय, । पुष्य में एवं अश्लेषा में शूल से पहले शूल पश्चात सूर्योदय से सायं ६:२३ बजे तक ईंधन स्थापन, । अश्लेषा में शूल से पहले शूल पश्चात प्रातः ६:२५ बजे से सायं ६:२३ बजे एवं रात ८:२३ बजे से रात्रिअंत तक नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में दिनरात, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – पुष्य में सूर्योदय से प्रातः ६:२५ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –पुष्य में सूर्योदय से प्रातः ६:२५ बजे तक यात्रा, वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), राजसेवा, मुहूर्त हैं।

चैत्र शुक्ल ११ मंगल। ८ अप्रैल २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति शनि सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर रात ९:२० से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – मघा में भद्रा से पहले प्रातः ७:५८ बजे से प्रातः ८:३१ बजे एवं रात ९:१५ बजे से रात्रिअंत तक पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव।

चैत्र शुक्ल १२ बुध। ९ अप्रैल २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – शिववास कैलाश पर सूर्योदय से रात ११:०३ तक। वृषारूढ रात ११:०३ से रात. अंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – मघा में सूर्योदय से दिन १०:०२ बजे तक पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –मघा में सूर्योदय से दिन १०:०२ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, । मघा में एवं पू.फा. में सूर्योदय से रात्रिअंत तक ईंधन स्थापन, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (क्रान्तिसाम्य दोष दिन १:०३ से सायं ५:३३ वजे तक।)

चैत्र शुक्ल १३ गुरु। १० अप्रैल २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति शनि सूर्योदय से दिन १२:३०। चंद्र दिन १२:३० से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से रात १:०८ तक। उ.फा. में दिन १२:३० बजे से रात १:०४ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – उ.फा. में दिन १२:३० बजे से रात्रिअंत तक पुनर्विवाह, । उ.फा. में दिन १२:३० बजे से रात १:०४ बजे तक प्रसूति स्नान, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, । {४} कृषि मुहूर्त –पू.फा. में सूर्योदय से दिन १२:३० बजे तक ईंधन स्थापन, । उ.फा. में दिन १२:३० बजे से रात्रिअंत तक धान्य विक्रय, । उ.फा. में दिन १२:३० बजे से रात १:०४ बजे तक बीज बोवनी, धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – उ.फा. में दिन १२:३० बजे से रात १:०४ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, वैंक लॉकर खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –उ.फा. में दिन १२:३० बजे से रात १:०४ बजे तक नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त हैं। (उ.फा. में सूर्य वेध,। उ.फा. में केतु युति।)

चैत्र शुक्ल १४ शुक्र। ११ अप्रैल २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अभाव। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – उ.फा. में एवं हस्त में सूर्योदय से रात ३:२५ बजे तक पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –उ.फा. में सूर्योदय से दिन ३:१५ बजे तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (उ.फा. में सूर्य वेध । उ.फा. में केतु युति।)

चैत्र शुक्ल १५ शनि। १२ अप्रैल २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति चंद्र सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप रात ५:५७ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – हस्त में एवं चित्रा में भद्रा पश्चात् दिन ४:३९ बजे से रात ५:५४ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । {४} कृषि मुहूर्त –हस्त में भद्रा पश्चात् दिन ४:३९ बजे से सायं ६:१२ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – चित्रा में सायं ६:१२ बजे से रात ५:५४ बजे तक पूंजी निवेश,। {६} विविध मुहुर्त –हस्त में एवं चित्रा में भद्रा पश्चात् दिन ४:३९ बजे से रात ५:५४ बजे तक राजसेवा, मुहूर्त हैं। हस्त में भद्रा पश्चात् दिन ४:३९ बजे से सायं ६:१२ बजे तक यात्रा, मुहूर्त हैं। चित्रा में सायं ६:१२ बजे से रात ५:५४ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त हैं। (चित्रा में शनि वेध,राहु वेध, । हस्त में बुधवेध दिन ११:२७ वजे से सायं ६:१२ वजे तक।चित्रा में शुक्रवेध सायं ६:१२ वजे से रात १२:५७ वजे तक।)

वैशाख कृष्ण पक्ष

वैशाख कृष्ण १ रवि। १३ अप्रैल २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर ८:३० से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति चंद्र सूर्योदय से रात ९:१४। मंगल रात ९:१४ से रात ३:१४। चंद्र रात ३:१४ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से ८:३० तक। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से रात ६:०५ बजे तक वाहन क्रय, मुहूर्त हैं। (चित्रा में शनि वेधराहु वेध, ।)

वैशाख कृष्ण १ चंद्र। १४ अप्रैल २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति चंद्र सूर्योदय से रात १२:१६। मंगल रात १२:१६ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से दिन ८:२९ तक। स्वाती में प्रातः ८:२७ बजे से रात १२:१६ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । स्वाती में सूर्योदय से रात १२:१६ बजे तक देव प्रतिष्ठा । स्वाती में एवं विशाखा में सूर्योदय से रात्रिअंत तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । विशाखा में रात १२:१६ बजे से रात्रिअंत तक अग्न्याधान, । {२} वास्तु मुहूर्त – स्वाती में सूर्योदय से रात १२:१६ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध , । विशाखा में रात १२:१६ बजे से रात्रिअंत तक नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्ध , । {३} संस्कार मुहूर्त – स्वाती में सूर्योदय से प्रातः ८:२७ बजे तक कन्या वरण, । स्वाती में प्रातः ८:२७ बजे से रात १२:१६ बजे तक अन्नप्राशन, मुंडन, अक्षरारंभ, स्कूल प्रवेश, मंत्र दीक्षा, । स्वाती में सूर्योदय से रात १२:१६ बजे तक जातकर्म, नामकरण, द्विरागमन, । {४} कृषि मुहूर्त –स्वाती में प्रातः ८:२७ बजे से रात १२:१६ बजे तक धान्य रोपण, धान्य संग्रह, । स्वाती में सूर्योदय से रात १२:१६ बजे तक बीज बोवनी, धान्य छेदन, कटाई, । विशाखा में रात १२:१६ बजे से रात्रिअंत तक पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – स्वाती में एवं विशाखा में सूर्योदय से रात्रिअंत तक पूंजी निवेश, । स्वाती में एवं विशाखा में प्रातः ८:२७ बजे से रात्रिअंत तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । विशाखा में रात १२:१६ बजे से रात्रिअंत तक वैंक लॉकर खोलना, धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –स्वाती में सूर्योदय से रात १२:१६ बजे तक वाहन क्रय, मुहूर्त हैं। स्वाती में प्रातः ८:२७ बजे से रात १२:१६ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त हैं।

वैशाख कृष्ण २ मंगल। १५ अप्रैल २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अभाव। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – विशाखा में सूर्योदय से रात ११:३४ बजे तक पूंजी निवेश। {६} विविध मुहुर्त –अभाव।

वैशाख कृष्ण ३ बुध। १६ अप्रैल २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति मंगल सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर दिन १:२० से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – अनुराधा में रात १२:१९ बजे से रात ५:५९ बजे तक प्रसूति जल/कुआ पूजन, । {४} कृषि मुहूर्त्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (ज्येष्ठा में मंगल वेध,।)

वैशाख कृष्ण ४ गुरु। १७ अप्रैल २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – शिववास कैलाश पर सूर्योदय से दिन ३:२६ तक। वृषारूढ दिन ३:२६ से रात. अंत । ज्येष्ठा में दिन ३:२६ बजे से रात १२:५२ बजे तक अग्न्याधान, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – ज्येष्ठा में दिन ३:२६ बजे से रात १२:५२ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, । {४} कृषि मुहूर्त्त –ज्येष्ठा में दिन ३:२६ बजे से रात १२:५२ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – ज्येष्ठा में दिन ३:२६ बजे से रात १२:५२ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (ज्येष्ठा में भौम वेध ।)

वैशाख कृष्ण ५ शुक्र। १८ अप्रैल २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति मंगल सूर्योदय से दिन ८:२४। गुरु दिन ८:२४ से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से सायं ५:१० तक। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त–मूल में परिघ पश्चात दिन १२:६० बजे से रात्रिअंत तक विद्यारंभ, उच्च शिक्षा, द्विरागमन, । मूल में परिघ पश्चात दिन १२:६० बजे से सायं ५:११ बजे तक उपनयन। {४} कृषि मुहूर्त्त –मूल में परिघ पश्चात दिन १२:६० बजे से रात्रिअंत तक धान्य रोपण। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त–अभाव। {६} विविध मुहुर्त–मूल में परिघ पश्चात दिन १२:६० बजे से रात्रिअंत तक संपत्ति क्रय, मुहूर्त्त हैं। (ज्येष्ठा में भौम वेध ।)

वैशाख कृष्ण ६ शनि। १९ अप्रैल २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अभाव। {२} वास्तु मुहूर्त – पू.षा. में दिन १०:२३ बजे से सायं ६:२७ बजे तक नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , । {३} संस्कार मुहूर्त्त – मूल में सूर्योदय से दिन १०:२३ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । {४} कृषि मुहूर्त्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव।

वैशाख कृष्ण ७ रवि। २० अप्रैल २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से रात ७:०३ तक। ग्रह मुख आहुति गुरु सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप रात ७:०३ से रातअंत । उ.षा. में दिन ११:५० बजे से रात्रिअंत तक देव प्रतिष्ठा शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । {२} वास्तु मुहूर्त – उ.षा. में रात ७:०६ बजे से रात्रिअंत तक गृहछादन छत,, । {३} संस्कार मुहूर्त्त – पू.षा. में भद्रा पश्चात् प्रातः ६:५५ बजे से दिन ११:५० बजे तक जैन विद्यारंभ कन्या वरण, वर वरण, । उ.षा. में दिन ११:५० बजे से रात्रिअंत तक प्रस.ूति स्नान, । उ.षा. में दिन ११:५० बजे से रात ७:०६ बजे तक अन्नप्राशन, । {४} कृषि मुहूर्त्त –पू.षा. में एवं उ.षा. में भद्रा पश्चात् प्रातः ६:५५ बजे से रात्रिअंत तक धान्य छेदन, कटाई, । उ.षा. में दिन ११:५० बजे से रात्रिअंत तक धान्य रोपण, धान्य संग्रह, धान्य विक्रय,। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –उ.षा. में दिन ११:५० बजे से रात्रिअंत तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं।

वैशाख कृष्ण ८ चंद्र। २१ अप्रैल २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर रात ७:०० से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति गुरु सूर्योदय से दिन १२:३९। राहु दिन १२:३९ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से रात ७:०० तक। उ.षा. में सूर्योदय से दिन १२:३९ बजे तक अग्न्याधान, । उ.षा. में एवं श्रवण में सूर्योदय से रात ७:०४ बजे तक देव प्रतिष्ठा शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । श्रवण में दिन १२:३९ बजे से रात ७:०४ बजे तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – उ.षा. में सूर्योदय से दिन १२:३९ बजे तक नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध), । उ.षा. में एवं श्रवण में सूर्योदय से रात ७:०४ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , । {३} संस्कार मुहूर्त्त – उ.षा. में सूर्योदय से दिन १२:३९ बजे तक कन्या वरण, वर वरण, । उ.षा. में एवं श्रवण में सूर्योदय से रात्रिअंत तक जातकर्म, नामकरण, द्विरागमन, । श्रवण में दिन १२:३९ बजे से रात्रिअंत तक कर्णवेध, । श्रवण में दिन १२:३९ बजे से रात ७:०४ बजे तक मंत्र दीक्षा, । {४} कृषि मुहूर्त्त –उ.षा. में सूर्योदय से दिन १२:३९ बजे तक बीज बोवनी, धान्य रोपण, धान्य विक्रय, । उ.षा. में एवं श्रवण में सूर्योदय से रात ७:०४ बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, । श्रवण में दिन १२:३९ बजे से रात ७:०४ बजे तक ईंधन स्थापन, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – उ.षा. में सूर्योदय से दिन १२:३९ बजे तक व्यापार प्रारंभ, । उ.षा. में एवं श्रवण में सूर्योदय से रात ७:०४ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । श्रवण में दिन १२:३९ बजे से रात ७:०४ बजे तक धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश। {६} विविध मुहुर्त–उ.षा. में एवं श्रवण में सूर्योदय से रात ७:०४ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं। श्रवण में दिन १२:३९ बजे से रात ७:०४ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, वाहन क्रय, मुहूर्त्त हैं।

वैशाख कृष्ण ९ मंगल। २२ अप्रैल २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अभाव। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – श्रवण में एवं धनिष्ठा में सूर्योदय से रात्रिअंत तक पुनर्विवाह, । धनिष्ठा में सायं ६:१६ बजे से रात्रिअंत तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । {४} कृषि मुहूर्त्त –धनिष्ठा में दिन १२:४४ बजे से रात्रिअंत तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – धनिष्ठा में सायं ६:१६ बजे से रात्रिअंत तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –धनिष्ठा में सायं ६:१६ बजे से रात्रिअंत तक यात्रा, मुहूर्त्त हैं। (क्रान्तिसाम्य दोष रात ३:१७ से रातअंत वजे तक।)

वैशाख कृष्ण १० बुध। २३ अप्रैल २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिन ४:४० से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति राहु सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर दिन ४:४० से रातअंत । शतभिषा में दिन ४:४४ बजे से रात्रिअंत तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – शतभिषा में दिन ४:४४ बजे से रात्रिअंत तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध), । {३} संस्कार मुहूर्त्त – शतभिषा में दिन ४:४४ बजे से रात्रिअंत तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, जातकर्म, नामकरण, विद्यारंभ, उच्च शिक्षा, द्विरागमन, । {४} कृषि मुहूर्त्त –शतभिषा में दिन ४:४४ बजे से रात्रिअंत तक हल प्रवहण जुताई, धान्य विक्रय, ईंधन स्थापन, पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – शतभिषा में दिन ४:४४ बजे से रात्रिअंत तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –शतभिषा में दिन ४:४४ बजे से रात्रिअंत तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त्त हैं।

वैशाख कृष्ण ११ गुरु। २४ अप्रैल २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से दिन २:२७ तक। ग्रह मुख आहुति राहु सूर्योदय से दिन १०:४५। केतु दिन १०:४५ से रातअंत। शिववास कैलाश पर सूर्योदय से दिन २:२७ तक। वृषारूढ दिन २:२७ से रातअंत । शतभिषा में सूर्योदय से दिन १०:४५ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – शतभिषा में सूर्योदय से दिन १०:४५ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध), । पू.भा. में दिन १०:४५ बजे से रात्रिअंत तक नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , । {३} संस्कार मुहूर्त्त – शतभिषा में सूर्योदय से दिन १०:४५ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, जातकर्म, नामकरण, मुंडन, द्विरागमन, । शतभिषा में एवं पू.भा. में सूर्योदय से रात्रिअंत तक विद्यारंभ, उच्च शिक्षा, । {४} कृषि मुहूर्त्त –शतभिषा में सूर्योदय से दिन १०:४५ बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य संग्रह, धान्य विक्रय, पशु क्रय विक्रय, । शतभिषा में एवं पू.भा. में सूर्योदय से रात्रिअंत तक ईंधन स्थापन, । पू.भा. में दिन १०:४५ बजे से रात्रिअंत तक नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में दिनरात, धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – शतभिषा में सूर्योदय से दिन १०:४५ बजे तक धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश, । शतभिषा में एवं पू.भा. में सूर्योदय से रात्रिअंत तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । {६} विविध मुहुर्त –शतभिषा में सूर्योदय से दिन १०:४५ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त्त हैं। पू.भा. में दिन १०:४५ बजे से दिन २:३१ बजे तक संपत्ति क्रय, मुहूर्त्त हैं। (पू.भा. में शुक्र शनि राहु युति।)

वैशाख कृष्ण १२ शुक्र। २५ अप्रैल २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिन ११:४० से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति केतु सूर्योदय से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से दिन ११:४० तक। उ.भा. में निर्बल चंद्रकाल से पहले प्रातः ८:४९ बजे से दिन ११:४० बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । {२} वास्तु मुहूर्त – पू.भा. में सूर्योदय से प्रातः ८:४९ बजे तक नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित (अग्निबाण ९:३० से, त्यागकर), । उ.भा. में निर्बल चंद्रकाल से पहले प्रातः ८:४९ बजे से दिन ११:४० बजे तक नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध), । {३} संस्कार मुहूर्त्त – पू.भा. में सूर्योदय से प्रातः ८:४९ बजे तक जैन विद्यारंभ कन्या वरण, वर वरण, । पू.भा. में एवं उ.भा. में निर्बल चंद्रकाल से पहले सूर्योदय से दिन ११:४० बजे तक विद्यारंभ, उच्च शिक्षा, । उ.भा. में निर्बल चंद्रकाल से पहले प्रातः ८:४९ बजे से दिन ११:४० बजे तक जातकर्म, नामकरण, द्विरागमन, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त्त –पू.भा. में सूर्योदय से प्रातः ८:४९ बजे तक नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में दिनरात, । पू.भा. में एवं उ.भा. में निर्बल चंद्रकाल से पहले सूर्योदय से दिन ११:४० बजे तक धान्य छेदन, कटाई, ईंधन स्थापन, । उ.भा. में निर्बल चंद्रकाल से पहले प्रातः ८:४९ बजे से दिन ११:४० बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य रोपण, धान्य संग्रह, धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – पू.भा. में एवं उ.भा. में निर्बल चंद्रकाल से पहले सूर्योदय से दिन ११:४० बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । उ.भा. में निर्बल चंद्रकाल से पहले प्रातः ८:४९ बजे से दिन ११:४० बजे तक व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), । {६} विविध मुहुर्त –उ.भा. में निर्बल चंद्रकाल से पहले प्रातः ८:४९ बजे से दिन ११:४० बजे तक नवीन वस्त्र–आभूषण, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं। (पू.भा. में शुक्र शनि राहु युति। उ.भा. में बुध शुक्र युति।)

वैशाख कृष्ण १३ शनि। २६ अप्रैल २०२५। उ.भा. में वैधृति, विष्कुंभ दोष।निर्बल चंद्र। रेवती में वैधृति, विष्कुंभ दोष निर्बल चंद्र दोष निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त्त अभाव।

वैशाख कृष्ण ३० रवि। २७ अप्रैल २०२५। अश्विनी में निर्बल चंद्र। भरणी में निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति सूर्य सूर्योदय से रात ७:०२। केतु रात ७:०२ से रात १२:३७ सूर्य रात १२:३७ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से रात १२:६० तक।

वैशाख शुक्ल पक्ष

वैशाख शुक्ल १ चंद्र। २८ अप्रैल २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से रात ९:१३ तक। ग्रह मुख आहुति सूर्य सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप रात ९:१३ से रातअंत । कृतिका में रात ९:३९ बजे से रात्रिअंत तक अग्न्याधान, । {२} वास्तु मुहुर्त – भरणी में एवं कृतिका में निर्बल चंद्रकाल पश्चात, रात ९:१३ बजे से रात्रिअंत तक नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , । {३} संस्कार मुहूर्त्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त्त –भरणी में रात ९:१३ बजे से रात ९:३९ बजे तक ईंधन स्थापन, । भरणी में एवं कृतिका में निर्बल चंद्रकाल पश्चात, रात ९:१३ बजे से रात्रिअंत तक धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (भरणी में सूर्य युति।)

वैशाख शुक्ल २ मंगल। २९ अप्रैल २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर सायं ५:३७ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति सूर्य सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से सायं ५:३७ तक। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – कृतिका में सूर्योदय से सायं ६:५२ बजे तक वर वरण, । रोहिणी में सायं ६:५२ बजे से रात्रिअंत तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, प्रसूति स्नान, । {४} कृषि मुहूर्त्त –रोहिणी में सायं ६:५२ बजे से रात्रिअंत तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव।

वैशाख शुक्ल ३ बुध। ३० अप्रैल २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – रोहिणी में अतिगंड से पहले, सूर्योदय से दिन १२:०७ बजे तक देव प्रतिष्ठा अग्न्याधान, । {२} वास्तु मुहूर्त – रोहिणी में अतिगंड से पहले, सूर्योदय से दिन १२:०७ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध नहीं), । {३} संस्कार मुहूर्त्त – रोहिणी में अतिगंड से पहले, सूर्योदय से दिन १२:०७ बजे तक जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, उपनयन, विद्यारंभ, उच्च शिक्षा, कन्या वरण, वर वरण, द्विरागमन, । {४} कृषि मुहूर्त्त –रोहिणी में अतिगंड से पहले, सूर्योदय से दिन १२:०७ बजे एवं दिन २:३१ बजे से दिन ४:२५ बजे तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – रोहिणी में अतिगंड से पहले, सूर्योदय से दिन १२:०७ बजे तक व्यापार प्रारंभ, धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, बैंक लॉकर खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –रोहिणी में अतिगंड से पहले, सूर्योदय से दिन १२:०७ बजे तक नवीन वस्त्र–आभूषण, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं। (मृगशिर में गुरु युति।)

वैशाख शुक्ल ४ गुरु। १ मई २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिन ११:३२ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति बुध सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर दिन ११:३२ से रातअंत । मृगशिर में दिन ११:२६ बजे से दिन २:२९ बजे तक देव प्रतिष्ठा अग्न्याधान, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – मृगशिर में दिन ११:२६ बजे से दिन २:२९ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध नहीं), । आर्द्रा में दिन २:२९ बजे से रात्रिअंत तक गृहछादन छत,, । {३} संस्कार मुहूर्त्त – मृगशिर में दिन ११:२६ बजे से दिन २:२९ बजे तक सीमन्त पुंसवन, शल्यक्रिया ऑपरेशन, प्रसूति स्नान, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, कर्णवेध, मुंडन, उपनयन, द्विरागमन, । आर्द्रा में दिन २:२९ बजे से रात्रिअंत तक अक्षरारंभ, स्कूल प्रवेश, मंत्र दीक्षा, । {४} कृषि मुहूर्त्त –मृगशिर में दिन ११:२६ बजे से दिन २:२९ बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, । आर्द्रा में दिन २:२९ बजे से रात्रिअंत तक ईंधन स्थापन, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – मृगशिर में दिन ११:२६ बजे से दिन २:२९ बजे तक धनसंग्रह, बैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –मृगशिर में दिन ११:२६ बजे से दिन २:२९ बजे तक संपत्ति क्रय, वाहन क्रय, राजसेवा, मुहूर्त्त हैं। आर्द्रा में दिन २:२९ बजे से रात्रिअंत तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं। (मृगशिर में गुरु युति।)

वैशाख शुक्ल ५ शुक्र। २ मई २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से दिन ९:२१ तक। ग्रह मुख आहुति बुध सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर सूर्योदय से दिन ९:२१ तक। वृषारूढ दिन ९:२१ से रातअंत । पुनर्वसु में दिन १:१२ बजे से रात्रिअंत तक देव प्रतिष्ठा शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । {२} वास्तु मुहूर्त – पुनर्वसु में दिन १:१२ बजे से रात्रिअंत तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित, । {३} संस्कार मुहूर्त्त – आर्द्रा में सूर्योदय से दिन १:१२ बजे तक मंत्र दीक्षा, । आर्द्रा में एवं पुनर्वसु में सूर्योदय से रात्रिअंत तक अक्षरारंभ, स्कूल प्रवेश, विद्यारंभ, उच्च शिक्षा, । पुनर्वसु में दिन १:१२ बजे से रात्रिअंत तक जातकर्म, नामकरण, कर्णवेध, जैन विद्यारंभ द्विरागमन, । {४} कृषि मुहूर्त्त –आर्द्रा में एवं पुनर्वसु में सूर्योदय से रात्रिअंत तक ईंधन स्थापन, । पुनर्वसु में दिन १:१२ बजे से रात्रिअंत तक धान्य संग्रह, पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – पुनर्वसु में दिन १:१२ बजे से रात्रिअंत तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –आर्द्रा में सूर्योदय से दिन १:१२ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं। पुनर्वसु में दिन १:१२ बजे से रात्रिअंत तक संपत्ति क्रय, वाहन क्रय, नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त्त हैं।

वैशाख शुक्ल ६ शनि। ३ मई २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर प्रातः ७:५६ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति बुध सूर्योदय से दिन १२:४०। शुक्र दिन १२:४० से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से प्रातः ७:५६ तक। पुनर्वसु में एवं पुष्य में सूर्योदय से रात्रिअंत तक देव प्रतिष्ठा । {२} वास्तु मुहूर्त – पुनर्वसु में सूर्योदय से दिन १२:४० बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , । {३} संस्कार मुहूर्त्त – पुनर्वसु में एवं पुष्य में सूर्योदय से रात्रिअंत तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । {४} कृषि मुहूर्त्त –पुनर्वसु में एवं पुष्य में सूर्योदय से रात्रिअंत तक पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – पुनर्वसु में एवं पुष्य में सूर्योदय से रात्रिअंत तक पूंजी निवेश,। {६} विविध मुहुर्त –पुनर्वसु में एवं पुष्य में प्रातः ७:५२ बजे से रात्रिअंत तक यात्रा, मुहूर्त्त हैं। पुष्य में दिन १२:४० बजे से रात्रिअंत तक राजसेवा, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं। (पुष्य में मंगल युति।)

वैशाख शुक्ल ७ रवि। ४ मई २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – पुष्य में सूर्योदय से प्रातः ७:१९ बजे तक देव प्रतिष्ठा शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – पुष्य में सूर्योदय से प्रातः ७:१९ बजे तक सीमन्त पुंसवन, शल्यक्रिया ऑपरेशन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, अन्नप्राशन, । {४} कृषि मुहूर्त्त –पुष्य में सूर्योदय से प्रातः ७:१९ बजे तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, पशु क्रय विक्रय, । अश्लेषा में भद्रा पश्चात् रात ७:२६ बजे से रात्रिअंत तक नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में दिनरात, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – पुष्य में सूर्योदय से प्रातः ७:१९ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –पुष्य में सूर्योदय से प्रातः ७:१९ बजे तक यात्रा, वाहन क्रय, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं। (क्रान्तिसाम्य दोष रात ७:३१ से रात ११:५४ वजे तक। पुष्य में मंगल युति।)

वैशाख शुक्ल ८ चंद्र। ५ मई २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति शुक्र सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप प्रातः ७:३९ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अश्लेषा में सूर्योदय से प्रातः ७:३६ बजे तक नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्ध (अग्निबाण १६:३६ तक, त्यागकर), । {३} संस्कार मुहूर्त्त – अश्लेषा में सूर्योदय से प्रातः ७:३६ बजे तक मंत्र दीक्षा, । मघा में दिन २:०६ बजे से रात्रिअंत तक पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त्त –अश्लेषा में सूर्योदय से प्रातः ७:३६ बजे तक नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में दि. २:०६ तक, ईंधन स्थापन, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (मघा में सूर्य वेध,।)

वैशाख शुक्ल ९ मंगल। ६ मई २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से दिन ८:४३ तक। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – मघा में सूर्योदय से दिन ३:५७ बजे तक पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (मघा में सूर्य वेध ।)

वैशाख शुक्ल १० बुध। ७ मई २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – उ.फा. में सायं ६:२२ बजे से रात्रिअंत तक देव प्रतिष्ठा । {२} वास्तु मुहूर्त – पू.फा. में सूर्योदय से सायं ६:२२ बजे तक नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्ध , । उ.फा. में सायं ६:२२ बजे से रात्रिअंत तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध , नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध), । {३} संस्कार मुहूर्त्त – पू.फा. में सूर्योदय से दिन १०:२१ बजे तक कन्या वरण,। पू.फा. में सूर्योदय से सायं ६:२२ बजे तक उपनयन, वर वरण, । पू.फा. में एवं उ.फा. में सूर्योदय से रात्रिअंत तक विद्यारंभ, उच्च शिक्षा,। उ.फा. में सायं ६:२२ बजे से रात्रिअंत तक जातकर्म, नामकरण, द्विरागमन, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त्त –पू.फा. में एवं उ.फा. में सूर्योदय से रात्रिअंत तक ईंधन स्थापन, । उ.फा. में सायं ६:२२ बजे से रात्रिअंत तक हल प्रवहण जुताई, धान्य छेदन, कटाई, धान्य विक्रय,। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – उ.फा. में सायं ६:२२ बजे से रात्रिअंत तक व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, बैंक लॉकर खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –उ.फा. में सायं ६:२२ बजे से रात्रिअंत तक नवीन वस्त्र–आभूषण, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं। (पूर्वा.फा. में बुधवेध दिन ११:४२ वजे से सायं ६:२२ वजे तक।उ.फा. में केतु युति।)

वैशाख शुक्ल ११ गुरु। ८ मई २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – शिववास कैलाश पर दिन १२:३५ से रातअंत । उ.फा. में दिन १२:३२ बजे से रात ९:१२ बजे तक अग्न्याधान, । उ.फा. में एवं हस्त में दिन १२:३२ बजे से रात्रिअंत तक देव प्रतिष्ठा शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । हस्त में रात ९:१२ बजे से रात्रिअंत तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – उ.फा. में दिन १२:३२ बजे से रात ९:१२ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध , नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध), । उ.फा. में एवं हस्त में दिन १२:३२ बजे से रात्रिअंत तक गृहछादन छत,, । {३} संस्कार मुहूर्त्त – उ.फा. में दिन १२:३२ बजे से रात ९:१२ बजे तक उपनयन, वर वरण, । उ.फा. में एवं हस्त में दिन १२:३२ बजे से रात्रिअंत तक सीमन्त पुंसवन, प्रसूति स्नान, जातकर्म, नामकरण, विद्यारंभ, उच्च शिक्षा, द्विरागमन, पुनर्विवाह, । हस्त में रात ९:१२ बजे से रात्रिअंत तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, कर्णवेध, अक्षरारंभ, स्कूल प्रवेश, । {४} कृषि मुहूर्त्त –उ.फा. में दिन १२:३२ बजे से रात ९:१२ बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य विक्रय, । उ.फा. में एवं हस्त में दिन १२:३२ बजे से

रात्रिअंत तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, ईंधन स्थापन, । हस्त में रात ९:१२ बजे से रात्रिअंत तक पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – उ.फा. में दिन १२:३२ बजे से रात ९:१२ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, वैंक लॉकर खोलना, । उ.फा. में एवं हस्त में दिन १२:३२ बजे से रात्रिअंत तक व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), । {६} विविध मुहुर्त –उ.फा. में एवं हस्त में दिन १२:३२ बजे से रात्रिअंत तक नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त्त हैं। उ.फा. में दिन १२:३२ बजे से रात ९:१२ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं। हस्त में रात ९:१२ बजे से रात्रिअंत तक वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), राजसेवा, मुहूर्त्त हैं। (हस्त में शनि वेध,। उ.फा. में केतु युति।)

वैशाख शुक्ल १२ शुक्र। ९ मई २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति शनि सूर्योदय से रात १२:१४। चंद्र रात १२:१४ से रातअंत। शिववास कैलाश पर सूर्योदय से दिन ३:०३ तक। वृषारूढ दिन ३:०३ से रातअंत । हस्त में सूर्योदय से रात १२:१४ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । हस्त में एवं चित्रा में सूर्योदय से रात्रिअंत तक देव प्रतिष्ठा धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – हस्त में एवं चित्रा में दिन २:६० बजे से रात्रिअंत तक गृहछादन छत,, । चित्रा में रात १२:१४ बजे से रात्रिअंत तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध , नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध), । {३} संस्कार मुहूर्त्त – हस्त में सूर्योदय से दिन २:६० बजे तक अक्षरारंभ, स्कूल प्रवेश, उपनयन, विद्यारंभ, उच्च शिक्षा, कन्या वरण, । हस्त में एवं चित्रा में सूर्योदय से रात्रिअंत तक जातकर्म, नामकरण, कर्णवेध, द्विरागमन, पुनर्विवाह, । हस्त में एवं चित्रा में दिन २:६० बजे से रात्रिअंत तक अन्नप्राशन, । {४} कृषि मुहूर्त्त –हस्त में सूर्योदय से रात १२:१४ बजे तक बीज बोवनी, ईंधन स्थापन, पशु क्रय विक्रय, । हस्त में एवं चित्रा में सूर्योदय से रात्रिअंत तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – हस्त में एवं चित्रा में सूर्योदय से रात्रिअंत तक व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), । चित्रा में रात १२:१४ बजे से रात्रिअंत तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –हस्त में एवं चित्रा में सूर्योदय से रात्रिअंत तक वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), नवीन वस्त्र–आभूषण, राजसेवा, मुहूर्त्त हैं। हस्त में दिन २:६० बजे से रात १२:१४ बजे तक यात्रा, मुहूर्त्त हैं। चित्रा में रात १२:१४ बजे से रात्रिअंत तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त्त हैं। (हस्त में शनि वेध। चित्रा में राहु वेध, । हस्त में शुक्रवेध ५:४६ से दिन १०:४१ वजे तक।)

वैशाख शुक्ल १३ शनि। १० मई २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – शिववास वृषारूढ सूर्योदय से सायं ५:३६ तक। चित्रा में सूर्योदय से सायं ५:३४ बजे तक देव प्रतिष्ठा । {२} वास्तु मुहूर्त – चित्रा में सूर्योदय से सायं ५:३४ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध , । {३} संस्कार मुहूर्त्त – चित्रा में सूर्योदय से सायं ५:३४ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । {४} कृषि मुहूर्त्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – चित्रा में सूर्योदय से सायं ५:३४ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –चित्रा में सूर्योदय से सायं ५:३४ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, राजसेवा, मुहूर्त्त हैं। (चित्रा में राहु वेध, ।)

वैशाख शुक्ल १४ रवि। ११ मई २०२५। स्वाती में व्यतिपात दोष। मुहूर्त्त अभाव।

वैशाख शुक्ल १५ चंद्र। १२ मई २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर रात १०:३१ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति चंद्र सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप रात १०:३१ से रातअंत । विशाखा में भद्रा पश्चात् प्रातः ९:२० बजे से रात्रिअंत तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – विशाखा में भद्रा पश्चात् प्रातः ९:२० बजे से रात्रिअंत तक नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्ध, {३} संस्कार मुहूर्त्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त्त –विशाखा में भद्रा पश्चात् प्रातः ९:२० बजे से रात्रिअंत तक पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – विशाखा में भद्रा पश्चात् प्रातः ९:२० बजे से रात्रिअंत तक वैंक लॉकर खोलना, धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश, । विशाखा में भद्रा पश्चात् प्रातः ९:२० बजे से रात १०:३० बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । {६} विविध मुहुर्त –अभाव।

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

ज्येष्ठ कृष्ण १ मंगल। १३ मई २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से रात १२:४० तक। ग्रह मुख आहुति चंद्र सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से रात १२:४० तक। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – अनुराधा में परिघ पश्चात सायं ६:१० बजे से रात्रिअंत तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, प्रसूति स्नान, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । {४} कृषि मुहूर्त्त –अनुराधा में परिघ पश्चात सायं ६:१० बजे से रात १२:३९ बजे तक बीज बोवनी, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अनुराधा में परिघ पश्चात सायं ६:१० बजे से रात्रिअंत तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –अनुराधा में परिघ पश्चात सायं ६:१० बजे से रात्रिअंत तक यात्रा, मुहूर्त्त हैं। (अनुराधा में मंगल वेध,।)

ज्येष्ठ कृष्ण २ बुध। १४ मई २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अभाव। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अनुराधा में सूर्योदय से दिन ११:४९ बजे तक यात्रा, मुहूर्त्त हैं। (अनुराधा में भौम वेध ।)

ज्येष्ठ कृष्ण ३ गुरु। १५ मई २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से रात ४:०६ तक। ग्रह मुख आहुति मंगल सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर रात ४:०६ से रातअंत । ज्येष्ठा में सूर्योदय से दिन २:०८ बजे तक अग्न्याधान, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – ज्येष्ठा में सूर्योदय से दिन २:०८ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, मुंडन, । मूल में भद्रा से पहले दिन २:०८ बजे से दिन ३:१९ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, विद्यारंभ, उच्च शिक्षा, । {४} कृषि मुहूर्त्त –ज्येष्ठा में सूर्योदय से दिन २:०८ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । मूल में भद्रा से पहले दिन २:०८ बजे से दिन ३:१९ बजे तक धान्य रोपण, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – ज्येष्ठा में सूर्योदय से दिन २:०८ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । {६} विविध मुहुर्त –अभाव।

ज्येष्ठ कृष्ण ४ शुक्र। १६ मई २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर रात ५:१७ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति मंगल सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर सूर्योदय से रात ५:१७ तक। वृषारूढ रात ५:१७ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – पू.षा. में रात ५:१५ बजे से रात्रिअंत तक मंत्र दीक्षा, जैन विद्यारंभ । {४} कृषि मुहूर्त्त –पू.षा. में रात ५:१५ बजे से रात्रिअंत तक धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –पू.षा. में रात ५:१५ बजे से रात्रिअंत तक संपत्ति क्रय, मुहूर्त्त हैं।

ज्येष्ठ कृष्ण ५ शनि। १७ मई २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से रात ६:०३ तक। ग्रह मुख आहुति मंगल सूर्योदय से सायं ५:४३। गुरु सायं ५:४३ से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से रात ६:०३ तक। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त्त –उ.षा. में सायं ५:४३ बजे से रात ५:४२ बजे तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –उ.षा. में सायं ५:४३ बजे से रात ५:४२ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं। (उ.षा. में गुरु वेध रात १२:०५ वजे से रातअंत ६:२६ वजे तक।)

ज्येष्ठ कृष्ण ५ रवि। १८ मई २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर प्रातः ६:०२ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति गुरु सूर्योदय से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से प्रातः ६:०२ तक। उ.षा. में एवं श्रवण में सूर्योदय से रात्रिअंत तक देव प्रतिष्ठा शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । श्रवण में सायं ६:५३ बजे से रात्रिअंत तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – उ.षा. में सूर्योदय से प्रातः ६:०० बजे तक अन्नप्राशन, उपनयन, कन्या वरण, । उ.षा. में सूर्योदय से सायं ६:५३ बजे तक प्रसूति स्नान, वर वरण, । उ.षा. में एवं श्रवण में सूर्योदय से रात्रिअंत तक सीमन्त पुंसवन, विद्यारंभ, उच्च शिक्षा, । श्रवण में सायं ६:५३ बजे से रात्रिअंत तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, अक्षरारंभ, स्कूल प्रवेश, जैन विद्यारंभ । {४} कृषि मुहूर्त्त –उ.षा. में सूर्योदय से सायं ६:५३ बजे तक धान्य रोपण, धान्य विक्रय, । उ.षा. में एवं श्रवण में सूर्योदय से रात्रिअंत तक धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – श्रवण में सायं ६:५३ बजे से रात्रिअंत तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –उ.षा. में एवं श्रवण में सूर्योदय से रात्रिअंत तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं। श्रवण में सायं ६:५३ बजे से रात्रिअंत तक सर्व वस्तु क्रय, वाहन क्रय, मुहूर्त्त हैं। (क्रान्तिसाम्य दोष दिन १:१२ से सायं ५:२१ वजे तक। श्रवण में सूर्य वेध, । उ.षा. में गुरु वेध प्रातः ५:४१ से प्रातः ६:२४ वजे तक।)

ज्येष्ठ कृष्ण ६ चंद्र। १९ मई २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – श्रवण में एवं धनिष्ठा मेंभद्रा पश्चात्, सायं ६:०७ बजे से रात्रिअंत ५:१९ बजे तक देव प्रतिष्ठा शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – श्रवण में सायं ६:०७ बजे से रात ७:३१ बजे तक गृहछादन छत,, । धनिष्ठा में रात ७:३१ बजे से रात्रिअंत ५:१९ बजे तक नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध नहीं), । {३} संस्कार मुहूर्त्त – श्रवण में सूर्योदय से प्रातः ६:१६ बजे तक अक्षरारंभ, स्कूल प्रवेश, कन्या वरण, । श्रवण में सायं ६:०७ बजे से रात ७:३१ बजे तक मुंडन, । श्रवण में एवं धनिष्ठा मेंभद्रा पश्चात्, सायं ६:०७ बजे से रात्रिअंत ५:१९ बजे तक जातकर्म, नामकरण, कर्णवेध, । श्रवण में एवं धनिष्ठा में भद्रा पश्चात्, सायं ६:०७ बजे से रात्रिअंत ५:१९ बजे तक अन्नप्राशन, । {४} कृषि मुहूर्त्त –श्रवण में एवं धनिष्ठा मेंभद्रा पश्चात्, सायं ६:०७ बजे से रात्रिअंत ५:१९ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, । धनिष्ठा में रात ७:३१ बजे से रात्रिअंत ५:१९ बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य रोपण, धान्य विक्रय, पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – श्रवण में एवं धनिष्ठा मेंभद्रा पश्चात्, सायं ६:०७ बजे से रात्रिअंत ५:१९ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, पूंजी निवेश, । श्रवण में एवं धनिष्ठा में भद्रा पश्चात्, सायं ६:०७ बजे से रात्रिअंत ५:१९ बजे तक धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, । धनिष्ठा में रात ७:३१ बजे से रात्रिअंत ५:१९ बजे तक वैंक लॉकर खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –श्रवण में सूर्योदय से प्रातः ६:१६ बजे एवं सायं ६:०७ बजे से रात ७:३१ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, वाहन क्रय, मुहूर्त्त हैं। श्रवण में एवं धनिष्ठा मेंभद्रा पश्चात्, सायं ६:०७ बजे से रात्रिअंत ५:१९ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं। श्रवण में एवं धनिष्ठा में भद्रा पश्चात्, सायं ६:०७ बजे से रात्रिअंत ५:१९ बजे तक यात्रा, मुहूर्त्त हैं। (श्रवण में सूर्य वेध ।)

ज्येष्ठ कृष्ण ७ मंगल। २० मई २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर प्रातः ५:५८ सेरात ४:२१तक। ग्रह मुख आहुति गुरु सूर्योदय से रात ७:३३। राहु रात ७:३३ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप प्रातः ५:५८ सेरात ४:२१। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – धनिष्ठा में सूर्योदय से रात ७:३३ बजे तक पुनर्विवाह, । धनिष्ठा में एवं शतभिषा में सूर्योदय से रात्रि २:५३ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । शतभिषा में वैधृति से पहले रात ७:३३ बजे से रात्रि २:५३ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, । {४} कृषि मुहूर्त –धनिष्ठा में एवं शतभिषा में सूर्योदय से रात्रि २:५३ बजे तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – धनिष्ठा में एवं शतभिषा में सूर्योदय से रात्रि २:५३ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –धनिष्ठा में सूर्योदय से प्रातः ५:५७ बजे तक यात्रा, मुहूर्त हैं। शतभिषा में वैधृति से पहले रात ७:३३ बजे से रात्रि २:५३ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त हैं।

ज्येष्ठ कृष्ण ९ बुध। २१ मई २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अभाव। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – पू.भा. में रात ३:२५ बजे से रात्रिअंत तक विद्यारंभ, उच्च शिक्षा, । {४} कृषि मुहूर्त –पू.भा. में रात ३:२५ बजे से रात्रिअंत तक नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में दिनरात, धान्य छेदन, कटाई, ईंधन स्थापन, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – पू.भा. में रात ३:२५ बजे से रात्रिअंत तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (पू.भा. में राहु युति।)

ज्येष्ठ कृष्ण १० गुरु। २२ मई २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति राहु सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर रात १:११ से रातअंत । उ.भा. में रात १:१३ बजे से रात्रिअंत तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । {२} वास्तु मुहूर्त – उ.भा. में रात १:१३ बजे से रात्रिअंत तक नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध), । {३} संस्कार मुहूर्त – पू.भा. में भद्रा से पहले सूर्योदय से दिन २:२२ बजे तक कन्या वरण, वर वरण, । पू.भा. में भद्रा से पहले सूर्योदय से दिन २:२२ बजे एवं उ.भा. मेंरात १:१३ बजे से रात्रिअंत तक विद्यारंभ, उच्च शिक्षा, । उ.भा. में रात १:१३ बजे से रात्रिअंत तक सीमन्त पुंसवन, प्रसूति स्नान, जातकर्म, नामकरण, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –पू.भा. में भद्रा से पहले सूर्योदय से दिन २:२२ बजे तक नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में दिनरात, । पू.भा. में भद्रा से पहले सूर्योदय से दिन २:२२ बजे एवं उ.भा. मेंरात १:१३ बजे से रात्रिअंत तक धान्य छेदन, कटाई, ईंधन स्थापन, । उ.भा. में रात १:१३ बजे से रात्रिअंत तक हल प्रवहण जुताई, धान्य रोपण, धान्य संग्रह, धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – पू.भा. में भद्रा से पहले सूर्योदय से दिन २:२२ बजे एवं उ.भा. मेंरात १:१३ बजे से रात्रिअंत तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । उ.भा. में रात १:१३ बजे से रात्रिअंत तक व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), । {६} विविध मुहुर्त –पू.भा. में भद्रा से पहले सूर्योदय से दिन २:२२ बजे तक संपत्ति क्रय, मुहूर्त हैं। उ.भा. में रात १:१३ बजे से रात्रिअंत तक नवीन वस्त्र–आभूषण, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। (पू.भा. में राहु युति। उ.भा. में शनि युति।)

ज्येष्ठ कृष्ण ११ शुक्र। २३ मई २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – शिववास कैलाश पर सूर्योदय से रात १०:२५ तक। वृषारूढ रात १०:२५ से रात. अंत । उ.भा. में एवं रेवती में सूर्योदय से रात्रिअंत तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । रेवती में दिन ३:५७ बजे से रात्रिअंत तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । रेवती में रात १०:२८ बजे से रात्रिअंत तक अग्न्याधान, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – उ.भा. में सूर्योदय से दिन ३:५७ बजे तक कन्या वरण, वर वरण, । उ.भा. में एवं रेवती में सूर्योदय से रात्रिअंत तक जातकर्म, नामकरण, विद्यारंभ, उच्च शिक्षा, पुनर्विवाह, । रेवती में दिन ३:५७ बजे से रात्रिअंत तक कर्णवेध, जैन विद्यारंभ । रेवती में दिन ३:५७ बजे से रात १०:२८ बजे तक अक्षरारंभ, स्कूल प्रवेश, । {४} कृषि मुहूर्त –उ.भा. में सूर्योदय से दिन ३:५७ बजे तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य विक्रय, । उ.भा. में एवं रेवती में सूर्योदय से रात्रिअंत तक हल प्रवहण जुताई, धान्य संग्रह, ईंधन स्थापन, । रेवती में दिन ३:५७ बजे से रात्रिअंत तक पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – उ.भा. में सूर्योदय से दिन ३:५७ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण,। उ.भा. में एवं रेवती में सूर्योदय से रात्रिअंत तक व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), । रेवती में दिन ३:५७ बजे से रात्रिअंत तक बैंक लॉकर खोलना, धनसंग्रह, बैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –उ.भा. में एवं रेवती में सूर्योदय से रात्रिअंत तक नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त हैं। उ.भा. में सूर्योदय से दिन ३:५७ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। रेवती में दिन ३:५७ बजे से रात्रिअंत तक सर्व वस्तु क्रय, राजसेवा, मुहूर्त हैं। रेवती में दिन ३:५७ बजे से रात १०:२८ बजे तक संपत्ति क्रय, मुहूर्त हैं। (रेवती में केतु वेध, । उ.भा. में शनि युति। रेवती में शुक्र युति।)

ज्येष्ठ कृष्ण १२ शनि। २४ मई २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति केतु सूर्योदय से रातअंत। केतु ९:२४ से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से रात ७:१४ तक। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – रेवती में एवं अश्विनी में निर्बल चंद्रकाल से पहले सूर्योदय से रात ७:१४ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –रेवती में एवं अश्विनी में निर्बल चंद्रकाल से पहले सूर्योदय से रात ७:१४ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – रेवती में एवं अश्विनी में निर्बल चंद्रकाल से पहले सूर्योदय से रात ७:१४ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –रेवती में एवं अश्विनी में निर्बल चंद्रकाल से पहले सूर्योदय से रात ७:१४ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, राजसेवा, मुहूर्त हैं। (रेवती में केतु वेध, । रेवती में शुक्र युति।)

ज्येष्ठ कृष्ण १३ रवि। २५ मई २०२५। अश्विनी में निर्बल चंद्र। भरणी में निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त अभाव।

ज्येष्ठ कृष्ण १४ चंद्र। २६ मई २०२५। भरणी में निर्बल चंद्र। कृतिका में निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से दिन १२:०८ तक। ग्रह मुख आहुति केतु सूर्योदय से रात ५:३०। शिववास गौरी के समीप दिन १२:०८ से रातअंत ।

ज्येष्ठ कृष्ण ३० मंगल। २७ मई २०२५। रोहिणी में निर्बल चंद्र। निर्बल चंद्र दोष मृगशिर में निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त अभाव। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से दिन ८:३१ तक।

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

ज्येष्ठ शुक्ल २ बुध। २८ मई २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति सूर्य सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से रात १:५९ तक। मृगशिर में सूर्योदय से रात १२:३४ बजे तक देव प्रतिष्ठा अग्न्याधान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – मृगशिर में सूर्योदय से रात १२:३४ बजे तक नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध नहीं), । {३} संस्कार मुहूर्त – मृगशिर में सूर्योदय से रात १२:३४ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, कर्णवेध, मुंडन, उपनयन, कन्या वरण, । आर्द्रा में रात १:५५ बजे से रात्रिअंत तक विद्यारंभ, उच्च शिक्षा, । {४} कृषि मुहूर्त –मृगशिर में सूर्योदय से रात १२:३४ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – मृगशिर में सूर्योदय से रात १२:३४ बजे तक धनसंग्रह, बैंकखाता खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –मृगशिर में सूर्योदय से रात १२:३४ बजे तक यात्रा, वाहन क्रय, मुहूर्त हैं। आर्द्रा में रात १२:३४ बजे से रात्रिअंत तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। (मृगशिर में गुरु युति।)

ज्येष्ठ शुक्ल ३ गुरु। २९ मई २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – पुनर्वसु में रात १०:४७ बजे से रात ११:२१ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – आर्द्रा में सूर्योदय से रात १०:४७ बजे तक अक्षरारंभ, स्कूल प्रवेश, उपनयन, । आर्द्रा में एवं पुनर्वसु में सूर्योदय से रात ११:२१ बजे तक विद्यारंभ, उच्च शिक्षा, । पुनर्वसु में रात १०:४७ बजे से रात ११:२१ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, कर्णवेध, । {४} कृषि मुहूर्त –पुनर्वसु में रात १०:४७ बजे से रात ११:२१ बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य संग्रह, पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – पुनर्वसु में रात १०:४७ बजे से रात ११:२१ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, धनसंग्रह, बैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –आर्द्रा में सूर्योदय से रात १०:४७ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। पुनर्वसु में रात १०:४७ बजे से रात ११:२१ बजे तक वाहन क्रय, नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त हैं।

ज्येष्ठ शुक्ल ४ शुक्र। ३० मई २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति बुध सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर रात ९:३५ से रातअंत । पुनर्वसु में एवं पुष्य में रात ९:२७ बजे से रात्रिअंत तक देव प्रतिष्ठा शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । पुष्य में रात ९:४० बजे से रात्रिअंत तक अग्न्याधान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – पुष्य में रात ९:४० बजे से रात्रिअंत तक गृहछादन छत,, नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध नहीं), । {३} संस्कार मुहूर्त – पुनर्वसु में भद्रा से पहले सूर्योदय से दिन १०:१७ बजे तक प्रसूति जल/कुआ पूजन, । पुनर्वसु में भद्रा से पहले रात ९:२७ बजे से रात ९:४० बजे तक जैन विद्यारंभ । पुनर्वसु में एवं पुष्य में रात ९:२७ बजे से रात्रिअंत तक जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, कर्णवेध, अक्षरारंभ, स्कूल प्रवेश, । पुष्य में रात ९:४० बजे से रात्रिअंत तक मंत्र दीक्षा, । {४} कृषि मुहूर्त –पुनर्वसु में एवं पुष्य में रात ९:२७ बजे से रात्रिअंत तक हल प्रवहण जुताई, धान्य संग्रह, पशु क्रय विक्रय, । पुष्य में रात ९:४० बजे से रात्रिअंत तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, ईंधन स्थापन, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – पुनर्वसु में एवं पुष्य में रात ९:२७ बजे से रात्रिअंत तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, धनसंग्रह, बैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश, । पुष्य में रात ९:४० बजे से रात्रिअंत तक व्यापार प्रारंभ, । {६} विविध मुहुर्त –पुनर्वसु में एवं पुष्य में रात ९:२७ बजे से रात्रिअंत तक यात्रा, वाहन क्रय, नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त हैं। पुनर्वसु में भद्रा से पहले रात ९:२७ बजे से रात ९:४० बजे तक संपत्ति क्रय, मुहूर्त हैं। पुष्य में रात ९:४० बजे से रात्रिअंत तक राजसेवा, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। (क्रान्तिसाम्य दोष दिन ८:०८ से दिन १२:२१ बजे तक।)

ज्येष्ठ शुक्ल ५ शनि। ३१ मई २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – शिववास कैलाश पर सूर्योदय से रात ८:२८ तक। वृषारूढ रात ८:२८ से रातअंत। पुष्य में सूर्योदय से रात ९:१८ बजे तक देव प्रतिष्ठा । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – पुष्य में सूर्योदय से रात

९:१८ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । {४} कृषि मुहूर्त्त –पुष्य में सूर्योदय से रात ९:१८ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । अश्लेषा में रात ९:१८ बजे से रात्रिअंत तक नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में दिनरात, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – पुष्य में सूर्योदय से रात ९:१८ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –पुष्य में सूर्योदय से रात ९:१८ बजे तक राजसेवा, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं। पुष्य में सूर्योदय से रात ८:२० बजे तक यात्रा, मुहूर्त्त हैं। (अश्लेषा में मंगल युति।)

ज्येष्ठ शुक्ल ६ रवि। १ जून २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से रात ८:१२ तक। ग्रह मुख आहुति बुध सूर्योदय से रात ९:४७। शुक्र रात ९:४७ से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से रात ८:१२ तक। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – अश्लेषा में सूर्योदय से रात ८:०४ बजे तक विद्यारंभ, उच्च शिक्षा, । मघा में रात ९:४७ बजे से रात्रिअंत तक जैन विद्यारंभ पुनर्विवाह,। {४} कृषि मुहूर्त्त –अश्लेषा में सूर्योदय से रात ९:४७ बजे तक नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में रा. ९:४७ तक, । मघा में रात ९:४७ बजे से रात्रिअंत तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (अश्लेषा में मंगल युति।)

ज्येष्ठ शुक्ल ७ चंद्र। २ जून २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अभाव। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – मघा में सूर्योदय से रात ८:३९ बजे तक कन्या वरण, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त्त –मघा में सूर्योदय से रात ८:३९ बजे तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, ईंधन स्थापन, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव।

ज्येष्ठ शुक्ल ८ मंगल। ३ जून २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से रात १०:०५ तक। ग्रह मुख आहुति शुक्र सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप रात १०:०५ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – पू.फा. में भद्रा पश्चात् प्रात: ९:१३ बजे से रात ९:६० बजे तक वर वरण, । उ.फा. में रात १:०५ बजे से रात्रिअंत तक प्रसूति स्नान, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त्त –उ.फा. में रात १:०५ बजे से रात्रिअंत तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (पूर्वा.फा. में शुक्रवेध सायं ६:३२ वजे से रात १:०५ वजे तक।उ.फा. में केतु युति।)

ज्येष्ठ शुक्ल ९ बुध। ४ जून २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर रात १२:०१ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति शुक्र सूर्योदय से रात ३:४०। शनि रात ३:४० से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से रात १२:०१ तक। उ.फा. में एवं हस्त में रात ११:५७ बजे से रात्रिअंत तक देव प्रतिष्ठा । हस्त में रात ३:४० बजे से रात्रिअंत तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – उ.फा. में रात ११:५७ बजे से रात ३:४० बजे तक नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध), । {३} संस्कार मुहूर्त्त – उ.फा. में रात ११:५७ बजे से रात ३:४० बजे तक अन्नप्राशन, वर वरण, । उ.फा. में एवं हस्त में सूर्योदय से रात्रिअंत तक पुनर्विवाह, । उ.फा. में एवं हस्त में रात ११:५७ बजे से रात्रिअंत तक विद्यारंभ, उच्च शिक्षा, । हस्त में रात ३:४० बजे से रात्रिअंत तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । {४} कृषि मुहूर्त्त –उ.फा. में सूर्योदय से रात ३:४० बजे तक धान्य विक्रय, । उ.फा. में एवं हस्त में रात ११:५७ बजे से रात्रिअंत तक हल प्रवहण जुताई, धान्य छेदन, कटाई, ईंधन स्थापन, । हस्त में रात ३:४० बजे से रात्रिअंत तक पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – उ.फा. में रात ११:५७ बजे से रात ३:४० बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, वैंक लॉकर खोलना, । उ.फा. में एवं हस्त में रात ११:५७ बजे से रात्रिअंत तक व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), । {६} विविध मुहुर्त –उ.फा. में एवं हस्त में रात ११:५७ बजे से रात्रिअंत तक नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त्त हैं। उ.फा. में रात ११:५७ बजे से रात ३:४० बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं। हस्त में रात ३:४० बजे से रात्रिअंत तक यात्रा, मुहूर्त्त हैं। (हस्त में शनि वेध,। उ.फा. में केतु युति।)

ज्येष्ठ शुक्ल १० गुरु। ५ जून २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – हस्त में व्यतिपात से पहले, सूर्योदय से प्रात: ९:१७ बजे तक देव प्रतिष्ठा शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – हस्त में व्यतिपात से पहले, सूर्योदय से प्रात: ९:१७ बजे तक सीमन्त पुंसवन, शल्यक्रिया ऑपरेशन, प्रसूति स्नान, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, कर्णवेध, मुंडन, अक्षरारंभ, स्कूल प्रवेश, उपनयन, विद्यारंभ, उच्च शिक्षा, कन्या वरण, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त्त –हस्त में व्यतिपात से पहले, सूर्योदय से प्रात: ९:१७ बजे तक हल प्रवहण जुताई, बीज बोवनी, धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, ईंधन स्थापन, पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – हस्त में व्यतिपात से पहले, सूर्योदय से प्रात: ९:१७ बजे तक व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), । {६} विविध मुहुर्त –हस्त में व्यतिपात से पहले, सूर्योदय से प्रात: ९:१७ बजे तक यात्रा, वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), नवीन वस्त्र–आभूषण, राजसेवा, मुहूर्त्त हैं। (हस्त में शनि वेध।)

ज्येष्ठ शुक्ल ११ शुक्र। ६ जून २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर रात ४:५३ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति शनि सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर रात ४:५३ से रातअंत । चित्रा में भद्रा से पहले व्यतिपात पश्चात दिन १०:१६ बजे से दिन ३:३५ बजे एवं रात ४:५२ बजे से रात्रिअंत तक देव प्रतिष्ठा धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – चित्रा में भद्रा से पहले व्यतिपात पश्चात दिन १०:१६ बजे से दिन ३:३५ बजे एवं रात ४:५२ बजे से रात्रिअंत तक नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध), । चित्रा में रात ४:५२ बजे से रात्रिअंत तक गृहछादन छत,, । {३} संस्कार मुहूर्त्त – चित्रा में भद्रा से पहले व्यतिपात पश्चात दिन १०:१६ बजे से दिन ३:३५ बजे एवं रात ४:५२ बजे से रात्रिअंत तक जातकर्म, नामकरण, कर्णवेध, विद्यारंभ, उच्च शिक्षा, पुनर्विवाह, । चित्रा में भद्रा से पहले व्यतिपात पश्चात दिन १०:१६ बजे से दिन ३:३५ बजे तक अक्षरारंभ, स्कूल प्रवेश, उपनयन, । {४} कृषि मुहूर्त्त –चित्रा में भद्रा से पहले व्यतिपात पश्चात दिन १०:१६ बजे से दिन ३:३५ बजे एवं रात ४:५२ बजे से रात्रिअंत तक हल प्रवहण जुताई, धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, ईंधन स्थापन, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – चित्रा में भद्रा से पहले व्यतिपात पश्चात दिन १०:१६ बजे से दिन ३:३५ बजे एवं रात ४:५२ बजे से रात्रिअंत तक व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –चित्रा में भद्रा से पहले व्यतिपात पश्चात दिन १०:१६ बजे से दिन ३:३५ बजे एवं रात ४:५२ बजे से रात्रिअंत तक नवीन वस्त्र–आभूषण, राजसेवा, मुहूर्त्त हैं। चित्रा में भद्रा से पहले व्यतिपात पश्चात दिन १०:१६ बजे से दिन ३:३५ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), मुहूर्त्त हैं। (हस्त में शनि वेध। चित्रा में राहु वेध, ।)

ज्येष्ठ शुक्ल १२ शनि। ७ जून २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से रात ७:२५ तक। ग्रह मुख आहुति शनि सूर्योदय से रातअंत। शनि रात ७:१५ से रातअंत। शिववास कैलाश पर सूर्योदय से रात ७:२५ तक। वृषारूढ रात ७:२५ से रातअंत । चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से रात ५:३८ बजे तक देव प्रतिष्ठा । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से रात ५:३८ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से रात ५:३८ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से रात ५:३८ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त्त हैं। चित्रा में सूर्योदय से प्रात: ९:४४ बजे तक राजसेवा, मुहूर्त्त हैं। (चित्रा में राहु वेध, ।)

ज्येष्ठ शुक्ल १२ रवि। ८ जून २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर प्रात: ७:२४ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति शनि सूर्योदय से प्रात: ७:१५। शनि प्रात: ७:१५ से दिन १२:४६ शनि दिन १२:४६ से रातअंत। शिववास कैलाश पर सूर्योदय से प्रात: ७:२४ तक। वृषारूढ प्रात: ७:२४ से रातअंत । स्वाती में सूर्योदय से दिन १२:४६ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । स्वाती में एवं विशाखा में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:३८ बजे तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – स्वाती में सूर्योदय से प्रात: ७:२३ बजे तक अक्षरारंभ, स्कूल प्रवेश, कन्या वरण, । स्वाती में प्रात: ७:२३ बजे से दिन १२:४६ बजे तक अन्नप्राशन, । स्वाती में सूर्योदय से दिन १२:४६ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, प्रसूति स्नान, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त्त –स्वाती में सूर्योदय से दिन १२:४६ बजे तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, । विशाखा में दिन १२:४६ बजे से रात्रिअंत ५:३८ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – स्वाती में एवं विशाखा में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:३८ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –स्वाती में सूर्योदय से दिन १२:४६ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), मुहूर्त्त हैं।

ज्येष्ठ शुक्ल १३ चंद्र। ९ जून २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से दिन ९:४२ तक। ग्रह मुख आहुति शनि सूर्योदय से दिन ३:३६। चंद्र दिन ३:३६ से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से दिन ९:४२ तक। विशाखा में सूर्योदय से प्रात: ९:४२ बजे तक अग्न्याधान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – अनुराधा में दिन ३:३६ बजे से रात्रिअंत ५:३८ बजे तक पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त्त –विशाखा में सूर्योदय से प्रात: ९:४२ बजे तक ईंधन स्थापन, पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – विशाखा में सूर्योदय से प्रात: ९:४२ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, वैंक लॉकर खोलना, धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –अभाव।

ज्येष्ठ शुक्ल १४ मंगल। १० जून २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अभाव। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – ज्येष्ठा में भद्रा पश्चात् रात १२:३३ बजे से रात्रिअंत ५:३८ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, । {४} कृषि मुहूर्त्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव।

ज्येष्ठ शुक्ल १५ बुध। ११ जून २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से दिन १:१८ तक। ग्रह मुख आहुति चंद्र सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप दिन १:१८ से रातअंत । ज्येष्ठा में सूर्योदय से दिन १:१९ बजे तक अग्न्याधान, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – मूल में रात ८:१४ बजे से रात्रिअंत ५:३८ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । {४} कृषि मुहूर्त्त –ज्येष्ठा में सूर्योदय से रात ८:१४ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – ज्येष्ठा में सूर्योदय से दिन १:१९ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । {६} विविध मुहुर्त –अभाव।

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

आषाढ कृष्ण १ गुरु। १२ जून २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिन २:३० से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति चंद्र सूर्योदय से रात ९:५८। मंगल रात ९:५८ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से दिन २:३० तक। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – मूल में सूर्योदय से दिन २:३१ बजे तक कन्या वरण, । मूल में दिन २:३१ बजे से रात ८:४५ बजे तक मंत्र दीक्षा, । मूल में सूर्योदय से रात ८:४५ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । {४} कृषि मुहूर्त्त –मूल में दिन २:३१ बजे से रात ८:४५ बजे तक धान्य रोपण, । पू.षा. में क्रांतिसाम्य पश्चात, रात १२:५८ बजे से रात्रिअंत ५:३८ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – पू.षा. में क्रांतिसाम्य पश्चात, रात १२:५८ बजे से रात्रिअंत ५:३८ बजे तक वैंक लॉकर खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –मूल में सूर्योदय से दिन २:३१ बजे तक संपत्ति क्रय, मुहूर्त्त हैं। (क्रान्तिसाम्य दोष रात ८:४५ से रात १२:५८ वजे तक।)

आषाढ कृष्ण २ शुक्र। १३ जून २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – उ.षा. में भद्रा से पहले रात ११:२० बजे से रात्रि ३:३८ बजे तक अग्न्याधान, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । {२} वास्तु मुहूर्त – उ.षा. में भद्रा से पहले रात ११:२० बजे से रात्रि ३:३८ बजे तक गृहछादन छत, (अग्निबाण २९:३१ से, त्यागकर), । {३} संस्कार मुहूर्त्त – पू.षा. में सूर्योदय से दिन ३:२० बजे तक कन्या वरण, । पू.षा. में सूर्योदय से रात ११:२० बजे तक वर वरण, । उ.षा. में भद्रा से पहले रात ११:२० बजे से रात्रि ३:३८ बजे तक जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन। {४} कृषि मुहूर्त्त –पू.षा. में एवं उ.षा. में सूर्योदय से रात्रि ३:३८ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, । उ.षा. में भद्रा से पहले रात ११:२० बजे से रात्रि ३:३८ बजे तक धान्य रोपण, धान्य संग्रह, धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – पू.षा. में सूर्योदय से रात ११:२० बजे तक वैंक लॉकर खोलना, । उ.षा. में भद्रा से पहले रात ११:२० बजे से रात्रि ३:३८ बजे तक व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण। {६} विविध मुहुर्त –उ.षा. में भद्रा से पहले रात ११:२० बजे से रात्रि ३:३८ बजे तक नवीन वस्त्र–आभूषण, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं। (उ.षा. में सूर्य वेध,। पूर्वाषाढ. में बुध वेध प्रातः ५:३८ से दिन १०:४३ वजे तक।)

आषाढ कृष्ण ३ शनि। १४ जून २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिन ३:४५ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति मंगल सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर दिन ३:४५ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त्त –उ.षा. में दिन ३:४६ बजे से रात १२:२० बजे तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (उ.षा. में सूर्य वेध ।)

आषाढ कृष्ण ४ रवि। १५ जून २०२५। श्रवण में वैधृति दोष धनिष्ठा में वैधृति दोष मुहूर्त्त अभाव। शिववास कैलाश पर सूर्योदय से दिन ३:४९ तक। वृषारूढ दिन ३:४९ से रातअंत ।

आषाढ कृष्ण ५ चंद्र। १६ जून २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति गुरु सूर्योदय से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से दिन ३:३० तक। धनिष्ठा में वैधृति, विष्कुंभ पश्चात, एवं शतभिषा में दिन १२:१७ बजे से रात्रिअंत ५:३८ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – धनिष्ठा में वैधृति, विष्कुंभ पश्चात, दिन १२:१७ बजे से दिन ३:३२ बजे तक अन्नप्राशन, कन्या वरण, । धनिष्ठा में वैधृति, विष्कुंभ पश्चात, दिन १२:१७ बजे से रात १:१३ बजे तक कर्णवेध, । धनिष्ठा में वैधृति, विष्कुंभ पश्चात, एवं शतभिषा में दिन १२:१७ बजे से रात्रिअंत ५:३८ बजे तक जातकर्म, नामकरण, । {४} कृषि मुहूर्त्त –धनिष्ठा में वैधृति, विष्कुंभ पश्चात, दिन १२:१७ बजे से रात १:१३ बजे तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, । धनिष्ठा में वैधृति, विष्कुंभ पश्चात, एवं शतभिषा में दिन १२:१७ बजे से रात्रिअंत ५:३८ बजे तक धान्य संग्रह, धान्य विक्रय, पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – धनिष्ठा में वैधृति, विष्कुंभ पश्चात, दिन १२:१७ बजे से दिन ३:३२ बजे तक धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, । धनिष्ठा में वैधृति, विष्कुंभ पश्चात, दिन १२:१७ बजे से रात १:१३ बजे तक वैंक लॉकर खोलना, । धनिष्ठा में वैधृति, विष्कुंभ पश्चात, एवं शतभिषा में दिन १२:१७ बजे से रात्रिअंत ५:३८ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –धनिष्ठा में वैधृति, विष्कुंभ पश्चात, दिन १२:१७ बजे से रात १:१३ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं। धनिष्ठा में वैधृति, विष्कुंभ पश्चात, दिन १२:१७ बजे से दिन ३:३२ बजे तक यात्रा, मुहूर्त्त हैं। शतभिषा में रात १:१३ बजे से रात्रिअंत ५:३८ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त्त हैं।

आषाढ कृष्ण ६ मंगल। १७ जून २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अभाव। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – शतभिषा में सूर्योदय से दिन २:४८ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । {४} कृषि मुहूर्त्त –शतभिषा में सूर्योदय से दिन २:४८ बजे तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – शतभिषा में सूर्योदय से दिन २:४८ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –शतभिषा में सूर्योदय से दिन २:४८ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त्त हैं। (पू.भा. में राहु युति।)

आषाढ कृष्ण ७ बुध। १८ जून २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति गुरु सूर्योदय से रात १२:२४। राहु रात १२:२४ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप दिन १:३६ से रातअंत । उ.भा. में रात १२:२४ बजे से रात्रिअंत ५:३८ बजे तक अग्न्याधान, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – पू.भा. में सूर्योदय से दिन १:३८ बजे तक कन्या वरण, । पू.भा. में सूर्योदय से रात १२:२४ बजे तक वर वरण, । उ.भा. में रात १२:२४ बजे से रात्रिअंत ५:३८ बजे तक जातकर्म, नामकरण, मंत्र दीक्षा, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त्त –पू.भा. में सूर्योदय से रात १२:२४ बजे तक नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में दिनरात, । पू.भा. में सूर्योदय से दिन १:३८ बजे एवं उ.भा. मेंरात १२:२४ बजे से रात्रिअंत ५:३८ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, । उ.भा. में रात १२:२४ बजे से रात्रिअंत ५:३८ बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य विक्रय, ईंधन स्थापन, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – पू.भा. में एवं उ.भा. में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:३८ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । उ.भा. में रात १२:२४ बजे से रात्रिअंत ५:३८ बजे तक व्यापार प्रारंभ, । {६} विविध मुहुर्त –उ.भा. में रात १२:२४ बजे से रात्रिअंत ५:३८ बजे तक नवीन वस्त्र–आभूषण, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं। (पू.भा. में राहु युति। उ.भा. में शनि युति।)

आषाढ कृष्ण ८ गुरु। १९ जून २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से दिन ११:५७ तक। उ.भा. में सूर्योदय से दिन ११:५९ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । उ.भा. में एवं रेवती में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:३९ बजे तक अग्न्याधान, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – उ.भा. में सूर्योदय से दिन ११:५९ बजे तक सीमन्त पुंसवन, मंत्र दीक्षा, कन्या वरण, वर वरण, । उ.भा. में एवं रेवती में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:३९ बजे तक प्रसूति स्नान, जातकर्म, नामकरण, पुनर्विवाह, । रेवती में रात ११:१७ बजे से रात्रिअंत ५:३९ बजे तक कर्णवेध, । {४} कृषि मुहूर्त्त –उ.भा. में सूर्योदय से दिन ११:५९ बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, ईंधन स्थापन, । उ.भा. में सूर्योदय से रात ११:१७ बजे तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – उ.भा. में सूर्योदय से दिन ११:५९ बजे तक व्यापार प्रारंभ, धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । {६} विविध मुहुर्त –उ.भा. में सूर्योदय से दिन ११:५९ बजे तक नवीन वस्त्र–आभूषण, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं। (रेवती में केतु वेध, । उ.भा. में शनि युति।)

आषाढ कृष्ण ९ शुक्र। २० जून २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – रेवती में प्रातः ९:५२ बजे से रात ८:३७ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – रेवती में प्रातः ९:५२ बजे से रात ८:३७ बजे तक अन्नप्राशन, अक्षरारंभ, स्कूल प्रवेश। रेवती में सूर्योदय से रात ८:३७ बजे तक पुनर्विवाह। {४} कृषि मुहूर्त्त –रेवती में प्रातः ९:५२ बजे से रात ८:३७ बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य संग्रह, ईंधन स्थापन, पशु क्रय विक्रय। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – रेवती में प्रातः ९:५२ बजे से रात ८:३७ बजे तक व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), वैंक लॉकर खोलना, धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश। {६} विविध मुहुर्त –रेवती में प्रातः ९:५२ बजे से रात ८:३७ बजे तक संपत्ति क्रय, यात्रा, सर्व वस्तु क्रय, नवीन वस्त्र–आभूषण, राजसेवा, मुहूर्त्त हैं। (रेवती में केतु वेध, ।)

आषाढ कृष्ण १० शनि। २१ जून २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – शिववास कैलाश पर प्रातः ७:२० सेरात ४:११। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – अश्विनी में प्रातः ७:१९ बजे से रात ७:४८ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त्त –अश्विनी में प्रातः ७:१९ बजे से रात ७:४८ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अश्विनी में प्रातः ७:१९ बजे से रात ७:४८ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –अश्विनी में प्रातः ७:१९ बजे से रात ७:४८ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, राजसेवा, मुहूर्त्त हैं। (भरणी में मंगल वेध,। भरणी में शुक्र युति।)

आषाढ कृष्ण १२ रवि। २२ जून २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – शिववास वृषारूढ सूर्योदय से रात १:१९ तक। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त्त –भरणी में एवं कृतिका में सूर्योदय से रात १:१८ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (भरणी में भौम वेध । भरणी में शुक्र युति।)

आषाढ कृष्ण १३ चंद्र। २३ जून २०२५। कृतिका में निर्बल चंद्र। रोहिणी में निर्बल चंद्र दोष भद्रा दोष निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त्त अभाव।

आषाढ कृष्ण १४ मंगल। २४ जून २०२५। रोहिणी में निर्बल चंद्र। मृगशिर में निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त्त अभाव। शिववास गौरी के समीप सायं ६:५८ से रातअंत ।

आषाढ कृष्ण ३० बुध। २५ जून २०२५। मृगशिर में निर्बल चंद्र। आर्द्रा में निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से दिन ४:०२ तक। ग्रह मुख आहुति केतु सूर्योदय से दिन १०:४०। सूर्य दिन १०:४० से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से दिन ४:०२ तक।

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

आषाढ शुक्ल १ गुरु। २६ जून २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति सूर्य सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप दिन १:२९ से रातअंत । पुनर्वसु में निर्बल चंद्रकाल पश्चात दिन १:२९ बजे से रात्रिअंत ५:४० बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – पुनर्वसु में निर्बल चंद्रकाल पश्चात दिन १:२९ बजे से रात्रिअंत ५:४० बजे तक सीमन्त पुंसवन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, कर्णवेध, । {४} कृषि मुहूर्त –पुनर्वसु में निर्बल चंद्रकाल पश्चात दिन १:२९ बजे से रात्रिअंत ५:४० बजे तक धान्य संग्रह, पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – पुनर्वसु में निर्बल चंद्रकाल पश्चात दिन १:२९ बजे से रात्रिअंत ५:४० बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, धनसंग्रह, बैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –पुनर्वसु में निर्बल चंद्रकाल पश्चात दिन १:२९ बजे से रात्रिअंत ५:४० बजे तक यात्रा, वाहन क्रय, नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त हैं। (आर्द्रा में सूर्य गुरु युति।)

आषाढ शुक्ल २ शुक्र। २७ जून २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से दिन ११:२६ तक। पुनर्वसु में एवं पुष्य में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:४१ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । पुष्य में प्रात: ७:२४ बजे से रात्रिअंत ५:४१ बजे तक अग्न्याधान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – पुष्य में दिन ११:२० बजे से रात्रिअंत ५:४१ बजे तक गृहछादन छत, (अग्निबाण २०:२७ तक, त्यागकर), । {३} संस्कार मुहूर्त – पुनर्वसु में एवं पुष्य में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:४१ बजे तक जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, कर्णवेध, । {४} कृषि मुहूर्त –पुनर्वसु में एवं पुष्य में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:४१ बजे तक धान्य संग्रह, पशु क्रय विक्रय, । पुष्य में प्रात: ७:२४ बजे से रात्रिअंत ५:४१ बजे तक बीज बोवनी, धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – पुनर्वसु में एवं पुष्य में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:४१ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, धनसंग्रह, बैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश, । पुष्य में प्रात: ७:२४ बजे से रात्रिअंत ५:४१ बजे तक व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), । {६} विविध मुहुर्त –पुनर्वसु में एवं पुष्य में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:४१ बजे तक यात्रा, वाहन क्रय, नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त हैं। पुष्य में प्रात: ७:२४ बजे से रात्रिअंत ५:४१ बजे तक राजसेवा, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। (पुष्य में बुध युति।)

आषाढ शुक्ल ३ शनि। २८ जून २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अभाव। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – पुष्य में सूर्योदय से प्रात: ६:४० बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । {४} कृषि मुहूर्त –पुष्य में सूर्योदय से प्रात: ६:४० बजे तक पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – पुष्य में सूर्योदय से प्रात: ६:४० बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –पुष्य में सूर्योदय से प्रात: ६:४० बजे तक यात्रा, राजसेवा, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। (पुष्य में बुध युति।)

आषाढ शुक्ल ४ रवि। २९ जून २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिन ९:२४ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति बुध सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर दिन ९:२४ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त –मघा में प्रात: ९:१९ बजे से रात्रिअंत ५:४१ बजे तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (मघा में मंगल युति।)

आषाढ शुक्ल ५ चंद्र। ३० जून २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से दिन ९:३५ तक। ग्रह मुख आहुति बुध सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर सूर्योदय से दिन ९:३५ तक। वृषारूढ दिन ९:३५ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – मघा में सूर्योदय से प्रात: ७:२९ बजे तक कन्या वरण, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –मघा में सूर्योदय से प्रात: ७:२९ बजे तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, । मघा में एवं पू.फा. में व्यतिपात से पहले सूर्योदय से सायं ५:३२ बजे तक ईंधन स्थापन, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (मघा में मंगल युति। पू.फा. में मंगल युति।)

आषाढ शुक्ल ६ मंगल। १ जुलाई २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिन १०:३२ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति बुध सूर्योदय से दिन ९:०३। शुक्र दिन ९:०३ से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से दिन १०:३२ तक। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – उ.फा. में व्यतिपात पश्चात सायं ५:२९ बजे से रात्रिअंत ५:४२ बजे तक सीमन्त पुंसवन, प्रसूति स्नान, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –उ.फा. में व्यतिपात पश्चात सायं ५:२९ बजे से रात्रिअंत ५:४२ बजे तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (पू.फा. में मंगल युति। उ.फा. में केतु युति।)

आषाढ शुक्ल ७ बुध। २ जुलाई २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – उ.फा. में सूर्योदय से दिन ११:१६ बजे तक अग्न्याधान, । हस्त में दिन ११:१६ बजे से दिन १२:०५ बजे तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – उ.फा. में सूर्योदय से दिन ११:१६ बजे तक कन्या वरण, वर वरण, । उ.फा. में एवं हस्त में सूर्योदय से दिन १२:०५ बजे तक जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, मंत्र दीक्षा, पुनर्विवाह, । हस्त में दिन ११:१६ बजे से दिन १२:०५ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, कर्णवेध, । {४} कृषि मुहूर्त –उ.फा. में सूर्योदय से दिन ११:१६ बजे तक धान्य विक्रय, । उ.फा. में एवं हस्त में सूर्योदय से दिन १२:०५ बजे तक हल प्रवहण जुताई, बीज बोवनी, धान्य छेदन, कटाई, ईंधन स्थापन, । हस्त में दिन ११:१६ बजे से दिन १२:०५ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – उ.फा. में सूर्योदय से दिन ११:१६ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, बैंक लॉकर खोलना, । उ.फा. में एवं हस्त में सूर्योदय से दिन १२:०५ बजे तक व्यापार प्रारंभ, । {६} विविध मुहुर्त –उ.फा. में एवं हस्त में सूर्योदय से दिन १२:०५ बजे तक नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त हैं। उ.फा. में सूर्योदय से दिन ११:१६ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। हस्त में दिन ११:१६ बजे से दिन १२:०५ बजे तक वाहन क्रय, मुहूर्त हैं। (हस्त में शनि वेध,। उ.फा. में केतु युति।)

आषाढ शुक्ल ८ गुरु। ३ जुलाई २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिन २:१५ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति शुक्र सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप दिन २:१५ से रातअंत । हस्त में परिघ पश्चात, प्रात: ६:१५ बजे से दिन १:५८ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । हस्त में एवं चित्रा में परिघ पश्चात, प्रात: ६:१५ बजे से दिन २:१२ बजे तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – हस्त में परिघ पश्चात, प्रात: ६:१५ बजे से दिन १:५८ बजे तक सीमन्त पुंसवन, प्रसूति स्नान, मंत्र दीक्षा, कन्या वरण, । हस्त में एवं चित्रा में परिघ पश्चात, प्रात: ६:१५ बजे से रात्रिअंत ५:४३ बजे तक जातकर्म, नामकरण, कर्णवेध, पुनर्विवाह, । हस्त में एवं चित्रा में परिघ पश्चात, प्रात: ६:१५ बजे से दिन २:१२ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । {४} कृषि मुहूर्त –हस्त में एवं चित्रा में परिघ पश्चात, प्रात: ६:१५ बजे से दिन २:१२ बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, ईंधन स्थापन, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – हस्त में एवं चित्रा में परिघ पश्चात, प्रात: ६:१५ बजे से दिन २:१२ बजे तक व्यापार प्रारंभ, । चित्रा में दिन १:५८ बजे से दिन २:१२ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –हस्त में एवं चित्रा में परिघ पश्चात, प्रात: ६:१५ बजे से दिन २:१२ बजे तक वाहन क्रय, नवीन वस्त्र–आभूषण, राजसेवा, मुहूर्त हैं। चित्रा में दिन १:५८ बजे से दिन २:१२ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त हैं। (हस्त में शनि वेध। चित्रा में राहु वेध।)

आषाढ शुक्ल ९ शुक्र। ४ जुलाई २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से दिन ४:३७ तक। ग्रह मुख आहुति शुक्र सूर्योदय से दिन ४:५४। शनि दिन ४:५४ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से दिन ४:३७ तक। चित्रा में एवं स्वाती में दिन ४:३५ बजे से रात्रिअंत ५:४३ बजे तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । स्वाती में दिन ४:५४ बजे से रात्रिअंत ५:४३ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । {२} वास्तु मुहूर्त – चित्रा में दिन ४:३५ बजे से दिन ४:५४ बजे तक गृहछादन छत,, । {३} संस्कार मुहूर्त – चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:४३ बजे तक पुनर्विवाह, । चित्रा में एवं स्वाती में दिन ४:३५ बजे से रात्रिअंत ५:४३ बजे तक अन्नप्राशन, । {४} कृषि मुहूर्त –चित्रा में एवं स्वाती में दिन ४:३५ बजे से रात्रिअंत ५:४३ बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, ईंधन स्थापन, । स्वाती में दिन ४:५४ बजे से रात्रिअंत ५:४३ बजे तक बीज बोवनी, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – चित्रा में दिन ४:३५ बजे से दिन ४:५४ बजे तक व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), । चित्रा में एवं स्वाती में दिन ४:३५ बजे से रात्रिअंत ५:४३ बजे तक पूंजी निवेश, । स्वाती में दिन ४:५४ बजे से रात्रिअंत ५:४३ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । {६} विविध मुहुर्त –चित्रा में एवं स्वाती में दिन ४:३५ बजे से रात्रिअंत ५:४३ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त हैं। चित्रा में दिन ४:३५ बजे से दिन ४:५४ बजे तक राजसेवा, मुहूर्त हैं। (चित्रा में राहु वेध, ।)

आषाढ शुक्ल १० शनि। ५ जुलाई २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अभाव। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – स्वाती में सूर्योदय से रात ७:५४ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –विशाखा में रात ७:५४ बजे से रात्रिअंत ५:४३ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – स्वाती में एवं विशाखा में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:४३ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –स्वाती में सूर्योदय से रात ७:५४ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त हैं। (विशाखा में शुक्रवेध रात ७:५४ वजे से रात २:३८ वजे तक।)

आषाढ शुक्ल ११ रवि। ६ जुलाई २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – शिववास कैलाश पर रात ९:१७ से रातअंत । विशाखा में भद्रा से पहले एवं अनुराधा में रात ९:१८ बजे से रात्रिअंत ५:४४ बजे तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । अनुराधा में रात १०:४४ बजे से रात्रिअंत ५:४४ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – अनुराधा में रात १०:४४ बजे से रात्रिअंत ५:४४ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, प्रसूति स्नान, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –विशाखा में भद्रा से पहले सूर्योदय से प्रात: ८:१३ बजे एवं रात ९:१८ बजे से रात १०:४४ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । अनुराधा में रात १०:४४ बजे से रात्रिअंत ५:४४ बजे तक धान्य रोपण, धान्य संग्रह, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – विशाखा में भद्रा से पहले एवं अनुराधा में रात ९:१८ बजे से रात्रिअंत ५:४४ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –अभाव।

आषाढ शुक्ल १२ चंद्र। ७ जुलाई २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति शनि सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर सूर्योदय से रात ११:१३ तक। वृषारूढ रात ११:१३ से रातअंत । अनुराधा में सूर्योदय से रात १:१५ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । ज्येष्ठा में क्रांतिसाम्य से पहले, रात १:१५ बजे से रात्रिअंत ४:५६ बजे तक अग्न्याधान, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – अनुराधा में सूर्योदय से रात ११:१४ बजे तक कन्या वरण, । अनुराधा में रात ११:१४ बजे से रात १:१५ बजे तक अन्नप्राशन, । अनुराधा में सूर्योदय से रात १:१५ बजे तक जातकर्म, नामकरण, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त्त –अनुराधा में सूर्योदय से रात १:१५ बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य रोपण, धान्य संग्रह, । अनुराधा में एवं ज्येष्ठा में सूर्योदय से रात्रिअंत ४:५६ बजे तक ईंधन स्थापन, । ज्येष्ठा में क्रांतिसाम्य से पहले, रात १:१५ बजे से रात्रिअंत ४:५६ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अनुराधा में सूर्योदय से रात १:१५ बजे तक धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश, । ज्येष्ठा में क्रांतिसाम्य से पहले, रात १:१५ बजे से रात्रिअंत ४:५६ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । {६} विविध मुहुर्त –अनुराधा में सूर्योदय से रात १:१५ बजे तक राजसेवा, मुहूर्त्त हैं। अनुराधा में रात ११:१४ बजे से रात १:१५ बजे तक यात्रा, मुहूर्त्त हैं। (क्रान्तिसाम्य दोष रात ४:५६ से रातअंत वजे तक।)

आषाढ शुक्ल १३ मंगल। ८ जुलाई २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – शिववास वृषारूढ सूर्योदय से रात १२:४२ तक। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – ज्येष्ठा मेंक्रांतिसाम्य पश्चात, प्रातः ९:१२ बजे से रात १२:४३ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, । मूल में रात ३:१९ बजे से रात्रिअंत ५:४४ बजे तक पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (क्रान्तिसाम्य दोष प्रातः ४:५७ से दिन ९:१२ वजे तक। मूल में सूर्य वेध,।)

आषाढ शुक्ल १४ बुध। ९ जुलाई २०२५। मूल में भद्रा दोष पू.षा. में भद्रा दोष मुहूर्त्त अभाव।

आषाढ शुक्ल १५ गुरु। १० जुलाई २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – शिववास गौरी के समीप रात २:१० से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – पू.षा. में भद्रा पश्चात् वैधृति से पहले, दिन १:५९ बजे से रात ९:३९ बजे तक कन्या वरण, वर वरण, । {४} कृषि मुहूर्त्त –पू.षा. में भद्रा पश्चात् वैधृति से पहले, दिन १:५९ बजे से रात ९:३९ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – पू.षा. में भद्रा पश्चात् वैधृति से पहले, दिन १:५९ बजे से रात ९:३९ बजे तक वैंक लॉकर खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –पू.षा. में भद्रा पश्चात् वैधृति से पहले, दिन १:५९ बजे से रात ९:३९ बजे तक संपत्ति क्रय, मुहूर्त्त हैं। (पूर्वाषाढ. में गुरु वेध सायं ५:२८ वजे से रात ११:४५ वजे तक।)

श्रावण कृष्ण पक्ष

श्रावण कृष्ण १ शुक्र। ११ जुलाई २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति चंद्र सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से रात २:१० तक। उ.षा. में वैधृति, विष्कुंभ पश्चात रात ९:५७ बजे से रात्रिअंत ५:४६ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, । उ.षा. में रात २:११ बजे से रात्रिअंत ५:४६ बजे तक अग्न्याधान, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । {२} वास्तु मुहूर्त – उ.षा. में रात २:११ बजे से रात्रिअंत ५:४६ बजे तक गृहछादन छत,, जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध नहीं)।। {३} संस्कार मुहूर्त्त – उ.षा. में वैधृति, विष्कुंभ पश्चात रात ९:५७ बजे से रात्रिअंत ५:४६ बजे तक जातकर्म, नामकरण, । उ.षा. में रात २:११ बजे से रात्रिअंत ५:४६ बजे तक मंत्र दीक्षा, । {४} कृषि मुहूर्त्त –उ.षा. में वैधृति, विष्कुंभ पश्चात रात ९:५७ बजे से रात्रिअंत ५:४६ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, धान्य विक्रय, । उ.षा. में वैधृति, विष्कुंभ पश्चात रात ९:५७ बजे से रात २:११ बजे तक बीज बोवनी, । उ.षा. में रात २:११ बजे से रात्रिअंत ५:४६ बजे तक धान्य रोपण, धान्य संग्रह, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – उ.षा. में वैधृति, विष्कुंभ पश्चात रात ९:५७ बजे से रात्रिअंत ५:४६ बजे तक व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), । उ.षा. में रात २:११ बजे से रात्रिअंत ५:४६ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । {६} विविध मुहुर्त –उ.षा. में वैधृति, विष्कुंभ पश्चात रात ९:५७ बजे से रात्रिअंत ५:४६ बजे तक नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त्त हैं। उ.षा. में रात २:११ बजे से रात्रिअंत ५:४६ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं।

श्रावण कृष्ण २ शनि। १२ जुलाई २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – उ.षा. में एवं श्रवण में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:४६ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – श्रवण में प्रातः ६:३९ बजे से रात्रिअंत ५:४६ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, (आव.),। {४} कृषि मुहूर्त्त –उ.षा. में सूर्योदय से प्रातः ६:३९ बजे तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – श्रवण में प्रातः ६:३९ बजे से रात्रिअंत ५:४६ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –उ.षा. में एवं श्रवण में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:४६ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं। श्रवण में प्रातः ६:३९ बजे से रात्रिअंत ५:४६ बजे तक यात्रा, सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त्त हैं।

श्रावण कृष्ण ३ रवि। १३ जुलाई २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से रात १:०० तक। ग्रह मुख आहुति मंगल सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर रात १:०० से रातअंत । श्रवण में एवं धनिष्ठा में भद्रा से पहले सूर्योदय से दिन १:२५ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – श्रवण में सूर्योदय से प्रातः ६:५३ बजे तक सीमन्त पुंसवन, शल्यक्रिया ऑपरेशन, कन्या वरण, । श्रवण में एवं धनिष्ठा में भद्रा से पहले सूर्योदय से दिन १:२५ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, (आव.),अन्नप्राशन, जैन विद्यारंभ । {४} कृषि मुहूर्त्त –श्रवण में एवं धनिष्ठा में भद्रा से पहले सूर्योदय से दिन १:२५ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, । धनिष्ठा में भद्रा से पहले प्रातः ६:५३ बजे से दिन १:२५ बजे एवं रात १:०१ बजे से रात्रिअंत ५:४६ बजे तक धान्य विक्रय, । धनिष्ठा में भद्रा से पहले प्रातः ६:५३ बजे से दिन १:२५ बजे तक धान्य रोपण, पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – श्रवण में एवं धनिष्ठा में भद्रा से पहले सूर्योदय से दिन १:२५ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –श्रवण में एवं धनिष्ठा में भद्रा से पहले सूर्योदय से दिन १:२५ बजे तक यात्रा, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं। श्रवण में सूर्योदय से प्रातः ६:५३ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, वाहन क्रय, मुहूर्त्त हैं। (धनिष्ठा में बुधवेध सायं ६:५० वजे से रात १२:४९ वजे तक।)

श्रावण कृष्ण ४ चंद्र। १४ जुलाई २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर रात ११:५६ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति मंगल सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर सूर्योदय से रात ११:५६ तक। वृषारूढ रात ११:५६ से रातअंत । शतभिषा में रात ११:५७ बजे से रात्रिअंत ५:४७ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – शतभिषा में रात ११:५७ बजे से रात्रिअंत ५:४७ बजे तक जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध नहीं)।। {३} संस्कार मुहूर्त्त – शतभिषा में रात ११:५७ बजे से रात्रिअंत ५:४७ बजे तक जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, मंत्र दीक्षा, । {४} कृषि मुहूर्त्त –धनिष्ठा में एवं शतभिषा में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:४७ बजे तक धान्य विक्रय, । शतभिषा में रात ११:५७ बजे से रात्रिअंत ५:४७ बजे तक धान्य संग्रह, पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – शतभिषा में रात ११:५७ बजे से रात्रिअंत ५:४७ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –शतभिषा में रात ११:५७ बजे से रात्रिअंत ५:४७ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त्त हैं।

श्रावण कृष्ण ५ मंगल। १५ जुलाई २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से रात १०:३६ तक। ग्रह मुख आहुति मंगल सूर्योदय से प्रातः ६:२४। गुरु प्रातः ६:२४ से रात ५:४५। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से रात १०:३६ तक। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – शतभिषा में सूर्योदय से प्रातः ६:२४ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, (आव.),। {४} कृषि मुहूर्त्त –शतभिषा में सूर्योदय से प्रातः ६:२४ बजे तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – शतभिषा में सूर्योदय से प्रातः ६:२४ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –शतभिषा में सूर्योदय से प्रातः ६:२४ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त्त हैं। (पू.भा. में राहु युति। उ.भा. में शनि युति।)

श्रावण कृष्ण ६ बुध। १६ जुलाई २०२५। उ.भा. में भद्रा दोष रेवती में भद्रा दोष मुहूर्त्त अभाव।

श्रावण कृष्ण ७ गुरु। १७ जुलाई २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से रात ७:०८ तक। ग्रह मुख आहुति गुरु सूर्योदय से रात ३:४०। राहु रात ३:४० से रातअंत। शिववास गौरी के समीप रात ७:०८ से रातअंत । रेवती में भद्रा पश्चात् प्रातः ८:०८ बजे से रात ३:४० बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, अग्न्याधान, । रेवती में भद्रा पश्चात् एवं अश्विनी में प्रातः ८:०८ बजे से रात्रिअंत ५:४८ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – रेवती में भद्रा पश्चात् एवं अश्विनी में प्रातः ८:०८ बजे से रात्रिअंत ५:४८ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।। {३} संस्कार मुहूर्त्त – रेवती में भद्रा पश्चात् प्रातः ८:०८ बजे से रात ७:०९ बजे तक अन्नप्राशन, कन्या वरण, । रेवती में भद्रा पश्चात् प्रातः ८:०८ बजे से रात ३:४० बजे तक सीमन्त पुंसवन, । रेवती में भद्रा पश्चात् एवं अश्विनी में प्रातः ८:०८ बजे से रात्रिअंत ५:४८ बजे तक प्रसूति स्नान, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, (आव.),जातकर्म, नामकरण, पुनर्विवाह, । अश्विनी में रात ३:४० बजे से रात्रिअंत ५:४८ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, मंत्र दीक्षा, । {४} कृषि मुहूर्त्त –रेवती में भद्रा पश्चात् प्रातः ८:०८ बजे से रात ७:०९ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । रेवती में भद्रा पश्चात् एवं अश्विनी में प्रातः ८:०८ बजे से रात्रिअंत ५:४८ बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य संग्रह, । अश्विनी में रात ३:४० बजे से रात्रिअंत ५:४८ बजे तक धान्य रोपण, ईंधन स्थापन, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – रेवती में भद्रा पश्चात् प्रातः ८:०८ बजे से रात ३:४० बजे तक वैंक लॉकर खोलना, धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, । रेवती में भद्रा पश्चात् एवं अश्विनी में प्रातः ८:०८ बजे से रात्रिअंत ५:४८ बजे तक व्यापार प्रारंभ, पूंजी निवेश, । अश्विनी में रात ३:४० बजे से रात्रिअंत ५:४८ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । {६} विविध मुहुर्त –रेवती में भद्रा पश्चात् प्रातः ८:०८ बजे से रात ३:४० बजे तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त्त हैं। रेवती में भद्रा पश्चात् एवं अश्विनी में

प्रातः ८:०८ बजे से रात्रिअंत ५:४८ बजे तक नवीन वस्त्र–आभूषण, राजसेवा, मुहूर्त हैं। रेवती में भद्रा पश्चात् प्रातः ८:०८ बजे से रात ७:०९ बजे तक यात्रा, मुहूर्त हैं। (रेवती में केतु वेध, । अश्विनी में मंगल वेध,।)

श्रावण कृष्ण ८ शुक्र। १८ जुलाई २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर सायं ५:०२ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति राहु सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से सायं ५:०२ तक। अश्विनी में सूर्योदय से सायं ५:०३ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अश्विनी में सूर्योदय से सायं ५:०३ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित (अग्निबाण १९:४९ से, त्यागकर), जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।। {३} संस्कार मुहूर्त – अश्विनी में सूर्योदय से सायं ५:०३ बजे तक मंत्र दीक्षा, जैन विद्यारंभ । अश्विनी में सूर्योदय से रात २:१५ बजे तक जातकर्म, नामकरण, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –अश्विनी में सूर्योदय से सायं ५:०३ बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य रोपण, धान्य संग्रह, ईंधन स्थापन, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अश्विनी में सूर्योदय से सायं ५:०३ बजे तक व्यापार प्रारंभ, धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –अश्विनी में सूर्योदय से सायं ५:०३ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, वाहन क्रय, नवीन वस्त्र–आभूषण, राजसेवा, मुहूर्त हैं। (अश्विनी में भौम वेध ।)

श्रावण कृष्ण ९ शनि। १९ जुलाई २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अभाव। {२} वास्तु मुहूर्त – भरणी में एवं कृतिका में भद्रा से पहलेदिन २:४४ बजे से रात्रि १:३० बजे तक नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित (अग्निबाण २०:५८ तक, त्यागकर), । {३} संस्कार मुहूर्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव।

श्रावण कृष्ण १० रवि। २० जुलाई २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति राहु सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर दिन १२:१५ से रातअंत । रोहिणी में रात १०:५४ बजे से रात्रिअंत ५:४९ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – कृतिका में दिन १२:१४ बजे से रात १०:५४ बजे तक वर वरण, । रोहिणी में रात १०:५४ बजे से रात्रिअंत ५:४९ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, प्रसूति स्नान, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –कृतिका में दिन १२:१४ बजे से रात १०:५४ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, । रोहिणी में रात १०:५४ बजे से रात्रिअंत ५:४९ बजे तक धान्य रोपण, धान्य संग्रह, धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –रोहिणी में रात १०:५४ बजे से रात्रिअंत ५:४९ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। (क्रान्तिसाम्य दोष सायं ५:०५ से रात ९:०२ वजे तक।)

श्रावण कृष्ण ११ चंद्र। २१ जुलाई २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – शिववास कैलाश पर सूर्योदय से दिन ९:४० तक। वृषारूढ दिन ९:४० से रात. अंत । रोहिणी में एवं मृगशिर में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:५० बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । रोहिणी में एवं मृगशिर में प्रातः ९:३९ बजे से रात्रिअंत ५:५० बजे तक अग्न्याधान, । मृगशिर में रात ९:०८ बजे से रात्रिअंत ५:५० बजे तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – रोहिणी में प्रातः ९:३९ बजे से रात ९:०८ बजे तक गृहछादन छत,, । रोहिणी में एवं मृगशिर में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:५० बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।। {३} संस्कार मुहूर्त – रोहिणी में सूर्योदय से प्रातः ९:३९ बजे तक कन्या वरण, । रोहिणी में सूर्योदय से रात ९:०८ बजे तक वर वरण, । रोहिणी में एवं मृगशिर में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:५० बजे तक जातकर्म, नामकरण, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –रोहिणी में सूर्योदय से रात ९:०८ बजे तक धान्य विक्रय, । रोहिणी में एवं मृगशिर में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:५० बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य रोपण, धान्य संग्रह, ईंधन स्थापन, । मृगशिर में रात ९:०८ बजे से रात्रिअंत ५:५० बजे तक धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – रोहिणी में सूर्योदय से रात ९:०८ बजे तक व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, वैंक लॉकर खोलना, । मृगशिर में रात ९:०८ बजे से रात्रिअंत ५:५० बजे तक धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –रोहिणी में सूर्योदय से रात ९:०८ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। मृगशिर में रात ९:०८ बजे से रात्रिअंत ५:५० बजे तक वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), राजसेवा, मुहूर्त हैं। (मृगशिर में शुक्र युति।)

श्रावण कृष्ण १२ मंगल। २२ जुलाई २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति केतु सूर्योदय से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से प्रातः ७:०६ तक। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – मृगशिर में सूर्योदय से प्रातः ७:०४ बजे तक सीमन्त पुंसवन, शल्यक्रिया ऑपरेशन, प्रसूति स्नान, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, (आव.),पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – मृगशिर में सूर्योदय से प्रातः ७:०४ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (मृगशिर में शुक्र युति। आर्द्रा में गुरु युति।)

श्रावण कृष्ण १४ बुध। २३ जुलाई २०२५। आर्द्रा में निर्बल चंद्र। पुनर्वसु में निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर रात २:२९ से रात. अंत तक। ग्रह मुख आहुति केतु सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप रात २:२९ से रातअंत ।

श्रावण कृष्ण ३० गुरु। २४ जुलाई २०२५। पुनर्वसु में निर्बल चंद्र। पुष्य में निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति केतु सूर्योदय से दिन ४:४६। सूर्य दिन ४:४६ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से रात १२:४२ तक।

श्रावण शुक्ल पक्ष

श्रावण शुक्ल १ शुक्र। २५ जुलाई २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से रात ११:२६ तक। ग्रह मुख आहुति सूर्य सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप रात ११:२६ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अश्लेषा में निर्बल चंद्रकाल पश्चात रात ११:२६ बजे से रात्रिअंत ५:५२ बजे तक नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , । {३} संस्कार मुहूर्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त –अश्लेषा में निर्बल चंद्रकाल पश्चात रात ११:२६ बजे से रात्रिअंत ५:५२ बजे तक नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में दिनरात, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (पुष्य में सूर्य युति। अश्लेषा में बुध युति।)

श्रावण शुक्ल २ शनि। २६ जुलाई २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर रात १०:४८ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति सूर्य सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से रात १०:४८ तक। {२} वास्तु मुहूर्त – मघा में व्यतिपात पश्चात रात ४:०८ बजे से रात्रिअंत ५:५२ बजे तक नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , । {३} संस्कार मुहूर्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त –मघा में व्यतिपात पश्चात रात ४:०८ बजे से रात्रिअंत ५:५२ बजे तक नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में दि. ३:५८ तक, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (अश्लेषा में बुध युति।)

श्रावण शुक्ल ३ रवि। २७ जुलाई २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अभाव। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – मघा में सूर्योदय से दिन ४:३१ बजे तक कन्या वरण, । मघा में एवं पू.फा. में सूर्योदय से रात १०:४४ बजे तक जैन विद्यारंभ । {४} कृषि मुहूर्त –मघा में सूर्योदय से दिन ४:३१ बजे तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (पू.फा. में केतु युति।)

श्रावण शुक्ल ४ चंद्र। २८ जुलाई २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति बुध सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर रात ११:३४ से रातअंत । उ.फा. में रात ११:२९ बजे से रात्रिअंत ५:५३ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, अग्न्याधान, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । {२} वास्तु मुहूर्त – उ.फा. में रात ११:२९ बजे से रात्रिअंत ५:५३ बजे तक गृहछादन छत, (अग्निबाण ६:०२ से, त्यागकर), जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध नहीं)।। {३} संस्कार मुहूर्त – उ.फा. में रात ११:२९ बजे से रात्रिअंत ५:५३ बजे तक जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, मंत्र दीक्षा, । {४} कृषि मुहूर्त –उ.फा. में रात ११:२९ बजे से रात्रिअंत ५:५३ बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, धान्य विक्रय, ईंधन स्थापन, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – उ.फा. में रात ११:२९ बजे से रात्रिअंत ५:५३ बजे तक व्यापार प्रारंभ, धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, वैंक लॉकर खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –उ.फा. में रात ११:२९ बजे से रात्रिअंत ५:५३ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। (पू.फा. में केतु युति। उ.फा. में मंगल युति।)

श्रावण शुक्ल ५ मंगल। २९ जुलाई २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – शिववास कैलाश पर सूर्योदय से रात १२:५७ तक। वृषारूढ रात १२:५७ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – उ.फा. में सूर्योदय से रात ७:३८ बजे तक वर वरण, । उ.फा. में एवं हस्त में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:५३ बजे तक सीमन्त पुंसवन, प्रसूति स्नान, पुनर्विवाह, । हस्त में रात ७:३८ बजे से रात्रिअंत ५:५३ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, (आव.),। {४} कृषि मुहूर्त –उ.फा. में सूर्योदय से रात ७:३८ बजे तक बीज बोवनी, धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (हस्त में शनि वेध,। उ.फा. में मंगल युति।)

श्रावण शुक्ल ६ बुध। ३० जुलाई २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति बुध सूर्योदय से रात १०:०३। शुक्र रात १०:०३ से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से रात २:५१ तक। हस्त में एवं चित्रा में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:५४ बजे तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । हस्त में सूर्योदय से रात १०:०३ बजे एवं चित्रा मेंरात २:४८ बजे से रात्रिअंत ५:५४ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, । {२} वास्तु मुहूर्त – हस्त में सूर्योदय से रात १०:०३ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , । हस्त में एवं चित्रा में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:५४ बजे तक जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।। {३} संस्कार मुहूर्त – हस्त में सूर्योदय से रात १०:०३ बजे तक कन्या वरण, । हस्त में एवं चित्रा में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:५४ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, (आव.),जातकर्म, नामकरण, पुनर्विवाह, । चित्रा में रात १०:०३ बजे से रात्रिअंत ५:५४ बजे तक मंत्र दीक्षा, । {४} कृषि मुहूर्त –हस्त में सूर्योदय से रात १०:०३ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । हस्त में एवं चित्रा में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:५४ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, ईंधन स्थापन, । चित्रा में रात २:४८ बजे से

रात्रिअंत ५:५४ बजे तक हल प्रवहण जुताई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – हस्त में एवं चित्रा में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:५४ बजे तक व्यापार प्रारंभ, । {६} विविध मुहुर्त –हस्त में एवं चित्रा में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:५४ बजे तक नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त हैं। हस्त में एवं चित्रा में सूर्योदय से रात २:४८ बजे तक वाहन क्रय, मुहूर्त हैं। चित्रा में रात १०:०३ बजे से रात २:४८ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त हैं। (हस्त में शनि वेध। चित्रा में राहु वेध, ।)

श्रावण शुक्ल ७ गुरु। ३१ जुलाई २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से रात ५:०४ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । स्वाती में रात १२:४९ बजे से रात ५:०४ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । {२} वास्तु मुहूर्त – चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से रात ५:०४ बजे तक जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।। स्वाती में रात १२:४९ बजे से रात ५:०४ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध , । {३} संस्कार मुहूर्त – चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से रात ५:०४ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, (आव.),जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, मंत्र दीक्षा, पुनर्विवाह, । स्वाती में रात १२:४९ बजे से रात ५:०४ बजे तक प्रसूति स्नान, । {४} कृषि मुहूर्त –चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से रात ५:०४ बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, ईंधन स्थापन, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – चित्रा में सूर्योदय से रात १२:४९ बजे तक व्यापार प्रारंभ, । चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से रात ५:०४ बजे तक पूंजी निवेश, । स्वाती में रात १२:४९ बजे से रात ५:०४ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । {६} विविध मुहुर्त –चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से रात ५:०४ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, वाहन क्रय, नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त हैं। चित्रा में सूर्योदय से रात १२:४९ बजे तक राजसेवा, मुहूर्त हैं। (चित्रा में राहु वेध, ।)

श्रावण शुक्ल ८ शुक्र। १ अगस्त २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति शुक्र सूर्योदय से रातअंत। शुक्र २८:१४ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप रात ७:२८ से रातअंत । स्वाती में भद्रा पश्चात् सायं ६:१५ बजे से रात ३:४५ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । स्वाती में एवं विशाखा में भद्रा पश्चात् सायं ६:१५ बजे से रात ५:५५ बजे तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – स्वाती में भद्रा पश्चात् सायं ६:१५ बजे से रात ३:४५ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध , जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।। {३} संस्कार मुहूर्त – स्वाती में भद्रा पश्चात् सायं ६:१५ बजे से रात ३:४५ बजे तक जातकर्म, नामकरण, मंत्र दीक्षा, जैन विद्यारंभ कन्या वरण, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –स्वाती में भद्रा पश्चात् सायं ६:१५ बजे से रात ३:४५ बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, । स्वाती में एवं विशाखा में भद्रा पश्चात् सायं ६:१५ बजे से रात ५:५५ बजे तक ईंधन स्थापन, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – स्वाती में एवं विशाखा में भद्रा पश्चात् सायं ६:१५ बजे से रात ५:५५ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, पूंजी निवेश, । विशाखा में रात ३:४५ बजे से रात ५:५५ बजे तक वैंक लॉकर खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –स्वाती में एवं विशाखा में भद्रा पश्चात् सायं ६:१५ बजे से रात ५:५५ बजे तक नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त हैं। स्वाती में भद्रा पश्चात् सायं ६:१५ बजे से रात ३:४५ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, वाहन क्रय, मुहूर्त हैं।

श्रावण शुक्ल ८ शनि। २ अगस्त २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से प्रातः ७:२८ तक। ग्रह मुख आहुति शुक्र सूर्योदय से रात ४:१४। शुक्र रात ४:१४ से रातअंतशिववास गौरी के समीप प्रातः ७:२८ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – विशाखा में सूर्योदय से प्रातः ७:२६ बजे तक पूंजी निवेश। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (क्रान्तिसाम्य दोष दिन १२:३२ से दिन ४:५५ वजे तक।)

श्रावण शुक्ल ९ रवि। ३ अगस्त २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति शुक्र सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से दिन ९:४४ तक। अनुराधा में प्रातः ९:४३ बजे से रात्रिअंत ५:५५ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – अनुराधा में प्रातः ६:३८ बजे से रात्रिअंत ५:५५ बजे तक पुनर्विवाह, । अनुराधा में प्रातः ९:४३ बजे से रात्रिअंत ५:५५ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, (आव.),अन्नप्राशन, जैन विद्यारंभ । {४} कृषि मुहूर्त –अनुराधा में प्रातः ९:४३ बजे से रात्रिअंत ५:५५ बजे तक धान्य रोपण, धान्य संग्रह। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अनुराधा में प्रातः ९:४३ बजे से रात्रिअंत ५:५५ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –अनुराधा में प्रातः ९:४३ बजे से रात्रिअंत ५:५५ बजे तक यात्रा, मुहूर्त हैं। (अनुराधा में सूर्य वेध,।)

श्रावण शुक्ल १० चंद्र। ४ अगस्त २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अनुराधा में सूर्योदय से प्रातः ९:१३ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अनुराधा में सूर्योदय से प्रातः ९:१३ बजे तक जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।। {३} संस्कार मुहूर्त – अनुराधा में सूर्योदय से प्रातः ९:१३ बजे तक जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, कन्या वरण, पुनर्विवाह। {४} कृषि मुहूर्त –अनुराधा में सूर्योदय से प्रातः ९:१३ बजे तक हल प्रवहण जुताई, बीज बोवनी, धान्य रोपण, धान्य संग्रह। अनुराधा में एवं ज्येष्ठा में भद्रा से पहले सूर्योदय से रात्रि १२:३१ बजे तक ईंधन स्थापन। ज्येष्ठा में भद्रा से पहले प्रातः ९:१३ बजे से रात्रि १२:३१ बजे तक पशु क्रय विक्रय। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अनुराधा में सूर्योदय से प्रातः ९:१३ बजे तक धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश,। ज्येष्ठा में भद्रा से पहले प्रातः ९:१३ बजे से रात्रि १२:३१ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण। {६} विविध मुहुर्त –अनुराधा में सूर्योदय से प्रातः ९:१३ बजे तक यात्रा, राजसेवा, मुहूर्त हैं। (अनुराधा में सूर्य वेध । ज्येष्ठा में बुधवेध दिन ३:४६ वजे से रात १०:२० वजे तक।)

श्रावण शुक्ल ११ मंगल। ५ अगस्त २०२५। ज्येष्ठा में भद्रा दोष। मूल में भद्रा दोष वैधृति दोष वैधृति दोष मुहूर्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति शनि सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर दिन १:११ से रातअंत ।

श्रावण शुक्ल १२ बुध। ६ अगस्त २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – शिववास कैलाश पर सूर्योदय से दिन २:०७ तक। वृषारूढ दिन २:०७ से रात. अंत । {२} वास्तु मुहूर्त – मूल में वैधृति, विष्कुंभ पश्चात, प्रातः ८:३१ बजे से दिन १२:५९ बजे तक नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्ध (अग्निबाण १५:४७ से, त्यागकर), गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध (अग्निबाण १५:४७ से, त्यागकर), जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।। {३} संस्कार मुहूर्त – मूल में वैधृति, विष्कुंभ पश्चात, प्रातः ८:३१ बजे से दिन १२:५९ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, (आव.),कन्या वरण, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –मूल में वैधृति, विष्कुंभ पश्चात, प्रातः ८:३१ बजे से दिन १२:५९ बजे तक हल प्रवहण जुताई, । मूल में एवं पू.षा. में वैधृति, विष्कुंभ पश्चात, प्रातः ८:३१ बजे से रात्रिअंत ५:५७ बजे तक ईंधन स्थापन, । पू.षा. में दिन १२:५९ बजे से रात्रिअंत ५:५७ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – पू.षा. में दिन १२:५९ बजे से रात्रिअंत ५:५७ बजे तक वैंक लॉकर खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (पूर्वाषाढ. में गुरु वेध दिन १२:५९ वजे से रात ७:१७ वजे तक।)

श्रावण शुक्ल १३ गुरु। ७ अगस्त २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति शनि सूर्योदय से दिन २:०१। चंद्र दिन २:०१ से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से दिन २:२७ तक। उ.षा. में दिन २:०१ बजे से दिन २:३० बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । {२} वास्तु मुहूर्त – उ.षा. में दिन २:०१ बजे से दिन २:३० बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध (अग्निबाण १६:५० तक, त्यागकर), जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।। {३} संस्कार मुहूर्त – पू.षा. में सूर्योदय से दिन २:०१ बजे तक कन्या वरण, वर वरण, । उ.षा. में दिन २:०१ बजे से रात्रिअंत ५:५७ बजे तक पुनर्विवाह, । उ.षा. में दिन २:०१ बजे से दिन २:३० बजे तक प्रसूति स्नान, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, । {४} कृषि मुहूर्त –पू.षा. में सूर्योदय से दिन २:०१ बजे तक ईंधन स्थापन, । पू.षा. में एवं उ.षा. में सूर्योदय से दिन २:३० बजे तक धान्य छेदन, कटाई, । उ.षा. में दिन २:०१ बजे से रात्रिअंत ५:५७ बजे तक धान्य विक्रय, । उ.षा. में दिन २:०१ बजे से दिन २:३० बजे तक बीज बोवनी, धान्य रोपण, धान्य संग्रह, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – पू.षा. में सूर्योदय से दिन २:०१ बजे तक वैंक लॉकर खोलना, । उ.षा. में दिन २:०१ बजे से दिन २:३० बजे तक व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । {६} विविध मुहुर्त –उ.षा. में दिन २:०१ बजे से दिन २:३० बजे तक नवीन वस्त्र–आभूषण, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं।

श्रावण शुक्ल १४ शुक्र। ८ अगस्त २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – श्रवण में भद्रा पश्चात् रात १:५६ बजे से रात्रिअंत ५:५८ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – श्रवण में भद्रा पश्चात् रात १:५६ बजे से रात्रिअंत ५:५८ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध , गृहछादन छत,, जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।। {३} संस्कार मुहूर्त – श्रवण में भद्रा पश्चात् रात १:५६ बजे से रात्रिअंत ५:५८ बजे तक जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, जैन विद्यारंभ । {४} कृषि मुहूर्त –उ.षा. में सूर्योदय से दिन २:१५ बजे तक धान्य विक्रय, । श्रवण में भद्रा पश्चात् रात १:५६ बजे से रात्रिअंत ५:५८ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – श्रवण में भद्रा पश्चात् रात १:५६ बजे से रात्रिअंत ५:५८ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –श्रवण में भद्रा पश्चात् रात १:५६ बजे से रात्रिअंत ५:५८ बजे तक यात्रा, सर्व वस्तु क्रय, वाहन क्रय, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं।

श्रावण शुक्ल १५ शनि। ९ अगस्त २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति चंद्र सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप दिन १:२५ से रातअंत । श्रवण में एवं धनिष्ठा में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:५८ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, । {२} वास्तु मुहूर्त – श्रवण में एवं धनिष्ठा में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:५८ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध , । {३} संस्कार मुहूर्त – श्रवण में एवं धनिष्ठा में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:५८ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, (आव.),। {४} कृषि मुहूर्त –धनिष्ठा में दिन २:२४ बजे से रात्रिअंत ५:५८ बजे तक धान्य विक्रय, पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – श्रवण में एवं धनिष्ठा में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:५८ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –श्रवण में एवं धनिष्ठा में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:५८ बजे तक यात्रा, मुहूर्त हैं। श्रवण में सूर्योदय से दिन १:२७ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं।

भाद्रपद कृष्ण पक्ष

भाद्रपद कृष्ण १ रवि। १० अगस्त २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिन १२:१० से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति चंद्र सूर्योदय से दिन १:५२। मंगल दिन १:५२ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से दिन १२:१० तक। धनिष्ठा में एवं शतभिषा में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:५८ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । धनिष्ठा में एवं शतभिषा में दिन १२:११ बजे से रात्रिअंत ५:५८ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – धनिष्ठा में सूर्योदय से दिन १२:११ बजे तक कन्या वरण, । धनिष्ठा में एवं शतभिषा में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:५८ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । धनिष्ठा में एवं शतभिषा में दिन १२:११ बजे से रात्रिअंत ५:५८ बजे तक अन्नप्राशन, जैन विद्यारंभ । शतभिषा में दिन १:५२ बजे से रात्रिअंत ५:५८ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, । {४} कृषि मुहूर्त –धनिष्ठा में दिन १२:११ बजे से दिन १:५२ बजे तक धान्य रोपण, । धनिष्ठा में सूर्योदय से दिन १:५२ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, । धनिष्ठा में एवं शतभिषा में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:५८ बजे तक धान्य विक्रय, पशु क्रय विक्रय, । धनिष्ठा में एवं शतभिषा में दिन १२:११ बजे से रात्रिअंत ५:५८ बजे तक धान्य संग्रह, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – धनिष्ठा में एवं शतभिषा में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:५८ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –धनिष्ठा में सूर्योदय से दिन १:५२ बजे तक यात्रा, मुहूर्त हैं। धनिष्ठा में दिन १२:११ बजे से दिन १:५२ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। शतभिषा में दिन १:५२ बजे से रात्रिअंत ५:५८ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त हैं।

भाद्रपद कृष्ण २ चंद्र। ११ अगस्त २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – शतभिषा में सूर्योदय से दिन १२:५९ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – शतभिषा में सूर्योदय से दिन १२:५९ बजे तक जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, । {४} कृषि मुहूर्त –शतभिषा में सूर्योदय से दिन १२:५९ बजे तक धान्य संग्रह, धान्य विक्रय, पशु क्रय विक्रय, । पू.भा. में भद्रा से पहले दिन १२:५९ बजे से रात्रि ९:३७ बजे तक नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में दिनरात, धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – शतभिषा में सूर्योदय से दिन १२:५९ बजे तक धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश, । शतभिषा में एवं पू.भा. में सूर्योदय से रात्रि ९:३७ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । {६} विविध मुहुर्त –शतभिषा में सूर्योदय से दिन १२:५९ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त हैं। (पू.भा. में राहु युति।)

भाद्रपद कृष्ण ३ मंगल। १२ अगस्त २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिन ८:४० से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति मंगल सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर दिन ८:४० से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त –उ.भा. में दिन ११:५० बजे से रात्रिअंत ५:५९ बजे तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (पू.भा. में राहु युति। उ.भा. में शनि युति।)

भाद्रपद कृष्ण ४ बुध। १३ अगस्त २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से प्रातः ६:३४ तक। ग्रह मुख आहुति मंगल सूर्योदय से दिन १०:३०। गुरु दिन १०:३० से रातअंत। शिववास कैलाश पर सूर्योदय से प्रातः ६:३४ तक। वृषारूढ प्रातः ६:३४ सेरात ४:१८। उ.भा. में एवं रेवती में प्रातः ६:३३ बजे से रात्रिअंत ४:१६ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, अग्न्याधान, । रेवती में दिन १०:३० बजे से रात्रिअंत ४:१६ बजे तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – उ.भा. में प्रातः ६:३३ बजे से दिन १०:३० बजे तक मंत्र दीक्षा, वर वरण, । उ.भा. में एवं रेवती में प्रातः ६:३३ बजे से रात्रिअंत ४:१६ बजे तक जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, । रेवती में दिन १०:३० बजे से रात्रिअंत ४:१६ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । {४} कृषि मुहूर्त –उ.भा. में प्रातः ६:३३ बजे से दिन १०:३० बजे तक धान्य छेदन, कटाई, । उ.भा. में सूर्योदय से दिन १०:३० बजे तक धान्य विक्रय, । रेवती में दिन १०:३० बजे से रात्रिअंत ४:१६ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – उ.भा. में प्रातः ६:३३ बजे से दिन १०:३० बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । उ.भा. में एवं रेवती में प्रातः ६:३३ बजे से रात्रिअंत ४:१६ बजे तक व्यापार प्रारंभ, । रेवती में दिन १०:३० बजे से रात्रिअंत ४:१६ बजे तक वैंक लॉकर खोलना, धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –उ.भा. में एवं रेवती में प्रातः ६:३३ बजे से रात्रिअंत ४:१६ बजे तक नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त हैं। उ.भा. में प्रातः ६:३३ बजे से दिन १०:३० बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। रेवती में दिन १०:३० बजे से रात्रिअंत ४:१६ बजे तक यात्रा, सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त हैं। (रेवती में मंगल वेध,। उ.भा. में शनि युति।)

भाद्रपद कृष्ण ६ गुरु। १४ अगस्त २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – रेवती में सूर्योदय से प्रातः ९:०४ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, । रेवती में एवं अश्विनी में सूर्योदय से रात २:०४ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – रेवती में सूर्योदय से प्रातः ९:०४ बजे तक सीमन्त पुंसवन, कन्या वरण, । रेवती में एवं अश्विनी में सूर्योदय से रात २:०४ बजे तक प्रसूति स्नान, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, जातकर्म, नामकरण, । अश्विनी में प्रातः ९:०४ बजे से रात २:०४ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, । {४} कृषि मुहूर्त –रेवती में एवं अश्विनी में सूर्योदय से रात २:०४ बजे तक धान्य संग्रह, पशु क्रय विक्रय, । अश्विनी में प्रातः ९:०४ बजे से रात २:०४ बजे तक धान्य रोपण, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – रेवती में सूर्योदय से प्रातः ९:०४ बजे तक वैंक लॉकर खोलना, । रेवती में एवं अश्विनी में सूर्योदय से रात २:०४ बजे तक व्यापार प्रारंभ, पूंजी निवेश, । अश्विनी में प्रातः ९:०४ बजे से रात २:०४ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । {६} विविध मुहुर्त –रेवती में एवं अश्विनी में सूर्योदय से रात २:०४ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, नवीन वस्त्र–आभूषण, राजसेवा, मुहूर्त हैं। रेवती में सूर्योदय से प्रातः ९:०४ बजे तक संपत्ति क्रय, मुहूर्त हैं। अश्विनी में प्रातः ९:०४ बजे से रात २:०४ बजे तक वाहन क्रय, मुहूर्त हैं। (क्रान्तिसाम्य दोष रात ५:२७ से रातअंत वजे तक। अश्विनी में केतु वेध, ।)

भाद्रपद कृष्ण ७ शुक्र। १५ अगस्त २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – शिववास गौरी के समीप रात ११:४९ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – भरणी में भद्रा पश्चात् क्रांतिसाम्य पश्चात दिन १२:५६ बजे से रात्रिअंत ६:०० बजे तक जैन विद्यारंभ । {४} कृषि मुहूर्त –भरणी में भद्रा पश्चात् क्रांतिसाम्य पश्चात दिन १२:५६ बजे से रात्रिअंत ६:०० बजे तक धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (क्रान्तिसाम्य दोष प्रातः ५:२७ से दिन ९:२८ वजे तक। अश्विनी में केतु वेध, ।)

भाद्रपद कृष्ण ८ शनि। १६ अगस्त २०२५। मुहूर्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति गुरु सूर्योदय से प्रातः ६:०५। राहु प्रातः ६:०५ से रात १:५४। गुरु रात १:५४ से रात ४:३९ शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से रात ९:३५ तक।

भाद्रपद कृष्ण ९ रवि। १७ अगस्त २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – रोहिणी में एवं मृगशिर में रात ७:२४ बजे से रात्रिअंत ६:०१ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । मृगशिर में रात ३:१९ बजे से रात्रिअंत ६:०१ बजे तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – रोहिणी में व्याघात पश्चात, रात ७:२४ बजे से रात ३:१९ बजे तक गृहछादन छत,, । {३} संस्कार मुहूर्त – रोहिणी में व्याघात पश्चात, रात ७:२४ बजे से रात ३:१९ बजे तक अन्नप्राशन, वर वरण, । रोहिणी में व्याघात पश्चात, एवं मृगशिर में प्रातः ८:०४ बजे से रात्रिअंत ६:०१ बजे तक पुनर्विवाह, । रोहिणी में एवं मृगशिर में रात ७:२४ बजे से रात्रिअंत ६:०१ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, । मृगशिर में रात ३:१९ बजे से रात्रिअंत ६:०१ बजे तक सीमन्त पुंसवन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । {४} कृषि मुहूर्त –रोहिणी में व्याघात पश्चात, प्रातः ८:०४ बजे से रात ३:१९ बजे तक धान्य विक्रय, । रोहिणी में एवं मृगशिर में रात ७:२४ बजे से रात्रिअंत ६:०१ बजे तक धान्य रोपण, धान्य संग्रह, । मृगशिर में रात ३:१९ बजे से रात्रिअंत ६:०१ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – मृगशिर में रात ३:१९ बजे से रात्रिअंत ६:०१ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –रोहिणी में व्याघात पश्चात, रात ७:२४ बजे से रात ३:१९ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। मृगशिर में रात ३:१९ बजे से रात्रिअंत ६:०१ बजे तक यात्रा, मुहूर्त हैं।

भाद्रपद कृष्ण १० चंद्र। १८ अगस्त २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से सायं ५:२७ तक। ग्रह मुख आहुति राहु सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर सायं ५:२७ से रातअंत । मृगशिर में भद्रा से पहले सूर्योदय से प्रातः ६:२१ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, अग्न्याधान, । मृगशिर में भद्रा से पहले सूर्योदय से प्रातः ६:२१ बजे एवं सायं ५:२३ बजे से रात २:०९ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – मृगशिर में भद्रा से पहले सूर्योदय से प्रातः ६:२१ बजे तक अन्नप्राशन, कन्या वरण, । मृगशिर में भद्रा से पहले सूर्योदय से प्रातः ६:२१ बजे एवं सायं ५:२३ बजे से रात २:०९ बजे तक जातकर्म, नामकरण, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –मृगशिर में भद्रा से पहले सूर्योदय से प्रातः ६:२१ बजे एवं सायं ५:२३ बजे से रात २:०९ बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, । मृगशिर में भद्रा से पहले एवं आर्द्रा में सायं ५:२३ बजे से रात्रिअंत ६:०१ बजे तक ईंधन स्थापन, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – मृगशिर में भद्रा से पहले सूर्योदय से प्रातः ६:२१ बजे एवं सायं ५:२३ बजे से रात २:०९ बजे तक धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –मृगशिर में भद्रा से पहले सूर्योदय से प्रातः ६:२१ बजे एवं सायं ५:२३ बजे से रात २:०९ बजे तक यात्रा, वाहन क्रय, राजसेवा, मुहूर्त हैं। आर्द्रा में रात २:०९ बजे से रात्रिअंत ६:०१ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं।

भाद्रपद कृष्ण ११ मंगल। १९ अगस्त २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिन ३:३८ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति राहु सूर्योदय से रात १:१२। केतु रात १:१२ से रातअंत। शिववास कैलाश पर सूर्योदय से दिन ३:३८ तक। वृषारूढ दिन ३:३८ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – पुनर्वसु में रात १:१२ बजे से रात्रिअंत ६:०२ बजे तक सीमन्त पुंसवन, औषधि

सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । {४} कृषि मुहूर्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – पुनर्वसु में रात १:१२ बजे से रात्रिअंत ६:०२ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (पुनर्वसु में गुरु शुक्र युति।)

भाद्रपद कृष्ण १२ बुध। २० अगस्त २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से दिन २:०४ तक। ग्रह मुख आहुति केतु सूर्योदय से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से दिन २:०४ तक। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – पुनर्वसु में सूर्योदय से दिन १:६० बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, जातकर्म, नामकरण, । {४} कृषि मुहूर्त –पुनर्वसु में सूर्योदय से दिन १:६० बजे तक हल प्रवहण जुताई, ईंधन स्थापन, पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – पुनर्वसु में सूर्योदय से दिन १:६० बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –पुनर्वसु में सूर्योदय से दिन १:६० बजे तक वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त्त हैं। (पुनर्वसु में गुरु शुक्र युति। पुष्य में बुध युति।)

भाद्रपद कृष्ण १३ गुरु। २१ अगस्त २०२५। पुष्य में व्यतिपात दोष।निर्बल चंद्र। भद्रा दोष निर्बल चंद्र दोष अश्लेषा में निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त्त अभाव।

भाद्रपद कृष्ण १४ शुक्र। २२ अगस्त २०२५। अश्लेषा में निर्बल चंद्र। निर्बल चंद्र दोष मघा में निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से दिन १२:०० तक। ग्रह मुख आहुति केतु सूर्योदय से रात १२:२०। सूर्य रात १२:२० से रातअंत। शिववास गौरी के समीप दिन १२:०० से रातअंत ।

भाद्रपद कृष्ण ३० शनि। २३ अगस्त २०२५। मघा में निर्बल चंद्र। निर्बल चंद्र दोष पू.फा. में निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त्त अभाव। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से दिन ११:४० तक।

भाद्रपद शुक्ल पक्ष

भाद्रपद शुक्ल १ रवि। २४ अगस्त २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति सूर्य सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप दिन ११:५२ से रातअंत । उ.फा. में रात २:०९ बजे से रात्रिअंत ६:०४ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । {२} वास्तु मुहूर्त – उ.फा. में रात २:०९ बजे से रात्रिअंत ६:०४ बजे तक गृहछादन छत,, । {३} संस्कार मुहूर्त्त – पू.फा. में दिन ११:५२ बजे से रात २:०९ बजे तक जैन विद्यारंभ वर वरण, । उ.फा. में रात २:०९ बजे से रात्रिअंत ६:०४ बजे तक सीमन्त पुंसवन, प्रसूति स्नान, । {४} कृषि मुहूर्त्त –उ.फा. में रात २:०९ बजे से रात्रिअंत ६:०४ बजे तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –उ.फा. में रात २:०९ बजे से रात्रिअंत ६:०४ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं। (पू.फा. में केतु युति।)

भाद्रपद शुक्ल २ चंद्र। २५ अगस्त २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से दिन १२:३९ तक। उ.फा. में सूर्योदय से रात ३:५३ बजे तक अग्न्याधान, । उ.फा. में एवं हस्त में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:०४ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान,। हस्त में रात ३:५३ बजे से रात्रिअंत ६:०४ बजे तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – उ.फा. में एवं हस्त में दिन १२:३५ बजे से रात्रिअंत ६:०४ बजे तक गृहछादन छत,, । {३} संस्कार मुहूर्त्त – उ.फा. में सूर्योदय से दिन १२:३५ बजे तक कन्या वरण, । उ.फा. में सूर्योदय से रात ३:५३ बजे तक अन्नप्राशन, वर वरण, । उ.फा. में एवं हस्त में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:०४ बजे तक जातकर्म, नामकरण, । {४} कृषि मुहूर्त्त –उ.फा. में सूर्योदय से रात ३:५३ बजे तक बीज बोवनी, धान्य विक्रय, । उ.फा. में एवं हस्त में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:०४ बजे तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, । हस्त में रात ३:५३ बजे से रात्रिअंत ६:०४ बजे तक हल प्रवहण जुताई, पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – उ.फा. में सूर्योदय से रात ३:५३ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, वैंक लॉकर खोलना, । उ.फा. में एवं हस्त में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:०४ बजे तक व्यापार प्रारंभ, । {६} विविध मुहुर्त –उ.फा. में सूर्योदय से रात ३:५३ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं। हस्त में रात ३:५३ बजे से रात्रिअंत ६:०४ बजे तक यात्रा, राजसेवा, मुहूर्त्त हैं। (हस्त में शनि वेध,। हस्त में मंगल युति।)

भाद्रपद शुक्ल ३ मंगल। २६ अगस्त २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अभाव। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – हस्त में सूर्योदय से दिन १:५६ बजे तक सीमन्त पुंसवन, शल्यक्रिया ऑपरेशन, प्रसूति स्नान, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । {४} कृषि मुहूर्त्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –हस्त में सूर्योदय से दिन १:५६ बजे तक यात्रा, मुहूर्त्त हैं। (हस्त में शनि वेध। हस्त में मंगल युति।)

भाद्रपद शुक्ल ४ बुध। २७ अगस्त २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – शिववास कैलाश पर दिन ३:५२ से रातअंत । चित्रा में दिन ३:४८ बजे से रात्रिअंत ६:०५ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – चित्रा में दिन ३:४८ बजे से रात्रिअंत ६:०५ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, मंत्र दीक्षा, । {४} कृषि मुहूर्त्त –चित्रा में दिन ३:४८ बजे से रात्रिअंत ६:०५ बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य छेदन, कटाई, ईंधन स्थापन, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – चित्रा में दिन ३:४८ बजे से रात्रिअंत ६:०५ बजे तक व्यापार प्रारंभ, । {६} विविध मुहुर्त –चित्रा में दिन ३:४८ बजे से रात्रिअंत ६:०५ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, वाहन क्रय, नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त्त हैं। (क्रान्तिसाम्य दोष रात ७:३१ से रात ११:५९ वजे तक। हस्त में शनि वेध। चित्रा में राहु वेध, । हस्त में मंगल युति।)

भाद्रपद शुक्ल ५ गुरु। २८ अगस्त २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति बुध सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर सूर्योदय से सायं ६:०५ तक। वृषारूढ सायं ६:०५ से रातअंत । चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:०५ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । स्वाती में प्रातः ८:५० बजे से रात्रिअंत ६:०५ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – चित्रा में सूर्योदय से प्रातः ८:५० बजे तक मंत्र दीक्षा, । चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:०५ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, जातकर्म, नामकरण, पुनर्विवाह, । चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से सायं ६:०२ बजे तक अन्नप्राशन, । स्वाती में प्रातः ८:५० बजे से रात्रिअंत ६:०५ बजे तक प्रसूति स्नान, । {४} कृषि मुहूर्त्त –चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:०५ बजे तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, ईंधन स्थापन, । चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से सायं ६:०२ बजे तक हल प्रवहण जुताई, । स्वाती में प्रातः ८:५० बजे से सायं ६:०२ बजे तक बीज बोवनी,। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – चित्रा में सूर्योदय से प्रातः ८:५० बजे तक व्यापार प्रारंभ, । चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:०५ बजे तक पूंजी निवेश, । स्वाती में प्रातः ८:५० बजे से रात्रिअंत ६:०५ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । {६} विविध मुहुर्त –चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:०५ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, वाहन क्रय, नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त्त हैं। चित्रा में सूर्योदय से प्रातः ८:५० बजे तक राजसेवा, मुहूर्त्त हैं। (चित्रा में राहु वेध, ।)

भाद्रपद शुक्ल ६ शुक्र। २९ अगस्त २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – शिववास वृषारूढ सूर्योदय से रात ८:२८ तक। स्वाती में सूर्योदय से दिन ११:४५ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । स्वाती में एवं विशाखा में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:०५ बजे तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – स्वाती में सूर्योदय से दिन ११:४५ बजे तक जातकर्म, नामकरण, जैन विद्यारंभ कन्या वरण, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त्त –स्वाती में सूर्योदय से दिन ११:४५ बजे तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, । स्वाती में एवं विशाखा में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:०५ बजे तक ईंधन स्थापन, । विशाखा में दिन ११:४५ बजे से रात्रिअंत ६:०५ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – स्वाती में एवं विशाखा में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:०५ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, पूंजी निवेश, । विशाखा में दिन ११:४५ बजे से रात्रिअंत ६:०५ बजे तक वैंक लॉकर खोलना, । विशाखा में रात ८:२६ बजे से रात्रिअंत ६:०५ बजे तक धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –स्वाती में एवं विशाखा में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:०५ बजे तक नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त्त हैं। स्वाती में सूर्योदय से दिन ११:४५ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, वाहन क्रय, मुहूर्त्त हैं। विशाखा में दिन ११:४५ बजे से रात ८:२६ बजे तक संपत्ति क्रय, मुहूर्त्त हैं।

भाद्रपद शुक्ल ७ शनि। ३० अगस्त २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अभाव। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – अनुराधा में वैधृति से पहले दिन २:४१ बजे से दिन ३:१४ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त्त –विशाखा में सूर्योदय से दिन २:४१ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – विशाखा में एवं अनुराधा में वैधृति से पहले सूर्योदय से दिन ३:१४ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –अनुराधा में वैधृति से पहले दिन २:४१ बजे से दिन ३:१४ बजे तक राजसेवा, मुहूर्त्त हैं।

भाद्रपद शुक्ल ८ रवि। ३१ अगस्त २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर रात १२:५८ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति शुक्र सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप रात १२:५८ से रातअंत । अनुराधा में भद्रा पश्चात् वैधृति, विष्कुंभ पश्चात, सायं ५:१२ बजे से सायं ५:२८ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – अनुराधा में भद्रा पश्चात् वैधृति, विष्कुंभ पश्चात, सायं ५:१२ बजे से सायं ५:२८ बजे तक प्रसूति स्नान, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, जैन विद्यारंभ कन्या वरण, पुनर्विवाह, । अनुराधा में एवं ज्येष्ठा में भद्रा पश्चात् वैधृति, विष्कुंभ पश्चात, सायं ५:१२ बजे से रात १२:५८ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन। {४} कृषि मुहूर्त्त –अनुराधा में भद्रा पश्चात् वैधृति, विष्कुंभ पश्चात, सायं ५:१२ बजे से सायं ५:२८ बजे तक धान्य रोपण, धान्य संग्रह। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अनुराधा में भद्रा पश्चात् वैधृति, विष्कुंभ पश्चात, सायं ५:१२ बजे से सायं ५:२८ बजे तक पूंजी निवेश। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (ज्येष्ठा में शुक्रवेध रात १२:०७ वजे से रातअंत ६:४६ वजे तक।)

भाद्रपद शुक्ल ९ चंद्र। १ सितम्बर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से रात २:४१ तक। ग्रह मुख आहुति शुक्र सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से रात २:४१ तक। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – मूल में रात ७:५२ बजे से रात्रिअंत ६:०६ बजे तक पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –मूल में रात २:४१ बजे से रात्रिअंत ६:०६ बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य रोपण, ईंधन स्थापन, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव।

भाद्रपद शुक्ल १० मंगल। २ सितम्बर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अभाव। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – मूल में सूर्योदय से रात ९:४७ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (मूल में गुरु वेध प्रात: ८:५६ वजे से दिन ३:२१ वजे तक।)

भाद्रपद शुक्ल ११ बुध। ३ सितम्बर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से रात ४:१९ तक। ग्रह मुख आहुति शनि सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर रात ४:१९ से रातअंत । उ.षा. में रात ४:१९ बजे से रात्रिअंत ६:०७ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, अग्न्याधान। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – पू.षा. में भद्रा से पहले सूर्योदय से दिन ४:०७ बजे तक कन्या वरण, वर वरण, । उ.षा. में रात ४:१९ बजे से रात्रिअंत ६:०७ बजे तक जातकर्म, नामकरण, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –पू.षा. में भद्रा से पहले सूर्योदय से दिन ४:०७ बजे एवं उ.षा. मेंरात ४:१९ बजे से रात्रिअंत ६:०७ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, ईंधन स्थापन, । उ.षा. में रात ४:१९ बजे से रात्रिअंत ६:०७ बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – पू.षा. में भद्रा से पहले सूर्योदय से दिन ४:०७ बजे तक वैंक लॉकर खोलना, । उ.षा. में रात ४:१९ बजे से रात्रिअंत ६:०७ बजे तक व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । {६} विविध मुहुर्त –उ.षा. में रात ४:१९ बजे से रात्रिअंत ६:०७ बजे तक नवीन वस्त्र–आभूषण, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं।

भाद्रपद शुक्ल १२ गुरु। ४ सितम्बर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर रात ४:०६ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति शनि सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर सूर्योदय से रात ४:०६ तक। वृषारूढ रात ४:०६ से रातअंत । उ.षा. में सूर्योदय से रात ११:४० बजे तक अग्न्याधान, । उ.षा. में एवं श्रवण में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:०७ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । श्रवण में रात ११:४० बजे से रात्रिअंत ६:०७ बजे तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – श्रवण में रात ४:०७ बजे से रात्रिअंत ६:०७ बजे तक गृहछादन छत,, । {३} संस्कार मुहूर्त – उ.षा. में सूर्योदय से रात ११:४० बजे तक प्रसूति स्नान, कन्या वरण, वर वरण, । उ.षा. में एवं श्रवण में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:०७ बजे तक सीमन्त पुंसवन, जातकर्म, नामकरण, पुनर्विवाह, । श्रवण में रात ११:४० बजे से रात्रिअंत ६:०७ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । {४} कृषि मुहूर्त –उ.षा. में सूर्योदय से रात ११:४० बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य रोपण, धान्य विक्रय, । उ.षा. में एवं श्रवण में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:०७ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, ईंधन स्थापन, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – उ.षा. में सूर्योदय से रात ११:४० बजे तक व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), । उ.षा. में एवं श्रवण में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:०७ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । श्रवण में रात ११:४० बजे से रात्रिअंत ६:०७ बजे तक पूंजी निवेश, । श्रवण में रात ११:४० बजे से रात ४:०७ बजे तक धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –उ.षा. में एवं श्रवण में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:०७ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। उ.षा. में सूर्योदय से रात ११:४० बजे तक नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त हैं। श्रवण में रात ११:४० बजे से रात ४:०७ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), मुहूर्त हैं। श्रवण में रात ४:०७ बजे से रात्रिअंत ६:०७ बजे तक यात्रा, मुहूर्त हैं। (श्रवण में बुधवेध रात १:१८ वजे से रात. अंत ५:४६ वजे तक।)

भाद्रपद शुक्ल १३ शुक्र। ५ सितम्बर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से रात ३:१२ तक। ग्रह मुख आहुति शनि सूर्योदय से रात ११:३६। चंद्र रात ११:३६ से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से रात ३:१२ तक। श्रवण में एवं धनिष्ठा में सूर्योदय से रात ३:१३ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – श्रवण में सूर्योदय से रात ११:३६ बजे तक कन्या वरण, । श्रवण में एवं धनिष्ठा में सूर्योदय से रात ३:१३ बजे तक जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, जैन विद्यारंभ । {४} कृषि मुहूर्त –श्रवण में सूर्योदय से रात ११:३६ बजे तक ईंधन स्थापन, । श्रवण में एवं धनिष्ठा में सूर्योदय से रात ३:१३ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, । धनिष्ठा में रात ११:३६ बजे से रात्रिअंत ६:०८ बजे तक धान्य विक्रय, । धनिष्ठा में रात ११:३६ बजे से रात ३:१३ बजे तक धान्य रोपण, पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – श्रवण में एवं धनिष्ठा में सूर्योदय से रात ३:१३ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश, । धनिष्ठा में रात ११:३६ बजे से रात ३:१३ बजे तक वैंक लॉकर खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –श्रवण में एवं धनिष्ठा में सूर्योदय से रात ३:१३ बजे तक यात्रा, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। श्रवण में सूर्योदय से रात ११:३६ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), मुहूर्त हैं। धनिष्ठा में रात ११:३६ बजे से रात ३:१३ बजे तक नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त हैं।

भाद्रपद शुक्ल १४ शनि। ६ सितम्बर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अभाव। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त –धनिष्ठा में एवं शतभिषा में सूर्योदय से रात १:४२ बजे तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (धनिष्ठा में शुक्रवेध सायं ५:०७ वजे से रात १०:५४ वजे तक।)

भाद्रपद शुक्ल १५ रवि। ७ सितम्बर २०२५। मुहूर्त अभाव। शिववास गौरी के समीप रात ११:३८ से रातअंत ।

आश्विन कृष्ण पक्ष

आश्विन कृष्ण १ चंद्र। ८ सितम्बर २०२५। मुहूर्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति चंद्र सूर्योदय से रात ८:०३। मंगल रात ८:०३ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से रात ९:१३ तक।

आश्विन कृष्ण २ मंगल। ९ सितम्बर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अभाव। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – उ.भा. में एवं रेवती में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:०९ बजे तक सीमन्त पुंसवन, । {४} कृषि मुहूर्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –रेवती में सायं ६:०९ बजे से रात्रिअंत ६:०९ बजे तक यात्रा, मुहूर्त हैं। (क्रान्तिसाम्य दोष रात ७:१८ से रात ११:१५ वजे तक। उ.भा. में शनि युति।)

आश्विन कृष्ण ३ बुध। १० सितम्बर २०२५। रेवती में भद्रा दोष। मुहूर्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति मंगल सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर दिन ३:४० से रातअंत ।

आश्विन कृष्ण ४ गुरु। ११ सितम्बर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – शिववास कैलाश पर सूर्योदय से दिन १२:४७ तक। वृषारूढ दिन १२:४७ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अश्विनी में दिन १२:४५ बजे से दिन १:५९ बजे तक यात्रा, वाहन क्रय, मुहूर्त हैं। (अश्विनी में सूर्य वेध केतु वेध।)

आश्विन कृष्ण ५ शुक्र। १२ सितम्बर २०२५। मुहूर्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति गुरु सूर्योदय से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से दिन ९:५९ तक।

आश्विन कृष्ण ६ शनि। १३ सितम्बर २०२५। कृतिका में भद्रा दोष मुहूर्त अभाव।

आश्विन कृष्ण ८ रवि। १४ सितम्बर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से रात ३:०५ तक। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –मृगशिर में प्रात: ८:३९ बजे से रात ३:०२ बजे तक वाहन क्रय, मुहूर्त हैं।

आश्विन कृष्ण ९ चंद्र। १५ सितम्बर २०२५। मृगशिर में व्यतिपात दोष। आर्द्रा में व्यतिपात दोष मुहूर्त अभाव।

आश्विन कृष्ण १० मंगल। १६ सितम्बर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – शिववास कैलाश पर रात १२:२६ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – पुनर्वसु में परिघ से पहले रात १२:२२ बजे से रात्रि १२:३८ बजे तक सीमन्त पुंसवन, । {४} कृषि मुहूर्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –पुनर्वसु में भद्रा से पहले परिघ से पहले प्रात: ६:४६ बजे से दिन १२:५३ बजे एवं रात १२:२२ बजे से रात्रि १२:३८ बजे तक यात्रा, मुहूर्त हैं। (पुनर्वसु में गुरु युति।)

आश्विन कृष्ण ११ बुध। १७ सितम्बर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति राहु सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर सूर्योदय से रात ११:४६ तक। वृषारूढ रात ११:४६ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –पुष्य में परिघ पश्चात दिन ११:४६ बजे से रात्रिअंत ६:१२ बजे तक वाहन क्रय, मुहूर्त हैं। (पुनर्वसु में गुरु युति।)

आश्विन कृष्ण १२ गुरु। १८ सितम्बर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – शिववास वृषारूढ सूर्योदय से रात ११:३२ तक। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – पुष्य में सूर्योदय से प्रात: ६:३६ बजे तक सीमन्त पुंसवन, । {४} कृषि मुहूर्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –पुष्य में सूर्योदय से प्रात: ६:३६ बजे तक वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), मुहूर्त हैं।

आश्विन कृष्ण १३ शुक्र। १९ सितम्बर २०२५। अश्लेषा में निर्बल चंद्र। मघा में निर्बल चंद्र दोष भद्रा दोष निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त अभाव।

आश्विन कृष्ण १४ शनि। २० सितम्बर २०२५। मघा में भद्रा दोषनिर्बल चंद्र। पू.फा. में निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त अभाव। शिववास गौरी के समीप रात १२:२३ से रातअंत ।

आश्विन कृष्ण ३० रवि। २१ सितम्बर २०२५। पू.फा. में निर्बल चंद्र। उ.फा. में निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति केतु सूर्योदय से दिन ९:३७। सूर्य दिन ९:३७ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से रात १:२८ तक।

आश्विन शुक्ल पक्ष

आश्विन शुक्ल १ चंद्र। २२ सितम्वर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से रात २:५९ तक। ग्रह मुख आहुति सूर्य सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप रात २:५९ से रातअंत । हस्त में निर्बल चंद्रकाल पश्चात रात २:५९ बजे से रात्रिअंत ६:१३ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – हस्त में निर्बल चंद्रकाल पश्चात रात २:५९ बजे से रात्रिअंत ६:१३ बजे तक गृहछादन छत। {३} संस्कार मुहूर्त्त – हस्त में निर्बल चंद्रकाल पश्चात रात २:५९ बजे से रात्रिअंत ६:१३ बजे तक जातकर्म, नामकरण, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त्त –हस्त में निर्बल चंद्रकाल पश्चात रात २:५९ बजे से रात्रिअंत ६:१३ बजे तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – हस्त में निर्बल चंद्रकाल पश्चात रात २:५९ बजे से रात्रिअंत ६:१३ बजे तक व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), । {६} विविध मुहुर्त –हस्त में निर्बल चंद्रकाल पश्चात रात २:५९ बजे से रात्रिअंत ६:१३ बजे तक यात्रा, राजसेवा, मुहूर्त्त हैं। (हस्त में शनि वेध,। उ.फा. में सूर्य युति। हस्त में बुध युति।)

आश्विन शुक्ल २ मंगल। २३ सितम्वर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहुर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर रात ४:५४ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति सूर्य सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से रात ४:५४ तक। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – हस्त में सूर्योदय से दिन १:४४ बजे तक सीमन्त पुंसवन, प्रसूति स्नान, । हस्त में एवं चित्रा में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:१४ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । {४} कृषि मुहूर्त्त –हस्त में सूर्योदय से दिन १:४४ बजे तक बीज बोवनी, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – चित्रा में दिन १:४४ बजे से रात्रिअंत ६:१४ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –हस्त में सूर्योदय से दिन १:४४ बजे तक यात्रा, मुहूर्त्त हैं। चित्रा में दिन १:४४ बजे से रात ४:५२ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त्त हैं। (हस्त में शनि वेध। चित्रा में राहु वेध, । हस्त में बुध युति।)

आश्विन शुक्ल ३ बुध। २४ सितम्वर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – चित्रा में एवं स्वाती में वैधृति से पहले सूर्योदय से रात ९:०७ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – चित्रा में एवं स्वाती में वैधृति से पहले सूर्योदय से रात ९:०७ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, । {४} कृषि मुहूर्त्त –चित्रा में एवं स्वाती में वैधृति से पहले सूर्योदय से रात ९:०७ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, । स्वाती में वैधृति से पहले दिन ४:२१ बजे से रात ९:०७ बजे तक हल प्रवहण जुताई, बीज बोवनी, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – चित्रा में सूर्योदय से दिन ४:२१ बजे तक व्यापार प्रारंभ,। स्वाती में वैधृति से पहले दिन ४:२१ बजे से रात ९:०७ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । {६} विविध मुहुर्त –चित्रा में एवं स्वाती में वैधृति से पहले सूर्योदय से रात ९:०७ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, वाहन क्रय, नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त्त हैं। (चित्रा में राहु वेध, । स्वाती में मंगल युति।)

आश्विन शुक्ल ३ गुरु। २५ सितम्वर २०२५। स्वाती में वैधृति, विष्कुंभ दोष। वैधृति, विष्कुंभ दोष मुहूर्त्त अभाव।

आश्विन शुक्ल ४ शुक्र। २६ सितम्वर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति बुध सूर्योदय से रातअंत। बुध रात ७:१५ से रातअंत। शिववास कैलाश पर दिन ९:३८ से रातअंत । विशाखा में प्रातः ९:३६ बजे से रात १०:१४ बजे तक अग्न्याधान, । विशाखा में एवं अनुराधा में प्रातः ९:३६ बजे से रात्रिअंत ६:१५ बजे तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । अनुराधा में रात १०:१४ बजे से रात्रिअंत ६:१५ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – अनुराधा में रात १०:१४ बजे से रात्रिअंत ६:१५ बजे तक जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, जैन विद्यारंभ पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त्त –विशाखा में प्रातः ९:३६ बजे से रात १०:१४ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । विशाखा में एवं अनुराधा में प्रातः ९:३६ बजे से रात्रिअंत ६:१५ बजे तक ईंधन स्थापन, । अनुराधा में रात १०:१४ बजे से रात्रिअंत ६:१५ बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य रोपण, धान्य संग्रह, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – विशाखा में प्रातः ९:३६ बजे से रात १०:१४ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, वैंक लॉकर खोलना, । विशाखा में एवं अनुराधा में प्रातः ९:३६ बजे से रात्रिअंत ६:१५ बजे तक धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –विशाखा में एवं अनुराधा में प्रातः ९:३६ बजे से रात्रिअंत ६:१५ बजे तक संपत्ति क्रय, नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त्त हैं। अनुराधा में रात १०:१४ बजे से रात्रिअंत ६:१५ बजे तक यात्रा, राजसेवा, मुहूर्त्त हैं।

आश्विन शुक्ल ५ शनि। २७ सितम्वर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – शिववास कैलाश पर सूर्योदय से दिन १२:०८ तक। वृषारूढ दिन १२:०८ से रातअंत । अनुराधा में सूर्योदय से रात १:१२ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – अनुराधा में सूर्योदय से रात १:१२ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त्त –ज्येष्ठा में रात १:१२ बजे से रात्रिअंत ६:१५ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अनुराधा में सूर्योदय से रात १:१२ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –अनुराधा में सूर्योदय से रात १:१२ बजे तक राजसेवा, मुहूर्त्त हैं। अनुराधा में सूर्योदय से दिन १२:०७ बजे तक यात्रा, मुहूर्त्त हैं।

आश्विन शुक्ल ६ रवि। २८ सितम्वर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से दिन २:२९ तक। ग्रह मुख आहुति बुध सूर्योदय से रात ३:५७। शुक्र रात ३:५७ से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से दिन २:२९ तक। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – ज्येष्ठा में सूर्योदय से रात ३:५७ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, । मूल में रात ३:५७ बजे से रात्रिअंत ६:१५ बजे तक सीमन्त पुंसवन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त्त –ज्येष्ठा में सूर्योदय से रात ३:५७ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । मूल में रात ३:५७ बजे से रात्रिअंत ६:१५ बजे तक धान्य रोपण, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव।

आश्विन शुक्ल ७ चंद्र। २९ सितम्वर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अभाव। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – मूल में सूर्योदय से दिन ४:३२ बजे तक कन्या वरण, । मूल में सूर्योदय से दिन ४:३२ बजे एवं रात ५:२६ बजे से रात ६:१६ बजे तक मंत्र दीक्षा, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त्त –मूल में सूर्योदय से दिन ४:३२ बजे एवं रात ५:२६ बजे से रात ६:१६ बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य रोपण, ईंधन स्थापन, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (मूल में गुरु वेध दिन १०:३४ वजे से सायं ५:०९ वजे तक।)

आश्विन शुक्ल ८ मंगल। ३० सितम्वर २०२५। मुहूर्त्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से सायं ६:०२ तक। ग्रह मुख आहुति शुक्र सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सायं ६:०२ से रातअंत ।

आश्विन शुक्ल ९ बुध। १ अक्टूवर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर सायं ६:५५ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति शुक्र सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से सायं ६:५५ तक। उ.षा. में सायं ६:५९ बजे से रात्रिअंत ६:१६ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – उ.षा. में प्रातः ८:०५ बजे से रात्रिअंत ६:१६ बजे तक पुनर्विवाह, । उ.षा. में सायं ६:५९ बजे से रात्रिअंत ६:१६ बजे तक अन्नप्राशन, । {४} कृषि मुहूर्त्त –उ.षा. में प्रातः ८:०५ बजे से रात्रिअंत ६:१६ बजे तक धान्य विक्रय, । उ.षा. में सायं ६:५९ बजे से रात्रिअंत ६:१६ बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य छेदन, कटाई, ईंधन स्थापन, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – उ.षा. में सायं ६:५९ बजे से रात्रिअंत ६:१६ बजे तक व्यापार प्रारंभ, धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । {६} विविध मुहुर्त –उ.षा. में सायं ६:५९ बजे से रात्रिअंत ६:१६ बजे तक नवीन वस्त्र–आभूषण, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं।

आश्विन शुक्ल १० गुरु। २ अक्टूवर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – उ.षा. में सूर्योदय से प्रातः ९:१० बजे तक अग्न्याधान, । उ.षा. में एवं श्रवण में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:१७ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । श्रवण में प्रातः ९:१० बजे से रात्रिअंत ६:१७ बजे तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – उ.षा. में सूर्योदय से प्रातः ९:१० बजे तक प्रसूति स्नान, कन्या वरण, वर वरण, । उ.षा. में एवं श्रवण में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:१७ बजे तक सीमन्त पुंसवन, जातकर्म, नामकरण, पुनर्विवाह। उ.षा. में एवं श्रवण में सूर्योदय से रात ७:०८ बजे तक अन्नप्राशन, । श्रवण में प्रातः ९:१० बजे से रात्रिअंत ६:१७ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । {४} कृषि मुहूर्त्त –उ.षा. में सूर्योदय से प्रातः ९:१० बजे तक बीज बोवनी, धान्य रोपण, धान्य विक्रय, । उ.षा. में एवं श्रवण में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:१७ बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, ईंधन स्थापन, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – उ.षा. में सूर्योदय से प्रातः ९:१० बजे तक व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), । उ.षा. में एवं श्रवण में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:१७ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । श्रवण में प्रातः ९:१० बजे से रात्रिअंत ६:१७ बजे तक धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –उ.षा. में एवं श्रवण में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:१७ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं। उ.षा. में सूर्योदय से प्रातः ९:१० बजे तक नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त्त हैं। श्रवण में प्रातः ९:१० बजे से रात्रिअंत ६:१७ बजे तक यात्रा, सर्व वस्तु क्रय, वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), मुहूर्त्त हैं।

आश्विन शुक्ल ११ शुक्र। ३ अक्टूवर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर सायं ६:२५ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति शनि सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर सायं ६:२५ से रातअंत । श्रवण में भद्रा से पहले सूर्योदय से प्रातः ७:०० बजे एवं धनिष्ठा मेंसायं ६:३० बजे से रात्रिअंत ६:१७ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – श्रवण में भद्रा से पहले सूर्योदय से प्रातः ७:०० बजे तक कन्या वरण, । श्रवण में भद्रा से पहले सूर्योदय से प्रातः ७:०० बजे एवं धनिष्ठा मेंसायं ६:३० बजे से रात्रिअंत ६:१७ बजे तक जातकर्म, नामकरण, जैन विद्यारंभ पुनर्विवाह, ।

{४} कृषि मुहूर्त –श्रवण में भद्रा से पहले सूर्योदय से प्रात: ७:०० बजे एवं धनिष्ठा मेंसायं ६:३० बजे से रात्रिअंत ६:१७ बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, ईंधन स्थापन, । धनिष्ठा में सायं ६:३० बजे से रात्रिअंत ६:१७ बजे तक धान्य रोपण, धान्य विक्रय, पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – श्रवण में भद्रा से पहले सूर्योदय से प्रात: ७:०० बजे एवं धनिष्ठा मेंसायं ६:३० बजे से रात्रिअंत ६:१७ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, धनसंग्रह, बैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश, । धनिष्ठा में सायं ६:३० बजे से रात्रिअंत ६:१७ बजे तक बैंक लॉकर खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –श्रवण में भद्रा से पहले सूर्योदय से प्रात: ७:०० बजे एवं धनिष्ठा मेंसायं ६:३० बजे से रात्रिअंत ६:१७ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। श्रवण में भद्रा से पहले सूर्योदय से प्रात: ७:०० बजे तक यात्रा, सर्व वस्तु क्रय, वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), मुहूर्त हैं। धनिष्ठा में सायं ६:३० बजे से रात्रिअंत ६:१७ बजे तक नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त हैं।

आश्विन शुक्ल १२ शनि। ४ अक्टूबर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से सायं ५:०२ तक। ग्रह मुख आहुति शनि सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर सूर्योदय से सायं ५:०२ तक। वृषारूढ सायं ५:०२ से रातअंत । धनिष्ठा में एवं शतभिषा में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:१७ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – धनिष्ठा में सूर्योदय से प्रात: ९:०६ बजे तक पुनर्विवाह, । धनिष्ठा में एवं शतभिषा में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:१७ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । {४} कृषि मुहूर्त –धनिष्ठा में एवं शतभिषा में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:१७ बजे तक धान्य विक्रय, पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – धनिष्ठा में एवं शतभिषा में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:१७ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –धनिष्ठा में सूर्योदय से प्रात: ९:०६ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। शतभिषा में प्रात: ९:०६ बजे से रात्रिअंत ६:१७ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त हैं। (शतभिषा में मंगल वेध,।)

आश्विन शुक्ल १३ रवि। ५ अक्टूबर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति शनि सूर्योदय से प्रात: ७:६०। चंद्र प्रात: ७:६० से रात ६:१७। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से दिन २:५९ तक। शतभिषा में सूर्योदय से प्रात: ७:६० बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – शतभिषा में सूर्योदय से प्रात: ७:६० बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, अन्नप्राशन, । शतभिषा में एवं पू.भा. में क्रांतिसाम्य से पहले सूर्योदय से दिन ११:४६ बजे तक जैन विद्यारंभ । {४} कृषि मुहूर्त –शतभिषा में सूर्योदय से प्रात: ७:६० बजे तक धान्य संग्रह, धान्य विक्रय, पशु क्रय विक्रय, । पू.भा. में क्रांतिसाम्य से पहले प्रात: ७:६० बजे से दिन ११:४६ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – शतभिषा में सूर्योदय से प्रात: ७:६० बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –शतभिषा में सूर्योदय से प्रात: ७:६० बजे तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त हैं। (क्रान्तिसाम्य दोष दिन ११:४६ से दिन ३:४२ वजे तक। शतभिषा में भौम वेध । उ.भा. में सूर्य वेध, । पू.भा. में बुधवेध प्रात: ७:६० वजे से दिन १:३४ वजे तक।पू.भा. में शनि राहु युति।)

आश्विन शुक्ल १४ चंद्र। ६ अक्टूबर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – उ.भा. में एवं रेवती में भद्रा पश्चात्, रात १०:५४ बजे से रात्रिअंत ६:१८ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, अग्न्याधान, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । रेवती में रात ४:०४ बजे से रात्रिअंत ६:१८ बजे तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – उ.भा. में रात १०:५४ बजे से रात ४:०४ बजे तक अन्नप्राशन, वर वरण, । उ.भा. में एवं रेवती में भद्रा पश्चात्, रात १०:५४ बजे से रात्रिअंत ६:१८ बजे तक जातकर्म, नामकरण, । रेवती में रात ४:०४ बजे से रात्रिअंत ६:१८ बजे तक मंत्र दीक्षा, । {४} कृषि मुहूर्त –उ.भा. में रात १०:५४ बजे से रात ४:०४ बजे तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, । उ.भा. में सूर्योदय से दिन १२:२४ बजे एवं रात १०:५४ बजे से रात ४:०४ बजे तक धान्य विक्रय, । उ.भा. में एवं रेवती में भद्रा पश्चात्, रात १०:५४ बजे से रात्रिअंत ६:१८ बजे तक धान्य संग्रह, । रेवती में रात ४:०४ बजे से रात्रिअंत ६:१८ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – उ.भा. में रात १०:५४ बजे से रात ४:०४ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । उ.भा. में एवं रेवती में भद्रा पश्चात्, रात १०:५४ बजे से रात्रिअंत ६:१८ बजे तक व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), । रेवती में रात ४:०४ बजे से रात्रिअंत ६:१८ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –उ.भा. में रात १०:५४ बजे से रात ४:०४ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। रेवती में रात ४:०४ बजे से रात्रिअंत ६:१८ बजे तक यात्रा, राजसेवा, मुहूर्त हैं। (उ. भा. में सूर्य वेध ।)

आश्विन शुक्ल १५ मंगल। ७ अक्टूबर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति चंद्र सूर्योदय से रात १:३१। मंगल रात १:३१ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप दिन ९:२० सेरात ५:४९। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – रेवती में सूर्योदय से रात १:३१ बजे तक सीमन्त पुंसवन, । रेवती में एवं अश्विनी में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:४९ बजे तक प्रसूति स्नान, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । अश्विनी में रात १:३१ बजे से रात्रिअंत ५:४९ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, । {४} कृषि मुहूर्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – रेवती में एवं अश्विनी में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:४९ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –रेवती में एवं अश्विनी में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:४९ बजे तक यात्रा, मुहूर्त हैं। रेवती में सूर्योदय से प्रात: ९:२० बजे तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त हैं। (अश्विनी में केतु वेध, । रेवती में शुक्रवेध रात ८:१० वजे से रात १:३१ वजे तक।)

कार्तिक कृष्ण पक्ष

कार्तिक कृष्ण २ बुध। ८ अक्टूबर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अश्विनी में सूर्योदय से रात १०:५० बजे तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अश्विनी में सूर्योदय से रात १०:५० बजे तक जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध नहीं)।। {३} संस्कार मुहूर्त – अश्विनी में सूर्योदय से रात १०:५० बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, (आव.),जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, । {४} कृषि मुहूर्त –अश्विनी में सूर्योदय से रात १०:५० बजे तक पशु क्रय विक्रय, । भरणी में वज्र से पहले वज्र पश्चात रात १०:५० बजे से रात १:३८ बजे एवं रात २:५० बजे से रात्रिअंत ६:१९ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अश्विनी में सूर्योदय से रात १०:५० बजे तक व्यापार प्रारंभ, धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । {६} विविध मुहुर्त –अश्विनी में सूर्योदय से रात १०:५० बजे तक यात्रा, सर्व वस्तु क्रय, वाहन क्रय, नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त हैं। (अश्विनी में केतु वेध, ।)

कार्तिक कृष्ण ३ गुरु। ९ अक्टूबर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से रात ११:०१ तक। ग्रह मुख आहुति मंगल सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर रात ११:०१ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त –भरणी में भद्रा से पहले सूर्योदय से दिन १२:४२ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव।

कार्तिक कृष्ण ४ शुक्र। १० अक्टूबर २०२५। रोहिणी में व्यतिपात दोष मुहूर्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर रात ७:४५ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति मंगल सूर्योदय से सायं ५:३८। गुरु सायं ५:३८ से रात ८:१५। मंगल रात ८:१५ से रातअंत। शिववास कैलाश पर सूर्योदय से रात ७:४५ तक। वृषारूढ रात ७:४५ से रातअंत ।

कार्तिक कृष्ण ५ शनि। ११ अक्टूबर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से दिन ४:४९ तक। ग्रह मुख आहुति मंगल सूर्योदय से दिन ३:२५। गुरु दिन ३:२५ से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से दिन ४:४९ तक। रोहिणी में एवं मृगशिर में व्यतिपात पश्चात, दिन २:१२ बजे से रात्रिअंत ६:२० बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – मृगशिर में दिन ३:२५ बजे से रात्रिअंत ६:२० बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, (आव.),। {४} कृषि मुहूर्त –रोहिणी में व्यतिपात पश्चात, दिन २:१२ बजे से दिन ३:२५ बजे तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – मृगशिर में दिन ३:२५ बजे से रात्रिअंत ६:२० बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –रोहिणी में व्यतिपात पश्चात, दिन २:१२ बजे से दिन ३:२५ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। मृगशिर में दिन ३:२५ बजे से रात्रिअंत ६:२० बजे तक राजसेवा, मुहूर्त हैं।

कार्तिक कृष्ण ६ रवि। १२ अक्टूबर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – मृगशिर में परिघ से पहले, सूर्योदय से दिन १०:५७ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – आर्द्रा में भद्रा पश्चात् परिघ पश्चात रात १:११ बजे से रात्रिअंत ६:२० बजे तक गृहछादन छत,, । {३} संस्कार मुहूर्त – मृगशिर में परिघ से पहले, सूर्योदय से दिन १०:५७ बजे तक सीमन्त पुंसवन, शल्यक्रिया ऑपरेशन, प्रसूति स्नान, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, (आव.),कन्या वरण, । {४} कृषि मुहूर्त –मृगशिर में परिघ से पहले, सूर्योदय से दिन १०:५७ बजे तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – मृगशिर में परिघ से पहले, सूर्योदय से दिन १०:५७ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –मृगशिर में परिघ से पहले, सूर्योदय से दिन १०:५७ बजे तक वाहन क्रय, मुहूर्त हैं। आर्द्रा में भद्रा पश्चात् परिघ पश्चात रात १:११ बजे से रात्रिअंत ६:२० बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं।

कार्तिक कृष्ण ७ चंद्र। १३ अक्टूबर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – शिववास गौरी के समीप दिन १२:२५ से रातअंत । पुनर्वसु में दिन १२:२८ बजे से रात्रिअंत ६:२१ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । {२} वास्तु मुहूर्त – पुनर्वसु में दिन १२:२८ बजे से रात्रिअंत ६:२१ बजे तक जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध नहीं)।। {३} संस्कार मुहूर्त – पुनर्वसु में दिन १२:२८ बजे से रात्रिअंत ६:२१ बजे तक जातकर्म, नामकरण, । {४} कृषि मुहूर्त –पुनर्वसु में दिन १२:२८ बजे से रात्रिअंत ६:२१ बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य संग्रह, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – पुनर्वसु में दिन १२:२८ बजे से रात्रिअंत ६:२१ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, धनसंग्रह, बैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –आर्द्रा में सूर्योदय से दिन १२:२० बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय

एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं। पुनर्वसु में दिन १२:२८ बजे से रात्रिअंत ६:२१ बजे तक वाहन क्रय, मुहूर्त्त हैं। (पुनर्वसु में गुरु युति।)

कार्तिक कृष्ण ८ मंगल। १४ अक्टूबर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति गुरु सूर्योदय से दिन ११:५५। राहु दिन ११:५५ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से दिन ११:१० तक। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – पुनर्वसु में सूर्योदय से दिन ११:०५ बजे तक सीमन्त पुंसवन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, (आव.),। {४} कृषि मुहूर्त्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – पुनर्वसु में सूर्योदय से दिन ११:०५ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (पुनर्वसु में गुरु युति।)

कार्तिक कृष्ण ९ बुध। १५ अक्टूबर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – पुष्य में दिन १०:३० बजे से दिन १२:०२ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – पुष्य में दिन १०:३० बजे से दिन १२:०२ बजे तक जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।। {३} संस्कार मुहूर्त्त – पुष्य में सूर्योदय से दिन १०:३० बजे तक प्रसूति जल/कुआ पूजन, । पुष्य में दिन १०:३० बजे से दिन १२:०२ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, (आव.),अन्नप्राशन, मंत्र दीक्षा, । {४} कृषि मुहूर्त्त –पुष्य में दिन १०:३० बजे से दिन १२:०२ बजे तक हल प्रवहण जुताई, बीज बोवनी, धान्य छेदन, कटाई, पशु क्रय विक्रय, । पुष्य में एवं अश्लेषा में भद्रा से पहलेदिन १०:३० बजे से रात्रि १०:२९ बजे तक ईंधन स्थापन, । अश्लेषा में भद्रा से पहले दिन १२:०२ बजे से रात्रि १०:२९ बजे तक नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में दिनरात, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – पुष्य में दिन १०:३० बजे से दिन १२:०२ बजे तक व्यापार प्रारंभ, धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –पुष्य में दिन १०:३० बजे से दिन १२:०२ बजे तक यात्रा, वाहन क्रय, नवीन वस्त्र–आभूषण, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं।

कार्तिक कृष्ण १० गुरु। १६ अक्टूबर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति राहु सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर दिन १०:३९ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – मघा में दिन १२:४६ बजे से रात्रिअंत ६:२२ बजे तक पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त्त –अश्लेषा में एवं मघा में दिन १०:३५ बजे से रात्रिअंत ६:२२ बजे तक नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में दि. १२:४६ तक, ईंधन स्थापन, । मघा में दिन १२:४६ बजे से रात्रिअंत ६:२२ बजे तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –मघा में दिन १२:४६ बजे से रात्रिअंत ६:२२ बजे तक संपत्ति क्रय, मुहूर्त्त हैं।

कार्तिक कृष्ण ११ शुक्र। १७ अक्टूबर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – शिववास कैलाश पर सूर्योदय से दिन ११:१८ तक। वृषारूढ दिन ११:१८ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –मघा मेंक्रांतिसाम्य से पहले, सूर्योदय से प्रात: ८:४० बजे तक संपत्ति क्रय, मुहूर्त्त हैं। (क्रान्तिसाम्य दोष दिन ८:४० से दिन १:०८ वजे तक। पू.फा. में केतु युति।)

कार्तिक कृष्ण १२ शनि। १८ अक्टूबर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति केतु सूर्योदय से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से दिन १२:२७ तक। {२} वास्तु मुहूर्त – पू.फा. में सूर्योदय से दिन १२:२३ बजे तक नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , । {३} संस्कार मुहूर्त्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (पू.फा. में केतु युति।)

कार्तिक कृष्ण १३ रवि। १९ अक्टूबर २०२५। उ.फा. में निर्बल चंद्र। भद्रा दोष निर्बल चंद्र दोष हस्त में निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त्त अभाव।

कार्तिक कृष्ण १४ चंद्र। २० अक्टूबर २०२५। हस्त में वैधृति, विष्कुंभ दोष।निर्बल चंद्र। वैधृति, विष्कुंभ दोष निर्बल चंद्र दोष चित्रा में निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से दिन ३:५१ तक। ग्रह मुख आहुति केतु सूर्योदय से रात ८:२२। सूर्य रात ८:२२ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप दिन ३:५१ से रातअंत ।

कार्तिक कृष्ण ३० मंगल। २१ अक्टूबर २०२५। चित्रा में निर्बल चंद्र। निर्बल चंद्र दोष स्वाती में निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त्त अभाव। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से सायं ५:५९ तक।

कार्तिक शुक्ल पक्ष

कार्तिक शुक्ल १ बुध। २२ अक्टूबर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर रात ८:२० से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति सूर्य सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप रात ८:२० से रातअंत । स्वाती में रात ८:२० बजे से रात १:५४ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, । स्वाती में एवं विशाखा में निर्बल चंद्रकाल पश्चात, रात ८:२० बजे से रात्रिअंत ६:२५ बजे तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । विशाखा में रात १:५४ बजे से रात्रिअंत ६:२५ बजे तक अग्न्याधान, । {२} वास्तु मुहूर्त – स्वाती में रात ८:२० बजे से रात १:५४ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित, जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध नहीं)।। विशाखा में रात १:५४ बजे से रात्रिअंत ६:२५ बजे तक नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित । {३} संस्कार मुहूर्त्त – स्वाती में रात ८:२० बजे से रात १:५४ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, (आव), जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, । {४} कृषि मुहूर्त्त –स्वाती में रात ८:२० बजे से रात १:५४ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, । विशाखा में रात १:५४ बजे से रात्रिअंत ६:२५ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – स्वाती में रात ८:२० बजे से रात १:५४ बजे तक पूंजी निवेश, । स्वाती में एवं विशाखा में निर्बल चंद्रकाल पश्चात, रात ८:२० बजे से रात्रिअंत ६:२५ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । विशाखा में रात १:५४ बजे से रात्रिअंत ६:२५ बजे तक वैंक लॉकर खोलना, धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –स्वाती में एवं विशाखा में निर्बल चंद्रकाल पश्चात, रात ८:२० बजे से रात्रिअंत ६:२५ बजे तक नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त्त हैं। स्वाती में रात ८:२० बजे से रात १:५४ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, वाहन क्रय, मुहूर्त्त हैं। (विशाखा में मंगल बुध युति।)

कार्तिक शुक्ल २ गुरु। २३ अक्टूबर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से रात १०:४९ तक। ग्रह मुख आहुति सूर्य सूर्योदय से रात ४:५३। बुध रात ४:५३ से रातअंत। सूर्य रात ६:४६ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से रात १०:४९ तक। विशाखा में सूर्योदय से रात ४:५३ बजे तक अग्न्याधान, । विशाखा में एवं अनुराधा में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:२५ बजे तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । अनुराधा में रात ४:५३ बजे से रात्रिअंत ६:२५ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । {२} वास्तु मुहूर्त – विशाखा में सूर्योदय से रात ४:५३ बजे तक नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , । अनुराधा में रात ४:५३ बजे से रात्रिअंत ६:२५ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध नहीं)।। {३} संस्कार मुहूर्त्त – अनुराधा में रात ४:५३ बजे से रात्रिअंत ६:२५ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, प्रसूति स्नान, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, (आव.),जातकर्म, नामकरण, । {४} कृषि मुहूर्त्त –विशाखा में सूर्योदय से रात ४:५३ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । अनुराधा में रात ४:५३ बजे से रात्रिअंत ६:२५ बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य रोपण, धान्य संग्रह, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – विशाखा में सूर्योदय से रात ४:५३ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, वैंक लॉकर खोलना, धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, । विशाखा में एवं अनुराधा में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:२५ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –विशाखा में एवं अनुराधा में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:२५ बजे तक नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त्त हैं। अनुराधा में रात ४:५३ बजे से रात्रिअंत ६:२५ बजे तक यात्रा, राजसेवा, मुहूर्त्त हैं। (विशाखा में मंगल बुध युति।)

कार्तिक शुक्ल ३ शुक्र। २४ अक्टूबर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अनुराधा में सूर्योदय से रात १:२० बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अनुराधा में सूर्योदय से रात १:२० बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध नहीं)।। {३} संस्कार मुहूर्त्त – अनुराधा में सूर्योदय से रात १:२० बजे तक जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, जैन विद्यारंभ कन्या वरण, । अनुराधा में रात १:२० बजे से रात ६:२६ बजे तक प्रसूति जल/कुआ पूजन, । {४} कृषि मुहूर्त्त –अनुराधा में सूर्योदय से रात १:२० बजे तक धान्य रोपण, धान्य संग्रह, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अनुराधा में सूर्योदय से रात १:२० बजे तक धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –अनुराधा में सूर्योदय से रात १:२० बजे तक यात्रा, नवीन वस्त्र–आभूषण, राजसेवा, मुहूर्त्त हैं।

कार्तिक शुक्ल ४ शनि। २५ अक्टूबर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से रात ३:५० तक। ग्रह मुख आहुति सूर्य सूर्योदय से प्रात: ७:५४। बुध प्रात: ७:५४ से रातअंत। शिववास कैलाश पर रात ३:५० से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त्त –ज्येष्ठा में रात ३:४९ बजे से रात्रिअंत ६:२६ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव।

कार्तिक शुक्ल ५ रवि। २६ अक्टूबर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति बुध सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर सूर्योदय से रात ६:०७ तक। वृषारूढ रात ६:०७ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – ज्येष्ठा में सूर्योदय से दिन १०:४८ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, । मूल में दिन १०:४८ बजे से रात्रिअंत ६:२७ बजे तक सीमन्त पुंसवन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, (आव.),। {४} कृषि मुहूर्त्त –ज्येष्ठा में सूर्योदय से दिन १०:४८ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । मूल में दिन १०:४८ बजे से रात्रिअंत ६:२७ बजे तक धान्य रोपण, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (मूल में गुरु वेध दिन १०:४८ वजे से सायं ५:२९ वजे तक।)

कार्तिक शुक्ल ६ चंद्र। २७ अक्टूबर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – शिववास वृषारूढ सूर्योदय से ८:०२ तक। {२} वास्तु मुहूर्त – मूल में सूर्योदय से दिन १:२८ बजे तक जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।। पू.षा. में दिन १:२८ बजे से रात ६:२७ बजे तक नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , । {३} संस्कार मुहूर्त्त – मूल में सूर्योदय से दिन १:२८ बजे तक मंत्र दीक्षा, कन्या वरण, पुनर्विवाह, । {४}

कृषि मुहूर्त्त –मूल में सूर्योदय से दिन १:२८ बजे तक धान्य रोपण, । मूल में एवं पू.षा. में सूर्योदय से रात ६:२७ बजे तक ईंधन स्थापन,। पू.षा. में दिन १:२८ बजे से रात ६:२७ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – पू.षा. में दिन १:२८ बजे से रात ६:२७ बजे तक वैंक लॉकर खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –अभाव।

कार्तिक शुक्ल ६ मंगल। २८ अक्टूवर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिन ८:०१ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति बुध सूर्योदय से दिन ३:४४। शुक्र दिन ३:४४ से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से दिन ८:०१ तक। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – पू.षा. में सूर्योदय से दिन ३:४४ बजे तक वर वरण, । उ.षा. में दिन ३:४४ बजे से रात्रिअंत ६:२८ बजे तक प्रसूति स्नान, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त्त –उ.षा. में दिन ३:४४ बजे से रात्रिअंत ६:२८ बजे तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव।

कार्तिक शुक्ल ७ बुध। २९ अक्टूवर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – उ.षा. में शूल से पहले, सूर्योदय से प्रात: ७:५२ बजे तक अग्न्याधान, । उ.षा. में शूल से पहले, सूर्योदय से प्रात: ७:५२ बजे एवं श्रवण मेंरात ९:४७ बजे से रात्रिअंत ६:२९ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, । श्रवण में भद्रा पश्चात् रात ९:४७ बजे से रात्रिअंत ६:२९ बजे तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – उ.षा. में शूल से पहले, सूर्योदय से प्रात: ७:५२ बजे एवं श्रवण मेंरात ९:४७ बजे से रात्रिअंत ६:२९ बजे तक जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।। श्रवण में भद्रा पश्चात् रात ९:४७ बजे से रात्रिअंत ६:२९ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध (अग्निबाण १५:०६ तक, त्यागकर), । {३} संस्कार मुहूर्त्त – उ.षा. में शूल से पहले, सूर्योदय से प्रात: ७:५२ बजे तक अन्नप्राशन, कन्या वरण, वर वरण, । उ.षा. में शूल से पहले, सूर्योदय से प्रात: ७:५२ बजे एवं श्रवण मेंरात ९:४७ बजे से रात्रिअंत ६:२९ बजे तक जातकर्म, नामकरण, मंत्र दीक्षा, पुनर्विवाह, । श्रवण में भद्रा पश्चात् रात ९:४७ बजे से रात्रिअंत ६:२९ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, (आव.),। {४} कृषि मुहूर्त्त –उ.षा. में शूल से पहले, सूर्योदय से प्रात: ७:५२ बजे तक बीज बोवनी, धान्य विक्रय, । उ.षा. में शूल से पहले, सूर्योदय से प्रात: ७:५२ बजे एवं श्रवण मेंरात ९:४७ बजे से रात्रिअंत ६:२९ बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य छेदन, कटाई, ईंधन स्थापन, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – उ.षा. में शूल से पहले, सूर्योदय से प्रात: ७:५२ बजे तक व्यापार प्रारंभ, । उ.षा. में शूल से पहले, सूर्योदय से प्रात: ७:५२ बजे एवं श्रवण मेंरात ९:४७ बजे से रात्रिअंत ६:२९ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । श्रवण में भद्रा पश्चात् रात ९:४७ बजे से रात्रिअंत ६:२९ बजे तक धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –उ.षा. में शूल से पहले, सूर्योदय से प्रात: ७:५२ बजे एवं श्रवण मेंरात ९:४७ बजे से रात्रिअंत ६:२९ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं। उ.षा. में शूल से पहले, सूर्योदय से प्रात: ७:५२ बजे तक नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त्त हैं। श्रवण में भद्रा पश्चात् रात ९:४७ बजे से रात्रिअंत ६:२९ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, वाहन क्रय, मुहूर्त्त हैं।

कार्तिक शुक्ल ८ गुरु। ३० अक्टूवर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिन १०:०५ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति शुक्र सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप दिन १०:०५ से रातअंत । श्रवण में सूर्योदय से दिन १०:०६ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – श्रवण में सूर्योदय से दिन १०:०६ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध , जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।। {३} संस्कार मुहूर्त्त – श्रवण में सूर्योदय से दिन १०:०६ बजे तक सीमन्त पुंसवन, शल्यक्रिया ऑपरेशन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, (आव.),मंत्र दीक्षा, कन्या वरण, । श्रवण में दिन १०:०६ बजे से सायं ६:२९ बजे तक प्रसूति जल/कुआ पूजन, । श्रवण में एवं धनिष्ठा में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:२९ बजे तक जातकर्म, नामकरण, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त्त –श्रवण में सूर्योदय से दिन १०:०६ बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, ईंधन स्थापन, । धनिष्ठा में सायं ६:२९ बजे से रात्रिअंत ६:२९ बजे तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – श्रवण में सूर्योदय से दिन १०:०६ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –श्रवण में सूर्योदय से दिन १०:०६ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, वाहन क्रय, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं। (क्रान्तिसाम्य दोष रात १:०८ से रात ५:१८ वजे तक। धनिष्ठा में मंगल वेध,।)

कार्तिक शुक्ल ९ शुक्र। ३१ अक्टूवर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से दिन १०:०१ तक। ग्रह मुख आहुति शुक्र सूर्योदय से सायं ६:४५। शनि सायं ६:४५ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से दिन १०:०१ तक। धनिष्ठा में एवं शतभिषा में दिन १०:०२ बजे से रात्रिअंत ६:३० बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – धनिष्ठा में एवं शतभिषा में दिन १०:०२ बजे से रात्रिअंत ६:३० बजे तक जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।। शतभिषा में सायं ६:४५ बजे से रात्रिअंत ६:३० बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध , । {३} संस्कार मुहूर्त्त – धनिष्ठा में सूर्योदय से सायं ६:४५ बजे तक पुनर्विवाह, । धनिष्ठा में एवं शतभिषा में दिन १०:०२ बजे से रात्रिअंत ६:३० बजे तक अन्नप्राशन, जैन विद्यारंभ । {४} कृषि मुहूर्त्त –धनिष्ठा में दिन १०:०२ बजे से सायं ६:४५ बजे तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, । धनिष्ठा में एवं शतभिषा में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:३० बजे तक धान्य विक्रय, । धनिष्ठा में एवं शतभिषा में दिन १०:०२ बजे से रात्रिअंत ६:३० बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य संग्रह, ईंधन स्थापन, पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – धनिष्ठा में दिन १०:०२ बजे से सायं ६:४५ बजे तक वैंक लॉकर खोलना। धनिष्ठा में एवं शतभिषा में दिन १०:०२ बजे से रात्रिअंत ६:३० बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –धनिष्ठा में दिन १०:०२ बजे से सायं ६:४५ बजे तक यात्रा, नवीन वस्त्र–आभूषण, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं। शतभिषा में सायं ६:४५ बजे से रात्रिअंत ६:३० बजे तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त्त हैं। (धनिष्ठा में भौम वेध । शतभिषा में सूर्य वेध,।)

कार्तिक शुक्ल १० शनि। १ नवम्वर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – शतभिषा में सूर्योदय से सायं ६:१३ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, । {२} वास्तु मुहूर्त – शतभिषा में सूर्योदय से सायं ६:१३ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध , । पू.भा. में भद्रा से पहले सायं ६:१३ बजे से रात्रि ८:२० बजे तक नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्ध। {३} संस्कार मुहूर्त्त – शतभिषा में सूर्योदय से सायं ६:१३ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, (आव.),। {४} कृषि मुहूर्त्त –शतभिषा में सूर्योदय से सायं ६:१३ बजे तक धान्य विक्रय, पशु क्रय विक्रय। पू.भा. में भद्रा से पहले सायं ६:१३ बजे से रात्रि ८:२० बजे तक नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में दिनरात, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – शतभिषा में सूर्योदय से सायं ६:१३ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –शतभिषा में सूर्योदय से सायं ६:१३ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त्त हैं। (शतभिषा में सूर्य वेध । पू.भा. में शनि राहु युति।)

कार्तिक शुक्ल ११ रवि। २ नवम्वर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – शिववास कैलाश पर प्रात: ७:२९ सेरात ४:२४। उ.भा. में दिन ४:५६ बजे से रात्रिअंत ४:२३ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – पू.भा. में प्रात: ७:२८ बजे से दिन ४:५६ बजे तक जैन विद्यारंभ वर वरण, । उ.भा. में दिन ४:५६ बजे से रात्रिअंत ४:२३ बजे तक सीमन्त पुंसवन, प्रसूति स्नान, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त्त –पू.भा. में प्रात: ७:२८ बजे से दिन ४:५६ बजे तक नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में दिनरात, । उ.भा. में दिन ४:५६ बजे से रात्रिअंत ४:२३ बजे तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, धान्य विक्रय। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –उ.भा. में दिन ४:५६ बजे से रात्रिअंत ४:२३ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं। (पू.भा. में शुक्रवेध ६:३१ से दिन ११:२१ वजे तक।पू.भा. में शनि राहु युति।)

कार्तिक शुक्ल १३ चंद्र। ३ नवम्वर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से रात २:०२ तक। ग्रह मुख आहुति शनि सूर्योदय से दिन २:६०। चंद्र दिन २:६० से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से रात २:०२ तक। उ.भा. में एवं रेवती में सूर्योदय से रात २:०४ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, अग्न्याधान, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । रेवती में दिन २:६० बजे से रात २:०४ बजे तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – उ.भा. में एवं रेवती में सूर्योदय से रात २:०४ बजे तक जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।। रेवती में दिन २:६० बजे से रात २:०४ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध , । {३} संस्कार मुहूर्त्त – उ.भा. में सूर्योदय से दिन २:६० बजे तक कन्या वरण, वर वरण, । उ.भा. में एवं रेवती में सूर्योदय से रात २:०४ बजे तक जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, । रेवती में दिन २:६० बजे से रात २:०४ बजे तक कर्णवेध, । {४} कृषि मुहूर्त्त –उ.भा. में सूर्योदय से दिन २:६० बजे तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य विक्रय, ईंधन स्थापन, । उ.भा. में एवं रेवती में सूर्योदय से रात २:०४ बजे तक धान्य संग्रह, । रेवती में दिन २:६० बजे से रात २:०४ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – उ.भा. में सूर्योदय से दिन २:६० बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । उ.भा. में एवं रेवती में सूर्योदय से रात २:०४ बजे तक व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), । रेवती में दिन २:६० बजे से रात २:०४ बजे तक वैंक लॉकर खोलना, धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –उ.भा. में सूर्योदय से दिन २:६० बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं। रेवती में दिन २:६० बजे से रात २:०४ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, राजसेवा, मुहूर्त्त हैं।

कार्तिक शुक्ल १४ मंगल। ४ नवम्वर २०२५। अश्विनी में भद्रा दोष मुहूर्त्त अभाव।

कार्तिक शुक्ल १५ बुध। ५ नवम्वर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से सायं ६:५१ तक। ग्रह मुख आहुति चंद्र सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सायं ६:५१ से रातअंत । अश्विनी में भद्रा पश्चात् प्रात: ८:४६ बजे से प्रात: ९:४२ बजे तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अश्विनी में भद्रा पश्चात् प्रात: ८:४६ बजे से प्रात: ९:४२ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध , जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध नहीं)।। भरणी में व्यतिपात से पहले प्रात: ९:४२ बजे से दिन ११:३० बजे तक नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र

शुद्ध। {३} संस्कार मुहूर्त – अश्विनी में भद्रा पश्चात् प्रात: ८:४६ बजे से प्रात: ९:४२ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, (आव.),जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, कर्णवेध, । {४} कृषि मुहूर्त –अश्विनी में भद्रा पश्चात् प्रात: ८:४६ बजे से प्रात: ९:४२ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । भरणी में व्यतिपात से पहले प्रात: ९:४२ बजे से दिन ११:३० बजे तक धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अश्विनी में भद्रा पश्चात् प्रात: ८:४६ बजे से प्रात: ९:४२ बजे तक व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण। {६} विविध मुहुर्त –अश्विनी में भद्रा पश्चात् प्रात: ८:४६ बजे से प्रात: ९:४२ बजे तक यात्रा, सर्व वस्तु क्रय, वाहन क्रय, नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त हैं। (अश्विनी में केतु वेध, । भरणी में बुधवेध दिन २:५६ वजे से रात ८:१० वजे तक।)

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष

मार्गशीर्ष कृष्ण १ गुरु। ६ नवम्बर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिन ३:०१ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति चंद्र सूर्योदय से प्रात: ६:३९। मंगल प्रात: ६:३९ से दिन २:५५। चंद्र दिन २:५५ से रात ३:३४ शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से दिन ३:०१ तक। कृतिका में दिन २:५९ बजे से रात्रि ३:४८ बजे तक अग्न्याधान, । {२} वास्तु मुहूर्त – कृतिका में व्यतिपात पश्चात प्रात: ७:०९ बजे से रात्रि ३:४८ बजे तक नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्ध (अग्निबाण १४:५५ से, त्यागकर), । {३} संस्कार मुहूर्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त –कृतिका में व्यतिपात पश्चात प्रात: ७:०९ बजे से रात्रि ३:४८ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव।

मार्गशीर्ष कृष्ण २ शुक्र। ७ नवम्बर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – रोहिणी में दिन १२:४१ बजे से रात ९:२३ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, अग्न्याधान, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । {२} वास्तु मुहुर्त – रोहिणी में दिन १२:४१ बजे से रात ९:२३ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध (अग्निबाण १४:५१ तक, त्यागकर), गृहछादन छत, (अग्निबाण १४:५१ तक, त्यागकर), जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध नहीं)।। {३} संस्कार मुहूर्त – रोहिणी में दिन १२:४१ बजे से रात ९:२३ बजे तक जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, वर वरण, । {४} कृषि मुहूर्त –रोहिणी में दिन १२:४१ बजे से रात ९:२३ बजे तक धान्य रोपण, धान्य संग्रह, धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – रोहिणी में दिन १२:४१ बजे से रात ९:२३ बजे तक व्यापार प्रारंभ, धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, वैंक लॉकर खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –रोहिणी में दिन १२:४१ बजे से रात ९:२३ बजे तक नवीन वस्त्र–आभूषण, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं।

मार्गशीर्ष कृष्ण ३ शनि। ८ नवम्बर २०२५। मृगशिर में भद्रा दोष। मुहूर्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर प्रात: ७:४० सेरात ५:१३तक। ग्रह मुख आहुति मंगल सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर प्रात: ७:४० सेरात ५:१३।

मार्गशीर्ष कृष्ण ५ रवि। ९ नवम्बर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर रात २:०२ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति मंगल सूर्योदय से रात ८:१४। गुरु रात ८:१४ से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से रात २:०२ तक। पुनर्वसु में रात ८:१४ बजे से रात्रिअंत ६:३५ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – पुनर्वसु में रात ८:१४ बजे से रात्रिअंत ६:३५ बजे तक सीमन्त पुंसवन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, (आव.),जैन विद्यारंभ । पुनर्वसु में रात ८:१४ बजे से रात १:५७ बजे तक अन्नप्राशन, । {४} कृषि मुहूर्त –पुनर्वसु में रात ८:१४ बजे से रात्रिअंत ६:३५ बजे तक धान्य संग्रह, पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – पुनर्वसु में रात ८:१४ बजे से रात्रिअंत ६:३५ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –आर्द्रा में सूर्योदय से रात ८:१४ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। पुनर्वसु में रात ८:१४ बजे से रात्रिअंत ६:३५ बजे तक वाहन क्रय, मुहूर्त हैं। (पुनर्वसु में गुरु युति।)

मार्गशीर्ष कृष्ण ६ चंद्र। १० नवम्बर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – पुनर्वसु में एवं पुष्य में सूर्योदय से रात १२:०७ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । पुष्य में सायं ६:५५ बजे से रात १२:०७ बजे तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – पुनर्वसु में एवं पुष्य में सूर्योदय से रात १२:०७ बजे तक जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध नहीं)।। पुष्य में सायं ६:५५ बजे से रात १२:०७ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , । {३} संस्कार मुहूर्त – पुनर्वसु में एवं पुष्य में सूर्योदय से रात १२:०७ बजे तक जातकर्म, नामकरण, कर्णवेध, । {४} कृषि मुहूर्त –पुनर्वसु में एवं पुष्य में सूर्योदय से रात १२:०७ बजे तक धान्य संग्रह, पशु क्रय विक्रय, । पुष्य में सायं ६:५५ बजे से रात १२:०७ बजे तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – पुनर्वसु में एवं पुष्य में सूर्योदय से रात १२:०७ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, पूंजी निवेश, । पुष्य में सायं ६:५५ बजे से रात १२:०७ बजे तक व्यापार प्रारंभ, । {६} विविध मुहुर्त –पुनर्वसु में एवं पुष्य में सूर्योदय से रात १२:०७ बजे तक वाहन क्रय, मुहूर्त हैं। पुष्य में सायं ६:५५ बजे से रात १२:०७ बजे तक राजसेवा, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। (पुनर्वसु में गुरु युति।)

मार्गशीर्ष कृष्ण ७ मंगल। ११ नवम्बर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर रात ११:१३ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति गुरु सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप रात ११:१३ से रातअंत । {२} वास्तु मुहुर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – पुष्य में भद्रा पश्चात्क्रांतिसाम्य से पहले, दिन ११:२९ बजे से दिन ३:४३ बजे तक सीमन्त पुंसवन, शल्यक्रिया ऑपरेशन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, (आव.),। {४} कृषि मुहूर्त –पुष्य में भद्रा पश्चात्क्रांतिसाम्य से पहले, दिन ११:२९ बजे से दिन ३:४३ बजे तक बीज बोवनी, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – पुष्य में भद्रा पश्चात्क्रांतिसाम्य से पहले, दिन ११:२९ बजे से दिन ३:४३ बजे तक पूंजी निवेश। {६} विविध मुहुर्त –पुष्य में भद्रा पश्चात्क्रांतिसाम्य से पहले, दिन ११:२९ बजे से दिन ३:४३ बजे तक यात्रा, मुहूर्त हैं। (क्रान्तिसाम्य दोष दिन ३:४३ से रात ८:०७ वजे तक। अश्लेषा में मंगल वेध,।)

मार्गशीर्ष कृष्ण ८ बुध। १२ नवम्बर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से रात ११:०१ तक। ग्रह मुख आहुति गुरु सूर्योदय से सायं ६:३९। राहु सायं ६:३९ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से रात ११:०१ तक। {२} वास्तु मुहूर्त – अश्लेषा में एवं मघा में सूर्योदय से रात १०:५५ बजे तक नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , । {३} संस्कार मुहूर्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त –अश्लेषा में एवं मघा में सूर्योदय से रात १०:५५ बजे तक नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में सा. ६:३९ तक, । मघा में सायं ६:३९ बजे से रात १०:५५ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, ईंधन स्थापन, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (अश्लेषा में भौम वेध ।)

मार्गशीर्ष कृष्ण ९ गुरु। १३ नवम्बर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अभाव। {२} वास्तु मुहूर्त – पू.फा. में रात ११:३२ बजे से रात्रिअंत ६:३७ बजे तक नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , । {३} संस्कार मुहूर्त – मघा में सूर्योदय से रात ७:४२ बजे तक पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –पू.फा. में रात ११:३२ बजे से रात्रिअंत ६:३७ बजे तक ईंधन स्थापन, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –पू.फा. में रात ११:३२ बजे से रात्रिअंत ६:३७ बजे तक संपत्ति क्रय, मुहूर्त हैं। (पू.फा. में केतु युति।)

मार्गशीर्ष कृष्ण १० शुक्र। १४ नवम्बर २०२५। पू.फा. में वैधृति, विष्कुंभ दोष। उ.फा. में भद्रा दोष वैधृति, विष्कुंभ दोष वैधृति, विष्कुंभ दोष मुहूर्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से रात १२:५४ तक। ग्रह मुख आहुति राहु सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर रात १२:५४ से रातअंत ।

मार्गशीर्ष कृष्ण ११ शनि। १५ नवम्बर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर रात २:४२ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति राहु सूर्योदय से रात ११:३९। केतु रात ११:३९ से रातअंत। शिववास कैलाश पर सूर्योदय से रात २:४२ तक। वृषारूढ रात २:४२ से रातअंत । {२} वास्तु मुहुर्त – उ.फा. में एवं हस्त में विष्कुंभ, प्रीति पश्चात, प्रात: ७:३९ बजे से रात्रिअंत ६:३९ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित (अग्निबाण १३:४९ से, त्यागकर), । {३} संस्कार मुहूर्त – उ.फा. में एवं हस्त में विष्कुंभ, प्रीति पश्चात, प्रात: ७:३९ बजे से रात्रिअंत ६:३९ बजे तक पुनर्विवाह, । हस्त में रात ११:३९ बजे से रात्रिअंत ६:३९ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, (आव.),। {४} कृषि मुहूर्त –उ.फा. में विष्कुंभ, प्रीति पश्चात, प्रात: ७:३९ बजे से रात ११:३९ बजे तक धान्य विक्रय, । हस्त में रात ११:३९ बजे से रात्रिअंत ६:३९ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –उ.फा. में विष्कुंभ, प्रीति पश्चात, प्रात: ७:३९ बजे से रात ११:३९ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। हस्त में रात ११:३९ बजे से रात्रिअंत ६:३९ बजे तक राजसेवा, मुहूर्त हैं।

मार्गशीर्ष कृष्ण १२ रवि। १६ नवम्बर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – शिववास वृषारूढ सूर्योदय से रात ४:५३ तक। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – हस्त में सूर्योदय से रात २:१६ बजे तक सीमन्त पुंसवन, । {४} कृषि मुहूर्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –हस्त में सूर्योदय से रात २:१६ बजे तक वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), मुहूर्त हैं। (चित्रा में शनि वेध,राहु वेध।)

मार्गशीर्ष कृष्ण १३ चंद्र। १७ नवम्बर २०२५। चित्रा में निर्बल चंद्र। स्वाती में निर्बल चंद्र दोष भद्रा दोष निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त अभाव।

मार्गशीर्ष कृष्ण १३ मंगल। १८ नवम्बर २०२५। स्वाती में निर्बल चंद्र। निर्बल चंद्र दोष विशाखा में निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त अभाव।

मार्गशीर्ष कृष्ण १४ बुध। १९ नवम्बर २०२५। स्वाती में निर्बल चंद्र। विशाखा में निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर दिन ९:४८ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति केतु सूर्योदय से दिन ८:०३। सूर्य दिन ८:०३ से रात ८:५८। केतु रात ८:५८ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप दिन ९:४८ से रातअंत ।

मार्गशीर्ष कृष्ण ३० गुरु। २० नवम्बर २०२५। विशाखा में निर्बल चंद्र। अनुराधा में अतिगंड दोष निर्बल चंद्र दोष निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति केतु सूर्योदय से दिन ११:०१। सूर्य दिन ११:०१ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से दिन १२:२० तक।

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

मार्गशीर्ष शुक्ल १ शुक्र। २१ नवम्बर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से दिन २:४८ तक। ग्रह मुख आहुति सूर्य सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप दिन २:४८ से रातअंत । ज्येष्ठा में निर्बल चंद्रकाल पश्चात दिन २:४८ बजे से रात्रिअंत ६:४३ बजे तक अग्न्याधान, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त –ज्येष्ठा में निर्बल चंद्रकाल पश्चात दिन २:४८ बजे से रात्रिअंत ६:४३ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – ज्येष्ठा में निर्बल चंद्रकाल पश्चात दिन २:४८ बजे से रात्रिअंत ६:४३ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (अनुराधा में सूर्य युति। ज्येष्ठा में मंगल युति।)

मार्गशीर्ष शुक्ल २ शनि। २२ नवम्बर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर सायं ५:१० से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति सूर्य सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से सायं ५:१० तक। {२} वास्तु मुहूर्त – मूल में दिन ४:४६ बजे से रात्रिअंत ६:४३ बजे तक नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , । {३} संस्कार मुहूर्त – मूल में दिन ४:४६ बजे से रात्रिअंत ६:४३ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, (आव.),। {४} कृषि मुहूर्त –ज्येष्ठा में सूर्योदय से दिन ४:४६ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । मूल में दिन ४:४६ बजे से रात्रिअंत ६:४३ बजे तक नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में दि. ४:४६ तक, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (मूल में गुरु वेध दिन ४:४६ वजे से रात ११:२७ वजे तक।ज्येष्ठा में मंगल युति।)

मार्गशीर्ष शुक्ल ३ रवि। २३ नवम्बर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अभाव। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – मूल में सूर्योदय से रात ७:२२ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, (आव.),कन्या वरण, । {४} कृषि मुहूर्त –मूल में सूर्योदय से रात ७:२२ बजे तक धान्य रोपण, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव।

मार्गशीर्ष शुक्ल ४ चंद्र। २४ नवम्बर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति बुध सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर रात ९:१९ से रातअंत । उ.षा. में रात ९:५० बजे से रात्रिअंत ६:४५ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, अग्न्याधान, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । {२} वास्तु मुहूर्त – पू.षा. में भद्रा से पहले रात ९:१९ बजे से रात ९:५० बजे तक नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , । उ.षा. में रात ९:५० बजे से रात्रिअंत ६:४५ बजे तक गृहछादन छत,, जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध नहीं)।। {३} संस्कार मुहूर्त – पू.षा. में भद्रा से पहले रात ९:१९ बजे से रात ९:५० बजे तक वर वरण, । उ.षा. में रात ९:५० बजे से रात्रिअंत ६:४५ बजे तक जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, मंत्र दीक्षा, द्विरागमन, । {४} कृषि मुहूर्त –पू.षा. में एवं उ.षा. में रात ९:१९ बजे से रात्रिअंत ६:४५ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, । उ.षा. में रात ९:५० बजे से रात्रिअंत ६:४५ बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य रोपण, धान्य संग्रह, धान्य विक्रय, ईंधन स्थापन, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – पू.षा. में भद्रा से पहले रात ९:१९ बजे से रात ९:५० बजे तक वैंक लॉकर खोलना, । उ.षा. में रात ९:५० बजे से रात्रिअंत ६:४५ बजे तक व्यापार प्रारंभ, धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । {६} विविध मुहुर्त –उ.षा. में रात ९:५० बजे से रात्रिअंत ६:४५ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं।

मार्गशीर्ष शुक्ल ५ मंगल। २५ नवम्बर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – शिववास कैलाश पर सूर्योदय से रात १०:५४ तक। वृषारूढ रात १०:५४ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – उ.षा. में सूर्योदय से रात ११:५५ बजे तक प्रसूति स्नान, वर वरण, । उ.षा. में एवं श्रवण में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:४५ बजे तक सीमन्त पुंसवन, पुनर्विवाह, । श्रवण में रात ११:५५ बजे से रात्रिअंत ६:४५ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, (आव.),। {४} कृषि मुहूर्त –उ.षा. में सूर्योदय से रात ११:५५ बजे तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – श्रवण में रात ११:५५ बजे से रात्रिअंत ६:४५ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –श्रवण में रात ११:५५ बजे से रात्रिअंत ६:४५ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त हैं। (क्रान्तिसाम्य दोष प्रातः ७:२४ से दिन ११:४८ वजे तक।)

मार्गशीर्ष शुक्ल ६ बुध। २६ नवम्बर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति बुध सूर्योदय से रात १:३१। शुक्र रात १:३१ से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से रात ११:६० तक। श्रवण में एवं धनिष्ठा में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:४६ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – श्रवण में सूर्योदय से रात १:३१ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध , । श्रवण में एवं धनिष्ठा में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:४६ बजे तक जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।। {३} संस्कार मुहूर्त – श्रवण में सूर्योदय से रात १२:०२ बजे तक कन्या वरण, । श्रवण में रात १२:०२ बजे से रात १:३१ बजे तक अन्नप्राशन, । श्रवण में एवं धनिष्ठा में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:४६ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, (आव.),जातकर्म, नामकरण, कर्णवेध, द्विरागमन, पुनर्विवाह, । धनिष्ठा में रात १:३१ बजे से रात्रिअंत ६:४६ बजे तक मंत्र दीक्षा, । {४} कृषि मुहूर्त –श्रवण में एवं धनिष्ठा में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:४६ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, ईंधन स्थापन, । श्रवण में एवं धनिष्ठा में रात १२:०२ बजे से रात्रिअंत ६:४६ बजे तक हल प्रवहण जुताई, । धनिष्ठा में रात १:३१ बजे से रात्रिअंत ६:४६ बजे तक धान्य विक्रय, पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – श्रवण में रात १२:०२ बजे से रात १:३१ बजे तक पूंजी निवेश, । श्रवण में एवं धनिष्ठा में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:४६ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । श्रवण में एवं धनिष्ठा में रात १२:०२ बजे से रात्रिअंत ६:४६ बजे तक धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, । धनिष्ठा में रात १:३१ बजे से रात्रिअंत ६:४६ बजे तक वैंक लॉकर खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –श्रवण में सूर्योदय से रात १:३१ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, वाहन क्रय, मुहूर्त हैं। श्रवण में एवं धनिष्ठा में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:४६ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। श्रवण में एवं धनिष्ठा में रात १२:०२ बजे से रात्रिअंत ६:४६ बजे तक यात्रा, मुहूर्त हैं। धनिष्ठा में रात १:३१ बजे से रात्रिअंत ६:४६ बजे तक नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त हैं।

मार्गशीर्ष शुक्ल ७ गुरु। २७ नवम्बर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – धनिष्ठा में सूर्योदय से रात १२:३१ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – धनिष्ठा में सूर्योदय से रात १२:३१ बजे तक जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।। {३} संस्कार मुहूर्त – धनिष्ठा में सूर्योदय से रात १२:३१ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, (आव.),जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, कर्णवेध, मंत्र दीक्षा, कन्या वरण, द्विरागमन, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –धनिष्ठा में सूर्योदय से रात १२:३१ बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, धान्य विक्रय, ईंधन स्थापन, पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – धनिष्ठा में सूर्योदय से रात १२:३१ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, वैंक लॉकर खोलना, धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश। {६} विविध मुहुर्त –धनिष्ठा में सूर्योदय से रात १२:३१ बजे तक यात्रा, नवीन वस्त्र–आभूषण, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। (शतभिषा में राहु युति।)

मार्गशीर्ष शुक्ल ८ शुक्र। २८ नवम्बर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति शुक्र सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप रात १२:१३ से रातअंत । शतभिषा में भद्रा पश्चात् दिन १२:३० बजे से रात १२:१७ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – शतभिषा में भद्रा पश्चात् दिन १२:३० बजे से रात १२:१७ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध (अग्निबाण १०:४५ तक, त्यागकर), जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।। {३} संस्कार मुहूर्त – शतभिषा में भद्रा पश्चात् दिन १२:३० बजे से रात १२:१७ बजे तक मंत्र दीक्षा, जैन विद्यारंभ । शतभिषा में भद्रा पश्चात् दिन १२:३० बजे से रात २:४९ बजे तक जातकर्म, नामकरण, द्विरागमन, । {४} कृषि मुहूर्त –शतभिषा में भद्रा पश्चात् दिन १२:३० बजे से रात १२:१७ बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य संग्रह, ईंधन स्थापन, । शतभिषा में भद्रा पश्चात् दिन १२:३० बजे से रात २:४९ बजे तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – शतभिषा में भद्रा पश्चात् दिन १२:३० बजे से रात १२:१७ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –शतभिषा में भद्रा पश्चात् दिन १२:३० बजे से रात १२:१७ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त हैं। (शतभिषा में राहु युति। पू.भा. में शनि युति।)

मार्गशीर्ष शुक्ल ९ शनि। २९ नवम्बर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से रात ११:११ तक। उ.भा. में रात २:२० बजे से रात्रिअंत ६:४८ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, । {२} वास्तु मुहूर्त – उ.भा. में रात २:२० बजे से रात्रिअंत ६:४८ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध , । {३} संस्कार मुहूर्त – उ.भा. में रात २:२० बजे से रात्रिअंत ६:४८ बजे तक पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –उ.भा. में रात २:२० बजे से रात्रिअंत ६:४८ बजे तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –उ.भा. में रात २:२० बजे से रात्रिअंत ६:४८ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। (पू.भा. में शनि युति।)

मार्गशीर्ष शुक्ल १० रवि। ३० नवम्बर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – उ.भा. में एवं रेवती में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:४९ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । रेवती में रात १:०६ बजे से रात्रिअंत ६:४९ बजे तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – उ.भा. में सूर्योदय से रात ९:२८ बजे तक अन्नप्राशन, कन्या वरण, । उ.भा. में सूर्योदय से रात १:०६ बजे तक वर वरण, । उ.भा. में एवं रेवती में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:४९ बजे तक सीमन्त पुंसवन, प्रसूति स्नान, पुनर्विवाह, । रेवती में रात १:०६ बजे से रात्रिअंत ६:४९ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, (आव.),जैन विद्यारंभ । {४} कृषि मुहूर्त –उ.भा. में सूर्योदय से रात १:०६ बजे तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य विक्रय, । उ.भा. में एवं रेवती में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:४९ बजे तक धान्य संग्रह, । रेवती में रात १:०६ बजे से रात्रिअंत ६:४९ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – रेवती में रात १:०६

बजे से रात्रिअंत ६:४९ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –उ.भा. में सूर्योदय से रात १:०६ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। रेवती में रात १:०६ बजे से रात्रिअंत ६:४९ बजे तक यात्रा, सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त हैं।

मार्गशीर्ष शुक्ल ११ चंद्र। १ दिसम्बर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर सायं ६:५३ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति शनि सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर सायं ६:५३ से रातअंत । अश्विनी में व्यतिपात पश्चात रात १२:५३ बजे से रात्रिअंत ६:४९ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अश्विनी में व्यतिपात पश्चात रात १२:५३ बजे से रात्रिअंत ६:४९ बजे तक जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।। {३} संस्कार मुहूर्त – अश्विनी में व्यतिपात पश्चात रात १२:५३ बजे से रात्रिअंत ६:४९ बजे तक जातकर्म, नामकरण, कर्णवेध, द्विरागमन, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –अश्विनी में व्यतिपात पश्चात रात १२:५३ बजे से रात्रिअंत ६:४९ बजे तक धान्य रोपण, धान्य संग्रह, ईंधन स्थापन, पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अश्विनी में व्यतिपात पश्चात रात १२:५३ बजे से रात्रिअंत ६:४९ बजे तक व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –अश्विनी में व्यतिपात पश्चात रात १२:५३ बजे से रात्रिअंत ६:४९ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), राजसेवा, मुहूर्त हैं। (अश्विनी में केतु वेध, ।)

मार्गशीर्ष शुक्ल १२ मंगल। २ दिसम्बर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से दिन ३:५० तक। ग्रह मुख आहुति शनि सूर्योदय से रात ८:४५। चंद्र रात ८:४५ से रात १:१७। शनि रात १:१७ से रातअंत। शिववास कैलाश पर सूर्योदय से दिन ३:५० तक। वृषारूढ दिन ३:५० से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – अश्विनी में सूर्योदय से रात ८:४५ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, प्रसूति स्नान, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, (आव.),पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अश्विनी में सूर्योदय से रात ८:४५ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –अश्विनी में सूर्योदय से रात ८:४५ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त हैं। अश्विनी में दिन ३:५३ बजे से रात ८:४५ बजे तक यात्रा, मुहूर्त हैं। (अश्विनी में केतु वेध, ।)

मार्गशीर्ष शुक्ल १३ बुध। ३ दिसम्बर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिन १२:२२ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति शनि सूर्योदय से सायं ५:५५। चंद्र सायं ५:५५ से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से दिन १२:२२ तक। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त –भरणी में परिघ पश्चात, प्रातः ७:०२ बजे से दिन १२:२२ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, ईंधन स्थापन, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (भरणी में शुक्रवेध प्रातः ७:२५ वजे से दिन १२:४० वजे तक।)

मार्गशीर्ष शुक्ल १४ गुरु। ४ दिसम्बर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – रोहिणी में भद्रा पश्चात् सायं ६:३९ बजे से रात्रिअंत ४:५२ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, अग्न्याधान, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । {२} वास्तु मुहूर्त – रोहिणी में भद्रा पश्चात् सायं ६:३९ बजे से रात्रिअंत ४:५२ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध , गृहछादन छत,, जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।। {३} संस्कार मुहूर्त – रोहिणी में भद्रा पश्चात् सायं ६:३९ बजे से रात्रिअंत ४:५२ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, प्रसूति स्नान, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, द्विरागमन, । {४} कृषि मुहूर्त –रोहिणी में भद्रा पश्चात् सायं ६:३९ बजे से रात्रिअंत ४:५२ बजे तक धान्य रोपण, धान्य संग्रह, धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – रोहिणी में भद्रा पश्चात् सायं ६:३९ बजे से रात्रिअंत ४:५२ बजे तक व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, वैंक लॉकर खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –रोहिणी में भद्रा पश्चात् सायं ६:३९ बजे से रात्रिअंत ४:५२ बजे तक नवीन वस्त्र–आभूषण, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं।

पौष कृष्ण पक्ष

पौष कृष्ण १ शुक्र। ५ दिसम्वर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति चंद्र सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से रात १:०१ तक। रोहिणी में एवं मृगशिर में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:५२ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, । मृगशिर में दिन ११:५० बजे से रात्रिअंत ६:५२ बजे तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । मृगशिर में रात १२:५८ बजे से रात्रिअंत ६:५२ बजे तक अग्न्याधान, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – रोहिणी में सूर्योदय से दिन ११:५० बजे तक कन्या वरण, वर वरण, । रोहिणी में एवं मृगशिर में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:५२ बजे तक जातकर्म, नामकरण, द्विरागमन, । मृगशिर में रात १२:५८ बजे से रात्रिअंत ६:५२ बजे तक अन्नप्राशन, मंत्र दीक्षा, । {४} कृषि मुहूर्त –रोहिणी में सूर्योदय से दिन ११:५० बजे तक धान्य विक्रय। मृगशिर में दिन ११:५० बजे से रात्रिअंत ६:५२ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, । मृगशिर में रात १२:५८ बजे से रात्रिअंत ६:५२ बजे तक धान्य रोपण, धान्य संग्रह, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – रोहिणी में सूर्योदय से दिन ११:५० बजे तक व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), वैंक लॉकर खोलना, । मृगशिर में दिन ११:५० बजे से रात्रिअंत ६:५२ बजे तक धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –रोहिणी में सूर्योदय से दिन ११:५० बजे तक नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त हैं। मृगशिर में दिन ११:५० बजे से रात्रिअंत ६:५२ बजे तक यात्रा, वाहन क्रय, राजसेवा, मुहूर्त हैं। मृगशिर में दिन ११:५० बजे से रात १२:५८ बजे तक संपत्ति क्रय, मुहूर्त हैं।

पौष कृष्ण २ शनि। ६ दिसम्वर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – मृगशिर में सूर्योदय से प्रातः ८:५४ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – मृगशिर में सूर्योदय से प्रातः ८:५४ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । {४} कृषि मुहूर्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – मृगशिर में सूर्योदय से प्रातः ८:५४ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –मृगशिर में सूर्योदय से प्रातः ८:५४ बजे तक यात्रा, राजसेवा, मुहूर्त हैं। आर्द्रा मेंक्रांतिसाम्य से पहले, प्रातः ८:५४ बजे से रात्रिअंत ५:११ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। (क्रान्तिसाम्य दोष रात ५:११ से रातअंत वजे तक। पुनर्वसु में गुरु युति।)

पौष कृष्ण ३ रवि। ७ दिसम्वर २०२५। मुहूर्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से सायं ६:३७ तक। ग्रह मुख आहुति मंगल सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर सायं ६:३७ से रातअंत ।

पौष कृष्ण ४ चंद्र। ८ दिसम्वर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिन ४:१६ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति मंगल सूर्योदय से रात ३:०१। गुरु रात ३:०१ से रातअंत। शिववास कैलाश पर सूर्योदय से दिन ४:१६ तक। वृषारूढ दिन ४:१६ से रातअंत । पुष्य में दिन ४:०८ बजे से रात ३:०१ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, अग्न्याधान, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – पुष्य में दिन ४:०८ बजे से रात ३:०१ बजे तक गृहछादन छत,, । {३} संस्कार मुहूर्त – पुष्य में दिन ४:०८ बजे से रात ३:०१ बजे तक जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, मंत्र दीक्षा, द्विरागमन, । {४} कृषि मुहूर्त –पुष्य में दिन ४:०८ बजे से रात ३:०१ बजे तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – पुष्य में दिन ४:०८ बजे से रात ३:०१ बजे तक व्यापार प्रारंभ, धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –पुष्य में दिन ४:०८ बजे से रात ३:०१ बजे तक यात्रा, वाहन क्रय, राजसेवा, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। (पुष्य में सूर्य वेध ।)

पौष कृष्ण ५ मंगल। ९ दिसम्वर २०२५। मघा में वैधृति दोष मुहूर्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से दिन २:४० तक। ग्रह मुख आहुति गुरु सूर्योदय से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से दिन २:४० तक।

पौष कृष्ण ६ बुध। १० दिसम्वर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अभाव। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त –मघा में रात १:४४ बजे से रात २:४९ बजे तक बीज बोवनी, धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (पू.फा. में केतु युति।)

पौष कृष्ण ७ गुरु। ११ दिसम्वर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से दिन २:०४ तक। ग्रह मुख आहुति गुरु सूर्योदय से रात ३:५८। राहु रात ३:५८ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप दिन २:०४ से रातअंत । उ.फा. में रात ३:५८ बजे से रात्रिअंत ६:५६ बजे तक अग्न्याधान, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । {२} वास्तु मुहूर्त – उ.फा. में रात ३:५८ बजे से रात्रिअंत ६:५६ बजे तक गृहछादन छत,, । {३} संस्कार मुहूर्त – पू.फा. में सूर्योदय से दिन १:५७ बजे तक कन्या वरण, । पू.फा. में सूर्योदय से रात ३:५८ बजे तक वर वरण, । उ.फा. में रात ३:५८ बजे से रात्रिअंत ६:५६ बजे तक सीमन्त पुंसवन, प्रसूति स्नान, जातकर्म, नामकरण, मंत्र दीक्षा, द्विरागमन, । {४} कृषि मुहूर्त –उ.फा. में रात ३:५८ बजे से रात्रिअंत ६:५६ बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, धान्य विक्रय, ईंधन स्थापन, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – उ.फा. में रात ३:५८ बजे से रात्रिअंत ६:५६ बजे तक व्यापार प्रारंभ, धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । {६} विविध मुहुर्त –उ.फा. में रात ३:५८ बजे से रात्रिअंत ६:५६ बजे तक नवीन वस्त्र–आभूषण, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। (पू.फा. में केतु युति।)

पौष कृष्ण ८ शुक्र। १२ दिसम्वर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिन ३:०२ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति राहु सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से दिन ३:०२ तक। उ.फा. में सूर्योदय से दिन २:५६ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान। उ.फा. में सूर्योदय से रात ५:५२ बजे तक अग्न्याधान, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – उ.फा. में सूर्योदय से दिन २:५६ बजे तक मंत्र दीक्षा, कन्या वरण, वर वरण, । उ.फा. में एवं हस्त में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:५७ बजे तक जातकर्म, नामकरण, द्विरागमन, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –उ.फा. में सूर्योदय से दिन २:५६ बजे तक हल प्रवहण जुताई, बीज बोवनी, धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, ईंधन स्थापन, । उ.फा. में सूर्योदय से रात ५:५२ बजे तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – उ.फा. में सूर्योदय से दिन २:५६ बजे तक व्यापार प्रारंभ, धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, वैंक लॉकर खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –उ.फा. में

सूर्योदय से दिन २:५६ बजे तक नवीन वस्त्र–आभूषण, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं।

पौष कृष्ण ९ शनि। १३ दिसम्बर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अभाव। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – हस्त में दिन ४:३८ बजे से रात ५:३९ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । हस्त में सूर्योदय से रात ५:३९ बजे तक पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –हस्त में दिन ४:३८ बजे से रात ५:३९ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –हस्त में दिन ४:३८ बजे से रात ५:३९ बजे तक यात्रा, राजसेवा, मुहूर्त हैं।

पौष कृष्ण १० रवि। १४ दिसम्बर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति राहु सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर सायं ६:५४ से रातअंत । चित्रा में सायं ६:५१ बजे से रात्रिअंत ६:५८ बजे तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – चित्रा में सायं ६:५१ बजे से रात्रिअंत ६:५८ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –चित्रा में सायं ६:५१ बजे से रात्रिअंत ६:५८ बजे तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – चित्रा में सायं ६:५१ बजे से रात्रिअंत ६:५८ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –चित्रा में सायं ६:५१ बजे से रात्रिअंत ६:५८ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, वाहन क्रय, मुहूर्त हैं। (चित्रा में शनि वेध,।)

पौष कृष्ण ११ चंद्र। १५ दिसम्बर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – शिववास कैलाश पर सूर्योदय से रात ९:२४ तक। वृषारूढ रात ९:२४ से रात. अंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:५८ बजे तक वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), मुहूर्त हैं। (चित्रा में शनि वेध। स्वाती में राहु वेध, ।)

पौष कृष्ण १२ मंगल। १६ दिसम्बर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति राहु सूर्योदय से दिन २:१३। केतु दिन २:१३ से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से रात १२:०१ तक। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – स्वाती में सूर्योदय से दिन २:१३ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, प्रसूति स्नान, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –स्वाती में सूर्योदय से दिन २:१३ बजे तक बीज बोवनी, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – स्वाती में एवं विशाखा में सूर्योदय से रात ११:६० बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –स्वाती में सूर्योदय से दिन २:१३ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त हैं। (स्वाती में राहु वेध, ।)

पौष कृष्ण १३ बुध। १७ दिसम्बर २०२५। विशाखा में निर्बल चंद्र। अनुराधा में निर्बल चंद्र दोष भद्रा दोष निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त अभाव।

पौष कृष्ण १४ गुरु। १८ दिसम्बर २०२५। अनुराधा में निर्बल चंद्र। ज्येष्ठा में निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति केतु सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप रात ५:०१ से रातअंत ।

पौष कृष्ण ३० शुक्र। १९ दिसम्बर २०२५। ज्येष्ठा में निर्बल चंद्र। मूल में निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर रात ७:१४ से रात. अंत तक। ग्रह मुख आहुति केतु सूर्योदय से रात १०:५१। सूर्य रात १०:५१ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से रात ७:१४ तक।

पौष कृष्ण ३० शनि। २० दिसम्बर २०२५। मूल में निर्बल चंद्र। निर्बल चंद्र दोष पू.षा. में निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त अभाव। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से प्रातः ७:१४ तक।

पौष शुक्ल पक्ष

पौष शुक्ल १ रवि। २१ दिसम्बर २०२५। पू.षा. में निर्बल चंद्र। मुहूर्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति सूर्य सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप दिन ९:१० से रातअंत ।

पौष शुक्ल २ चंद्र। २२ दिसम्बर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से दिन १०:४८ तक। उ.षा. में सूर्योदय से रात ५:२८ बजे तक अग्न्याधान, । उ.षा. में एवं श्रवण में सूर्योदय से रात्रिअंत ७:०२ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । श्रवण में रात ५:२८ बजे से रात्रिअंत ७:०२ बजे तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – उ.षा. में एवं श्रवण में दिन १०:४७ बजे से रात्रिअंत ७:०२ बजे तक गृहछादन छत,, । {३} संस्कार मुहूर्त – उ.षा. में सूर्योदय से रात ५:२८ बजे तक अन्नप्राशन, । उ.षा. में एवं श्रवण में सूर्योदय से रात्रिअंत ७:०२ बजे तक जातकर्म, नामकरण, । {४} कृषि मुहूर्त –उ.षा. में सूर्योदय से रात ५:२८ बजे तक धान्य रोपण, धान्य विक्रय, । उ.षा. में एवं श्रवण में सूर्योदय से रात्रिअंत ७:०२ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, । श्रवण में रात ५:२८ बजे से रात्रिअंत ७:०२ बजे तक हल प्रवहण जुताई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – उ.षा. में एवं श्रवण में सूर्योदय से रात्रिअंत ७:०२ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । श्रवण में रात ५:२८ बजे से रात्रिअंत ७:०२ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –उ.षा. में एवं श्रवण में सूर्योदय से रात्रिअंत ७:०२ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। श्रवण में रात ५:२८ बजे से रात्रिअंत ७:०२ बजे तक यात्रा, मुहूर्त हैं।

पौष शुक्ल ३ मंगल। २३ दिसम्बर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अभाव। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – श्रवण में सूर्योदय से दिन १२:०७ बजे तक सीमन्त पुंसवन, शल्यक्रिया ऑपरेशन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । {४} कृषि मुहूर्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – श्रवण में सूर्योदय से दिन १२:०७ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –श्रवण में सूर्योदय से दिन १२:०७ बजे तक यात्रा, सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त हैं।

पौष शुक्ल ४ बुध। २४ दिसम्बर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – शिववास कैलाश पर दिन १:०५ से रातअंत । धनिष्ठा में दिन १:०६ बजे से रात्रिअंत ७:०३ बजे तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – धनिष्ठा में दिन १:०६ बजे से रात्रिअंत ७:०३ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, मंत्र दीक्षा, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –धनिष्ठा में दिन १:०६ बजे से रात्रिअंत ७:०३ बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य छेदन, कटाई, धान्य विक्रय, ईंधन स्थापन, पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – धनिष्ठा में दिन १:०६ बजे से रात्रिअंत ७:०३ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, वैंक लॉकर खोलना, धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –धनिष्ठा में दिन १:०६ बजे से रात्रिअंत ७:०३ बजे तक यात्रा, नवीन वस्त्र–आभूषण, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं।

पौष शुक्ल ५ गुरु। २५ दिसम्बर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति बुध सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर सूर्योदय से दिन १:३८ तक। वृषारूढ दिन १:३८ से रातअंत । धनिष्ठा में एवं शतभिषा में सूर्योदय से रात्रिअंत ७:०३ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – धनिष्ठा में सूर्योदय से प्रातः ८:१६ बजे तक मंत्र दीक्षा, पुनर्विवाह, । धनिष्ठा में एवं शतभिषा में सूर्योदय से रात्रिअंत ७:०३ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, जातकर्म, नामकरण, । धनिष्ठा में एवं शतभिषा में सूर्योदय से दिन १:४० बजे तक अन्नप्राशन, । शतभिषा में प्रातः ८:१६ बजे से रात्रिअंत ७:०३ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, । {४} कृषि मुहूर्त –धनिष्ठा में सूर्योदय से प्रातः ८:१६ बजे तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, । धनिष्ठा में एवं शतभिषा में सूर्योदय से रात्रिअंत ७:०३ बजे तक धान्य संग्रह, धान्य विक्रय, ईंधन स्थापन, पशु क्रय विक्रय, । धनिष्ठा में एवं शतभिषा में सूर्योदय से दिन १:४० बजे तक हल प्रवहण जुताई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – धनिष्ठा में सूर्योदय से प्रातः ८:१६ बजे तक वैंक लॉकर खोलना, । धनिष्ठा में एवं शतभिषा में सूर्योदय से रात्रिअंत ७:०३ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, पूंजी निवेश, । धनिष्ठा में एवं शतभिषा में सूर्योदय से दिन १:४० बजे तक धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –धनिष्ठा में सूर्योदय से प्रातः ८:१६ बजे तक यात्रा, नवीन वस्त्र–आभूषण, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। शतभिषा में प्रातः ८:१६ बजे से रात्रिअंत ७:०३ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त हैं। (शतभिषा में राहु युति।)

पौष शुक्ल ६ शुक्र। २६ दिसम्बर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – शिववास वृषारूढ सूर्योदय से दिन १:४१ तक। शतभिषा में सूर्योदय से प्रातः ८:६० बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – शतभिषा में सूर्योदय से प्रातः ८:६० बजे तक जातकर्म, नामकरण, । शतभिषा में एवं पू.भा. में व्यतिपात से पहले सूर्योदय से दिन १:५९ बजे तक जैन विद्यारंभ । पू.भा. में व्यतिपात से पहले प्रातः ८:६० बजे से दिन १:५९ बजे तक मंत्र दीक्षा, । {४} कृषि मुहूर्त –शतभिषा में सूर्योदय से प्रातः ८:६० बजे तक धान्य संग्रह, धान्य विक्रय, पशु क्रय विक्रय, । शतभिषा में एवं पू.भा. में व्यतिपात से पहले सूर्योदय से दिन १:५९ बजे तक ईंधन स्थापन, । पू.भा. में व्यतिपात से पहले प्रातः ८:६० बजे से दिन १:५९ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – शतभिषा में सूर्योदय से प्रातः ८:६० बजे तक पूंजी निवेश, । शतभिषा में एवं पू.भा. में व्यतिपात से पहले सूर्योदय से दिन १:५९ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । {६} विविध मुहुर्त –शतभिषा में सूर्योदय से प्रातः ८:६० बजे तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त हैं। पू.भा. में प्रातः ८:६० बजे से दिन १:४३ बजे तक संपत्ति क्रय, मुहूर्त हैं। (शतभिषा में राहु युति। पू.भा. में शनि युति।)

पौष शुक्ल ७ शनि। २७ दिसम्बर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अभाव। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – उ.भा. में व्यतिपात पश्चात भद्रा पश्चात्दिन १२:२१ बजे से दिन १:१२ बजे एवं रात १२:४१ बजे से रात्रिअंत ७:०४ बजे तक पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –उ.भा. में व्यतिपात पश्चात भद्रा पश्चात्दिन १२:२१ बजे से दिन १:१२ बजे एवं रात १२:४१ बजे से रात्रिअंत ७:०४ बजे तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –उ.भा. में व्यतिपात पश्चात भद्रा पश्चात्दिन १२:२१ बजे से दिन १:१२ बजे एवं रात १२:४१ बजे से रात्रिअंत ७:०४ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। (पू.भा. में शनि युति।)

पौष शुक्ल ८ रवि। २८ दिसम्वर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिन १२:०० से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति शुक्र सूर्योदय से रात ६:३३। शुक्र रात ६:३३ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप दिन १२:०० से रातअंत । उ.भा. में एवं रेवती में परिघ से पहले सूर्योदय से दिन १०:१५ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । रेवती में परिघ से पहले प्रात: ८:४६ बजे से दिन १०:१५ बजे तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – उ.भा. में एवं रेवती में परिघ से पहले परिघ पश्चात सूर्योदय से दिन १०:१५ बजे तक प्रसूति स्नान, पुनर्विवाह, । उ.भा. में एवं रेवती में परिघ से पहले सूर्योदय से दिन १०:१५ बजे तक सीमन्त पुंसवन, । रेवती में परिघ से पहले प्रात: ८:४६ बजे से दिन १०:१५ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, जैन विद्यारंभ । {४} कृषि मुहूर्त –उ.भा. में सूर्योदय से प्रात: ८:४६ बजे तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य विक्रय, । उ.भा. में एवं रेवती में परिघ से पहले सूर्योदय से दिन १०:१५ बजे तक धान्य संग्रह, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – रेवती में परिघ से पहले प्रात: ८:४६ बजे से दिन १०:१५ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –उ.भा. में सूर्योदय से प्रात: ८:४६ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। रेवती में परिघ से पहले प्रात: ८:४६ बजे से दिन १०:१५ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त हैं।

पौष शुक्ल ९ चंद्र। २९ दिसम्वर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से दिन १०:१३ तक। ग्रह मुख आहुति शुक्र सूर्योदय से रात ६:०५। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से दिन १०:१३ तक। अश्विनी में दिन १०:१४ बजे से रात्रिअंत ५:३३ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – रेवती में एवं अश्विनी में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:३३ बजे तक पुनर्विवाह, । अश्विनी में दिन १०:१४ बजे से रात्रिअंत ५:३३ बजे तक अन्नप्राशन, अक्षरारंभ, स्कूल प्रवेश, । {४} कृषि मुहूर्त –अश्विनी में दिन १०:१४ बजे से रात्रिअंत ५:३३ बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य रोपण, धान्य संग्रह, ईंधन स्थापन, पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अश्विनी में दिन १०:१४ बजे से रात्रिअंत ५:३३ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –अश्विनी में दिन १०:१४ बजे से रात्रिअंत ५:३३ बजे तक यात्रा, सर्व वस्तु क्रय, वाहन क्रय, राजसेवा, मुहूर्त हैं। (अश्विनी में केतु वेध, ।)

पौष शुक्ल १० मंगल। ३० दिसम्वर २०२५। कृतिका में भद्रा दोष मुहूर्त अभाव।

पौष शुक्ल १२ बुध। ३१ दिसम्वर २०२५। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – शिववास कैलाश पर सूर्योदय से रात १:४४ तक। वृषारूढ रात १:४४ से रात. अंत । कृतिका में एवं रोहिणी में सूर्योदय से रात्रिअंत ७:०५ बजे तक अग्न्याधान, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – रोहिणी में रात १:२६ बजे से रात्रिअंत ७:०५ बजे तक जातकर्म, नामकरण, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –कृतिका में सूर्योदय से रात १:२६ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, । कृतिका में एवं रोहिणी में सूर्योदय से रात्रिअंत ७:०५ बजे तक ईंधन स्थापन, । रोहिणी में रात १:२६ बजे से रात्रिअंत ७:०५ बजे तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – रोहिणी में रात १:२६ बजे से रात्रिअंत ७:०५ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, वैंक लॉकर खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –रोहिणी में रात १:२६ बजे से रात्रिअंत ७:०५ बजे तक नवीन वस्त्र–आभूषण, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं।

पौष शुक्ल १३ गुरु। १ जनवरी २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति शनि सूर्योदय से रात १०:४५। चंद्र रात १०:४५ से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से रात १०:१९ तक। रोहिणी में सूर्योदय से रात १०:१८ बजे तक अग्न्याधान, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – रोहिणी में सूर्योदय से रात १०:१८ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, प्रसूति स्नान, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, । रोहिणी में सूर्योदय से रात १०:१८ बजे एवं मृगशिर मेंरात २:२८ बजे से रात्रिअंत ७:०६ बजे तक पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –रोहिणी में सूर्योदय से रात १०:१८ बजे तक धान्य रोपण, धान्य संग्रह, धान्य विक्रय, ईंधन स्थापन, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – रोहिणी में सूर्योदय से रात १०:१८ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, वैंक लॉकर खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –रोहिणी में सूर्योदय से रात १०:१८ बजे तक नवीन वस्त्र–आभूषण, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। (क्रान्तिसाम्य दोष रात १०:२७ से रात २:२८ वजे तक।)

पौष शुक्ल १४ शुक्र। २ जनवरी २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अभाव। {२} वास्तु मुहूर्त – आर्द्रा में भद्रा पश्चात् रात ५:०८ बजे से रात्रिअंत ७:०६ बजे तक गृहछादन छत,, । {३} संस्कार मुहूर्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –आर्द्रा में भद्रा पश्चात् रात ५:०८ बजे से रात्रिअंत ७:०६ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। (आर्द्रा में सूर्य वेध,मंगल वेध,।)

पौष शुक्ल १५ शनि। ३ जनवरी २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति चंद्र सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप दिन ३:३६ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – पुनर्वसु में सायं ५:३१ बजे से रात्रिअंत ७:०६ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । {४} कृषि मुहूर्त –पुनर्वसु में सायं ५:३१ बजे से रात्रिअंत ७:०६ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – पुनर्वसु में सायं ५:३१ बजे से रात्रिअंत ७:०६ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –आर्द्रा में सूर्योदय से दिन ३:३१ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। पुनर्वसु में सायं ५:३१ बजे से रात्रिअंत ७:०६ बजे तक यात्रा, मुहूर्त हैं। (आर्द्रा में सूर्य वेध भौम वेध । आर्द्रा में शुक्रवेध ७:०६ से दिन १२:०७ वजे तक।पुनर्वसु में बुधवेध रात १०:५५ वजे से रातअंत ४:१९ वजे तक।पुनर्वसु में गुरु युति।)

माघ कृष्ण पक्ष

माघ कृष्ण १ रवि। ४ जनवरी २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिन १२:३६ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति चंद्र सूर्योदय से दिन ३:१७। मंगल दिन ३:१७ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से दिन १२:३६ तक। पुष्य में वैधृति, विष्कुंभ पश्चात रात १:५३ बजे से रात्रिअंत ७:०७ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – पुष्य में वैधृति, विष्कुंभ पश्चात रात १:५३ बजे से रात्रिअंत ७:०७ बजे तक गृहछादन छत, (अग्निबाण १९:३३ से, त्यागकर), । {३} संस्कार मुहूर्त – पुष्य में वैधृति, विष्कुंभ पश्चात रात १:५३ बजे से रात्रिअंत ७:०७ बजे तक सीमन्त पुंसवन, शल्यक्रिया ऑपरेशन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, अन्नप्राशन, अक्षरारंभ, स्कूल प्रवेश, । {४} कृषि मुहूर्त –पुष्य में वैधृति, विष्कुंभ पश्चात रात १:५३ बजे से रात्रिअंत ७:०७ बजे तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – पुष्य में वैधृति, विष्कुंभ पश्चात रात १:५३ बजे से रात्रिअंत ७:०७ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –पुष्य में वैधृति, विष्कुंभ पश्चात रात १:५३ बजे से रात्रिअंत ७:०७ बजे तक यात्रा, वाहन क्रय, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। (पुनर्वसु में गुरु युति।)

माघ कृष्ण २ चंद्र। ५ जनवरी २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – पुष्य में सूर्योदय से दिन १:३३ बजे तक अग्न्याधान, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – पुष्य में प्रात: ९:५९ बजे से दिन १:३३ बजे तक गृहछादन छत, (अग्निबाण १९:०६ तक, त्यागकर), । {३} संस्कार मुहूर्त – पुष्य में सूर्योदय से दिन १:३३ बजे तक जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, कर्णवेध, अक्षरारंभ, स्कूल प्रवेश, । {४} कृषि मुहूर्त –पुष्य में सूर्योदय से दिन १:३३ बजे तक बीज बोवनी, धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, पशु क्रय विक्रय, । अश्लेषा में भद्रा से पहले दिन १:३३ बजे से रात्रि ९:०० बजे तक नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में दिनरात, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – पुष्य में सूर्योदय से दिन १:३३ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –पुष्य में सूर्योदय से दिन १:३३ बजे तक यात्रा, वाहन क्रय, राजसेवा, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं।

माघ कृष्ण ३ मंगल। ६ जनवरी २०२६। अश्लेषा में भद्रा दोष। मुहूर्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर दिन ८:०८ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति मंगल सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर दिन ८:०८ से रातअंत ।

माघ कृष्ण ५ बुध। ७ जनवरी २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – शिववास वृषारूढ सूर्योदय से रात ६:४० तक। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त –मघा में सूर्योदय से दिन १२:०५ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (पू.फा. में केतु युति।)

माघ कृष्ण ६ गुरु। ८ जनवरी २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – उ.फा. में दिन १२:३३ बजे से रात ७:०७ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – उ.फा. में दिन १२:३३ बजे से रात ७:०७ बजे तक प्रसूति स्नान, जातकर्म, नामकरण। {४} कृषि मुहूर्त –उ.फा. में दिन १२:३३ बजे से रात ७:०७ बजे तक बीज बोवनी, धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – उ.फा. में दिन १२:३३ बजे से रात ७:०७ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, वैंक लॉकर खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –पू.फा. में सूर्योदय से दिन १२:३३ बजे तक संपत्ति क्रय, मुहूर्त हैं। उ.फा. में दिन १२:३३ बजे से रात ७:०७ बजे तक नवीन वस्त्र–आभूषण, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। (पू.फा. में केतु युति।)

माघ कृष्ण ६ शुक्र। ९ जनवरी २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – हस्त में भद्रा पश्चात् रात ७:४७ बजे से रात्रिअंत ७:०७ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – हस्त में भद्रा पश्चात् रात ७:४७ बजे से रात्रिअंत ७:०७ बजे तक गृहछादन छत,, । {३} संस्कार मुहूर्त – हस्त में भद्रा पश्चात् रात ७:४७ बजे से रात्रिअंत ७:०७ बजे तक जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, कर्णवेध, । {४} कृषि मुहूर्त –हस्त में भद्रा पश्चात् रात ७:४७ बजे से रात्रिअंत ७:०७ बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य रोपण, धान्य

छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –हस्त में भद्रा पश्चात् रात ७:४७ बजे से रात्रिअंत ७:०७ बजे तक यात्रा, वाहन क्रय, नवीन वस्त्र–आभूषण, राजसेवा, मुहूर्त्त हैं।

माघ कृष्ण ७ शनि। १० जनवरी २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिन ८:२९ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति गुरु सूर्योदय से दिन ३:४६। राहु दिन ३:४६ से रातअंत। गुरु ८:३३ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप दिन ८:२९ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – हस्त में एवं चित्रा में सूर्योदय से रात्रिअंत ७:०७ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । {४} कृषि मुहूर्त्त –हस्त में सूर्योदय से प्रात: ८:२६ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – चित्रा में दिन ३:४६ बजे से रात्रिअंत ७:०७ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –हस्त में एवं चित्रा में सूर्योदय से रात्रिअंत ७:०७ बजे तक राजसेवा, मुहूर्त्त हैं। हस्त में सूर्योदय से प्रात: ८:२६ बजे तक यात्रा, मुहूर्त्त हैं। चित्रा में दिन ३:४६ बजे से रात्रिअंत ७:०७ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त्त हैं। (चित्रा में शनि वेध,।)

माघ कृष्ण ८ रवि। ११ जनवरी २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से दिन १०:२४ तक। चित्रा में सूर्योदय से दिन १०:२१ बजे तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – चित्रा में सूर्योदय से दिन १०:२१ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से रात्रिअंत ७:०८ बजे तक पुनर्विवाह, । स्वाती में सायं ६:१६ बजे से रात्रिअंत ७:०८ बजे तक प्रसूति स्नान, । {४} कृषि मुहूर्त्त –चित्रा में सूर्योदय से दिन १०:२१ बजे तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – चित्रा में सूर्योदय से दिन १०:२१ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –चित्रा में सूर्योदय से दिन १०:२१ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, वाहन क्रय, मुहूर्त्त हैं। (चित्रा में शनि वेध। स्वाती में राहु वेध।)

माघ कृष्ण ९ चंद्र। १२ जनवरी २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – स्वाती में दिन १२:४३ बजे से रात ९:०७ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । स्वाती में एवं विशाखा में भद्रा से पहलेदिन १२:४३ बजे से रात्रि १:५९ बजे तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – स्वाती में दिन १२:४३ बजे से रात ९:०७ बजे तक अन्नप्राशन, अक्षरारंभ, स्कूल प्रवेश, मंत्र दीक्षा, । स्वाती में सूर्योदय से रात ९:०७ बजे तक पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त्त –स्वाती में दिन १२:४३ बजे से रात ९:०७ बजे तक हल प्रवहण जुताई, बीज बोवनी, धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, । स्वाती में एवं विशाखा में भद्रा से पहलेदिन १२:४३ बजे से रात्रि १:५९ बजे तक ईंधन स्थापन, । विशाखा में भद्रा से पहले रात ९:०७ बजे से रात्रि १:५९ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – स्वाती में एवं विशाखा में भद्रा से पहलेदिन १२:४३ बजे से रात्रि १:५९ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, पूंजी निवेश, । विशाखा में भद्रा से पहले रात ९:०७ बजे से रात्रि १:५९ बजे तक वैंक लॉकर खोलना, धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –स्वाती में दिन १२:४३ बजे से रात ९:०७ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, वाहन क्रय, मुहूर्त्त हैं। (स्वाती में राहु वेध, ।)

माघ कृष्ण १० मंगल। १३ जनवरी २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – शिववास कैलाश पर दिन ३:१९ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – अनुराधा में रात १२:०७ बजे से रात्रिअंत ७:०८ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, प्रसूति स्नान, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – विशाखा में एवं अनुराधा में दिन ३:१८ बजे से रात्रिअंत ७:०८ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –अनुराधा में रात १२:०७ बजे से रात्रिअंत ७:०८ बजे तक यात्रा, मुहूर्त्त हैं।

माघ कृष्ण ११ बुध। १४ जनवरी २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति राहु सूर्योदय से रात ३:०४। केतु रात ३:०४ से रातअंत। शिववास कैलाश पर सूर्योदय से सायं ५:५३ तक। वृषारूढ सायं ५:५३ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अनुराधा मेंक्रांतिसाम्य से पहले, सूर्योदय से दिन २:२० बजे तक यात्रा, मुहूर्त्त हैं। (क्रान्तिसाम्य दोष दिन २:२० से सायं ६:५४ वजे तक।)

माघ कृष्ण १२ गुरु। १५ जनवरी २०२६। ज्येष्ठा में निर्बल चंद्र दोष मूल में निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त्त अभाव। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से रात ८:१७ तक।

माघ कृष्ण १३ शुक्र। १६ जनवरी २०२६। मूल में निर्बल चंद्र। निर्बल चंद्र दोष पू.षा. में निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त्त अभाव।

माघ कृष्ण १४ शनि। १७ जनवरी २०२६। मूल में भद्रा दोषनिर्बल चंद्र। पू.षा. में निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त्त अभाव। शिववास गौरी के समीप रात १२:०३ से रातअंत ।

माघ कृष्ण ३० रवि। १८ जनवरी २०२६। पू.षा. में निर्बल चंद्र। उ.षा. में निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति केतु सूर्योदय से दिन १०:१३। सूर्य दिन १०:१३ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से रात १:१९ तक।

माघ शुक्ल पक्ष

माघ शुक्ल १ चंद्र। १९ जनवरी २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से रात २:१० तक। ग्रह मुख आहुति सूर्य सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप रात २:१० से रातअंत । श्रवण में निर्बल चंद्रकाल पश्चात रात २:१० बजे से रात्रिअंत तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – श्रवण में निर्बल चंद्रकाल पश्चात रात २:१० बजे से रात्रिअंत तक गृहछादन छत,, । {३} संस्कार मुहूर्त्त – श्रवण में निर्बल चंद्रकाल पश्चात रात २:१० बजे से रात्रिअंत तक जातकर्म, नामकरण, कर्णवेध। {४} कृषि मुहूर्त्त –श्रवण में निर्बल चंद्रकाल पश्चात रात २:१० बजे से रात्रिअंत तक धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – श्रवण में निर्बल चंद्रकाल पश्चात रात २:१० बजे से रात्रिअंत तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –श्रवण में निर्बल चंद्रकाल पश्चात रात २:१० बजे से रात्रिअंत तक यात्रा, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं। (उ.षा. में सूर्य मंगल बुध शुक्र युति।)

माघ शुक्ल २ मंगल। २० जनवरी २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर रात २:३७ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति सूर्य सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से रात २:३७ तक। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – श्रवण में सूर्योदय से दिन १:०२ बजे तक सीमन्त पुंसवन, शल्यक्रिया ऑपरेशन, । श्रवण में एवं धनिष्ठा में व्यतिपात से पहले सूर्योदय से रात ७:५५ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । {४} कृषि मुहूर्त्त –धनिष्ठा में व्यतिपात से पहले दिन १:०२ बजे से रात ७:५५ बजे तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – श्रवण में एवं धनिष्ठा में व्यतिपात से पहले सूर्योदय से रात ७:५५ बजे तक पूंजी निवेश। {६} विविध मुहुर्त –श्रवण में एवं धनिष्ठा में व्यतिपात से पहले सूर्योदय से रात ७:५५ बजे तक यात्रा, मुहूर्त्त हैं। श्रवण में सूर्योदय से दिन १:०२ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त्त हैं।

माघ शुक्ल ३ बुध। २१ जनवरी २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – शतभिषा में व्यतिपात पश्चात सायं ६:५२ बजे से रात २:४० बजे तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – शतभिषा में व्यतिपात पश्चात सायं ६:५२ बजे से रात २:४० बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, । {४} कृषि मुहूर्त्त –शतभिषा में व्यतिपात पश्चात सायं ६:५२ बजे से रात्रिअंत तक धान्य विक्रय, । शतभिषा में व्यतिपात पश्चात सायं ६:५२ बजे से रात २:४० बजे तक हल प्रवहण जुताई, पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – शतभिषा में व्यतिपात पश्चात सायं ६:५२ बजे से रात २:४० बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –शतभिषा में व्यतिपात पश्चात सायं ६:५२ बजे से रात २:४० बजे तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त्त हैं। (शतभिषा में राहु युति।)

माघ शुक्ल ४ गुरु। २२ जनवरी २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर रात २:२३ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति बुध सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर रात २:२३ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – पू.भा. में परिघ पश्चात रात ४:३७ बजे से रात्रिअंत तक मंत्र दीक्षा, । {४} कृषि मुहूर्त्त –शतभिषा में सूर्योदय से दिन २:२० बजे तक धान्य विक्रय, । पू.भा. में परिघ पश्चात रात ४:३७ बजे से रात्रिअंत तक धान्य छेदन, कटाई, ईंधन स्थापन, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – पू.भा. में परिघ पश्चात रात ४:३७ बजे से रात्रिअंत तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । {६} विविध मुहुर्त –पू.भा. में परिघ पश्चात रात ४:३७ बजे से रात्रिअंत तक संपत्ति क्रय, मुहूर्त्त हैं। (शतभिषा में राहु युति।)

माघ शुक्ल ५ शुक्र। २३ जनवरी २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से रात १:४२ तक। ग्रह मुख आहुति बुध सूर्योदय से रातअंत। बुध १०:५२ से रातअंत। शिववास कैलाश पर सूर्योदय से रात १:४२ तक। वृषारूढ रात १:४२ से रातअंत । उ.भा. में दिन २:२८ बजे से रात्रिअंत तक अग्न्याधान, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – पू.भा. में सूर्योदय से दिन २:२८ बजे तक मंत्र दीक्षा, जैन विद्यारंभ कन्या वरण, वर वरण, । उ.भा. में दिन २:२८ बजे से रात्रिअंत तक जातकर्म, नामकरण, पुनर्विवाह, । उ.भा. में दिन २:२८ बजे से रात १:४३ बजे तक अन्नप्राशन, । {४} कृषि मुहूर्त्त –पू.भा. में एवं उ.भा. में सूर्योदय से रात्रिअंत तक धान्य छेदन, कटाई, ईंधन स्थापन, । उ.भा. में दिन २:२८ बजे से रात्रिअंत तक धान्य रोपण, धान्य संग्रह, धान्य विक्रय, । उ.भा. में दिन २:२८ बजे से रात १:४३ बजे तक हल प्रवहण जुताई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – पू.भा. में एवं उ.भा. में सूर्योदय से रात्रिअंत तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । उ.भा. में दिन २:२८ बजे से रात्रिअंत तक व्यापार प्रारंभ, । {६} विविध मुहुर्त –पू.भा. में सूर्योदय से दिन २:२८ बजे तक संपत्ति क्रय, मुहूर्त्त हैं। उ.भा. में दिन २:२८ बजे से रात्रिअंत तक नवीन वस्त्र–आभूषण, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं। (उ.भा. में शनि युति।)

माघ शुक्ल ६ शनि। २४ जनवरी २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर रात १२:३९ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति बुध सूर्योदय

से दिन १०:५२। बुध दिन १०:५२ से दिन २:१३ बुध दिन २:१३ से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से रात १२:३९ तक। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – उ.भा. में एवं रेवती में सूर्योदय से रात्रिअंत तक पुनर्विवाह, । रेवती में दिन २:१३ बजे से रात्रिअंत तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । {४} कृषि मुहूर्त –उ.भा. में सूर्योदय से दिन २:१३ बजे तक धान्य विक्रय, । रेवती में दिन २:१३ बजे से रात्रिअंत तक पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – रेवती में दिन २:१३ बजे से रात्रिअंत तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –उ.भा. में सूर्योदय से दिन २:१३ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। रेवती में दिन २:१३ बजे से रात्रिअंत तक सर्व वस्तु क्रय, राजसेवा, मुहूर्त हैं। रेवती में रात १२:३९ बजे से रात्रिअंत तक यात्रा, मुहूर्त हैं। (उ.भा. में शनि युति।)

माघ शुक्ल ७ रवि। २५ जनवरी २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – रेवती में एवं अश्विनी में सूर्योदय से रात ११:१२ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – रेवती में सूर्योदय से दिन १:३६ बजे तक सीमन्त पुंसवन, कन्या वरण, । रेवती में एवं अश्विनी में सूर्योदय से रात ११:१२ बजे तक प्रसूति स्नान, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, अन्नप्राशन, जैन विद्यारंभ पुनर्विवाह, । अश्विनी में दिन १:३६ बजे से रात ११:१२ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, । {४} कृषि मुहूर्त –रेवती में एवं अश्विनी में सूर्योदय से रात ११:१२ बजे तक धान्य संग्रह, पशु क्रय विक्रय, । अश्विनी में दिन १:३६ बजे से रात ११:१२ बजे तक धान्य रोपण, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – रेवती में एवं अश्विनी में सूर्योदय से रात ११:१२ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –रेवती में एवं अश्विनी में सूर्योदय से रात ११:१२ बजे तक यात्रा, सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त हैं। अश्विनी में दिन १:३६ बजे से रात ११:१२ बजे तक वाहन क्रय, मुहूर्त हैं। (अश्विनी में केतु वेध, ।)

माघ शुक्ल ८ चंद्र। २६ जनवरी २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति शुक्र सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप रात ९:२० से रातअंत । अश्विनी में भद्रा पश्चात् दिन १०:२१ बजे से दिन १२:३५ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – अश्विनी में भद्रा पश्चात् दिन १०:२१ बजे से दिन १२:३५ बजे तक जातकर्म, नामकरण, कर्णवेध, मंत्र दीक्षा, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –अश्विनी में भद्रा पश्चात् दिन १०:२१ बजे से दिन १२:३५ बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य रोपण, धान्य संग्रह, । अश्विनी में एवं भरणी में भद्रा पश्चात् दिन १०:२१ बजे से रात ९:२१ बजे तक ईंधन स्थापन, । भरणी में दिन १२:३५ बजे से रात ९:२१ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अश्विनी में भद्रा पश्चात् दिन १०:२१ बजे से दिन १२:३५ बजे तक व्यापार प्रारंभ, धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –अश्विनी में भद्रा पश्चात् दिन १०:२१ बजे से दिन १२:३५ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, वाहन क्रय, राजसेवा, मुहूर्त हैं। (अश्विनी में केतु वेध, ।)

माघ शुक्ल ९ मंगल। २७ जनवरी २०२६। मुहूर्त अभाव। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से रात ७:०८ तक।

माघ शुक्ल १० बुध। २८ जनवरी २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – कृतिका में एवं रोहिणी में सूर्योदय से दिन ४:३९ बजे तक अग्न्याधान, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – कृतिका में सूर्योदय से प्रात: ९:३० बजे तक कन्या वरण, वर वरण, । रोहिणी में प्रात: ९:३० बजे से रात्रिअंत तक जातकर्म, नामकरण, पुनर्विवाह, । रोहिणी में प्रात: ९:३० बजे से दिन ४:३९ बजे तक अन्नप्राशन, । {४} कृषि मुहूर्त –कृतिका में सूर्योदय से प्रात: ९:३० बजे तक धान्य छेदन, कटाई, । कृतिका में एवं रोहिणी में सूर्योदय से रात्रिअंत तक ईंधन स्थापन, । रोहिणी में प्रात: ९:३० बजे से रात्रिअंत तक हल प्रवहण जुताई, धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – रोहिणी में प्रात: ९:३० बजे से रात्रिअंत तक व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, वैंक लॉकर खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –रोहिणी में प्रात: ९:३० बजे से रात्रिअंत तक नवीन वस्त्र–आभूषण, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। (कृतिका में सूर्य वेध । रोहिणी में मंगल वेध,।)

माघ शुक्ल ११ गुरु। २९ जनवरी २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – शिववास कैलाश पर दिन १:५८ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – मृगशिर में वैधृति से पहले दिन १:५६ बजे से रात्रि ८:२९ बजे तक सीमन्त पुंसवन, । {४} कृषि मुहूर्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –मृगशिर में वैधृति से पहले दिन १:५६ बजे से रात्रि ८:२९ बजे तक वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), मुहूर्त हैं। (रोहिणी में भौम वेध ।)

माघ शुक्ल १२ शुक्र। ३० जनवरी २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति शनि सूर्योदय से रात ३:२९। चंद्र रात ३:२९ से रातअंत। शिववास कैलाश पर सूर्योदय से दिन ११:११ तक। वृषारूढ दिन ११:११ से रातअंत । पुनर्वसु में रात ३:२९ बजे से रात्रिअंत तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । {२} वास्तु मुहूर्त – आर्द्रा में सायं ६:१२ बजे से रात ३:२९ बजे तक गृहछादन छत,, । {३} संस्कार मुहूर्त – पुनर्वसु में रात ३:२९ बजे से रात्रिअंत तक जातकर्म, नामकरण, कर्णवेध, जैन विद्यारंभ । {४} कृषि मुहूर्त –आर्द्रा में सायं ६:१२ बजे से रात ३:२९ बजे तक ईंधन स्थापन, । पुनर्वसु में रात ३:२९ बजे से रात्रिअंत तक धान्य संग्रह, पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – पुनर्वसु में रात ३:२९ बजे से रात्रिअंत तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, पूंजी निवेश। {६} विविध मुहुर्त –आर्द्रा में सायं ६:१२ बजे से रात ३:२९ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। पुनर्वसु में रात ३:२९ बजे से रात्रिअंत तक यात्रा, नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त हैं। (पुनर्वसु में गुरु युति।)

माघ शुक्ल १३ शनि। ३१ जनवरी २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – शिववास वृषारूढ सूर्योदय से दिन ८:२७ तक। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – पुनर्वसु में सूर्योदय से प्रात: ८:२५ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । {४} कृषि मुहूर्त –पुनर्वसु में सूर्योदय से प्रात: ८:२५ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – पुनर्वसु में सूर्योदय से प्रात: ८:२५ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –पुनर्वसु में सूर्योदय से प्रात: ८:२५ बजे तक यात्रा, मुहूर्त हैं। (पुनर्वसु में गुरु युति।)

माघ शुक्ल १५ रवि। १ फरवरी २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – शिववास गौरी के समीप रात ३:४२ से रातअंत । पुष्य में भद्रा पश्चात् दिन ४:४४ बजे से रात १२:०२ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – पुष्य में भद्रा पश्चात् दिन ४:४४ बजे से रात १२:०२ बजे तक सीमन्त पुंसवन, शल्यक्रिया ऑपरेशन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, अन्नप्राशन, । {४} कृषि मुहूर्त –पुष्य में भद्रा पश्चात् दिन ४:४४ बजे से रात १२:०२ बजे तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – पुष्य में भद्रा पश्चात् दिन ४:४४ बजे से रात १२:०२ बजे तक पूंजी निवेश। {६} विविध मुहुर्त –पुष्य में भद्रा पश्चात् दिन ४:४४ बजे से रात १२:०२ बजे तक यात्रा, वाहन क्रय, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं।

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

फाल्गुन कृष्ण १ चंद्र। २ फरवरी २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति चंद्र सूर्योदय से रात १०:५३। मंगल रात १०:५३ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से रात १:५८ तक। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त –मघा में रात १०:५३ बजे से रात्रिअंत तक धान्य छेदन, कटाई, । मघा में रात १:५३ बजे से रात्रिअंत तक नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में रा. १०:५३ तक, धान्य रोपण, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (अश्लेषा में बुधवेध दिन ११:२३ वजे से सायं ५:०८ वजे तक।अश्लेषा में शुक्रवेध सायं ५:०८ वजे से रात १०:५३ वजे तक।)

फाल्गुन कृष्ण २ मंगल। ३ फरवरी २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अभाव। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त –मघा में सूर्योदय से रात १०:१८ बजे तक बीज बोवनी, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (पू.फा. में केतु युति।)

फाल्गुन कृष्ण ३ बुध। ४ फरवरी २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति मंगल सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर रात १२:१८ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – पू.फा. में भद्रा से पहले सूर्योदय से दिन १२:२१ बजे तक कन्या वरण, वर वरण, । {४} कृषि मुहूर्त –उ.फा. में रात १२:१२ बजे से रात्रिअंत तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (पू.फा. में केतु युति।)

फाल्गुन कृष्ण ४ गुरु। ५ फरवरी २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – शिववास कैलाश पर सूर्योदय से रात १२:३२ तक। वृषारूढ रात १२:३२ से रात. अंत । हस्त में रात १२:२५ बजे से रात्रिअंत तक देव प्रतिष्ठा शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – हस्त में रात १२:२५ बजे से रात्रिअंत तक गृहछादन छत,, । {३} संस्कार मुहूर्त – हस्त में रात ११:०६ बजे से रात १२:२५ बजे तक प्रसूति जल/कुआ पूजन, । हस्त में रात १२:२५ बजे से रात्रिअंत तक सीमन्त पुंसवन, शल्यक्रिया ऑपरेशन, प्रसूति स्नान, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, कर्णवेध, । {४} कृषि मुहूर्त –उ.फा. में सूर्योदय से रात ११:०६ बजे तक धान्य विक्रय, । हस्त में रात १२:२५ बजे से रात्रिअंत तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – हस्त में रात १२:२५ बजे से रात्रिअंत तक व्यापार प्रारंभ, । {६} विविध मुहुर्त –हस्त में रात १२:२५ बजे से रात्रिअंत तक यात्रा, वाहन क्रय, नवीन वस्त्र–आभूषण, राजसेवा, मुहूर्त हैं। (हस्त में शनि वेध,।)

फाल्गुन कृष्ण ५ शुक्र। ६ फरवरी २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति गुरु सूर्योदय से दिन २:०२। मंगल दिन २:०२ से रात १२:३२ गुरु रात १२:३२ से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से रात १:२७ तक। हस्त में शूल से पहले, सूर्योदय से रात ११:४४ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । हस्त में शूल से पहले, सूर्योदय से रात ११:४४ बजे एवं चित्रा मेंरात १:४४

बजे से रात्रिअंत तक देव प्रतिष्ठा धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – चित्रा में शूल पश्चात रात १:४४ बजे से रात्रिअंत तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध नहीं), । {३} संस्कार मुहूर्त्त – हस्त में शूल से पहले, सूर्योदय से रात ११:४४ बजे तक अन्नप्राशन, मुंडन, अक्षरारंभ, स्कूल प्रवेश, उपनयन, कन्या वरण, । हस्त में शूल से पहले, सूर्योदय से रात ११:४४ बजे एवं चित्रा मेंरात १:४४ बजे से रात्रिअंत तक जातकर्म, नामकरण, कर्णवेध, विद्यारंभ, उच्च शिक्षा, । {४} कृषि मुहूर्त्त –हस्त में शूल से पहले, सूर्योदय से रात ११:४४ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । हस्त में शूल से पहले, सूर्योदय से रात ११:४४ बजे एवं चित्रा मेंरात १:४४ बजे से रात्रिअंत तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – हस्त में शूल से पहले, सूर्योदय से रात ११:४४ बजे एवं चित्रा मेंरात १:४४ बजे से रात्रिअंत तक व्यापार प्रारंभ, । चित्रा में शूल पश्चात रात १:४४ बजे से रात्रिअंत तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –हस्त में शूल से पहले, सूर्योदय से रात ११:४४ बजे एवं चित्रा मेंरात १:४४ बजे से रात्रिअंत तक वाहन क्रय, नवीन वस्त्र–आभूषण, राजसेवा, मुहूर्त्त हैं। हस्त में शूल से पहले, सूर्योदय से रात ११:४४ बजे तक यात्रा, मुहूर्त्त हैं। चित्रा में शूल पश्चात रात १:४४ बजे से रात्रिअंत तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त्त हैं। (हस्त में शनि वेध।)

फाल्गुन कृष्ण ६ शनि। ७ फरवरी २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से रात २:५७ बजे तक देव प्रतिष्ठा । {२} वास्तु मुहूर्त – स्वाती में रात २:३४ बजे से रात २:५७ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , । {३} संस्कार मुहूर्त्त – चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से रात २:५७ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । {४} कृषि मुहूर्त्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से रात २:५७ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से रात २:५७ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त्त हैं। चित्रा में सूर्योदय से रात २:३४ बजे तक राजसेवा, मुहूर्त्त हैं। (स्वाती में राहु वेध, ।)

फाल्गुन कृष्ण ७ रवि। ८ फरवरी २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से रात ५:०५ तक। ग्रह मुख आहुति गुरु सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप रात ५:०५ से रातअंत । स्वाती में भद्रा पश्चात् दिन ३:५८ बजे से रात ५:०२ बजे तक देव प्रतिष्ठा शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । स्वाती में भद्रा पश्चात् दिन ३:५८ बजे से रात ५:०२ बजे एवं विशाखा मेंरात ५:०६ बजे से रात्रिअंत तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – स्वाती में भद्रा पश्चात् दिन ३:५८ बजे से रात ५:०२ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, प्रसूति स्नान, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, अन्नप्राशन, जैन विद्यारंभ कन्या वरण, । {४} कृषि मुहूर्त्त –स्वाती में भद्रा पश्चात् दिन ३:५८ बजे से रात ५:०२ बजे तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – स्वाती में भद्रा पश्चात् दिन ३:५८ बजे से रात ५:०२ बजे एवं विशाखा मेंरात ५:०६ बजे से रात्रिअंत तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –स्वाती में भद्रा पश्चात् दिन ३:५८ बजे से रात ५:०२ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, वाहन क्रय, मुहूर्त्त हैं। (क्रान्तिसाम्य दोष सायं ६:३७ से रात ११:१३ वजे तक। स्वाती में राहु वेध, । विशाखा में सूर्य वेध,। स्वाती में बुधवेध रात १०:२७ वजे से रातअंत ५:०६ वजे तक।)

फाल्गुन कृष्ण ८ चंद्र। ९ फरवरी २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर रात ७:२९ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति गुरु सूर्योदय से रात ७:५६। राहु रात ७:५६ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से रात ७:२९ तक। विशाखा में सूर्योदय से रात ६:६० बजे तक अग्न्याधान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – विशाखा में सूर्योदय से रात ६:६० बजे तक नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , । {३} संस्कार मुहूर्त्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – विशाखा में सूर्योदय से रात ६:६० बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, वैंक लॉकर खोलना, धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (विशाखा में सूर्य वेध ।)

फाल्गुन कृष्ण ८ मंगल। १० फरवरी २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति गुरु सूर्योदय से प्रातः ७:५६। राहु प्रातः ७:५६ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से प्रातः ७:२८ तक। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – अनुराधा में प्रातः ७:५६ बजे से रात्रिअंत तक प्रसूति स्नान, । {४} कृषि मुहूर्त्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – विशाखा में सूर्योदय से प्रातः ७:२६ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (विशाखा में सूर्य वेध ।)

फाल्गुन कृष्ण ९ बुध। ११ फरवरी २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अनुराधा में प्रातः ९:५६ बजे से दिन १०:५१ बजे तक देव प्रतिष्ठा धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अनुराधा में प्रातः ९:५६ बजे से दिन १०:५१ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित (अग्निबाण २८:२१ से, त्यागकर), नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध), । {३} संस्कार मुहूर्त्त – अनुराधा में सूर्योदय से प्रातः ९:५६ बजे तक प्रसूति जल/कुआ पूजन, । अनुराधा में प्रातः ९:५६ बजे से दिन १०:५१ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, अन्नप्राशन, अक्षरारंभ, स्कूल प्रवेश, मंत्र दीक्षा, विद्यारंभ, उच्च शिक्षा, । ज्येष्ठा में दिन १०:५१ बजे से रात्रिअंत तक मुंडन, । {४} कृषि मुहूर्त्त –अनुराधा में प्रातः ९:५६ बजे से दिन १०:५१ बजे तक हल प्रवहण जुताई, । अनुराधा में एवं ज्येष्ठा में प्रातः ९:५६ बजे से रात्रिअंत तक ईंधन स्थापन। ज्येष्ठा में दिन १०:५१ बजे से रात्रिअंत तक पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अनुराधा में प्रातः ९:५६ बजे से दिन १०:५१ बजे तक धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश, । ज्येष्ठा में दिन १०:५१ बजे से रात्रिअंत तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । {६} विविध मुहुर्त –अनुराधा में प्रातः ९:५६ बजे से दिन १०:५१ बजे तक यात्रा, नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त्त हैं।

फाल्गुन कृष्ण १० गुरु। १२ फरवरी २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति राहु सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर दिन १२:२० से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – मूल में दिन १:३९ बजे से रात्रिअंत तक सीमन्त पुंसवन, । {४} कृषि मुहूर्त्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –मूल में दिन १:३९ बजे से रात्रिअंत तक संपत्ति क्रय, मुहूर्त्त हैं।

फाल्गुन कृष्ण ११ शुक्र। १३ फरवरी २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – शिववास कैलाश पर सूर्योदय से दिन २:२३ तक। वृषारूढ दिन २:२३ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – मूल में सूर्योदय से दिन ४:०९ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , । मूल में एवं पू.षा. में सूर्योदय से रात्रिअंत तक नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , । {३} संस्कार मुहूर्त्त – मूल में सूर्योदय से दिन २:२३ बजे तक कन्या वरण, । मूल में सूर्योदय से दिन ४:०९ बजे तक द्विरागमन, पुनर्विवाह, । पू.षा. में दिन ४:०९ बजे से रात्रिअंत तक जैन विद्यारंभ । {४} कृषि मुहूर्त्त –मूल में सूर्योदय से दिन ४:०९ बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य रोपण, । मूल में एवं पू.षा. में सूर्योदय से रात्रिअंत तक ईंधन स्थापन, । पू.षा. में दिन ४:०९ बजे से रात्रिअंत तक धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – पू.षा. में दिन ४:०९ बजे से रात्रिअंत तक वैंक लॉकर खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –मूल में सूर्योदय से दिन २:२३ बजे तक संपत्ति क्रय, मुहूर्त्त हैं। (मूल में गुरु वेध प्रातः ९:३५ वजे से दिन ४:०९ वजे तक।)

फाल्गुन कृष्ण १२ शनि। १४ फरवरी २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति केतु सूर्योदय से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से दिन ३:५९ तक। {२} वास्तु मुहूर्त – पू.षा. मेंनिर्बल चंद्रकाल से पहले, सूर्योदय से दिन ३:५९ बजे तक नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित (अग्निबाण २७:३५ से, त्यागकर), । {३} संस्कार मुहूर्त्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव।

फाल्गुन कृष्ण १३ रवि। १५ फरवरी २०२६। उ.षा. में व्यतिपात दोषनिर्बल चंद्र। भद्रा दोष व्यतिपात दोष निर्बल चंद्र दोष श्रवण में निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त्त अभाव।

फाल्गुन कृष्ण १४ चंद्र। १६ फरवरी २०२६। श्रवण में निर्बल चंद्र। निर्बल चंद्र दोष धनिष्ठा में निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से सायं ५:३१ तक। ग्रह मुख आहुति केतु सूर्योदय से रात ८:४४। सूर्य रात ८:४४ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सायं ५:३१ से रातअंत ।

फाल्गुन कृष्ण ३० मंगल। १७ फरवरी २०२६। धनिष्ठा में निर्बल चंद्र। निर्बल चंद्र दोष शतभिषा में निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त्त अभाव। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से सायं ५:२७ तक।

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

फाल्गुन शुक्ल १ बुध। १८ फरवरी २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिन ४:५३ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति सूर्य सूर्योदय से रातअंत। सूर्य १८:३३ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप दिन ४:५३ से रातअंत । शतभिषा मेंनिर्बल चंद्रकाल पश्चात्, दिन ४:५४ बजे से रात ९:११ बजे तक देव प्रतिष्ठा धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – शतभिषा मेंनिर्बल चंद्रकाल पश्चात्, दिन ४:५४ बजे से रात ९:११ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध नहीं), । पू.भा. में रात ९:११ बजे से रात्रिअंत तक नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , । {३} संस्कार मुहूर्त्त – शतभिषा मेंनिर्बल चंद्रकाल पश्चात्, दिन ४:५४ बजे से रात ९:११ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, द्विरागमन, । {४} कृषि मुहूर्त्त –शतभिषा मेंनिर्बल चंद्रकाल पश्चात्, दिन ४:५४ बजे से रात ९:११ बजे तक धान्य विक्रय, पशु क्रय विक्रय, । पू.भा. में रात ९:११ बजे से रात्रिअंत तक नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में दिनरात, धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – शतभिषा मेंनिर्बल चंद्रकाल पश्चात्, दिन ४:५४ बजे से रात ९:११ बजे तक धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश, । शतभिषा में एवं पू.भा. में दिन ४:५४ बजे से रात्रिअंत तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । {६} विविध मुहुर्त –शतभिषा मेंनिर्बल चंद्रकाल पश्चात्, दिन ४:५४ बजे से रात ९:११ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त्त हैं। (शतभिषा में शुक्र राहु युति। पू.भा. में बुध युति।)

फाल्गुन शुक्ल २ गुरु। १९ फरवरी २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से दिन ३:५३ तक। ग्रह मुख आहुति सूर्य सूर्योदय से सायं ६:३२। सूर्य सायं ६:३२ से रात ८:४७ सूर्य रात ८:४७ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से दिन ३:५३ तक। उ.भा. में रात ८:४७ बजे से रात्रिअंत तक देव प्रतिष्ठा अग्न्याधान, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । {२} वास्तु मुहूर्त – पू.भा. में सूर्योदय से रात ८:४७ बजे तक नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , । उ.भा. में रात ८:४७ बजे से रात्रिअंत तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध नहीं), । {३} संस्कार मुहूर्त – पू.भा. में सूर्योदय से दिन ३:५४ बजे तक उपनयन, कन्या वरण। पू.भा. में सूर्योदय से रात ८:४७ बजे तक वर वरण, । उ.भा. में रात ८:४७ बजे से रात्रिअंत तक सीमन्त पुंसवन, प्रसूति स्नान, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, द्विरागमन, । {४} कृषि मुहूर्त –पू.भा. में सूर्योदय से रात ८:४७ बजे तक नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में दिनरात, । पू.भा. में एवं उ.भा. में सूर्योदय से रात्रिअंत तक धान्य छेदन, कटाई, । उ.भा. में रात ८:४७ बजे से रात्रिअंत तक धान्य रोपण, धान्य संग्रह, धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – पू.भा. में एवं उ.भा. में सूर्योदय से रात्रिअंत तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण। उ.भा. में रात ८:४७ बजे से रात्रिअंत तक व्यापार प्रारंभ, । {६} विविध मुहुर्त –उ.भा. में रात ८:४७ बजे से रात्रिअंत तक नवीन वस्त्र–आभूषण, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। (पू.भा. में बुध युति। उ.भा. में शनि युति।)

फाल्गुन शुक्ल ३ शुक्र। २० फरवरी २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – उ.भा. में सूर्योदय से दिन २:३३ बजे तक देव प्रतिष्ठा अग्न्याधान, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । {२} वास्तु मुहूर्त – उ.भा. में सूर्योदय से दिन २:३३ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध नहीं), । {३} संस्कार मुहूर्त – उ.भा. में सूर्योदय से दिन २:३३ बजे तक जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, उपनयन, कन्या वरण, वर वरण, द्विरागमन, । {४} कृषि मुहूर्त –उ.भा. में सूर्योदय से दिन २:३३ बजे तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, । उ.भा. में सूर्योदय से रात ८:०२ बजे तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – उ.भा. में सूर्योदय से दिन २:३३ बजे तक व्यापार प्रारंभ, धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । {६} विविध मुहुर्त –उ.भा. में सूर्योदय से दिन २:३३ बजे तक नवीन वस्त्र–आभूषण, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। (उ.भा. में शनि युति।)

फाल्गुन शुक्ल ४ शनि। २१ फरवरी २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से दिन १२:५७ तक। ग्रह मुख आहुति बुध सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर दिन १२:५७ से रातअंत । रेवती में दिन १२:५६ बजे से रात ७:०३ बजे तक देव प्रतिष्ठा । {२} वास्तु मुहूर्त – रेवती में दिन १२:५६ बजे से रात ७:०३ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , । {३} संस्कार मुहूर्त – रेवती में एवं अश्विनी में दिन १२:५६ बजे से रात्रिअंत तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । {४} कृषि मुहूर्त –रेवती में एवं अश्विनी में दिन १२:५६ बजे से रात्रिअंत तक पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – रेवती में एवं अश्विनी में दिन १२:५६ बजे से रात्रिअंत तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –रेवती में एवं अश्विनी में दिन १२:५६ बजे से रात्रिअंत तक सर्व वस्तु क्रय, राजसेवा, मुहूर्त हैं। अश्विनी में रात ७:०३ बजे से रात्रिअंत तक यात्रा, मुहूर्त हैं। (क्रान्तिसाम्य दोष रात ९:३४ से रात १:४१ वजे तक। अश्विनी में केतु वेध, ।)

फाल्गुन शुक्ल ५ रवि। २२ फरवरी २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति बुध सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर सूर्योदय से दिन ११:०८ तक। वृषारूढ दिन ११:०८ से रातअंत । अश्विनी में सूर्योदय से सायं ५:५३ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – अश्विनी में सूर्योदय से दिन ११:०७ बजे तक अन्नप्राशन, उपनयन, । अश्विनी में सूर्योदय से सायं ५:५३ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, प्रसूति स्नान, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । अश्विनी में एवं भरणी में सूर्योदय से रात्रिअंत तक जैन विद्यारंभ । {४} कृषि मुहूर्त –अश्विनी में सूर्योदय से सायं ५:५३ बजे तक धान्य रोपण, धान्य संग्रह, पशु क्रय विक्रय, । भरणी में सायं ५:५३ बजे से रात्रिअंत तक धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अश्विनी में सूर्योदय से सायं ५:५३ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –अश्विनी में सूर्योदय से सायं ५:५३ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, वाहन क्रय, मुहूर्त हैं। अश्विनी में सूर्योदय से दिन ११:०७ बजे तक यात्रा, मुहूर्त हैं। (अश्विनी में केतु वेध, ।)

फाल्गुन शुक्ल ६ चंद्र। २३ फरवरी २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – शिववास वृषारूढ सूर्योदय से दिन ९:१० तक। {२} वास्तु मुहूर्त – भरणी में सूर्योदय से दिन ४:३४ बजे तक नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित (अग्निबाण २५:४६ से, त्यागकर), । {३} संस्कार मुहूर्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त –भरणी में एवं कृतिका में सूर्योदय से रात्रिअंत तक धान्य छेदन, कटाई, ईंधन स्थापन, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव।

फाल्गुन शुक्ल ७ मंगल। २४ फरवरी २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अभाव। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – कृतिका में सूर्योदय से प्रातः ७:०३ बजे तक वर वरण, । रोहिणी में भद्रा पश्चात् वैधृति पश्चात रात ४:३० बजे से रात्रिअंत ४:५५ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, प्रसूति स्नान, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –रोहिणी में भद्रा पश्चात् वैधृति पश्चात रात ४:३० बजे से रात्रिअंत ४:५५ बजे तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव।

फाल्गुन शुक्ल ९ बुध। २५ फरवरी २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर रात २:४८ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति शुक्र सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से रात २:४८ तक। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –मृगशिर में रात २:४६ बजे से रात्रिअंत तक यात्रा, मुहूर्त हैं।

फाल्गुन शुक्ल १० गुरु। २६ फरवरी २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अभाव। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – मृगशिर में सूर्योदय से दिन १२:१८ बजे तक सीमन्त पुंसवन, । {४} कृषि मुहूर्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –मृगशिर में सूर्योदय से दिन १२:१८ बजे तक संपत्ति क्रय, यात्रा, वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), मुहूर्त हैं।

फाल्गुन शुक्ल ११ शुक्र। २७ फरवरी २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर रात १०:४२ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति शनि सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर रात १०:४२ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –पुनर्वसु में भद्रा से पहले दिन १०:५६ बजे से दिन ११:३७ बजे एवं रात १०:३९ बजे से रात्रिअंत तक वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), मुहूर्त हैं। पुनर्वसु में भद्रा से पहले दिन १०:५६ बजे से दिन ११:३७ बजे तक संपत्ति क्रय, मुहूर्त हैं। (पुनर्वसु में गुरु युति।)

फाल्गुन शुक्ल १२ शनि। २८ फरवरी २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से रात ८:५३ तक। ग्रह मुख आहुति शनि सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर सूर्योदय से रात ८:५३ तक। वृषारूढ रात ८:५३ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –पुष्य में रात ८:४९ बजे से रात्रिअंत तक यात्रा, मुहूर्त हैं। (पुनर्वसु में गुरु युति।)

फाल्गुन शुक्ल १३ रवि। १ मार्च २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति शनि सूर्योदय से दिन ८:४१। चंद्र दिन ८:४१ से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से रात ७:१८ तक। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – पुष्य में सूर्योदय से प्रातः ८:४१ बजे तक सीमन्त पुंसवन, । {४} कृषि मुहूर्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –पुष्य में सूर्योदय से प्रातः ८:४१ बजे तक यात्रा, वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), मुहूर्त हैं।

फाल्गुन शुक्ल १४ चंद्र। २ मार्च २०२६। मुहूर्त अभाव।

फाल्गुन शुक्ल १५ मंगल। ३ मार्च २०२६। मुहूर्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति चंद्र सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सायं ५:१५ से रातअंत ।

चैत्र कृष्ण पक्ष

चैत्र कृष्ण १ बुध। ४ मार्च २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से दिन ४:५६ तक। उ.फा. में प्रातः ७:४२ बजे से रात्रिअंत तक देव प्रतिष्ठा । उ.फा. में दिन ४:५० बजे से रात्रिअंत तक अग्न्याधान, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – पू.फा. में सूर्योदय से प्रातः ७:४२ बजे तक कन्या वरण, वर वरण, । उ.फा. में प्रातः ७:४२ बजे से रात्रिअंत तक जातकर्म, नामकरण, द्विरागमन, । उ.फा. में दिन ४:५० बजे से रात्रिअंत तक अन्नप्राशन, । {४} कृषि मुहूर्त –उ.फा. में प्रातः ७:४२ बजे से रात्रिअंत तक बीज बोवनी, धान्य छेदन, कटाई, धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – उ.फा. में प्रातः ७:४२ बजे से रात्रिअंत तक व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), वैंक लॉकर खोलना, । उ.फा. में दिन ४:५० बजे से रात्रिअंत तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । {६} विविध मुहुर्त –उ.फा. में प्रातः ७:४२ बजे से रात्रिअंत तक नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त हैं। (पू.फा. में केतु युति।)

चैत्र कृष्ण २ गुरु। ५ मार्च २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – उ.फा. में गण्ड से पहले, सूर्योदय से प्रातः ७:४७ बजे तक अग्न्याधान, । हस्त में गण्ड पश्चात दिन १०:११ बजे से रात्रिअंत तक देव प्रतिष्ठा शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । हस्त में गण्ड पश्चात दिन १०:११ बजे से रात्रिअंत तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – हस्त में सायं ५:०४ बजे से रात्रिअंत तक गृहछादन छत, (अग्निबाण २४:४८ तक, त्यागकर), । {३} संस्कार मुहूर्त – उ.फा. में गण्ड से पहले, सूर्योदय से प्रातः ७:४७ बजे तक मंत्र दीक्षा, कन्या वरण, वर वरण। हस्त में गण्ड पश्चात दिन १०:११ बजे से रात्रिअंत तक सीमन्त पुंसवन, प्रसूति स्नान, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, द्विरागमन, । हस्त में गण्ड पश्चात दिन १०:११ बजे से रात्रिअंत तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । {४} कृषि मुहूर्त –उ.फा. में गण्ड से पहले, सूर्योदय से प्रातः ७:४७ बजे तक बीज बोवनी, धान्य विक्रय, । हस्त में गण्ड पश्चात दिन १०:११ बजे से रात्रिअंत तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, । हस्त में गण्ड पश्चात दिन १०:११ बजे से रात्रिअंत तक पशु क्रय विक्रय। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – उ.फा. में गण्ड से पहले, सूर्योदय से प्रातः ७:४७ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, वैंक लॉकर खोलना, । हस्त में गण्ड पश्चात दिन १०:११ बजे से रात्रिअंत तक व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), । {६} विविध मुहुर्त –हस्त में गण्ड पश्चात दिन १०:११ बजे से रात्रिअंत तक नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त हैं। हस्त में गण्ड पश्चात दिन १०:११ बजे से रात्रिअंत तक यात्रा, वाहन क्रय, राजसेवा, मुहूर्त हैं। (क्रान्तिसाम्य दोष रात १:४६ से रात ६:१४ वजे तक। हस्त में शनि वेध,।)

चैत्र कृष्ण ३ शुक्र। ६ मार्च २०२६। हस्त में भद्रा दोष। चित्रा में भद्रा दोष मुहूर्त अभाव। शिववास कैलाश पर सायं ६:०१ से रातअंत ।

चैत्र कृष्ण ४ शनि। ७ मार्च २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति मंगल सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर सूर्योदय से रात ७:२४ तक। वृषारूढ रात ७:२४ से रातअंत । स्वाती में रात ७:१९ बजे से रात्रिअंत तक देव प्रतिष्ठा । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – स्वाती में रात ७:१९ बजे से रात्रिअंत तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । {४} कृषि मुहूर्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – स्वाती में रात ७:१९ बजे से रात्रिअंत तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –स्वाती में रात ७:१९ बजे से रात्रिअंत तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त हैं। (चित्रा में सूर्य वेध । स्वाती में मंगल वेध,राहु वेध, । चित्रा में बुध वेध प्रातः ६:४० से दिन ११:२० वजे तक।)

चैत्र कृष्ण ५ रवि। ८ मार्च २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर रात ९:१७ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति मंगल सूर्योदय से दिन १:३६। गुरु दिन १:३६ से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से रात ९:१७ तक। स्वाती में सूर्योदय से दिन १:३६ बजे तक देव प्रतिष्ठा शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । स्वाती में एवं विशाखा में सूर्योदय से रात्रिअंत तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – स्वाती में सूर्योदय से दिन १:३६ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, प्रसूति स्नान, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, अन्नप्राशन, जैन विद्यारंभ कन्या वरण, । {४} कृषि मुहूर्त –स्वाती में सूर्योदय से दिन १:३६ बजे तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, । विशाखा में दिन १:३६ बजे से रात्रिअंत तक पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – स्वाती में एवं विशाखा में सूर्योदय से रात्रिअंत तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –स्वाती में सूर्योदय से दिन १:३६ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, वाहन क्रय, मुहूर्त हैं। (स्वाती में भौम वेध राहु वेध, ।)

चैत्र कृष्ण ६ चंद्र। ९ मार्च २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – विशाखा में एवं अनुराधा में सूर्योदय से रात ११:२७ बजे तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ। अनुराधा में दिन ४:१४ बजे से रात ११:२७ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – अनुराधा में दिन ४:१४ बजे से रात ११:२७ बजे तक जातकर्म, नामकरण, द्विरागमन, । {४} कृषि मुहूर्त –विशाखा में सूर्योदय से दिन ४:१४ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । अनुराधा में दिन ४:१४ बजे से रात ११:२७ बजे तक धान्य रोपण, धान्य संग्रह, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – विशाखा में सूर्योदय से दिन ४:१४ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, वैंक लॉकर खोलना, । विशाखा में एवं अनुराधा में सूर्योदय से रात ११:२७ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –अनुराधा में दिन ४:१४ बजे से रात ११:२७ बजे तक राजसेवा, मुहूर्त हैं।

चैत्र कृष्ण ७ मंगल। १० मार्च २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर रात १:५५ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति गुरु सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप रात १:५५ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – अनुराधा में भद्रा पश्चात् दिन १२:३९ बजे से रात ७:०५ बजे तक प्रसूति स्नान, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । अनुराधा में एवं ज्येष्ठा में भद्रा पश्चात् दिन १२:३९ बजे से रात्रिअंत तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, । {४} कृषि मुहूर्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अनुराधा में भद्रा पश्चात् दिन १२:३९ बजे से रात ७:०५ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –अनुराधा में भद्रा पश्चात् दिन १२:३९ बजे से रात ७:०५ बजे तक यात्रा, मुहूर्त हैं।

चैत्र कृष्ण ८ बुध। ११ मार्च २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से रात ४:१८ तक। ग्रह मुख आहुति गुरु सूर्योदय से रात ९:५८। राहु रात ९:५८ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से रात ४:१८ तक। ज्येष्ठा में सूर्योदय से रात ९:५८ बजे तक अग्न्याधान, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – मूल में रात ९:५८ बजे से रात्रिअंत तक द्विरागमन, । मूल में रात ९:५८ बजे से रात ४:१६ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, मंत्र दीक्षा, । {४} कृषि मुहूर्त –मूल में रात ९:५८ बजे से रात ४:१६ बजे तक हल प्रवहण जुताई, ईंधन स्थापन, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – ज्येष्ठा में सूर्योदय से रात ९:५८ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । {६} विविध मुहुर्त –अभाव।

चैत्र कृष्ण ९ गुरु। १२ मार्च २०२६। पू.षा. में व्यतिपात दोष मुहूर्त अभाव।

चैत्र कृष्ण १० शुक्र। १३ मार्च २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से ८:११ तक। ग्रह मुख आहुति राहु सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर ८:११ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – पू.षा. में भद्रा से पहले व्यतिपात पश्चात, दिन १०:२७ बजे से रात ७:१५ बजे तक जैन विद्यारंभ कन्या वरण, वर वरण, । {४} कृषि मुहूर्त –पू.षा. में भद्रा से पहले व्यतिपात पश्चात, दिन १०:२७ बजे से रात ७:१५ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, ईंधन स्थापन, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – पू.षा. में भद्रा से पहले व्यतिपात पश्चात, दिन १०:२७ बजे से रात ७:१५ बजे तक वैंक लॉकर खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –पू.षा. में भद्रा से पहले व्यतिपात पश्चात, दिन १०:२७ बजे से रात ७:१५ बजे तक संपत्ति क्रय, मुहूर्त हैं।

चैत्र कृष्ण १० शनि। १४ मार्च २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – शिववास कैलाश पर दिन ८:०८ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –श्रवण में रात ४:४७ बजे से रात्रिअंत तक यात्रा, मुहूर्त हैं।

चैत्र कृष्ण ११ रवि। १५ मार्च २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से दिन ९:१३ तक। ग्रह मुख आहुति केतु सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर सूर्योदय से दिन ९:१३ तक। वृषारूढ दिन ९:१३ से रातअंत । श्रवण में एवं धनिष्ठा में सूर्योदय से रात्रिअंत तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – श्रवण में प्रातः ९:१३ बजे से रात ५:५५ बजे तक गृहछादन छत,, । {३} संस्कार मुहूर्त – श्रवण में सूर्योदय से रात ५:५५ बजे तक सीमन्त पुंसवन, शल्यक्रिया ऑपरेशन, अक्षरारंभ, स्कूल प्रवेश, । श्रवण में एवं धनिष्ठा में सूर्योदय से रात्रिअंत तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, जैन विद्यारंभ पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –श्रवण में एवं धनिष्ठा में सूर्योदय से रात्रिअंत तक धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, । धनिष्ठा में रात ५:५५ बजे से रात्रिअंत तक धान्य रोपण, धान्य विक्रय, पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – श्रवण में एवं धनिष्ठा में सूर्योदय से रात्रिअंत तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –श्रवण में सूर्योदय से रात ५:५५ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), मुहूर्त हैं। श्रवण में सूर्योदय से प्रातः ९:१३ बजे तक यात्रा, मुहूर्त हैं।

चैत्र कृष्ण १२ चंद्र। १६ मार्च २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिन ९:३८ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति केतु सूर्योदय से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से दिन ९:३८ तक। धनिष्ठा मेंनिर्बल चंद्रकाल से पहले, सूर्योदय से प्रातः ९:३८ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – धनिष्ठा मेंनिर्बल चंद्रकाल से पहले, सूर्योदय से प्रातः ९:३८ बजे तक जातकर्म, नामकरण, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –धनिष्ठा मेंनिर्बल चंद्रकाल से पहले, सूर्योदय से प्रातः ९:३८ बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, धान्य विक्रय, ईंधन स्थापन, पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – धनिष्ठा मेंनिर्बल चंद्रकाल से पहले, सूर्योदय से प्रातः ९:३८ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, वैंक लॉकर खोलना, धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (शतभिषा में मंगल बुध राहु युति।)

चैत्र कृष्ण १३ मंगल। १७ मार्च २०२६। शतभिषा में निर्बल चंद्र। निर्बल चंद्र दोष पू.भा. में निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त अभाव।

चैत्र कृष्ण १४ बुध। १८ मार्च २०२६। पू.भा. में निर्बल चंद्र। निर्बल चंद्र दोष उ.भा. में निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर दिन ८:२५ सेरात ६:२५तक। ग्रह मुख आहुति सूर्य सूर्योदय से दिन ९:१६। केतु दिन ९:१६ से रात ५:२२ सूर्य रात ५:२२ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप दिन ८:२५ सेरात ६:२५।

चैत्र कृष्ण ३० गुरु। १९ मार्च २०२६। उ.भा. में निर्बल चंद्र। निर्बल चंद्र दोष रेवती में निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति सूर्य सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से प्रातः ६:५४ तक।

देव प्रतिष्ठा मुहूर्त

वैशाख कृष्ण १ चंद्र (१४ अप्रैल) – देव प्रतिष्ठा स्वाती में सूर्योदय से रात १२:१६ बजे तक लग्न. २,अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न २, चंद्रमा– तुला में दिनरात।

वैशाख कृष्ण ७ रवि (२० अप्रैल) – देव प्रतिष्ठा उ.षा. में दिन ११:५० बजे से रात्रिअंत तक अभिजित् मुहूर्त एवं ल. ४,५,६,७,ल. ७,८,९,१०,११,१२,रवियो.–सू.उ.से दि.११:५०वजे। स.सि.योग.दि.११:५० वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– धनु में सा. ६:०६ तक।

वैशाख कृष्ण ८ चंद्र (२१ अप्रैल) – देव प्रतिष्ठा उ.षा. में एवं श्रवण में सूर्योदय से रात ७:०४ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न २,ल. ४,५,६,७,स.सि.योग.दि.१२:३९ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मकर में दिनरात।

वैशाख शुक्ल ३ बुध (३० अप्रैल) – देव प्रतिष्ठा रोहिणी में सूर्योदय से दिन १२:०७ बजे तक लग्न. ३, (परिहार चिंतनीय – मृगशिर में गुरु युति।)रवियो.–दि.४:२५ वजेसे रा.अं.। स.सि.योग–दिन ४:२५वजे तक। स.सि.योग.दि.४:२५ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– वृष में रा. ३:२० तक।

वैशाख शुक्ल ४ गुरु (१ मई) – देव प्रतिष्ठा मृगशिर में दिन ११:२६ बजे से दिन २:२९ बजे तक (परिहार चिंतनीय – मृगशिर में गुरु युति।)रवियो.–सू.उ.से दि.२:२९वजे। चंद्रमा– मिथुन में दिनरात।

वैशाख शुक्ल ५ शुक्र (२ मई) – देव प्रतिष्ठा पुनर्वसु में दिन १:१२ बजे से रात्रिअंत तक ल. ५,६,७,८,९,१०,११,१२, (परिहार चिंतनीय – शूल दोष रात ३:२३ वजे से रातअंत ५:२३ वजे ।)रवियो.–दि.१:१२ वजेसे रा.अं.। स.सि.योग.दि.१:१२ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मिथुन में दिनरात।

वैशाख शुक्ल ६ शनि (३ मई) – देव प्रतिष्ठा पुनर्वसु में एवं पुष्य में सूर्योदय से रात्रिअंत तक देव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त हैं। (परिहार चिंतनीय – गण्ड दोष रात १:४५ वजे से रातअंत ४:०९ वजे । पुष्य में मंगल युति।)रवियो.–सू.उ.से दि.१२:४०वजे। चंद्रमा– मिथुन में प्रा. ६:३९ तक।

वैशाख शुक्ल ७ रवि (४ मई) – देव प्रतिष्ठा पुष्य में सूर्योदय से प्रातः ७:१९ बजे तक लग्न. २, (परिहार चिंतनीय – क्रान्तिसाम्य दोष रात ७:३१ से रात ११:५४ वजे तक। पुष्य में मंगल युति।)रविपुष्य योग–दिन १२:५९वजे तक। चंद्रमा– कर्क में दिनरात।

वैशाख शुक्ल १० बुध (७ मई) – देव प्रतिष्ठा उ.फा. में सायं ६:२२ बजे से रात्रिअंत तक ल. ७,८,९,१०,११,१२, (परिहार चिंतनीय – पूर्वा.फा. में बुधवेध दिन ११:४२ वजे से सायं ६:२२ वजे तक।उ.फा. में केतु युति।)रवियो.–सू.उ.से सा.६:२२वजे। चंद्रमा– सिंह में रा. १:०२ तक।

वैशाख शुक्ल ११ गुरु (८ मई) – देव प्रतिष्ठा उ.फा. में एवं हस्त में दिन १२:३२ बजे से रात्रिअंत तक लग्न ४,५,६,७,८,ल. ८,९,१०,११,१२, (परिहार चिंतनीय – वज्र दोष रात २:०१ वजे से रात ३:१३ वजे । हस्त में शनि वेध,। उ.फा. में केतु युति।) चंद्रमा– कन्या में दिनरात।

वैशाख शुक्ल १२ शुक्र (९ मई) – देव प्रतिष्ठा हस्त में एवं चित्रा में सूर्योदय से रात्रिअंत तक देव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त हैं। (परिहार चिंतनीय – हस्त में शनि वेध। चित्रा में राहु वेध, । हस्त में शुक्रवेध ५:४६ से दिन १०:४१ वजे तक।)रवियो.–रा.१२:१४ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– कन्या में दिनरात।

वैशाख शुक्ल १३ शनि (१० मई) – देव प्रतिष्ठा चित्रा में सूर्योदय से सायं ५:३४ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न २,३,५,६,७, (परिहार चिंतनीय – चित्रा में राहु वेध,।) रवियो.–सू.उ.से रा.३:२१वजे, पुन:रा.१३:१२से रा.अं.। स.सि.योग.रा.३:२१ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– कन्या में दि. १:४७ तक।

ज्येष्ठ कृष्ण ५ रवि (१८ मई) – देव प्रतिष्ठा उ.षा. में एवं श्रवण में सूर्योदय से रात्रिअंत तक देव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त हैं। (परिहार चिंतनीय – क्रान्तिसाम्य दोष दिन १:१२ से सायं ५:२१ वजे तक। श्रवण में सूर्य वेध, । उ.षा. में गुरु वेध प्रातः ५:४१ से प्रातः ६:२४ वजे तक।)रवियो.–शा.६:५३ वजेसे रा. अं.। स.सि.योग–सायं. ६:५३वजे तक। चंद्रमा– मकर में दिनरात।

ज्येष्ठ कृष्ण ६ चंद्र (१९ मई) – देव प्रतिष्ठा श्रवण में एवं धनिष्ठा में सायं ६:०७ बजे से रात्रिअंत ५:१९ बजे तक देव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त हैं। (परिहार चिंतनीय – श्रवण में सूर्य वेध ।)रवियो.–सू.उ.से रा. ७:३१वजे। स.सि.योग–रात्रि ७:३१वजे तक। चंद्रमा– मकर में दिनरात।

ज्येष्ठ शुक्ल २ बुध (२८ मई) – देव प्रतिष्ठा मृगशिर में सूर्योदय से रात १२:३४ बजे तक लग्न. ३,६,९,१०,११, (परिहार चिंतनीय – शूल दोष रात ७:१३ वजे से रात ९:१३ वजे । मृगशिर में गुरु युति।)स.सि.योग–रात्रि १२:३४वजे तक। चंद्रमा– वृष में दि. १:४१ तक।

ज्येष्ठ शुक्ल ४ शुक्र (३० मई) – देव प्रतिष्ठा पुनर्वसु में एवं पुष्य में रात ९:२७ बजे से रात्रिअंत तक (परिहार चिंतनीय – क्रान्तिसाम्य दोष दिन ८:०८ से दिन १२:२१ वजे तक।)रवियो.–सू.उ.से रा. ९:४०वजे। स.सि.योग–रात्रि ९:४०वजे तक। चंद्रमा– मिथुन में दि. ३:५३ तक।

ज्येष्ठ शुक्ल ५ शनि (३१ मई) – देव प्रतिष्ठा पुष्य में सूर्योदय से रात ९:१८ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ६,७,९, (परिहार चिंतनीय – अश्लेषा में मंगल युति।)रवियो.–रा.९:१८ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– कर्क में दिनरात।

ज्येष्ठ शुक्ल ९ बुध (४ जून) – देव प्रतिष्ठा उ.फा. में एवं हस्त में रात ११:५७ बजे से रात्रिअंत तक लग्न ११, (परिहार चिंतनीय – हस्त में शनि वेध,। उ.फा. में केतु युति।)रवियो.–सू.उ.से रा.अं.। स.सि.योग.रा.३:४० वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– सिंह में प्रा. ७:४० तक।

ज्येष्ठ शुक्ल १० गुरु (५ जून) – देव प्रतिष्ठा हस्त में सूर्योदय से प्रातः ९:१७ बजे तक (परिहार चिंतनीय – हस्त में शनि वेध।)रवियो.–सू.उ.से रा.६:३७वजे। चंद्रमा– कन्या में दिनरात।

ज्येष्ठ शुक्ल ११ शुक्र (६ जून) – देव प्रतिष्ठा चित्रा में दिन १०:१६ बजे से दिन ३:३५ बजे एवं रात ४:५२ बजे से रात्रिअंत तक (परिहार चिंतनीय – हस्त में शनि वेध। चित्रा में राहु वेध, ।)रवियो. –सू.उ.से प्रा.६:३८वजे। चंद्रमा– कन्या में रा. ८:११ तक।

ज्येष्ठ शुक्ल १२ शनि (७ जून) – देव प्रतिष्ठा चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से रात ५:३८ बजे तक लग्न. ३,अभिजित् मुहूर्त एवं ल. ४,५,६,७,८,९,१०,११,१२,१, (परिहार चिंतनीय – परिघ दोष दिन ११:२१ वजे से रात ११:४८ वजे । चित्रा में राहु वेध, ।)स.सि.योग.दि.९:४४ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– तुला में दिनरात।

श्रावण कृष्ण १ शुक्र (११ जुलाई)–उग्र देव प्रतिष्ठा, उ.षा. में रात ९:५७ बजे से रात्रिअंत ५:४६ बजे तक ल. ११,१२,१,२,ल. २, चंद्रमा– धनु में दि. १२:१० तक।

श्रावण कृष्ण २ शनि (१२ जुलाई) – उग्र देव प्रतिष्ठा, उ.षा. में एवं श्रवण में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:४६ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, मुहूर्त्त हैं। स.सि.योग.प्रा.६:३९ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मकर में दिनरात।

श्रावण कृष्ण ३ रवि (१३ जुलाई) – उग्र देव प्रतिष्ठा, श्रवण में एवं धनिष्ठा में सूर्योदय से दिन १:२५ बजे तक (परिहार चिंतनीय – धनिष्ठा में बुधवेध सायं ६:५० वजे से रात १२:४९ वजे तक।) चंद्रमा– मकर में सा. ६:५० तक।

श्रावण कृष्ण ४ चंद्र (१४ जुलाई) – उग्र देव प्रतिष्ठा, शतभिषा में रात ११:५७ बजे से रात्रिअंत ५:४७ बजे तक चंद्रमा– कुंभ में दिनरात।

श्रावण कृष्ण ७ गुरु (१७ जुलाई) – उग्र देव प्रतिष्ठा, रेवती में प्रातः ८:०८ बजे से रात ३:४० बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ६,७,८,९,लग्न १०,११,१२,१,२,३, (परिहार चिंतनीय – रेवती में केतु वेध, । अश्विनी में मंगल वेध,।)स.सि.योग–रात्रि ३:४०वजे तक। स.सि.योग.रा.३:४० वजेसे रा.अं. । चंद्रमा– मीन में रा. ३:४० तक।

श्रावण शुक्ल ४ चंद्र (२८ जुलाई) – उग्र देव प्रतिष्ठा, उ.फा. में रात ११:२९ बजे से रात्रिअंत ५:५३ बजे तक (परिहार चिंतनीय – पू.फा. में केतु युति। उ.फा. में मंगल युति।)रवियो.–सू.उ.से सा.५:४५वजे। चंद्रमा– सिंह में रा. १२:०९ तक।

श्रावण शुक्ल ६ बुध (३० जुलाई) – उग्र देव प्रतिष्ठा, हस्त में सूर्योदय से रात १०:०३ बजे एवं चित्रा में रात २:४८ बजे से रात्रिअंत ५:५४ बजे तक लग्न. ७,९,१०,११, (परिहार चिंतनीय – हस्त में शनि वेध। चित्रा में राहु वेध, ।)रवियो.–सू.उ.से रा.१०:०३वजे। स.सि.योग–रात्रि १०:०३वजे तक। चंद्रमा– कन्या में दिनरात।

श्रावण शुक्ल ७ गुरु (३१ जुलाई) – उग्र देव प्रतिष्ठा, चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से रात ५:०४ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ७,९,१०,११,१,२, (परिहार चिंतनीय – चित्रा में राहु वेध, ।) चंद्रमा– कन्या में दि. ११:२४ तक।

श्रावण शुक्ल ८ शुक्र (१ अगस्त) – उग्र देव प्रतिष्ठा, स्वाती में सायं ६:१५ बजे से रात ३:४५ बजे तक लग्न. १०,११,१,२,३,रवियो.–रा.३:४५ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– तुला में दिनरात।

श्रावण शुक्ल ९ रवि (३ अगस्त) – उग्र देव प्रतिष्ठा, अनुराधा में प्रातः ९:४३ बजे से रात्रिअंत ५:५५ बजे तक (परिहार चिंतनीय – अनुराधा में सूर्य वेध,।)रवियो.–प्रा.६:३८ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– वृश्चिक में दिनरात।

श्रावण शुक्ल १० चंद्र (४ अगस्त) – उग्र देव प्रतिष्ठा, अनुराधा में सूर्योदय से प्रातः ९:१३ बजे तक (परिहार चिंतनीय – अनुराधा में सूर्य वेध । ज्येष्ठा में बुधवेध दिन ३:४६ वजे से रात १०:२० वजे तक।)रवियो.–सू.उ.से रा.अं.। स.सि.योग–दिन ९:१३वजे तक। चंद्रमा– वृश्चिक में दिनरात।

श्रावण शुक्ल १४ शुक्र (८ अगस्त) – उग्र देव प्रतिष्ठा, श्रवण में रात १:५६ बजे से रात्रिअंत ५:५८ बजे तक रवियो.–सू.उ.से दि.२:२८वजे। स.सि.योग.दि.२:२८ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मकर में दिनरात।

श्रावण शुक्ल १५ शनि (९ अगस्त) – उग्र देव प्रतिष्ठा, श्रवण में एवं धनिष्ठा में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:५८ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, मुहूर्त्त हैं। स.सि.योग–दिन २:२४वजे तक। चंद्रमा– मकर में रा. २:१२ तक।

भाद्रपद कृष्ण १ रवि (१० अगस्त) – उग्र देव प्रतिष्ठा, धनिष्ठा में एवं शतभिषा में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:५८ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, मुहूर्त्त हैं। (परिहार चिंतनीय – अतिगंड दोष रात १२:०२ वजे से रात २:२६ वजे ।) चंद्रमा– कुंभ में दिनरात।

भाद्रपद कृष्ण २ चंद्र (११ अगस्त) – उग्र देव प्रतिष्ठा, शतभिषा में सूर्योदय से दिन १२:५९ बजे तक (परिहार चिंतनीय – पू.भा. में राहु युति।) चंद्रमा– कुंभ में दिनरात।

भाद्रपद कृष्ण ४ बुध (१३ अगस्त) – उग्र देव प्रतिष्ठा, उ.भा. में एवं रेवती में प्रातः ६:३३ बजे से रात्रिअंत ४:१६ बजे तक (परिहार चिंतनीय – शूल दोष दिन ४:०३ वजे से सायं ६:०३ वजे । रेवती में मंगल वेध,। उ.भा. में शनि युति।) चंद्रमा– मीन में दिनरात।

भाद्रपद कृष्ण ६ गुरु (१४ अगस्त) – उग्र देव प्रतिष्ठा, रेवती में सूर्योदय से प्रातः ९:०४ बजे तक (परिहार चिंतनीय – क्रान्तिसाम्य दोष रात ५:२७ से रातअंत वजे तक। गण्ड दोष दिन १:१० वजे से दिन ३:३४ वजे । अश्विनी में केतु वेध, ।)रवियो.–दि.९:०४ वजेसे रा.अं.। स.सि.योग–दिन ९:०४वजे तक। स.सि.योग.दि.९:०४ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मीन में दि. ९:०४ तक।

भाद्रपद कृष्ण ९ रवि (१७ अगस्त) – उग्र देव प्रतिष्ठा, रोहिणी में एवं मृगशिर में रात ७:२४ बजे से रात्रिअंत ६:०१ बजे तक लग्न ११,१२,१,३, चंद्रमा– वृष में दिनरात।

भाद्रपद कृष्ण १० चंद्र (१८ अगस्त) – उग्र देव प्रतिष्ठा, मृगशिर में सूर्योदय से प्रातः ६:२१ बजे तक (परिहार चिंतनीय – वज्र दोष रात ११:०३ वजे से रात १२:१५ वजे ।)अमृ.सि.योग–रात्रि २:०९वजे तक। चंद्रमा– वृष में दि. २:४४ तक।

भाद्रपद शुक्ल १ रवि (२४ अगस्त) – उग्र देव प्रतिष्ठा, उ.फा. में रात २:०९ बजे से रात्रिअंत ६:०४ बजे

तक (परिहार चिंतनीय – पू.फा. में केतु युति।)स.सि.योग.रा.२:०९ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– सिंह में दिनरात।

भाद्रपद शुक्ल २ चंद्र (२५ अगस्त) – उग्र देव प्रतिष्ठा, उ.फा. में एवं हस्त में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:०४ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, मुहूर्त्त हैं। (परिहार चिंतनीय – हस्त में शनि वेध,। हस्त में मंगल युति।)रवियो.–रा.३:५३ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– सिंह में दि. ८:३१ तक।

भाद्रपद शुक्ल ४ बुध (२७ अगस्त) – उग्र देव प्रतिष्ठा, चित्रा में दिन ३:४८ बजे से रात्रिअंत ६:०५ बजे तक (परिहार चिंतनीय – क्रान्तिसाम्य दोष रात ७:३१ से रात ११:५९ वजे तक। हस्त में शनि वेध। चित्रा में राहु वेध, । हस्त में मंगल युति।)रवियो.–सू.उ.से प्रा.६:०९वजे। स.सि.योग–प्रा. ६:०९वजे तक। चंद्रमा– कन्या में रा. ७:२९ तक।

भाद्रपद शुक्ल ५ गुरु (२८ अगस्त) – उग्र देव प्रतिष्ठा, चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:०५ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, मुहूर्त्त हैं। (परिहार चिंतनीय – चित्रा में राहु वेध, ।)रवियो.–दि.८:५० वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– तुला में दिनरात।

भाद्रपद शुक्ल ६ शुक्र (२९ अगस्त) – उग्र देव प्रतिष्ठा, स्वाती में सूर्योदय से दिन ११:४५ बजे तक लग्न. ७,रवियो.–सू.उ.से दि.११:४५वजे। चंद्रमा– तुला में दिनरात।

भाद्रपद शुक्ल ८ रवि (३१ अगस्त) – उग्र देव प्रतिष्ठा, अनुराधा में सायं ५:१२ बजे से सायं ५:२८ बजे तक (परिहार चिंतनीय – ज्येष्ठा में शुक्रवेध रात १२:०७ वजे से रातअंत ६:४६ वजे तक।) चंद्रमा– वृश्चिक में दिनरात।

भाद्रपद शुक्ल ११ बुध (३ सितम्वर) – उग्र देव प्रतिष्ठा, उ.षा. में रात ४:१९ बजे से रात्रिअंत ६:०७ बजे तक रवियो.–सू.उ.से रा.११:०४वजे। चंद्रमा– धनु में रा. ५:२० तक।

भाद्रपद शुक्ल १२ गुरु (४ सितम्वर) – उग्र देव प्रतिष्ठा, उ.षा. में एवं श्रवण में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:०७ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, मुहूर्त्त हैं। (परिहार चिंतनीय – श्रवण में बुधवेध रात १:१८ वजे से रातअंत ५:४६ वजे तक।) चंद्रमा– मकर में दिनरात।

भाद्रपद शुक्ल १३ शुक्र (५ सितम्वर) – उग्र देव प्रतिष्ठा, श्रवण में एवं धनिष्ठा में सूर्योदय से रात ३:१३ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ७,८,९,११,१,२, (परिहार चिंतनीय – अतिगंड दोष दिन १:५० वजे से दिन ४:१४ वजे ।)रवियो.–रा.११:३६ वजेसे रा.अं.। स.सि.योग–रात्रि ११:३६वजे तक। चंद्रमा– मकर में दिनरात।

आश्विन शुक्ल १ चंद्र (२२ सितम्वर) – उग्र देव प्रतिष्ठा, हस्त में रात २:५९ बजे से रात्रिअंत ६:१३ बजे तक (परिहार चिंतनीय – हस्त में शनि वेध,। उ.फा. में सूर्य युति। हस्त में बुध युति।) चंद्रमा– कन्या में दिनरात।

आश्विन शुक्ल ३ बुध (२४ सितम्वर) – उग्र देव प्रतिष्ठा, चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से रात ९:०७ बजे तक लग्न. ८,९,१०,११, (परिहार चिंतनीय – चित्रा में राहु वेध,। स्वाती में मंगल युति।)रवियो.–दि.४:२१ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– तुला में दिनरात।

आश्विन शुक्ल ४ शुक्र (२६ सितम्वर) – उग्र देव प्रतिष्ठा, अनुराधा में रात १०:१४ बजे से रात्रिअंत ६:१५ बजे तक रवियो.–रा.१०:१४ वजेसे रा.अं.। स.सि.योग.रा.१०:१४ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– तुला में दि. ३:२८ तक।

आश्विन शुक्ल ५ शनि (२७ सितम्वर) – उग्र देव प्रतिष्ठा, अनुराधा में सूर्योदय से रात १:१२ बजे तक लग्न ३,रवियो.–सू.उ.से प्रा.७:१५वजे, पुन:रा.१:१२से रा.अं। चंद्रमा– वृश्चिक में दिनरात।

आश्विन शुक्ल ९ बुध (१ अक्टूवर) – उग्र देव प्रतिष्ठा, उ.षा. में सायं ६:५९ बजे से रात्रिअंत ६:१६ बजे तक रवियो.–दि.८:०५ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– धनु में दि. २:२३ तक।

आश्विन शुक्ल १० गुरु (२ अक्टूवर) – उग्र देव प्रतिष्ठा, उ.षा. में एवं श्रवण में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:१७ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, मुहूर्त्त हैं। रवियो.–सू.उ.से रा.अं.। चंद्रमा– मकर में दिनरात।

आश्विन शुक्ल ११ शुक्र (३ अक्टूवर) – उग्र देव प्रतिष्ठा, श्रवण में सूर्योदय से प्रात: ७:०० बजे एवं धनिष्ठा में सायं ६:३० बजे से रात्रिअंत ६:१७ बजे तक ल. १२,१,२,३,४,५, (परिहार चिंतनीय – शूल दोष रात ९:४० वजे से रात ११:४० वजे ।)रवियो.–सू.उ.से दि.९:३०वजे। स.सि.योग–दिन ९:३०वजे तक। चंद्रमा– मकर में रा. ९:२१ तक।

आश्विन शुक्ल १२ शनि (४ अक्टूवर) – उग्र देव प्रतिष्ठा, धनिष्ठा में एवं शतभिषा में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:१७ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, मुहूर्त्त हैं। (परिहार चिंतनीय – गण्ड दोष रात ७:२१ वजे से रात ९:४५ वजे । शतभिषा में मंगल वेध,।) चंद्रमा– कुंभ में दिनरात।

आश्विन शुक्ल १३ रवि (५ अक्टूवर) – उग्र देव प्रतिष्ठा, शतभिषा में सूर्योदय से प्रात: ७:६० बजे तक लग्न. ७, (परिहार चिंतनीय – क्रान्तिसाम्य दोष दिन ११:४६ से दिन ३:४२ वजे तक। शतभिषा में भौम वेध । उ.भा. में सूर्य वेध, । पू.भा. में बुधवेध प्रात: ७:६० वजे से दिन १:३४ वजे तक।पू. भा. में शनि राहु युति।)रवियो.–प्रा.७:६० वजेसे रा.५:४६वजे। चंद्रमा– कुंभ में रा. १२:४३ तक।

आश्विन शुक्ल १४ चंद्र (६ अक्टूवर) – उग्र देव प्रतिष्ठा, उ.भा. में एवं रेवती में रात १०:५४ बजे से रात्रिअंत ६:१८ बजे तक लग्न ३,ल. ५, (परिहार चिंतनीय – उ.भा. में सूर्य वेध ।) चंद्रमा– मीन में दिनरात।

कार्तिक कृष्ण ५ शनि (११ अक्टूवर) – उग्र देव प्रतिष्ठा, रोहिणी में एवं मृगशिर में दिन २:१२ बजे से रात्रिअंत ६:२० बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, मुहूर्त्त हैं। अमृ.सि.योग–दिन ३:२५वजे तक। चंद्रमा– वृष में रा. २:२६ तक।

कार्तिक कृष्ण ६ रवि (१२ अक्टूवर) – उग्र देव प्रतिष्ठा, मृगशिर में सूर्योदय से दिन १०:५७ बजे तक लग्न. ७,रवियो.–दि.१:३९ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मिथुन में दिनरात।

कार्तिक कृष्ण ७ चंद्र (१३ अक्टूवर) – उग्र देव प्रतिष्ठा, पुनर्वसु में दिन १२:२८ बजे से रात्रिअंत ६:२१ बजे तक ल. ९,१०,११,१२,१,२,३,४,५, (परिहार चिंतनीय – पुनर्वसु में गुरु युति।)रवियो.–सू.उ. से दि.१२:२८वजे। चंद्रमा– मिथुन में रा. ५:५६ तक।

कार्तिक कृष्ण ९ बुध (१५ अक्टूवर) – उग्र देव प्रतिष्ठा, पुष्य में दिन १०:३० बजे से दिन १२:०२ बजे तक चंद्रमा– कर्क में दिनरात।

कार्तिक शुक्ल १ बुध (२२ अक्टूवर) – उग्र देव प्रतिष्ठा, स्वाती में रात ८:२० बजे से रात १:५४ बजे तक लग्न २,३,५, (परिहार चिंतनीय – विशाखा में मंगल बुध युति।) चंद्रमा– तुला में दिनरात।

कार्तिक शुक्ल २ गुरु (२३ अक्टूवर) – उग्र देव प्रतिष्ठा, अनुराधा में रात ४:५३ बजे से रात्रिअंत ६:२५ बजे तक (परिहार चिंतनीय – विशाखा में मंगल बुध युति।)रवियो.–रा.४:५३ वजेसे रा.अं.। स. सि.योग.रा.४:५३ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– तुला में रा. १०:०८ तक।

कार्तिक शुक्ल ३ शुक्र (२४ अक्टूवर) – उग्र देव प्रतिष्ठा, अनुराधा में सूर्योदय से रात १:२० बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ९,१०,१२,२,रवियो.–सू.उ.से प्रा.६:४६वजे। स.सि.योग–रात्रि ७:५३वजे तक। चंद्रमा– वृश्चिक में दिनरात।

कार्तिक शुक्ल ७ बुध (२९ अक्टूवर) – उग्र देव प्रतिष्ठा, उ.षा. में सूर्योदय से प्रात: ७:५२ बजे एवं श्रवण में रात ९:४७ बजे से रात्रिअंत ६:२९ बजे तक लग्न. ८,ल. ३,४,५,६, चंद्रमा– मकर में दिनरात।

कार्तिक शुक्ल ८ गुरु (३० अक्टूवर) – उग्र देव प्रतिष्ठा, श्रवण में सूर्योदय से दिन १०:०६ बजे तक लग्न. ९, (परिहार चिंतनीय – क्रान्तिसाम्य दोष रात १:०८ से रात ५:१८ वजे तक। गण्ड दोष प्रात: ७:२२ वजे से प्रात: ९:४६ वजे । धनिष्ठा में मंगल वेध,।)रवियो.–शा.६:२९ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मकर में दिनरात।

कार्तिक शुक्ल ९ शुक्र (३१ अक्टूवर) – उग्र देव प्रतिष्ठा, धनिष्ठा में एवं शतभिषा में दिन १०:०२ बजे से रात्रिअंत ६:३० बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ९,१०,११,१२,१,२, (परिहार चिंतनीय – धनिष्ठा में भौम वेध । शतभिषा में सूर्य वेध,।)रवियो.–सू.उ.से रा.अं.। चंद्रमा– मकर में प्रा. ६:४९ तक।

कार्तिक शुक्ल १० शनि (१ नवम्वर) – उग्र देव प्रतिष्ठा, शतभिषा में सूर्योदय से सायं ६:१३ बजे तक (परिहार चिंतनीय – व्याघात दोष रात २:०४ वजे से रातअंत ५:४० वजे । शतभिषा में सूर्य वेध । पू.भा. में शनि राहु युति।)रवियो.–सू.उ.से सा.६:१३वजे। चंद्रमा– कुंभ में दिनरात।

कार्तिक शुक्ल ११ रवि (२ नवम्वर) – उग्र देव प्रतिष्ठा, उ.भा. में दिन ४:५६ बजे से रात्रिअंत ४:२३ बजे तक (परिहार चिंतनीय – पू.भा. में शुक्रवेध ६:३१ से दिन ११:२१ वजे तक।पू.भा. में शनि राहु युति।)स.सि.योग.दि.४:५६ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– कुंभ में दि. ११:२१ तक।

कार्तिक शुक्ल १३ चंद्र (३ नवम्वर) – उग्र देव प्रतिष्ठा, उ.भा. में एवं रेवती में सूर्योदय से रात २:०४ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ८,१०,ल. ११,१२,१,२,३,४,५, (परिहार चिंतनीय – वज्र दोष रात ७:३४ वजे से रात ८:४६ वजे ।)रवियो.–दि.२:६० वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मीन में दिनरात।

मार्गशीर्ष कृष्ण २ शुक्र (७ नवम्वर) – उग्र देव प्रतिष्ठा, रोहिणी में दिन १२:४१ बजे से रात ९:२३ बजे तक चंद्रमा– वृष में दिनरात।

मार्गशीर्ष कृष्ण ५ रवि (९ नवम्वर) – उग्र देव प्रतिष्ठा, पुनर्वसु में रात ८:१४ बजे से रात्रिअंत ६:३५ बजे तक ल. ३,४,५,ल. ५,६, (परिहार चिंतनीय – पुनर्वसु में गुरु युति।) चंद्रमा– मिथुन में दिनरात।

मार्गशीर्ष कृष्ण ६ चंद्र (१० नवम्वर) – उग्र देव प्रतिष्ठा, पुनर्वसु में एवं पुष्य में सूर्योदय से रात १२:०७ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ८,१०,१२,२,ल. २,३,४, (परिहार चिंतनीय – पुनर्वसु में गुरु युति।)रवियो.–शा.६:५५ वजेसे रा.अं.। स.सि.योग.सा.६:५५ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मिथुन में दि. १:०९ तक।

मार्गशीर्ष शुक्ल ४ चंद्र (२४ नवम्वर) – उग्र देव प्रतिष्ठा, उ.षा. में रात ९:५० बजे से रात्रिअंत ६:४५ बजे तक (परिहार चिंतनीय – गण्ड दोष दिन १२:३५ वजे से दिन २:५९ वजे ।)रवियो.–सू.उ. से रा.९:५०वजे। चंद्रमा– धनु में रा. ४:२५ तक।

मार्गशीर्ष शुक्ल ६ बुध (२६ नवम्वर) – उग्र देव प्रतिष्ठा, श्रवण में एवं धनिष्ठा में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:४६ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, मुहूर्त्त हैं। रवियो.–सू.उ.से रा.१:३१वजे। चंद्रमा– मकर में दिनरात।

मार्गशीर्ष शुक्ल ७ गुरु (२७ नवम्वर) – उग्र देव प्रतिष्ठा, धनिष्ठा में सूर्योदय से रात १२:३१ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ८,१०,१२,१,२,३, (परिहार चिंतनीय – व्याघात दोष दिन १२:०८ वजे से दिन ३:४४ वजे । शतभिषा में राहु युति।) चंद्रमा– मकर में दि. २:०५ तक।

मार्गशीर्ष शुक्ल ८ शुक्र (२८ नवम्वर) – उग्र देव प्रतिष्ठा, शतभिषा में दिन १२:३० बजे से रात १२:१७ बजे तक लग्न. ,१२,१,२,३, (परिहार चिंतनीय – शतभिषा में राहु युति। पू.भा. में शनि युति।)रवियो.–रा.२:४९ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– कुंभ में दिनरात।

मार्गशीर्ष शुक्ल ९ शनि (२९ नवम्वर) – उग्र देव प्रतिष्ठा, उ.भा. में रात २:२० बजे से रात्रिअंत ६:४८ बजे तक (परिहार चिंतनीय – वज्र दोष प्रात: ९:२७ वजे से दिन १०:३९ वजे । पू.भा. में शनि युति।)रवियो.–सू.उ.से रा.अं.। चंद्रमा– कुंभ में रा. ८:२९ तक।

मार्गशीर्ष शुक्ल १० रवि (३० नवम्वर) – उग्र देव प्रतिष्ठा, उ.भा. में एवं रेवती में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:४९ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, मुहूर्त्त हैं। रवियो.–सू.उ.से रा.१:०६वजे। स.सि.योग–रात्रि १:०६वजे तक। चंद्रमा– मीन में दिनरात।

मार्गशीर्ष शुक्ल १४ गुरु (४ दिसम्बर) – उग्र देव प्रतिष्ठा, रोहिणी में सायं ६:३९ बजे से रात्रिअंत ४:५२ बजे तक रवियो.–सू.उ.से दि.२:५४वजे। चंद्रमा– वृष में दिनरात।

पौष कृष्ण १ शुक्र (५ दिसम्बर) – उग्र देव प्रतिष्ठा, रोहिणी में एवं मृगशिर में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:५२ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, मुहूर्त हैं। चंद्रमा– वृष में रा. १०:२१ तक।

पौष कृष्ण २ शनि (६ दिसम्बर) – उग्र देव प्रतिष्ठा, मृगशिर में सूर्योदय से प्रातः ८:५४ बजे तक लग्न. ९, (परिहार चिंतनीय – क्रान्तिसाम्य दोष रात ५:११ से रातअंत वजे तक। पुनर्वसु में गुरु युति।) चंद्रमा– मिथुन में दिनरात।

पौष कृष्ण ४ चंद्र (८ दिसम्बर) – उग्र देव प्रतिष्ठा, पुष्य में दिन ४:०८ बजे से रात ३:०१ बजे तक (परिहार चिंतनीय – पुष्य में सूर्य वेध ।)स.सि.योग–रात्रि ३:०१वजे तक। चंद्रमा– कर्क में दिनरात।

फाल्गुन कृष्ण ४ गुरु (५ फरवरी) – देव प्रतिष्ठा हस्त में रात १२:२५ बजे से रात्रिअंत तक ल. ७,८,९, (परिहार चिंतनीय – हस्त में शनि वेध,।) चंद्रमा– कन्या में दिनरात।

फाल्गुन कृष्ण ५ शुक्र (६ फरवरी) – देव प्रतिष्ठा हस्त में सूर्योदय से रात ११:४४ बजे एवं चित्रा में रात १:४४ बजे से रात्रिअंत तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ११,२,७,ल. ८,९, (परिहार चिंतनीय – हस्त में शनि वेध।) चंद्रमा– कन्या में दिनरात।

फाल्गुन कृष्ण ६ शनि (७ फरवरी) – देव प्रतिष्ठा चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से रात २:५७ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ११,२,७,८,ल. ८, (परिहार चिंतनीय – गण्ड दोष रात ११:४६ वजे से रात २:१० वजे । स्वाती में राहु वेध, ।)रवियो.–रा.२:३४ वजेसे रा.अं.। स.सि.योग.रा.२:३४ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– कन्या में दि. १:२९ तक।

फाल्गुन कृष्ण ७ रवि (८ फरवरी) – देव प्रतिष्ठा स्वाती में दिन ३:५८ बजे से रात ५:०२ बजे तक लग्न. ७,८,९, (परिहार चिंतनीय – क्रान्तिसाम्य दोष सायं ६:३७ से रात ११:१३ वजे तक। स्वाती में राहु वेध, । विशाखा में सूर्य वेध,। स्वाती में बुधवेध रात १०:२७ वजे से रातअंत ५:०६ वजे तक।)रवियो.–सू.उ.से रा.५:०६वजे। चंद्रमा– तुला में दिनरात।

फाल्गुन कृष्ण ९ बुध (११ फरवरी) – देव प्रतिष्ठा अनुराधा में प्रातः ९:५६ बजे से दिन १०:५१ बजे तक अमृ.सि.योग–दिन १०:५१वजे तक। चंद्रमा– वृश्चिक में दिनरात।

फाल्गुन शुक्ल १ बुध (१८ फरवरी) – देव प्रतिष्ठा शतभिषा में दिन ४:५४ बजे से रात ९:११ बजे तक (परिहार चिंतनीय – शतभिषा में शुक्र राहु युति। पू.भा. में बुध युति।) चंद्रमा– कुंभ में दिनरात।

फाल्गुन शुक्ल २ गुरु (१९ फरवरी) – देव प्रतिष्ठा उ.भा. में रात ८:४७ बजे से रात्रिअंत तक (परिहार चिंतनीय – पू.भा. में बुध युति। उ.भा. में शनि युति।) चंद्रमा– कुंभ में दि. २:५५ तक।

फाल्गुन शुक्ल ३ शुक्र (२० फरवरी) – देव प्रतिष्ठा उ.भा. में सूर्योदय से दिन २:३३ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ११,२,३, (परिहार चिंतनीय – उ.भा. में शनि युति।)रवियो.–रा.८:०२ वजेसे रा. अं.। अमृ.सि.योग.रा.८:०२ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मीन में दिनरात।

फाल्गुन शुक्ल ४ शनि (२१ फरवरी) – देव प्रतिष्ठा रेवती में दिन १२:५६ बजे से रात ७:०३ बजे तक (परिहार चिंतनीय – क्रान्तिसाम्य दोष रात ९:३४ से रात १:४१ वजे तक। अश्विनी में केतु वेध, ।)रवियो.–सू.उ.से रा.७:०३वजे। चंद्रमा– मीन में रा. ७:०३ तक।

चैत्र कृष्ण १ बुध (४ मार्च) – देव प्रतिष्ठा उ.फा. में प्रातः ७:४२ बजे से रात्रिअंत तक (परिहार चिंतनीय – शूल दोष प्रातः ८:५५ वजे से दिन १०:५५ वजे । पू.फा. में केतु युति।) चंद्रमा– सिंह में दि. १:५१ तक।

चैत्र कृष्ण २ गुरु (५ मार्च) – हस्त में दिन १०:११ बजे से रात्रिअंत तक देव प्रतिष्ठा मुहूर्त हैं। (परिहार चिंतनीय – क्रान्तिसाम्य दोष रात १:४६ से रात ६:१४ वजे तक। हस्त में शनि वेध,।) चंद्रमा– कन्या में दिनरात।

चैत्र कृष्ण ४ शनि (७ मार्च) – देव प्रतिष्ठा स्वाती में रात ७:१९ बजे से रात्रिअंत तक (परिहार चिंतनीय – चित्रा में सूर्य वेध । स्वाती में मंगल वेध,राहु वेध, । चित्रा में बुध वेध प्रातः ६:४० से दिन ११:२० वजे तक।)स.सि.योग.दि.११:२० वजेसे रा.अं। चंद्रमा– तुला में दिनरात।

चैत्र कृष्ण ५ रवि (८ मार्च) – देव प्रतिष्ठा स्वाती में सूर्योदय से दिन १:३६ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ११,२,३, (परिहार चिंतनीय – व्याघात दोष प्रातः ७:०६ वजे से दिन १०:४२ वजे । स्वाती में भौम वेध राहु वेध, ।) चंद्रमा– तुला में दिनरात।

उपनयन मुहूर्त

वैशाख कृष्ण ५ शुक्र (१८ अप्रैल) – उपनयन, मूल में दिन १२:६० बजे से सायं ५:११ बजे तक ल. ४,५,६, (परिहार चिंतनीय – ज्येष्ठा में भौम वेध ।) चंद्रमा– वृश्चिक में दि. ८:२४ तक।

वैशाख शुक्ल ३ बुध (३० अप्रैल) – उपनयन, रोहिणी में सूर्योदय से दिन १२:०७ बजे तक लग्न. ३, (परिहार चिंतनीय – मृगशिर में गुरु युति।)रवियो.–दि.४:२५ वजेसे रा.अं.। स.सि.योग–दिन ४:२५वजे तक। स.सि.योग.दि.४:२५ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– वृष में रा. ३:२० तक।

वैशाख शुक्ल ४ गुरु (१ मई) – उपनयन, मृगशिर में दिन ११:२६ बजे से दिन २:२९ बजे तक (परिहार चिंतनीय – मृगशिर में गुरु युति।)रवियो.–सू.उ.से दि.२:२९वजे। चंद्रमा– मिथुन में दिनरात।

वैशाख शुक्ल १० बुध (७ मई) – उपनयन, पू.फा. में सूर्योदय से सायं ६:२२ बजे तक लग्न. २,३,लग्न ३,४,५,६,७, (परिहार चिंतनीय – पूर्वा.फा. में बुधवेध दिन ११:४२ वजे से सायं ६:२२ वजे तक।उ.फा. में केतु युति।)रवियो.–सू.उ.से सा.६:२२वजे। चंद्रमा– सिंह में रा. १:०२ तक।

वैशाख शुक्ल ११ गुरु (८ मई) – उपनयन, उ.फा. में दिन १२:३२ बजे से रात ९:१२ बजे तक लग्न ४,५,६,७,८, (परिहार चिंतनीय – वज्र दोष रात २:०१ वजे से रात ३:१३ वजे । हस्त में शनि वेध,। उ.फा. में केतु युति।) चंद्रमा– कन्या में दिनरात।

वैशाख शुक्ल १२ शुक्र (९ मई) – उपनयन, हस्त में सूर्योदय से दिन २:६० बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न २,३,५,६, (परिहार चिंतनीय – हस्त में शनि वेध। चित्रा में राहु वेध, । हस्त में शुक्रवेध ५:४६ से दिन १०:४१ वजे तक।)रवियो.–रा.१२:१४ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– कन्या में दिनरात।

ज्येष्ठ कृष्ण ५ रवि (१८ मई) – उपनयन, उ.षा. में सूर्योदय से प्रातः ६:०० बजे तक (परिहार चिंतनीय – क्रान्तिसाम्य दोष दिन १:१२ से सायं ५:२१ वजे तक। श्रवण में सूर्य वेध, । उ.षा. में गुरु वेध प्रातः ५:४१ से प्रातः ६:२४ वजे तक।)रवियो.–शा.६:५३ वजेसे रा.अं.। स.सि.योग–सायं. ६:५३वजे तक। चंद्रमा– मकर में दिनरात।

ज्येष्ठ शुक्ल २ बुध (२८ मई) – उपनयन, मृगशिर में सूर्योदय से रात १२:३४ बजे तक लग्न. ३,६,९,१०,११, (परिहार चिंतनीय – शूल दोष रात ७:१३ वजे से रात ९:१३ वजे । मृगशिर में गुरु युति।)स.सि.योग–रात्रि १२:३४वजे तक। चंद्रमा– वृष में दि. १:४१ तक।

ज्येष्ठ शुक्ल ३ गुरु (२९ मई) – उपनयन, आर्द्रा में सूर्योदय से रात १०:४७ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ६,९,१०, (परिहार चिंतनीय – गण्ड दोष दिन ३:५४ वजे से सायं ६:१८ वजे ।)रवियो.–रा.१०:४७ वजेसे रा.अं.। स.सि.योग.रा.१०:४७ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मिथुन में दिनरात।

ज्येष्ठ शुक्ल १० गुरु (५ जून) – उपनयन, हस्त में सूर्योदय से प्रातः ९:१७ बजे तक (परिहार चिंतनीय – हस्त में शनि वेध।)रवियो.–सू.उ.से रा.६:३७वजे। चंद्रमा– कन्या में दिनरात।

ज्येष्ठ शुक्ल ११ शुक्र (६ जून) – उपनयन, चित्रा में दिन १०:१६ बजे से दिन ३:३५ बजे तक (परिहार चिंतनीय – हस्त में शनि वेध। चित्रा में राहु वेध, ।)रवियो.–सू.उ.से प्रा.६:३८वजे। चंद्रमा– कन्या में रा. ८:११ तक।

फाल्गुन कृष्ण ५ शुक्र (६ फरवरी) – उपनयन, हस्त में सूर्योदय से रात ११:४४ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ११,२,७, (परिहार चिंतनीय – हस्त में शनि वेध।) चंद्रमा– कन्या में दिनरात।

फाल्गुन शुक्ल २ गुरु (१९ फरवरी) – उपनयन, पू.भा. में सूर्योदय से दिन ३:५४ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ११,२,३, (परिहार चिंतनीय – पू.भा. में बुध युति। उ.भा. में शनि युति।) चंद्रमा– कुंभ में दि. २:५५ तक।

फाल्गुन शुक्ल ३ शुक्र (२० फरवरी) – उपनयन, उ.भा. में सूर्योदय से दिन २:३३ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ११,२,३, (परिहार चिंतनीय – उ.भा. में शनि युति।) रवियो.–रा.८:०२ वजेसे रा. अं.। अमृ.सि.योग.रा.८:०२ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मीन में दिनरात।

फाल्गुन शुक्ल ५ रवि (२२ फरवरी) – उपनयन, अश्विनी में सूर्योदय से दिन ११:०७ बजे तक लग्न. ११,२, (परिहार चिंतनीय – अश्विनी में केतु वेध, ।)रवियो.–शा.५:५३ वजेसे रा.अं.। स.सि. योग–सायं. ५:५३वजे तक। चंद्रमा– मेष में दिनरात।

नींव-खनन मुहूर्त

वैशाख कृष्ण १ चंद्र (१४ अप्रैल) – नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्ध , विशाखा में रात १२:१६ बजे से रात्रिअंत तक ल. ९,१०,११,१२, चंद्रमा– तुला में दिनरात।

वैशाख कृष्ण ६ शनि (१९ अप्रैल) – नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , पू.षा. में दिन १०:२३ बजे से सायं ६:२७ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं ल. ३,४,५,६,७,रवियो.–दि.१०:२३ वजेसे रा. अं.। चंद्रमा– धनु में दिनरात।

वैशाख कृष्ण ११ गुरु (२४ अप्रैल) – नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , पू.भा. में दिन १०:४५ बजे से रात्रिअंत तक अभिजित् मुहूर्त एवं ल. ३,४,५,ल. ५,६,७,८,९,१०,११,१२, (परिहार चिंतनीय – पू.भा. में शुक्र शनि राहु युति।) चंद्रमा– कुंभ में रा. ३:२२ तक।

वैशाख कृष्ण १२ शुक्र (२५ अप्रैल) – नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित (अग्निबाण ९:३० से, त्यागकर), पू.भा. में सूर्योदय से प्रातः ८:४९ बजे तक लग्न. २, (परिहार चिंतनीय – पू.भा. में शुक्र शनि राहु युति। उ.भा. में बुध शुक्र युति।) चंद्रमा– मीन में दिनरात।

वैशाख शुक्ल १ चंद्र (२८ अप्रैल) – नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , भरणी में एवं कृतिका में रात ९:१३ बजे से रात्रिअंत तक ल. ८,९,१०,११,१२, (परिहार चिंतनीय – भरणी में सूर्य युति।) चंद्रमा– मेष में रा. २:५५ तक।

वैशाख शुक्ल ८ चंद्र (५ मई) – नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्ध (अग्निबाण १६:३६ तक, त्यागकर), अश्लेषा में सूर्योदय से प्रातः ७:३६ बजे तक लग्न. २, (परिहार चिंतनीय – मघा में सूर्य वेध,।)रवियो.–दि.२:०६ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– कर्क में दि. २:०६ तक।

वैशाख शुक्ल १० बुध (७ मई) – नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्ध , पू.फा. में सूर्योदय से सायं ६:२२ बजे तक लग्न. २,३,लग्न ३,४,५,६,७, (परिहार चिंतनीय – पूर्वा.फा. में बुधवेध दिन ११:४२ वजे से सायं ६:२२ वजे तक।उ.फा. में केतु युति।)रवियो.–सू.उ.से सा.६:२२वजे। चंद्रमा– सिंह में रा. १:०२ तक।

वैशाख शुक्ल १५ चंद्र (१२ मई) – नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्ध , विशाखा में प्रातः ९:२० बजे से रात्रिअंत तक अभिजित् मुहूर्त एवं ल. ३,४,५,६,७,८,९,ल. ९,१०,११,१२,रवियो.–सू.उ.से प्रा. ६:२२वजे। चंद्रमा– तुला में रा. २:३२ तक।

श्रावण कृष्ण ९ शनि (१९ जुलाई) – नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित (अग्निबाण २०:५८ तक,

त्यागकर), भरणी में एवं कृतिका में दिन २:४४ बजे से रात्रि १:३० बजे तक लग्न ८,९,१०,११,१२,१, चंद्रमा– मेष में दिनरात।

श्रावण शुक्ल १ शुक्र (२५ जुलाई) – नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , अश्लेषा में रात ११:२६ बजे से रात्रिअंत ५:५२ बजे तक (परिहार चिंतनीय – पुष्य में सूर्य युति। अश्लेषा में बुध युति।) चंद्रमा– कर्क में दिनरात।

श्रावण शुक्ल २ शनि (२६ जुलाई) – नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , मघा में रात ४:०८ बजे से रात्रिअंत ५:५२ बजे तक (परिहार चिंतनीय – अश्लेषा में बुध युति।) चंद्रमा– कर्क में दि. ३:५८ तक।

श्रावण शुक्ल १२ बुध (६ अगस्त) – नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्ध (अग्निबाण १५:४७ से, त्यागकर), मूल में प्रात: ८:३१ बजे से दिन १२:५९ बजे तक लग्न. ७, (परिहार चिंतनीय – पूर्वाषाढ. में गुरु वेध दिन १२:५९ वजे से रात ७:१७ वजे तक।) चंद्रमा– धनु में दिनरात।

कार्तिक कृष्ण १२ शनि (१८ अक्टूबर) – नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , पू.फा. में सूर्योदय से दिन १२:२३ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ७,९, (परिहार चिंतनीय – पू.फा. में केतु युति।) चंद्रमा– सिंह में रा. १०:१९ तक।

कार्तिक शुक्ल १ बुध (२२ अक्टूबर) – नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , विशाखा में रात १:५४ बजे से रात्रिअंत ६:२५ बजे तक (परिहार चिंतनीय – विशाखा में मंगल बुध युति।) चंद्रमा– तुला में दिनरात।

कार्तिक शुक्ल २ गुरु (२३ अक्टूबर) – नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , विशाखा में सूर्योदय से रात ४:५३ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ९,१०,१२,२,लग्न ३,५,६, (परिहार चिंतनीय – विशाखा में मंगल बुध युति।)रवियो.–रा.४:५३ वजेसे रा.अं.। स.सि.योग.रा.४:५३ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– तुला में रा. १०:०८ तक।

कार्तिक शुक्ल ६ चंद्र (२७ अक्टूबर) – नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , पू.षा. में दिन १:२८ बजे से रात ६:२७ बजे तक रवियो.–दि.१:२८ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– धनु में दिनरात।

कार्तिक शुक्ल १० शनि (१ नवम्वर) – नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्ध , पू.भा. में सायं ६:१३ बजे से रात्रि ८:२० बजे तक (परिहार चिंतनीय – व्याघात दोष रात २:०४ वजे से रातअंत ५:४० वजे । शतभिषा में सूर्य वेध । पू.भा. में शनि राहु युति।)रवियो.–सू.उ.से सा.६:१३वजे। चंद्रमा– कुंभ में दिनरात।

कार्तिक शुक्ल १५ बुध (५ नवम्वर) – नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्ध , भरणी में प्रात: ९:४२ बजे से दिन ११:३० बजे तक ल. ९, (परिहार चिंतनीय – अश्विनी में केतु वेध, । भरणी में बुधवेध दिन २:५६ वजे से रात ८:१० वजे तक।) चंद्रमा– मेष में दिनरात।

मार्गशीर्ष कृष्ण १ गुरु (६ नवम्वर) – नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्ध (अग्निबाण १४:५५ से, त्यागकर), कृतिका में प्रात: ७:०९ बजे से रात्रि ३:४८ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं ल. ८,९,१०,११,ल. ११,१२,१,२,३,४,५,६, चंद्रमा– मेष में दि. ११:५३ तक।

मार्गशीर्ष कृष्ण ८ बुध (१२ नवम्वर) – नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , अश्लेषा में एवं मघा में सूर्योदय से रात १०:५५ बजे तक लग्न. ८,१०,१२,ल. २,३,४, (परिहार चिंतनीय – अश्लेषा में भौम वेध ।) चंद्रमा– कर्क में सा. ६:३९ तक।

मार्गशीर्ष कृष्ण ९ गुरु (१३ नवम्वर) – नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , पू.फा. में रात ११:३२ बजे से रात्रिअंत ६:३७ बजे तक ल. ४,५,६, (परिहार चिंतनीय – पू.फा. में केतु युति।) चंद्रमा– सिंह में दिनरात।

मार्गशीर्ष शुक्ल २ शनि (२२ नवम्वर) – नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , मूल में दिन ४:४६ बजे से रात्रिअंत ६:४३ बजे तक (परिहार चिंतनीय – मूल में गुरु वेध दिन ४:४६ वजे से रात ११:२७ वजे तक।ज्येष्ठा में मंगल युति।) चंद्रमा– वृश्चिक में दि. ४:४६ तक।

मार्गशीर्ष शुक्ल ४ चंद्र (२४ नवम्वर) – नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , पू.षा. में रात ९:१९ बजे से रात ९:५० बजे तक लग्न ४, (परिहार चिंतनीय – गण्ड दोष दिन १२:३५ वजे से दिन २:५९ वजे ।)रवियो.–सू.उ.से रा.९:५०वजे। चंद्रमा– धनु में रा. ४:२५ तक।

फाल्गुन कृष्ण ८ चंद्र (९ फरवरी) – नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , विशाखा में सूर्योदय से रात ६:६० बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ११,२,३,६,७,८,९, (परिहार चिंतनीय – विशाखा में सूर्य वेध ।)स.सि.योग.रा.७:५६ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– तुला में रा. १:१३ तक।

फाल्गुन कृष्ण ११ शुक्र (१३ फरवरी) – नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , मूल में एवं पू.षा. में सूर्योदय से रात्रिअंत तक नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , मुहूर्त हैं। (परिहार चिंतनीय – मूल में गुरु वेध प्रात: ९:३५ वजे से दिन ४:०९ वजे तक।) चंद्रमा– धनु में दिनरात।

फाल्गुन कृष्ण १२ शनि (१४ फरवरी) – नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित (अग्निबाण २७:३५ से, त्यागकर), पू.षा. में सूर्योदय से दिन ३:५९ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ११,२, चंद्रमा– धनु में रा. १२:४० तक।

फाल्गुन शुक्ल १ बुध (१८ फरवरी) – नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , पू.भा. में रात ९:११ बजे से रात्रिअंत तक (परिहार चिंतनीय – शतभिषा में शुक्र राहु युति। पू.भा. में बुध युति।) चंद्रमा– कुंभ में दिनरात।

फाल्गुन शुक्ल २ गुरु (१९ फरवरी) – नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , पू.भा. में सूर्योदय से रात ८:४७ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ११,२,३, (परिहार चिंतनीय – पू.भा. में बुध युति। उ.भा. में शनि युति।) चंद्रमा– कुंभ में दि. २:५५ तक।

फाल्गुन शुक्ल ६ चंद्र (२३ फरवरी) – नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित (अग्निबाण २५:४६ से, त्यागकर), भरणी में सूर्योदय से दिन ४:३४ बजे तक लग्न. ११,रवियो.–सू.उ.से दि.४:३४वजे। चंद्रमा– मेष में रा. १०:१४ तक।

गृहारंभ मुहूर्त

वैशाख कृष्ण १ चंद्र (१४ अप्रैल) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध , स्वाती में सूर्योदय से रात १२:१६ बजे तक लग्न. २,अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न २, चंद्रमा– तुला में दिनरात।

वैशाख कृष्ण ८ चंद्र (२१ अप्रैल) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , उ.षा. में एवं श्रवण में सूर्योदय से रात ७:०४ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न २,ल. ४,५,६,७,स.सि.योग.दि.१२:३९ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मकर में दिनरात।

वैशाख कृष्ण १० बुध (२३ अप्रैल) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , शतभिषा में दिन ४:४४ बजे से रात्रिअंत तक ल. ६,७,८,९,१०,११,१२, चंद्रमा– कुंभ में दिनरात।

वैशाख कृष्ण ११ गुरु (२४ अप्रैल) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , शतभिषा में सूर्योदय से दिन १०:४५ बजे तक लग्न. २,३, (परिहार चिंतनीय – पू.भा. में शुक्र शनि राहु युति।) चंद्रमा– कुंभ में रा. ३:२२ तक।

वैशाख शुक्ल ३ बुध (३० अप्रैल) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , रोहिणी में सूर्योदय से दिन १२:०७ बजे तक लग्न. ३, (परिहार चिंतनीय – मृगशिर में गुरु युति।)रवियो.–दि.४:२५ वजेसे रा.अं.। स.सि.योग–दिन ४:२५वजे तक। स.सि.योग.दि.४:२५ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– वृष में रा. ३:२० तक।

वैशाख शुक्ल ४ गुरु (१ मई) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , मृगशिर में दिन ११:२६ बजे से दिन २:२९ बजे तक (परिहार चिंतनीय – मृगशिर में गुरु युति।)रवियो.–सू.उ.से दि.२:२९वजे। चंद्रमा– मिथुन में दिनरात।

वैशाख शुक्ल ५ शुक्र (२ मई) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , पुनर्वसु में दिन १:१२ बजे से रात्रिअंत तक ल. ५,६,७,८,९,१०,११,१२, (परिहार चिंतनीय – शूल दोष रात ३:२३ वजे से रातअंत ५:२३ वजे ।)रवियो.–दि.१:१२ वजेसे रा.अं.। स.सि.योग.दि.१:१२ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मिथुन में दिनरात।

वैशाख शुक्ल ६ शनि (३ मई) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , पुनर्वसु में सूर्योदय से दिन १२:४० बजे तक लग्न. २,अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न २, (परिहार चिंतनीय – गण्ड दोष रात १:४५ वजे से रातअंत ४:०९ वजे । पुष्य में मंगल युति।)रवियो.–सू.उ.से दि.१२:४०वजे। चंद्रमा– मिथुन में प्रा. ६:३९ तक।

वैशाख शुक्ल १० बुध (७ मई) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध , उ.फा. में सायं ६:२२ बजे से रात्रिअंत तक ल. ७,८,९,१०,११,१२, (परिहार चिंतनीय – पूर्वा.फा. में बुधवेध दिन ११:४२ वजे से सायं ६:२२ वजे तक।उ.फा. में केतु युति।)रवियो.–सू.उ.से सा.६:२२वजे। चंद्रमा– सिंह में रा. १:०२ तक।

वैशाख शुक्ल ११ गुरु (८ मई) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध , उ.फा. में दिन १२:३२ बजे से रात ९:१२ बजे तक लग्न ४,५,६,७,८, (परिहार चिंतनीय – वज्र दोष रात २:०१ वजे से रात ३:१३ वजे । हस्त में शनि वेध,। उ.फा. में केतु युति।) चंद्रमा– कन्या में दिनरात।

वैशाख शुक्ल १२ शुक्र (९ मई) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध , चित्रा में रात १२:१४ बजे से रात्रिअंत तक ल. १०,११,१२, (परिहार चिंतनीय – हस्त में शनि वेध। चित्रा में राहु वेध, । हस्त में शुक्र. ,वेध ५:४६ से दिन १०:४१ वजे तक।)रवियो.–रा.१२:१४ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– कन्या में दिनरात।

वैशाख शुक्ल १३ शनि (१० मई) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध , चित्रा में सूर्योदय से सायं ५:३४ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न २,३,५,६,७, (परिहार चिंतनीय – चित्रा में राहु वेध, ।)रवियो.–सू.उ.से रा.३:२१वजे, पुन:रा.१३:१२से रा.अं.। स.सि.योग.रा.३:२१ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– कन्या में दि. १:४७ तक।

श्रावण कृष्ण ७ गुरु (१७ जुलाई) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , रेवती में एवं अश्विनी में प्रात: ८:०८ बजे से रात्रिअंत ५:४८ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , मुहूर्त हैं। (परिहार चिंतनीय – रेवती में केतु वेध, । अश्विनी में मंगल वेध,।)स.सि.योग–रात्रि ३:४०वजे तक। स.सि. योग.रा.३:४० वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मीन में रा. ३:४० तक।

श्रावण कृष्ण ८ शुक्र (१८ जुलाई) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित (अग्निबाण १९:४९ से, त्यागकर), अश्विनी में सूर्योदय से सायं ५:०३ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ६,७,८,९, (परिहार चिंतनीय – अश्विनी में भौम वेध ।)स.सि.योग–रात्रि २:१५वजे तक। चंद्रमा– मेष में दिनरात।

श्रावण कृष्ण ११ चंद्र (२१ जुलाई) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , रोहिणी में एवं मृगशिर में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:५० बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , मुहूर्त हैं। (परिहार चिंतनीय – मृगशिर में शुक्र युति।)स.सि.योग–रात्रि ९:०८वजे तक। अमृ.सि.योग.रा.९:०८ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– वृष में दिनरात।

श्रावण शुक्ल ६ बुध (३० जुलाई) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , हस्त में सूर्योदय से रात १०:०३ बजे तक लग्न. ७,९,१०,११, (परिहार चिंतनीय – हस्त में शनि वेध। चित्रा में राहु वेध, ।)रवियो. –सू.उ.से रा.१०:०३वजे। स.सि.योग–रात्रि १०:०३वजे तक। चंद्रमा– कन्या में दिनरात।

।। इस पंचांग के पक्ष पृष्ठों पर बली शुभ लग्नों में युतिवेधादि परिहार विद्यमान है।।

श्रावण शुक्ल ७ गुरु (३१ जुलाई) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध , स्वाती में रात १२:४९ बजे से रात ५:०४ बजे तक (परिहार चिंतनीय – चित्रा में राहु वेध, ।) चंद्रमा– कन्या में दि. ११:२४ तक।

श्रावण शुक्ल ८ शुक्र (१ अगस्त) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध , स्वाती में सायं ६:१५ बजे से रात ३:४५ बजे तक लग्न. १०,११,१,२,३,रवियो.–रा.३:४५ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– तुला में दिनरात।

श्रावण शुक्ल १२ बुध (६ अगस्त) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध (अग्निबाण १५:४७ से, त्यागकर), मूल में प्रात: ८:३१ बजे से दिन १२:५९ बजे तक लग्न. ७, (परिहार चिंतनीय – पूर्वाषाढ. में गुरु वेध दिन १२:५९ वजे से रात ७:१७ वजे तक।) चंद्रमा– धनु में दिनरात।

श्रावण शुक्ल १३ गुरु (७ अगस्त) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध (अग्निबाण १६:५० तक, त्यागकर), उ.षा. में दिन २:०१ बजे से दिन २:३० बजे तक रवियो.–दि.२:०१ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– धनु में रा. ८:११ तक।

श्रावण शुक्ल १४ शुक्र (८ अगस्त) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध , श्रवण में रात १:५६ बजे से रात्रिअंत ५:५८ बजे तक रवियो.–सू.उ.से दि.२:२८वजे। स.सि.योग.दि.२:२८ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मकर में दिनरात।

श्रावण शुक्ल १५ शनि (९ अगस्त) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध , श्रवण में एवं धनिष्ठा में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:५८ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध , मुहूर्त्त हैं। स.सि.योग–दिन २:२४वजे तक। चंद्रमा– मकर में रा. २:१२ तक।

कार्तिक शुक्ल १ बुध (२२ अक्टूवर) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , स्वाती में रात ८:२० बजे से रात १:५४ बजे तक लग्न २,३,५, (परिहार चिंतनीय – विशाखा में मंगल बुध युति।) चंद्रमा– तुला में दिनरात।

कार्तिक शुक्ल २ गुरु (२३ अक्टूवर) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , अनुराधा में रात ४:५३ बजे से रात्रिअंत ६:२५ बजे तक (परिहार चिंतनीय – विशाखा में मंगल बुध युति।)रवियो.–रा.४:५३ वजेसे रा.अं.। स.सि.योग.रा.४:५३ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– तुला में रा. १०:०८ तक।

कार्तिक शुक्ल ३ शुक्र (२४ अक्टूवर) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , अनुराधा में सूर्योदय से रात १:२० बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ९,१०,१२,२,रवियो.–सू.उ.से प्रा.६:४६वजे। स.सि.योग–रात्रि ७:५३वजे तक। चंद्रमा– वृश्चिक में दिनरात।

कार्तिक शुक्ल ७ बुध (२९ अक्टूवर) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध (अग्निबाण १५:०६ तक, त्यागकर), श्रवण में रात ९:४७ बजे से रात्रिअंत ६:२९ बजे तक ल. ३,४,५,६, चंद्रमा– मकर में दिनरात।

कार्तिक शुक्ल ८ गुरु (३० अक्टूवर) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध , श्रवण में सूर्योदय से दिन १०:०६ बजे तक लग्न. ९, (परिहार चिंतनीय – क्रान्तिसाम्य दोष रात १:०८ से रात ५:१८ वजे तक। गण्ड दोष प्रात: ७:२२ वजे से प्रात: ९:४६ वजे । धनिष्ठा में मंगल वेध,।)रवियो.–शा.६:२९ वजेसे रा. अं.। चंद्रमा– मकर में दिनरात।

कार्तिक शुक्ल ९ शुक्र (३१ अक्टूवर) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध , शतभिषा में सायं ६:४५ बजे से रात्रिअंत ६:३० बजे तक (परिहार चिंतनीय – धनिष्ठा में भौम वेध । शतभिषा में सूर्य वेध,।)रवियो.–सू.उ.से रा.अं.। चंद्रमा– मकर में प्रा. ६:४९ तक।

कार्तिक शुक्ल १० शनि (१ नवम्वर) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध , शतभिषा में सूर्योदय से सायं ६:१३ बजे तक (परिहार चिंतनीय – व्याघात दोष रात २:०४ वजे से रातअंत ५:४० वजे । शतभिषा में सूर्य वेध । पू.भा. में शनि राहु युति।)रवियो.–सू.उ.से सा.६:१३वजे। चंद्रमा– कुंभ में दिनरात।

कार्तिक शुक्ल १३ चंद्र (३ नवम्वर) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध , रेवती में दिन २:६० बजे से रात २:०४ बजे तक ल. ११,१२,१,२,३,४,५, (परिहार चिंतनीय – वज्र दोष रात ७:३४ वजे से रात ८:४६ वजे ।)रवियो.–दि.२:६० वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मीन में दिनरात।

कार्तिक शुक्ल १५ बुध (५ नवम्वर) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध , अश्विनी में प्रात: ८:४६ बजे से प्रात: ९:४२ बजे तक लग्न. ८, (परिहार चिंतनीय – अश्विनी में केतु वेध, । भरणी में बुधवेध दिन २:५६ वजे से रात ८:१० वजे तक।) चंद्रमा– मेष में दिनरात।

मार्गशीर्ष कृष्ण २ शुक्र (७ नवम्वर) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध (अग्निबाण १४:५१ तक, त्यागकर), रोहिणी में दिन १२:४१ बजे से रात ९:२३ बजे तक चंद्रमा– वृष में दिनरात।

मार्गशीर्ष कृष्ण ६ चंद्र (१० नवम्वर) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , पुष्य में सायं ६:५५ बजे से रात १२:०७ बजे तक ल. २,३,४, (परिहार चिंतनीय – पुनर्वसु में गुरु युति।)रवियो.–शा.६:५५ वजेसे रा.अं.। स.सि.योग.सा.६:५५ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मिथुन में दि. १:०९ तक।

मार्गशीर्ष कृष्ण ११ शनि (१५ नवम्वर) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित (अग्निबाण १३:४९ से, त्यागकर), उ.फा. में एवं हस्त में प्रात: ७:३९ बजे से रात्रिअंत ६:३९ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित (अग्निबाण १३:४९ से, त्यागकर), मुहूर्त्त हैं। चंद्रमा– कन्या में दिनरात।

मार्गशीर्ष शुक्ल २ शनि (२२ नवम्वर) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , मूल में दिन ४:४६ बजे से रात्रिअंत ६:४३ बजे तक (परिहार चिंतनीय – मूल में गुरु वेध दिन ४:४६ वजे से रात ११:२७ वजे तक।ज्येष्ठा में मंगल युति।) चंद्रमा– वृश्चिक में दि. ४:४६ तक।

मार्गशीर्ष शुक्ल ६ बुध (२६ नवम्वर) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध , श्रवण में सूर्योदय से रात १:३१ बजे तक लग्न. १०,१२,१,३,रवियो.–सू.उ.से रा.१:३१वजे। चंद्रमा– मकर में दिनरात।

मार्गशीर्ष शुक्ल ८ शुक्र (२८ नवम्वर) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध (अग्निबाण १०:४५ तक, त्यागकर), शतभिषा में दिन १२:३० बजे से रात १२:१७ बजे तक लग्न. ,१२,१,२,३, (परिहार चिंतनीय – शतभिषा में राहु युति। पू.भा. में शनि युति।)रवियो.–रा.२:४९ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– कुंभ में दिनरात।

मार्गशीर्ष शुक्ल ९ शनि (२९ नवम्वर) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध , उ.भा. में रात २:२० बजे से रात्रिअंत ६:४८ बजे तक (परिहार चिंतनीय – वज्र दोष प्रात: ९:२७ वजे से दिन १०:३९ वजे । पू.भा. में शनि युति।)रवियो.–सू.उ.से रा.अं.। चंद्रमा– कुंभ में रा. ८:२९ तक।

मार्गशीर्ष शुक्ल १४ गुरु (४ दिसम्वर) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध , रोहिणी में सायं ६:३९ बजे से रात्रिअंत ४:५२ बजे तक रवियो.–सू.उ.से दि.२:५४वजे। चंद्रमा– वृष में दिनरात।

फाल्गुन कृष्ण ५ शुक्र (६ फरवरी) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , चित्रा में रात १:४४ बजे से रात्रिअंत तक ल. ८,९, (परिहार चिंतनीय – हस्त में शनि वेध।) चंद्रमा– कन्या में दिनरात।

फाल्गुन कृष्ण ६ शनि (७ फरवरी) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , स्वाती में रात २:३४ बजे से रात २:५७ बजे तक ल. ८, (परिहार चिंतनीय – गण्ड दोष रात ११:४६ वजे से रात २:१० वजे । स्वाती में राहु वेध, ।)रवियो.–रा.२:३४ वजेसे रा.अं.। स.सि.योग.रा.२:३४ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– कन्या में दि. १:२९ तक।

फाल्गुन कृष्ण ९ बुध (११ फरवरी) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित (अग्निबाण २८:२१ से, त्यागकर), अनुराधा में प्रात: ९:५६ बजे से दिन १०:५१ बजे तक अमृ.सि.योग–दिन १०:५१वजे तक। चंद्रमा– वृश्चिक में दिनरात।

फाल्गुन कृष्ण ११ शुक्र (१३ फरवरी) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , मूल में सूर्योदय से दिन ४:०९ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ११,२,३, (परिहार चिंतनीय – मूल में गुरु वेध प्रात: ९:३५ वजे से दिन ४:०९ वजे तक।) चंद्रमा– धनु में दिनरात।

फाल्गुन शुक्ल १ बुध (१८ फरवरी) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , शतभिषा में दिन ४:५४ बजे से रात ९:११ बजे तक (परिहार चिंतनीय – शतभिषा में शुक्र राहु युति। पू.भा. में बुध युति।) चंद्रमा– कुंभ में दिनरात।

फाल्गुन शुक्ल २ गुरु (१९ फरवरी) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , उ.भा. में रात ८:४७ बजे से रात्रिअंत तक (परिहार चिंतनीय – पू.भा. में बुध युति। उ.भा. में शनि युति।) चंद्रमा– कुंभ में दि. २:५५ तक।

फाल्गुन शुक्ल ३ शुक्र (२० फरवरी) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , उ.भा. में सूर्योदय से दिन २:३३ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ११,२,३, (परिहार चिंतनीय – उ.भा. में शनि युति।)रवियो.–रा.८:०२ वजेसे रा.अं.। अमृ.सि.योग.रा.८:०२ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मीन में दिनरात।

फाल्गुन शुक्ल ४ शनि (२१ फरवरी) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , रेवती में दिन १२:५६ बजे से रात ७:०३ बजे तक (परिहार चिंतनीय – क्रान्तिसाम्य दोष रात ९:३४ से रात १:४१ वजे तक। अश्विनी में केतु वेध, ।)रवियो.–सू.उ.से रा.७:०३वजे। चंद्रमा– मीन में रा. ७:०३ तक।

नवनिर्मित गृह प्रवेश मुहूर्त

वैशाख कृष्ण ८ चंद्र (२१ अप्रैल) – नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध), उ.षा. में सूर्योदय से दिन १२:३९ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न २,स.सि.योग.दि.१२:३९ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मकर में दिनरात।

वैशाख कृष्ण १० बुध (२३ अप्रैल) – नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध), शतभिषा में दिन ४:४४ बजे से रात्रिअंत तक ल. ६,७,८,९,१०,११,१२, चंद्रमा– कुंभ में दिनरात।

वैशाख कृष्ण ११ गुरु (२४ अप्रैल) – नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध), शतभिषा में सूर्योदय से दिन १०:४५ बजे तक लग्न. २,३, (परिहार चिंतनीय – पू.भा. में शुक्र शनि राहु युति।) चंद्रमा– कुंभ में रा. ३:२२ तक।

वैशाख कृष्ण १२ शुक्र (२५ अप्रैल) – नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध), उ.भा. में प्रात: ८:४९ बजे से दिन ११:४० बजे तक ल. २,३,४, (परिहार चिंतनीय – पू.भा. में शुक्र शनि राहु युति। उ.भा. में बुध शुक्र युति।) चंद्रमा– मीन में दिनरात।

वैशाख शुक्ल ३ बुध (३० अप्रैल) – नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध नहीं), रोहिणी में सूर्योदय से दिन १२:०७ बजे तक लग्न. ३, (परिहार चिंतनीय – मृगशिर में गुरु युति।)रवियो.–दि.४:२५ वजेसे रा.अं.। स.सि.योग–दिन ४:२५वजे तक। स.सि.योग.दि.४:२५ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– वृष में रा. ३:२० तक।

वैशाख शुक्ल ४ गुरु (१ मई) – नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध नहीं), मृगशिर में दिन ११:२६ बजे से दिन २:२९ बजे तक (परिहार चिंतनीय – मृगशिर में गुरु युति।)रवियो.–सू.उ.से दि.२:२९वजे। चंद्रमा– मिथुन में दिनरात।

वैशाख शुक्ल १० बुध (७ मई) – नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध), उ.फा. में सायं ६:२२ बजे से रात्रिअंत तक ल. ७,८,९,१०,११,१२, (परिहार चिंतनीय – पूर्वा.फा. में बुधवेध दिन ११:४२ वजे से सायं ६:२२ वजे तक।उ.फा. में केतु युति।)रवियो.–सू.उ.से सा.६:२२वजे। चंद्रमा– सिंह में रा. १:०२ तक।

वैशाख शुक्ल ११ गुरु (८ मई) – नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध), उ.फा. में दिन १२:३२ बजे से रात ९:१२ बजे तक लग्न ४,५,६,७,८, (परिहार चिंतनीय – वज्र दोष रात २:०१ वजे से रात ३:१३ वजे । हस्त में शनि वेध,। उ.फा. में केतु युति।) चंद्रमा– कन्या में दिनरात।

वैशाख शुक्ल १२ शुक्र (९ मई) – नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध), चित्रा में रात १२:१४ बजे से रात्रिअंत तक ल. १०,११,१२, (परिहार चिंतनीय – हस्त में शनि वेध। चित्रा में राहु वेध, । हस्त में

शुक्रवेध ५:४६ से दिन १०:४१ वजे तक।)रवियो.–रा.१२:१४ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– कन्या में दिनरात।

ज्येष्ठ कृष्ण ६ चंद्र (१९ मई) – नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध नहीं), धनिष्ठा में रात ७:३१ बजे से रात्रिअंत ५:१९ बजे तक (परिहार चिंतनीय – श्रवण में सूर्य वेध ।)रवियो.–सू.उ.से रा.७:३१वजे। स.सि.योग–रात्रि ७:३१वजे तक। चंद्रमा– मकर में दिनरात।

ज्येष्ठ कृष्ण १० गुरु (२२ मई) – नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध), उ.भा. में रात १:१३ बजे से रात्रिअंत तक ल. ११,१२,१, (परिहार चिंतनीय – पू.भा. में राहु युति। उ.भा. में शनि युति।) चंद्रमा– कुंभ में दि. १२:०७ तक।

ज्येष्ठ शुक्ल २ बुध (२८ मई) – नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध नहीं), मृगशिर में सूर्योदय से रात १२:३४ बजे तक लग्न. ३,६,९,१०,११, (परिहार चिंतनीय – शूल दोष रात ७:१३ वजे से रात ९:१३ वजे । मृगशिर में गुरु युति।)स.सि.योग–रात्रि १२:३४वजे तक। चंद्रमा– वृष में दि. १:४१ तक।

ज्येष्ठ शुक्ल ४ शुक्र (३० मई) – नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध नहीं), पुष्य में रात ९:४० बजे से रात्रिअंत तक (परिहार चिंतनीय – क्रान्तिसाम्य दोष दिन ८:०८ से दिन १२:२१ वजे तक।)रवियो.–सू.उ.से रा.९:४०वजे। स.सि.योग–रात्रि ९:४०वजे तक। चंद्रमा– मिथुन में दि. ३:५३ तक।

ज्येष्ठ शुक्ल ९ बुध (४ जून) – नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध), उ.फा. में रात ११:५७ बजे से रात ३:४० बजे तक लग्न ११, (परिहार चिंतनीय – हस्त में शनि वेध,। उ.फा. में केतु युति।)रवियो.–सू.उ.से रा.अं.। स.सि.योग.रा.३:४० वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– सिंह में प्रा. ७:४० तक।

ज्येष्ठ शुक्ल ११ शुक्र (६ जून) – नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध), चित्रा में दिन १०:१६ बजे से दिन ३:३५ बजे एवं रात ४:५२ बजे से रात्रिअंत तक (परिहार चिंतनीय – हस्त में शनि वेध। चित्रा में राहु वेध, ।)रवियो.–सू.उ.से प्रा.६:३८वजे। चंद्रमा– कन्या में रा. ८:११ तक।

फाल्गुन कृष्ण ५ शुक्र (६ फरवरी) – नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध नहीं), चित्रा में रात १:४४ बजे से रात्रिअंत तक ल. ८,९, (परिहार चिंतनीय – हस्त में शनि वेध।) चंद्रमा– कन्या में दिनरात।

फाल्गुन कृष्ण ९ बुध (११ फरवरी) – नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध), अनुराधा में प्रातः ९:५६ बजे से दिन १०:५१ बजे तक अमृ.सि.योग–दिन १०:५१वजे तक। चंद्रमा– वृश्चिक में दिनरात।

फाल्गुन शुक्ल १ बुध (१८ फरवरी) – नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध नहीं), शतभिषा में दिन ४:५४ बजे से रात ९:११ बजे तक (परिहार चिंतनीय – शतभिषा में शुक्र राहु युति। पू.भा. में बुध युति।) चंद्रमा– कुंभ में दिनरात।

फाल्गुन शुक्ल २ गुरु (१९ फरवरी) – नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध नहीं), उ.भा. में रात ८:४७ बजे से रात्रिअंत तक (परिहार चिंतनीय – पू.भा. में बुध युति। उ.भा. में शनि युति।) चंद्रमा– कुंभ में दि. २:५५ तक।

फाल्गुन शुक्ल ३ शुक्र (२० फरवरी) – नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध नहीं), उ.भा. में सूर्योदय से दिन २:३३ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ११,२,३, (परिहार चिंतनीय – उ.भा. में शनि युति।)रवियो.–रा.८:०२ वजेसे रा.अं.। अमृ.सि.योग.रा.८:०२ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मीन में दिनरात।

वैशाख शुक्ल ३ चंद्र (२० अप्रैल) – नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध नहीं), रोहिणी में सूर्योदय से प्रातः ७:३१ बजे तक रवियो.–सू.उ.से रा.२:१३वजे। स.सि.योग–रात्रि २:१३वजे तक। अमृ.सि.योग.रा.२:१३ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– वृष में दिनरात।

जीर्ण गृह प्रवेश मुहूर्त

श्रावण कृष्ण १ शुक्र (११ जुलाई) – जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध नहीं)।उ.षा. में रात २:११ बजे से रात्रिअंत ५:४६ बजे तक ल. २, चंद्रमा– धनु में दि. १२:१० तक।

श्रावण कृष्ण ४ चंद्र (१४ जुलाई) – जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध नहीं)।शतभिषा में रात ११:५७ बजे से रात्रिअंत ५:४७ बजे तक चंद्रमा– कुंभ में दिनरात।

श्रावण कृष्ण ७ गुरु (१७ जुलाई) – जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।रेवती में एवं अश्विनी में प्रातः ८:०८ बजे से रात्रिअंत ५:४८ बजे तक जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।मुहूर्त्त हैं। (परिहार चिंतनीय – रेवती में केतु वेध,। अश्विनी में मंगल वेध,।)स.सि.योग–रात्रि ३:४०वजे तक। स.सि.योग.रा.३:४० वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मीन में रा. ३:४० तक।

श्रावण कृष्ण ८ शुक्र (१८ जुलाई) – जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।अश्विनी में सूर्योदय से सायं ५:०३ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ६,७,८,९, (परिहार चिंतनीय – अश्विनी में भौम वेध ।)स.सि.योग–रात्रि २:१५वजे तक। चंद्रमा– मेष में दिनरात।

श्रावण कृष्ण ११ चंद्र (२१ जुलाई) – जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।रोहिणी में एवं मृगशिर में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:५० बजे तक जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।मुहूर्त्त हैं। (परिहार चिंतनीय – मृगशिर में शुक्र युति।)स.सि.योग–रात्रि ९:०८वजे तक। अमृ.सि.योग.रा.९:०८ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– वृष में दिनरात।

श्रावण शुक्ल ४ चंद्र (२८ जुलाई) – जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध नहीं)।उ.फा. में रात ११:२९ बजे से रात्रिअंत ५:५३ बजे तक (परिहार चिंतनीय – पू.फा. में केतु युति। उ.फा. में मंगल युति।)रवियो.–सू.उ.से सा.५:४५वजे। चंद्रमा– सिंह में रा. १२:०९ तक।

श्रावण शुक्ल ६ बुध (३० जुलाई) – जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।हस्त में एवं चित्रा में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:५४ बजे तक जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।मुहूर्त्त हैं। (परिहार चिंतनीय – हस्त में शनि वेध। चित्रा में राहु वेध, ।) रवियो.–सू.उ.से रा.१०:०३वजे। स.सि.योग–रात्रि १०:०३वजे तक। चंद्रमा– कन्या में दिनरात।

श्रावण शुक्ल ७ गुरु (३१ जुलाई) – जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से रात ५:०४ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ७,९,१०,११,१,२, (परिहार चिंतनीय – चित्रा में राहु वेध, ।) चंद्रमा– कन्या में दि. ११:२४ तक।

श्रावण शुक्ल ८ शुक्र (१ अगस्त) – जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।स्वाती में सायं ६:१५ बजे से रात ३:४५ बजे तक लग्न. १०,११,१,२,३,रवियो.–रा.३:४५ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– तुला में दिनरात।

श्रावण शुक्ल १० चंद्र (४ अगस्त) – जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।अनुराधा में सूर्योदय से प्रातः ९:१३ बजे तक (परिहार चिंतनीय – अनुराधा में सूर्य वेध। ज्येष्ठा में बुधवेध दिन ३:४६ वजे से रात १०:२० वजे तक।)रवियो.–सू.उ.से रा.अं.। स.सि.योग–दिन ९:१३वजे तक। चंद्रमा– वृश्चिक में दिनरात।

श्रावण शुक्ल १२ बुध (६ अगस्त) – जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।मूल में प्रातः ८:३१ बजे से दिन १२:५९ बजे तक लग्न. ७, (परिहार चिंतनीय – पूर्वाषाढ. में गुरु वेध दिन १२:५९ वजे से रात ७:१७ वजे तक।) चंद्रमा– धनु में दिनरात।

श्रावण शुक्ल १३ गुरु (७ अगस्त) – जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।उ.षा. में दिन २:०१ बजे से दिन २:३० बजे तक रवियो.–दि.२:०१ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– धनु में रा. ८:११ तक।

श्रावण शुक्ल १४ शुक्र (८ अगस्त) – जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।श्रवण में रात १:५६ बजे से रात्रिअंत ५:५८ बजे तक रवियो.–सू.उ.से दि.२:२८वजे। स.सि.योग.दि.२:२८ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मकर में दिनरात।

कार्तिक कृष्ण २ बुध (८ अक्टूवर) – जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध नहीं)।अश्विनी में सूर्योदय से रात १०:५० बजे तक लग्न. ७,८,९,१०,११,१,२,३, (परिहार चिंतनीय – अश्विनी में केतु वेध, ।) चंद्रमा– मेष में दिनरात।

कार्तिक कृष्ण ७ चंद्र (१३ अक्टूवर) – जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध नहीं)।पुनर्वसु में दिन १२:२८ बजे से रात्रिअंत ६:२१ बजे तक ल. ९,१०,११,१२,१,२,३,४,५, (परिहार चिंतनीय – पुनर्वसु में गुरु युति।)रवियो.–सू.उ.से दि.१२:२८वजे। चंद्रमा– मिथुन में रा. ५:५६ तक।

कार्तिक कृष्ण ९ बुध (१५ अक्टूवर) – जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।पुष्य में दिन १०:३० बजे से दिन १२:०२ बजे तक चंद्रमा– कर्क में दिनरात।

कार्तिक शुक्ल १ बुध (२२ अक्टूवर) – जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध नहीं)।स्वाती में रात ८:२० बजे से रात १:५४ बजे तक लग्न २,३,५, (परिहार चिंतनीय – विशाखा में मंगल बुध युति।) चंद्रमा– तुला में दिनरात।

कार्तिक शुक्ल २ गुरु (२३ अक्टूवर) – जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध नहीं)।अनुराधा में रात ४:५३ बजे से रात्रिअंत ६:२५ बजे तक (परिहार चिंतनीय – विशाखा में मंगल बुध युति।)रवियो.–रा.४:५३ वजेसे रा.अं.। स.सि.योग.रा.४:५३ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– तुला में रा. १०:०८ तक।

कार्तिक शुक्ल ३ शुक्र (२४ अक्टूवर) – जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध नहीं)।अनुराधा में सूर्योदय से रात १:२० बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ९,१०,१२,२,रवियो.–सू.उ.से प्रा.६:४६वजे। स.सि.योग–रात्रि ७:५३वजे तक। चंद्रमा– वृश्चिक में दिनरात।

कार्तिक शुक्ल ६ चंद्र (२७ अक्टूवर) – जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।मूल में सूर्योदय से दिन १:२८ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ९,रवियो.–दि.१:२८ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– धनु में दिनरात।

कार्तिक शुक्ल ७ बुध (२९ अक्टूवर) – जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।उ.षा. में सूर्योदय से प्रातः ७:५२ बजे एवं श्रवण में रात ९:४७ बजे से रात्रिअंत ६:२९ बजे तक लग्न. ८,ल. ३,४,५,६, चंद्रमा– मकर में दिनरात।

कार्तिक शुक्ल ८ गुरु (३० अक्टूवर) – जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।श्रवण में सूर्योदय से दिन १०:०६ बजे तक लग्न. ९, (परिहार चिंतनीय – क्रान्तिसाम्य दोष रात १:०८ से रात ५:१८ वजे तक। गण्ड दोष प्रातः ७:२२ वजे से प्रातः ९:४६ वजे । धनिष्ठा में मंगल वेध,।)रवियो.–शा.६:२९ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मकर में दिनरात।

कार्तिक शुक्ल ९ शुक्र (३१ अक्टूवर) – जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।धनिष्ठा में एवं शतभिषा में दिन १०:०२ बजे से रात्रिअंत ६:३० बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ९,१०,११,१२,१,२, (परिहार चिंतनीय – धनिष्ठा में भौम वेध । शतभिषा में सूर्य वेध,।)रवियो.–सू.उ.से रा.अं.। चंद्रमा– मकर में प्रा. ६:४९ तक।

कार्तिक शुक्ल १३ चंद्र (३ नवम्वर) – जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।उ.भा. में एवं रेवती में सूर्योदय से रात २:०४ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ८,१०,ल. ११,१२,१,२,३,४,५, (परिहार चिंतनीय – वज्र दोष रात ७:३४ वजे से रात ८:४६ वजे ।)रवियो.–दि.२:६० वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मीन में दिनरात।

कार्तिक शुक्ल १५ बुध (५ नवम्वर) – जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध नहीं)।अश्विनी में प्रातः ८:४६ बजे से प्रातः ९:४२ बजे तक लग्न. ८, (परिहार चिंतनीय – अश्विनी में केतु वेध, । भरणी में बुधवेध दिन २:५६ वजे से रात ८:१० वजे तक।) चंद्रमा– मेष में दिनरात।

मार्गशीर्ष कृष्ण २ शुक्र (७ नवम्वर) – जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध नहीं)।रोहिणी में दिन १२:४१ बजे

से रात ९:२३ बजे तक चंद्रमा– वृष में दिनरात।

मार्गशीर्ष कृष्ण ६ चंद्र (१० नवम्वर) – जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध नहीं)।पुनर्वसु में एवं पुष्य में सूर्योदय से रात १२:०७ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ८,१०,१२,२,ल. २,३,४, (परिहार चिंतनीय – पुनर्वसु में गुरु युति।)रवियो.–शा.६:५५ वजेसे रा.अं.। स.सि.योग.सा.६:५५ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मिथुन में दि. १:०९ तक।

मार्गशीर्ष शुक्ल ४ चंद्र (२४ नवम्वर) – जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध नहीं)।उ.षा. में रात ९:५० बजे से रात्रिअंत ६:४५ बजे तक (परिहार चिंतनीय – गण्ड दोष दिन १२:३५ वजे से दिन २:५९ वजे ।)रवियो.–सू.उ.से रा.९:५०वजे। चंद्रमा– धनु में रा. ४:२५ तक।

मार्गशीर्ष शुक्ल ६ बुध (२६ नवम्वर) – जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।श्रवण में एवं धनिष्ठा में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:४६ बजे तक जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।मुहूर्त्त हैं। रवियो.–सू.उ.से रा.१:३१वजे। चंद्रमा– मकर में दिनरात।

मार्गशीर्ष शुक्ल ७ गुरु (२७ नवम्वर) – जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।धनिष्ठा में सूर्योदय से रात १२:३१ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ८,१०,१२,१,२,३, (परिहार चिंतनीय – व्याघात दोष दिन १२:०८ वजे से दिन ३:४४ वजे । शतभिषा में राहु युति।) चंद्रमा– मकर में दि. २:०५ तक।

मार्गशीर्ष शुक्ल ८ शुक्र (२८ नवम्वर) – जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।शतभिषा में दिन १२:३० बजे से रात १२:१७ बजे तक लग्न. ,१२,१,२,३, (परिहार चिंतनीय – शतभिषा में राहु युति। पू.भा. में शनि युति।)रवियो.–रा.२:४९ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– कुंभ में दिनरात।

मार्गशीर्ष शुक्ल ११ चंद्र (१ दिसम्वर) – जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।अश्विनी में रात १२:५३ बजे से रात्रिअंत ६:४९ बजे तक (परिहार चिंतनीय – अश्विनी में केतु वेध, ।) चंद्रमा– मीन में रा. ११:११ तक।

मार्गशीर्ष शुक्ल १४ गुरु (४ दिसम्वर) – जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।रोहिणी में सायं ६:३९ बजे से रात्रिअंत ४:५२ बजे तक रवियो.–सू.उ.से दि.२:५४वजे। चंद्रमा– वृष में दिनरात।

व्यापार प्रारंभ मुहूर्त

वैशाख कृष्ण ८ चंद्र (२१ अप्रैल) – व्यापार प्रारंभ, उ.षा. में सूर्योदय से दिन १२:३९ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न २,स.सि.योग.दि.१२:३९ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मकर में दिनरात।

वैशाख कृष्ण १२ शुक्र (२५ अप्रैल) – व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), उ.भा. में प्रात: ८:४९ बजे से दिन ११:४० बजे तक ल. २,३,४, (परिहार चिंतनीय – पू.भा. में शुक्र शनि राहु युति। उ.भा. में बुध शुक्र युति।) चंद्रमा– मीन में दिनरात।

वैशाख शुक्ल ३ बुध (३० अप्रैल) – व्यापार प्रारंभ, रोहिणी में सूर्योदय से दिन १२:०७ बजे तक लग्न. ३, (परिहार चिंतनीय – मृगशिर में गुरु युति।)रवियो.–दि.४:२५ वजेसे रा.अं.। स.सि.योग–दिन ४:२५वजे तक। स.सि.योग.दि.४:२५ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– वृष में रा. ३:२० तक।

वैशाख शुक्ल १० बुध (७ मई) – व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), उ.फा. में सायं ६:२२ बजे से रात्रिअंत तक ल. ७,८,९,१०,११,१२, (परिहार चिंतनीय – पूर्वा.फा. में बुधवेध दिन ११:४२ वजे से सायं ६:२२ वजे तक।उ.फा. में केतु युति।)रवियो.–सू.उ.से सा.६:२२वजे। चंद्रमा– सिंह में रा. १:०२ तक।

वैशाख शुक्ल ११ गुरु (८ मई) – व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), उ.फा. में एवं हस्त में दिन १२:३२ बजे से रात्रिअंत तक लग्न ४,५,६,७,८,ल. ८,९,१०,११,१२, (परिहार चिंतनीय – वज्र दोष रात २:०१ वजे से रात ३:१३ वजे । हस्त में शनि वेध,। उ.फा. में केतु युति।) चंद्रमा– कन्या में दिनरात।

वैशाख शुक्ल १२ शुक्र (९ मई) – व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), हस्त में एवं चित्रा में सूर्योदय से रात्रिअंत तक व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), मुहूर्त्त हैं। (परिहार चिंतनीय – हस्त में शनि वेध। चित्रा में राहु वेध, । हस्त में शुक्रवेध ५:४६ से दिन १०:४१ वजे तक।)रवियो.–रा.१२:१४ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– कन्या में दिनरात।

ज्येष्ठ कृष्ण १० गुरु (२२ मई) – व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), उ.भा. में रात १:१३ बजे से रात्रिअंत तक ल. ११,१२,१, (परिहार चिंतनीय – पू.भा. में राहु युति। उ.भा. में शनि युति।) चंद्रमा– कुंभ में दि. १२:०७ तक।

ज्येष्ठ कृष्ण ११ शुक्र (२३ मई) – व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), उ.भा. में एवं रेवती में सूर्योदय से रात्रिअंत तक व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), मुहूर्त्त हैं। (परिहार चिंतनीय – रेवती में केतु वेध, । उ.भा. में शनि युति। रेवती में शुक्र युति।) चंद्रमा– मीन में दिनरात।

ज्येष्ठ शुक्ल ४ शुक्र (३० मई) – व्यापार प्रारंभ, पुष्य में रात ९:४० बजे से रात्रिअंत तक (परिहार चिंतनीय – क्रान्तिसाम्य दोष दिन ८:०८ से दिन १२:२१ वजे तक।) रवियो.–सू.उ.से रा.९:४०वजे। स.सि.योग–रात्रि ९:४०वजे तक। चंद्रमा– मिथुन में दि. ३:५३ तक।

ज्येष्ठ शुक्ल ९ बुध (४ जून) – व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), उ.फा. में एवं हस्त में रात ११:५७ बजे से रात्रिअंत तक लग्न ११, (परिहार चिंतनीय – हस्त में शनि वेध,। उ.फा. में केतु युति।)रवियो. –सू.उ.से रा.अं.। स.सि.योग.रा.३:४० वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– सिंह में प्रा. ७:४० तक।

ज्येष्ठ शुक्ल १० गुरु (५ जून) – व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), हस्त में सूर्योदय से प्रात: ९:१७ बजे तक (परिहार चिंतनीय – हस्त में शनि वेध।)रवियो.–सू.उ.से रा.६:३७वजे। चंद्रमा– कन्या में दिनरात।

ज्येष्ठ शुक्ल ११ शुक्र (६ जून) – व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), चित्रा में दिन १०:१६ बजे से दिन ३:३५ बजे एवं रात ४:५२ बजे से रात्रिअंत तक (परिहार चिंतनीय – हस्त में शनि वेध। चित्रा में राहु वेध, ।)रवियो.–सू.उ.से प्रा.६:३८वजे। चंद्रमा– कन्या में रा. ८:११ तक।

आषाढ कृष्ण २ शुक्र (१३ जून) – व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), उ.षा. में रात ११:२० बजे से रात्रि ३:३८ बजे तक ल. ११,१२,१, (परिहार चिंतनीय – उ.षा. में सूर्य वेध,। पूर्वाषाढ. में बुध वेध प्रात: ५:३८ से दिन १०:४३ वजे तक।) चंद्रमा– धनु में दिनरात।

आषाढ कृष्ण ७ बुध (१८ जून) – व्यापार प्रारंभ, उ.भा. में रात १२:२४ बजे से रात्रिअंत ५:३८ बजे तक (परिहार चिंतनीय – पू.भा. में राहु युति। उ.भा. में शनि युति।) चंद्रमा– कुंभ में सा. ६:३५ तक।

आषाढ कृष्ण ८ गुरु (१९ जून) – व्यापार प्रारंभ, उ.भा. में सूर्योदय से दिन ११:५९ बजे तक (परिहार चिंतनीय – रेवती में केतु वेध, । उ.भा. में शनि युति।)स.सि.योग.रा.११:१७ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मीन में दिनरात।

आषाढ कृष्ण ९ शुक्र (२० जून) – व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), रेवती में प्रात: ९:५२ बजे से रात ८:३७ बजे तक (परिहार चिंतनीय – अतिगंड दोष रात ११:४५ वजे से रात २:०९ वजे । रेवती में केतु वेध, ।)अमृ.सि.योग–रात्रि ९:४४वजे तक। स.सि.योग.रा.९:४४ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मीन में रा. ९:४४ तक।

आषाढ शुक्ल २ शुक्र (२७ जून) – व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), पुष्य में प्रात: ७:२४ बजे से रात्रिअंत ५:४१ बजे तक (परिहार चिंतनीय – पुष्य में बुध युति।)स.सि.योग–प्रा. ७:२४वजे तक। चंद्रमा– कर्क में दिनरात।

आषाढ शुक्ल ७ बुध (२ जुलाई) – व्यापार प्रारंभ, उ.फा. में एवं हस्त में सूर्योदय से दिन १२:०५ बजे तक लग्न. ४,६,ल. ६, (परिहार चिंतनीय – हस्त में शनि वेध,। उ.फा. में केतु युति।)स.सि.योग. दि.११:१६ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– कन्या में दिनरात।

आषाढ शुक्ल ८ गुरु (३ जुलाई) – व्यापार प्रारंभ, हस्त में एवं चित्रा में प्रात: ६:१५ बजे से दिन २:१२ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ६,७, (परिहार चिंतनीय – हस्त में शनि वेध। चित्रा में राहु वेध, ।)रवियो.–दि.१:५८ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– कन्या में रा. ३:२४ तक।

आषाढ शुक्ल ९ शुक्र (४ जुलाई) – व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), चित्रा में दिन ४:३५ बजे से दिन ४:५४ बजे तक (परिहार चिंतनीय – चित्रा में राहु वेध, ।)रवियो.–सू.उ.से रा.अं.। चंद्रमा– तुला में दिनरात।

श्रावण कृष्ण १ शुक्र (११ जुलाई) – व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), उ.षा. में रात ९:५७ बजे से रात्रिअंत ५:४६ बजे तक ल. ११,१२,१,२,ल. २, चंद्रमा– धनु में दि. १२:१० तक।

श्रावण कृष्ण ७ गुरु (१७ जुलाई) – व्यापार प्रारंभ, रेवती में एवं अश्विनी में प्रात: ८:०८ बजे से रात्रिअंत ५:४८ बजे तक व्यापार प्रारंभ, मुहूर्त्त हैं। (परिहार चिंतनीय – रेवती में केतु वेध, । अश्विनी में मंगल वेध,।)स.सि.योग–रात्रि ३:४०वजे तक। स.सि.योग.रा.३:४० वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मीन में रा. ३:४० तक।

श्रावण कृष्ण ८ शुक्र (१८ जुलाई) – व्यापार प्रारंभ, अश्विनी में सूर्योदय से सायं ५:०३ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ६,७,८,९, (परिहार चिंतनीय – अश्विनी में भौम वेध ।)स.सि.योग–रात्रि २:१५वजे तक। चंद्रमा– मेष में दिनरात।

श्रावण कृष्ण ११ चंद्र (२१ जुलाई) – व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), रोहिणी में सूर्योदय से रात ९:०८ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ६,७,८,९,१०,११, (परिहार चिंतनीय – मृगशिर में शुक्र युति।)स. सि.योग–रात्रि ९:०८वजे तक। अमृ.सि.योग.रा.९:०८ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– वृष में दिनरात।

श्रावण शुक्ल ४ चंद्र (२८ जुलाई) – व्यापार प्रारंभ, उ.फा. में रात ११:२९ बजे से रात्रिअंत ५:५३ बजे तक (परिहार चिंतनीय – पू.फा. में केतु युति। उ.फा. में मंगल युति।)रवियो.–सू.उ.से सा.५:४५वजे। चंद्रमा– सिंह में रा. १२:०९ तक।

श्रावण शुक्ल ६ बुध (३० जुलाई) – व्यापार प्रारंभ, हस्त में एवं चित्रा में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:५४ बजे तक व्यापार प्रारंभ, मुहूर्त्त हैं। (परिहार चिंतनीय – हस्त में शनि वेध। चित्रा में राहु वेध, ।)रवियो. –सू.उ.से रा.१०:०३वजे। स.सि.योग–रात्रि १०:०३वजे तक। चंद्रमा– कन्या में दिनरात।

श्रावण शुक्ल ७ गुरु (३१ जुलाई) – व्यापार प्रारंभ, चित्रा में सूर्योदय से रात १२:४९ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ७,९,१०,११,१,२, (परिहार चिंतनीय – चित्रा में राहु वेध, ।) चंद्रमा– कन्या में दि. ११:२४ तक।

श्रावण शुक्ल १३ गुरु (७ अगस्त) – व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), उ.षा. में दिन २:०१ बजे से दिन २:३० बजे तक रवियो.–दि.२:०१ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– धनु में रा. ८:११ तक।

भाद्रपद कृष्ण ४ बुध (१३ अगस्त) – व्यापार प्रारंभ, उ.भा. में एवं रेवती में प्रात: ६:३३ बजे से रात्रिअंत ४:१६ बजे तक (परिहार चिंतनीय – शूल दोष दिन ४:०३ वजे से सायं ६:०३ वजे । रेवती में मंगल वेध,। उ.भा. में शनि युति।) चंद्रमा– मीन में दिनरात।

भाद्रपद कृष्ण ६ गुरु (१४ अगस्त) – व्यापार प्रारंभ, रेवती में एवं अश्विनी में सूर्योदय से रात २:०४ बजे तक (परिहार चिंतनीय – क्रान्तिसाम्य दोष रात ५:२७ से रातअंत वजे तक। गण्ड दोष दिन १:१० वजे से दिन ३:३४ वजे । अश्विनी में केतु वेध, ।) रवियो.–दि.९:०४ वजेसे रा.अं.। स.सि.योग–दिन ९:०४वजे तक। स.सि.योग.दि.९:०४ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मीन में दि. ९:०४ तक।

भाद्रपद शुक्ल २ चंद्र (२५ अगस्त) – व्यापार प्रारंभ, उ.फा. में एवं हस्त में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:०४ बजे तक व्यापार प्रारंभ, मुहूर्त्त हैं। (परिहार चिंतनीय – हस्त में शनि वेध,। हस्त में मंगल युति।)रवियो.–रा.३:५३ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– सिंह में दि. ८:३१ तक।

भाद्रपद शुक्ल ४ बुध (२७ अगस्त) – व्यापार प्रारंभ, चित्रा में दिन ३:४८ बजे से रात्रिअंत ६:०५ बजे तक (परिहार चिंतनीय – क्रान्तिसाम्य दोष रात ७:३१ से रात ११:५९ वजे तक। हस्त में शनि वेध। चित्रा में राहु वेध, । हस्त में मंगल युति।)रवियो.–सू.उ.से प्रा.६:०९वजे। स.सि.योग–प्रा. ६:०९वजे तक। चंद्रमा– कन्या में रा. ७:२९ तक।

भाद्रपद शुक्ल ५ गुरु (२८ अगस्त) – व्यापार प्रारंभ, चित्रा में सूर्योदय से प्रातः ८:५० बजे तक (परिहार चिंतनीय – चित्रा में राहु वेध, ।)रवियो.–दि.८:५० वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– तुला में दिनरात।

भाद्रपद शुक्ल ११ बुध (३ सितम्वर) – व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), उ.षा. में रात ४:१९ बजे से रात्रिअंत ६:०७ बजे तक रवियो.–सू.उ.से रा.११:०४वजे। चंद्रमा– धनु में रा. ५:२० तक।

भाद्रपद शुक्ल १२ गुरु (४ सितम्वर) – व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), उ.षा. में सूर्योदय से रात ११:४० बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ७,८,९,१०,१,२, (परिहार चिंतनीय – श्रवण में बुधवेध रात १:१८ वजे से रातअंत ५:४६ वजे तक।) चंद्रमा– मकर में दिनरात।

आश्विन शुक्ल १ चंद्र (२२ सितम्वर) – व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), हस्त में रात २:५९ बजे से रात्रिअंत ६:१३ बजे तक (परिहार चिंतनीय – हस्त में शनि वेध,। उ.फा. में सूर्य युति। हस्त में बुध युति।) चंद्रमा– कन्या में दिनरात।

आश्विन शुक्ल ३ बुध (२४ सितम्वर) – व्यापार प्रारंभ, चित्रा में सूर्योदय से दिन ४:२१ बजे तक लग्न. ८,९,१०,११, (परिहार चिंतनीय – चित्रा में राहु वेध, । स्वाती में मंगल युति।)रवियो.–दि.४:२१ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– तुला में दिनरात।

आश्विन शुक्ल ९ बुध (१ अक्टूवर) – व्यापार प्रारंभ, उ.षा. में सायं ६:५९ बजे से रात्रिअंत ६:१६ बजे तक रवियो.–दि.८:०५ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– धनु में दि. २:२३ तक।

आश्विन शुक्ल १० गुरु (२ अक्टूवर) – व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), उ.षा. में सूर्योदय से प्रातः ९:१० बजे तक रवियो.–सू.उ.से रा.अं.। चंद्रमा– मकर में दिनरात।

आश्विन शुक्ल १४ चंद्र (६ अक्टूवर) – व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), उ.भा. में एवं रेवती में रात १०:५४ बजे से रात्रिअंत ६:१८ बजे तक लग्न ३,ल. ५, (परिहार चिंतनीय – उ.भा. में सूर्य वेध ।) चंद्रमा– मीन में दिनरात।

कार्तिक कृष्ण २ बुध (८ अक्टूवर) – व्यापार प्रारंभ, अश्विनी में सूर्योदय से रात १०:५० बजे तक लग्न. ७,८,९,१०,११,१,२,३, (परिहार चिंतनीय – अश्विनी में केतु वेध,।) चंद्रमा– मेष में दिनरात।

कार्तिक कृष्ण ९ बुध (१५ अक्टूवर) – व्यापार प्रारंभ, पुष्य में दिन १०:३० बजे से दिन १२:०२ बजे तक चंद्रमा– कर्क में दिनरात।

कार्तिक शुक्ल ७ बुध (२९ अक्टूवर) – व्यापार प्रारंभ, उ.षा. में सूर्योदय से प्रातः ७:५२ बजे तक लग्न. ८, चंद्रमा– मकर में दिनरात।

कार्तिक शुक्ल १३ चंद्र (३ नवम्वर) – व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), उ.भा. में एवं रेवती में सूर्योदय से रात २:०४ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ८,१०,ल. ११,१२,१,२,३,४,५, (परिहार चिंतनीय – वज्र दोष रात ७:३४ वजे से रात ८:४६ वजे ।)रवियो.–दि.२:६० वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मीन में दिनरात।

कार्तिक शुक्ल १५ बुध (५ नवम्वर) – व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), अश्विनी में प्रातः ८:४६ बजे से प्रातः ९:४२ बजे तक लग्न. ८, (परिहार चिंतनीय – अश्विनी में केतु वेध, । भरणी में बुधवेध दिन २:५६ वजे से रात ८:१० वजे तक।) चंद्रमा– मेष में दिनरात।

मार्गशीर्ष कृष्ण २ शुक्र (७ नवम्वर) – व्यापार प्रारंभ, रोहिणी में दिन १२:४१ बजे से रात ९:२३ बजे तक चंद्रमा– वृष में दिनरात।

मार्गशीर्ष कृष्ण ६ चंद्र (१० नवम्वर) – व्यापार प्रारंभ, पुष्य में सायं ६:५५ बजे से रात १२:०७ बजे तक ल. २,३,४, (परिहार चिंतनीय – पुनर्वसु में गुरु युति।)रवियो.–शा.६:५५ वजेसे रा.अं.। स.सि. योग.सा.६:५५ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मिथुन में दि. १:०९ तक।

मार्गशीर्ष शुक्ल ४ चंद्र (२४ नवम्वर) – व्यापार प्रारंभ, उ.षा. में रात ९:५० बजे से रात्रिअंत ६:४५ बजे तक (परिहार चिंतनीय – गण्ड दोष दिन १२:३५ वजे से दिन २:५९ वजे ।)रवियो.–सू.उ.से रा. ९:५०वजे। चंद्रमा– धनु में रा. ४:२५ तक।

मार्गशीर्ष शुक्ल ११ चंद्र (१ दिसम्वर) – व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), अश्विनी में रात १२:५३ बजे से रात्रिअंत ६:४९ बजे तक (परिहार चिंतनीय – अश्विनी में केतु वेध, ।) चंद्रमा– मीन में रा. ११:११ तक।

मार्गशीर्ष शुक्ल १४ गुरु (४ दिसम्वर) – व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), रोहिणी में सायं ६:३९ बजे से रात्रिअंत ४:५२ बजे तक रवियो.–सू.उ.से दि.२:५४वजे। चंद्रमा– वृष में दिनरात।

पौष कृष्ण १ शुक्र (५ दिसम्वर) – व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), रोहिणी में सूर्योदय से दिन ११:५० बजे तक लग्न. ८,१०, चंद्रमा– वृष में रा. १०:२१ तक।

पौष कृष्ण ४ चंद्र (८ दिसम्वर) – व्यापार प्रारंभ, पुष्य में दिन ४:०८ बजे से रात ३:०१ बजे तक (परिहार चिंतनीय – पुष्य में सूर्य वेध ।)स.सि.योग–रात्रि ३:०१वजे तक। चंद्रमा– कर्क में दिनरात।

पौष कृष्ण ७ गुरु (११ दिसम्वर) – व्यापार प्रारंभ, उ.फा. में रात ३:५८ बजे से रात्रिअंत ६:५६ बजे तक ल. ७, (परिहार चिंतनीय – पू.फा. में केतु युति।) चंद्रमा– सिंह में दिनरात।

पौष कृष्ण ८ शुक्र (१२ दिसम्वर) – व्यापार प्रारंभ, उ.फा. में सूर्योदय से दिन २:५६ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ९,११, चंद्रमा– सिंह में दि. १०:२३ तक।

माघ शुक्ल ५ शुक्र (२३ जनवरी) – व्यापार प्रारंभ, उ.भा. में दिन २:२८ बजे से रात्रिअंत तक ल. २,३,४,५,६,७,ल. ७,८,९, (परिहार चिंतनीय – उ.भा. में शनि युति।)रवियो.–दि.२:२८ वजेसे रा. अं.। चंद्रमा– कुंभ में दि. ८:३० तक।

माघ शुक्ल ८ चंद्र (२६ जनवरी) – व्यापार प्रारंभ, अश्विनी में दिन १०:२१ बजे से दिन १२:३५ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न १, (परिहार चिंतनीय – अश्विनी में केतु वेध, ।) चंद्रमा– मेष में दिनरात।

माघ शुक्ल १० बुध (२८ जनवरी) – व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), रोहिणी में प्रातः ९:३० बजे से रात्रिअंत तक ल. ११,१२,१,२,३,ल. ३,४,५,६,७,८,९, (परिहार चिंतनीय – कृतिका में सूर्य वेध । रोहिणी में मंगल वेध,।)रवियो.–सू.उ.से रा.अं.। स.सि.योग–दिन ९:३०वजे तक। स.सि.योग.दि.९:३० वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– वृष में दिनरात।

फाल्गुन कृष्ण ४ गुरु (५ फरवरी) – व्यापार प्रारंभ, हस्त में रात १२:२५ बजे से रात्रिअंत तक ल. ७,८,९, (परिहार चिंतनीय – हस्त में शनि वेध,।) चंद्रमा– कन्या में दिनरात।

फाल्गुन कृष्ण ५ शुक्र (६ फरवरी) – व्यापार प्रारंभ, हस्त में सूर्योदय से रात ११:४४ बजे एवं चित्रा में रात १:४४ बजे से रात्रिअंत तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ११,२,७,ल. ८,९, (परिहार चिंतनीय – हस्त में शनि वेध।) चंद्रमा– कन्या में दिनरात।

फाल्गुन शुक्ल २ गुरु (१९ फरवरी) – व्यापार प्रारंभ, उ.भा. में रात ८:४७ बजे से रात्रिअंत तक (परिहार चिंतनीय – पू.भा. में बुध युति। उ.भा. में शनि युति।) चंद्रमा– कुंभ में दि. २:५५ तक।

फाल्गुन शुक्ल ३ शुक्र (२० फरवरी) – व्यापार प्रारंभ, उ.भा. में सूर्योदय से दिन २:३३ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ११,२,३, (परिहार चिंतनीय – उ.भा. में शनि युति।)रवियो.–रा.८:०२ वजेसे रा. अं.। अमृ.सि.योग.रा.८:०२ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मीन में दिनरात।

चैत्र कृष्ण १ बुध (४ मार्च) – व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), उ.फा. में प्रातः ७:४२ बजे से रात्रिअंत तक (परिहार चिंतनीय – शूल दोष प्रातः ८:५५ वजे से दिन १०:५५ वजे । पू.फा. में केतु युति।) चंद्रमा– सिंह में दि. १:५१ तक।

चैत्र कृष्ण २ गुरु (५ मार्च) – हस्त में दिन १०:११ बजे से रात्रिअंत तक व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), मुहूर्त हैं। (परिहार चिंतनीय – क्रान्तिसाम्य दोष रात १:४६ से रात ६:१४ वजे तक। हस्त में शनि वेध,।) चंद्रमा– कन्या में दिनरात।

ट्यूबबेल मुहूर्त

चैत्र शुक्ल १० चंद्र (७ अप्रैल) – नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में दिनरात, अश्लेषा में प्रातः ६:२५ बजे से सायं ६:२३ बजे एवं रात ८:२३ बजे से रात्रिअंत तक रवियो.–सू.उ.से रा.अं.। स. सि.योग–प्रा. ६:२५वजे तक। चंद्रमा– कर्क में दिनरात।

वैशाख कृष्ण ११ गुरु (२४ अप्रैल) – नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में दिनरात, पू.भा. में दिन १०:४५ बजे से रात्रिअंत तक अभिजित् मुहूर्त एवं ल. ३,४,५,ल. ५,६,७,८,९,१०,११,१२, (परिहार चिंतनीय – पू.भा. में शुक्र शनि राहु युति।) चंद्रमा– कुंभ में रा. ३:२२ तक।

वैशाख कृष्ण १२ शुक्र (२५ अप्रैल) – नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में दिनरात, पू.भा. में सूर्योदय से प्रातः ८:४९ बजे तक लग्न. २, (परिहार चिंतनीय – पू.भा. में शुक्र शनि राहु युति। उ.भा. में बुध शुक्र युति।) चंद्रमा– मीन में दिनरात।

वैशाख शुक्ल ७ रवि (४ मई) – नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में दिनरात, अश्लेषा में रात ७:२६ बजे से रात्रिअंत तक ल. ७,८,९,१०,११,१२, (परिहार चिंतनीय – क्रान्तिसाम्य दोष रात ७:३१ से रात ११:५४ वजे तक। पुष्य में मंगल युति।)रविपुष्य योग–दिन १२:५९वजे तक। चंद्रमा– कर्क में दिनरात।

वैशाख शुक्ल ८ चंद्र (५ मई) – नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में दि. २:०६ तक, अश्लेषा में सूर्योदय से प्रातः ७:३६ बजे तक लग्न. २, (परिहार चिंतनीय – मघा में सूर्य वेध,।)रवियो.–दि. २:०६ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– कर्क में दि. २:०६ तक।

ज्येष्ठ कृष्ण ९ बुध (२१ मई) – नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में दिनरात, पू.भा. में रात ३:२५ बजे से रात्रिअंत तक (परिहार चिंतनीय – पू.भा. में राहु युति।) चंद्रमा– कुंभ में दिनरात।

ज्येष्ठ कृष्ण १० गुरु (२२ मई) – नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में दिनरात, पू.भा. में सूर्योदय से दिन २:२२ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ३,६, (परिहार चिंतनीय – पू.भा. में राहु युति। उ. भा. में शनि युति।) चंद्रमा– कुंभ में दि. १२:०७ तक।

ज्येष्ठ शुक्ल ५ शनि (३१ मई) – नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में दिनरात, अश्लेषा में रात ९:१८ बजे से रात्रिअंत तक (परिहार चिंतनीय – अश्लेषा में मंगल युति।)रवियो.–रा.९:१८ वजेसे रा. अं.। चंद्रमा– कर्क में दिनरात।

ज्येष्ठ शुक्ल ६ रवि (१ जून) – नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में रा. ९:४७ तक, अश्लेषा में सूर्योदय से रात ९:४७ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ३,७,८,९, (परिहार चिंतनीय – व्याघात दोष प्रातः ९:१९ वजे से दिन १२:५५ वजे । अश्लेषा में मंगल युति।)रवियो.–सू.उ.से रा.९:४७वजे। चंद्रमा– कर्क में रा. ९:४७ तक।

आषाढ कृष्ण ७ बुध (१८ जून) – नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में दिनरात, पू.भा. में सूर्योदय से रात १२:२४ बजे तक लग्न. ६, (परिहार चिंतनीय – पू.भा. में राहु युति। उ.भा. में शनि युति।) चंद्रमा– कुंभ में सा. ६:३५ तक।

श्रावण शुक्ल १ शुक्र (२५ जुलाई) – नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में दिनरात, अश्लेषा में रात ११:२६ बजे से रात्रिअंत ५:५२ बजे तक (परिहार चिंतनीय – पुष्य में सूर्य युति। अश्लेषा में बुध युति।) चंद्रमा– कर्क में दिनरात।

श्रावण शुक्ल २ शनि (२६ जुलाई) – नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में दि. ३:५८ तक, मघा में रात ४:०८ बजे से रात्रिअंत ५:५२ बजे तक (परिहार चिंतनीय – अश्लेषा में बुध युति।) चंद्रमा– कर्क में दि. ३:५८ तक।

भाद्रपद कृष्ण २ चंद्र (११ अगस्त) – नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में दिनरात, पू.भा. में दिन १२:५९ बजे से रात्रि ९:३७ बजे तक (परिहार चिंतनीय – पू.भा. में राहु युति।) चंद्रमा– कुंभ में दिनरात।

कार्तिक कृष्ण ९ बुध (१५ अक्टूवर) – नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में दिनरात, अश्लेषा में दिन १२:०२ बजे से रात्रि १०:२९ बजे तक ल. ९,१०,११,१२,१,२,३, चंद्रमा– कर्क में दिनरात।

कार्तिक कृष्ण १० गुरु (१६ अक्टूवर) – नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में दि. १२:४६ तक, अश्लेषा में एवं मघा में दिन १०:३५ बजे से रात्रिअंत ६:२२ बजे तक ल. ९,१०,११,१२,१,२,३,४,५, चंद्रमा– कर्क में दि. १२:४६ तक।

कार्तिक शुक्ल १० शनि (१ नवम्वर) – नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में दिनरात, पू.भा. में सायं ६:१३ बजे से रात्रि ८:२० बजे तक (परिहार चिंतनीय – व्याघात दोष रात २:०४ वजे से रातअंत ५:४० वजे । शतभिषा में सूर्य वेध । पू.भा. में शनि राहु युति।)रवियो.–सू.उ.से सा.६:१३वजे। चंद्रमा– कुंभ में दिनरात।

कार्तिक शुक्ल ११ रवि (२ नवम्वर) – नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में दिनरात, पू.भा. में प्रात: ७:२८ बजे से दिन ४:५६ बजे तक (परिहार चिंतनीय – पू.भा. में शुक्रवेध ६:३१ से दिन ११:२१ वजे तक।पू.भा. में शनि राहु युति।)स.सि.योग.दि.४:५६ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– कुंभ में दि. ११:२१ तक।

मार्गशीर्ष कृष्ण ८ बुध (१२ नवम्वर) – नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में सा. ६:३९ तक, अश्लेषा में एवं मघा में सूर्योदय से रात १०:५५ बजे तक लग्न. ८,१०,१२,ल. २,३,४, (परिहार चिंतनीय – अश्लेषा में भौम वेध ।) चंद्रमा– कर्क में सा. ६:३९ तक।

मार्गशीर्ष शुक्ल २ शनि (२२ नवम्वर) – नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में दि. ४:४६ तक, मूल में दिन ४:४६ बजे से रात्रिअंत ६:४३ बजे तक (परिहार चिंतनीय – मूल में गुरु वेध दिन ४:४६ वजे से रात ११:२७ वजे तक।ज्येष्ठा में मंगल युति।) चंद्रमा– वृश्चिक में दि. ४:४६ तक।

माघ कृष्ण २ चंद्र (५ जनवरी) – नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में दिनरात, अश्लेषा में दिन १:३३ बजे से रात्रि ९:०० बजे तक स.सि.योग–दिन १:३३वजे तक। चंद्रमा– कर्क में दिनरात।

फाल्गुन कृष्ण १ चंद्र (२ फरवरी) – नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में रा. १०:५३ तक, मघा में रात १:५३ बजे से रात्रिअंत तक ल. ८,९, (परिहार चिंतनीय – अश्लेषा में बुधवेध दिन ११:२३ वजे से सायं ५:०८ वजे तक।अश्लेषा में शुक्रवेध सायं ५:०८ वजे से रात १०:५३ वजे तक।) चंद्रमा– कर्क में रा. १०:५३ तक।

फाल्गुन शुक्ल १ बुध (१८ फरवरी) – नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में दिनरात, पू.भा. में रात ९:११ बजे से रात्रिअंत तक (परिहार चिंतनीय – शतभिषा में शुक्र राहु युति। पू.भा. में बुध युति।) चंद्रमा– कुंभ में दिनरात।

फाल्गुन शुक्ल २ गुरु (१९ फरवरी) – नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में दिनरात, पू.भा. में सूर्योदय से रात ८:४७ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ११,२,३, (परिहार चिंतनीय – पू.भा. में बुध युति। उ.भा. में शनि युति।) चंद्रमा– कुंभ में दि. २:५५ तक।

वाहन क्रय मुहूर्त

चैत्र शुक्ल १ रवि (३० मार्च) – वाहन क्रय, अश्विनी में दिन ४:३६ बजे से सायं ५:५५ बजे तक (परिहार चिंतनीय – रेवती में केतु वेध, ।)स.सि.योग.दि.४:३६ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मीन में दि. ४:३६ तक।

चैत्र शुक्ल ६ गुरु (३ अप्रैल) – वाहन क्रय, मृगशिर में प्रात: ७:०२ बजे से रात्रिअंत तक (परिहार चिंतनीय – रोहिणी में गुरु युति।)रवियो.–प्रा.७:०२ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– वृष में सा. ६:२६ तक।

चैत्र शुक्ल ९ रवि (६ अप्रैल) – वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), पुष्य में रात ७:२१ बजे से रातअंत तक लग्न ७,८,१०,११,रवियो.–सू.उ.से रा.अं.। रविपुष्य योग–रात्रि ६:२६वजे तक। चंद्रमा– कर्क में दिनरात।

चैत्र शुक्ल १० चंद्र (७ अप्रैल) – वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), पुष्य में सूर्योदय से प्रात: ६:२५ बजे तक रवियो. –सू.उ.से रा.अं.। स.सि.योग–प्रा. ६:२५वजे तक। चंद्रमा– कर्क में दिनरात।

वैशाख कृष्ण १ रवि (१३ अप्रैल) – वाहन क्रय, चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से रात ६:०५ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न २,६,८, (परिहार चिंतनीय – वज्र दोष रात ९:४२ वजे से रात १०:५४ वजे । चित्रा में शनि वेधराहु वेध, ।) चंद्रमा– कन्या में प्रा. ७:४२ तक।

वैशाख कृष्ण १ चंद्र (१४ अप्रैल) – वाहन क्रय, स्वाती में सूर्योदय से रात १२:१६ बजे तक लग्न. २,अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न २, चंद्रमा– तुला में दिनरात।

वैशाख कृष्ण ८ चंद्र (२१ अप्रैल) – वाहन क्रय, श्रवण में दिन १२:३९ बजे से रात ७:०४ बजे तक ल. ४,५,६,७,स.सि.योग.दि.१२:३९ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मकर में दिनरात।

वैशाख शुक्ल ४ गुरु (१ मई) – वाहन क्रय, मृगशिर में दिन ११:२६ बजे से दिन २:२९ बजे तक (परिहार चिंतनीय – मृगशिर में गुरु युति।)रवियो.–सू.उ.से दि.२:२९वजे। चंद्रमा– मिथुन में दिनरात।

वैशाख शुक्ल ५ शुक्र (२ मई) – वाहन क्रय, पुनर्वसु में दिन १:१२ बजे से रात्रिअंत तक ल. ५,६,७,८,९,१०,११,१२, (परिहार चिंतनीय – शूल दोष रात ३:२३ वजे से रातअंत ५:२३ वजे ।)रवियो.–दि.१:१२ वजेसे रा.अं.। स.सि.योग.दि.१:१२ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मिथुन में दिनरात।

वैशाख शुक्ल ७ रवि (४ मई) – वाहन क्रय, पुष्य में सूर्योदय से प्रात: ७:१९ बजे तक लग्न. २, (परिहार चिंतनीय – क्रान्तिसाम्य दोष रात ७:३१ से रात ११:५४ वजे तक। पुष्य में मंगल युति।)रविपुष्य योग–दिन १२:५९वजे तक। चंद्रमा– कर्क में दिनरात।

वैशाख शुक्ल ११ गुरु (८ मई) – वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), हस्त में रात ९:१२ बजे से रात्रिअंत तक ल. ८,९,१०,११,१२, (परिहार चिंतनीय – वज्र दोष रात २:०१ वजे से रात ३:१३ वजे । हस्त में शनि वेध,। उ.फा. में केतु युति।) चंद्रमा– कन्या में दिनरात।

वैशाख शुक्ल १२ शुक्र (९ मई) – वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), हस्त में एवं चित्रा में सूर्योदय से रात्रिअंत तक वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), मुहूर्त्त हैं। (परिहार चिंतनीय – हस्त में शनि वेध। चित्रा में राहु वेध, । हस्त में शुक्रवेध ५:४६ से दिन १०:४१ वजे तक।)रवियो.–रा.१२:१४ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– कन्या में दिनरात।

ज्येष्ठ कृष्ण ५ रवि (१८ मई) – वाहन क्रय, श्रवण में सायं ६:५३ बजे से रात्रिअंत तक (परिहार चिंतनीय – क्रान्तिसाम्य दोष दिन १:१२ से सायं ५:२१ वजे तक। श्रवण में सूर्य वेध, । उ.षा. में गुरु वेध प्रात: ५:४१ से प्रात: ६:२४ वजे तक।)रवियो.–शा.६:५३ वजेसे रा.अं.। स.सि.योग–सायं. ६:५३वजे तक। चंद्रमा– मकर में दिनरात।

ज्येष्ठ कृष्ण ६ चंद्र (१९ मई) – वाहन क्रय, श्रवण में सूर्योदय से प्रात: ६:१६ बजे एवं सायं ६:०७ बजे से रात ७:३१ बजे तक (परिहार चिंतनीय – श्रवण में सूर्य वेध ।)रवियो.–सू.उ.से रा.७:३१वजे। स.सि.योग–रात्रि ७:३१वजे तक। चंद्रमा– मकर में दिनरात।

ज्येष्ठ शुक्ल २ बुध (२८ मई) – वाहन क्रय, मृगशिर में सूर्योदय से रात १२:३४ बजे तक लग्न. ३,६,९,१०,११, (परिहार चिंतनीय – शूल दोष रात ७:१३ वजे से रात ९:१३ वजे । मृगशिर में गुरु युति।)स.सि.योग–रात्रि १२:३४वजे तक। चंद्रमा– वृष में दि. १:४१ तक।

ज्येष्ठ शुक्ल ३ गुरु (२९ मई) – वाहन क्रय, पुनर्वसु में रात १०:४७ बजे से रात ११:२१ बजे तक (परिहार चिंतनीय – गण्ड दोष दिन ३:५४ वजे से सायं ६:१८ वजे ।) रवियो.–रा.१०:४७ वजेसे रा. अं.। स.सि.योग.रा.१०:४७ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मिथुन में दिनरात।

ज्येष्ठ शुक्ल ४ शुक्र (३० मई) – वाहन क्रय, पुनर्वसु में एवं पुष्य में रात ९:२७ बजे से रात्रिअंत तक (परिहार चिंतनीय – क्रान्तिसाम्य दोष दिन ८:०८ से दिन १२:२१ वजे तक।)रवियो.–सू.उ.से रा. ९:४०वजे। स.सि.योग–रात्रि ९:४०वजे तक। चंद्रमा– मिथुन में दि. ३:५३ तक।

ज्येष्ठ शुक्ल १० गुरु (५ जून) – वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), हस्त में सूर्योदय से प्रात: ९:१७ बजे तक (परिहार चिंतनीय – हस्त में शनि वेध।)रवियो.–सू.उ.से रा.६:३७वजे। चंद्रमा– कन्या में दिनरात।

ज्येष्ठ शुक्ल ११ शुक्र (६ जून) – वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), चित्रा में दिन १०:१६ बजे से दिन ३:३५ बजे तक (परिहार चिंतनीय – हस्त में शनि वेध। चित्रा में राहु वेध, ।)रवियो.–सू.उ.से प्रा.६:३८वजे। चंद्रमा– कन्या में रा. ८:११ तक।

ज्येष्ठ शुक्ल १२ रवि (८ जून) – वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), स्वाती में सूर्योदय से दिन १२:४६ बजे तक लग्न. ३,अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ३, चंद्रमा– तुला में दिनरात।

आषाढ शुक्ल १ गुरु (२६ जून) – वाहन क्रय, पुनर्वसु में दिन १:२९ बजे से रात्रिअंत ५:४० बजे तक ल. ६,७,८,९,१०,११,१२,१,२, (परिहार चिंतनीय – व्याघात दोष रात ११:४३ वजे से रात ३:१९ वजे । आर्द्रा में सूर्य गुरु युति।)स.सि.योग.दि.८:४७ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मिथुन में रा. १:४३ तक।

आषाढ शुक्ल २ शुक्र (२७ जून) – वाहन क्रय, पुनर्वसु में एवं पुष्य में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:४१ बजे तक वाहन क्रय, मुहूर्त्त हैं। (परिहार चिंतनीय – पुष्य में बुध युति।)स.सि.योग–प्रा. ७:२४वजे तक। चंद्रमा– कर्क में दिनरात।

आषाढ शुक्ल ७ बुध (२ जुलाई) – वाहन क्रय, हस्त में दिन ११:१६ बजे से दिन १२:०५ बजे तक ल. ६, (परिहार चिंतनीय – हस्त में शनि वेध,। उ.फा. में केतु युति।)स.सि.योग.दि.११:१६ वजेसे रा.अं. । चंद्रमा– कन्या में दिनरात।

आषाढ शुक्ल ८ गुरु (३ जुलाई) – वाहन क्रय, हस्त में एवं चित्रा में प्रात: ६:१५ बजे से दिन २:१२ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ६,७, (परिहार चिंतनीय – हस्त में शनि वेध। चित्रा में राहु वेध, ।)रवियो.–दि.१:५८ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– कन्या में रा. ३:२४ तक।

आषाढ शुक्ल ९ शुक्र (४ जुलाई) – वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), चित्रा में एवं स्वाती में दिन ४:३५ बजे से रात्रिअंत ५:४३ बजे तक (परिहार चिंतनीय – चित्रा में राहु वेध, ।)रवियो.–सू.उ.से रा.अं.। चंद्रमा– तुला में दिनरात।

श्रावण कृष्ण ३ रवि (१३ जुलाई) – वाहन क्रय, श्रवण में सूर्योदय से प्रात: ६:५३ बजे तक (परिहार चिंतनीय – धनिष्ठा में बुधवेध सायं ६:५० वजे से रात १२:४९ वजे तक।) चंद्रमा– मकर में सा. ६:५० तक।

श्रावण कृष्ण ८ शुक्र (१८ जुलाई) – वाहन क्रय, अश्विनी में सूर्योदय से सायं ५:०३ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ६,७,८,९, (परिहार चिंतनीय – अश्विनी में भौम वेध ।)स.सि.योग–रात्रि २:१५वजे तक। चंद्रमा– मेष में दिनरात।

श्रावण कृष्ण ११ चंद्र (२१ जुलाई) – वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), मृगशिर में रात ९:०८ बजे से रात्रिअंत ५:५० बजे तक (परिहार चिंतनीय – मृगशिर में शुक्र युति।) स.सि.योग–रात्रि ९:०८वजे तक। अमृ.सि.

योग.रा.९:०८ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– वृष में दिनरात।

श्रावण शुक्ल ६ बुध (३० जुलाई) – वाहन क्रय, हस्त में एवं चित्रा में सूर्योदय से रात २:४८ बजे तक लग्न. ७,९,१०,११, (परिहार चिंतनीय – हस्त में शनि वेध। चित्रा में राहु वेध, ।)रवियो.–सू.उ.से रा.१०:०३वजे। स.सि.योग–रात्रि १०:०३वजे तक। चंद्रमा– कन्या में दिनरात।

श्रावण शुक्ल ७ गुरु (३१ जुलाई) – वाहन क्रय, चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से रात ५:०४ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ७,९,१०,११,१,२, (परिहार चिंतनीय – चित्रा में राहु वेध, ।) चंद्रमा– कन्या में दि. ११:२४ तक।

श्रावण शुक्ल ८ शुक्र (१ अगस्त) – वाहन क्रय, स्वाती में सायं ६:१५ बजे से रात ३:४५ बजे तक लग्न. १०,११,१,२,३,रवियो.–रा.३:४५ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– तुला में दिनरात।

श्रावण शुक्ल १४ शुक्र (८ अगस्त) – वाहन क्रय, श्रवण में रात १:५६ बजे से रात्रिअंत ५:५८ बजे तक रवियो.–सू.उ.से दि.२:२८वजे। स.सि.योग.दि.२:२८ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मकर में दिनरात।

भाद्रपद कृष्ण ६ गुरु (१४ अगस्त) – वाहन क्रय, अश्विनी में प्रातः ९:०४ बजे से रात २:०४ बजे तक (परिहार चिंतनीय – क्रान्तिसाम्य दोष रात ५:२७ से रातअंत वजे तक। गण्ड दोष दिन १:१० वजे से दिन ३:३४ वजे । अश्विनी में केतु वेध, ।)रवियो.–दि.९:०४ वजेसे रा.अं.। स.सि.योग–दिन ९:०४वजे तक। स.सि.योग.दि.९:०४ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मीन में दि. ९:०४ तक।

भाद्रपद कृष्ण १० चंद्र (१८ अगस्त) – वाहन क्रय, मृगशिर में सूर्योदय से प्रातः ६:२१ बजे एवं सायं ५:२३ बजे से रात २:०९ बजे तक लग्न १०,११,१२,१,३, (परिहार चिंतनीय – वज्र दोष रात ११:०३ वजे से रात १२:१५ वजे ।)अमृ.सि.योग–रात्रि २:०९वजे तक। चंद्रमा– वृष में दि. २:४४ तक।

भाद्रपद कृष्ण १२ बुध (२० अगस्त) – वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), पुनर्वसु में सूर्योदय से दिन १:६० बजे तक लग्न. ७,८, (परिहार चिंतनीय – पुनर्वसु में गुरु शुक्र युति। पुष्य में बुध युति।) चंद्रमा– मिथुन में सा. ६:४० तक।

भाद्रपद शुक्ल ४ बुध (२७ अगस्त) – वाहन क्रय, चित्रा में दिन ३:४८ बजे से रात्रिअंत ६:०५ बजे तक (परिहार चिंतनीय – क्रान्तिसाम्य दोष रात ७:३१ से रात ११:५९ वजे तक। हस्त में शनि वेध। चित्रा में राहु वेध, । हस्त में मंगल युति।)रवियो.–सू.उ.से प्रा.६:०९वजे। स.सि.योग–प्रा. ६:०९वजे तक। चंद्रमा– कन्या में रा. ७:२९ तक।

भाद्रपद शुक्ल ५ गुरु (२८ अगस्त) – वाहन क्रय, चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:०५ बजे तक वाहन क्रय, मुहूर्त हैं। (परिहार चिंतनीय – चित्रा में राहु वेध, ।)रवियो.–दि.८:५० वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– तुला में दिनरात।

भाद्रपद शुक्ल ६ शुक्र (२९ अगस्त) – वाहन क्रय, स्वाती में सूर्योदय से दिन ११:४५ बजे तक लग्न. ७,रवियो.–सू.उ.से दि.११:४५वजे। चंद्रमा– तुला में दिनरात।

भाद्रपद शुक्ल १२ गुरु (४ सितम्बर) – वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), श्रवण में रात ११:४० बजे से रात ४:०७ बजे तक (परिहार चिंतनीय – श्रवण में बुधवेध रात १:१८ वजे से रातअंत ५:४६ वजे तक।) चंद्रमा– मकर में दिनरात।

भाद्रपद शुक्ल १३ शुक्र (५ सितम्बर) – वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), श्रवण में सूर्योदय से रात ११:३६ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ७,८,९,११,१,२, (परिहार चिंतनीय – अतिगंड दोष दिन १:५० वजे से दिन ४:१४ वजे ।)रवियो.–रा.११:३६ वजेसे रा.अं.। स.सि.योग–रात्रि ११:३६वजे तक। चंद्रमा– मकर में दिनरात।

आश्विन कृष्ण ४ गुरु (११ सितम्बर) – वाहन क्रय, अश्विनी में दिन १२:४५ बजे से दिन १:५९ बजे तक लग्न ८,९, (परिहार चिंतनीय – व्याघात दोष सायं ५:०६ वजे से रात ८:४२ वजे । अश्विनी में सूर्य वेध केतु वेध, ।)स.सि.योग–दिन १:५९वजे तक। चंद्रमा– मेष में दिनरात।

आश्विन कृष्ण ८ रवि (१४ सितम्बर) – वाहन क्रय, मृगशिर में प्रातः ८:३९ बजे से रात ३:०२ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं ल. ७,८,९,१०,११,१२,१,२,३,४,रवियो.–सू.उ.से दि.८:३९वजे। चंद्रमा– वृष में रा. ८:०४ तक।

आश्विन कृष्ण ११ बुध (१७ सितम्बर) – वाहन क्रय, पुष्य में दिन ११:४६ बजे से रात्रिअंत ६:१२ बजे तक (परिहार चिंतनीय – पुनर्वसु में गुरु युति।) चंद्रमा– कर्क में दिनरात।

आश्विन कृष्ण १२ गुरु (१८ सितम्बर) – वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), पुष्य में सूर्योदय से प्रातः ६:३६ बजे तक अमृ.सि.योग–प्रा. ६:३६वजे तक। चंद्रमा– कर्क में दिनरात।

आश्विन शुक्ल ३ बुध (२४ सितम्बर) – वाहन क्रय, चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से रात ९:०७ बजे तक लग्न. ८,९,१०,११, (परिहार चिंतनीय – चित्रा में राहु वेध, । स्वाती में मंगल युति।)रवियो.–दि.४:२१ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– तुला में दिनरात।

आश्विन शुक्ल १० गुरु (२ अक्टूवर) – वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), श्रवण में प्रातः ९:१० बजे से रात्रिअंत ६:१७ बजे तक रवियो.–सू.उ.से रा.अं.। चंद्रमा– मकर में दिनरात।

आश्विन शुक्ल ११ शुक्र (३ अक्टूवर) – वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), श्रवण में सूर्योदय से प्रातः ७:०० बजे तक (परिहार चिंतनीय – शूल दोष रात ९:४० वजे से रात ११:४० वजे ।)रवियो.–सू.उ.से दि. ९:३०वजे। स.सि.योग–दिन ९:३०वजे तक। चंद्रमा– मकर में रा. ९:२१ तक।

कार्तिक कृष्ण २ बुध (८ अक्टूवर) – वाहन क्रय, अश्विनी में सूर्योदय से रात १०:५० बजे तक लग्न. ७,८,९,१०,११,१,२,३, (परिहार चिंतनीय – अश्विनी में केतु वेध।) चंद्रमा– मेष में दिनरात।

कार्तिक कृष्ण ६ रवि (१२ अक्टूवर) – वाहन क्रय, मृगशिर में सूर्योदय से दिन १०:५७ बजे तक लग्न. ७,रवियो.–दि.१:३९ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मिथुन में दिनरात।

कार्तिक कृष्ण ७ चंद्र (१३ अक्टूवर) – वाहन क्रय, पुनर्वसु में दिन १२:२८ बजे से रात्रिअंत ६:२१ बजे तक ल. ९,१०,११,१२,१,२,३,४,५, (परिहार चिंतनीय – पुनर्वसु में गुरु युति।)रवियो.–सू.उ.से दि. १२:२८वजे। चंद्रमा– मिथुन में रा. ५:५६ तक।

कार्तिक कृष्ण ९ बुध (१५ अक्टूवर) – वाहन क्रय, पुष्य में दिन १०:३० बजे से दिन १२:०२ बजे तक चंद्रमा– कर्क में दिनरात।

कार्तिक शुक्ल १ बुध (२२ अक्टूवर) – वाहन क्रय, स्वाती में रात ८:२० बजे से रात १:५४ बजे तक लग्न २,३,५, (परिहार चिंतनीय – विशाखा में मंगल बुध युति।) चंद्रमा– तुला में दिनरात।

कार्तिक शुक्ल ७ बुध (२९ अक्टूवर) – वाहन क्रय, श्रवण में रात ९:४७ बजे से रात्रिअंत ६:२९ बजे तक ल. ३,४,५,६, चंद्रमा– मकर में दिनरात।

कार्तिक शुक्ल ८ गुरु (३० अक्टूवर) – वाहन क्रय, श्रवण में सूर्योदय से दिन १०:०६ बजे तक लग्न. ९, (परिहार चिंतनीय – क्रान्तिसाम्य दोष रात १:०८ से रात ५:१८ वजे तक। गण्ड दोष प्रातः ७:२२ वजे से प्रातः ९:४६ वजे । धनिष्ठा में मंगल वेध,।) रवियो.–शा.६:२९ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मकर में दिनरात।

कार्तिक शुक्ल १५ बुध (५ नवम्वर) – वाहन क्रय, अश्विनी में प्रातः ८:४६ बजे से प्रातः ९:४२ बजे तक लग्न. ८, (परिहार चिंतनीय – अश्विनी में केतु वेध, । भरणी में बुधवेध दिन २:५६ वजे से रात ८:१० वजे तक।) चंद्रमा– मेष में दिनरात।

मार्गशीर्ष कृष्ण ५ रवि (९ नवम्वर) – वाहन क्रय, पुनर्वसु में रात ८:१४ बजे से रात्रिअंत ६:३५ बजे तक ल. ३,४,५,ल. ५,६, (परिहार चिंतनीय – पुनर्वसु में गुरु युति।) चंद्रमा– मिथुन में दिनरात।

मार्गशीर्ष कृष्ण ६ चंद्र (१० नवम्वर) – वाहन क्रय, पुनर्वसु में एवं पुष्य में सूर्योदय से रात १२:०७ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ८,१०,१२,२,ल. २,३,४, (परिहार चिंतनीय – पुनर्वसु में गुरु युति।)रवियो.–शा.६:५५ वजेसे रा.अं.। स.सि.योग.सा.६:५५ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मिथुन में दि. १:०९ तक।

मार्गशीर्ष कृष्ण १२ रवि (१६ नवम्वर) – वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), हस्त में सूर्योदय से रात २:१६ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ८,१०,१२,१,२,३, (परिहार चिंतनीय – चित्रा में शनि वेध,राहु वेध, ।)अमृ.सि.योग–रात्रि २:१६वजे तक। चंद्रमा– कन्या में दिनरात।

मार्गशीर्ष शुक्ल ६ बुध (२६ नवम्वर) – वाहन क्रय, श्रवण में सूर्योदय से रात १:३१ बजे तक लग्न. १०,१२,१,३,रवियो.–सू.उ.से रा.१:३१वजे। चंद्रमा– मकर में दिनरात।

मार्गशीर्ष शुक्ल ११ चंद्र (१ दिसम्वर) – वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), अश्विनी में रात १२:५३ बजे से रात्रिअंत ६:४९ बजे तक (परिहार चिंतनीय – अश्विनी में केतु वेध, ।) चंद्रमा– मीन में रा. ११:११ तक।

पौष कृष्ण १ शुक्र (५ दिसम्वर) – वाहन क्रय, मृगशिर में दिन ११:५० बजे से रात्रिअंत ६:५२ बजे तक चंद्रमा– वृष में रा. १०:२१ तक।

पौष कृष्ण ४ चंद्र (८ दिसम्वर) – वाहन क्रय, पुष्य में दिन ४:०८ बजे से रात ३:०१ बजे तक (परिहार चिंतनीय – पुष्य में सूर्य वेध ।)स.सि.योग–रात्रि ३:०१वजे तक। चंद्रमा– कर्क में दिनरात।

पौष कृष्ण १० रवि (१४ दिसम्वर) – वाहन क्रय, चित्रा में सायं ६:५१ बजे से रात्रिअंत ६:५८ बजे तक ल. ३,४,५,६,७, (परिहार चिंतनीय – चित्रा में शनि वेध,।)अमृ.सि.योग–दिन ८:२१वजे तक। चंद्रमा– कन्या में रा. ९:४५ तक।

पौष कृष्ण ११ चंद्र (१५ दिसम्वर) – वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:५८ बजे तक वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), मुहूर्त हैं। (परिहार चिंतनीय – अतिगंड दोष दिन १२:३३ वजे से दिन २:५७ वजे । चित्रा में शनि वेध। स्वाती में राहु वेध, ।) चंद्रमा– तुला में दिनरात।

पौष शुक्ल ९ चंद्र (२९ दिसम्वर) – वाहन क्रय, अश्विनी में दिन १०:१४ बजे से रात्रिअंत ५:३३ बजे तक (परिहार चिंतनीय – अश्विनी में केतु वेध, ।)रवियो.–प्रा.७:४४ वजेसे रा.५:३३वजेपुन:पुन:रा. ५:३३सेरा.३:५६अगलेदिन। चंद्रमा– मीन में प्रा. ७:४४ तक।

माघ कृष्ण १ रवि (४ जनवरी) – वाहन क्रय, पुष्य में रात १:५३ बजे से रात्रिअंत ७:०७ बजे तक (परिहार चिंतनीय – पुनर्वसु में गुरु युति।)रविपुष्य योग.दि.३:१७ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मिथुन में दि. ९:४६ तक।

माघ कृष्ण २ चंद्र (५ जनवरी) – वाहन क्रय, पुष्य में सूर्योदय से दिन १:३३ बजे तक लग्न. ९,११,अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ११,१२,१,स.सि.योग–दिन १:३३वजे तक। चंद्रमा– कर्क में दिनरात।

माघ कृष्ण ६ शुक्र (९ जनवरी) – वाहन क्रय, हस्त में रात ७:४७ बजे से रात्रिअंत ७:०७ बजे तक (परिहार चिंतनीय – अतिगंड दोष सायं ५:०३ वजे से रात ७:२७ वजे।) रवियो.–सू.उ.से दि.१:४८वजे। चंद्रमा– कन्या में दिनरात।

माघ कृष्ण ८ रवि (११ जनवरी) – वाहन क्रय, चित्रा में सूर्योदय से दिन १०:२१ बजे तक लग्न. ९,११, (परिहार चिंतनीय – चित्रा में शनि वेध। स्वाती में राहु वेध, ।) चंद्रमा– तुला में दिनरात।

माघ कृष्ण ९ चंद्र (१२ जनवरी) – वाहन क्रय, स्वाती में दिन १२:४३ बजे से रात ९:०७ बजे तक लग्न १,२,३,४,५, (परिहार चिंतनीय – शूल दोष सायं ६:१४ वजे से रात ८:१४ वजे । स्वाती में राहु वेध, ।) चंद्रमा– तुला में दिनरात।

माघ शुक्ल ७ रवि (२५ जनवरी) – वाहन क्रय, अश्विनी में दिन १:३६ बजे से रात ११:१२ बजे तक ल. २,३,४,५,६, (परिहार चिंतनीय – अश्विनी में केतु वेध, ।) रवियो.–सू.उ.से दि.१:३६वजे। स.

सि.योग.दि.१:३६ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मीन में दि. १:३६ तक।

माघ शुक्ल ८ चंद्र (२६ जनवरी) – वाहन क्रय, अश्विनी में दिन १०:२१ बजे से दिन १२:३५ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न १, (परिहार चिंतनीय – अश्विनी में केतु वेध, ।) चंद्रमा– मेष में दिनरात।

माघ शुक्ल ११ गुरु (२९ जनवरी) – वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), मृगशिर में दिन १:५६ बजे से रात्रि ८:२९ बजे तक ल. २,३,४,५, (परिहार चिंतनीय – रोहिणी में भौम वेध।) रवियो.–सू.उ. से प्रा.७:३४वजे। चंद्रमा– वृष में सा. ६:३३ तक।

माघ शुक्ल १५ रवि (१ फरवरी) – वाहन क्रय, पुष्य में दिन ४:४४ बजे से रात १२:०२ बजे तक लग्न. ४,७,रविपुष्य योग–रात्रि १२:०२वजे तक। चंद्रमा– कर्क में दिनरात।

फाल्गुन कृष्ण ४ गुरु (५ फरवरी) – वाहन क्रय, हस्त में रात १२:२५ बजे से रात्रिअंत तक ल. ७,८,९, (परिहार चिंतनीय – हस्त में शनि वेध,।) चंद्रमा– कन्या में दिनरात।

फाल्गुन कृष्ण ५ शुक्र (६ फरवरी) – वाहन क्रय, हस्त में सूर्योदय से रात ११:४४ बजे एवं चित्रा में रात १:४४ बजे से रात्रिअंत तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ११,२,७,ल. ८,९, (परिहार चिंतनीय – हस्त में शनि वेध।) चंद्रमा– कन्या में दिनरात।

फाल्गुन कृष्ण ७ रवि (८ फरवरी) – वाहन क्रय, स्वाती में दिन ३:५८ बजे से रात ५:०२ बजे तक लग्न. ७,८,९, (परिहार चिंतनीय – क्रान्तिसाम्य दोष सायं ६:३७ से रात ११:१३ वजे तक। स्वाती में राहु वेध, । विशाखा में सूर्य वेध,। स्वाती में बुधवेध रात १०:२७ वजे से रातअंत ५:०६ वजे तक।)रवियो.–सू.उ.से रा.५:०६वजे। चंद्रमा– तुला में दिनरात।

फाल्गुन शुक्ल ५ रवि (२२ फरवरी) – वाहन क्रय, अश्विनी में सूर्योदय से सायं ५:५३ बजे तक लग्न. ११,२, (परिहार चिंतनीय – अश्विनी में केतु वेध, ।)रवियो.–शा.५:५३ वजेसे रा. अं.। स.सि.योग–सायं. ५:५३वजे तक। चंद्रमा– मेष में दिनरात।

फाल्गुन शुक्ल १० गुरु (२६ फरवरी) – वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), मृगशिर में सूर्योदय से दिन १२:१८ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ११,२,रवियो.–सू.उ.से रा.अं.। चंद्रमा– मिथुन में दिनरात।

फाल्गुन शुक्ल ११ शुक्र (२७ फरवरी) – वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), पुनर्वसु में दिन १०:५६ बजे से दिन ११:३७ बजे एवं रात १०:३९ बजे से रात्रिअंत तक (परिहार चिंतनीय – पुनर्वसु में गुरु युति।)रवियो.–सू.उ.से दि.१०:५६वजे। स.सि.योग.दि.१०:५६ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मिथुन में रा. ४:०० तक।

फाल्गुन शुक्ल १३ रवि (१ मार्च) – वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), पुष्य में सूर्योदय से प्रात: ८:४१ बजे तक लग्न. ११, (परिहार चिंतनीय – अतिगंड दोष दिन २:४० वजे से सायं ५:०४ वजे ।)रवियो.–दि.८:४१ वजेसे रा.अं.। रविपुष्य योग–दिन ८:४१वजे तक। चंद्रमा– कर्क में दिनरात।

चैत्र कृष्ण २ गुरु (५ मार्च) – वाहन क्रय, हस्त में दिन १०:११ बजे से रात्रिअंत तक (परिहार चिंतनीय – क्रान्तिसाम्य दोष रात १:४६ से रात ६:१४ वजे तक। हस्त में शनि वेध,।) चंद्रमा– कन्या में दिनरात।

चैत्र कृष्ण ५ रवि (८ मार्च) – वाहन क्रय, स्वाती में सूर्योदय से दिन १:३६ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ११,२,३, (परिहार चिंतनीय – व्याघात दोष प्रात: ७:०६ वजे से दिन १०:४२ वजे । स्वाती में भौम वेध राहु वेध, ।) चंद्रमा– तुला में दिनरात।

चैत्र कृष्ण ११ रवि (१५ मार्च) – वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), श्रवण में सूर्योदय से रात ५:५५ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न २,३,४,५,६,७,८,९,१०,११, चंद्रमा– मकर में दिनरात।

संपत्ति क्रय मुहूर्त

चैत्र शुक्ल ६ गुरु (३ अप्रैल) – संपत्ति क्रय, मृगशिर में प्रात: ७:०२ बजे से रात ९:३८ बजे तक (परिहार चिंतनीय – रोहिणी में गुरु युति।)रवियो.–प्रा.७:०२ वजेसे रा.अं. । चंद्रमा– वृष में सा. ६:२६ तक।

वैशाख कृष्ण ५ शुक्र (१८ अप्रैल) – संपत्ति क्रय, मूल में दिन १२:६० बजे से रात्रिअंत तक ल. ४,५,६,ल. ६,७,८,९,१०,११,१२, (परिहार चिंतनीय – ज्येष्ठा में भौम वेध ।) चंद्रमा– वृश्चिक में दि. ८:२४ तक।

वैशाख कृष्ण ११ गुरु (२४ अप्रैल) – संपत्ति क्रय, पू.भा. में दिन १०:४५ बजे से दिन २:३१ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं ल. ३,४,५, (परिहार चिंतनीय – पू.भा. में शुक्र शनि राहु युति।) चंद्रमा– कुंभ में रा. ३:२२ तक।

वैशाख शुक्ल ४ गुरु (१ मई) – संपत्ति क्रय, मृगशिर में दिन ११:२६ बजे से दिन २:२९ बजे तक (परिहार चिंतनीय – मृगशिर में गुरु युति।)रवियो.–सू.उ.से दि.२:२९वजे। चंद्रमा– मिथुन में दिनरात।

वैशाख शुक्ल ५ शुक्र (२ मई) – संपत्ति क्रय, पुनर्वसु में दिन १:१२ बजे से रात्रिअंत तक ल. ५,६,७,८,९,१०,११,१२, (परिहार चिंतनीय – शूल दोष रात ३:२३ वजे से रातअंत ५:२३ वजे ।)रवियो.–दि.१:१२ वजेसे रा.अं.। स.सि.योग.दि.१:१२ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मिथुन में दिनरात।

ज्येष्ठ कृष्ण ४ शुक्र (१६ मई) – संपत्ति क्रय, पू.षा. में रात ५:१५ बजे से रात्रिअंत तक ल. १, चंद्रमा– धनु में दिनरात।

ज्येष्ठ कृष्ण १० गुरु (२२ मई) – संपत्ति क्रय, पू.भा. में सूर्योदय से दिन २:२२ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ३,६, (परिहार चिंतनीय – पू.भा. में राहु युति। उ.भा. में शनि युति।) चंद्रमा– कुंभ में दि. १२:०७ तक।

ज्येष्ठ कृष्ण ११ शुक्र (२३ मई) – संपत्ति क्रय, रेवती में दिन ३:५७ बजे से रात १०:२८ बजे तक ल. ६,७,८,९, (परिहार चिंतनीय – रेवती में केतु वेध, । उ.भा. में शनि युति। रेवती में शुक्र युति।) चंद्रमा– मीन में दिनरात।

ज्येष्ठ शुक्ल ४ शुक्र (३० मई) – संपत्ति क्रय, पुनर्वसु में रात ९:२७ बजे से रात ९:४० बजे तक (परिहार चिंतनीय – क्रान्तिसाम्य दोष दिन ८:०८ से दिन १२:२१ वजे तक।)रवियो.–सू.उ.से रा. ९:४०वजे। स.सि.योग–रात्रि ९:४०वजे तक। चंद्रमा– मिथुन में दि. ३:५३ तक।

आषाढ कृष्ण १ गुरु (१२ जून) – संपत्ति क्रय, मूल में सूर्योदय से दिन २:३१ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ३,४,६, (परिहार चिंतनीय – क्रान्तिसाम्य दोष रात ८:४५ से रात १२:५८ वजे तक।) चंद्रमा– धनु में दिनरात।

आषाढ कृष्ण ९ शुक्र (२० जून) – संपत्ति क्रय, रेवती में प्रात: ९:५२ बजे से रात ८:३७ बजे तक (परिहार चिंतनीय – अतिगंड दोष रात ११:४५ वजे से रात २:०९ वजे । रेवती में केतु वेध, ।)अमृ.सि.योग–रात्रि ९:४४वजे तक। स.सि.योग.रा.९:४४ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मीन में रा. ९:४४ तक।

आषाढ शुक्ल १५ गुरु (१० जुलाई) – संपत्ति क्रय, पू.षा. में दिन १:५९ बजे से रात ९:३९ बजे तक लग्न. ७,८,९,१०,११, (परिहार चिंतनीय – पूर्वाषाढ. में गुरु वेध सायं ५:२८ वजे से रात ११:४५ वजे तक।) चंद्रमा– धनु में दिनरात।

भाद्रपद कृष्ण ६ गुरु (१४ अगस्त) – संपत्ति क्रय, रेवती में सूर्योदय से प्रात: ९:०४ बजे तक (परिहार चिंतनीय – क्रान्तिसाम्य दोष रात ५:२७ से रातअंत वजे तक। गण्ड दोष दिन १:१० वजे से दिन ३:३४ वजे । अश्विनी में केतु वेध, ।) रवियो.–दि.९:०४ वजेसे रा.अं.। स.सि.योग–दिन ९:०४वजे तक। स.सि.योग.दि.९:०४ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मीन में दि. ९:०४ तक।

भाद्रपद शुक्ल ६ शुक्र (२९ अगस्त) – संपत्ति क्रय, विशाखा में दिन ११:४५ बजे से रात ८:२६ बजे तक रवियो.–सू.उ.से दि.११:४५वजे। चंद्रमा– तुला में दिनरात।

आश्विन शुक्ल ४ शुक्र (२६ सितम्बर) – संपत्ति क्रय, विशाखा में एवं अनुराधा में प्रात: ९:३६ बजे से रात्रिअंत ६:१५ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ८,९,१०,११,१२,१,२,रवियो.–रा.१०:१४ वजेसे रा.अं.। स.सि.योग.रा.१०:१४ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– तुला में दि. ३:२८ तक।

कार्तिक कृष्ण १० गुरु (१६ अक्टूवर) – संपत्ति क्रय, मघा में दिन १२:४६ बजे से रात्रिअंत ६:२२ बजे तक ल. ९,१०,११,१२,१,२,३,४,५, चंद्रमा– कर्क में दि. १२:४६ तक।

कार्तिक कृष्ण ११ शुक्र (१७ अक्टूवर) – संपत्ति क्रय, मघा में सूर्योदय से प्रात: ८:४० बजे तक लग्न. ७, (परिहार चिंतनीय – क्रान्तिसाम्य दोष दिन ८:४० से दिन १:०८ वजे तक। पू.फा. में केतु युति।)सिद्धयोग.दि.२:०४ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– सिंह में दिनरात।

मार्गशीर्ष कृष्ण ९ गुरु (१३ नवम्बर) – संपत्ति क्रय, पू.फा. में रात ११:३२ बजे से रात्रिअंत ६:३७ बजे तक ल. ४,५,६, (परिहार चिंतनीय – पू.फा. में केतु युति।) चंद्रमा– सिंह में दिनरात।

पौष कृष्ण १ शुक्र (५ दिसम्बर) – संपत्ति क्रय, मृगशिर में दिन ११:५० बजे से रात १२:५८ बजे तक चंद्रमा– वृष में रा. १०:२१ तक।

पौष शुक्ल ६ शुक्र (२६ दिसम्बर) – संपत्ति क्रय, पू.भा. में प्रात: ८:६० बजे से दिन १:४३ बजे तक (परिहार चिंतनीय – शतभिषा में राहु युति। पू.भा. में शनि युति।)रवियो.–सू.उ.से दि.८:६०वजे। चंद्रमा– कुंभ में रा. ३:१० तक।

माघ कृष्ण ६ गुरु (८ जनवरी) – संपत्ति क्रय, पू.फा. में सूर्योदय से दिन १२:३३ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ९,११,१, (परिहार चिंतनीय – पू.फा. में केतु युति।)रवियो.–दि.१२:३३ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– सिंह में सा. ६:४९ तक।

माघ शुक्ल ४ गुरु (२२ जनवरी) – संपत्ति क्रय, पू.भा. में रात ४:३७ बजे से रात्रिअंत तक ल. ९, (परिहार चिंतनीय – शतभिषा में राहु युति।)रवियो.–सू.उ.से दि.२:२०वजे। चंद्रमा– कुंभ में दिनरात।

माघ शुक्ल ५ शुक्र (२३ जनवरी) – संपत्ति क्रय, पू.भा. में सूर्योदय से दिन २:२८ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ११,१,२, (परिहार चिंतनीय – उ.भा. में शनि युति।)रवियो.–दि.२:२८ वजेसे रा. अं.। चंद्रमा– कुंभ में दि. ८:३० तक।

फाल्गुन कृष्ण १० गुरु (१२ फरवरी) – संपत्ति क्रय, मूल में दिन १:३९ बजे से रात्रिअंत तक ल. २,३,४,५,६,७,८,९, (परिहार चिंतनीय – वज्र दोष रात ३:०४ वजे से रातअंत ४:१६ वजे ।) चंद्रमा– वृश्चिक में दि. १:३९ तक।

फाल्गुन कृष्ण ११ शुक्र (१३ फरवरी) – संपत्ति क्रय, मूल में सूर्योदय से दिन २:२३ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ११,२,३, (परिहार चिंतनीय – मूल में गुरु वेध प्रात: ९:३५ वजे से दिन ४:०९ वजे तक।) चंद्रमा– धनु में दिनरात।

फाल्गुन शुक्ल १० गुरु (२६ फरवरी) – संपत्ति क्रय, मृगशिर में सूर्योदय से दिन १२:१८ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ११,२,रवियो.–सू.उ.से रा.अं.। चंद्रमा– मिथुन में दिनरात।

फाल्गुन शुक्ल ११ शुक्र (२७ फरवरी) – संपत्ति क्रय, पुनर्वसु में दिन १०:५६ बजे से दिन ११:३७ बजे तक (परिहार चिंतनीय – पुनर्वसु में गुरु युति।)रवियो.–सू.उ.से दि.१०:५६वजे। स.सि.योग.दि. १०:५६ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मिथुन में रा. ४:०० तक।

चैत्र कृष्ण १० शुक्र (१३ मार्च) – संपत्ति क्रय, पू.षा. में दिन १०:२७ बजे से रात ७:१५ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ,२,४,६, चंद्रमा– धनु में दिनरात।

कालहोरा मुहूर्त्त चक्र

जिस दिन होरा देखना हो उस दिन सूर्योदय से एक घंटे तक उस वार की पहली होरा होती है। तत्पश्चात दूसरी तीसरी इत्यादि होरा किस ग्रह की है यह इस सारणी से देखें। जैसे वुधवार के दिन पहली होरा बुध की, दूसरी चन्द्र व तीसरी शनि की, इस क्रम से एक-एक घंटे की होरा होती है।

ग्रह	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
रवि	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.
सोम	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.
मंग	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.
बुध	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.
गुरु	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.
शुक्र	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.
शनि	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.

कालहोरा में प्रशस्त कार्य – यस्य ग्रहस्य वारेषु कर्मकिंचितप्रकीर्तितम्,तस्य ग्रहस्य होरायां सर्व कर्म विधीयते। ज्योतिष शास्त्रों में जिस ग्रह के वार में जो कार्य करने हेतु आदेशित किया गया है, वह कर्म उस ग्रह की होरा में किसी भी वार को किया जा सकता है। अत: सूर्य की होरा में यात्रा, मंत्र, अस्त्र, नौकरी, वाद-विवाद, औषधि सेवन, शस्त्र खरीद विक्रय, पदग्रहण, पशुक्रय, स्वर्ण सम्बन्धी कार्य शुभ है। चन्द्र की होरा में वागवानी एवं कृषि कार्य, नवीन वस्त्राभूषण, औषधि क्रय विक्रय, यात्रा, जलकार्य, मोती, चांदी कार्य एवं पशुपालन शुभ हैं। मंगल की होरा में अग्नि संवंधित कार्य, युद्ध, वाद विवाद, ॠण देना, सोना, जासूसी कार्यारम्भ शुभ हैं। बुध की होरा में दीक्षा, विद्यारम्भ, सेवा, अकाउंटस्, कला, व्यापार प्रारम्भ, निर्माण कार्य, ग्रह प्रवेश शुभ हैं। गुरु की होरा में शिक्षारम्भ,यज्ञ, ग्रह शान्ति, पदग्रहण, औषधिपान, वस्त्राभूषण धारण, शपथग्रहण, विज्ञान की शिक्षा, मांगलिक कार्य शुभ हैं। शुक्र की होरा में मित्रता, कला कार्य, गायन, नूतन वस्त्राभूषण, भूमि कृय-विकृय, खेती कार्य शुभ हैं। शनि की होरा में ग्रह प्रवेश, वाहनक्रय, दीक्षा, मशीनरी कार्यारम्भ, स्थिर कार्य,सर्विस नियुक्ति शुभ हैं।

दिन का दोघड़िया

दिन समय	मुहूर्त्तपति	अधीन नक्षत्र	दिन के दोघड़िया मुहूर्त्तों में प्रसस्त कार्य
६.०० से ६.४८	शिव	आर्द्रा	शनिवार को त्यागकर। युद्ध, बन्धन, छेदन, मारण, बिष, सन्धि, अग्निकार्य, विद्यादि,क्रूर एवं उच्चाटन कार्य।
६.४८ से ७.३६	सर्प	आश्लेष	शनिवार को त्यागकर। अन्य सभी वारों को- शत्रुनाश, व्यापार, साहस, बिष, सर्प, चोरी एवं कपट कार्य।
७.३६ से ८.२४	मित्र	अनुराधा	प्रतिदिन- विवाह, उपनयन, यात्रा, वाहन, वस्त्र, चर, स्थिर समस्त शुभ कार्य।
८.२४ से ९.१२	पितृ	मघा	मंगल शुक्र को त्यागकर। पैत्रिक कार्य, वृक्षारोपण, वीज वोवनी, तालाव, कुआ, नलकूप, विवाह, युद्ध एवं साहसिक कार्य
९.१२ से १०.००	वसु	धनिष्ठा	प्रतिदिन- मुण्डन, उपनयन, युद्ध, वाहन, गृहनिर्माण, वागवानी एवं आभूषण कार्य।
१०.०० से १०.४८	जल	पूर्वाषाढ	गुरुवार को त्यागकर। कुआ, नलकूप, खेती, विग्रह, बन्धनमुक्ति, कठिनकार्य एवं लकड़ी काटनं का कार्य।
१०.४८ से ११.३६	विश्वदेव	उत्तराषाढ,	प्रतिदिन- देवस्थापना, गृहनिर्माण, पौष्टिक कार्य, शिल्पकर्म, मांगलिककार्य, उपनयन, कलाकार्य, शान्तिकर्म।
११.३६ से १२.२४	अभिजित्	अभिजित्	बुधवार को छोडकर अन्य वारों में समस्त शुभ कार्य। दक्षिण दिशा की यात्रा सर्वत्र निषेध है।
१२.२४ से १.१२	ब्रम्हा	रोहि.अभि.	सोम शुक्र को त्यागकर। पौष्टिक कार्य, विवाह, धन संचय, मन्दिर निर्माण, देव कृत्य, आभूषण एवं मांगलिक कार्य
१.१२ से २.००	इन्द्र	ज्येष्ठा	प्रतिदिन- शत्रु नाशन, भेद (जासूसी), प्रहार, लोहा कार्य, शिल्पकला, अर्क सुगन्धित तेल वनाना।
२.०० से २.४८	इन्द्राग्नि	विशाखा	प्रतिदिन- पदार्थ संग्रह, आभूषण, कारीगरी, चित्रकारी, कला, प्रहार वाहन एवं औषधि सेवन।
२.४८ से ३.३६	राक्षस	मूल	सोम गुरु को त्यागकर। वागवानी, युद्ध, सन्धि, विग्रह, कुआ, नलकूप, तालाव एवं कृषि सम्बन्धी समस्त कार्य।
३.३६ से ४.२४	वरूण	शतभिषा	प्रतिदिन- जल-थल वाहन, रत्न धारण, वास्तुपूजन, युद्ध एवं शस्त्र सम्बन्धी कार्य।
४.२४ से ५.१२	अर्यमा	उ.फा.	रविवार को त्यागकर अन्य सभी वारों को विवाह, यज्ञोपवीत, आभूषण, गृहारम्भ एवं गृहप्रवेश कार्य।
५.१२ से ६.००	भग	पू.फा.	प्रतिदिन-बन्धन, कठिनकार्य, क्रूरकार्य, शिल्पकला, कपटता, युद्ध एवं चित्रकारी।

रात का दोघड़िया

रात्रि समय	मुहूर्त्तपति	अधीन नक्षत्र	रात के दोघड़िया मुहूर्त्तों में प्रसस्त कार्य
६.०० से ६.४८	शिव	आर्द्रा,	शनिवार को त्यागकर- युद्ध, बन्धन, छेदन, मारण, बिष, सन्धि, अग्निकार्य, विद्यादि,क्रूर एवं उच्चाटन कार्य।
६.४८ से ७.३६	अजपाद्	पू.भा.	प्रतिदिन- शिल्पकला, साहसिक कार्य, काटना खेती, पशु विक्रय, जलयन्त्र कार्य।
७.३६ से ८.२४	अहिर्बुध्न्य	उ.भा.	प्रतिदिन- विवाह, यज्ञोपवीत, देव प्रतिष्ठा, गृह, वास्तु, अभिषेक।
८.२४ से ९.१२	पूषा	रेवती	प्रतिदिन- गृहप्रवेश, देव मन्दिर, आभूषण, विवाह, यज्ञोपवीत, जल व स्थल सम्बन्धी समस्त कार्य।
९.१२ से १०.००	अश्विनीकुमार	अश्विनी	प्रतिदिन- यात्रा, औषधि सेवन, आभूषण, विद्यारम्भ, चित्रकारी, कला, विवाह से सम्बन्धित कार्य, मांगलिककार्य
१०.०० से १०.४८	यम	भरणी	प्रतिदिन- साहसिक एवं क्रूर कार्य, शत्रुनाश, बिष, बन्धन, कुआ नलकूप, कृषि कार्य एवं अग्नि सम्बन्धी कार्य।
१०.४८ से ११.३६	अग्नि	कृतिका	मंगलवार को त्यागकर- सभा, साहस, अग्नि ग्रहण, शत्रुनाश, विवाद, लोहा एवं मणि सम्बन्धी कार्य।
११.३६ से १२.२४	ब्रम्हा	रोहि.अभि.	सोम शुक्र को त्यागकर। पौष्टिक कार्य, विवाह, धनसंचय, मन्दिरनिर्माण, देवकृत्य, आभूषण एवं मांगलिक कार्य।
१२.२४ से १.१२	चन्द्रमा	मृगशिरा	प्रतिदिन- विवाह, यज्ञोपवीत, यात्रा, देव प्रतिष्ठा, वास्तु कार्य एवं कृषि कार्य।
१.१२ से २.००	अदिति	पुनर्वसु	प्रतिदिन- शान्ति अनुष्ठान, पुष्टता, यात्रा, आभूषण, गृह, व्रतादि, वाहन, कृषि, विद्यारम्भ।
२.०० से २.४८	गुरु	पुष्य	प्रतिदिन- चर, स्थिर, शान्ति पुष्टता, विवाह को छोडकर अन्य उत्सव कार्य।
२.४८ से ३.३६	विष्णु	श्रवण	प्रतिदिन- देव प्रतिष्ठा, गृह वास्तु, पृष्टता, कारीगरी, मांगलिक कार्य, यज्ञोपवीत, चित्र एवं शान्ति अनुष्ठान।
३.३६ से ४.२४	सूर्य	हस्त	प्रतिदिन- यात्रा, विद्यारम्भ, विवाहादि, अलंकार, वस्त्र, औषधि, गृहारम्भ, देव प्रतिष्ठा।
४.२४ से ५.१२	विश्वकर्मा	चित्रा	प्रतिदिन-शान्ति अनुष्ठान, गृह वास्तु, अलंकार, वस्त्र, यज्ञोपवीत, स्थिर , कृषि कार्य।
५.१२ से ६.००	वायु	स्वाती	प्रतिदिन-देवालय, मांगलिक कार्य, वस्त्र अलंकार, वीज वोवनी, युद्ध एवं शस्त्र सम्बन्धी कार्य।

दोघड़िया मुहूर्त्त – दिनमान या रात्रिमान का पन्द्रहवां भाग एक मुहूर्त्त होता है। दिन-रात में कुल ३० मुहूर्त्त होते हैं। यदि दिन और रात समान हो तो दो घटी [मुहूर्त्ते घटिका द्वयम्, या आधुनिक ४८ मिनट] का एक मुहूर्त्त होता है। अपने स्थान के सूर्योदय, दिनमान एवं रात्रिमान के अनुसार इन मुहूर्त्तों का समय ज्ञात कर उपयोग करना चाहिए। इन मुहूर्त्तों के जो स्वामी होते हैं, उनके अधीन नक्षत्रों में जो-जो कार्य मुहूर्त्त शास्त्रों में कहे गये हैं, वे समस्त कार्य नक्षत्र स्वामी के मुहूर्त्त समय में किये जा सकते हैं। इस सम्बन्ध में विभिन्न मुहूर्त्त शास्त्रों के वचन इस प्रकार हैं। (१) कर्मेषु भोक्तं स्मृतम् (मुहूर्त्तमार्त्तण्ड)। (२) कर्मेषु भोक्तं स्मृतम् एषु मुहूर्त्तेषु भोक्तं नक्षत्रोक्तं कर्म स्मृतम् मुनीन्द्रैरित्यध्याहार: (मुहूर्त्तमार्त्तण्ड रचनाकार द्वारा स्वयं की गई मार्त्तण्डवल्लभा टीका)। (३) वारे प्रोक्तं कालहोरासुतस्य धिष्णे प्रोक्तं स्वामितिथ्यंशकेऽस्य (मुहूर्त्तचिन्तामणि)। (४) दिनस्य य: पंचदशो विभागो रात्रेस्तथा तद्धि मुहूर्त्तनाम्। नक्षत्रनाथप्रमिते मुहूर्त्ते मौहूर्त्तिकास्तत्समकर्ममाहू: (श्रीपति कृत रत्नसार)। (५) नाक्षत्रनामतुल्येऽस्मिन् कार्यं कुर्यात् स्वभोदितम्। दिनमध्येऽभिजित् संज्ञे दोषसंघेषु सत्स्वपि (मुहूर्त्त गणपति)। इस प्रकार अधिकांश मुहूर्त्त शास्त्रों ने किसी नक्षत्र में प्रशस्त समस्त कार्यों को; उस नक्षत्र के स्वामी के मुहूर्त्त समय में प्रसन्नता पूर्वक सम्पन्न करने की अज्ञा दी है।

वार या नक्षत्र संज्ञा के अनुसार प्रसस्त कार्य

संज्ञा	वार	नक्षत्र	प्रसस्त कार्य
घ्रुव	रविवार	तीनों उत्तरा, रोहिणी	गृहारम्भ, बीज बोना, ग्रहशान्ति, बागवानी, अनुबन्ध, मित्रता, बस्त्र-आभूषण बनाना या पहनना, खेल।
चर	सोमवार	स्वाती, पुनर्वशु, श्रवण धनिष्ठा, शतभिषा,	सवारी करना, यात्रा, फूल वागान लगाना, दुकान प्रारम्भ, रति, अध्ययन, आभूषण, कला सीखना
उग्र	मंगलवार	तीनों पूर्वा, भरणी, मघा	घात, अग्रिकार्य, जहर आदि का प्रयोग, शस्त्र निर्माण
मिश्र	बुधवार	विशाखा एवं कृतिका	अग्रिकार्य, अन्य नक्षत्रों में कहे गये कार्य, वृषोत्सर्ग
क्षिप्र	गुरुवार	अश्विनी, पुष्य, हस्त	दुकान प्रारम्भ, रति, अध्ययन, आभूषण, कला।
मृदु	शुक्रवार	मृग., अनु., चित्रा, रेवती	संगीत सीखना गाना, बस्त्र पहनना,अनुबन्ध, मित्रता।
तीक्ष्ण	शनिवार	मूल, ज्ये., आर्द्रा, आश्ले.	अभिचार, अस्त्र बनाना, घात, उग्र कार्य, पशु शिक्षा

राहुकाल

वार	समय
रवि	सायं ४.३० से ६
चन्द्र	प्रात: ७.३० से ९
मंगल	दोपहर ३ से ४.३०
बुध	दोपहर १२ से १.३०
गुरु	दोपहर १.३० से ३
शुक्र	दिन १०.३० से १२
शनि	प्रात: ९ से १०.३०

कुलिकादि वारदोष समय बोधक चक्र

कुलिक, कालवेला, कण्टक एवं यमघण्ट ये चार वारदोष होते हैं। जैसे रविवार में छटवां मुहूर्त्त मध्यम मान से १०.०० से १०.४८ तक कण्टक दोष युक्त होता है। जो कि नीचे खि चक्र में रविवार के नीचे एवं षष्ट मुहूर्त्त के सामने स्पष्ट है। मुहूर्त्त समय दिनमान ३० घटी एवं सूर्योदय ६.०० वजे मानकर मध्यम काल में दिया गया है। स्पष्ट समय जानने के लिए दिनमान में पन्द्रह का भाग देकर एक मुहूर्त्त काल निकालकर क्रमश: जोडने पर प्रथम द्वितीय मुहूर्त्त समय निकालकर कुलिकादि का दोष समय जानना चाहिए।

मुहूर्त्त संख्या	मुहूर्त्त समय दिन या रात्रि में	रविवार	सोमवार	मंगल	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
द्वितीय	६.४८ से ७.३६			कण्टक	कालवेला	यमघण्ट		कुलिक
चतुर्थ	८.२४ से ९.१२		कण्टक	कालवेला	यमघण्ट		कुलिक	
षष्ठ	१०.०० से १०.४८	कण्टक	कालवेला	यमघण्ट		कुलिक		
अष्टम	११.३६ से १२.२४	कालवेला	यमघण्ट		कुलिक			कण्टक
दशम	१.१२ से २.००	यमघण्ट		कुलिक			कण्टक	कालवेला
द्वादश	२.४८ से ३.३६		कुलिक			कण्टक	कालवेला	यमघण्ट
चतुर्दश	४.२४ से ५.१२	कुलिक			कण्टक	कालवेला	यमघण्ट	

卐 यात्रा प्रकरण सूत्र 卐

वार दिशाशूल
(पीछे एवं वायें शुभ)

रवि	पश्चिम
चंद्र	पूर्व,अग्निकोण
मंगल	उत्तर,वायव्य
बुध	उत्तर, ईशान
गुरु	दक्षिण
शुक्र	पश्चिम,नैऋत्य
शनि	पूर्व, ईशान

राहूवास
(पीछे एवं वायें शुभ)

सूर्य राशि	राहूवास
मेष,सिंह,धनु	पूर्व
वृष,कन्या,मक.	दक्षिण
मिथु.तुला,कुंभ	पश्चिम
कर्क,वृश्चि.मीन	उत्तर

चन्द्रवास
सम्मुख एवं दाऐं शुभ

चंद्र राशि	चंद्रवास
मेष,सिंह,धनु	पूर्व
वृष,कन्या,मक.	दक्षिण
मिथु.तुला,कुंभ	पश्चिम
कर्क,वृश्चि.मीन	उत्तर

योगिनीवास दिशा
(पीछे दायें शुभ)

तिथि	दिशा
२,१०	उत्तर
८,३०	ईशान
१,९	पूर्व
३,११	अग्नि
५,१३	दक्षिण
४,१२	नैऋत्य
६,१४	पश्चिम
७, १५	वायव्य

घात चक्रम्
केवल यात्रा, नोंकरी प्रारम्भ या वाद-विवाद हेतु

जन्म राशि	घातचंद्र	घात तिथि.	वार	नक्षत्र	लग्न
मेष	मेष	१, ६, ११	रवि	मघा	मेष
वृष	सिंह	५, १०, १५	शनि	हस्त	सिंह
मिथु.	धनु	२, ७, १२	सोम	स्वा.	धनु
कर्क	वृष	२, ७, १२	बुध	अनु.	वृष
सिंह	कन्या	३, ८, १३	शनि	मूल	कन्या
क.	मकर	५, १०, १५	शनि	श्रव.	मकर
तुला	मिथुन	४, ९, १४	गुरु	शत.	मिथु.
वृश्चि.	तुला	१, ६, ११	शुक्र	रेव.	तुला
धनु	कर्क	३, ८, १३	शुक्र	भर.	कर्क
मक.	वृश्चिक	४, ९, १४	मंग.	रोहि.	वृश्चि.
कुंभ	कुम्भ	३, ८, १३	गुरु	आर्द्रा	कुंभ
मीन	मीन	५, १०, १५	शुक्र	आश्ले.	मीन

वार के अनुसार काल-पांश चक्र
दिन में जो काल की दिशा होती है, वही दिशा रात्रिकाल में पांश की होती है।

वार	चंद्र	मंग.	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि
काल	वाय.	पश्चि	नैऋ	दक्षि.	अग्नि	पूर्व	उत्त.
पांश	अग्नि	पूर्व	ईशा.	उत्त.	वाय.	पश्चि	दक्षि.

यात्रा लग्न कुण्डली में ललाटी ग्रह
यात्रा के समय यदि दिशा का स्वामी ग्रह नीचे दिए गये ललाटिक चक्र में प्रदर्शित भाव में हो तो, वह ग्रह ललाट (माथे) पर माना जाता है। ऐसी स्थिति में यात्रा पर गया हुआ व्यक्ति बापस नहीं आता है।

गुरु-ईशान
लग्न
शुक्र अग्नि
गुरु-ईशान
सूर्य - पूर्व
शुक्र अग्नि
बुध - उत्तर
मंगल - दक्षिण
चन्द्र-वायु
शनि - पश्चिम
राहू-नै.
चन्द्र-वायव्य
राहु-नैऋत्य

परिघदण्ड (वायव्य से अग्नि कोण)

नक्षत्र समूह की दिशा	यात्रा में शुभ दिशा
पूर्व दिशा के नक्षत्र- कृतिका से आश्लेषा	पूर्व एवं अग्निकोण
दक्षिण दिशा के नक्षत्र- मघा से विशाखा	दक्षिण एवं नैऋत्य
पश्चिम दिशा के नक्षत्र- अनुराधा से श्रवण	पश्चिम एवं वायव्य
उत्तर दिशा के नक्षत्र- धनिष्ठा से भरणी तक	उत्तर एवं ईशान

यात्रा में प्रसस्त तिथि :- १ (कृ.), २, ३, ५, ७, १०, ११, १३।

नक्षत्र :- अश्वि., मृग., पुन., पष्य.,हस्त., अनु., श्रव., घनि., रेवती। इनमें अश्वि., पुष्य.,हस्त एवं अनु. नक्षत्र अत्यंत शुभ होने से पृष्ट चंद्र, परिघदण्ड एवं शूलदोष नहीं होता है।

यात्रा लग्न शोधन - (१) दिग्द्वार लग्न - यदि गन्तव्य दिशा की राशि लग्न में हो तो वह दिग्द्वार लग्न कहलाती है। जैसे पूर्व दिशा में यात्रा करना हो तो मेष, सिंह, या धनु लग्न, दक्षिण दिशा की यात्रा में वृष, कन्या, मकर लग्न, पश्चिम दिशा की यात्रा में मिथुन, तुला, कुम्भ लग्न एवं उत्तर दिशा की यात्रा में कर्क, वृश्चिक, मीन लग्न दिग्द्वार लग्न कहलाती है। दिग्द्वार लग्न में यात्रा करने पर धनलाभ एवं विजय होती है। (२) ललाटी चक्र में प्रत्येक ग्रह का दिशा स्वामित्व दिया गया है। यदि गन्तव्य दिशा का स्वामी केन्द्र में हो तो यात्रा शुभ होती है, परन्तु दिशा का स्वामी ललाटी नहीं होना चाहिए। (३) यात्रा लग्न में जन्म राशि, जन्म लग्न से अष्टम राशि, कुम्भ या मीन राशि और नवांश, पृष्टोदय राशियां (मेष, वृष, कर्क, धनु, मकर) राशियों की लग्न नहीं होना चाहिए। (४) यात्रा लग्न में अधिकाधिक शुभग्रह केन्द्र या त्रिकोण में शुभ होते हैं। पाप ग्रह ३, ६, ११ में शुभ होते हैं। परन्तु चन्द्रमा ६, ८, १२ भाव में, शनि १० वे भाव में, शुक्र ७ वें तथा लग्नेश ६, ७, ८, १२ वें भाव में अशुभ होते हैं।

यात्रा में अन्य विधि सूत्र - (१) यदि एक ही दिन में यात्रा कर गन्तव्य स्थान में पहुचना हो तो वारशूल, नक्षत्रशूल, सम्मुख शुक्र एवं योगिनी वास के विचार की आवश्यकता नहीं है। (२) किसी नगर या ग्राम में प्रवेश के दिन से ९ वां नक्षत्र, ९ वीं तिथि, ९ वें वार में यात्रा नहीं करना चाहिए।

सम्मुख शुक्र दिशा- शुक्र की दिशा का निर्धारण तीन तरह से होता है। पहला -शुक्रास्त के वाद जिस दिन शुक्र का उदय हो उस समय यदि शुक्र मार्गी हो तो शुक्र की दिशा पूर्व होती है, और यदि वक्री हो तो पश्चिम दिशा में आगामी अस्त होने तक रहता है। दूसरा- शुक्र अपनी क्रांति की दिशा में रहता है। तीसरा- परिघदण्ड के साथ प्रत्येक नक्षत्र की दिशा लिखी है। अत: शुक्र जिस नक्षत्र में हो उस नक्षत्र की दिशा में रहता है। इन तीनों प्रकार से यदि भिन्न-भिन्न दिशा मिले तो उनके बीच की दिशा ही शुक्र की दिशा होती है। यात्रा के समय शुक्र सम्मुख या दाहिने नहीं होना चाहिए। यदि शुक्र रेवती, अश्विनी, भरणी या कृतिका के प्रथम चरण में हो तो अंधा होने से सम्मुख या दाहिने शुक्र का दोष नहीं होता है।

यात्रा में शुभ शकुन - श्वेत पुष्प, भरा घड़ा, दूर का कोलाहल, अकेला वृद्ध पुरुष, गाय, सफेद बैल, हाथी, घोड़ा, देव प्रतिमा, प्रज्वलित अग्नि, दूर्वा, तिलकधारी ब्राह्मण, सोना, चांदी, रत्न, औषधियां, पीढा, जिसके पास कोई रोता हुआ न हो ऐसा शव, वेश्या, वाजे, नीलकंठ का दर्शन, मोर, कोयल, तीतर, गधे की आवाज, पुत्र सहित स्त्री, दूध-दही, ध्वजा, मंगल बस्तु, मदिरा, गीतगान, आदर्श पुरुष, कार्यसिद्धि वाक्य, मिट्टी, मछली, गन्ना, छिपकली, मुँह में अहार लिए बिल्ली, सूकरी, बादल गर्जन , भक्ति संगीत, बिजली की चमक, मन की प्रसन्नता ये सभी शुभ शकुन होते हैं।

यात्रा में अशुभ शकुन - चूहा, रीक्ष सियार, बिलाव, शेर, खाली घडा,विधवा स्त्री , सम्मुख कौआ, इत्यादि अशुभ शकुन माने गये है।

पक्षी शकुन - १. यदि काक जल के घडे पर बैठकर ध्वनि करे तो स्त्री एवं धन की प्राप्ती होती है। २. यदि कौआ देव मन्दिर, राजभवन, लहलहाते खेत, धान्य का ढेर, घोडा या हाथी की पीठ पर बैठा हुआ दिखाई दे तो धन की प्राप्ति होती है। ३. यदि कौआ अपनी चोंच से जमीन खोदता हुआ दिखाई दे तो व्यक्ति को अकस्मात् धन की प्राप्ती होती है। ४. यदि उल्लू सामने की ओर से वोले तो भय होता है। ५. यदि कोई कुत्ता दाएं पैर से अपने सिर या पेट को खुजा रहा हो तो धन लाभ होता है।

यात्रा में छींक विचार- यात्रा पर जाते समय सम्मुख एवं दाहिने की छींक अशुभ होती है। स्वयं की छींक भी अशुभ होती है। बाएं एवं पीठ की छींक शुभ होती है। भोजन, शयन, दान, बीज बोवनी, युद्ध, विवाह, औषधि सेवन, शौच, विद्यारम्भ के समय छींक हो तो शुभ फल दायक होती है। बालक की, वृद्ध की, हठ अप्राकृतिक छींक का दोष नहीं होता है। यदि पहली वार छींक हो तो लगभग १० श्वांस ठहर कर पुन: चलना चाहिये। यदि दूसरी वार छींक हो तो ३० श्वांस रुक कर यात्रा प्रारम्भ करना चाहिये। तीसरी वार छींक हो तो यात्रा स्थगित कर देना चाहिये।

यात्रा में प्रस्थान की बस्तु - यदि किसी कारण से शोधित लग्न में यात्रा पर चलने में विलम्ब की संभावना हो तो, लग्न समय में अपनी किसी प्रिय बस्तु को यात्रा की दिशा में अपने घर से यथा संभव दूर प्रस्थित कराऐं तो यात्रा समझी जाती है। ऐसा भृगु, गर्ग, भारद्वाज आदि ऋषियों का मत है।

दोहद - यदि यात्रा के दिन वार सम्वन्धी दोष हो तो वार के सम्मुख लिखी निम्न बस्तुओं का अपने कुल-धर्म परम्परा के अनुसार भक्षण या दर्शन कर यात्रा आरम्भ करना चाहिए। वार दोहद के वारे में एक और लोकोक्ती प्रचलित है कि- **रवि को पान सोम को दर्पण, मंगल को गुढ करिये अर्पण। बुधे धनिया वीफे जीर, शुक्र कहे मोहि दही की पीर। कहे शनि में अदरख पावों, सुख सम्पति निश्चय घर लावों।**

नक्षत्र दोहद

अश्विनी	उड़द
भरणी	तिल, चावल
कृतिका	उड़द
रोहिणी	दधि
मृगशिरा	घृत
आर्द्रा	दुग्ध
पुनर्वसु	मृग
पुष्य	मृग रक्त
आश्लेषा	खीर
मघा	चाष पक्षी
पू. फा.	मृग
उ. फा.	खरगोस
हस्त	साठी का भात
चित्रा	ककुनी
स्वाति	पुआ
विशाखा	बहुरंगी पक्षी
अनुराधा	फल
ज्येष्ठा	कछुआ
मूल	सारिका पक्षी
पू. षा.	गोह
उ. षा.	शाही
अभिजित्	मूंग, हविष्य
श्रवण	खिचडी
धनिष्ठा	मूंग
शतभिषा	जौ की पिट्टी
पू. भा.	मत्स्य भात
उ. भा.	खिचड़ी
रेवती	भात

यात्रा दोहद

वार दोहद

रवि	रसाल, आम
चंद्र	खीर
मंगल	कांजी
बुध	दही
गुरु	दही
शुक्र	कच्चा दूध
शनि	तिल-भात

तिथि दोहद

१	मदार पत्ता
२	घृत
३	चावल धोवन
४	हलुआ
५	हविष्य
६	सोने का जल
७	मालपुआ
८	अनार
९	जल
१०	गोमूत्र
११	जौ का भात
१२	खीर
१३	गुड़
१४	भात
१५,३०	मूंग

गोरख पतरा का महत्व - श्री गोरखनाथ जी के पूंछने पर श्री मत्स्येन्द्रनाथ जी ने इस यात्रा मुहूर्त को मुहूर्त्तराज कहा है। इस चक्र के अनुसार यात्रा करने वालों को चंद्रवल, भद्रा, तारावल, दिशासूल, योगिनीवास, घातवार इत्यादि का दोष नहीं लगता है।

चक्र से यात्रा मुहूर्त्त जानने के नियम - (१) निम्न लिखित चक्र में जो तिथियां लिखी हैं, वह दोनों पक्षों के लिये हैं। (२) उपरोक्त चक्र में १३, १४, १५ एवं ३० तिथियों का उल्लेख नहीं है। इस स्थिति में १३ का फल ३ के समान, १४ का फल ४ के समान तथा १५ का फल ५ के समान समक्षना चाहिये। ३० तिथि को यात्रा वर्जित है। (३) दिनमान या रात्रिमान का चौथा भाग एक प्रहर होता है। दिनरात में कुल आठ प्रहर होते हैं। उक्त चक्र में दिन या रात के चार प्रहरों का उल्लेख है। दिनमान को ६० में से घटाने पर रात्रिमान निकल आता है।

उदाहरण - (१) माना कि किसी को ज्येष्ठ शुक्ल १४ को पूर्व दिशा में यात्रा मुहूर्त्त देखना है। १४ तिथि का फल ४ के समान होता है। अत: उपरोक्त चक्र में ज्येष्ठ मास के नीचे ४ तिथि के सामने तिथि फल देखा तो "भय, विवाद, क्लेश, मानषिक कष्ट" लिखा मिला अत: यात्रा शुभ नहीं होगी।

卐 यात्रा हेतु श्री गोकुलनाथ जी का वचनामृत चक्र 卐

पौष	माघ	फा.	चैत्र	वैशा	ज्ये.	आ.	श्राव	भाद्र	आशि	कार्ति	मार्ग.	मासों की तिथियों का फल	प्रहर१	प्रहर२	प्रहर३	प्रहर४	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	यात्रा सुख - सुविधा हो, कोई क्लेश नहीं हो।	अर्थसि.	सुख	शोक	सुख	सुख	क्लेश	भय	द्रव्य
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	विवाद, पछतावा, भय, मानसिक दु:ख।	भय	क्लेश	सुख	कुशल	०	नाश	दरिद्रय	चिंता
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	यात्रा कार्यसिद्धि, सार्थक।	धनलाभ	पदलाभ	सुख	विनाश	द्रव्य	दुख	इष्ट प्राप्ती	धनलाभ
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	परिश्रम से कार्य सिद्धि।	क्लेश	कल्याण	क्लेश	अहित	क्लेश	हानि	धन	सुख
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	बस्तुलाभ, मित्र मिलन, व्याधि दूर हो।	संकट	क्लेश	भाग्य	सुख	लाभ	धन	धन	सुख
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	चिंता, विवाद, वियोग, न्यून कार्यसिद्धि।	संकट	क्लेश	मित्र	धनलाभ	भय	लाभ	मृत्यु	धनलाभ
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	यात्रा में लाभ, संपर्क, कार्यसिद्धि।	विलंब	धनलाभ	सुख	सुख	लाभ	कष्ट	लाभ	सुख
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कुयोग, कार्यहानि, न्यून व्यवहार।	०	०	०	०	कष्ट	सुख	०	सुख
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	धनलाभ, सुखद यात्रा, कार्य सफलता।	लाभ	भय	मित्र	मित्र	सुख	लाभ	सिद्धि	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	यात्रा शुभ परन्तु परिश्रम अधिक, कार्य विलम्ब	लाभ	पूर्णता	मरण	कुशल	क्लेश	कष्ट	धन	धन
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	भय, विवाद, क्लेश, मानसिक कष्ट।	मरण	अर्थ	कुशल	मृत्यु	लोभ	धननाश	०	मित्र
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	यात्रा में सुख एवं सुविधा, मित्र मिलन, सिद्धि	मरण	अर्थ	सुख	सुख	०	सुख	मृत्यु	कष्ट

।। अथ मुहूर्तचिंतामणि-मार्तण्ड-गणपत्यादि मतानुसारेण आवश्यक मुहूर्त कोष्टकाः ।।

क्रम	मुहूर्त	नक्षत्र	मास	तिथि	वार	लग्न
१	रजोदर्शने श्रेष्ठानि मुहूर्त	श्र. ध. श. मृ. चि. अनु. ह. पू. स्वा. अश्वि. उत्तरा ३ रोहि.	वै. फा. अश्वि. ज्ये. श्रावण	१, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५	चं. गु. बु. शु.	२, ३, ४, ६, ७, ९, १२
२	रजः स्नान मुहूर्त	ह. स्वा. अनु. रे. अश्वि. मृ. भ. रो. उ. ३ ज्येष्ठा	---	१, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५	चं. गु. बु. शु.	२, ३, ४, ६, ७, ९, १२
३	गर्भाधान मुहूर्त	उ. ३ मृ. ह. अनु. रो. स्वा. श्र. ध. शत.	---	शुभ	चं. गु. बु. शु.	शुभ
४	पुंसवन सीमांत मुहूर्त	मृग. पुन. मूल. श्रव. पुष्य, ह. रो. उ. ३. जन्म नक्षत्र त्याज्य, पुंस. मा. २-३ सीम ६-८	---	१, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ शुक्ल	सू. मं. गु.	१, ४, ५, ७, ९, १०
५	सूतिका गृह प्रवेश	रो. मृ. पुष्य, स्वा. शत. पुन. ह. ध. अनु. चि. अश्वि. रे. उ. ३ श्र.	---	१, २, ३, ५, १०, ११, १२, १३	चं. बु. गु. शु.	शुभ
६	जातकर्म मुहूर्त	मृ. रे. चित. अनु. उ. ३ रो. पुन. श्र. स्वा. ध. शत. ह. पु. अश्वि.	---	१, २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३	चं. बु. गु. शु.	शुभ
७	स्तनपान मुहूर्त	उ. ३ रो. अश्वि. रे. पुष्य, पुन. अनु. श्र. ह. चि. मू. ध. शत.	---	रिक्ता अमावस्या को त्यागकर अन्य तिथि	चं. बु. गु. शु.	शुभ
८	सूतिका पथ्य मुहूर्त	रो. उ. ३ रेव. मृ. चि. अनु. पुन. पुष्य, ह. अश्वि. अभि. स्वा. श्र. ध. शत.	---	२, ३, ५, ७, १०, १३	चं. बु. गु. शु.	२, ३, ४, ५
९	सूतिका स्नान मुहूर्त	रे. उ. ३ रो. मृ. ह. स्वा. अश्वि. अनु.	---	१, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५	सू. मं. गु.	शुभ
१०	दोलारोहण (हिण्डोला) मुहूर्त	जन्म दिन से १०, १२, १६, १८, ३२वें दिन मृ. चि. रे. अनु. ह. अ. पुष्य, उ. ३, रो. सूर्य नक्षत्र से ५ आरो. ५ मृत्यु, ५ देहकष्ट ५ रोग, ७ सुख	---	रिक्ता तिथि त्याज्य एवं ३० भी	चं. बु. गु. शु.	४, ५, ७, ९, १०, ११

।। अथ मुहूर्तचिंतामणि-मार्तण्ड-गणपत्यादि मतानुसारेण आवश्यक मुहूर्त कोष्टकाः ।।

क्रम	मुहूर्त	नक्षत्र	मास	तिथि	वार	लग्न
११	जलपूजन मुहूर्त	श्र. पु. पुष्य, मृ. ह. मू. अनु.	चैत्र, पौष एवं अधिमास तथा गुरुशुक्रास्य त्याज्य	४, ९, १४, ३० त्याज्य शेष ग्राह्य	च. बु. गु.	शुभ
१२	भूभ्युपवेशत मुहूर्त	उ. ३ रो. मृ. अनु. ज्ये. चि. रे. अश्वि. ह. पुष्य, अभि.	---	४, ९, १४, ३० त्याज्य शेष ग्राह्य	शुभ वार	चर लग्न १, ४, ७, १०
१३	नामकरण मुहूर्त	रे. पुष्य, चि. अनु. उ. ३ रो. ह. अश्वि. पुन. स्वा. श्र. ध. शत.	---	१,२,३,५,७, १०,११,१३	चं. बु. गु. शु.	२, ५, ८, ११
१४	अन्नप्राशन मुहूर्त	रो. उ. ३ मृ. रे. चि. अनु. ह. पुष्य,अश्वि. पुन. स्वा. श्र. ध. शत.	---	१, ३, ५, ७, १०, ११	चं. बु. गु. शु.	२,३,४,५,७, ९,१०,११
१५	कर्णवेध मुहूर्त	श्र. पु. अश्वि. मृ. ह. मू. अनु. अभि. रेव.	चै.पौ. सम वर्ष २ जन्म तारा चार्तुमास त्याज्य, अन्य ग्राह्य	शुभ तिथि	शुभ वार	शुभ
१६	चौल कर्म मुहूर्त	ज्ये. मृ. रे. चि. ह. अश्वि. पु. अभि. स्वा. श्र. पुन. ध. शत.	---	२, ३, ५, ७, १०, ११, १३	चं. बु. गु. शु.	२, ३, ४, ६, ७, ९, १२
१७	ताम्बूल भक्षण मुहूर्त	उ.३ रो. मृ. चि. रे. अनु. ह. अश्वि. पुष्य, अभि. स्वा. श्र. पुन. ध. मू.	---	२, ३, ६, ५, १०, ११, १३	सू. चं. बु. गु.	४, ५, ७, ९, ११
१८	क्षेमार्थ शांति कर्म मुहूर्त	ह. अश्वि. रे. उ. ३ रो. स्वा. श्र. ध. शत. अनु. मघा	---	शुभ	शुभ	शुभ
१९	अक्षरारंभ मुहूर्त	अश्वि. आर्द्रा , पुन. पु. ह. चि. स्वा. अनु. अभि. रेव.	माघ, फाल्गुन, चै. वै, ज्ये.	२, ३, ५, ६, १०, ११, १२, शुक्ल	चं. बु. गु. शु.	२, ३, ६, ९, १२
२०	विद्यारंभ मुहूर्त	पू. ३ पुष्य, आश्ले ,रेव. मू. श्र. ह. चि. स्वा. मृ. आर्द्रा,पुन. अश्वि. रो. अनु. उ. ३	---	२, ३, ५, १०, ११, १२	सू. गु. शु.	शुभ
२१	व्रतबंध (यज्ञोपवीत) मुहूर्त	पू. षा. अश्वि. ह. चि. स्वा. श्र. ध. शत. ज्ये. पू. फा. पु. मृ. रे. उ. ३	उत्तरायण मास चै+मीन सं.	२,३,५,१०, ११,१२ शुक्ल	सू. गु. चं. शु.	५, ९, २, ६, ३
२२	दीक्षा ग्रहण मुहूर्त	अश्वि. रो.मृ. उ. ३. चि. पू. फा.	चै.वै. अश्वि. का. माघ	२, ३, ५, ८, १०, ११, १२	सू. चं. गु. शु.	३, ४, ५, ६, ७, १२

।। अथ मुहूर्तचिंतामणि-मार्तण्ड-गणपत्यादि मतानुसारेण आवश्यक मुहूर्त कोष्टकाः ।।

क्रम	मुहूर्त	नक्षत्र	मास	तिथि	वार	लग्न
२३	वधु प्रवेश मुहूत	ह. चि. स्वा. रो. मृ. मघा पुष्य, ध. उ. ३ मू. अनु. अश्वि. रे.	---	१,२,३,५,६, ७,८,१०,१२	सू. शु. चं. श.	२, ५, ८, ११
२४	पतिगृह से पितृग्रह जाने का मुहूर्त	रो. चि. अनु. ध. मृ. म. स्वा. मू. ज्ये. आ. आश्ले. पू.३ रे. अनु.	---	शुभ	शुभ	शुभ
२५	द्विरागमन मुहूर्त	अश्वि. ह. पुन. उ. ३ रो. स्वा. श्र. ध. मू. मृ. रे. चि.	वै. मार्ग. फा. सूर्य गुरू की शुद्धि हो तब	१,२,३,५,७, ८,१०,११, १२,१३,१५	चं. बु. गु. शु.	२, ३, ६, ७, १२
२६	वापी कूप तडागा रम्भ मुहूर्त	म. ह. रे. मृ. पुष्य, ध. शत. पू. षा. उ. ३ रो. अश्वि.	---	४,९,१४,३० को त्याग कर अन्य तिथी	चं. बु. गु. शु.	शुभ
२७	क्रय विक्रय मुहूर्त	पुष्य, पू. मा. उ. ३ अनु. अश्वि. श्र. ह. मृ. स्वा. आश्ले. रेव.	---	शुभ	चं. बु. गु. शु.	शुभ
२८	विपणि (दुकान) मुहूर्त	मृ. रे. चि. अनु. रो. उ. ३ ह. अश्वि. पुष्य,	---	शुभ	सू. चं. गु. बु. शु.	शुभ
२९	नौकर रखने का मुहूर्त	ह. अभि अश्वि. पुष्य, मृ. रे. चि. अनु.	---	शुभ	सू. बु. गु. शु.	१, ४, १०, ५, ९
३०	चूड़ी धारण मुहूर्त	अश्वि. ह. चि. स्वा. वि. अनु. ध. रे. तथा सूर्य नक्षत्र से ३ ने. श्र. ३ ने. ९ श्रे. २ ने. ४ श्रे. १ नेष्ट	---	शुभ	बु. गु. शु. सू.	शुभ
३१	नूतन वध्वा पाककर्म (नई बहु से रसोई बनाने का मुहूर्त)	मू. रो. ह. मृ. स्वा.	---	१, २, ३, ५, ७, १०	सू. मं. गु.	शुभ
३२	हल चलाने का मुहूर्त	अश्वि. रो. मू. पुन. मं. ह. उ. ३ चि. स्वा. अनु. श्र. रे. शत. अभि	---	शुभ	शुभ	शुभ
३३	रोग मुक्त के स्नान का मुहूर्त	चि. ह. वि. पू. ३ पुन. मृ. आर्द्रा, म. कृ.	---	शुभ	सू. मं. बु. शु	शुभ
३४	काष्ठ संग्रह मुहूर्त	सूर्य नक्षत्र से ६ श्रे. ६ ने. ४ श्रे. ४ ने. ४ ने. ४ श्रे.	---	शुभ	शुभ	शुभ

।। अथ मुहूर्तचिंतामणि-मार्तण्ड-गणपत्यादि मतानुसारेण आवश्यक मुहूर्त कोष्टकाः ।।

क्रम	मुहूर्त	नक्षत्र	मास	तिथि	वार	लग्न
३५	गृहारम्भ मुहूर्त	म. उ. ३ पुन. पुष्य, ध. अनु. शत. चि. ह. स्वा. रो. रे. (वृषभ चक्रशुद्धि)	व. श्राव. पौष का.	१, २, ३, ५, १०, ११, १२, १३	शुभ	शुभ
३६	द्वारशाखा मुहूर्त	सूर्य नक्षत्र से ४ श्रे. ४ ने. ८ श्रे. ३ ने. ४ श्रेष्ठ	---	५, ७, ८	गु. शु. श. सू.	शुभ
३७	नूतन गृह प्रवेश मुहूर्त	उ. ३ , रो. अनु. मृ. चि. रे. (कलश चक्रानुसार)	---	शुभ	शुभ	शुभ
३८	खट्वारोहण मुहूर्त	मू. रे. चि. अनु. उ. रो. ह. पूर्व अथवा दक्षिण दिशा मे सिर रखना	---	शुभ	शुभ	शुभ
३९	सुगंध पदार्थ भोग मुहूर्त	श्र. ध. श. अश्वि. पुष्य, पू. षा. अनु. चि. स्वा. पुन. रे. मृग.	---	शुभ	शुभ	शुभ
४०	भूषण घट्टन मुहूर्त	त्रिपुष्कर योग एवं उ. ३ रो. रे. अश्वि. श्र. ध. श. मृ. पुष्य, अनु. ह. चि. स्वा. पुन.	---	शुभ	शुभ	शुभ
४१	चुल्ली स्थापन मुहूर्त	पू. भा. रो. पुष्य, अभि रवि नक्षत्र से ६ श्रे. ४ ने . ८ श्रे. ५ ने. २ श्रे. ३ ने.	---	शुभ	बु. गु. शु.	शुभ
४२	इक्षुरोपण मुहूर्त	आर्द्रा , पुष्य, ध. अनु. मू . रे. उ. ३	---	शुभ	शुभ	शुभ
४३	कोल्हूचक्र मुहूर्त	सूर्य नक्षत्र से ५, ६, ९, १०, ११, १२, १२, १४, २०, २१ अशुभ शेष नक्षत्र शुभ	---	शुभ	शुभ	शुभ
४४	शकटारम्भ मुहूर्त	सूर्य नक्षत्र से - ३ ने. ३ ने. ३ श्रे. ९ ने. ३ श्रे. ३ ने. ३ श्रे.	---	शुभ	शुभ	शुभ
४५	पाटडास्थापन मुहूर्त	सूर्य नक्षत्र से - ३ श्रे. ४ ने. ४ ने. ३ श्रे. ४ ने. ४ श्रे. ५ श्रे.	---	शुभ	शुभ	शुभ

।। अथ मुहूर्तचिंतामणि-मार्तण्ड-गणपत्यादि मतानुसारेण आवश्यक मुहूर्त कोष्टकाः ।।

क्रम	मुहूर्त	नक्षत्र	मास	तिथि	वार	लग्न
४६	सेतुबंधन मुहूर्त	मृ. आर्द्रा ,पू. षा. श्र. ध. श. अश्वि. पुष्य, ह. अभि रो.उ. ३	---	शुभ	सू. गु. शु. श.	शुभ
४७	कलश चक्र मुहूर्त	सूर्यनक्षत्र से - ५ ने. ८ श्रे. ८ श्रे. ६ श्रे	---	शुभ	शुभ	शुभ
४८	मोभ (धरन) मुहूर्त	मृ. पुन. पुष्य,ह. चि. स्वा. अनु. श्र ध. रे. सूर्य नक्षत्र से- ३ ने. १३ श्रे. ८ ने. ३ श्रे.	---	शुभ	सू. गु. शु.	शुभ
४९	हल चक्रम मुहूर्त	सूर्यनक्षत्र से - ३ ने. ३ श्रे. ३ ने. ५ श्रे. ३ ने. ५ श्रे. ३ ने. २ श्रे.	---	शुभ	शुभ	शुभ
५०	बीज वपन मुहूर्त	राहुनक्षत्र से - ८ ने. ३ श्रे. १ ने. ३श्रे. १ ने. ३ श्रे. ४ ने.	---	शुभ	शुभ	शुभ
५१	कणमर्दन मुहूर्त	अनु. श्र. मू. रे. पू. फा. उ. फा. ज्ये. रो. मघा.	---	शुभ	शुभ	शुभ
५२	धान्य संग्रह मुहूर्त	भर. कृति. आर्द्रा, वि. आ. पू. ३ ज्ये. मघा को छोड़कर अन्य नक्षत्र शुभ	---	शुभ	शुभ	२, ५, ८, १०, ११, ३, ६, ९, १२
५३	मिट्टी के बर्तन बनाने का मुहूर्त कुंभकार कृत्य	पुन. पुष्य, ह. चि. स्वाती, रे. रो. मृ. अनु. श्र. ज्ये.	---	शुभ	सू. चं. बु. गु. शु.	शुभ
५४	शिल्प विद्यारंभ मुहूर्त (हुनर सीखना)	ह. चि. स्वा. श्र. ध. शत. पू. ३ रो. मृ. रे. अश्वि. पुन. पुष्य, अनुराधा	---	शुभ	सू. चं. बु. गु. शु.	शुभ
५५	गीत विद्या नृत्य विद्या शिक्षा मुहूर्त	रे. अनु. ध. शत. ह. रो. उ. ३ आर्द्रा	---	शुभ	सू. चं. बु. गु. शु.	शुभ
५६	नौका कृत्य मुहूर्त (नाव बनाना)	ज्ये. मू. वि. आर्द्रा, रो. भर. कृति. अश्लेषा	---	शुभ	सू. गु.	शुभ
५७	दत्तक पुत्र मुहूर्त	ह. चि. स्वा. वि. अनु. अश्वि. ध. पुष्य	---	४, ९, ११, ३० को छोड़कर अन्य तिथि	सू. मं. गु. शु.	५, २

।। अथ मुहूर्तचिंतामणि-मार्तण्ड-गणपत्यादि मतानुसारेण आवश्यक मुहूर्त कोष्टकाः ।।

क्रम	मुहूर्त	नक्षत्र	मास	तिथि	वार	लग्न
५८	निष्क्रमण मु. (बच्चे को प्रथम बार घर से बाहर ले जाना)	ह. पुन. पुष्य, श्र. ध. अनु. ज्ये. मू. रे. रो. उ. फा. मृ. उ. षा. स्वा. जन्म से ३ अथवा ४ मास में	---	४,९,१४, ३० को छोड़कर अन्य तिथि	सू. चं. बु. गु. शु.	५, ६, ७, १
५९	वाग्दान मु. (लड़के लड़की का संबंध)	रो. उ. ३ रे. मू. स्वाती, मृ. म. अनु. ह. कृ. पू. ३ श्र. ध.	---	शुभ	शुभ	शुभ
६०	स्त्रियों के लिए नूतन वस्त्र धारण मुहूर्त मु.	ह. चि. स्वा. वि. अनु. अश्वि. ध. रे. केवल स्त्रियों के लिए	---	शुभ	गु. शु. बु.	१२, ६, ३, २
६१	पुरुषों के लिए नूतन वस्त्र धारण मुहूर्त मु.	ह. चि. स्वा. वि. अनु. अश्वि. ध. रे. पुनः पुष्य रो. उ. ३	---	शुभ	- '' -	- '' -
६२	भषज्य मुहूर्त (दवाई लेना)	ह. अश्वि. पुष्य. श्र. ध. शत. मू. पुन. स्वा. मृ. रे. चि. अनु.	---	४,९,१४,३० को छोड़कर अन्य तिथि	सू. चं. बु. गु. शु.	शुभ
६३	शस्त्रकर्म मुहूर्त (ऑपरेशन)	---	---	---	सू. मं.	रवि. मंगल. केंद्र में
६४.	तैलिक यन्त्र मुहूर्त (आयल मिल घाणी आदि)	अश्वि. पुष्य, पुन. ह. चि. अनु. ज्ये. ध. रे. तथा उस दिन कोई अशुभ योग न हों।	---	रिक्ता तथा अमा. के बिना अन्य तिथि	शुभ	शुभ
६५	तैलिक यन्त्र चक्रम मुहूर्त	सूर्य नक्षत्र से चंद्र नक्षत्र तक गणना ७ संप ६ शोक २ विषद् ७ धन ३ ऋषि ५ सौख्य	---	---	---	केंद्र में शुभ ग्रह
६६	वस्त्र निर्माण यंत्र मु. (कपड़ा मिल चालू करना)	रो. रे. चि. अनु. मृ. उ. ३	---	शुभ	सू. चं. मं. बु. गु. शु.	---
६७	संवेदन प्रतिष्ठा मुहूर्त	ह. चि. स्वा. अनु. ज्ये. मू. श्र. ध. शत. रे. अश्वि. पुन. पुष्य, उ. ३ रो. मृ.	---	कृष्ण पक्ष दशमी तक तथा शु. पक्ष	सो. बु. गु. शु.	३, ६, ९, १२, २, ५, ८, ११
६८	संवेदन प्रतिष्ठा मुहूर्त	चैत्र, फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ठ एवं माघ मास	---	२,३,५,६, ७,१०,११,१ २,१३,१५	- '' -	- '' -
६९	मंत्र दीक्षा मुहूर्त	पू.षा. अश्वि. ह. चि. स्वा. श्र. रे. ध. शत. ज्ये. पु. फा. पुष्य, मृ. उ. ३/च. पो ज्ये. आषा. भाद्र इन मासों को छोड़कर अन्य मास	---	सूर्य अथवा चंद्र ग्रहण	---	---
७०	सन्यरत दीक्षा मुहूर्त	पुष्य, उ. ३ मृ. रे. अनु. ध.	---	५, १०, १५ शुक्ल पक्ष	गु. श.	शुभ

१४	तिथि			नक्षत्र			योग			करण (प्रातः एवं सायंकाल में)				चन्द्रमा राशि समाप्ती काल			श्री सूर्य					आनंदादि योग	दिनांक	(कृपया ध्यान रखें कि इस वर्ष चंद्र राशि का समाप्ती काल दिया है)। गुरु उदयपश्चिमेः। शुक्र उदयपूर्वेः । मूल निवास भूमि
तिथि	वार	घटिपल	घंटामिनट	नक्षत्र	घटिपल	घंटामिनट	योग	घटिपल	घंटामिनट	प्रातः	घटिपल	घंटामिनट	सायं	राशि	घटिपल	घंटामिनट	दिनमान	सू.उ.	अस्त	उदयकालीन स्पष्ट	गति			पक्षारंभिक नक्षत्र-उत्तरभाद्रपदे रविः, पुनर्वसे भौमः, उत्तरभाद्रपदे वुधः, रोहिण्यां गुरौ, उत्तरभाद्रपदे शुक्रः, पूर्वभाद्रपदे शनिः, पूर्वभाद्रपदे राहु, उत्तराफाल्गुण्यां केतु।
१	र.	१६।२४	दि.१२:५१	रेव	२५।४६	दि. ४:३६	ऐंद्र	२९।२	सा.५:५५	बव	१६।२४	दि.१२:५१	बाल	मीन	२५।४६	दि. ४:३६ तक	३०।३३	६:१८	६:३१	११।१५।२१।५८	५९	प्रवर्ध	३० मार्च	चैत्र नवरात्र प्रारंभ। गुड़ीपड़वा। सृष्टि उत्पत्ति दिवस। ज्योतिष दिवस। तिलक-आरोग्य व्रत।मीन खरमास। पंचक समाप्त दि. ४ :३६ समये। (A)
२,३	चं.	७।२३, ५८।४०	दि.९:१४,रा ५:४४	अश्वि	१८।४८	दि. १:४८	वैधृ	१८।४९	दि.१:४८	कौल	७।२३	दि.९:१४	तैति	मेष	--	दिनरात	३०।३७	६:१७	६:३१	११।१६।२१।१२	५९	राक्षस	३१मार्च	गणगौर व्रत, वालेन्दु व्रत, नेत्र व्रत। श्री झूलेलाल ज.। मत्स्यावतार। मन्वादितिथि। दोलनोत्सव। मूल सू.उ.से दिन १:४८ तक। वैधृति सूउ.से (B)
४	मं.	५०।५२	रा.२:३६	भर	१२।१६	दि. ११:१०	विष्कु, प्रीति	८।५६, ५९।५९	दि.९:५०, रा.६:१६	वणि	२४।४६	दि.४:१०	भद्रा	मेष	२५।४८	दि. ४:३५ तक	३०।४०	६:१६	६:३२	११।१७।२०।२४	५९	मुसल	०१ अप्रै	विनायकी श्री गणेश ४ व्रतं। मीन खरमास। रवियोग दिन ११:१० से रात्रिअंत। सर्वार्थसिद्धी दिन ११:१० से रातअंत। भद्रा दिन ४:१० से रात्रि २:३६ (स्वर्ग)।
५	बु.	४४।०९	रा.११:५४	कृत्ति	६।३२	दि. ८:५२	आयु	५१।३२	रा.२:५१	बव	१७।२३	दि.१:१२	बाल	वृष	--	दिनरात	३०।४४	६:१५	६:३२	११।१८।१९।३४	५९	सिद्धि	०२ अप्रै	कल्पादि तिथि। श्री लक्ष्मी व्रत।मीन खरमास। रवियोग सू.उ.से दिन ८:५२ तक । सर्वार्थसिद्धी दिनरात। कर्के भौमः रात्रि १२:४२ समये। बुध उदय पूर्वेः प्रातः ५:२७ समये।
६	गु.	३८।५०	रा.९:४६	रोहि, मृग	१: ६०।५९: १	प्रा. ७:०२, रा.५:५०	सौभ	४४।३४	रा.१२:०४	कौल	११।१५	दि.१०:४४	तैति	वृष	३०।३०	सा. ६:२६ तक	३०।४७	६:१४	६:३३	११।१९।१८।४२	५९	उत्पात	०३ अप्रै	श्री स्कन्द षष्ठी। कुमारव्रत। मीन खरमास। रवियोग प्रातः ७:०२ से रात्रिअंत। पूर्वभाद्रपदे वुधः सायं ६:३५ समये।
७	शु.	३५।१०	रा.८:१७	आर्द्रा	५७।४७	रा. ५:२०	शोभ	३८।५७	रा.९:४८	गर	६।३९	दि.८:५३	वणि	मिथुन	××	दिनरात	३०।५०	६:१३	६:३३	११।२०।१७।४९	५९	पद्म	०४ अप्रै	कमलासप्तमी जैन। मोदनव्रत। धातासप्तमीव्रत। सूर्यव्रतारंभ। मीन खरमास। सर्वार्थसिद्धी रात्रि ५:२० से रातअंत। भद्रा रात्रि ८:१७ से रात्रिअंत (स्वर्ग)।
८	श.	३३।१८	रा.७:३१	पुन	५८।२०	रा. ५:३२	अति	३४।४६	रा.८:०६	भद्रा	३।४९	प्रा.७:४४	बव	मिथुन	४३।१०	रा. ११:२८ तक	३०।५३	६:१२	६:३३	११।२१।१६।५३	५९	छत्र	०५ अप्रै	नवरात्र दुर्गा अष्टमी व्रत। अशोक कलिका प्राशनव्रत। रवियोग रात्रि ५:३२ से रात्रिअंत। शनि पुष्य योग रात्रि ५:३२ से रातअंत। भद्रा सू.उ.से (C)
९	र.	३३।१४	रा.७:२९	पुष्य	६०।०	वृद्धि	सुक	३१।५९	सा.६:५९	बाल	२।५१	प्रा.७:२०	कौल	कर्क	××	दिनरात	३०।५७	६:११	६:३४	११।२२।१५।५५	५९	श्रीवत्स	०६ अप्रै	श्रीराम नवमी। मातृकाव्रत। मीन खरमास। मूल दिनरात। रवियोग सू.उ.से रात्रि ६:२६ तक । रविपुष्य योग रात्रि ६:२६ पर्यन्त।
१०	चं.	३४।५२	रा.८:०७	पुष्य	०।३७	प्रा. ६:२५	धृति	३०।३३	सा.६:२३	तैति	३।४२	प्रा.७:३९	गर	कर्क	××	दिनरात	३१।००	६:१०	६:३४	११।२३।१४।५४	५९	धाता	०७ अप्रै	मूल प्रातः ६:२५ से रातअंत। रवियोग दिनरात। सोम पुष्य योग, सर्वार्थसिद्धी प्रातः ६:२५ पर्यन्त। ज्वालामुखीयो प्रातः ६:२५ से रात्रि ८:०७ (D)
११	मं.	३७।५८	रा.९:२०	श्ले	४।३२	प्रा. ७:५८	शूल	३०।१६	सा.६:१६	वणि	६।९	दि.८:३७	भद्रा	कर्क	४।३२	प्रा. ७:५८ तक	३१।०३	६:९	६:३५	११।२४।१३।५२	५९	आनंद	०८ अप्रै	कामदा एकादशी व्रत सर्वे। मीन खरमास। मूल दिनरात। रवियोग सू.उ.से प्रातः ७:५८ तक । सर्वार्थसिद्धी प्रातः ७:५८ पर्यन्त। भद्रा दिन ८:३७ से रात्रि ९:२० (भूमि)।
१२	बु.	४२।१७	रा.११:०३	मघा	९।४४	दि. १०:०२	गंड़	३०।५६	सा.६:३१	बव	९।५७	दि.१०:०७	बाल	सिंह	××	दिनरात	३१।०७	६:८	६:३५	११।२५।१२।४८	५९	चर	०९ अप्रै	मदन द्वादशी। मीन खरमास। मूल सू.उ.से दिन १०:०२ तक। क्रांतिसाम्य दिन १:०५ से सायं ५:३१। क्रांतिसाम्य दिन १:०५ से सायं ५:३१।
१३	गु.	४७।३१	रा.१:०८	पू.फा.	१५।५६	दि. १२:३०	बृद्धि	३२।२१	रा.७:०४	कौल	१४।४८	दि.१२:०२	तैति	सिंह	३२।३८	रा. ७:११ तक	३१।१०	६:७	६:३५	११।२६।११।४२	५९	गद	१० अप्रै	गुरुप्रदोष व्रतं। महावीर जयंती जैन। मदनपूजन। मीन खरमास। रवियोग दिन १२:३० से रात्रिअंत। मृगशिरायां गुरु सायं ५:४१ समये।
१४	शु.	५३।२३	रा.३:२८	उ.फा.	२२।५२	दि. ३:१५	ध्रुव	३४।१७	रा.७:४९	गर	२०।२४	दि.२:१६	वणि	कन्या	××	दिनरात	३१।१३	६:६	६:३६	११।२७।१०।३४	५९	शुभ	११ अप्रै	मीन खरमास। रवियोग सू.उ.से दिन ३:१५ तक । भद्रा रात्रि ३:२८ से रात्रिअंत (पाताल)। पुष्ये भौमः रात्रि ५:३८ समये। उत्तरभाद्रपदे वुधः (E)
१५	श.	५९।३८	रा.५:५७	हस्त	३०।१६	सा. ६:१२	व्या	३६।३५	रा.८:४३	भद्रा	२६।३०	दि.४:४१	बव	कन्या	××	दिनरात	३१।१६	६:६	६:३६	११।२८।०९।२४	५९	मृत्यु	१२ अप्रै	पूर्णिमा। हनुमत उत्सवः। मन्वादि तिथि। मीन खरमास। भद्रा सू.उ.से दिन ४:४१(पाताल)।

सूर्योदयकालीन दैनिक ग्रह स्पष्ट । ग्रह गति कलाओं में दी गई है। पक्षारंभिक अयनांश २४-१२-३५

तिथि		चन्द्र		मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		राहु	चंद्र उदयास्त समय उदय	अस्त
वार		राशि अंश कला वि.	गति	उदय-मार्गी	गति	अस्त-वक्री	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-वक्री	गति	अस्त-मार्गी	गति	वक्र गति ३ कला	दिन	रात
१	र.	११।२३।३०।१७	९०७	२।२८।४६।१६	१९	११।५।५०।६	-४२	१।२१।२८।३२	९	११।०४।१७।५३	३१	११।००।०२।४०	७	११।०२।३७।२७	६:२२	७:२८
२,३	चं.	०।०८।३७।३३	९०१	२।२९।५।१९	१९	११।५।८।१८	-३७	१।२१।३७।३९	९	११।०३।४७।०६	२९	११।००।०९।५२	७	११।०२।३४।१६	७:०५	८:३९
४	मं.	०।२३।३८।४३	८८७	२।२९।२४।४४	२०	११।४।३०।५६	-३२	१।२१।४६।५३	९	११।०३।१८।०७	२७	११।००।१७।०४	७	११।०२।३१।०६	७:५४	९:५३
५	बु.	१।०८।२५।३८	८६६	२।२९।४४।३१	२०	११।३।५८।२८	-२७	१।२१।५६।१४	९	११।०२।५१।०४	२५	११।००।२४।१४	७	११।०२।२७।५५	८:४८	११:०६
६	गु.	१।२२।५१।५९	८४२	३।०।४।३९	२०	११।३।३१।१३	-२२	१।२२।०५।४२	१०	११।०२।२६।०६	२३	११।००।३१।२२	७	११।०२।२४।४४	९:४९	१२:१६
७	शु.	२।०६।५३।५४	८१६	३।०।२५।८	२१	११।३।९।२५	-१६	१।२२।१५।१७	१०	११।०२।०३।१८	२१	११।००।३८।२९	७	११।०२।२१।३४	१०:५४	१:२०
८	श.	२।२०।३०।१२	७९२	३।०।४५।५७	२१	११।२।५३।१०	-११	१।२२।२४।५८	१०	११।०१।४२।४६	१८	११।००।४५।३५	७	११।०२।१८।२३	१२:०१	२:१५
९	र.	३।०३।४२।०३	७७०	३।१।७।५	२१	११।२।४२।३१	-५	१।२२।३४।४६	१०	११।०१।२४।३४	१६	११।००।५२।३९	७	११।०२।१५।१३	१:०५	३:०२
१०	चं.	३।१६।३२।१२	७५२	३।१।२८।३३	२२	११।२।३७।२५	०	१।२२।४४।४०	१०	११।०१।०८।४६	१३	११।००।५९।४२	७	११।०२।१२।०२	२:०७	३:४३
११	मं.	३।२९।०४।१७	७३८	३।१।५०।२०	२२	११।२।३७।४८	६	१।२२।५४।४१	१०	११।००।५५।२३	११	११।०१।०६।४३	७	११।०२।०८।५१	३:०५	४:१८
१२	बु.	४।११।२२।०३	७२७	३।२।१२।२५	२२	११।२।४३।३१	११	१।२३।०४।४८	१०	११।००।४४।२७	८	११।०१।१३।४२	७	११।०२।०५।४१	३:५९	४:५०
१३	गु.	४।२३।२८।५७	७१९	३।२।३४।४८	२३	११।२।५४।२५	१६	१।२३।१५।०१	१०	११।००।३५।५९	६	११।०१।२०।३९	७	११।०२।०२।३०	४:५०	५:१९
१४	शु.	५।०५।२७।५९	७१४	३।२।५७।२९	२३	११।३।१०।१९	२१	१।२३।२५।२१	१०	११।००।२९।५८	४	११।०१।२७।३५	७	११।०१।५९।१९	५:४०	५:४८
१५	श.	५।१७।२१।३९	७१०	३।३।२०।२७	२३	११।३।३१।२	२५	१।२३।३५।४६	११	११।००।२६।२२	१	११।०१।३४।२८	७	११।०१।५६।०९	६:२८	६:१६

लग्न प्रारंभ समय (भारतीय स्टेंडर्ड समय)

दिनांक	प्रातः पूर्व	प्रातः	दिन				सायं	रात्रि					शुभ बली लग्नें
	मीने	मेषे	वृषे	मिथुने	कर्के	सिंहे	कन्यायां	तुलायां	वृश्चिके	धनुषे	मकरे	कुंभे	इन लग्नों में गुरु, शुक्र या बुध केन्द्र त्रिकोण में होने से दोष समूह नाशक सुयोग।
३० मार्च	५:३१	७:०२	८:४२	१०:४१	१२:५४	३:११	५:२३	७:३५	९:५०	१२:०६	२:१२	३:५८	२,४,८,१०,११,
३१ मार्च	५:२७	६:५८	८:३८	१०:३७	१२:५१	३:०७	५:१९	७:३१	९:४६	१२:०२	२:०८	३:५४	२,४,५,८,१०,११,
०१ अप्रै	५:२३	६:५४	८:३४	१०:३३	१२:४७	३:०३	५:१६	७:२७	९:४२	११:५८	२:०४	३:५०	२,४,५,८,९,१०,
०२ अप्रै	५:१९	६:५०	८:३०	१०:२९	१२:४३	२:५९	५:१२	७:२३	९:३८	११:५४	१:६०	३:४६	४,५,६,८,९,१०,
०३ अप्रै	५:१६	६:४६	८:२६	१०:२५	१२:३९	२:५५	५:०८	७:१९	९:३४	११:५०	१:५६	३:४३	२,३,५,६,७,८,९,१०,
०४ अप्रै	५:१२	६:४२	८:२३	१०:२१	१२:३५	२:५१	५:०४	७:१५	९:३०	११:४६	१:५२	३:३९	२,३,५,६,८,९,१०,
०५ अप्रै	५:०८	६:३८	८:१९	१०:१७	१२:३१	२:४७	४:६०	७:११	९:२६	११:४२	१:४८	३:३५	२,६,८,१०,११,
०६ अप्रै	५:०४	६:३४	८:१५	१०:१३	१२:२७	२:४३	४:५६	७:०७	९:२२	११:३९	१:४४	३:३१	२,६,८,१०,११,
०७ अप्रै	४:६०	६:३०	८:११	१०:०९	१२:२३	२:४०	४:५२	७:०३	९:१८	११:३५	१:४०	३:२७	२,३,५,८,१०,११,
०८ अप्रै	४:५६	६:२७	८:०७	१०:०५	१२:१९	२:३६	४:४८	६:५९	९:१४	११:३१	१:३६	३:२३	२,३,५,८,१०,११,
०९ अप्रै	४:५२	६:२३	८:०३	१०:०१	१२:१५	२:३२	४:४४	६:५५	९:१०	११:२७	१:३२	३:१९	२,३,५,८,१०,११,
१० अप्रै	४:४८	६:१९	७:५९	९:५७	१२:११	२:२८	४:४०	६:५१	९:०६	११:२३	१:२८	३:१५	२,६,८,९,१०,
११ अप्रै	४:४४	६:१५	७:५५	९:५३	१२:०७	२:२४	४:३६	६:४७	९:०२	११:१९	१:२४	३:११	२,६,७,८,९,१०,
१२ अप्रै	४:४०	६:११	७:५१	९:४९	१२:०३	२:२०	४:३२	६:४३	८:५८	११:१५	१:२०	३:०७	२,५,८,९,१०,

तिथि १
रविवार
इष्ट ०।०

१ ११
२ गु. १२ सू.चं.बु.शु.श.रा. १०
३ मं. 卐 ९
४ ६ के. ८
५ ७

मेष संक्रान्ति फलम्- वैशाख कृष्ण १ रविवासरे रात्रि ३:१४ समये मेषसंक्रान्ति प्रवेशः तस्य पुण्यकाल परा दिवसे। वार नाम घोरा संज्ञक संक्रांति दलितवर्ग, निर्धनों, अनुसूचितजाति एवं जनजातीय वर्ग को शुभ है। तस्य काले स्वानक्षत्र नाम महोदरी संज्ञक संक्रांति चोर, तस्करो एवं जमाखोरों का सुखद। मुहूर्त्त १५ अनाज मूल्य में वृद्धि संकेतक। कौलव करण फल- वराह वाहनं, वृष उपवाहनं, हरित वस्त्रं, खड्ग आयुधं, ताम्र पात्रं, भिक्षा भक्षणं, चंदन लेपनं, सर्प वर्ण, मौलश्री पुष्पं, मोती भूषणं, हरित कंचुकी, कुमारी अवस्था, उतिष्ठा स्थिति। मंहगाई भाव सूचक। अनाज का दाना दुलभ हो, कपास, गुड़ एवं शक्कर मँहगे होंगे। लोग कलह प्रिय होंगे। चैत्रशुक्ल १४ पुष्ये भौम चोरी और तस्करी बढेगी। चैत्रशुक्ल ६ पूर्वभाद्रपदे बुध - दुर्भिक्षमथपूभायांक्षेममारोग्यतास्मृता।। पूर्वाभाद्रपद में हो तो दुर्भिक्ष हो और क्षेम तथा आरोग्य हो।। चैत्रशुक्ल १४ उत्तरभाद्रपदे बुध - उभायानृपतिक्लेशआरोग्यंपशुपक्षिणाम्। उत्तरा भाद्रपदमे में हो तो राजाओं में क्लेश तथा पक्षियों में आरोग्यता हो।

(A) मूल दिनरात। सर्वार्थसिद्धी दिन ४:३६ से रातअंत। वैधृति सा.५:५५ वज से रातअंत। (B) दि.१:४८ वजे तक। रेवत्यां रवि दिन १:५४ समये। पूर्वभाद्रपदे शुक्रः रात्रि ४:४३ समये। (C) प्रातः ७:४४(स्वर्ग)। शनि उदय पूर्वेः प्रातः ५:१६ समये। (D) तक। बुध मार्गी दिन ४:३० समये (E) सायं ५:२० समये। शुक्र मार्गी५:५१

तिथि ९
रविवार
इष्ट ०।०

१ ११
२ गु. १२ सू.बु.शु.श.रा. १०
३ 卐 ९
४ चं.मं. ६ के ८
५ ७

वैशाख कृष्णपक्ष। शुभ विक्रम संवत् २०८२ शकः १९४७। सिद्धार्थ संवत्सर। कलियुग संवत् ५१२६। वसन्त ऋतुः। श्री सूर्य उत्तरायन-उत्तरगोले। अप्रैल ईसवी सन् २०२५। अप्रैल। वंगला सन् १४३१ -१४३२ । वीर निर्वाण संवत् २५५१।

१५	तिथि			नक्षत्र			योग			करण (प्रातः एवं सायंकाल में)				चन्द्रमा राशि समाप्ती काल			श्री सूर्य					आनंदादि योग	दिनांक	(कृपया ध्यान रखें कि इस वर्ष चंद्र राशि का समाप्ती काल दिया है)। गुरु उदयपश्चिमेः। शुक्र उदयपूर्वेः। मूल निवास पाताले
तिथि	वार	घटिपल	घंटामिनट	नक्षत्र	घटिपल	घंटामिनट	योग	घटिपल	घंटामिनट	प्रातः	घटिपल	घंटामिनट	सायं	राशि	घटिपल	घंटामिनट	दिनमान	सू.उ.	अस्त	उदयकालीन स्पष्ट	गति			पक्षारंभिक नक्षत्र-रेवत्यां रविः, पुष्ये भौमः, उत्तरभाद्रपदे वुधः, मृगशिरायां गुरौ, पूर्वभाद्रपदे शुक्रः, पूर्वभाद्रपदे शनिः, पूर्वभाद्रपदे राहु, उत्तराफाल्गुण्यां केतु।
१	र.	६०।००	वृद्धि	चित्रा	३७।५३	रा. ९:१४	हर्ष	३९।२	रा.९:४२	बाल	२६।४८	रा ७:१३	कौल	कन्या	४।०३	प्रा. ७:४२ तक	३१।२०	६:५	६:३६	११।२९।०८।१२	५९	पद्म	१३ अप्रै	मीन खरमास। मेषे अश्विन्यां च रवि रात्रि ३:१४ समये।
१	चं.	६।०३	दि.८:२९	स्वा	४५।३१	रा. १२:१६	वज्र	४१।३०	रा.१०:४०	कौल	६।३	दि.८:२९	तैति	तुला	--	दिनरात	३१।२३	६:४	६:३७	०।००।०६।५८	५९	छत्र	१४ अप्रै	गलन्तिका बंधन।
२	मं.	१२।२०	दि.१०:५९	विशा	५२।५६	रा. ३:१३	सिद्धि	४३।४७	रा.११:३४	गर	१२।२०	दि.१०:५९	वणि	तुला	३६।०५	रा. ८:२९ तक	३१।२६	६:३	६:३७	०।०१।०५।४२	५९	श्रीवत्स	१५ अप्रै	त्रिपुष्कर योग सूर्योदय से दिन १०:५९ तक। भद्रा रात्रि १२:११ से रात्रिअंत (स्वर्ग)। व्यतिपात् रा. ११:३४ वजे तक। से रातअंत।
३	बु.	१८।१५	दि.१:२०	अनु	५९।५२	रा. ५:५९	व्यति	४५।४३	रा.१२:१९	भद्रा	१८।१५	दि.१:२०	बव	वृश्चिक	--	दिनरात	३१।२९	६:२	६:३८	०।०२।०४।२५	५९	सौम्य	१६ अप्रै	संकष्टी श्री गणेश ४ व्रतं। मूल रात ५:५९ से रातअंत। अमृतसिद्धि रात्रि ५:५९ पर्यन्त। भद्रा सू.उ.से दिन १:२०(स्वर्ग)। व्यतिपात् सू.उ.से रा.१२:१९ वजे तक।
४	गु.	२३।३२	दि.३:२६	ज्ये	६०।०	वृद्धि	वरी	४७।६	रा.१२:५२	बाल	२३।३२	दि.३:२६	कौल	वृश्चिक	××	दिनरात	३१।३२	६:१	६:३८	०।०३।०३।०५	५९	कालदंड़	१७ अप्रै	मूल दिनरात।
५	शु.	२७।५४	सा.५:१०	ज्ये	५।५८	दि. ८:२४	परि	४७।४२	रा.१:०५	तैति	२७।५४	सा.५:१०	गर	वृश्चिक	५।५८	दि. ८:२४ तक	३१।३५	६:०	६:३९	०।०४।०१।४३	५९	चर	१८ अप्रै	मूल दिनरात।
६	श.	३१।०३	सा.६:२५	मूल	१०।६०	दि. १०:२३	शिव	४७।१७	रा.१२:५४	वणि	३१।३	सा.६:२५	भद्रा	धनु	××	दिनरात	३१।३८	५:६०	६:३९	०।०५।००।१९	५९	गद	१९ अप्रै	मूल सू.उ.से दिन १०:२३ तक। रवियोग दिन १०:२३ से रात्रिअंत। भद्रा सायं ६:२५ से रा.अंत (पाताल)।
७	र.	३२।४१	रा.७:०३	पू.षा	१४।३९	दि. ११:५०	सिद्ध	४५।३९	रा.१२:१४	भद्रा	२।१४	प्रा.६:५२	बव	धनु	३०।१७	सा. ६:०६ तक	३१।४१	५:५९	६:३९	०।०५।५८।५४	५९	शुभ	२० अप्रै	कालाष्टमी व्रतं। रवियोग सू.उ.से दिन ११:५० तक। त्रिपुष्कर योग दिन ११।५० से रात्रि ७:०३ तक। सर्वार्थसिद्धी दिन ११:५० से रातअंत। (A)
८	चं.	३२।३५	रा.७:००	उ.षा	१६।४२	दि. १२:३९	साध्य	४२।३६	रा.११:००	बाल	३।३	प्रा.७:११	कौल	मकर	××	दिनरात	३१।४५	५:५८	६:४०	०।०६।५७।२६	५९	मृत्यु	२१ अप्रै	शीतला अष्टमी (स्कन्दपुराणोक्त)। कालाष्टमी। सर्वार्थसिद्धी दिन १२:३९ से रातअंत।
९	मं.	३०।३८	सा.६:१२	श्रव	१६।५७	दि. १२:४४	शुभ	३८।५	रा.९:११	तैति	२।४	प्रा.६:४७	गर	मकर	४६।२४	रा. १२:३१ तक	३१।४८	५:५७	६:४०	०।०७।५५।५७	५८	लुंबक	२२ अप्रै	चण्डिका नवमी। पंचक प्रारंभ रा. १२:३१ तक समये। क्रांतिसाम्य रात्रि ३:१३ से रातअंत। भद्रा रात्रि ५:३८ से रातअंत। क्रांतिसाम्य रात्रि ३:१३ से रातअंत।
१०	बु.	२६।५०	दि.४:४०	धनि	१५।२२	दि. १२:०५	शुक्ल	३२।५	सा.६:४६	भद्रा	२६।५०	दि.४:४०	बव	कुंभ	××	दिनरात	३१।५१	५:५६	६:४१	०।०८।५४।२६	५८	मित्र	२३ अप्रै	पंचक दिनरात। भद्रा सू.उ.से दिन ४:४०(भूमि)। (A) भद्रा सू.उ.से प्रातः ६:५२(पाताल)।
११	गु.	२१।२०	दि.२:२७	शत	१२।५	दि. १०:४५	ब्रह्म	२४।४५	दि.३:४९	बाल	२१।२०	दि.२:२७	कौल	कुंभ	५३।३६	रा. ३:२२ तक	३१।५४	५:५६	६:४१	०।०९।५२।५३	५८	वज्र	२४ अप्रै	वरूथिनी एकादशी व्रत सर्वे। पंचक दिनरात।
१२	शु.	१४।२२	दि.११:४०	पू.भा	७।१६	दि. ८:४९	ऐंद्र	१६।१४	दि.१२:२४	तैति	१४।२२	दि.११:४०	गर	मीन	××	दिनरात	३१।५७	५:५५	६:४१	०।१०।५१।१८	५८	ध्वांक्ष	२५ अप्रै	शुक्रप्रदोष व्रतं। सेन जयंती। पंचक दिनरात। वैघृति दि.१२:२४ वजे तक। से रातअंत। उत्तरभाद्रपदे शुक्रः रात्रि ११:२४ समये।
१३,१४	श.	६।१४, ५७।१५	दि.८:२४,रा ४:४७	उ.भा , रेव	१: १३।५४: १३	प्रा. ६:२३, रा.३:३५	वैधृ	६।४६	दि.८:३६	वणि	६।१४	दि.८:२४	भद्रा	मीन	५४।१३	रा. ३:३५ तक	३१।६०	५:५४	६:४२	०।११।४९।४१	५८	धूम्र	२६ अप्रै	मासिक शिवरात्रि व्रतं। पंचक समाप्त प्रा. ६ :२३ समये। मूल प्रातः ६:२३ से रातअंत। भद्रा दिन ८:२४ से सायं ६:३६ (स्वर्ग)। वैघृति सू.उ.से दि.८:३६ वजे तक।
३०	र.	४७।४६	रा.१२:६०	अश्वि	४६।४९	रा. १२:३७	प्रीति	४५।५९	रा.१२:१७	चतु	२२।३०	दि.२:५३	नाग	मेष	××	दिनरात	३२।०२	५:५३	६:४२	०।१२।४८।०२	५८	आनंद	२७ अप्रै	अमावस्या। मूल सू.उ.से रात १२:३७ तक। सर्वार्थसिद्धी रात्रि १२:३७ पर्यन्त। भरण्यां रवि रात्रि ७:०२ समये। रेवत्यां वुधः दिन ३:२४ समये।

सूर्योदयकालीन दैनिक ग्रह स्पष्ट । ग्रह गति कलाओं में दी गई है। पक्षारंभिक अयनांश २४-१२-३७

तिथि		चन्द्र		मंगल		बुध		गुरू		शुक्र		शनि		राहू	चंद्र उदयास्त समय — उदय	अस्त
वार		राशि अंश कला वि.	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	वक्र गति ३ कला	दिन	रात
१	र.	५।२९।१२।०७	७०९	३।३।४३।४२	२४	११।३।५६।२०	३०	१।२३।४६।१७	११	११।००।२५।१२	१	११।०१।४१।२०	७	११।०१।५२।५८	७:१७	६:४६
१	चं.	६।११।०१।२२	७१०	३।४।७।१४	२४	११।४।२६।२	३४	१।२३।५६।५४	११	११।००।२६।२४	४	११।०१।४८।०९	७	११।०१।४९।४७	८:०६	७:०१
२	मं.	६।२२।५१।२०	७१३	३।४।३१।१	२४	११।४।५९।५५	३८	१।२४।०७।३६	११	११।००।२९।५५	६	११।०१।५४।५७	७	११।०१।४६।३७	८:५६	७:३५
३	बु.	७।०४।४४।०२	७१८	३।४।५५।५	२४	११।५।३७।४९	४२	१।२४।१८।२४	११	११।००।३५।४४	८	११।०२।०१।४२	७	११।०१।४३।२६	९:४८	८:१३
४	गु.	७।१६।४१।४०	७२५	३।५।११।२३	२५	११।६।११।३०	४५	१।२४।२९।१७	११	११।००।४३।४७	१०	११।०२।०८।२५	७	११।०१।४०।१६	१०:४०	८:५६
५	शु.	७।२८।४६।५०	७३६	३।५।४३।५७	२५	११।७।४।४९	४९	१।२४।४०।१६	११	११।००।५४।०१	१२	११।०२।१५।०५	७	११।०१।३७।०५	११:३०	९:४५
६	श.	८।११।०२।३४	७५०	३।६।८।४६	२५	११।७।५३।३४	५२	१।२४।५१।२०	११	११।०१।०६।२२	१४	११।०२।२१।४३	७	११।०१।३३।५४	१२:१८	१०:३८
७	र.	८।२३।३२।२६	७६८	३।६।३३।४९	२५	११।८।४५।३७	५५	१।२५।०२।२९	११	११।०१।२०।४६	१६	११।०२।२८।११	७	११।०१।३०।४४	१:०३	११:३३
८	चं.	९।०६।२०।१८	७९०	३।६।५९।७	२६	११।९।४०।४८	५८	१।२५।१३।४३	११	११।०१।३७।१०	१८	११।०२।३४।५२	७	११।०१।२७।३३	१:४३	१२:३१
९	मं.	९।१९।२९।५८	८१५	३।७।२४।३८	२६	११।१०।३८।५९	६१	१।२५।२५।०२	११	११।०१।५५।३०	२०	११।०२।४१।२३	६	११।०१।२४।२२	२:२१	१:२९
१०	बु.	१०।०३।०४।३१	८४१	३।७।५०।२३	२६	११।११।४०।३	६४	१।२५।३६।२६	११	११।०२।१५।४३	२२	११।०२।४७।५१	६	११।०१।२१।१२	२:५८	२:२८
११	गु.	१०।१७।०५।३२	८६७	३।८।१६।२१	२६	११।१२।४३।५१	६६	१।२५।४७।५५	१२	११।०२।३७।४३	२४	११।०२।५४।१७	६	११।०१।१८।०१	३:३४	३:२९
१२	शु.	११।०१।३२।२२	८८९	३।८।४२।३२	२६	११।१३।५०।१८	६९	१।२५।५९।२८	१२	११।०३।०१।२९	२५	११।०३।००।३९	६	११।०१।१४।५०	४:१२	४:३२
१३,१४	श.	११।१६।२१।३९	९०६	३।९।८।५६	२७	११।१४।५९।१८	७१	१।२६।११।०६	१२	११।०३।२६।५५	२७	११।०३।०६।५९	६	११।०१।११।४०	४:५३	५:३९
३०	र.	०।०१।२७।१६	९१३	३।९।३५।३२	२७	११।१६।१०।४५	७४	१।२६।२२।४८	१२	११।०३।५३।५८	२९	११।०३।१३।१६	६	११।०१।०८।२९	××	६:४९

लग्न प्रारंभ समय (भारतीय स्टेंडर्ड समय)

दिनांक	प्रातः पूर्व — मीने	प्रातः — मेषे	दिन — वृषे	मिथुने	कर्के	सिंहे	सायं — कन्यायां	रात्रि — तुलायां	वृश्चिके	धनुषे	मकरे	कुंभे	शुभ बली लग्नें (इन लग्नों में गुरु, शुक्र या बुध केन्द्र त्रिकोण में होने से दोष समूह नाशक सुयोग।)
१३ अप्रै	४:३६	६:०७	७:४७	९:४६	११:५९	२:१६	४:२८	६:३९	८:५५	११:११	१:१६	३:०३	२,६,८,९,१०,११,
१४ अप्रै	४:३२	६:०३	७:४३	९:४२	११:५५	२:१२	४:२४	६:३५	८:५१	११:०७	१:१२	२:५९	२,५,८,९,१०,११,
१५ अप्रै	४:२८	५:५९	७:३९	९:३८	११:५१	२:०८	४:२०	६:३२	८:४७	११:०३	१:०९	२:५५	२,३,६,८,१०,११,
१६ अप्रै	४:२४	५:५५	७:३५	९:३४	११:४८	२:०४	४:१६	६:२८	८:४३	१०:५९	१:०५	२:५१	२,८,१०,११,
१७ अप्रै	४:२०	५:५१	७:३१	९:३०	११:४४	२:००	४:१२	६:२४	८:३९	१०:५५	१:०१	२:४७	२,८,१०,११,
१८ अप्रै	४:१६	५:४७	७:२७	९:२६	११:४०	१:५६	४:०९	६:२०	८:३५	१०:५१	१२:५७	२:४३	२,३,८,९,१०,११,
१९ अप्रै	४:१३	५:४३	७:२३	९:२२	११:३६	१:५२	४:०५	६:१६	८:३१	१०:४७	१२:५३	२:३९	२,३,८,९,१०,११,
२० अप्रै	४:०९	५:३९	७:२०	९:१८	११:३२	१:४८	४:०१	६:१२	८:२७	१०:४३	१२:४९	२:३६	२,५,८,१०,११,
२१ अप्रै	४:०५	५:३५	७:१६	९:१४	११:२८	१:४४	३:५७	६:०८	८:२३	१०:३९	१२:४५	२:३२	२,५,८,१०,११,
२२ अप्रै	४:०१	५:३१	७:१२	९:१०	११:२४	१:४०	३:५३	६:०४	८:१९	१०:३५	१२:४१	२:२८	२,५,६,८,९,१०,११
२३ अप्रै	३:५७	५:२७	७:०८	९:०६	११:२०	१:३७	३:४९	६:००	८:१५	१०:३२	१२:३७	२:२४	२,५,६,८,९,१०,११
२४ अप्रै	३:५३	५:२३	७:०४	९:०२	११:१६	१:३३	३:४५	५:५६	८:११	१०:२८	१२:३३	२:२०	२,३,६,८,९,१०,११
२५ अप्रै	३:४९	५:२०	६:६०	८:५८	११:१२	१:२९	३:४१	५:५२	८:०७	१०:२४	१२:२९	२:१६	२,३,६,८,१०,११,
२६ अप्रै	३:४५	५:१६	६:५६	८:५४	११:०८	१:२५	३:३७	५:४८	८:०३	१०:२०	१२:२५	२:१२	२,३,८,१०,११,
२७ अप्रै	३:४१	५:१२	६:५२	८:५०	११:०४	१:२१	३:३३	५:४४	७:५९	१०:१६	१२:२१	२:०८	२,३,६,७,८,१०,११

तिथि १
रविवार
इष्ट ०।०

१ ११
२ गु. १२ सू.बु.शु.श.रा. १०
३ 卐 ९
४ मं. ६ चं.के. ८
५ ७

मेष संक्रान्ति फलम्- वैशाख कृष्ण १ रविवासरे रात्रि ३:१४ समये मेषसंक्रान्ति प्रवेशः तस्य पुण्यकाल परा दिवसे। वार नाम घोरा संज्ञक संक्रांति दलितवर्ग, निर्धनों, अनुसूचितजाति एवं जनजातीय वर्ग को शुभ है। तस्य काले स्वानक्षत्र नाम महोदरी संज्ञक संक्रांति चोर, तस्करो एवं जमाखोरों का सुखद। मुहूर्त्त १५ अनाज मूल्य में वृद्धि संकेतक। कौलव करण फल- वराह वाहनं, वृष उपवाहनं, हरित वस्त्रं, खड्ग आयुधं, ताम्र पात्रं, भिक्षा भक्षणं, चंदन लेपनं, सर्प वर्ण, मौलश्री पुष्पं, मोती भूषणं, हरित कंचुकी, कुमारी अवस्था, उतिष्ठा स्थिति। मंहगाई भाव सूचक। अनाज का दाना दुलभ हो, कपास, गुड़ एवं शक्कर मँहगे होंगे। लोग कलह प्रिय होंगे। वैशाखकृष्ण ३० रेवत्यां बुध - रेवत्यांनंदनंचन्द्रोमहर्घकुंकुमाद्यपि रेवती में बुध हो तो कुंकुम आदि महंगे हों।

तिथि ७,८
बुधवार
इष्ट ०।०

२ गु. १२ बु.शु.श.रा.
३ १ सू. ११
४ मं. 卐 १०
५ ७ ९ चं.
६ के. ८

१५	तिथि			नक्षत्र			योग			करण (प्रात: एवं सायंकाल में)				चन्द्रमा राशि समाप्ती काल			श्री सूर्य					आनंदादि योग	दिनांक	(कृपया ध्यान रखें कि इस वर्ष चंद्र राशि का समाप्ती काल दिया है)। गुरु उदयपश्चिमे:। शुक्र उदयपूर्वे: मूल निवास पाताले
तिथि	वार	घटिपल	घंटामिनट	नक्षत्र	घटिपल	घंटामिनट	योग	घटिपल	घंटामिनट	प्रात:	घटिपल	घंटामिनट	सायं	राशि	घटिपल	घंटामिनट	दिनमान	सू.उ.	अस्त	उदयकालीन स्पष्ट	गति			पक्षारंभिक नक्षत्र-भरण्यां रविः, पुष्ये भौमः, रेवत्यां वुधः, मृगशिरायां गुरौ, उत्तरभाद्रपदे शुक्रः, पूर्वभाद्रपदे शनिः, पूर्वभाद्रपदे राहु, उत्तराफाल्गुण्यां केतु।
१	चं.	३८।२२	रा.९:१३	भर	३९।२६	रा. ९:३९	आयु	३५।२६	रा.८:०३	किंस्तु	१३।३	दि.११:०६	बव	मेष	५२।३६	रा. २:५५ तक	३२।०५	५:५३	६:४३	०।१३।४६।२२	५८	चर	२८ अप्रै	उत्तरभाद्रपदे शनि प्रातः ७:४९ समये।
२	मं.	२९।२३	सा.५:३७	कृत्ति	३२।३०	सा. ६:५२	सौभ	२५।१४	दि.३:५७	बाल	३।४४	प्रा.७:२१	कौल	वृष	--	दिनरात	३२।०८	५:५२	६:४३	०।१४।४४।४०	५८	गद	२९ अप्रै	श्री परशुराम जयंती। सम्राट विक्रमादित्य जयंती। त्रिपुष्कर योग सूर्योदय से सायं ५:३७ तक। सर्वार्थसिद्धी सायं ६:५२ पर्यन्त।
३	बु.	२१।१३	दि.२:२०	रोहि	२६।२६	दि. ४:२५	शोभ	१५।३९	दि.१२:०७	गर	२१।१३	दि.२:२०	वणि	वृष	५३।४२	रा. ३:२० तक	३२।११	५:५१	६:४४	०।१५।४२।५६	५८	शुभ	३० अप्रै	अक्षय तृतीया। रवियोग दिन ४:२५ से रात्रिअंत। सर्वार्थसिद्धी दिनरात। भद्रा रात्रि १२:५१ से रात्रिअंत (स्वर्ग)।
४	गु.	१४।१३	दि.११:३२	मृग	२१।३६	दि. २:२९	अति, सुक	६।६०, ५९।५९	दि.८:३८, रा.५:५०	भद्रा	१४।१३	दि.११:३२	बव	मिथुन	--	दिनरात	३२।१४	५:५१	६:४४	०।१६।४१।१०	५८	मृत्यु	०१ मई	विनायकी श्री गणेश ४ व्रतं। रवियोग सू.उ.से दिन २:२९ तक । भद्रा सू.उ.से दिन ११:३२(स्वर्ग)।
५	शु.	८।४९	दि.९:२१	आर्द्रा	१८।२४	दि. १:१२	धृति	५३।५४	रा.३:२३	बाल	८।४९	दि.९:२१	कौल	मिथुन	××	दिनरात	३२।१७	५:५०	६:४५	०।१७।३९।२३	५८	पद्म	०२ मई	श्री आदिशंकराचार्य जयंती युधिष्ठिर संवत २६३१। पुत्र प्राप्ति व्रतारम्भ। रवियोग दिन १:१२ से रात्रिअंत। सर्वार्थसिद्धी दिन १:१२ से रातअंत।
६	श.	५।१८	प्रा.७:५६	पुन	१७।८	दि. १२:४०	शूल	४९।४९	रा.१:४५	तैति	५।१८	प्रा.७:५६	गर	मिथुन	२।०५	प्रा. ६:३९ तक	३२।१९	५:४९	६:४५	०।१८।३७।३४	५८	छत्र	०३ मई	गंगा सप्तमी। श्री रामानुजाचार्य जयंती। रवियोग सू.उ.से दिन १२:४० तक । शनि पुष्य योग दिन १२:४० से रातअंत।
७	र.	३।५४	प्रा.७:२२	पुष्य	१७।५६	दि. १२:५९	गंड़	४७।२३	रा.१२:४६	वणि	३।५४	प्रा.७:२२	भद्रा	कर्क	××	दिनरात	३२।२२	५:४९	६:४५	०।१९।३५।४३	५८	श्रीवत्स	०४ मई	अर्यमा,निंब,शर्करा सप्तमी। मूल दिन १२:५९ से रातअंत। रविपुष्य योग दिन १२:५९ पर्यन्त। क्रांतिसाम्य रात्रि ७:३५ से रात्रि ११:५०। भद्रा (A)
८	चं.	४।३७	प्रा.७:३९	श्ले	२०।४६	दि. २:०६	बृद्धि	४६।२९	रा.१२:२४	बव	४।३७	प्रा.७:३९	बाल	कर्क	२०।४६	दि. २:०६ तक	३२।२५	५:४८	६:४६	०।२०।३३।५०	५८	सौम्य	०५ मई	मासिक दुर्गाष्टमी व्रत। मां वगलामुखी जयंती। मूल दिनरात। रवियोग दिन २:०६ से रात्रिअंत। (A) प्रातः ७:२२ से रात्रि ७:२१ (भूमि)।
९	मं.	७।१८	दि.८:४३	मघा	२५।२५	दि. ३:५७	ध्रुव	४६।५६	रा.१२:३४	कौल	७।१८	दि.८:४३	तैति	सिंह	××	दिनरात	३२।२८	५:४७	६:४६	०।२१।३१।५६	५८	कालदंड़	०६ मई	जानकी जयंती। चण्डिका नवमी। मूल सू.उ.से दिन ३:५७ तक। रवियोग सू.उ.से रात्रिअंत। अश्विन्यां मेषेश्च बुध रात्रि ३:५९ समये
१०	बु.	११।३५	दि.१०:२५	पू.फा.	३१।२९	सा. ६:२२	व्या	४८।२५	रा.१:०९	गर	११।३५	दि.१०:२५	वणि	सिंह	४८।०९	रा. १:०२ तक	३२।३०	५:४७	६:४७	०।२२।३०।००	५८	स्थिर	०७ मई	रवियोग सू.उ.से सायं ६:२२ तक । भद्रा रात्रि ११:२८ से रात्रिअंत (भूमि)।
११	गु.	१७।०३	दि.१२:३५	उ.फा.	३८।३४	रा. ९:१२	हर्ष	५०।३७	रा.२:०१	भद्रा	१७।३	दि.१२:३५	बव	कन्या	××	दिनरात	३२।३३	५:४६	६:४७	०।२३।२८।०३	५८	मातंग	०८ मई	मोहिनी एकादशी व्रत सर्वे। भद्रा सू.उ.से दिन १२:३५(पाताल)।
१२	शु.	२३।१२	दि.३:०३	हस्त	४६।१२	रा. १२:१४	वज्र	५३।११	रा.३:०२	बाल	२३।१२	दि.३:०३	कौल	कन्या	××	दिनरात	३२।३५	५:४६	६:४८	०।२४।२६।०४	५८	अमृत	०९ मई	शुक्रप्रदोष व्रतं। मधुसूदन पूजन। मास शून्यतिथि। रवियोग रात्रि १२:१४ से रात्रिअंत।
१३	श.	२९।३८	सा.५:३६	चित्रा	५३।५९	रा. ३:२१	सिद्धि	५५।५१	रा.४:०५	तैति	२९।३८	सा.५:३६	गर	कन्या	२०।०५	दि. १:४७ तक	३२।३८	५:४५	६:४८	०।२५।२४।०३	५८	काण	१० मई	वैशाखी कामदेव व्रत। रवियोग सू.उ.से रात्रि ३:२१ तक , पुनः रात्रि १३:१२ से रात्रिअंत। सर्वार्थसिद्धी रात्रि ३:२१ से रातअंत। व्यतिपात् (B)
१४	र.	३५।५९	रा.८:०८	स्वा	६०।०	वृद्धि	व्यति	५८।२१	रा.५:०५	गर	२।५१	प्रा.६:५३	वणि	तुला	××	दिनरात	३२।४०	५:४५	६:४९	०।२६।२२।०१	५८	लुंबक	११ मई	श्री नृसिंह अवतार। कदली व्रत। रवियोग दिन १:११ से रात्रिअंत। भद्रा रात्रि ८:०८ से रात्रिअंत (पाताल)। व्यतिपात् सू.उ.से रा.५:०५ वजे (C)
१५	चं.	४१।५७	रा.१०:३१	स्वा	१।३५	प्रा. ६:२२	वरी	६०	वृद्धि	भद्रा	९।२	दि.९:२१	बव	तुला	५१।६०	रा. २:३२ तक	३२।४३	५:४४	६:४९	०।२७।१९।५८	५८	छत्र	१२ मई	बुद्धपूर्णिमा। महर्षि भृगु जयंती। कूर्म अवतार। रवियोग सू.उ.से प्रातः ६:२२ तक। भद्रा सू.उ.से दिन ९:२१(पाताल)। आश्लेषायां भौमः दिन ८:१० समये।

सूर्योदयकालीन दैनिक ग्रह स्पष्ट । ग्रह गति कलाओं में दी गई है। पक्षारंभिक अयनांश २४-१२-३९

तिथि		चन्द्र		मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		राहु	चंद्र उदयास्त समय: उदय	अस्त
वार		राशि अंश कला वि.	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	वक्र गति ३ कला	दिन	रात
१	चं.	०।१६।४०।४५	९१२	३।१०।२।२१	२७	११।१७।२४।३५	७६	१।२६।३४।३४	१२	११।०४।२२।३५	३०	११।०३।१९।३०	६	११।०१।०५।१८	५:४०	७:२८
२	मं.	१।०१।५२।२२	९००	३।१०।२९।२२	२७	११।१८।४०।४४	७८	१।२६।४६।२५	१२	११।०४।५२।४२	३२	११।०३।२५।४१	६	११।०१।०२।०८	६:३४	८:४४
३	बु.	१।१६।५२।२३	८८०	३।१०।५६।३४	२७	११।१९।५९।७	८१	१।२६।५८।२०	१२	११।०५।२४।१६	३३	११।०३।३१।४९	६	११।००।५८।५७	७:३४	९:५९
४	गु.	२।०१।३२।२७	८५४	३।११।२३।५८	२८	११।२१।१९।४१	८३	१।२७।१०।१९	१२	११।०५।५७।१३	३४	११।०३।३७।५४	६	११।००।५५।४६	८:४०	११:०८
५	शु.	२।१५।४६।४२	८२६	३।११।५१।३३	२८	११।२२।४२।२५	८५	१।२७।२२।२२	१२	११।०६।३१।३०	३६	११।०३।४३।५६	६	११।००।५२।३६	९:४९	१२:०८
६	श.	२।२९।३२।२०	७९७	३।१२।१९।२०	२८	११।२४।७।१४	८७	१।२७।३४।२९	१२	११।०७।०७।०४	३७	११।०३।४९।५४	६	११।००।४९।२५	१०:५६	१२:६०
७	र.	३।१२।४९।२८	७७१	३।१२।४७।१७	२८	११।२५।३४।८	८९	१।२७।४६।४०	१२	११।०७।४३।५२	३८	११।०३।५५।४९	६	११।००।४६।१४	१२:०१	१:४४
८	चं.	३।२५।४०।३७	७४९	३।१३।१५।२५	२८	११।२७।३।४	९१	१।२७।५८।५५	१२	११।०८।२१।५२	३९	११।०४।०१।४१	६	११।००।४३।०३	१:०१	२:२१
९	मं.	४।०८।०९।५४	७३२	३।१३।४३।४३	२८	११।२८।३४।१	-९३	१।२८।११।१३	१२	११।०९।००।६०	४०	११।०४।०७।३०	६	११।००।३९।५३	१:५६	२:५३
१०	बु.	४।२०।२२।०७	७२०	३।१४।१२।११	२९	०।०।६।५९	९५	१।२८।२३।३५	१२	११।०९।४१।१३	४१	११।०४।१३।१५	६	११।००।३६।४२	२:४८	३:२३
११	गु.	५।०२।२२।०९	७१२	३।१४।४०।५०	२९	०।१।४१।५६	९७	१।२८।३६।००	१२	११।१०।२२।३०	४२	११।०४।१८।५६	६	११।००।३३।३१	३:३७	३:५१
१२	शु.	५।१४।१४।२८	७०९	३।१५।९।३८	२९	०।३।१८।५२	९९	१।२८।४८।२९	१३	११।११।०४।४७	४३	११।०४।२४।३४	६	११।००।३०।२१	४:२५	४:१९
१३	श.	५।२६।०३।००	७०८	३।१५।३८।३६	२९	०।४।५७।४७	१०१	१।२९।०१।०१	१३	११।११।४८।०३	४४	११।०४।३०।०८	६	११।००।२७।१०	५:१३	४:४७
१४	र.	६।०७।५०।६०	७१०	३।१६।७।४४	२९	०।६।३८।४१	१०३	१।२९।१३।३६	१३	११।१२।३२।१५	४५	११।०४।३५।३९	५	११।००।२३।५९	६:०२	५:१८
१५	चं.	६।१९।४१।०५	७१४	३।१६।३७।१	२९	०।८।२१।३३	१०५	१।२९।२६।१४	१३	११।१३।१७।२०	४६	११।०४।४१।०५	५	११।००।२०।४८	६:५२	५:५१

लग्न प्रारंभ समय (भारतीय स्टेंडर्ड समय)

दिनांक	प्रात: पूर्व	प्रात:	दिन				सायं	रात्रि					शुभ बली लग्नें
	मेषे	वृषे	मिथुने	कर्के	सिंहे	कन्यायां	तुलायां	वृश्चिके	धनुषे	मकरे	कुंभे	मीने	इन लग्नों में गुरु, शुक्र या बुध केन्द्र त्रिकोण में होने से दोष समूह नाशक सुयोग।
२८ अप्रै	५:०८	६:४८	८:४६	११:००	१:१७	३:२९	५:४०	७:५५	१०:१२	१२:१७	२:०४	३:३७	२,५,८,१०,११,
२९ अप्रै	५:०४	६:४४	८:४२	१०:५६	१:१३	३:२५	५:३६	७:५१	१०:०८	१२:१३	२:००	३:३३	५,८,९,१०,११,
३० अप्रै	४:६०	६:४०	८:३९	१०:५२	१:०९	३:२१	५:३२	७:४८	१०:०४	१२:०९	१:५६	३:२९	३,५,६,८,९,१०,११,
०१ मई	४:५६	६:३६	८:३५	१०:४८	१:०५	३:१७	५:२९	७:४४	१०:००	१२:०५	१:५२	३:२५	२,५,६,८,९,१०,११,
०२ मई	४:५२	६:३२	८:३१	१०:४४	१:०१	३:१३	५:२५	७:४०	९:५६	१२:०२	१:४८	३:२१	२,६,८,९,१०,११,
०३ मई	४:४८	६:२८	८:२७	१०:४१	१२:५७	३:०९	५:२१	७:३६	९:५२	११:५८	१:४४	३:१७	२,६,८,१०,११,
०४ मई	४:४४	६:२४	८:२३	१०:३७	१२:५३	३:०५	५:१७	७:३२	९:४८	११:५४	१:४०	३:१३	२,५,८,१०,११,
०५ मई	४:४०	६:२०	८:१९	१०:३३	१२:४९	३:०२	५:१३	७:२८	९:४४	११:५०	१:३६	३:०९	२,३,५,८,१०,११,
०६ मई	४:३६	६:१६	८:१५	१०:२९	१२:४५	२:५८	५:०९	७:२४	९:४०	११:४६	१:३२	३:०६	२,३,५,८,१०,११,
०७ मई	४:३२	६:१३	८:११	१०:२५	१२:४१	२:५४	५:०५	७:२०	९:३६	११:४२	१:२९	३:०२	२,३,६,८,१०,११,
०८ मई	४:२८	६:०९	८:०७	१०:२१	१२:३७	२:५०	५:०१	७:१६	९:३२	११:३८	१:२५	२:५८	२,३,६,८,९,१०,११,
०९ मई	४:२४	६:०५	८:०३	१०:१७	१२:३३	२:४६	४:५७	७:१२	९:२८	११:३४	१:२१	२:५४	२,३,५,६,७,८,९,१०,११
१० मई	४:२०	६:०१	७:५९	१०:१३	१२:३०	२:४२	४:५३	७:०८	९:२५	११:३०	१:१७	२:५०	२,३,५,६,७,८,९,१०,११
११ मई	४:१६	५:५७	७:५५	१०:०९	१२:२६	२:३८	४:४९	७:०४	९:२१	११:२६	१:१३	२:४६	२,३,५,६,७,८,९,१०,११
१२ मई	४:१३	५:५३	७:५१	१०:०५	१२:२२	२:३४	४:४५	७:००	९:१७	११:२२	१:०९	२:४२	२,३,६,८,९,१०,११

तिथि १
चन्द्रवार
इष्ट ०।०

२ गु.
१२ बु.शु.श.रा.
३
१ सू.चं.
११
४ मं.
卐
१०
५
७
९
६ के.
८

वैशाखशुक्ल १५ आश्लेषायां भौम अतिवर्षा से फसलों को नुकसान, सर्प भय। वैशाखशुक्ल ९ अश्विन्यां बुध - बुधेश्विन्यां तु पीड़्यन्ते गोधूमश्च यवादयः। क्षुदुग्धरसादीनांसमर्घचघृतादिषु।। अश्विनी में बुध हो तो जौ गेहूँ में रोग हो। ईख, दूध, रस और घी आदि सस्ते हों।

(B) रा.४:०५ वजे तक। से रातअंत। (C) तक। कृत्तिकायां रवि दिन १:११ समये।

तिथि ८
चन्द्रवार
इष्ट ०।०

२ गु.
१२ बु.शु.श.रा.
३
१ सू.
११
४ चं.मं.
卐
१०
५
७
९
६ के
८

ज्येष्ठ कृष्णपक्ष। शुभ विक्रम संवत् २०८२ शक: १९४७। सिद्धार्थ संवत्सर। कलियुग संवत् ५१२६। ग्रीष्म ऋतु:। श्री सूर्य उत्तरायन-उत्तरगोले। मई ईसवी सन् २०२५। मई। वंगला सन् १४३२ । वीर निर्वाण संवत् २५५१।

१५	तिथि			नक्षत्र			योग			करण (प्रात: एवं सायंकाल में)				चन्द्रमा राशि समाप्ती काल			श्री सूर्य					आनंदादि योग	दिनांक	(कृपया ध्यान रखें कि इस वर्ष चंद्र राशि का समाप्ती काल दिया है)। गुरु उदयपश्चिमे:। शुक्र उदयपूर्वे: । मूल निवास पाताले
तिथि	वार	घटिपल	घंटामिनट	नक्षत्र	घटिपल	घंटामिनट	योग	घटिपल	घंटामिनट	प्रात:	घटिपल	घंटामिनट	सायं	राशि	घटिपल	घंटामिनट	दिनमान	सू.उ.	अस्त	उदयकालीन स्पष्ट	गति			पक्षारंभिक नक्षत्र-कृत्तिकायां रवि:, आश्लेषायां भौम:, अश्विन्यां वुध:, मृगशिरायां गुरौ, उत्तरभाद्रपदे शुक्र:, उत्तरभाद्रपदे शनि:, पूर्वभाद्रपदे राहु, उत्तराफाल्गुण्यां केतु।
१	मं.	४७।२२	रा.१२:४०	विशा	८।४४	दि. ९:१३	वरी	०।३२	प्रा.५:५६	बाल	१४।४४	दि.११:३७	कौल	वृश्चिक	--	दिनरात	३२।४५	५:४४	६:५०	०।२८।१७।५२	५८	श्रीवत्स	१३ मई	
२	बु.	५२।०४	रा.२:३३	अनु	१५।१५	दि. ११:४९	परि	२।१३	प्रा.६:३६	तैति	१९।४७	दि.१:३८	गर	वृश्चिक	--	दिनरात	३२।४७	५:४३	६:५०	०।२९।१५।४६	५८	सौम्य	१४ मई	श्री नारद जयंती। वृषे रवि रात्रि १२:०४ समये। पुण्यकाल आज। मूल दिन ११:४९ से रातअंत। अमृतसिद्धि दिन ११:४९ पर्यन्त। भरण्यां वुध: (A)
३	गु.	५५।५८	रा.४:०६	ज्ये	२१।४	दि. २:०८	शिव	३।२१	प्रा.७:०३	वणि	२४।४	दि.३:२०	भद्रा	वृश्चिक	२१।०४	दि. २:०८ तक	३२।५०	५:४३	६:५१	१।००।१३।३८	५८	कालदंड़	१५ मई	मूल दिनरात। भद्रा दिन ३:२० से रात्रि ४:०६ (स्वर्ग)। (A) रात्रि १२:५१ समये। गुरु मिथुने रात्रि ९:२१ समये।
४	शु.	५८।५७	रा.५:१७	मूल	२६।३	दि. ४:०७	सिद्ध	३।५२	प्रा.७:१५	बव	२७।२९	दि.४:४२	बाल	धनु	--	दिनरात	३२।५२	५:४२	६:५१	१।०१।११।२८	५८	स्थिर	१६ मई	संकष्टी श्री गणेश ४ व्रतं। मां आनन्दमयी जयंती। मूल सू.उ.से दिन ४:०७ तक। बुध अस्त पूर्वे: प्रात: ४:५२ समये। रेवत्यां शुक्र: दिन १२:३३ समये।
५	श.	६०।००	वृद्धि	पू.षा	३०।४	सा. ५:४३	साध्य	३।३९	प्रा.७:०९	कौल	२९।३	सा.५:४०	तैति	धनु	४५।५७	रा. १२:०५ तक	३२।५४	५:४२	६:५१	१।०२।०९।१७	५८	मातंग	१७ मई	
५	र.	०।५१	प्रा.६:०२	उ.षा	३२।५८	सा. ६:५३	शुभ	२।३६	प्रा.६:४४	तैति	०।५१	प्रा.६:०२	गर	मकर	××	दिनरात	३२।५६	५:४१	६:५२	१।०३।०७।०५	५८	अमृत	१८ मई	रवियोग सायं ६:५३ से रात्रिअंत। सर्वार्थसिद्धी सायं ६:५३ पर्यन्त। क्रांतिसाम्य दिन १:०९ से सायं ५:२४। कुंभे राहु, सिंहे केतु १८:४६ समये।
६	चं.	१।२९	प्रा.६:१७	श्रव	३४।३४	रा. ७:३१	शुक्ल, ब्रह्म	०।३६, ५९।५६	प्रा.५:५५, रा.५:४०	वणि	१।२९	प्रा.६:१७	भद्रा	मकर	××	दिनरात	३२।५८	५:४१	६:५२	१।०४।०४।५१	५८	सिद्धि	१९ मई	रवियोग सू.उ.से रात्रि ७:३१ तक । सर्वार्थसिद्धी रात्रि ७:३१ पर्यन्त। भद्रा प्रात: ६:१७ से सायं ६:०८ (पाताल)।
७,८	मं.	०।४४, ५८।२५	प्रा.५:५८,रा ५:०३	धनि	३४।४१	रा. ७:३३	ऐंद्र	५२।६०	रा.२:५३	बव	०।४४	प्रा.५:५८	बाल	मकर	४।५६	प्रा. ७:३९ तक	३३।०१	५:४१	६:५३	१।०५।०२।३६	५८	उत्पात	२० मई	कालाष्टमी व्रतं। पंचक प्रारंभ प्रा. ७:३९ तक समये। द्विपुष्कर योग सूर्योदय से प्रात: ५:५८ तक। वैधृति रा.२:५३ वजे तक। से रातअंत।
९	बु.	५४।२२	रा.३:२५	शत	३३।१३	सा. ६:५७	वैधृ	४७।१५	रा.१२:३४	तैति	२६।२४	दि.४:१४	गर	कुंभ	××	दिनरात	३३।०३	५:४०	६:५३	१।०६।००।१९	५८	मानस	२१ मई	पंचक दिनरात। अगस्त्य अस्त दिन ४:६०। वैधृति सू.उ.से रा.१२:३४ वजे तक। । कृत्तिकायां वुध: रात्रि १०:०७ समये।
१०	गु.	४८।४८	रा.१:११	पू.भा	३०।११	सा. ५:४४	विष्कु	४०।१५	रा.९:४६	वणि	२१।४०	दि.२:२०	भद्रा	कुंभ	१६।०८	दि. १२:०७ तक	३३।०४	५:४०	६:५४	१।०६।५८।०२	५८	मुद्गर	२२ मई	पंचक दिनरात। भद्रा दिन २:२० से रात्रि १:११ (भूमि)।
११	शु.	४१।५४	रा.१०:२५	उ.भा	२५।४४	दि. ३:५७	प्रीति	३२।८	सा.६:३१	बव	१५।३०	दि.११:५२	बाल	मीन	××	दिनरात	३३।०६	५:४०	६:५४	१।०७।५५।४३	५८	ध्वज	२३ मई	अपरा एकादशी व्रत सर्वे। पंचक दिनरात। मूल दिन ३:५७ से रातअंत। वृषे बुध: दिन १२:४९ समये।
१२	श.	३३।५७	रा.७:१४	रेव	२०।७	दि. १:४२	आयु	२३।६	दि.२:५४	कौल	८।७	दि.८:५४	तैति	मीन	२०।०७	दि. १:४२ तक	३३।०८	५:३९	६:५५	१।०८।५३।२२	५८	धाता	२४ मई	शनिप्रदोष व्रतं। पंचक समाप्त दि. १ :४२ समये। मूल दिनरात।
१३	र.	२५।१६	दि.३:४६	अश्वि	१३।३९	दि. ११:०७	सौभ	१३।२३	दि.११:०१	वणि	२५।१६	दि.३:४६	भद्रा	मेष	××	दिनरात	३३।१०	५:३९	६:५५	१।०९।५१।०१	५८	आनंद	२५ मई	मासिक शिवरात्रि व्रतं। नवतपा प्रारंभ। रोहिण्यां रवि दिन ९:२४ समये। मूल सू.उ.से दिन ११:०७ तक। सर्वार्थसिद्धी दिन ११:०७ पर्यन्त। (B)
१४	चं.	१६।१३	दि.१२:०८	भर, कृत्ति	६: ४१।५९: ३७	दि. ८:१९, रा.५:३०	शोभ, अति	३।१५, ५९।५१	प्रा.६:५७, रा.५:३६	शकु	१६।१३	दि.१२:०८	चतु	मेष	१९।५५	दि. १:३७ तक	३३।१२	५:३९	६:५६	१।१०।४८।३८	५८	चर	२६ मई	(B) भद्रा दिन ३:४६ से रात्रि १:५८ (स्वर्ग)।
३०,१	मं.	७।१०, ५८।२९	दि.८:३१,रा ५:०२	रोहि	५३।१	रा. २:५१	सुक	४३।९	रा.१०:५४	नाग	७।१०	दि.८:३१	किंस्तु	वृष	××	दिनरात	३३।१४	५:३९	६:५६	१।११।४६।१४	५८	मातंग	२७ मई	अमावस्या। वट सावित्री व्रत। शनि जयंती। करवीर व्रत। रोहिण्यां वुध: रात्रि ४:५६ समये।

सूर्योदयकालीन दैनिक ग्रह स्पष्ट । ग्रह गति कलाओं में दी गई है। पक्षारंभिक अयनांश २४-१२-४१

तिथि		चन्द्र		मंगल		बुध		गुरू		शुक्र		शनि		राहू	चंद्र उदयास्त समय: उदय	अस्त
वार		राशि अंश कला वि.	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	वक्र गति ३ कला	दिन	रात
१	मं.	७।०१।३५।१७	७२०	३।१७।६।२७	३०	०।१०।६।२५	१०७	१।२९।३८।५६	१३	११।१४।०३।१७	४७	११।०४।४६।२८	५	११।००।१७।३८	७:४३	६:३०
२	बु.	७।१३।३५।११	७२७	३।१७।३६।२	३०	०।११।५३।१५	१०९	१।२९।५१।४०	१३	११।१४।५०।०४	४८	११।०४।५१।४७	५	११।००।१४।२७	८:३४	६:५३
३	गु.	७।२५।४२।०१	७३५	३।१८।५।४६	३०	०।१३।४२।५	१११	२।००।०४।२७	१३	११।१५।३७।३९	४८	११।०४।५७।०२	५	११।००।११।१६	९:२५	७:४०
४	शु.	८।०७।५६।५५	७४४	३।१८।३५।३९	३०	०।१५।३२।५४	११३	२।००।१७।१८	१३	११।१६।२५।६०	४९	११।०५।०२।१३	५	११।००।०८।०५	१०:१४	८:३१
५	श.	८।२०।२१।१६	७५६	३।१९।५।४०	३०	०।१७।२५।४१	११५	२।००।३०।१०	१३	११।१७।१५।०५	५०	११।०५।०७।२१	५	११।००।०४।५५	१०:५९	९:२६
५	र.	९।०२।५७।०१	७७०	३।१९।३५।५०	३०	०।१९।२०।२६	११७	२।००।४३।०६	१३	११।१८।०४।५२	५०	११।०५।१२।२४	५	११।००।०१।४४	११:४०	१०:२२
६	चं.	९।१५।४६।४४	७८७	३।२०।६।८	३०	०।२१।१७।८	११९	२।००।५६।०४	१३	११।१८।५५।२१	५१	११।०५।१७।२२	५	१०।२९।५८।३३	१२:१८	११:१८
७,८	मं.	९।२८।५३।३२	८०७	३।२०।३६।३४	३१	०।२३।१५।४५	१२०	२।०१।०९।०४	१३	११।१९।४६।२९	५२	११।०५।२२।१७	५	१०।२९।५५।२२	१२:५३	१२:१५
९	बु.	१०।१२।२०।३७	८३०	३।२१।७।८	३१	०।२५।१६।१४	१२२	२।०१।२२।०७	१३	११।२०।३८।१४	५२	११।०५।२७।०७	५	१०।२९।५२।१२	१:२८	१:१३
१०	गु.	१०।२६।१०।३२	८५४	३।२१।३७।४९	३१	०।२७।१८।३१	१२४	२।०१।३५।१३	१३	११।२१।३०।३७	५३	११।०५।३१।५३	५	१०।२९।४९।०१	२:०५	२:१३
११	शु.	११।१०।२४।१३	८७६	३।२२।८।३९	३१	०।२९।२२।३१	१२६	२।०१।४८।२०	१३	११।२२।२३।३४	५४	११।०५।३६।३५	५	१०।२९।४५।५०	२:४३	३:१७
१२	श.	११।२५।००।१२	८९४	३।२२।३९।३६	३१	१।१।२८।८	१२७	२।०२।०१।३०	१३	११।२३।१७।०६	५४	११।०५।४१।१२	५	१०।२९।४२।३९	३:२७	४:२४
१३	र.	०।०९।५४।१०	९०५	३।२३।१०।४१	३१	१।३।३५।१५	१२८	२।०२।१४।४२	१३	११।२४।११।१०	५५	११।०५।४५।४५	४	१०।२९।३९।२९	४:१६	५:३७
१४	चं.	०।२४।५९।०२	९०७	३।२३।४१।५३	३१	१।५।४३।४२	१३०	२।०२।२७।५६	१३	११।२५।०५।४६	५५	११।०५।५०।१३	४	१०।२९।३६।१८	५:१३	६:५२
३०,१	मं.	१।१०।०५।४७	८९९	३।२४।१३।१२	३१	१।७।५३।१९	१३१	२।०२।४१।१२	१३	११।२६।००।५२	५६	११।०५।५४।३७	४	१०।२९।३३।०७	××	८:०७

लग्न प्रारंभ समय (भारतीय स्टेंडर्ड समय)

दिनांक	प्रात: पूर्व	प्रात:	दिन				सायं	रात्रि					शुभ बली लग्नें
	मेषे	वृषे	मिथुने	कर्के	सिंहे	कन्यायां	तुलायां	वृश्चिके	धनुषे	मकरे	कुंभे	मीने	इन लग्नों में गुरु, शुक्र या बुध केन्द्र त्रिकोण में होने से दोष समूह नाशक सुयोग।
१३ मई	४:०९	५:४९	७:४७	१०:०१	१२:१८	२:३०	४:४१	६:५६	९:१३	११:१८	१:०५	२:३८	२,३,६,८,१०,११,
१४ मई	४:०५	५:४५	७:४३	९:५७	१२:१४	२:२६	४:३७	६:५२	९:०९	११:१४	१:०१	२:३४	२,३,६,८,९,१०,११,
१५ मई	४:०१	५:४१	७:३९	९:५३	१२:१०	२:२२	४:३३	६:४८	९:०५	११:१०	१२:५७	२:३०	५,७,८,९,१०,११,
१६ मई	३:५७	५:३७	७:३५	९:४९	१२:०६	२:१८	४:२९	६:४४	९:०१	११:०६	१२:५३	२:२६	३,५,७,९,१०,११,
१७ मई	३:५३	५:३३	७:३२	९:४५	१२:०२	२:१४	४:२५	६:४१	८:५७	११:०२	१२:४९	२:२२	५,७,८,९,१०,११,१,
१८ मई	३:४९	५:२९	७:२८	९:४१	११:५८	२:१०	४:२२	६:३७	८:५३	१०:५९	१२:४५	२:१८	५,७,८,९,१०,११,
१९ मई	३:४५	५:२५	७:२४	९:३७	११:५४	२:०६	४:१८	६:३३	८:४९	१०:५५	१२:४१	२:१४	६,७,९,१०,११,१,
२० मई	३:४१	५:२१	७:२०	९:३४	११:५०	२:०२	४:१४	६:२९	८:४५	१०:५१	१२:३७	२:१०	६,७,९,१०,११,१,
२१ मई	३:३७	५:१७	७:१६	९:३०	११:४६	१:५८	४:१०	६:२५	८:४१	१०:४७	१२:३३	२:०६	६,७,९,११,
२२ मई	३:३३	५:१३	७:१२	९:२६	११:४२	१:५५	४:०६	६:२१	८:३७	१०:४३	१२:२९	२:०२	३,६,७,९,१०,११,
२३ मई	३:२९	५:०९	७:०८	९:२२	११:३८	१:५१	४:०२	६:१७	८:३३	१०:३९	१२:२५	१:५९	३,७,८,९,१०,११,
२४ मई	३:२५	५:०६	७:०४	९:१८	११:३४	१:४७	३:५८	६:१३	८:२९	१०:३५	१२:२२	१:५५	३,८,९,११,
२५ मई	३:२१	५:०२	६:६०	९:१४	११:३०	१:४३	३:५४	६:०९	८:२५	१०:३१	१२:१८	१:५१	३,८,९,११,
२६ मई	३:१७	४:५८	६:५६	९:१०	११:२६	१:३९	३:५०	६:०५	८:२१	१०:२७	१२:१४	१:४७	८,९,११,
२७ मई	३:१३	४:५४	६:५२	९:०६	११:२३	१:३५	३:४६	६:०१	८:१८	१०:२३	१२:१०	१:४३	६,९,११,

तिथि १
मंगलवार
इष्ट ०।०

२ गु.
१२ शु.श.रा.
३
१ सू.बु.
११
४ मं.
卐
१०
५
७
९
६ के.
८ चं.

वृष संक्रान्ति फलम्- ज्येष्ठ कृष्ण २ बुधवासरे रात्रि १२:०४ समये वृषसंक्रान्ति प्रवेश: तस्य पुण्यकाल आज। वार नाम मंदाकिनी संज्ञक संक्रांति सैनिकवर्ग, राजनैतिक लोगों, अधिकारियों को शुभकारी है। तस्य काले ज्येनक्षत्र नाम राक्षसी संज्ञक संक्रांति चाण्ड़ालवर्ग को सुखद। मुहूर्त्त १५ अनाज मूल्य में वृद्धि संकेतक। गर करण फल- हस्ती वाहनं, गदर्भ उपवाहनं, रक्त वस्त्रं, धनुष आयुधं, लोह पात्रं, पय भक्षणं, गोरोचन लेपनं, पशु वर्ण, विल्व पुष्पं, मुकुट भूषणं, श्वेत कंचुकी, प्रौढा अवस्था, उपविष्टा स्थिति। अन्नादि में स्थिर भाव सूचक। जनता में खुशी का वातावरण रहेगा। ज्येष्ठकृष्ण २ भरण्यां बुध - बुधभरण्यांमातंगपीड़ाचाण्ड़ालनाशनम्। तीव्ररोगाद्धान्यवस्तुमहर्घलोकवैरत:। भरणी पर बुध हो तो हाथियों को पीड़ा हो, चाण्ड़ालों का नाश हो, तीव्र रोग हो, धान्य महँगे हों और वैर बढ़े। ज्येष्ठकृष्ण ९ कृत्तिकायां बुधे विप्रपीड़ा मेघाल्पता जने।अन्नमल्पज्वरंबाधा क्वचिद्विग्रहकारणम्। कृत्तिका में बुध हो तो ब्राह्मणों को पीड़ा हो, मेघ कम हो, अन्न अल्प हो मनुष्यों में ज्वरपीड़ा हो और कहीं कुछ बखेड़ा खड़ा हो। ज्येष्ठकृष्ण ३० रोहिण्यां बुध - रोहिण्यांज़े च कार्पासतिलसूत्रमर्हाता। रोहिणी में बुध हो तो कपास, तिल, सूत महँगे हों।

तिथि ७,८
मंगलवार
इष्ट ०।०

३ गु.
१ बु.
४ मं.
२ सू.
१२ शु.श.
५ के
卐
११ रा.
६
८
१० चं.
७
९

१५	तिथि			नक्षत्र			योग			करण (प्रातः एवं सायंकाल में)				चन्द्रमा राशि समाप्ती काल			श्री सूर्य					आनंदादि योग	दिनांक	(कृपया ध्यान रखें कि इस वर्ष चंद्र राशि का समाप्ती काल दिया है)। गुरु उदय-अस्तपश्चिमेः १४ भौमे। शुक्र उदयपूर्वे: मूल निवास पाताले
तिथि	वार	घटिपल	घंटामिनट	नक्षत्र	घटिपल	घंटामिनट	योग	घटिपल	घंटामिनट	प्रातः	घटिपल	घंटामिनट	सायं	राशि	घटिपल	घंटामिनट	दिनमान	सू.उ.	अस्त	उदयकालीन स्पष्ट	गति			पक्षारंभिक नक्षत्र-रोहिण्यां रविः, आश्लेषायां भौमः, रोहिण्यां वुधः, मृगशिरायां गुरौ, रेवत्यां शुक्रः, उत्तरभाद्रपदे शनिः, पूर्वभाद्रपदे राहु, उत्तराफाल्गुण्यां केतु।
२	बु.	५०।५२	रा.१:५९	मृग	४७।१८	रा. १२:३४	धृति	३३।५६	रा.७:१३	बाल	२४।४१	दि.३:३१	कौल	वृष	२०।०५	दि. १:४१ तक	३३।१५	५:३९	६:५७	१।१२।४३।४९	५८	अमृत	२८ मई	सर्वार्थसिद्धी रात्रि १२:३४ पर्यन्त। ($) दि.१०:१६ वजे तक। । मघायां सिंहे च भौमः रात्रि १:४७। मिथुने बुधः दिन ९:२० समये।
३	गु.	४४।३२	रा.११:२७	आर्द्रा	४२।५१	रा. १०:४७	शूल	२५।४०	दि.३:५४	तैति	१७।३४	दि.१२:४०	गर	मिथुन	--	दिनरात	३३।१७	५:३८	६:५७	१।१३।४१।२३	५८	काण	२९ मई	रंभातीज। महाराणा.प्रताप जयंती। रवियोग रात्रि १०:४७ से रात्रिअंत। सर्वार्थसिद्धी रात्रि १०:४७ से रातअंत।
४	शु.	३९।५१	रा.९:३५	पुन	४०।३	रा. ९:४०	गंड़	१८।३७	दि.१:०५	वणि	११।५५	दि.१०:२४	भद्रा	मिथुन	२५।३७	दि. ३:५३ तक	३३।१८	५:३८	६:५७	१।१४।३८।५६	५८	लुम्बक	३० मई	विनायकी श्री गणेश ४ व्रतं। सर्वार्थसिद्धी, रवियोग सू.उ.से रात्रि ९:४० तक । क्रांतिसाम्य दिन ८:१३ से दिन १२:१६। भद्रा दिन १०:२४ से रात्रि ९:३५ (स्वर्ग)।
५	श.	३७।०५	रा.८:२८	पुष्य	३९।११	रा. ९:१८	बृद्धि	१३।५	दि.१०:५२	बव	८।५	दि.८:५२	बाल	कर्क	--	दिनरात	३३।२०	५:३८	६:५८	१।१५।३६।२८	५८	मित्र	३१ मई	मूल रात ९:१८ से रातअंत। रवियोग रात्रि ९:१८ से रात्रिअंत। शनि पुष्य योग सू उ से रात्रि ९:१८ तक। शुक्रः मेषे अश्विन्यांश्च दिन ११:३० समये।
६	र.	३६।२५	रा.८:१२	श्ले	४०।२२	रा. ९:४७	ध्रुव	९।१२	दि.९:१९	कौल	६।१९	दि.८:१०	तैति	कर्क	४०।२२	रा. ९:४७ तक	३३।२१	५:३८	६:५८	१।१६।३३।५८	५७	वज्र	०१ जून	मूल दिनरात। रवियोग सू.उ.से रात्रि ९:४७ तक ।
७	चं.	३७।५०	रा.८:४६	मघा	४३।३६	रा. ११:०४	व्या	७।२	दि.८:२७	गर	६।४४	दि.८:१९	वणि	सिंह	××	दिनरात	३३।२२	५:३८	६:५९	१।१७।३१।२८	५७	ध्वांक्ष	०२ जून	मित्र सप्तमी। मूल सू.उ.से रात ११:०४ तक। भद्रा रात्रि ८:४६ से रात्रिअंत (भूमि)।
८	मं.	४१।०९	रा.१०:०५	पू.फा.	४८।३९	रा. १:०५	हर्ष	६।३०	दि.८:१४	भद्रा	९।११	दि.९:१८	बव	सिंह	××	दिनरात	३३।२४	५:३८	६:५९	१।१८।२८।५७	५७	धूम्र	०३ जून	मासिक दुर्गाष्टमी व्रत। रवियोग रात्रि १:०५ से रात्रिअंत। भद्रा सू.उ.से दिन ९:१८(भूमि)। मृगशिरायां वुधः प्रातः ६:४९ समये।
९	बु.	४५।५९	रा.१२:०१	उ.फा.	५५।६	रा. ३:४०	वज्र	७।१९	दि.८:३३	बाल	१३।२२	दि.१०:५९	कौल	सिंह	५।०६	प्रा. ७:४० तक	३३।२५	५:३८	६:६०	१।१९।२६।२५	५७	प्रवर्ध	०४ जून	रवियोग दिनरात। सर्वार्थसिद्धी रात्रि ३:४० से रातअंत।
१०	गु.	५१।५०	रा.२:२१	हस्त	६०।०	वृद्धि	सिद्धि	९।१०	दि.९:१७	तैति	१८।४९	दि.१:०९	गर	कन्या	××	दिनरात	३३।२६	५:३८	६:६०	१।२०।२३।५१	५७	राक्षस	०५ जून	गंगा दशहरा। रवियोग सू.उ.से रात्रि ६:३७ तक । व्यतिपात् दि.९:१७ वजे तक। से रातअंत।
११	शु.	५८।१०	रा.४:५३	हस्त	२।३०	प्रा. ६:३८	व्यति	११।३७	दि.१०:१६	वणि	२४।५८	दि.३:३७	भद्रा	कन्या	३६।२४	रा. ८:११ तक	३३।२७	५:३८	७:०	१।२१।२१।१७	५७	अमृत	०६ जून	निर्जला एकादशी व्रत सर्वे। गायत्री जयंती। रवियोग सू.उ.से प्रातः ६:३८ तक । भद्रा दिन ३:३७ से रात्रि ४:५३ (पाताल)। व्यतिपात् सू.उ.से ($)
१२	श.	६०।००	वृद्धि	चित्रा	१०।१६	दि. ९:४४	वरी	१४।१८	दि.११:२१	बव	२६।५१	सा.६:०९	बाल	तुला	××	दिनरात	३३।२८	५:३८	७:१	१।२२।१८।४३	५७	काण	०७ जून	द्विपुष्कर योग सूर्योदय से दिन ९:४४ तक। सर्वार्थसिद्धी दिन ९:४४ से रातअंत।
१२	र.	४।२६	प्रा.७:२४	स्वा	१७।५२	दि. १२:४६	परि	१६।५०	दि.१२:२२	बाल	४।२६	प्रा.७:२४	कौल	तुला	××	दिनरात	३३।२९	५:३८	७:१	१।२३।१६।०७	५७	लुंबक	०८ जून	रविप्रदोष व्रतं। मृगशिरायां रवि प्रातः ७:१५ समये। बुध उदय पश्चिमेः रात्रि ७:५१ समये।
१३	चं.	१०।१२	दि.९:४२	विशा	२४।५५	दि. ३:३६	शिव	१८।५७	दि.१:१२	तैति	१०।१२	दि.९:४२	गर	तुला	८।१६	दि. ८:५६ तक	३३।३०	५:३८	७:२	१।२४।१३।३०	५७	मित्र	०९ जून	दुर्भाग्य नाशक व्रत। रवियोग दिन ३:३६ से रात्रिअंत। सर्वार्थसिद्धी दिन ३:३६ से रातअंत। आर्द्रायां वुधः दिन २:५१ समये।
१४	मं.	१५।१०	दि.११:४२	अनु	३१।११	सा. ६:०६	सिद्ध	२०।२७	दि.१:४८	वणि	१५।१०	दि.११:४२	भद्रा	वृश्चिक	××	दिनरात	३३।३१	५:३८	७:२	१।२५।१०।५३	५७	वज्र	१० जून	पंच तप व्रत। गुरु अस्त पश्चिमेः सायं ११:४८ समये। मूल सायं. ६:०६ से रातअंत। रवियोग सू.उ.से सायं ६:०६ तक । भद्रा दिन ११:४२ से रात्रि १२:३३ (स्वर्ग)।
१५	बु.	१९।११	दि.१:१८	ज्ये	३६।३०	रा. ८:१४	साध्य	२१।१२	दि.२:०७	बव	१९।११	दि.१:१८	बाल	वृश्चिक	३६।३०	रा. ८:१४ तक	३३।३१	५:३८	७:२	१।२६।०८।१५	५७	ध्वांक्ष	११ जून	पूर्णिमा। संतकवीर जयंती। वैवस्वत मन्वादितिथि। मूल दिनरात। ज्वालामुखीयो रात्रि ८:१४ से रातअंत।

सूर्योदयकालीन दैनिक ग्रह स्पष्ट । ग्रह गति कलाओं में दी गई है। पक्षारंभिक अयनांश २४-१२-४४

तिथि		चन्द्र		मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		राहु	चंद्र उदयास्त समय: उदय	अस्त
वार		राशि अंश कला वि.	गति	उदय-मार्गी	गति	अस्त-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	वक्र गति ३ कला	दिन	रात
२	बु.	१।२५।०४।४२	८८२	३।२४।४४।३८	३२	१।१०।३।५३	१३१	२।०२।५४।३०	१३	११।२६।५६।२७	५६	११।०५।५८।५६	४	१०।२९।२९।५६	६:२०	८:४८
३	गु.	२।०९।४६।४९	८५८	३।२५।१६।१२	३२	१।१२।१५।११	१३२	२।०३।०७।४९	१३	११।२७।५२।३१	५७	११।०६।०३।१०	४	१०।२९।२६।४५	७:२९	९:५४
४	शु.	२।२४।०५।१९	८३१	३।२५।४७।५२	३२	१।१४।२६।५८	१३२	२।०३।२१।११	१३	११।२८।४९।०२	५७	११।०६।०७।२०	४	१०।२९।२३।३५	८:४०	१०:५२
५	श.	३।०७।५६।०९	८०२	३।२६।१९।३९	३२	१।१६।३८।५८	१३२	२।०३।३४।३४	१३	११।२९।४५।५९	५७	११।०६।११।२४	४	१०।२९।२०।२४	९:४८	११:४०
६	र.	३।२१।१८।२०	७७५	३।२६।५१।३३	३२	१।१८।५०।५५	१३२	२।०३।४७।५८	१३	०।००।४३।२२	५८	११।०६।१५।२४	४	१०।२९।१७।१३	१०:५१	१२:२०
७	चं.	४।०४।१३।३४	७५२	३।२७।२३।३४	३२	१।२१।२।३३	१३१	२।०४।०१।२५	१३	०।०१।४१।१०	५८	११।०६।१९।१९	४	१०।२९।१४।०२	११:५०	१२:५५
८	मं.	४।१६।४५।२७	७३३	३।२७।५५।४१	३२	१।२३।१३।३४	१३०	२।०४।१४।५२	१३	०।०२।३९।२१	५९	११।०६।२३।०९	४	१०।२९।१०।५१	१२:४३	१:२६
९	बु.	४।२८।५८।४५	७२०	३।२८।२७।५४	३२	१।२५।२३।४३	१२९	२।०४।२८।२१	१४	०।०३।३७।५५	५९	११।०६।२६।५५	४	१०।२९।०७।४१	१:३४	१:५४
१०	गु.	५।१०।५८।४२	७१२	३।२९।०।१४	३२	१।२७।३२।४६	१२८	२।०४।४१।५२	१४	०।०४।३६।५१	५९	११।०६।३०।३५	४	१०।२९।०४।३०	२:२२	२:२२
११	शु.	५।२२।५०।२५	७०८	३।२९।३२।४१	३३	१।२९।४०।२९	१२६	२।०४।५५।२३	१४	०।०५।३६।०९	६०	११।०६।३४।१०	३	१०।२९।०१।१९	३:१०	२:५०
१२	श.	६।०४।३८।४०	७०९	४।०।५।१३	३३	२।१।४६।३९	१२४	२।०५।०८।५६	१४	०।०६।३५।४७	६०	११।०६।३७।३९	३	१०।२८।५८।०८	३:५८	३:१९
१२	र.	६।१६।२७।३८	७१३	४।०।३७।५२	३३	२।३।५१।६	१२३	२।०५।२२।३०	१४	०।०७।३५।४६	६०	११।०६।४१।०४	३	१०।२८।५४।५७	४:४७	३:५१
१३	चं.	६।२८।२०।५२	७२०	४।१।१०।३६	३३	२।५।५३।४०	१२१	२।०५।३६।०५	१४	०।०८।३६।०४	६१	११।०६।४४।२४	३	१०।२८।५१।४७	५:३७	४:२८
१४	मं.	७।१०।२१।०६	७२९	४।१।४३।२७	३३	२।७।५४।१३	११८	२।०५।४९।४१	१४	०।०९।३६।४१	६१	११।०६।४७।३८	३	१०।२८।४८।३६	६:२८	५:१०
१५	बु.	७।२२।३०।१६	७३९	४।२।१६।२३	३३	२।९।५२।४०	११६	२।०६।०३।१७	१४	०।१०।३७।३६	६१	११।०६।५०।४७	३	१०।२८।४५।२५	७:२०	५:५७

लग्न प्रारंभ समय (भारतीय स्टेंडर्ड समय)

दिनांक	प्रातः पूर्व	प्रातः	दिन				सायं	रात्रि					शुभ बली लग्नें
	वृषे	मिथुने	कर्के	सिंहे	कन्यायां	तुलायां	वृश्चिके	धनुषे	मकरे	कुंभे	मीने	मेषे	इन लग्नों में गुरु, शुक्र या बुध केन्द्र त्रिकोण में होने से दोष समूह नाशक सुयोग।
२८ मई	४:५०	६:४८	९:०२	११:१९	१:३१	३:४२	५:५७	८:१४	१०:१९	१२:०६	१:३९	३:०९	३,६,९,१०,११,
२९ मई	४:४६	६:४४	८:५८	११:१५	१:२७	३:३८	५:५३	८:१०	१०:१५	१२:०२	१:३५	३:०६	६,९,१०,११,
३० मई	४:४२	६:४०	८:५४	११:११	१:२३	३:३४	५:४९	८:०६	१०:११	११:५८	१:३१	३:०२	६,९,१०,११,
३१ मई	४:३८	६:३६	८:५०	११:०७	१:१९	३:३०	५:४५	८:०२	१०:०७	११:५४	१:२७	२:५८	६,७,९,१०,११,१,
०१ जून	४:३४	६:३२	८:४६	११:०३	१:१५	३:२६	५:४१	७:५८	१०:०३	११:५०	१:२३	२:५४	३,७,८,९,११,१,
०२ जून	४:३०	६:२८	८:४२	१०:५९	१:११	३:२२	५:३७	७:५४	९:५९	११:४६	१:१९	२:५०	३,७,८,९,११,१,
०३ जून	४:२६	६:२५	८:३८	१०:५५	१:०७	३:१८	५:३४	७:५०	९:५५	११:४२	१:१५	२:४६	६,७,९,१०,११,
०४ जून	४:२२	६:२१	८:३४	१०:५१	१:०३	३:१४	५:३०	७:४६	९:५१	११:३८	१:११	२:४२	६,७,८,९,११,१,
०५ जून	४:१८	६:१७	८:३०	१०:४७	१२:५९	३:११	५:२६	७:४२	९:४८	११:३४	१:०७	२:३८	६,७,८,९,११,१,
०६ जून	४:१४	६:१३	८:२७	१०:४३	१२:५५	३:०७	५:२२	७:३८	९:४४	११:३०	१:०३	२:३४	७,९,१०,११,१,
०७ जून	४:१०	६:०९	८:२३	१०:३९	१२:५१	३:०३	५:१८	७:३४	९:४०	११:२६	१२:५९	२:३०	३,६,७,९,१०,११,१,
०८ जून	४:०६	६:०५	८:१९	१०:३५	१२:४८	२:५९	५:१४	७:३०	९:३६	११:२२	१२:५५	२:२६	३,६,७,९,१०,११,१,
०९ जून	४:०२	६:०१	८:१५	१०:३१	१२:४४	२:५५	५:१०	७:२६	९:३२	११:१८	१२:५१	२:२२	३,६,७,९,११,१,
१० जून	३:५९	५:५७	८:११	१०:२७	१२:४०	२:५१	५:०६	७:२२	९:२८	११:१५	१२:४८	२:१८	३,६,७,९,१०,११,
११ जून	३:५५	५:५३	८:०७	१०:२३	१२:३६	२:४७	५:०२	७:१८	९:२४	११:११	१२:४४	२:१४	३,६,७,९,१०,११,

तिथि २
बुधवार
इष्ट ०।०

३ गु.
१
४ मं.
२ सू.चं.बु.
१२ शु.श.
५ के.
卐
११ रा.
६
८
१०
७
९

ज्येष्ठशुक्ल ११ मघायां भौम तिल मूंग नष्ट। ज्येष्ठशुक्ल ८ मृगशिरायां बुध - मृगशीर्षेसुभिक्षंस्याद्वातवृष्टिर्महीयसी।। मृगशिर में हो तो सुभिक्ष हो, वायु से वर्षा हो। ज्येष्ठशुक्ल १३ आर्द्रायां बुध - गोधूमतिलमाषादिसमर्घसुखिनोजनाः। आर्द्रायावृष्टिरतुलाग्रहपाताप्रवाहतः।। आर्द्रा में हो तो वर्षा अधिक हो, गेहूँ तिल उड़द सस्ते हों, मनुष्य सुखी रहे। और ग्रहपात तथा नवन प्रवाह हो।

तिथि ९
बुधवार
इष्ट ०।०

३ गु.
१ शु.
४ मं.
२ सू.बु.
१२ श.
५ चं.के
卐
११ रा.
६
८
१०
७
९

आषाढ़ कृष्णपक्ष। शुभ विक्रम संवत् २०८२ शकः १९४७। सिद्धार्थ संवत्सर। कलियुग संवत् ५१२६। ग्रीष्म ऋतुः। श्री सूर्य उत्तरायन-उत्तरगोले। जून ईसवी सन् २०२५। जून। वंगला सन् १४३२ ।वीर निर्वाण संवत् २५५१।

१४	तिथि			नक्षत्र			योग			करण (प्रातः एवं सायंकाल में)				चन्द्रमा राशि समाप्ती काल			श्री सूर्य					आनंदादि योग	दिनांक	(कृपया ध्यान रखें कि इस वर्ष चंद्र राशि का समाप्ती काल दिया है)। गुरु अस्तपश्चिमेः। शुक्र उदयपूर्वेः मूल निवास स्वर्गे
तिथि	वार	घटिपल	घंटामिनट	नक्षत्र	घटिपल	घंटामिनट	योग	घटिपल	घंटामिनट	प्रातः	घटिपल	घंटामिनट	सायं	राशि	घटिपल	घंटामिनट	दिनमान	सू.उ.	अस्त	उदयकालीन स्पष्ट	गति			पक्षारंभिक नक्षत्र-मृगशिरायां रविः, मघायां भौमः, आर्द्रायां वुधः, मृगशिरायां गुरौ, अश्विन्यां शुक्रः, उत्तरभाद्रपदे शनिः, पूर्वभाद्रपदे राहु, उत्तराफाल्गुण्यां केतु।
१	गु.	२२।१२	दि.२:३०	मूल	४०।५२	रा. ९:५८	शुभ	२१।११	दि.२:०६	कौल	२२।१२	दि.२:३०	तैति	धनु	--	दिनरात	३३।३२	५:३८	७:३	१।२७।०५।३६	५७	धूम्र	१२ जून	मूल सू.उ.से रात ९:५८ तक। क्रांतिसाम्य रात्रि ८:४३ से रात्रि १:००। ज्वालामुखी योग सू.उ. से दिन २:३०।
२	शु.	२४।१४	दि.३:१९	पू.षा	४४।१६	रा. ११:२०	शुक्ल	२०।२४	दि.१:४७	गर	२४।१४	दि.३:१९	वणि	धनु	--	दिनरात	३३।३३	५:३८	७:३	१।२८।०२।५६	५७	प्रवर्ध	१३ जून	भद्रा रात्रि ३:३७ से रात्रिअंत (पाताल)। आर्द्रायां गुरु रात्रि १०:१४ समये। भरण्यां शुक्रः रात्रि ९:०३ समये।
३	श.	२५।१९	दि.३:४५	उ.षा	४६।४६	रा. १२:२०	ब्रह्म	१८।५२	दि.१:११	भद्रा	२५।१९	दि.३:४५	बव	धनु	०।०३	प्रा. ५:३९ तक	३३।३३	५:३८	७:३	१।२९।००।१६	५७	राक्षस	१४ जून	संकष्टी श्री गणेश ४ व्रतं। सर्वार्थसिद्धी रात्रि १२:२० से रातअंत। भद्रा सू.उ.से दिन ३:४५(पाताल)।
४	र.	२५।२८	दि.३:४९	श्रव	४८।२०	रा. १२:५८	ऐंद्र	१६।३७	दि.१२:१७	बाल	२५।२८	दि.३:४९	कौल	मकर	--	दिनरात	३३।३४	५:३८	७:३	१।२९।५७।३५	५७	गद	१५ जून	मिथुने रवि प्रातः ६:३९ समये। पुण्यकाल आज। वैघृति दि.१२:१७ वजे से रातअंत।
५	चं.	२४।४०	दि.३:३०	धनि	४८।५७	रा. १:१३	वैधृ	१३।३६	दि.११:०५	तैति	२४।४०	दि.३:३०	गर	मकर	१८।४४	दि. १:०८ तक	३३।३४	५:३८	७:४	२।००।५४।५४	५७	शुभ	१६ जून	पंचक प्रारंभ दि. १:०८ तक समये। रवियोग रात्रि १:१३ से रात्रिअंत। वैघृति सू.उ.से दि.११:०५ वजे तक। ।पुनर्वसे वुधः दिन ४:५७ समये।
६	मं.	२२।५०	दि.२:४६	शत	४८।३०	रा. १:०२	विष्कु	९।४८	दि.९:३४	वणि	२२।५०	दि.२:४६	भद्रा	कुंभ	××	दिनरात	३३।३४	५:३८	७:४	२।०१।५२।१२	५७	मृत्यु	१७ जून	पंचक दिनरात। रवियोग सू.उ.से रात्रि १:०२ तक ।भद्रा दिन २:४६ से रात्रि २:१६ (भूमि)।
७	बु.	१९।५३	दि.१:३६	पू.भा	४६।५४	रा. १२:२४	प्रीति, आयु	५।८, ५९।५८	प्रा.७:४२, रा.५:३८	बव	१९।५३	दि.१:३६	बाल	कुंभ	३२।२१	सा. ६:३५ तक	३३।३५	५:३८	७:४	२।०२।४९।३०	५७	पद्म	१८ जून	कालाष्टमी व्रतं। पंचक दिनरात।
८	गु.	१५।४६	दि.११:५७	उ.भा	४४।६	रा. ११:१७	सौभ	५२।५१	रा.२:४७	कौल	१५।४६	दि.११:५७	तैति	मीन	××	दिनरात	३३।३५	५:३९	७:५	२।०३।४६।४६	५७	छत्र	१९ जून	पंचक दिनरात। मूल रात ११:१७ से रातअंत। सर्वार्थसिद्धी रात्रि ११:१७ से रातअंत।
९	शु.	१०।३१	दि.९:५१	रेव	४०।१२	रा. ९:४४	शोभ	४५।१७	रा.११:४५	गर	१०।३१	दि.९:५१	वणि	मीन	४०।१२	रा. ९:४४ तक	३३।३५	५:३९	७:५	२।०४।४४।०३	५७	श्रीवत्स	२० जून	पंचक समाप्त रा. ९ :४४ समये। मूल दिनरात। अमृतसिद्धियोग रात्रि ९:४४ पर्यन्त। सर्वार्थसिद्धी रात्रि ९:४४ से रातअंत। भद्रा रात्रि ८:३६ से रात्रिअंत (भूमि)।
१०,११	श.	४।१२, ५७।०१	प्रा.७:२०,रा ४:२८	अश्वि	३५।२१	रा. ७:४८	अति	३६।५७	रा.८:२६	भद्रा	४।१२	प्रा.७:२०	बव	मेष	××	दिनरात	३३।३५	५:३९	७:५	२।०५।४१।१९	५७	सौम्य	२१ जून	योगिनी एकादशी स्मार्त्त।मूल सू.उ.से रात ७:४८ तक। श्री सूर्य दक्षिणायने दिन ८:०७। भद्रा सू.उ.से प्रातः ७:२०(स्वर्ग)।
१२	र.	४९।०९	रा.१:१९	भर	२९।४९	सा. ५:३५	सुक	२८।६	दि.४:५४	कौल	२३।५	दि.२:५३	तैति	मेष	४३।२१	रा. १०:६० तक	३३।३५	५:३९	७:५	२।०६।३८।३५	५७	कालदंड़	२२ जून	योगिनी एकादशी व्रत वैष्णव। त्रिपुष्कर योग सायं ५।३५ से से रात्रि १:१९ तक। आर्द्रायां रवि प्रातः ६:१५ समये। मूषक वाहनं अल्प (A)
१३	चं.	४१।०७	रा.१०:०६	कृत्ति	२३।५४	दि. ३:१३	धृति	१८।५५	दि.१:१४	गर	१५।९	दि.११:४३	वणि	वृष	××	दिनरात	३३।३५	५:४०	७:५	२।०७।३५।५०	५७	स्थिर	२३ जून	सोमप्रदोष व्रतं। मासिक शिवरात्रि व्रतं। सर्वार्थसिद्धी दिन ३:१३ से रातअंत। भद्रा रात्रि १०:०६ से रात्रिअंत (स्वर्ग)।
१४	मं.	३३।१६	सा.६:५८	रोहि	१८।०	दि. १२:५२	शूल	९।४२	दि.९:३३	भद्रा	७।८	दि.८:३१	शकु	वृष	४५।०९	रा. ११:४३ तक	३३।३५	५:४०	७:६	२।०८।३३।०५	५७	मातंग	२४ जून	क्रांतिसाम्य रात्रि १:१८ से रात्रि ५:१२। भद्रा सू.उ.से दिन ८:३१(स्वर्ग)। क्रांतिसाम्य रात्रि १:१८ से रात्रि ५:१२। पुष्ये वुधः रात्रि ५:०१ समये।
३०	बु.	२५।५६	दि.४:०२	मृग	१२।२९	दि. १०:४०	गंड, वृद्धि	०।४२, ५९।५०	प्रा.५:५७, रा.५:३७	नाग	२५।५६	दि.४:०२	किंस्तु	मिथुन	××	दिनरात	३३।३४	५:४०	७:६	२।०९।३०।१९	५७	अमृत	२५ जून	अमावस्या। सर्वार्थसिद्धी दिन १०:४० पर्यन्त। (A) वृष्टि। पु. पु.योग अनावृष्टि। अग्निनाड़ी। कर्के बुधः रात्रि ९:२९ समये।

सूर्योदयकालीन दैनिक ग्रह स्पष्ट । ग्रह गति कलाओं में दी गई है। पक्षारंभिक अयनांश २४-१२-४७

तिथि		चन्द्र		मंगल		बुध		गुरू		शुक्र		शनि		राहू	चंद्र उदयास्त समय: उदय	अस्त
	वार	राशि अंश कला वि.	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	अस्त-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	वक्र गति ३ कला	दिन	रात
१	गु.	८।०४।४९।२८	७५०	४।२।४९।२५	३३	२।११।४८।५५	११४	२।०६।१६।५५	१४	०।११।३८।४९	६२	११।०६।५३।५०	३	१०।२८।४२।१४	८:०९	६:२५
२	शु.	८।१७।१९।०७	७६०	४।३।२२।३३	३३	२।१३।४२।५३	११२	२।०६।३०।३३	१४	०।१२।४०।१९	६२	११।०६।५६।४८	३	१०।२८।३९।०३	८:५५	७:१९
३	श.	८।२९।५९।१६	७७१	४।३।५५।४७	३३	२।१५।३४।३२	१०९	२।०६।४४।१२	१४	०।१३।४२।०५	६२	११।०६।५९।४१	३	१०।२८।३५।५२	९:३८	८:१५
४	र.	९।१२।५०।०१	७८२	४।४।२९।६	३३	२।१७।२३।५०	१०७	२।०६।५७।५२	१४	०।१४।४४।०८	६२	११।०७।०२।२८	३	१०।२८।३२।४२	१०:१७	९:१२
५	चं.	९।२५।५१।५७	७९४	४।५।२।३१	३४	२।१९।१०।४४	१०४	२।०७।११।३२	१४	०।१५।४६।२७	६३	११।०७।०५।१०	३	१०।२८।२९।३१	१०:५२	१०:०८
६	मं.	१०।०९।०६।२०	८०९	४।५।३६।१	३४	२।२०।५५।१३	१०२	२।०७।२५।१३	१४	०।१६।४९।००	६३	११।०७।०७।४६	३	१०।२८।२६।२०	११:२७	११:०५
७	बु.	१०।२२।३५।०५	८२५	४।६।९।३७	३४	२।२२।३७।१६	१००	२।०७।३८।५४	१४	०।१७।५१।४९	६३	११।०७।१०।१७	२	१०।२८।२३।०९	१२:०२	१२:०२
८	गु.	११।०६।२०।१६	८४३	४।६।४३।१८	३४	२।२४।१६।५३	९७	२।०७।५२।३५	१४	०।१८।५४।५२	६३	११।०७।१२।४२	२	१०।२८।१९।५८	१२:३८	१:०३
९	शु.	११।२०।२३।१७	८६१	४।७।१७।५	३४	२।२५।५४।२	९५	२।०८।०६।१७	१४	०।१९।५८।०८	६४	११।०७।१५।०२	२	१०।२८।१६।४७	१:१९	२:०७
१०,११	श.	०।०४।४३।५७	८७६	४।७।५०।५६	३४	२।२७।२८।४२	९२	२।०८।१९।५९	१४	०।२१।०१।३९	६४	११।०७।१७।१५	२	१०।२८।१३।३६	२:०५	३:१५
१२	र.	०।१९।१९।४६	८८६	४।८।२४।५३	३४	२।२९।०।५३	९०	२।०८।३३।४१	१४	०।२२।०५।२२	६४	११।०७।१९।२३	२	१०।२८।१०।२६	२:५७	४:२८
१३	चं.	१।०४।०५।४५	८८९	४।८।५८।५५	३४	३।०।३०।३४	८७	२।०८।४७।२३	१४	०।२३।०९।११	६४	११।०७।२१।२६	२	१०।२८।०७।१५	३:५८	५:४३
१४	मं.	१।१८।५४।४८	८८४	४।९।३३।२	३४	३।१।५७।४२	८५	२।०९।०१।०६	१४	०।२४।१३।२७	६४	११।०७।२३।२२	२	१०।२८।०४।०४	५:०५	६:५६
३०	बु.	२।०३।३८।४३	८७१	४।१०।७।१५	३४	३।३।२२।१८	८२	२।०९।१४।४८	१४	०।२५।१७।४८	६५	११।०७।२५।१३	२	१०।२८।००।५३	××	८:०४

लग्न प्रारंभ समय (भारतीय स्टेंडर्ड समय)

दिनांक	प्रातः पूर्व	प्रातः	दिन				सायं	रात्रि					शुभ बली लग्नें
	वृषे	मिथुने	कर्के	सिंहे	कन्यायां	तुलायां	वृश्चिके	धनुषे	मकरे	कुंभे	मीने	मेषे	इन लग्नों में गुरु, शुक्र या बुध केन्द्र त्रिकोण में होने से दोष समूह नाशक सुयोग।
१२ जून	३:५१	५:४९	८:०३	१०:१९	१२:३२	२:४३	४:५८	७:१४	९:२०	११:०७	१२:४०	२:१०	३,४,६,७,९,१०,११,
१३ जून	३:४७	५:४५	७:५९	१०:१५	१२:२८	२:३९	४:५४	७:११	९:१६	११:०३	१२:३६	२:०६	३,४,६,७,९,१०,११,
१४ जून	३:४३	५:४१	७:५५	१०:१२	१२:२४	२:३५	४:५०	७:०७	९:१२	१०:५९	१२:३२	२:०२	३,४,६,७,९,१०,११,१,
१५ जून	३:३९	५:३७	७:५१	१०:०८	१२:२०	२:३१	४:४६	७:०३	९:०८	१०:५५	१२:२८	१:५९	४,६,७,९,१०,११,१,
१६ जून	३:३५	५:३३	७:४७	१०:०४	१२:१६	२:२७	४:४२	६:५९	९:०४	१०:५१	१२:२४	१:५५	६,७,९,१०,११,१,
१७ जून	३:३१	५:२९	७:४३	९:६०	१२:१२	२:२३	४:३८	६:५५	९:००	१०:४७	१२:२०	१:५१	६,७,९,१०,११,१,
१८ जून	३:२७	५:२५	७:३९	९:५६	१२:०८	२:१९	४:३४	६:५१	८:५६	१०:४३	१२:१६	१:४७	६,७,९,१०,११,१,
१९ जून	३:२३	५:२१	७:३५	९:५२	१२:०४	२:१५	४:३०	६:४७	८:५२	१०:३९	१२:१२	१:४३	६,७,९,१०,११,१,
२० जून	३:१९	५:१८	७:३१	९:४८	१२:००	२:११	४:२७	६:४३	८:४८	१०:३५	१२:०८	१:३९	४,६,७,९,१०,११,१,
२१ जून	३:१५	५:१४	७:२७	९:४४	११:५६	२:०७	४:२३	६:३९	८:४४	१०:३१	१२:०४	१:३५	४,६,७,९,१०,११,१,
२२ जून	३:११	५:१०	७:२३	९:४०	११:५२	२:०४	४:१९	६:३५	८:४१	१०:२७	१२:००	१:३१	४,६,७,९,१०,११,१,
२३ जून	३:०७	५:०६	७:१९	९:३६	११:४८	१:६०	४:१५	६:३१	८:३७	१०:२३	११:५६	१:२७	४,६,७,८,९,१०,११,१,
२४ जून	३:०३	५:०२	७:१६	९:३२	११:४४	१:५६	४:११	६:२७	८:३३	१०:१९	११:५२	१:२३	६,७,९,१०,११,१,२,
२५ जून	२:५९	४:५८	७:१२	९:२८	११:४१	१:५२	४:०७	६:२३	८:२९	१०:१५	११:४८	१:१९	६,७,९,१०,११,१,

तिथि १
गुरुवार
इष्ट ०।०

३ बु.गु.
१ शु.
४
२ सू.
१२ श.
५ मं.के.
卐
११ रा.
६
८
१०
७
९ चं.

मिथुन संक्रान्ति फलम्- आषाढ़ कृष्ण ४ रविवासरे प्रातः ६:३९ समये मिथुनसंक्रान्ति प्रवेशः तस्य पुण्यकाल आज। वार नाम घोरा संज्ञक संक्रांति दलितवर्ग, निर्धनों, अनुसूचितजाति एवं जनजातीय वर्ग को शुभ है। तस्य काले श्रवनक्षत्र नाम महोदरी संज्ञक संक्रांति चोर, तस्करो एवं जमाखोरों का सुखद। मुहूर्त्त ३० अनाज मूल्य समता। बालव करण फल- व्याघ्र वाहनं, अश्व उपवाहनं, पीत वस्त्रं, गदा आयुधं, रूपा पात्रं, पायस (खीर) भक्षणं, कुमकुम लेपनं, भूत वर्ण, चमेली पुष्पं, कंकण भूषणं, पर्ण कंचुकी, वाल्य अवस्था, उपविष्टा स्थिति। स्थिर भाव सूचक। अतिवृष्टि से जन-धन हानि, सैनिकों की मृत्यु एवं अनाज नष्ट हांगे। आषाढ़कृष्ण ५ पुनर्वसुभे बुध - पुनर्वसौबालपीड़ाकार्पासेसूत्रमंदता। पुनर्वसु में बुध हो तो बालकों को पीड़ा हो, कपास सूत मंदा हो आषाढ़कृष्ण १४ पुष्ये बुध - जनेषुसर्वसंयोगः पुष्पेराज्ञांभयंजयः।। पुष्य में हो तो तब लोगों को संयोग हो। राजाओं में भय हो। तथा जय हो।

तिथि ८
गुरुवार
इष्ट ०।०

४
२
५ मं.के
३ सू.बु.गु.
१ शु.
६
卐
१२ चं.श.
७
९
११ रा.
८
१०

आषाढ़ शुक्लपक्ष। शुभ विक्रम संवत् २०८२ शकः १९४७। सिद्धार्थ संवत्सर। कलियुग संवत् ५१२६। वर्षा ऋतुः । श्री सूर्य दक्षिणायन-उत्तरगोले। जून-जुलाई ईसवी सन् २०२५। जून-जुलाई। वंगला सन् १४३२ । वीर निर्वाण संवत् २५५१।

१५	तिथि			नक्षत्र			योग			करण (प्रातः एवं सायंकाल में)				चन्द्रमा राशि समाप्ती काल			श्री सूर्य					आनंदादि योग	दिनांक	(कृपया ध्यान रखें कि इस वर्ष चंद्र राशि का समाप्ती काल दिया है)। गुरु अस्तपूर्वे:, उदय ७ चंद्रे। शुक्र उदयपूर्वे: | मूल निवास स्वर्गे
तिथि	वार	घटिपल	घंटामिनट	नक्षत्र	घटिपल	घंटामिनट	योग	घटिपल	घंटामिनट	प्रातः	घटिपल	घंटामिनट	सायं	राशि	घटिपल	घंटामिनट	दिनमान	सू.उ.	अस्त	उदयकालीन स्पष्ट	गति			पक्षारंभिक नक्षत्र-आर्द्रायां रविः, मघायां भौमः, पुष्ये वुधः, आर्द्रायां गुरौ, भरण्यां शुक्रः, उत्तरभाद्रपदे शनिः, पूर्वभाद्रपदे राहु, उत्तराफाल्गुण्यां केतु।
१	गु.	११।३१	दि.१:२९	आर्द्रा	७।४८	दि. ८:४७	ध्रुव	४५।७	रा.११:४३	बव	११।३१	दि.१:२९	बाल	मिथुन	५०।०६	रा. १:४३ तक	३३।३४	५:४०	७:६	२।१०।२७।३४	५७	काण	२६ जून	गुप्त नवरात्रि प्रारंभ। सर्वार्थसिद्धी दिन ८:४७ से रातअंत। कृत्तिकायां शुक्रः दिन १२:१३ समये।
२	शु.	१४।२३	दि.११:२६	पुन	४।१९	प्रा. ७:२४	व्या	३९।१	रा.९:१७	कौल	१४।२३	दि.११:२६	तैति	कर्क	--	दिनरात	३३।३४	५:४१	७:६	२।११।२४।४८	५७	लुम्बक	२७ जून	जगन्नाथ रथयात्रा पुष्य नक्षत्रे। सर्वार्थसिद्धी प्रातः ७:२४ पर्यन्त। शुक्र पुष्य योग प्रातः ७:२४ से रातअंत।
३	श.	१०।५३	दि.१०:०२	पुष्य	२।२८	प्रा. ६:४०	हर्ष	३४।१९	रा.७:२५	गर	१०।५३	दि.१०:०२	वणि	कर्क	--	दिनरात	३३।३३	५:४१	७:६	२।१२।२२।०१	५७	मित्र	२८ जून	मूल प्रातः ६:४० से रातअंत। रवियोग प्रातः ६:४० से रात्रिअंत। भद्रा रात्रि ९:३९ से रात्रिअंत (भूमि)।
४	र.	९।१७	दि.९:२४	श्ले	२।२८	प्रा. ६:४१	वज्र	३१।१०	सा.६:०९	भद्रा	९।१७	दि.९:२४	बव	कर्क	२।२८	प्रा. ६:४१ तक	३३।३२	५:४१	७:६	२।१३।१९।१५	५७	वज्र	२९ जून	विनायकी श्री गणेश ४ व्रतं। मूल दिनरात। रवियोग सू.उ.से प्रातः ६:४१ तक । भद्रा सू.उ.से दिन ९:२४(भूमि)। वृषे शुक्रः दिन २:०६ समये।
५	चं.	९।४३	दि.९:३५	मघा	४।२९	प्रा. ७:२९	सिद्धि	२९।३६	सा.५:३२	बाल	९।४३	दि.९:३५	कौल	सिंह	××	दिनरात	३३।३२	५:४२	७:६	२।१४।१६।२८	५७	ध्वांक्ष	३० जून	मूल सू.उ.से प्रातः ७:२९ तक। रवियोग प्रातः ७:२९ से रात्रिअंत। व्यतिपात् सा.५:३२ वजे तक। से रातअंत। पूर्वाफाल्गुण्यां भौमः रात्रि ७:५३ समये।
६	मं.	१२।०५	दि.१०:३२	पू.फा.	८।२४	दि. ९:०३	व्यति	२९।२८	सा.५:२९	तैति	१२।५	दि.१०:३२	गर	सिंह	२४।४३	दि. ३:३५ तक	३३।३१	५:४२	७:६	२।१५।१३।४१	५७	धूम्र	०१ जुला	स्कन्द षष्ठी। रवियोग सू.उ.से दिन ९:०३ तक । व्यतिपात् सू.उ.से सा.५:२९ वजे तक।।
७	बु.	१६।०६	दि.१२:०९	उ.फा.	१३।५५	दि. ११:१६	वरी	३०।३२	सा.५:५५	वणि	१६।६	दि.१२:०९	भद्रा	कन्या	××	दिनरात	३३।३०	५:४२	७:६	२।१६।१०।५५	५७	प्रवर्ध	०२ जुला	वरूण सप्तमी। सर्वार्थसिद्धी दिन ११:१६ से रातअंत। भद्रा दिन १२:०९ से रात्रि १:०८ (पाताल)।
८	गु.	२१।२०	दि.२:१५	हस्त	२०।३८	दि. १:५८	परि	३२।२८	सा.६:४२	बव	२१।२०	दि.२:१५	बाल	कन्या	५४।१४	रा. ३:२४ तक	३३।३०	५:४३	७:६	२।१७।०८।०८	५७	राक्षस	०३ जुला	मासिक दुर्गाष्टमी व्रत। महिषन्धी व्रत। रवियोग दिन १:५८ से रात्रिअंत। (#) रातअंत। आश्लेषायां वुधः प्रातः ५:५६ समये।
९	शु.	२७।१५	दि.४:३७	चित्रा	२७।५९	दि. ४:५४	शिव	३४।५१	रा.७:३९	कौल	२७।१५	दि.४:३७	तैति	तुला	××	दिनरात	३३।२९	५:४३	७:६	२।१८।०५।२१	५७	मुसल	०४ जुला	भड़ैया नवमी। एन्द्रीव्रत। रवियोग दिनरात। (&) रवियोग प्रातः ५:४९ से रात्रि १०:४४। भद्रा दिन ८:१२ से रात्रि ९:१७ (पाताल)।
१०	श.	३३।१६	रा.७:०२	स्वा	३५।२६	रा. ७:५४	सिद्ध	३७।१७	रा.८:३८	तैति	०।१८	प्रा.५:५०	गर	तुला	××	दिनरात	३३।२८	५:४३	७:६	२।१९।०२।३४	५७	सिद्धि	०५ जुला	आशा दशमी, मन्वादि तिथि। रवियोग सू.उ.से रात्रि ७:५४ तक , पुनः रात्रि ५:४९ से रात्रिअंत। सर्वार्थसिद्धी रात्रि ७:५४ पर्यन्त।
११	र.	३८।५४	रा.९:१७	विशा	४२।३१	रा. १०:४४	साध्य	३९।२३	रा.९:२९	वणि	६।१२	दि.८:१२	भद्रा	तुला	२५।४७	दि. ४:०३ तक	३३।२७	५:४४	७:६	२।१९।५९।४७	५७	उत्पात	०६ जुला	देव शयनी एकादशी व्रत सर्वे। चतुर्मास प्रारंभ। पुनर्वसे रवि प्रातः ५:४९ समये। अश्व वाहनं पर्वते वृष्टि। स्त्री. नपु.योग अल्पवृष्टि। सौम्यनाड़ी। (&)
१२	चं.	४३।४३	रा.११:१३	अनु	४८।४७	रा. १:१५	शुभ	४०।५१	रा.१०:०५	बव	११।२७	दि.१०:१९	बाल	वृश्चिक	××	दिनरात	३३।२६	५:४४	७:६	२।२०।५६।६०	५७	मानस	०७ जुला	वामन पूजन। गुरु उदय पूर्वे: प्रातः ५:०३ समये। मूल रात १:१५ से रातअंत। सर्वार्थसिद्धी रात्रि १:१५ पर्यन्त।क्रांतिसाम्य रात्रि ४:५४ से (#)
१३	मं.	४७।२५	रा.१२:४२	ज्ये	५३।५८	रा. ३:१९	शुक्ल	४१।२८	रा.१०:२०	कौल	१५।४२	दि.१२:०१	तैति	वृश्चिक	५३।५८	रा. ३:१९ तक	३३।२५	५:४४	७:६	२।२१।५४।१३	५७	मुद्गर	०८ जुला	मंगलप्रदोष व्रतं। मूल दिनरात। रवियोग रात्रि ३:१९ से रात्रिअंत। क्रांतिसाम्य प्रातः ४:५४ से दिन ९:१४। रोहिण्यां शुक्रः दिन ४:१८ समये।
१४	बु.	४९।५१	रा.१:४१	मूल	५७।५५	रा. ४:५५	ब्रह्म	४१।६	रा.१०:११	गर	१८।४५	दि.१:१५	वणि	धनु	××	दिनरात	३३।२३	५:४५	७:६	२।२२।५१।२६	५७	ध्वज	०९ जुला	मूल सू.उ.से रात ४:५५ तक। रवियोग सू.उ.से रात्रि ४:५५ तक । भद्रा रात्रि १:४१ से रात्रिअंत (पाताल)।
१५	गु.	५१।०२	रा.२:१०	पू.षा	६०।०	वृद्धि	ऐंद्र	३९।४५	रा.९:३९	भद्रा	२०।३३	दि.१:५८	बव	धनु	××	दिनरात	३३।२२	५:४५	७:६	२।२३।४८।३९	५७	धाता	१० जुला	गुरुपूर्णिमा, व्यास पूजन। मन्वादि तिथि, कोकिला व्रतारंभ। भद्रा सू.उ.से दिन १:५८(पाताल)। वैधृति रा.९:३९ वजे तक। से रातअंत।

सूर्योदयकालीन दैनिक ग्रह स्पष्ट । ग्रह गति कलाओं में दी गई है। पक्षारंभिक अयनांश २४-१२-४९

तिथि		चन्द्र		मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		राहु	चंद्र उदयास्त समय: उदय	अस्त
वार		राशि अंश कला वि.	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	अस्त-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	वक्र गति ३ कला	दिन	रात
१	गु.	२।१८।०९।२८	८५१	४।१०।४१।३२	३४	३।४।४४।१८	७९	२।०९।२८।३०	१४	०।२६।२२।२१	६५	११।०७।२६।५८	२	१०।२७।५७।४२	६:१९	८:३८
२	शु.	३।०२।२०।२५	८२७	४।११।१५।५४	३४	३।६।३।४०	७७	२।०९।४२।११	१४	०।२७।२७।०६	६५	११।०७।२८।३६	२	१०।२७।५४।३१	७:३०	९:३१
३	श.	३।१६।०७।१०	८०१	४।११।५०।२१	३५	३।७।२०।२२	७४	२।०९।५५।५३	१४	०।२८।३२।०१	६५	११।०७।३०।१०	१	१०।२७।५१।२०	८:३७	१०:१५
४	र.	३।२९।२८।००	७७६	४।१२।२४।५३	३५	३।८।३४।२१	७१	२।१०।०९।३४	१४	०।२९।३७।०८	६५	११।०७।३१।३७	१	१०।२७।४८।१०	९:३८	१०:५३
५	चं.	४।१२।२३।४३	७५३	४।१२।५९।३०	३५	३।९।४५।३३	६८	२।१०।२३।१५	१४	१।००।४२।२५	६५	११।०७।३२।५८	१	१०।२७।४४।५९	१०:३५	११:२६
६	मं.	४।२४।५७।०९	७३५	४।१३।३४।११	३५	३।१०।५३।५५	६५	२।१०।३६।५५	१४	१।०१।४७।५३	६६	११।०७।३४।१३	१	१०।२७।४१।४८	११:२८	११:५६
७	बु.	५।०७।१२।२८	७२२	४।१४।८।५८	३५	३।११।५९।२१	६२	२।१०।५०।३५	१४	१।०२।५३।३१	६६	११।०७।३५।२३	१	१०।२७।३८।३७	१२:१७	१२:२४
८	गु.	५।१९।१४।३४	७१४	४।१४।४३।४९	३५	३।१३।१।४७	५९	२।११।०४।१४	१४	१।०३।५९।१८	६६	११।०७।३६।२६	१	१०।२७।३५।२६	१:०६	१२:५२
९	शु.	६।०१।०८।३२	७११	४।१५।१८।४४	३५	३।१४।१।८	५६	२।११।१७।५३	१४	१।०५।०५।१६	६६	११।०७।३७।२३	१	१०।२७।३२।१५	१:५३	१:२०
१०	श.	६।१२।५९।१९	७१२	४।१५।५३।४५	३५	३।१४।५७।१७	५३	२।११।३१।३१	१४	१।०६।११।२३	६६	११।०७।३८।१५	१	१०।२७।२९।०४	२:४२	१:५१
११	र.	६।२४।५१।३१	७१८	४।१६।२८।४९	३५	३।१५।५०।९	४९	२।११।४५।०८	१४	१।०७।१७।३९	६६	११।०७।३९।००	१	१०।२७।२५।५३	३:३१	२:२६
१२	चं.	७।०६।४९।१४	७२७	४।१७।३।५९	३५	३।१६।३९।३६	४६	२।११।५८।४४	१४	१।०८।२४।०५	६७	११।०७।३९।४०	१	१०।२७।२२।४३	४:२२	३:०५
१३	मं.	७।१८।५५।५७	७३८	४।१७।३९।१३	३५	३।१७।२५।३२	४२	२।१२।१२।१९	१४	१।०९।३०।३९	६७	११।०७।४०।१३	०	१०।२७।१९।३२	५:१३	३:५०
१४	बु.	८।०१।१४।२०	७५२	४।१८।१४।३१	३५	३।१८।७।४८	३८	२।१२।२५।५३	१४	१।१०।३७।२२	६७	११।०७।४०।४०	०	१०।२७।१६।२१	६:०३	४:४१
१५	गु.	८।१३।४६।०५	७६६	४।१८।४९।५४	३५	३।१८।४६।१७	३५	२।१२।३९।२६	१४	१।११।४४।१४	६७	११।०७।४१।०१	०	१०।२७।१३।१०	६:५१	५:३५

लग्न प्रारंभ समय (भारतीय स्टेंडर्ड समय)

दिनांक	प्रातः पूर्व: मिथुने	प्रातः: कर्के	दिन: सिंहे	दिन: कन्यायां	दिन: तुलायां	दिन: वृश्चिके	सायं: धनुषे	रात्रि: मकरे	रात्रि: कुंभे	रात्रि: मीने	रात्रि: मेषे	रात्रि: वृषे	शुभ बली लग्नें (इन लग्नों में गुरु, शुक्र या बुध केन्द्र त्रिकोण में होने से दोष समूह नाशक सुयोग।)
२६ जून	४:५४	७:०८	९:२४	११:३७	१:४८	४:०३	६:१९	८:२५	१०:११	११:४४	१:१५	२:५५	४,६,७,९,१०,११,१,२
२७ जून	४:५०	७:०४	९:२०	११:३३	१:४४	३:५९	६:१५	८:२१	१०:०८	११:४१	१:११	२:५१	६,७,९,१०,११,१,
२८ जून	४:४६	६:६०	९:१६	११:२९	१:४०	३:५५	६:११	८:१७	१०:०४	११:३७	१:०७	२:४८	६,७,८,९,१०,११,१,
२९ जून	४:४२	६:५६	९:१२	११:२५	१:३६	३:५१	६:०७	८:१३	९:६०	११:३३	१:०३	२:४४	६,७,८,९,१०,११,१,
३० जून	४:३८	६:५२	९:०८	११:२१	१:३२	३:४७	६:०३	८:०९	९:५६	११:२९	१२:५९	२:४०	६,७,८,९,१०,११,१,२
०१ जुला	४:३४	६:४८	९:०५	११:१७	१:२८	३:४३	५:६०	८:०५	९:५२	११:२५	१२:५५	२:३६	४,६,७,८,९,१०,११,१,२
०२ जुला	४:३०	६:४४	९:०१	११:१३	१:२४	३:३९	५:५६	८:०१	९:४८	११:२१	१२:५१	२:३२	४,६,७,८,९,१०,११,१,२
०३ जुला	४:२६	६:४०	८:५७	११:०९	१:२०	३:३५	५:५२	७:५७	९:४४	११:१७	१२:४८	२:२८	६,७,९,१०,११,१,२
०४ जुला	४:२२	६:३६	८:५३	११:०५	१:१६	३:३१	५:४८	७:५३	९:४०	११:१३	१२:४४	२:२४	६,७,९,१०,११,१,२
०५ जुला	४:१८	६:३२	८:४९	११:०१	१:१२	३:२७	५:४४	७:४९	९:३६	११:०९	१२:४०	२:२०	६,७,८,९,१०,११,१,२
०६ जुला	४:१४	६:२८	८:४५	१०:५७	१:०८	३:२३	५:४०	७:४५	९:३२	११:०५	१२:३६	२:१६	६,७,९,१०,११,१,२,
०७ जुला	४:१०	६:२४	८:४१	१०:५३	१:०४	३:१९	५:३६	७:४१	९:२८	११:०१	१२:३२	२:१२	६,१०,११,१,२,
०८ जुला	४:०७	६:२०	८:३७	१०:४९	१:००	३:१६	५:३२	७:३७	९:२४	१०:५७	१२:२८	२:०८	६,७,९,१०,११,१,
०९ जुला	४:०३	६:१६	८:३३	१०:४५	१२:५६	३:१२	५:२८	७:३३	९:२०	१०:५३	१२:२४	२:०४	४,६,७,९,१०,११,१,२
१० जुला	३:५९	६:१२	८:२९	१०:४१	१२:५३	३:०८	५:२४	७:३०	९:१६	१०:४९	१२:२०	२:००	४,६,७,८,९,१०,११,१,२

तिथि १ गुरुवार इष्ट ०।०

४ बु. | २
५ मं.के. | ३ सू.चं.गु. | १ शु.
६ | 卐 | १२ श.
७ | ९ | ११ रा.
८ | १०

आषाढ़शुक्ल ५ पूर्वा फाल्गुन्यां भौमअल्प वृष्टि, तेल महंगाई। आषाढ़शुक्ल १२ आश्लेषायं बुध - आश्लेषायांमहावृष्टिस्तुषधान्यसमुद्भवः। आश्लेषा में हो महावृष्टि हो, तुष धान्य उत्पन्न हों।

तिथि ८ गुरुवार इष्ट ०।०

४ बु. | २ शु.
५ मं.के | ३ सू.गु. | १
६ चं. | 卐 | १२ श.
७ | ९ | ११ रा.
८ | १०

श्रावण कृष्णपक्ष। शुभ विक्रम संवत् २०८२ शकः १९४७। सिद्धार्थ संवत्सर। कलियुग संवत् ५१२६। वर्षा ऋतुः । श्री सूर्य दक्षिणायन-उत्तरगोले। जुलाई ईसवी सन् २०२५। जुलाई। वंगला सन् १४३२ ।वीर निर्वाण संवत् २५५१।

१४	तिथि			नक्षत्र			योग			करण (प्रातः एवं सायंकाल में)				चन्द्रमा राशि समाप्ती काल			श्री सूर्य					आनंदादि योग	दिनांक	(कृपया ध्यान रखें कि इस वर्ष चंद्र राशि का समाप्ती काल दिया है)। गुरु उदयपूर्वेः। शुक्र उदयपूर्वेः। मूल निवास भूमि
तिथि	वार	घटिपल	घंटामिनट	नक्षत्र	घटिपल	घंटामिनट	योग	घटिपल	घंटामिनट	प्रातः	घटिपल	घंटामिनट	सायं	राशि	घटिपल	घंटामिनट	दिनमान	सू.उ.	अस्त	उदयकालीन स्पष्ट	गति			पक्षारंभिक नक्षत्र-पुनर्वसे रविः, पूर्वाफाल्गुण्यां भौमः, आश्लेषायां वुधः, आर्द्रायां गुरौ, रोहिण्यां शुक्रः, उत्तरभाद्रपदे शनिः, पूर्वभाद्रपदे राहु, उत्तराफाल्गुण्यां केतु।
१	शु.	५१।०२	रा.२:१०	पू.षा	०।३८	प्रा. ६:०१	वैधृ	३७।२८	रा.८:४५	बाल	२१।७	दि.२:१२	कौल	धनु	१६।०२	दि. १२:१० तक	३३।२१	५:४६	७:६	२।२४।४५।५३	५७	प्रवर्ध	११ जुला	पार्थिव शिव पूजन। वैधृति सू.उ.से रा.८:४५ वजे तक।
२	श.	४९।६०	रा.१:४६	उ.षा	२।११	प्रा. ६:३९	विष्कु	३४।२०	रा.७:३०	तैति	२०।३५	दि.२:००	गर	मकर	--	दिनरात	३३।१९	५:४६	७:६	२।२५।४३।०७	५७	चर	१२ जुला	त्रिपुष्कर योग सूर्योदय से प्रातः ६:३९ तक। सर्वार्थसिद्धी प्रातः ६:३९ से रातअंत। वक्री शनि रात्रि ५:१६ समये
३	र.	४८।०५	रा.१:००	श्रव	२।४७	प्रा. ६:५३	प्रीति	३०।२८	सा.५:५८	वणि	१९।७	दि.१:२५	भद्रा	मकर	३२।४०	सा. ६:५० तक	३३।१८	५:४६	७:६	२।२६।४०।२१	५७	गद	१३ जुला	पंचक प्रारंभ सा. ६:५० तक समये। भद्रा दिन १:२५ से रात्रि १:०० (भूमि)।
४	चं.	४५।२४	रा.११:५६	धनि	२।३२	प्रा. ६:४७	आयु	२५।५८	दि.४:१०	बव	१६।४९	दि.१२:३०	बाल	कुंभ	--	दिनरात	३३।१६	५:४७	७:५	२।२७।३७।३५	५७	शुभ	१४ जुला	संकष्टी श्री गणेश ४ व्रतं। पंचक दिनरात। (&) १२:४९ समये। पूर्वाफाल्गुण्यां केतु १६:०२ समये।
५	मं.	४२।०२	रा.१०:३६	शत, पू.भा	१: ३३।५९: ५४	प्रा. ६:२४, रा.५:४५	सौभ	२०।५४	दि.२:०९	कौल	१३।४८	दि.११:१९	तैति	कुंभ	४५।१९	रा. ११:५५ तक	३३।१५	५:४७	७:५	२।२८।३४।४९	५७	मृत्यु	१५ जुला	मौना पंचमी। पंचक दिनरात। रवियोग रात्रि ५:२९ से रात्रिअंत।
६	बु.	३८।००	रा.८:६०	उ.भा	५७।३५	रा. ४:५०	शोभ	१५।१७	दि.११:५५	गर	१०।७	दि.९:५१	वणि	मीन	××	दिनरात	३३।१३	५:४८	७:५	२।२९।३२।०४	५७	लुंबक	१६ जुला	पंचक दिनरात। मूल रात ४:५० से रातअंत। रवियोग सू.उ.से रात्रि ४:५० तक । भद्रा रात्रि ८:६० से रात्रिअंत (भूमि)। कर्के रवि सायं ५:३० समये। पुण्यकाल आज।
७	गु.	३३।२०	रा.७:०८	रेव	५४।३९	रा. ३:४०	अति	९।१०	दि.९:२८	भद्रा	५।४८	दि.८:०७	बव	मीन	५४।३९	रा. ३:४० तक	३३।११	५:४८	७:५	३।००।२९।१९	५७	मित्र	१७ जुला	कालाष्टमी व्रतं। शीतला सप्तमी व्रत। पंचक समाप्त रा. ३ :४० समये। मूल दिनरात। सर्वार्थसिद्धी दिनरात। भद्रा सू.उ.से दिन ८:०७(भूमि)।
८	शु.	२८।०४	सा.५:०२	अश्वि	५१।६	रा. २:१५	सुक, धृति	२।३२, ५९।५४	प्रा.६:४९, रा.५:४६	बाल	०।५२	प्रा.६:०९	कौल	मेष	××	दिनरात	३३।१०	५:४९	७:४	३।०१।२६।३५	५७	वज्र	१८ जुला	मन्वादि तिथि। मूल सू.उ.से रात २:१५ तक। सर्वार्थसिद्धी रात्रि २:१५ पर्यन्त। बुध वक्री दिन १०:१५ समये
९	श.	२२।१६	दि.२:४३	भर	४७।३	रा. १२:३८	शूल	४७।४८	रा.१२:५६	गर	२२।१६	दि.२:४३	वणि	मेष	××	दिनरात	३३।०८	५:४९	७:४	३।०२।२३।५१	५७	ध्वांक्ष	१९ जुला	कुमारी पूजन। भद्रा रात्रि १:३० से रात्रिअंत (स्वर्ग)। पुष्ये रवि रात्रि ५:२१ समये। चातक वाहनं सुवृष्टि। स्त्री. पु.योग सुवृष्टि। नीरानाड़ी।
१०	र.	१६।०३	दि.१२:१५	कृत्ति	४२।४२	रा. १०:५४	गंड़	३९।५८	रा.९:४९	भद्रा	१६।३	दि.१२:१५	बव	मेष	१।०१	प्रा. ६:१४ तक	३३।०६	५:४९	७:४	३।०३।२१।०८	५७	धूम्र	२० जुला	भद्रा सू.उ.से दिन १२:१५(स्वर्ग)। क्रांतिसाम्य सायं ५:०४ से रात्रि ९:०२। बुध अस्त पश्चिमेः रात्रि ७:५७ समये। मृगशिरायां शुक्रः दिन (&)
११	चं.	९।३६	दि.९:४०	रोहि	३८।१४	रा. ९:०८	बृद्धि	३२।३	सा.६:३९	बाल	९।३६	दि.९:४०	कौल	वृष	××	दिनरात	३३।०४	५:५०	७:३	३।०४।१८।२५	५७	प्रवर्ध	२१ जुला	कामिका एकादशी व्रत सर्वे। सर्वार्थसिद्धी रात्रि ९:०८ पर्यन्त। अमृतसिद्धि रात्रि ९:०८ से रातअंत।
१२,१३	मं.	३।०९, ५६।५९	प्रा.७:०६,रा ४:३८	मृग	३३।५८	रा. ७:२६	ध्रुव	२४।१६	दि.३:३३	तैति	३।९	प्रा.७:०६	गर	वृष	६।०२	दि. ८:१५ तक	३३।०२	५:५०	७:३	३।०५।१५।४२	५७	राक्षस	२२ जुला	मंगलप्रदोष व्रतं। द्विपुष्कर योग सूर्योदय से प्रातः ७:०६ तक। भद्रा रात्रि ४:३९ से रातअंत।
१४	बु.	५१।३५	रा.२:२९	आर्द्रा	३०।१२	सा. ५:५६	व्या	१६।५०	दि.१२:३५	भद्रा	२४।१७	दि.३:३३	शकु	मिथुन	××	दिनरात	३३।००	५:५१	७:३	३।०६।१२।६०	५७	मुसल	२३ जुला	मासिक शिवरात्रि व्रतं। भद्रा सू.उ.से दिन ३:३३(स्वर्ग)। उत्तराफाल्गुण्यां भौमः दिन ८:१० समये।
३०	गु.	४७।०७	रा.१२:४२	पुन	२७।१७	दि. ४:४६	हर्ष	९।६०	दि.९:५१	चतु	१९।१६	दि.१:३३	नाग	मिथुन	१२।५२	दि. ११:०० तक	३२।५८	५:५१	७:२	३।०७।१०।१९	५७	सिद्धि	२४ जुला	हरियाली अमावस्या। मन्वादि तिथि। सर्वार्थसिद्धी दिन ४:४६ पर्यन्त। अमृतसिद्धि दिन ४:४६ से रातअंत। गुरुपुष्य योग दिन ४:४६ से रातअंत।

सूर्योदयकालीन दैनिक ग्रह स्पष्ट । ग्रह गति कलाओं में दी गई है। पक्षारंभिक अयनांश २४-१२-५२

तिथि		चन्द्र		मंगल		बुध		गुरू		शुक्र		शनि		राहू	चंद्र उदयास्त समय: उदय	अस्त
वार		राशि अंश कला वि.	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	वक्र गति ३ कला	दिन	रात
१	शु.	८।२६।३१।४८	७७९	४।१९।२५।२२	३६	३।१९।२०।५०	३०	२।१२।५२।५८	१४	१।१२।५१।१४	६७	११।०७।४१।१६	०	१०।२७।०९।५९	७:३५	६:३२
२	श.	९।०९।३१।०५	७९२	४।२०।०।५४	३६	३।१९।५१।१८	२६	२।१३।०६।२९	१३	१।१३।५८।२२	६७	११।०७।४१।२५	०	१०।२७।०६।४८	८:१५	७:०४
३	र.	९।२२।४२।५१	८०३	४।२०।३६।३०	३६	३।२०।१७।३४	२२	२।१३।१९।५९	१३	१।१५।०५।३९	६७	११।०७।४१।२८	०	१०।२७।०३।३७	८:५२	८:०१
४	चं.	१०।०६।०५।४७	८१३	४।२१।१२।११	३६	३।२०।३९।२९	१७	२।१३।३३।२७	१३	१।१६।१३।०३	६८	११।०७।४१।२५	०	१०।२७।००।२६	९:२७	८:५८
५	मं.	१०।१९।३८।४७	८२३	४।२१।४७।५५	३६	३।२०।५६।५५	१३	२।१३।४६।५३	१३	१।१७।२०।३५	६८	११।०७।४१।१६	०	१०।२६।५७।१६	१०:०१	९:५५
६	बु.	११।०३।२१।१९	८३२	४।२२।२३।४५	३६	३।२१।९।४५	८	२।१४।००।१९	१३	१।१८।२८।१४	६८	११।०७।४१।०१	०	१०।२६।५४।०५	१०:३७	१०:५५
७	गु.	११।१७।१३।२४	८४२	४।२२।५९।३८	३६	३।२१।१७।५१	३	२।१४।१३।४२	१३	१।१९।३६।०१	६८	११।०७।४०।४०	०	१०।२६।५०।५४	११:१६	११:५६
८	शु.	०।०१।१५।१०	८५१	४।२३।३५।३६	३६	३।२१।२१।१०	-२	२।१४।२७।०४	१३	१।२०।४३।५५	६८	११।०७।४०।१२	१	१०।२६।४७।४३	११:५९	१:०२
९	श.	०।१५।२६।१७	८५९	४।२४।११।३८	३६	३।२१।१९।३६	-६	२।१४।४०।२५	१३	१।२१।५१।५७	६८	११।०७।३९।३९	१	१०।२६।४४।३२	१२:४८	२:१२
१०	र.	०।२९।४५।१७	८६४	४।२४।४७।४४	३६	३।२१।१३।९	-११	२।१४।५३।४३	१३	१।२३।००।०५	६८	११।०७।३८।६०	१	१०।२६।४१।२१	१:४४	३:२४
११	चं.	१।१४।०९।११	८६४	४।२५।२३।५५	३६	३।२१।१।४९	-१६	२।१५।०७।००	१३	१।२४।०८।२१	६८	११।०७।३८।१४	१	१०।२६।३८।१०	२:४८	४:३७
१२,१३	मं.	१।२८।३३।३१	८५९	४।२६।०।१९	३६	३।२०।४५।४०	-२१	२।१५।२०।१५	१३	१।२५।१६।४३	६८	११।०७।३७।२३	१	१०।२६।३४।५९	३:५६	५:४७
१४	बु.	२।१२।५२।५०	८४९	४।२६।३६।२८	३६	३।२०।२४।५१	-२५	२।१५।३३।२८	१३	१।२६।२५।१३	६९	११।०७।३६।२६	१	१०।२६।३१।४९	५:०८	६:४९
३०	गु.	२।२७।०१।२२	८३३	४।२७।१२।५१	३६	३।१९।५९।३३	-३०	२।१५।४६।३८	१३	१।२७।३३।४८	६९	११।०७।३५।२३	१	१०।२६।२८।३८	××	७:४३

लग्न प्रारंभ समय (भारतीय स्टेंडर्ड समय)

दिनांक	प्रातः पूर्व	प्रातः	दिन				सायं	रात्रि					शुभ बली लग्नें
	मिथुने	कर्के	सिंहे	कन्यायां	तुलायां	वृश्चिके	धनुषे	मकरे	कुंभे	मीने	मेषे	वृषे	इन लग्नों में गुरु, शुक्र या बुध केन्द्र त्रिकोण में होने से दोष समूह नाशक सुयोग।
११ जुला	३:५५	६:०९	८:२५	१०:३७	१२:४९	३:०४	५:२०	७:२६	९:१२	१०:४५	१२:१६	१:५६	४,६,७,८,९,१०,११,१,२
१२ जुला	३:५१	६:०५	८:२१	१०:३३	१२:४५	२:६०	५:१६	७:२२	९:०८	१०:४१	१२:१२	१:५२	४,६,७,८,९,१०,११,१,२
१३ जुला	३:४७	६:०१	८:१७	१०:३०	१२:४१	२:५६	५:१२	७:१८	९:०४	१०:३७	१२:०८	१:४८	६,७,९,१०,११,१,२,
१४ जुला	३:४३	५:५७	८:१३	१०:२६	१२:३७	२:५२	५:०८	७:१४	९:००	१०:३३	१२:०४	१:४४	६,७,९,१०,११,१,२,
१५ जुला	३:३९	५:५३	८:०९	१०:२२	१२:३३	२:४८	५:०४	७:१०	८:५७	१०:३०	१२:००	१:४०	६,७,९,१०,११,१,२,
१६ जुला	३:३५	५:४९	८:०५	१०:१८	१२:२९	२:४४	५:००	७:०६	८:५३	१०:२६	११:५६	१:३७	६,७,९,१०,११,१,२,
१७ जुला	३:३१	५:४५	८:०१	१०:१४	१२:२५	२:४०	४:५६	७:०२	८:४९	१०:२२	११:५२	१:३३	६,७,८,९,११,१,२,३,
१८ जुला	३:२७	५:४१	७:५७	१०:१०	१२:२१	२:३६	४:५३	६:५८	८:४५	१०:१८	११:४८	१:२९	६,७,८,९,११,१,२,३,
१९ जुला	३:२३	५:३७	७:५४	१०:०६	१२:१७	२:३२	४:४९	६:५४	८:४१	१०:१४	११:४४	१:२५	६,७,८,९,११,१,२,३,
२० जुला	३:१९	५:३३	७:५०	१०:०२	१२:१३	२:२८	४:४५	६:५०	८:३७	१०:१०	११:४०	१:२१	६,७,८,९,११,१,३,
२१ जुला	३:१५	५:२९	७:४६	९:५८	१२:०९	२:२४	४:४१	६:४६	८:३३	१०:०६	११:३७	१:१७	६,७,९,१०,११,१,३,
२२ जुला	३:११	५:२५	७:४२	९:५४	१२:०५	२:२०	४:३७	६:४२	८:२९	१०:०२	११:३३	१:१३	६,७,९,१०,११,१,२,
२३ जुला	३:०७	५:२१	७:३८	९:५०	१२:०१	२:१६	४:३३	६:३८	८:२५	९:५८	११:२९	१:०९	६,७,९,१०,११,१,२,
२४ जुला	३:०३	५:१७	७:३४	९:४६	११:५७	२:१२	४:२९	६:३४	८:२१	९:५४	११:२५	१:०५	६,७,९,१०,११,१,२,३

तिथि १
शुक्रवार
इष्ट ०।०

४ बु. | २ शु.
५ मं.के. | ३ सू.गु. | १
६ | 卐 | १२ श.
७ | ९ चं. | ११ रा.
८ | १०

कर्क संक्रान्ति फलम्- श्रावण कृष्ण ६ बुधवासरे सायं ५:३० समये कर्कसंक्रान्ति प्रवेशः तस्य पुण्यकाल आज। वार नाम मंदाकिनी संज्ञक संक्रांति सैनिकवर्ग, राजनैतिक लोगों, अधिकारियों को शुभकारी है। तस्य काले उ.भा नक्षत्र नाम मन्दा संज्ञक संक्रांति बुद्धिजीवीयो को सुखद। ४५ अनाज मूल्य में गिरावट संकेतक। वणिज करण फल- महिषी वाहनं, ऊँट उपवाहनं, श्याम वस्त्रं, तोमर आयुधं, तीकर पात्रं, दधि भक्षणं, महावर लेपनं, मृग वर्णा, मन्दार पुष्पं, मणि भूषणं, पा श्वेत कंचुकी, प्रगल्भ अवस्था, उपविष्टा स्थिति। अन्नादि में स्थिर भाव सूचक। जनता को कष्ट देने वाली सरकार गिरेगी। श्रावणकृष्ण १४ उत्तराफाल्गुन्यां भौम अल्प वर्षा पशु नष्ट।

तिथि ८
शुक्रवार
इष्ट ०।०

५ मं.के | ३ गु.
६ | ४ सू.बु. | २ शु.
७ | 卐 | १ चं.
८ | १० | १२ श.
९ | ११ रा.

१६	तिथि			नक्षत्र			योग			करण (प्रातः एवं सायंकाल में)				चन्द्रमा राशि समाप्ती काल			श्री सूर्य					आनंदादि योग	दिनांक	(कृपया ध्यान रखें कि इस वर्ष चंद्र राशि का समाप्ती काल दिया है)। गुरु उदयपूर्वेः। शुक्र उदयपूर्वेः मूल निवास भूमि
तिथि	वार	घटिपल	घंटामिनट	नक्षत्र	घटिपल	घंटामिनट	योग	घटिपल	घंटामिनट	प्रातः	घटिपल	घंटामिनट	सायं	राशि	घटिपल	घंटामिनट	दिनमान	सू.उ.	अस्त	उदयकालीन स्पष्ट	गति			पक्षारंभिक नक्षत्र-पुष्ये रविः, उत्तराफाल्गुण्यां भौमः, आश्लेषायां वुधः, आर्द्रायां गुरौ, मृगशिरायां शुक्रः, उत्तरभाद्रपदे शनिः, पूर्वभाद्रपदे राहु, पूर्वाफाल्गुण्यां केतु।
१	शु.	४३।५७	रा.११:२६	पुष्य	२५।३२	दि. ४:०४	वज्र, सिद्धि	४१।१, ५१।५८	प्रा.७:२८, रा.५:५१	किस्त	१५।२२	दि.१२:००	बव	कर्क	--	दिनरात	३२।५६	५:५२	७:२	३।०८।०७।३८	५७	उत्पात	२५ जुला	मूल दिन ४:०४ से रातअंत। शुक्र पुष्य योग सू उ से दिन ४:०४ तक।
२	श.	४२।१९	रा.१०:४८	श्ले	२५।१४	दि. ३:५८	व्यति	५५।४१	रा.४:०८	बाल	१२।५४	दि.११:०२	कौल	कर्क	२५।१४	दि. ३:५८ तक	३२।५४	५:५२	७:२	३।०९।०४।५८	५७	मानस	२६ जुला	श्री महाकाल सवारी उज्जैन। श्री करपात्री जी जयंती। मूल दिनरात। व्यतिपात् सू.उ.से रा.४:०८ वजे तक। । मिथुने शुक्रः दिन ८:५३ समये।
३	र.	४२।२३	रा.१०:५०	मघा	२६।३५	दि. ४:३१	वरी	५३।३५	रा.३:१८	तैति	१२।५	दि.१०:४३	गर	सिंह	--	दिनरात	३२।५२	५:५२	७:१	३।१०।०२।१८	५७	मुद्गर	२७ जुला	मधुश्रवा तीज। मूल सू.उ.से दिन ४:३१ तक। रवियोग दिन ४:३१ से रात्रिअंत।
४	चं.	४४।१२	रा.११:३४	पू.फा.	२९।४०	सा. ५:४५	परि	५२।५०	रा.३:०१	वणि	१३।३	दि.११:०६	भद्रा	सिंह	४५।३९	रा. १२:०९ तक	३२।४९	५:५३	७:१	३।१०।५९।३९	५७	ध्वज	२८ जुला	विनायकी श्री गणेश ४ व्रतं। दूर्वा गणपति पूजनं। रवियोग सू.उ.से सायं ५:४५ तक । भद्रा दिन ११:०६ से रात्रि ११:३४ (भूमि)। कन्यायां भौमः रात्रि ७:३४ समये।
५	मं.	४७।३८	रा.१२:५७	उ.फा.	३४।२१	रा. ७:३८	शिव	५३।१८	रा.३:१३	बव	१५।४४	दि.१२:११	बाल	कन्या	××	दिनरात	३२।४७	५:५३	७:०	३।११।५७।०१	५७	धाता	२९ जुला	नागपंचमी। रवियोग रात्रि ७:३८ से रात्रिअंत। पुष्ये वुधः दिन ३:५१ समये।
६	बु.	५२।२२	रा.२:५१	हस्त	४०।२२	रा. १०:०३	सिद्ध	५४।४५	रा.३:४८	कौल	१९।५३	दि.१:५१	तैति	कन्या	××	दिनरात	३२।४५	५:५४	६:६०	३।१२।५४।२४	५७	आनंद	३० जुला	कल्कि अवतार। रवियोग सू.उ.से रात्रि १०:०३ तक । सर्वार्थसिद्धी रात्रि १०:०३ पर्यन्त।
७	गु.	५७।५७	रा.५:०५	चित्रा	४७।१७	रा. १२:४९	साध्य	५६।५०	रा.४:३८	गर	२५।७	दि.३:५७	वणि	कन्या	१३।४३	दि. ११:२४ तक	३२।४२	५:५४	६:५९	३।१३।५१।४७	५७	चर	३१ जुला	गो. तुलसीदास जयंती। इन्द्र सप्तमी। भद्रा रात्रि ५:०५ से रात्रिअंत (पाताल)। आर्द्रायां शुक्रः रात्रि ३:४२ समये।
८	शु.	६०।००	वृद्धि	स्वा	५४।३६	रा. ३:४५	शुभ	५९।९	रा.५:३४	भद्रा	२७।२	सा.६:१७	बव	तुला	××	दिनरात	३२।४०	५:५५	६:५९	३।१४।४९।११	५७	गद	०१ अग	रवियोग रात्रि ३:४५ से रात्रिअंत। भद्रा सू.उ.से सायं ६:१७(पाताल)।
८	श.	३।५२	प्रा.७:२८	विशा	६०।०	वृद्धि	शुक्ल	६०	वृद्धि	बव	३।५२	प्रा.७:२८	बाल	तुला	४४।५९	रा. ११:५५ तक	३२।३८	५:५५	६:५८	३।१५।४६।३६	५७	शुभ	०२ अग	मासिक दुर्गाष्टमी व्रत। आश्लेषायां रवि रात्रि ४:१४ समये। गदर्भ वाहनं अल्प वृष्टि। स्त्री. नपु.योग अल्पवृष्टि। जलनाड़ी। रवियोग सू.उ.से रात्रि (A)
९	र.	९।३०	दि.९:४४	विशा	१।४५	प्रा. ६:३८	शुक्ल	१।१९	प्रा.६:२७	कौल	९।३०	दि.९:४४	तैति	वृश्चिक	××	दिनरात	३२।३५	५:५५	६:५७	३।१६।४४।०२	५७	उत्पात	०३ अग	संस्कृत सप्ताह प्रारंभ। कुमारीपूजन। रवियोग प्रातः ६:३८ से रात्रिअंत। (A) ४:१४ तक क्रांतिसाम्य दिन १२:३१ से दिन ४:५६।
१०	चं.	१४।२२	दि.११:४१	अनु	८।१२	दि. ९:१३	ब्रह्म	२।५५	प्रा.७:०६	गर	१४।२२	दि.११:४१	वणि	वृश्चिक	××	दिनरात	३२।३३	५:५६	६:५७	३।१७।४१।२९	५७	मानस	०४ अग	मूल दिन ९:१३ से रातअंत। रवियोग दिनरात। सर्वार्थसिद्धी दिन ९:१३ पर्यन्त। भद्रा रात्रि १२:३० से रात्रिअंत (स्वर्ग)।
११	मं.	१८।०६	दि.१:११	ज्ये	१३।३४	दि. ११:२२	ऐंद्र	३।४२	प्रा.७:२५	भद्रा	१८।६	दि.१:११	बव	वृश्चिक	१३।३४	दि. ११:२२ तक	३२।३०	५:५६	६:५६	३।१८।३८।५७	५७	मुद्गर	०५ अग	पुत्रदा एकादशी व्रत सर्वे। मूल दिनरात। रवियोग सू.उ.से दिन ११:२२ तक । भद्रा सू.उ.से दिन १:११(स्वर्ग] ११:२२द्यह्य पाताल)। वैधृति (B)
१२	बु.	२०।२६	दि.२:०७	मूल	१७।३५	दि. १२:५९	वैधृ	३।२६	प्रा.७:१९	बाल	२०।२६	दि.२:०७	कौल	धनु	××	दिनरात	३२।२७	५:५७	६:५६	३।१९।३६।२६	५७	ध्वज	०६ अग	बुधप्रदोष व्रतं। दधि व्रत। मूल सू.उ.से दिन १२:५९ तक। वैधृति सू.उ.से प्रा.७:१९ वजे तक। । (B) प्रा.७:२५ वजे तक। से रातअंत।
१३	गु.	२१।१६	दि.२:२७	पू.षा	२०।१०	दि. २:०१	विष्कु, प्रीति	१।६०, ५९।५८	प्रा.६:४५, रा.५:५७	तैति	२१।१६	दि.२:२७	गर	धनु	३५।३४	रा. ८:११ तक	३२।२५	५:५७	६:५५	३।२०।३३।५५	५८	धाता	०७ अग	रवियोग दिन २:०१ से रात्रिअंत। (@) बुध उदय पूर्वेः प्रातः ५:१० समये।
१४	शु.	२०।३७	दि.२:१२	उ.षा	२१।१७	दि. २:२८	आयु	५५।३४	रा.४:११	वणि	२०।३७	दि.२:१२	भद्रा	मकर	××	दिनरात	३२।२२	५:५८	६:५४	३।२१।३१।२६	५८	आनंद	०८ अग	ऋग्वेदीय उपाकर्म। रवियोग सू.उ.से दिन २:२८ तक । सर्वार्थसिद्धी दिन २:२८ से रातअंत। भद्रा दिन २:१२ से रात्रि १:५४ (पाताल)। (@)
१५	श.	१८।३८	दि.१:२५	श्रव	२१।५	दि. २:२४	सौभ	५०।४५	रा.२:१६	बव	१८।३८	दि.१:२५	बाल	मकर	५०।३५	रा. २:१२ तक	३२।१९	५:५८	६:५४	३।२२।२८।५८	५८	स्थिर	०९ अग	रक्षाबंधन। पूर्णिमा। श्रावणी उपाकर्म। पंचक प्रारंभ रा. २:१२ तक समये। सर्वार्थसिद्धी दिन २:२४ पर्यन्त।

सूर्योदयकालीन दैनिक ग्रह स्पष्ट । ग्रह गति कलाओं में दी गई है। पक्षारंभिक अयनांश २४-१२-५५

तिथि		चन्द्र		मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		राहु	चंद्र उदयास्त समय: उदय	अस्त
	वार	राशि अंश कला वि.	गति	उदय-मार्गी	गति	अस्त-वक्री	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-वक्री	गति	वक्र गति ३ कला	दिन	रात
१	शु.	३।१०।५४।०४	८१३	४।२७।४९।१८	३७	३।१९।३०।२	-३३	२।१५।५९।४७	१३	१।२८।४२।३१	६९	११।०७।३४।१४	१	१०।२६।२५।२७	६:२०	८:०९
२	श.	३।२४।२७।०९	७९२	४।२८।२५।४९	३७	३।१८।५६।३९	-३७	२।१६।१२।५४	१३	१।२९।५१।२०	६९	११।०७।३२।५९	१	१०।२६।२२।१६	७:२५	८:५०
३	र.	४।०७।३८।४४	७७०	४।२९।२।२५	३७	३।१८।१९।५१	-४०	२।१६।२५।५८	१३	२।०१।००।१५	६९	११।०७।३१।३८	१	१०।२६।१९।०५	८:२४	९:२५
४	चं.	४।२०।२८।५३	७५१	४।२९।३९।४	३७	३।१७।४०।८	-४२	२।१६।३८।६०	१३	२।०२।०९।१६	६९	११।०७।३०।१२	२	१०।२६।१५।५४	९:१९	९:५६
५	मं.	५।०२।५९।३१	७३४	५।०।१५।४७	३७	३।१६।५८।७	-४४	२।१६।५१।५९	१३	२।०३।१८।२४	६९	११।०७।२८।४०	२	१०।२६।१२।४३	१०:११	१०:२५
६	बु.	५।१५।१३।५६	७२२	५।०।५२।३५	३७	३।१६।१४।२८	-४५	२।१७।०४।५६	१३	२।०४।२७।३८	६९	११।०७।२७।०२	२	१०।२६।०९।३३	१०:६०	१०:५३
७	गु.	५।२७।१६।२४	७१५	५।१।२९।२६	३७	३।१५।२९।५६	-४५	२।१७।१७।५०	१३	२।०५।३६।५८	६९	११।०७।२५।१८	२	१०।२६।०६।२२	११:४८	११:२१
८	शु.	६।०९।११।३५	७१३	५।२।६।२२	३७	३।१४।४५।१६	-४४	२।१७।३०।४२	१३	२।०६।४६।२३	७०	११।०७।२३।२९	२	१०।२६।०३।११	१२:३६	११:५१
८	श.	६।२१।०४।१४	७१५	५।२।४३।२१	३७	३।१४।१।१८	-४२	२।१७।४३।३१	१३	२।०७।५५।५५	७०	११।०७।२१।३४	२	१०।२६।००।००	१:२५	१२:२४
९	र.	७।०२।५८।५६	७२१	५।३।२०।२५	३७	३।१३।१८।५२	-४०	२।१७।५६।१७	१३	२।०९।०५।३३	७०	११।०७।१९।३३	२	१०।२५।५६।४९	२:१५	१:०१
१०	चं.	७।१५।००।०३	७३१	५।३।५७।३२	३७	३।१२।३८।४६	-३७	२।१८।०९।००	१३	२।१०।१५।१६	७०	११।०७।१७।२८	२	१०।२५।५३।३८	३:०६	१:४४
११	मं.	७।२७।११।३२	७४५	५।४।३४।४४	३७	३।१२।१।४६	-३३	२।१८।२१।४०	१३	२।११।२५।०५	७०	११।०७।१५।१६	२	१०।२५।५०।२८	३:५६	२:३१
१२	बु.	८।०९।३६।४४	७६१	५।५।११।५९	३७	३।११।२८।३८	-२९	२।१८।३४।१८	१३	२।१२।३४।५९	७०	११।०७।१२।५९	२	१०।२५।४७।१७	४:४४	३:२४
१३	गु.	८।२२।१८।१३	७७९	५।५।४९।१८	३७	३।११।०।१	-२३	२।१८।४६।५२	१३	२।१३।४४।५९	७०	११।०७।१०।३७	२	१०।२५।४४।०६	५:२९	४:२०
१४	शु.	९।०५।१७।२२	७९७	५।६।२६।४१	३७	३।१०।३६।३२	-१८	२।१८।५९।२३	१२	२।१४।५५।०५	७०	११।०७।०८।१०	३	१०।२५।४०।५५	६:११	५:१९
१५	श.	९।१८।३४।१५	८१३	५।७।४।९	३८	३।१०।१८।४३	-१२	२।१९।११।५१	१२	२।१६।०५।१६	७०	११।०७।०५।३८	३	१०।२५।३७।४४	६:४९	६:१७

लग्न प्रारंभ समय (भारतीय स्टेंडर्ड समय)

दिनांक	प्रातः पूर्व	प्रातः	दिन				सायं	रात्रि					शुभ बली लग्नें
	कर्के	सिंहे	कन्यायां	तुलायां	वृश्चिके	धनुषे	मकरे	कुंभे	मीने	मेषे	वृषे	मिथुने	इन लग्नों में गुरु, शुक्र या बुध केन्द्र त्रिकोण में होने से दोष समूह नाशक सुयोग।
२५ जुला	५:१३	७:३०	९:४२	११:५३	२:०८	४:२५	६:३०	८:१७	९:५०	११:२१	१:०१	२:५९	६,७,८,९,११,१,२,३,
२६ जुला	५:०९	७:२६	९:३८	११:४९	२:०५	४:२१	६:२६	८:१३	९:४६	११:१७	१२:५७	२:५६	६,७,८,९,११,१,२,३,
२७ जुला	५:०५	७:२२	९:३४	११:४६	२:०१	४:१७	६:२३	८:०९	९:४२	११:१३	१२:५३	२:५२	६,७,८,९,११,१,३,
२८ जुला	५:०१	७:१८	९:३०	११:४२	१:५७	४:१३	६:१९	८:०५	९:३८	११:०९	१२:४९	२:४८	६,७,८,९,११,१,३,
२९ जुला	४:५८	७:१४	९:२६	११:३८	१:५३	४:०९	६:१५	८:०१	९:३४	११:०५	१२:४५	२:४४	७,८,९,११,१,२,
३० जुला	४:५४	७:१०	९:२२	११:३४	१:४९	४:०५	६:११	७:५७	९:३०	११:०१	१२:४१	२:४०	७,९,१०,११,१,३,
३१ जुला	४:५०	७:०६	९:१९	११:३०	१:४५	४:०१	६:०७	७:५३	९:२६	१०:५७	१२:३७	२:३६	७,९,१०,११,१,३,
०१ अग	४:४६	७:०२	९:१५	११:२६	१:४१	३:५७	६:०३	७:४९	९:२३	१०:५३	१२:३३	२:३२	७,९,१०,११,१,३,
०२ अग	४:४२	६:५८	९:११	११:२२	१:३७	३:५३	५:५९	७:४६	९:१९	१०:४९	१२:३०	२:२८	७,८,९,१०,११,१,३
०३ अग	४:३८	६:५४	९:०७	११:१८	१:३३	३:४९	५:५५	७:४२	९:१५	१०:४५	१२:२६	२:२४	७,९,११,१,३,
०४ अग	४:३४	६:५०	९:०३	११:१४	१:२९	३:४५	५:५१	७:३८	९:११	१०:४१	१२:२२	२:२०	७,९,११,१,३,
०५ अग	४:३०	६:४६	८:५९	११:१०	१:२५	३:४२	५:४७	७:३४	९:०७	१०:३७	१२:१८	२:१६	७,९,११,१,३,
०६ अग	४:२६	६:४३	८:५५	११:०६	१:२१	३:३८	५:४३	७:३०	९:०३	१०:३३	१२:१४	२:१२	७,९,११,१,३,
०७ अग	४:२२	६:३९	८:५१	११:०२	१:१७	३:३४	५:३९	७:२६	८:५९	१०:३०	१२:१०	२:०८	७,८,९,१०,११,१,३,
०८ अग	४:१८	६:३५	८:४७	१०:५८	१:१३	३:३०	५:३५	७:२२	८:५५	१०:२६	१२:०६	२:०४	७,८,९,१०,११,१,३,
०९ अग	४:१४	६:३१	८:४३	१०:५४	१:०९	३:२६	५:३१	७:१८	८:५१	१०:२२	१२:०२	२:००	७,९,११,१,३,

तिथि १
शुक्रवार
इष्ट ०।०

५ मं.के. | ३ गु. | ६ | ४ सू.चं.बु. | २ शु. | ७ | 卐 | १ | ८ | १० | १२ श. | ९ | ११ रा.

श्रावणशुक्ल ५ पुष्ये बुध - जनेषुसर्वसंयोगः पुष्पेराज्ञांभयंजयः।। पुष्य में हो तो तब लोगों को संयोग हो। राजाओं में भय हो। तथा जय हो।।

तिथि ८
शुक्रवार
इष्ट ०।०

५ के | ३ गु.शु. | ६ मं. | ४ सू.बु. | २ | ७ चं. | 卐 | १ | ८ | १० | १२ श. | ९ | ११ रा.

भाद्रपद कृष्णपक्ष। शुभ विक्रम संवत् २०८२ शक: १९४७। सिद्धार्थ संवत्सर। कलियुग संवत् ५१२६। वर्षा ऋतुः । श्री सूर्य दक्षिणायन-उत्तरगोले। अगस्त ईसवी सन् २०२५। अगस्त। वंगला सन् १४३२ । वीर निर्वाण संवत् २५५१।

१४	तिथि			नक्षत्र			योग			करण (प्रातः एवं सायंकाल में)				चन्द्रमा राशि समाप्ती काल			श्री सूर्य					आनंदादि योग	दिनांक	(कृपया ध्यान रखें कि इस वर्ष चंद्र राशि का समाप्ती काल दिया है)। गुरु उदयपूर्वे:। शुक्र उदयपूर्वे: — मूल निवास स्वर्गे
तिथि	वार	घटिपल	घंटामिनट	नक्षत्र	घटिपल	घंटामिनट	योग	घटिपल	घंटामिनट	प्रातः	घटिपल	घंटामिनट	सायं	राशि	घटिपल	घंटामिनट	दिनमान	सू.उ.	अस्त	उदयकालीन स्पष्ट	गति			पक्षारंभिक नक्षत्र-आश्लेषायां रविः, उत्तराफाल्गुण्यां भौमः, पुष्ये वुधः, आर्द्रायां गुरौ, आर्द्रायां शुक्रः, उत्तरभाद्रपदे शनिः, पूर्वभाद्रपदे राहु, पूर्वाफाल्गुण्यां केतु।
१	र.	१५।३०	दि.१२:१०	धनि	१९।४५	दि. १:५२	शोभ	४५।८	रा.१२:०२	कौल	१५।३०	दि.१२:१०	तैति	कुंभ	--	दिनरात	३२।१७	५:५८	६:५३	३।२३।२६।३१	५८	मातंग	१० अग	पंचक दिनरात।
२	चं.	११।२७	दि.१०:३३	शत	१७।३१	दि. १२:५९	अति	३८।५३	रा.९:३२	गर	११।२७	दि.१०:३३	वणि	कुंभ	--	दिनरात	३२।१४	५:५९	६:५२	३।२४।२४।०५	५८	अमृत	११ अग	विंध्याचल जयंती। पंचक दिनरात। भद्रा रात्रि ९:३७ से रात्रिअंत (भूमि)। बुध मार्गी दिन १२:५४ समये
३	मं.	६।४१	दि.८:४०	पू.भा	१४।३७	दि. ११:५०	सुक	३२।१०	सा.६:५१	भद्रा	६।४१	दि.८:४०	बव	कुंभ	०।२७	प्रा. ६:१० तक	३२।११	५:५९	६:५२	३।२५।२१।४०	५८	काण	१२ अग	संकष्टी श्री गणेश ४ व्रतं। कज्जली तृतीया। पंचक दिनरात। सर्वार्थसिद्धी दिन ११:५० से रातअंत। भद्रा सू.उ.से दिन ८:४०(भूमि)। पुनर्वसे (A)
४,५	बु.	१।२७, ५५।५४	प्रा.६:३४,रा ४:२२	उ.भा	११।१७	दि. १०:३०	धृति	२५।८	दि.४:०३	बाल	१।२७	प्रा.६:३४	कौल	मीन	--	दिनरात	३२।०८	५:६०	६:५१	३।२६।१९।१६	५८	लुंबक	१३ अग	मंशादेवी पूजन, वहुलाव्रत। पंचक दिनरात। मूल दिन १०:३० से रातअंत। हस्ते भौमः रात्रि १०:०७ समये।
६	गु.	५०।१३	रा.२:०५	रेव	७।३९	दि. ९:०४	शूल	१७।५५	दि.१:१०	गर	२३।४	दि.३:१३	वणि	मीन	७।३९	दि. ९:०४ तक	३२।०५	५:६०	६:५०	३।२७।१६।५३	५८	मित्र	१४ अग	चंद्रषष्ठी व्रतं। हल षष्ठी व्रत। पंचक समाप्त दि. ९ :४ समये। मूल दिनरात। रवियोग दिन ९:०४ से रात्रिअंत। सर्वार्थसिद्धी दिनरात। क्रांतिसाम्य (B)
७	शु.	४४।३१	रा.११:४९	अश्वि	३।५५	प्रा. ७:३४	गंड़	१०।३७	दि.१०:१५	भद्रा	१७।२२	दि.१२:५७	बव	मेष	××	दिनरात	३२।०३	६:०	६:४९	३।२८।१४।३२	५८	वज्र	१५ अग	श्री कृष्ण जन्माष्टमी। कालाष्टमी व्रतं। स्वतंत्रता दिवस। मूल सू.उ.से प्रातः ७:३४ तक। रवियोग सू.उ.से प्रातः ७:३४ तक । सर्वार्थसिद्धी (C)
८	श.	३८।५६	रा.९:३५	भर, कृत्ति	०: ११।५६: ३५	प्रा. ६:०५, रा.४:३१	वृद्धि, ध्रुव	३।२०, ५१।५५	प्रा.७:२१, रा.५:५१	बाल	११।४२	दि.१०:४२	कौल	मेष	१४।१७	दि. ११:४४ तक	३१।६०	६:१	६:४९	३।२९।१२।१२	५८	ध्वांक्ष	१६ अग	श्री कृष्ण जन्माष्टमी वैष्णव। सिंहे मघायां च रवि रात्रि १:५४ समये। मण्डूक वाहनं सुवृष्टि। स्त्री. पु.योग सुवृष्टि। अमृतनाड़ी। ज्वालामुखीयो (D)
९	र.	३३।३४	रा.७:२७	रोहि	५३।१५	रा. ३:१९	व्या	४९।१२	रा.१:४२	तैति	६।१२	दि.८:३०	गर	वृष	××	दिनरात	३१।५७	६:१	६:४८	४।००।०९।५३	५८	धाता	१७ अग	गोगा नवमी। ज्वालामुखी योग सू.उ. से रात्रि ७:२७। (B) रात्रि ५:२७ से रातअंत। भद्रा रात्रि २:०५ से रात्रिअंत (भूमि)
१०	चं.	२८।३३	सा.५:२७	मृग	५०।१९	रा. २:०९	हर्ष	४२।३४	रा.११:०३	वणि	०।५७	प्रा.६:२४	भद्रा	वृष	२१।४६	दि. २:४४ तक	३१।५४	६:१	६:४७	४।०१।०७।३५	५८	आनंद	१८ अग	अमृतसिद्धि रात्रि २:०९ पर्यन्त। भद्रा प्रातः ६:२४ से सायं ५:२७ (स्वर्ग)। (A) गुरु रात्रि ३:४८ समये। पुनर्वसे शुक्रः दिन २:०२ समये।
११	मं.	२३।५९	दि.३:३८	आर्द्रा	४७।५४	रा. १:१२	वज्र	३६।२१	रा.८:३४	बाल	२३।५९	दि.३:३८	कौल	मिथुन	××	दिनरात	३१।५१	६:२	६:४६	४।०२।०५।१९	५८	चर	१९ अग	अजा एकादशी व्रत सर्वे। (C) प्रातः ७:३४ पर्यन्त। क्रांतिसाम्य प्रातः ५:२८ से दिन ९:२८। भद्रा सू.उ.से दिन १२:५७(स्वर्ग)। क्रांतिसाम्य प्रातः ५:२८ से दिन ९:२८।
१२	बु.	२०।०४	दि.२:०४	पुन	४६।१२	रा. १२:३१	सिद्धि	३०।४०	सा.६:१८	तैति	२०।४	दि.२:०४	गर	मिथुन	३१।३५	सा. ६:४० तक	३१।४८	६:२	६:४५	४।०३।०३।०४	५८	गद	२० अग	बुधप्रदोष व्रतं। गोवत्स द्वादशी। बुध पुष्य योग रात्रि १२:३१ से रातअंत। व्यतिपात् सा.६:१८ वजे तक। से रातअंत। कर्के शुक्रः रात्रि १:१६ समये।
१३	गु.	१६।५८	दि.१२:५०	पुष्य	४५।२४	रा. १२:१२	व्यति	२५।४१	दि.४:१९	वणि	१६।५८	दि.१२:५०	भद्रा	कर्क	××	दिनरात	३१।४५	६:३	६:४५	४।०४।००।५०	५८	शुभ	२१ अग	मासिक शिवरात्रि व्रतं। गुरुपुष्य योग सू उ से रात्रि १२:१२ तक। युगादि तिथि। मूल रात १२:१२ से रातअंत। अमृतसिद्धि रात्रि १२:१२ पर्यन्त। (E)
१४	शु.	१४।५३	दि.१२:००	श्ले	४५।४२	रा. १२:२०	वरी	२१।३१	दि.२:३९	शकु	१४।५३	दि.१२:००	चतु	कर्क	४५।४२	रा. १२:२० तक	३१।४२	६:३	६:४४	४।०४।५८।३८	५८	मृत्यु	२२ अग	अघोर चतुर्दशी। मूल दिनरात। (E) भद्रा दिन १२:५० से रात्रि १२:२१ (भूमि)। व्यतिपात् सू.उ.से दि.४:१९ वजे तक। आश्लेषायां वुधः रात्रि ४:२२ समये।
३०	श.	१४।०१	दि.११:४०	मघा	४७।१६	रा. १२:५८	परि	१८।२०	दि.१:२३	नाग	१४।१	दि.११:४०	किस्त	सिंह	××	दिनरात	३१।३९	६:३	६:४३	४।०५।५६।२७	५८	पद्म	२३ अग	शनिचरी अमावस्या। कुशग्रहणी अमावस्या। मूल सू.उ.से रात १२:५८ तक। पुष्ये शुक्रः रात्रि ८:३४ समये। (D) प्रातः ६:०५ से रात्रि ९:३५ तक।

सूर्योदयकालीन दैनिक ग्रह स्पष्ट। ग्रह गति कलाओं में दी गई है। पक्षारंभिक अयनांश २४-१२-५७

तिथि		चन्द्र		मंगल		बुध		गुरू		शुक्र		शनि		राहू	चंद्र उदयास्त समय: उदय	अस्त
	वार	राशि अंश कला वि.	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-वक्री	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-वक्री	गति	वक्र गति ३ कला	दिन	रात
१	र.	१०।०२।०७।३९	८२८	५।७।४१।४०	३८	३।१०।७।०	-५	२।१९।२४।१५	१२	२।१७।१५।३२	७०	११।०७।०३।००	३	१०।२५।३४।३३	७:२५	६:४८
२	चं.	१०।१५।५५।०९	८३९	५।८।१९।१५	३८	३।१०।१।४५	१	२।१९।३६।३६	१२	२।१८।२५।५४	७०	११।०७।००।१७	३	१०।२५।३१।२३	८:००	७:४६
३	मं.	१०।२९।५३।४२	८४६	५।८।५६।५४	३८	३।१०।३।१५	८	२।१९।४८।५३	१२	२।१९।३६।२०	७१	११।०६।५७।३०	३	१०।२५।२८।१२	८:३७	८:४६
४,५	बु.	११।१४।००।०३	८५१	५।९।३४।३७	३८	३।१०।११।४२	१६	२।२०।०१।०७	१२	२।२०।४६।५२	७१	११।०६।५४।३७	३	१०।२५।२५।०१	९:१४	९:४८
६	गु.	११।२८।११।०९	८५३	५।१०।१२।२३	३८	३।१०।२७।१६	२३	२।२०।१३।१७	१२	२।२१।५७।३०	७१	११।०६।५१।४०	३	१०।२५।२१।५०	९:५६	१०:५३
७	शु.	०।१२।२४।२१	८५३	५।१०।५०।१४	३८	३।१०।४९।६०	३०	२।२०।२५।२३	१२	२।२३।०८।१२	७१	११।०६।४८।३८	३	१०।२५।१८।३९	१०:४३	१२:०२
८	श.	०।२६।३७।२५	८५१	५।११।२८।८	३८	३।११।१९।५५	३७	२।२०।३७।२६	१२	२।२४।१८।५९	७१	११।०६।४५।३१	३	१०।२५।१५।२८	११:३७	१:१३
९	र.	१।१०।४८।२१	८४७	५।१२।६।७	३८	३।११।५६।५९	४४	२।२०।४९।२५	१२	२।२५।२९।५२	७१	११।०६।४२।२०	३	१०।२५।१२।१८	१२:३७	२:२५
१०	चं.	१।२४।५५।१०	८४१	५।१२।४४।९	३८	३।१२।४१।७	५१	२।२१।०१।११	१२	२।२६।४०।४९	७१	११।०६।३९।०४	३	१०।२५।०९।०७	१:४४	३:३५
११	मं.	२।०८।५५।४४	८३२	५।१३।२२।१५	३८	३।१३।३२।११	५८	२।२१।१३।१०	१२	२।२७।५१।५१	७१	११।०६।३५।४४	३	१०।२५।०५।५६	२:५३	४:३९
१२	बु.	२।२२।४७।४४	८२१	५।१४।०।२५	३८	३।१४।२९।६०	६४	२।२१।२४।५६	१२	२।२९।०२।५८	७१	११।०६।३२।१९	३	१०।२५।०२।४५	४:०२	५:३५
१३	गु.	३।०६।२८।४५	८०८	५।१४।३८।३९	३८	३।१५।३४।२०	७१	२।२१।३६।३८	१२	३।००।१४।१०	७१	११।०६।२८।५१	४	१०।२४।५९।३४	५:०८	६:२३
१४	शु.	३।१९।५६।२६	७९२	५।१५।१६।५६	३८	३।१६।४४।५७	७७	२।२१।४८।१६	१२	३।०१।२५।२७	७१	११।०६।२५।१८	४	१०।२४।५६।२३	६:१०	७:०४
३०	श.	४।०३।०८।४८	७७६	५।१५।५५।१८	३८	३।१८।१।३१	८२	२।२१।५९।४९	११	३।०२।३६।४८	७१	११।०६।२१।४१	४	१०।२४।५३।१३	××	७:४१

लग्न प्रारंभ समय (भारतीय स्टेंडर्ड समय)

दिनांक	प्रातः पूर्व	प्रातः	दिन				सायं	रात्रि					शुभ बली लग्नें
	कर्के	सिंहे	कन्यायां	तुलायां	वृश्चिके	धनुषे	मकरे	कुंभे	मीने	मेषे	वृषे	मिथुने	इन लग्नों में गुरु, शुक्र या बुध केन्द्र त्रिकोण में होने से दोष समूह नाशक सुयोग।
१० अग	४:१०	६:२७	८:३९	१०:५०	१:०५	३:२२	५:२७	७:१४	८:४७	१०:१८	११:५८	१:५६	७,९,११,१,३,
११ अग	४:०६	६:२३	८:३५	१०:४६	१:०१	३:१८	५:२३	७:१०	८:४३	१०:१४	११:५४	१:५२	७,९,१०,११,१,३,
१२ अग	४:०२	६:१९	८:३१	१०:४२	१२:५८	३:१४	५:१९	७:०६	८:३९	१०:१०	११:५०	१:४८	७,९,१०,११,१,३,
१३ अग	३:५८	६:१५	८:२७	१०:३८	१२:५४	३:१०	५:१५	७:०२	८:३५	१०:०६	११:४६	१:४५	७,८,९,११,१,३,
१४ अग	३:५४	६:११	८:२३	१०:३५	१२:५०	३:०६	५:१२	६:५८	८:३१	१०:०२	११:४२	१:४१	७,८,९,११,१,३,
१५ अग	३:५०	६:०७	८:१९	१०:३१	१२:४६	३:०२	५:०८	६:५४	८:२७	९:५८	११:३८	१:३७	७,८,९,११,१,३,
१६ अग	३:४७	६:०३	८:१५	१०:२७	१२:४२	२:५८	५:०४	६:५०	८:२३	९:५४	११:३४	१:३३	७,८,९,११,१,३,
१७ अग	३:४३	५:५९	८:११	१०:२३	१२:३८	२:५४	४:६०	६:४६	८:१९	९:५०	११:३०	१:२९	७,८,९,१०,११,१,३,४,
१८ अग	३:३९	५:५५	८:०८	१०:१९	१२:३४	२:५०	४:५६	६:४२	८:१५	९:४६	११:२६	१:२५	७,८,९,१०,११,१,३,
१९ अग	३:३५	५:५१	८:०४	१०:१५	१२:३०	२:४६	४:५२	६:३९	८:१२	९:४२	११:२२	१:२१	७,८,९,१०,११,१,
२० अग	३:३१	५:४७	७:६०	१०:११	१२:२६	२:४२	४:४८	६:३५	८:०८	९:३८	११:१९	१:१७	७,८,९,१०,११,१,३,
२१ अग	३:२७	५:४३	७:५६	१०:०७	१२:२२	२:३८	४:४४	६:३१	८:०४	९:३४	११:१५	१:१३	७,८,९,१०,११,१,३,
२२ अग	३:२३	५:३९	७:५२	१०:०३	१२:१८	२:३४	४:४०	६:२७	७:६०	९:३०	११:११	१:०९	७,८,९,११,१,३,
२३ अग	३:१९	५:३६	७:४८	९:५९	१२:१४	२:३१	४:३६	६:२३	७:५६	९:२६	११:०७	१:०५	७,८,९,११,१,२,३,

तिथि १
रविवार
इष्ट ०।०

६ मं.	५ के. / ४ सू.बु.	३ गु.शु. / २
७	卐	१
८	९ / १०	११ चं.रा. / १२ श.

सिंह संक्रान्ति फलम्- भाद्रपद कृष्ण ८ शनिवासरे रात्रि १:५४ समये सिंहसंक्रान्ति प्रवेशः तस्य पुण्यकाल परा दिवसे। वार नाम राक्षसी संज्ञक संक्रांति दुष्ट वर्ग को सुखकारी है। तस्य काले कृत्तिनक्षत्र नाम मिश्रा संज्ञक संक्रांति पशूनां सुखदाः। मुहूर्त्त ३० अनाज मूल्य समता। तैतिल करण फल- गदर्भ वाहनं, मेष उपवाहनं, पांडुर वस्त्रं, दण्ड़ आयुधं, कांस्य पात्रं, पकवान्न भक्षणं, मृतिका लेपनं, पक्षी वर्ण, केतकी पुष्पं, मूंगा भूषणं, भुर्जपत्र कंचुकी, युवा अवस्था, सुप्त स्थिति। अन्नादि में मंदी भाव सूचक। अल्प वर्षा से अनाजों की पैदावार कम होगी। भाद्रपदकृष्ण ४ हस्ते भौम अल्प वर्षा घी गुड़ महंगाई। भाद्रपदकृष्ण १३ आश्लेषायं बुध - आश्लेषायांमहावृष्टिस्तुषधान्यसमुद्भवः। आश्लेषा में हो महावृष्टि हो, तुष धान्य उत्पन्न हों।

तिथि ९
रविवार
इष्ट ०।०

७	६ मं. / ५ सू.के.	४ बु. / ३ गु.शु.
८	卐	२ चं.
९	१० / ११ रा.	१२ श. / १

१५	तिथि			नक्षत्र			योग			करण (प्रात: एवं सायंकाल में)				चन्द्रमा राशि समाप्ती काल			श्री सूर्य					आनंदादि योग	दिनांक	(कृपया ध्यान रखें कि इस वर्ष चंद्र राशि का समाप्ती काल दिया है)। गुरु उदयपूर्वे:। शुक्र उदयपूर्वे: मूल निवास स्वर्गे
तिथि	वार	घटिपल	घंटामिनट	नक्षत्र	घटिपल	घंटामिनट	योग	घटिपल	घंटामिनट	प्रात:	घटिपल	घंटामिनट	सायं	राशि	घटिपल	घंटामिनट	दिनमान	सू.उ.	अस्त	उदयकालीन स्पष्ट	गति			पक्षारंभिक नक्षत्र-मघायां रवि:, हस्ते भौम:, आश्लेषायां वुध:, पुनर्वसे गुरौ, पुष्ये शुक्र:, उत्तरभाद्रपदे शनि:, पूर्वभाद्रपदे राहु, पूर्वाफाल्गुण्यां केतु।
१	र.	१४।३१	दि.११:५२	पू.फा.	५०।१३	रा. २:०९	शिव	१६।१४	दि.१२:३३	बव	१४।३१	दि.११:५२	बाल	सिंह	--	दिनरात	३१।३६	६:४	६:४२	४।०६।५४।१७	५८	छत्र	२४ अग	महत्तमाख्यव्रत। सर्वार्थसिद्धी रात्रि २:०९ से रातअंत।
२	चं.	१६।२८	दि.१२:३९	उ.फा.	५४।३३	रा. ३:५३	सिद्ध	१५।१६	दि.१२:१०	कौल	१६।२८	दि.१२:३९	तैति	सिंह	६।०९	दि. ८:३१ तक	३१।३३	६:४	६:४१	४।०७।५२।०९	५८	श्रीवत्स	२५ अग	रवियोग रात्रि ३:५३ से रात्रिअंत। ($) १०:५४ तक । भद्रा रात्रि १:४१ से रात्रिअंत (पाताल)। पूर्वाफाल्गुण्यां वुध: दिन ४:४० समये।
३	मं.	११।५१	दि.२:०१	हस्त	६०।०	वृद्धि	साध्य	१५।२५	दि.१२:१४	गर	११।५१	दि.२:०१	वणि	कन्या	--	दिनरात	३१।३०	६:४	६:४०	४।०८।५०।०३	५८	सौम्य	२६ अग	हरितालिका व्रत। मन्वादिति। वराह अवतार। सामवेदीय उपाकर्म। रवियोग सू.उ.से रात्रि ६:०९ तक । भद्रा रात्रि २:५२ से रात्रिअंत (पाताल)।
४	बु.	२४।२८	दि.३:५२	हस्त	०।११	प्रा. ६:०९	शुभ	१६।३१	दि.१२:४१	भद्रा	२४।२८	दि.३:५२	बव	कन्या	३३।३०	रा. ७:२९ तक	३१।२७	६:५	६:३९	४।०९।४७।५८	५८	आनंद	२७ अग	विनायकी श्री गणेश ४ व्रतं। श्री गणेश प्राकट्य चतुर्थी, चंद्र दर्शन निषेध। शिवाचतुर्थी। सर्वार्थसिद्धी, रवियोग सू.उ.से प्रात: ६:०९ तक। (A)
५	गु.	२९।५९	सा.६:०५	चित्रा	६।५३	दि. ८:५०	शुक्ल	१८।२१	दि.१:२५	बाल	२९।५९	सा.६:०५	कौल	तुला	××	दिनरात	३१।२३	६:५	६:३८	४।१०।४५।५४	५८	चर	२८ अग	ऋषि पंचमी व्रतं। रवियोग दिन ८:५० से रात्रिअंत। (A) क्रांतिसाम्य रात्रि ७:३२ से रात्रि ११:५८। भद्रा सू.उ.से दिन ३:५२(पाताल)।
६	शु.	३५।५६	रा.८:२८	स्वा	१४।१९	दि. ११:४५	ब्रह्म	२०।३४	दि.२:१९	कौल	२।५५	प्रा.७:१५	तैति	तुला	××	दिनरात	३१।२०	६:५	६:३७	४।११।४३।५२	५८	गद	२९ अग	सूर्य षष्ठी। श्री बलराम जयंती। रवियोग सू.उ.से दिन ११:४५ तक ।
७	श.	४१।५०	रा.१०:५०	विशा	२१।२९	दि. २:४१	ऐंद्र	२२।५०	दि.३:१४	गर	८।५६	दि.९:४०	वणि	तुला	४।४१	प्रा. ७:५८ तक	३१।१७	६:६	६:३७	४।१२।४१।५२	५८	शुभ	३० अग	संतान सप्तमी, विस्वान सप्तमी। त्रिपुष्कर योग सूर्योदय से दिन २:४१ तक। पूर्वाफाल्गुण्यां रवि रात्रि ९:५२ समये। महिष वाहनं सुवृष्टि। स्त्री-नपु. (B)
८	र.	४७।०९	रा.१२:५८	अनु	२८।२४	सा. ५:२८	वैधृ	२४।४५	दि.४:००	भद्रा	१४।३५	दि.११:५६	बव	वृश्चिक	××	दिनरात	३१।१४	६:६	६:३६	४।१३।३९।५३	५८	मृत्यु	३१ अग	राधा अष्टमी, महालक्ष्मी व्रतारंभ। मासिक दुर्गाष्टमी व्रत। मूल सायं. ५:२८ से रातअंत। भद्रा सू.उ.से दिन ११:५६(स्वर्ग)। वैघृति सू.उ.से दि.४:०० वजे तक।
९	चं.	५१।२६	रा.२:४१	ज्ये	३४।२५	रा. ७:५२	विष्कु	२५।५८	दि.४:३०	बाल	१९।२४	दि.१:५२	कौल	वृश्चिक	३४।२५	रा. ७:५२ तक	३१।११	६:६	६:३५	४।१४।३७।५६	५८	पद्म	०१ सित	नंदा नवमी। मूल दिनरात। रवियोग रात्रि ७:५२ से रात्रिअंत।
१०	मं.	५४।१९	रा.३:५०	मूल	३९।१०	रा. ९:४७	प्रीति	२६।१३	दि.४:३६	तैति	२२।५८	दि.३:१८	गर	धनु	××	दिनरात	३१।०८	६:७	६:३४	४।१५।३६।००	५८	छत्र	०२ सित	दशावतार व्रत। तेजा दशमी, रामदेव मेला। मूल सू.उ.से रात ९:४७ तक। रवियोग सू.उ.सेरात्रिअंत। बुध अस्त पूर्वे: प्रात: ५:१७ समये।
११	बु.	५५।३१	रा.४:१९	पू.षा	४२।२२	रा. ११:०४	आयु	२५।१४	दि.४:१३	वणि	२४।५९	दि.४:०७	भद्रा	धनु	५८।०२	रा. ५:२० तक	३१।०४	६:७	६:३३	४।१६।३४।०६	५८	श्रीवत्स	०३ सित	डोल ग्यारस। पद्मा एकादशी व्रत सर्वे। रवियोग सू.उ.से रात्रि ११:०४ तक । भद्रा दिन ४:०७ से रात्रि ४:१९ (पाताल)। चित्रायां भौम: सायं (C)
१२	गु.	५४।५७	रा.४:०६	उ.षा	४३।५१	रा. ११:४०	सौभ	२२।५५	दि.३:१७	बव	२५।१८	दि.४:१५	बाल	मकर	××	दिनरात	३१।०१	६:७	६:३२	४।१७।३२।१४	५८	सौम्य	०४ सित	वामन अवतार। (B) योग अल्पवृष्टि। चण्ड़नाड़ी। भद्रा रात्रि १०:५० से रात्रिअंत (पाताल)। वैघृति दि.३:१४ वजे तक। से रातअंत। मघायां श्र सिंहे बुध दिन ४:४० समये
१३	शु.	५२।४१	रा.३:१२	श्रव	४३।४०	रा. ११:३६	शोभ	१९।१५	दि.१:५०	कौल	२३।५४	दि.३:४१	तैति	मकर	××	दिनरात	३०।५८	६:८	६:३१	४।१८।३०।२४	५८	धूम्र	०५ सित	शुक्रप्रदोष व्रतं। रवियोग रात्रि ११:३६ से रात्रिअंत। सर्वार्थसिद्धी रात्रि ११:३६ पर्यन्त। (C) ५:३१ समये। आश्लेषायां शुक्र: रात्रि ११:४९ समये।
१४	श.	४८।५२	रा.१:४१	धनि	४१।५५	रा. १०:५४	अति	१४।१७	दि.११:५१	गर	२०।५२	दि.२:२९	वणि	मकर	१३।००	दि. ११:२० तक	३०।५५	६:८	६:३०	४।१९।२८।३५	५८	प्रवर्ध	०६ सित	अनंत चतुर्दशी। गणेश विसर्जन, पाली- कदलीव्रत। पंचक प्रारंभ दि. ११:२० तक समये। अगस्त्य उदय प्रात: ७:४४। रवियोग सू.उ.से रात्रि ($)
१५	र.	४३।४५	रा.११:३८	शत	३८।५२	रा. ९:४१	सुक	८।९	दि.९:२४	भद्रा	१६।२७	दि.१२:४३	बव	कुंभ	××	दिनरात	३०।५१	६:८	६:२९	४।२०।२६।४८	५८	राक्षस	०७ सित	पूर्णिमा। खग्रास चन्द्रग्रहण। पंचक दिनरात। भद्रा सू.उ.से दिन १२:४३ (भूमि)।

सूर्योदयकालीन दैनिक ग्रह स्पष्ट । ग्रह गति कलाओं में दी गई है। पक्षारंभिक अयनांश २४-१२-५९

तिथि		चन्द्र		मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		राहु	चंद्र उदयास्त समय: उदय	अस्त
वार		राशि अंश कला वि.	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-वक्री	गति	वक्र गति ३ कला	दिन	रात
१	र.	४।१६।०४।४०	७५९	५।१६।३३।४३	३८	३।१९।२३।४२	८७	२।२२।११।१७	११	३।०३।४८।१५	७२	११।०६।१८।००	४	१०।२४।५०।०२	७:१०	७:५६
२	चं.	४।२८।४३।५३	७४४	५।१७।१२।१२	३९	३।२०।५१।८	९२	२।२२।२२।४१	११	३।०४।५९।४५	७२	११।०६।१४।१६	४	१०।२४।४६।५१	८:०३	८:२६
३	मं.	५।११।०७।३१	७३०	५।१७।५०।४५	३९	३।२२।२३।२३	९७	२।२२।३४।०१	११	३।०६।११।२१	७२	११।०६।१०।२८	४	१०।२४।४३।४०	८:५३	८:५४
४	बु.	५।२३।१७।५०	७२०	५।१८।२९।२२	३९	३।२४।०।२	१०१	२।२२।४५।१५	११	३।०७।२३।०१	७२	११।०६।०६।३६	४	१०।२४।४०।२९	९:४२	९:२३
५	गु.	६।०५।१८।०४	७१४	५।१९।८।२	३९	३।२५।४०।३७	१०४	२।२२।५६।२५	११	३।०८।३४।४५	७२	११।०६।०२।४१	४	१०।२४।३७।१९	१०:३०	९:५२
६	शु.	६।१७।१२।०५	७१२	५।१९।४६।४७	३९	३।२७।२४।४०	१०७	२।२३।०७।३०	११	३।०९।४६।३४	७२	११।०५।५८।४२	४	१०।२४।३४।०८	११:११	१०:२३
७	श.	६।२९।०४।१०	७१४	५।२०।२५।३५	३९	३।२९।११।४४	११०	२।२३।१८।२९	११	३।१०।५८।२७	७२	११।०५।५४।४१	४	१०।२४।३०।५७	१२:०९	१०:५९
८	र.	७।१०।५८।३९	७२१	५।२१।४।२७	३९	४।१।१।११	११२	२।२३।२९।२३	११	३।१२।१०।२५	७२	११।०५।५०।३६	४	१०।२४।२७।४६	१२:५९	११:३८
९	चं.	७।२२।५९।५५	७३२	५।२१।४३।२३	३९	४।२।५२।६०	११३	२।२३।४०।१२	११	३।१३।२२।२७	७२	११।०५।४६।२८	४	१०।२४।२४।३५	१:४९	१२:२३
१०	मं.	८।०५।१२।१२	७४७	५।२२।२२।२२	३९	४।४।४६।२०	११५	२।२३।५०।५६	११	३।१४।३४।३३	७२	११।०५।४२।१८	४	१०।२४।२१।२५	२:३७	१:१३
११	बु.	८।१७।३९।२७	७६६	५।२३।१।२६	३९	४।६।४०।५७	११६	२।२४।०१।३४	११	३।१५।४६।४४	७२	११।०५।३८।०४	४	१०।२४।१८।१४	३:२३	२:०७
१२	गु.	९।००।२५।०६	७८७	५।२३।४०।३३	३९	४।८।३६।२८	११६	२।२४।१२।०७	१०	३।१६।५८।५९	७२	११।०५।३३।४९	४	१०।२४।१५।०३	४:०५	३:०४
१३	शु.	९।१३।३१।३६	८०९	५।२४।१९।४४	३९	४।१०।३२।३३	११६	२।२४।२२।३४	१०	३।१८।११।१८	७२	११।०५।२९।३०	४	१०।२४।११।५२	४:४५	४:०२
१४	श.	९।२७।००।०६	८३०	५।२४।५८।५९	३९	४।१२।२८।५५	११६	२।२४।३२।५५	१०	३।१९।२३।४१	७२	११।०५।२५।१०	४	१०।२४।०८।४१	५:२१	५:०२
१५	र.	१०।१०।५०।०४	८४९	५।२५।३८।१८	३९	४।१४।२५।१९	११६	२।२४।४३।१०	१०	३।२०।३६।०८	७३	११।०५।२०।४७	४	१०।२४।०५।३१	५:५७	६:०२

लग्न प्रारंभ समय (भारतीय स्टेंडर्ड समय)

दिनांक	प्रात: पूर्व	प्रात:	दिन				सायं	रात्रि					शुभ बली लग्नें
	सिंहे	कन्यायां	तुलायां	वृश्चिके	धनुषे	मकरे	कुंभे	मीने	मेषे	वृषे	मिथुने	कर्के	इन लग्नों में गुरु, शुक्र या बुध केन्द्र त्रिकोण में होने से दोष समूह नाशक सुयोग।
२४ अग	५:३२	७:४४	९:५५	१२:१०	२:२७	४:३२	६:१९	७:५२	९:२२	११:०३	१:०१	३:१५	७,८,९,११,१,३,
२५ अग	५:२८	७:४०	९:५१	१२:०६	२:२३	४:२८	६:१५	७:४८	९:१९	१०:५९	१२:५७	३:११	७,८,९,११,१,३,४,
२६ अग	५:२४	७:३६	९:४७	१२:०२	२:१९	४:२४	६:११	७:४४	९:१५	१०:५५	१२:५३	३:०७	७,८,९,११,१,३,४,
२७ अग	५:२०	७:३२	९:४३	११:५८	२:१५	४:२०	६:०७	७:४०	९:११	१०:५१	१२:४९	३:०३	७,८,९,१०,११,१,३,
२८ अग	५:१६	७:२८	९:३९	११:५४	२:११	४:१६	६:०३	७:३६	९:०७	१०:४७	१२:४५	२:५९	७,८,९,१०,११,१,३,
२९ अग	५:१२	७:२४	९:३५	११:५०	२:०७	४:१२	५:५९	७:३२	९:०३	१०:४३	१२:४१	२:५५	७,८,९,१०,११,१,३,
३० अग	५:०८	७:२०	९:३१	११:४७	२:०३	४:०८	५:५५	७:२८	८:५९	१०:३९	१२:३८	२:५१	७,८,९,१,२,३,४,
३१ अग	५:०४	७:१६	९:२७	११:४३	१:५९	४:०४	५:५१	७:२४	८:५५	१०:३५	१२:३४	२:४७	७,८,९,१,२,३,४,
०१ सित	५:००	७:१२	९:२४	११:३९	१:५५	४:०१	५:४७	७:२०	८:५१	१०:३१	१२:३०	२:४३	७,८,९,१,२,३,४,
०२ सित	४:५६	७:०८	९:२०	११:३५	१:५१	३:५७	५:४३	७:१६	८:४७	१०:२७	१२:२६	२:४०	७,८,९,११,१,२,३,४,
०३ सित	४:५२	७:०४	९:१६	११:३१	१:४७	३:५३	५:३९	७:१२	८:४३	१०:२३	१२:२२	२:३६	७,८,९,१०,१,२,३,
०४ सित	४:४८	७:०१	९:१२	११:२७	१:४३	३:४९	५:३५	७:०८	८:३९	१०:१९	१२:१८	२:३२	७,८,९,१०,१,२,३,४,
०५ सित	४:४४	६:५७	९:०८	११:२३	१:३९	३:४५	५:३१	७:०४	८:३५	१०:१५	१२:१४	२:२८	७,८,९,११,१,२,३,४,
०६ सित	४:४०	६:५३	९:०४	११:१९	१:३५	३:४१	५:२८	७:०१	८:३१	१०:११	१२:१०	२:२४	७,८,९,११,१,२,३,
०७ सित	४:३६	६:४९	८:६०	११:१५	१:३१	३:३७	५:२४	६:५७	८:२७	१०:०८	१२:०६	२:२०	७,८,९,१०,१,२,३,४,

तिथि १
रविवार
इष्ट ०।०

६ मं. ४ बु.शु.
७ ५ सू.चं.के. ३ गु.
८ 卐 २
९ ११ रा. १
१० १२ श.

भाद्रपदशुक्ल ११ चित्रायां भाम तीव्र रोग, गेहूं चावल महंगे। भाद्रपदशुक्ल ७ मघायां बुध - मघाबुलेल्पवृष्टिश्चधान्यनाशः प्रजाभयम्।। मघा में बुध हो तो वर्ष कम हो, धान्य नाश और प्रजा में भय हो।। भाद्रपदशुक्ल १४ पूर्वाफाल्गुन्यां बुध - पूफायांनृपसंग्रामः क्षेत्रबाधान्नमंदता। पूर्वाफाल्गुनी में हो तो राजाओं में युद्ध हो, क्षेत्र बाधा हो, अन्न मँदा हो। १७६।।

तिथि ८
रविवार
इष्ट ०।०

६ मं. ४ शु.
७ ५ सू.बु.के ३ गु.
८ चं. 卐 २
९ ११ रा. १
१० १२ श.

आश्विन कृष्णपक्ष। शुभ विक्रम संवत् २०८२ शकः १९४७। सिद्धार्थ संवत्सर। कलियुग संवत् ५१२६। शरद ऋतुः। श्री सूर्य दक्षिणायन-उत्तरगोले। सितम्बर ईसवी सन् २०२५। सितम्बर। वंगला सन् १४३२ । वीर निर्वाण संवत् २५५१।

१४	तिथि			नक्षत्र			योग			करण (प्रातः एवं सायंकाल में)				चन्द्रमा राशि समाप्ती काल			श्री सूर्य					आनंदादि योग	दिनांक	(कृपया ध्यान रखें कि इस वर्ष चंद्र राशि का समाप्ती काल दिया है)। गुरु उदयपूर्वे:। शुक्र उदयपूर्वे: ॥ मूल निवास स्वर्गे
तिथि	वार	घटिपल	घंटामिनट	नक्षत्र	घटिपल	घंटामिनट	योग	घटिपल	घंटामिनट	प्रातः	घटिपल	घंटामिनट	सायं	राशि	घटिपल	घंटामिनट	दिनमान	सू.उ.	अस्त	उदयकालीन स्पष्ट	गति			पक्षारंभिक नक्षत्र-पूर्वाफाल्गुण्यां रविः, चित्रायां भौमः, पूर्वाफाल्गुण्यां वुधः, पुनर्वसे गुरौ, आश्लेषायां शुक्रः, उत्तरभाद्रपदे शनिः, पूर्वभाद्रपदे राहु, पूर्वाफाल्गुण्यां केतु।
१	चं.	३७।४०	रा.९:१३	पू.भा	३४।४७	रा. ८:०३	धृति, शूल	१।२, ५१।५१	प्रा.६:३३, रा.६:०५	बाल	१०।५२	दि.१०:२९	कौल	कुंभ	२०।५३	दि. २:३० तक	३०।४८	६:९	६:२८	४।२१।२५।०२	५८	मुसल	०८ सित	प्रतिपदाश्राद्ध। महालय प्रारंभ। पंचक दिनरात। (A) भद्रा रात्रि ५:०६ से रातअंत। क्रांतिसाम्य रात्रि ७:१७ से रात्रि ११:१६।
२	मं.	३०।५४	सा.६:३१	उ.भा	२९।५९	सा. ६:०९	गंड	४४।३८	रा.१२:००	तैति	४।२५	प्रा.७:५५	गर	मीन	--	दिनरात	३०।४५	६:९	६:२७	४।२२।२३।१९	५८	सिद्धि	०९ सित	द्वितीयाश्राद्ध। पंचक दिनरात। मूल सायं. ६:०९ से रातअंत। सर्वार्थसिद्धी सायं ६:०९ पर्यन्त। क्रांतिसाम्य रात्रि ७:१७ से रात्रि ११:१६। (A)
३	बु.	२३।४६	दि.३:४०	रेव	२४।४९	दि. ४:०५	बृद्धि	३५।५९	रा.८:३३	भद्रा	२३।४६	दि.३:४०	बव	मीन	२४।४९	दि. ४:०५ तक	३०।४२	६:९	६:२६	४।२३।२१।३७	५८	उत्पात	१० सित	संकष्टी श्री गणेश ४ व्रतं। तृतीयाश्राद्ध। चतुर्थीश्राद्ध। पंचक समाप्त दि. ४ :५ समये। मूल दिनरात। भद्रा सू.उ.से दिन ३:४० (भूमि)।
४	गु.	१६।३३	दि.१२:४७	अश्वि	१९।३४	दि. १:५९	ध्रुव	२७।२१	सा.५:०६	बाल	१६।३३	दि.१२:४७	कौल	मेष	--	दिनरात	३०।३८	६:१०	६:२५	४।२४।१९।५७	५८	मानस	११ सित	पंचमीश्राद्ध। मूल सू.उ.से दिन १:५९ तक। सर्वार्थसिद्धी दिन १:५९ पर्यन्त। ज्वालामुखीयो दिन १:५९ से रातअंत।
५	शु.	९।३२	दि.९:५९	भर	१४।३२	दि. ११:५९	व्या	१८।५५	दि.१:४४	तैति	९।३२	दि.९:५९	गर	मेष	२८।२२	सा. ५:३१ तक	३०।३५	६:१०	६:२४	४।२५।१८।१९	५८	मुद्गर	१२ सित	षष्ठीश्राद्ध। रवियोग दिन ११:५९ से रात्रिअंत। ज्वालामुखी योग सू.उ. से दिन ९:५९।
६,७	श.	२।५८, ५७।०६	प्रा.७:२१,रा ५:०१	कृत्ति	१०।०	दि. १०:१०	हर्ष	१०।५४	दि.१०:३२	वणि	२।५८	प्रा.७:२१	भद्रा	वृष	××	दिनरात	३०।३२	६:१०	६:२३	४।२६।१६।४२	५८	ध्वज	१३ सित	सप्तमीश्राद्ध। रवियोग सू.उ.से दिन १०:१० तक , पुनः दिन ३:४४ से रात्रिअंत। अमृतसिद्धि दिन १०:१० से रातअंत। भद्रा प्रातः ७:२१ से (B)
८	र.	५२।१७	रा.३:०५	रोहि	६।१२	दि. ८:३९	वज्र, सिद्धि	३।२७, ५१।५५	प्रा.७:३४, रा.६:०९	बाल	२४।४१	दि.४:०३	कौल	वृष	३४।४४	रा. ८:०४ तक	३०।२८	६:११	६:२२	४।२७।१५।०८	५८	धाता	१४ सित	श्री महालक्ष्मी व्रतं। कालाष्टमी व्रतं। अष्टमीश्राद्ध। रवियोग सू.उ.से दिन ८:३९ तक । शुक्रः सिंहे मघायांश्च रात्रि १२:१३ समये।
९	चं.	४८।२५	रा.१:३३	मृग	३।१९	प्रा. ७:३०	व्यति	५१।१	रा.२:३५	तैति	२०।१६	दि.२:१७	गर	मिथुन	××	दिनरात	३०।२५	६:११	६:२१	४।२८।१३।३५	५८	आनंद	१५ सित	नवमीश्राद्ध। अमृतसिद्धि प्रातः ७:३० पर्यन्त। व्यतिपात् सू.उ.से रा.२:३५ वजे तक। कन्यायां बुधः दिन ११:०३ समये।
१०	मं.	४५।३७	रा.१२:२६	आर्द्रा	१।२८	प्रा. ६:४६	वरी	४६।६	रा.१२:३८	वणि	१६।५४	दि.१२:५७	भद्रा	मिथुन	४५।५३	रा. १२:३२ तक	३०।२२	६:११	६:२०	४।२९।१२।०४	५९	चर	१६ सित	दशमीश्राद्ध। भद्रा दिन १२:५७ से रात्रि १२:२६ (स्वर्ग)। कन्यायां रवि रात्रि १:५१ समये। पुण्यकाल परा दिवसे।
११	बु.	४३।५६	रा.११:४६	पुन	०।४२	प्रा. ६:२८	परि	४२।२	रा.११:००	बव	१४।३८	दि.१२:०३	बाल	कर्क	××	दिनरात	३०।१८	६:१२	६:१९	५।००।१०।३५	५९	गद	१७ सित	इंदिरा एकादशी व्रत सर्वे। एकादशीश्राद्ध। श्री विश्वकर्मा जयंती। बुध पुष्य योग प्रातः ६:२८ से रातअंत।
१२	गु.	४३।२०	रा.११:३२	पुष्य	१।२	प्रा. ६:३६	शिव	३८।५०	रा.९:४४	कौल	१३।२९	दि.११:३५	तैति	कर्क	××	दिनरात	३०।१५	६:१२	६:१८	५।०१।०९।०८	५९	शुभ	१८ सित	संन्यासी द्वादशीश्राद्ध। मूल प्रातः ६:३६ से रातअंत। अमृतसिद्धि प्रातः ६:३६ पर्यन्त। गुरुपुष्य योग सू उ से प्रातः ६:३६ तक।
१३	शु.	४३।४९	रा.११:४४	श्ले	२।२६	प्रा. ७:११	सिद्ध	३६।३०	रा.८:४८	गर	१३।२५	दि.११:३४	वणि	कर्क	२।२६	प्रा. ७:११ तक	३०।१२	६:१२	६:१७	५।०२।०७।४३	५९	मृत्यु	१९ सित	शुक्रप्रदोष व्रतं। मासिक शिवरात्रि व्रतं। त्रयोदशीश्राद्ध। मूल दिनरात। भद्रा रात्रि ११:४४ से रात्रिअंत (भूमि)।
१४	श.	४५।२५	रा.१२:२३	मघा	४।५५	दि. ८:११	साध्य	३५।१	रा.८:१३	भद्रा	१४।२९	दि.११:६०	शकु	सिंह	××	दिनरात	३०।०८	६:१३	६:१६	५।०३।०६।२०	५९	पद्म	२० सित	मासिक शिवरात्रि व्रतं। शस्त्राघात-दुर्घटना मृत चतुर्दशीश्राद्ध। मूल सू.उ.से दिन ८:११ तक। भद्रा सू.उ.से दिन ११:६०(भूमि)। हस्ते वुधः रात्रि १२:४९ समये।
३०	र.	४८।०७	रा.१:२८	पू.फा.	८।२९	दि. ९:३७	शुभ	३४।२३	रा.७:५८	चतु	१६।३९	दि.१२:५२	नाग	सिंह	२४।३६	दि. ४:०३ तक	३०।०५	६:१३	६:१५	५।०४।०४।५९	५९	छत्र	२१ सित	पितृमोक्ष अमावस्या। सूर्य ग्रहण विदेशों में। सर्वार्थसिद्धी दिन ९:३७ से रातअंत। क्रांतिसाम्य रात्रि २:३४ से रातअंत। क्रांतिसाम्य रात्रि २:३४ से रातअंत।

सूर्योदयकालीन दैनिक ग्रह स्पष्ट। ग्रह गति कलाओं में दी गई है। पक्षारंभिक अयनांश २४-१३-०१

तिथि		चन्द्र		मंगल		बुध		गुरू		शुक्र		शनि		राहू	चंद्र उदयास्त समय: उदय	अस्त
वार		राशि अंश कला वि.	गति	उदय-मार्गी	गति	अस्त-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-वक्री	गति	वक्र गति ३ कला	दिन	रात
१	चं.	१०।२४।५९।०९	८६४	५।२६।१७।४०	३९	४।१६।२१।३२	११६	२।२४।५३।२०	१०	३।२१।४८।३९	७३	११।०५।१६।२२	४	१०।२४।०२।२०	६:३३	६:३२
२	मं.	११।०९।२३।१७	८७४	५।२६।५७।६	४०	४।१८।१७।२२	११५	२।२५।०३।२३	१०	३।२३।०९।१५	७३	११।०५।११।५५	४	१०।२३।५९।०९	७:११	७:३५
३	बु.	११।२३।५७।०७	८७८	५।२७।३६।३६	४०	४।२०।१२।४०	११५	२।२५।१३।२०	१०	३।२४।१३।५४	७३	११।०५।०७।२७	५	१०।२३।५५।५८	७:५२	८:४१
४	गु.	०।०८।३४।३८	८७५	५।२८।१६।१०	४०	४।२२।७।१९	११४	२।२५।२३।११	१०	३।२५।२६।३७	७३	११।०५।०२।५६	५	१०।२३।५२।४८	८:३८	९:५०
५	शु.	०।२३।०९।४९	८६७	५।२८।५५।४८	४०	४।२४।१।१३	११३	२।२५।३२।५६	१०	३।२६।३९।२४	७३	११।०४।५८।२५	५	१०।२३।४९।३७	९:३१	११:०२
६,७	श.	१।०७।३७।१९	८५६	५।२९।३५।२९	४०	४।२५।५४।१६	११२	२।२५।४२।३४	१०	३।२७।५२।१५	७३	११।०४।५३।५२	५	१०।२३।४६।२६	१०:३०	१२:१५
८	र.	१।२१।५३।०१	८४१	६।०।१५।१४	४०	४।२७।४६।२५	१११	२।२५।५२।०५	९	३।२९।०५।१०	७३	११।०४।४९।१७	५	१०।२३।४३।१५	११:३५	१:२६
९	चं.	२।०५।५४।२२	८२६	६।०।५५।३	४०	४।२९।३७।३६	११०	२।२६।०१।३०	९	४।००।१८।०८	७३	११।०४।४४।४२	५	१०।२३।४०।०४	१२:४४	२:३२
१०	मं.	२।१९।४०।१५	८११	६।१।३४।५६	४०	५।१।२७।४९	१०९	२।२६।१०।४८	९	४।०१।३१।११	७३	११।०४।४०।०६	५	१०।२३।३६।५४	१:५३	३:३०
११	बु.	३।०३।१०।४६	७९६	६।२।१४।५३	४०	५।३।१७।१	१०८	२।२६।१९।५९	९	४।०२।४४।१७	७३	११।०४।३५।२९	५	१०।२३।३३।४३	२:५९	४:२०
१२	गु.	३।१६।२६।३८	७८२	६।२।५४।५३	४०	५।५।५।१२	१०७	२।२६।२९।०३	९	४।०३।५७।२६	७३	११।०४।३०।५१	५	१०।२३।३०।३२	४:०१	५:०३
१३	शु.	३।२९।२८।४६	७६९	६।३।३४।५७	४०	५।६।५२।२१	१०६	२।२६।३८।००	९	४।०५।१०।३९	७३	११।०४।२६।१३	५	१०।२३।२७।२१	४:५९	५:४०
१४	श.	४।१२।१७।५४	७५७	६।४।१५।५	४०	५।८।३८।२९	१०५	२।२६।४६।५०	९	४।०६।२३।५६	७३	११।०४।२१।३५	५	१०।२३।२४।१०	५:५३	६:१३
३०	र.	४।२४।५४।३७	७४५	६।४।५५।१७	४०	५।१०।२३।३५	१०४	२।२६।५५।३३	९	४।०७।३७।१६	७३	११।०४।१६।५६	५	१०।२३।२०।६०	××	६:४३

लग्न प्रारंभ समय (भारतीय स्टेंडर्ड समय)

दिनांक	प्रातः पूर्व: सिंहे	प्रातः: कन्यायां	दिन: तुलायां	दिन: वृश्चिके	दिन: धनुषे	दिन: मकरे	सायं: कुंभे	रात्रि: मीने	रात्रि: मेषे	रात्रि: वृषे	रात्रि: मिथुने	रात्रि: कर्के	शुभ बली लग्नें (इन लग्नों में गुरु, शुक्र या बुध केन्द्र त्रिकोण में होने से दोष समूह नाशक सुयोग।)
०८ सित	४:३२	६:४५	८:५६	११:११	१:२७	३:३३	५:२०	६:५३	८:२३	१०:०४	१२:०२	२:१६	७,८,९,१०,१,२,३,४,
०९ सित	४:२८	६:४१	८:५२	११:०७	१:२४	३:२९	५:१६	६:४९	८:१९	९:६०	११:५८	२:१२	७,८,९,११,१,२,३,४,
१० सित	४:२५	६:३७	८:४८	११:०३	१:२०	३:२५	५:१२	६:४५	८:१५	९:५६	११:५४	२:०८	७,८,९,११,१,२,३,४,
११ सित	४:२१	६:३३	८:४४	१०:५९	१:१६	३:२१	५:०८	६:४१	८:११	९:५२	११:५०	२:०४	७,८,९,१,२,३,४,
१२ सित	४:१७	६:२९	८:४०	१०:५५	१:१२	३:१७	५:०४	६:३७	८:०८	९:४८	११:४६	२:००	७,८,९,१,२,३,४,
१३ सित	४:१३	६:२५	८:३६	१०:५१	१:०८	३:१३	४:६०	६:३३	८:०४	९:४४	११:४२	१:५६	७,८,९,११,१,२,३,४,
१४ सित	४:०९	६:२१	८:३२	१०:४७	१:०४	३:०९	४:५६	६:२९	७:६०	९:४०	११:३८	१:५२	६,७,८,९,१०,१,२,३,
१५ सित	४:०५	६:१७	८:२८	१०:४३	१२:६०	३:०५	४:५२	६:२५	७:५६	९:३६	११:३४	१:४८	६,८,९,१,२,३,
१६ सित	४:०१	६:१३	८:२४	१०:३९	१२:५६	३:०१	४:४८	६:२१	७:५२	९:३२	११:३०	१:४४	६,८,९,१०,११,१,२,३,
१७ सित	३:५७	६:०९	८:२०	१०:३६	१२:५२	२:५७	४:४४	६:१७	७:४८	९:२८	११:२७	१:४०	८,९,१०,११,१,२,३,
१८ सित	३:५३	६:०५	८:१७	१०:३२	१२:४८	२:५४	४:४०	६:१३	७:४४	९:२४	११:२३	१:३६	८,९,११,१,२,३,
१९ सित	३:४९	६:०१	८:१३	१०:२८	१२:४४	२:५०	४:३६	६:०९	७:४०	९:२०	११:१९	१:३२	८,९,११,१,२,३,
२० सित	३:४५	५:५७	८:०९	१०:२४	१२:४०	२:४६	४:३२	६:०५	७:३६	९:१६	११:१५	१:२९	८,९,११,१,२,३,४,
२१ सित	३:४१	५:५३	८:०५	१०:२०	१२:३६	२:४२	४:२८	६:०१	७:३२	९:१२	११:११	१:२५	८,९,११,१,२,३,

तिथि १
चन्द्रवार
इष्ट ०।०

६ मं. ४ शु.
७ ५ सू.बु.के. ३ गु.
८ 卐 २
९ ११ चं.रा. १
१० १२ श.

कन्या संक्रान्ति फलम्- आश्विन कृष्ण १० मंगलवासरे रात्रि १:५१ समये कन्यासंक्रान्ति प्रवेशः तस्य पुण्यकाल परा दिवसे। वार नाम महोदरी संज्ञक संक्रांति चोर-तस्कर, अनैतिक कार्यशील एवं ठगों को शुभकारी है। तस्य काले पुननक्षत्र नाम महोदरी संज्ञक संक्रांति चोर, तस्करो एवं जमाखोरों का सुखद। मुहूर्त्त ४५ अनाज मूल्य में गिरावट संकेतक। बव करण फल- सिंह वाहनं, गज उपवाहनं, स्वेत वस्त्रं, भुशुण्ड़ी आयुधं, स्वर्ण पात्रं, अन्न भक्षणं, कस्तूरी लेपनं, देव वर्ण, पुन्नाग पुष्पं, नूपुरभूषणं, विचित्र कंचुकी, वाल्य अवस्था, उपविष्टा स्थिति। स्थिर भाव सूचक। ० आश्विनशुक्ल २ स्वाते भौम अनावृष्टि। आश्विनकृष्ण ६ उत्तराफल्गुन्यां बुध - उफायांतुमाषमुद्गाद्यल्पनिष्पत्तिमादिशेत्। उत्तराफाल्गुनी में हो तो उड़द मूंगा कम उत्पन्न हों।। आश्विनकृष्ण १४ हस्ते बुध - हस्तेबुधेसुभिक्षं स्याद्धान्यमारोग्यमम्बुदाः। हस्त में बुध हो तो सुभिक्ष हो धान्य निरोग रहे।
(B) सायं ६:१२ (स्वर्ग)। उत्तराफाल्गुण्यां रवि दिन ३:४४ समये। जम्बूक वाहनं अनावृष्टि। स्त्री. पु.योग सुवृष्टि। वायुनाड़ी। तुलायां भौमः रात्रि ८:५८ समये। उत्तराफाल्गुण्यां वुधः दिन ३:५८ समये।

तिथि ९
चन्द्रवार
इष्ट ०।०

६ ४
७ मं. ५ सू.बु.शु.के ३ चं.गु.
८ 卐 २
९ ११ रा. १
१० १२ श.

१६	तिथि			नक्षत्र			योग			करण (प्रातः एवं सायंकाल में)				चन्द्रमा राशि समाप्ती काल			श्री सूर्य					आनंदादि योग	दिनांक	(कृपया ध्यान रखें कि इस वर्ष चंद्र राशि का समाप्ती काल दिया है)। गुरु उदयपूर्वेः। शुक्र उदयपूर्वेः — मूल निवास स्वर्गे
तिथि	वार	घटिपल	घंटामिनट	नक्षत्र	घटिपल	घंटामिनट	योग	घटिपल	घंटामिनट	प्रातः	घटिपल	घंटामिनट	सायं	राशि	घटिपल	घंटामिनट	दिनमान	सू.उ.	अस्त	उदयकालीन स्पष्ट	गति			पक्षारंभिक नक्षत्र-उत्तराफाल्गुण्यां रविः, चित्रायां भौमः, हस्ते वुधः, पुनर्वसे गुरौ, मघायां शुक्रः, उत्तरभाद्रपदे शनिः, पूर्वभाद्रपदे राहु, पूर्वाफाल्गुण्यां केतु।
१	चं.	५१।५५	रा.२:५९	उ.फा.	१३।७	दि. ११:२८	शुक्ल	३४।३५	रा.८:०३	किंस	१९।५५	दि.२:११	बव	कन्या	--	दिनरात	३०।०२	६:१३	६:१४	५।०५।०३।३९	५९	श्रीवत्स	२२ सित	शारदीय नवरात्रि प्रारंभ। पुण्यप्रदाव्रत। अग्रसेन ज.। श्री सूर्य दक्षिणगोल प्रवेश रात्रि ११:५५।
२	मं.	५६।४२	रा.४:५४	हस्त	१८।४६	दि. १:४४	ब्रह्म	३५।३४	रा.८:२७	बाल	२४।१५	दि.३:५५	कौल	कन्या	५१।५४	रा. २:५९ तक	२९।५८	६:१४	६:१३	५।०६।०२।२२	५९	सौम्य	२३ सित	द्विपुष्कर योग दिन १।४४ से से रात्रि ४:५४ तक। स्वाते भौमः रात्रि ८:३४ समये।
३	बु.	६०।००	वृद्धि	चित्रा	२५।१८	दि. ४:२१	ऐंद्र	३७।१३	रा.९:०७	तैति	२७।११	सा.६:०१	गर	तुला	--	दिनरात	२९।५५	६:१४	६:१२	५।०७।०१।०७	५९	कालदंड	२४ सित	रवियोग दिन ४:२१ से रात्रिअंत। वैधृति रा.९:०७ वजे तक। से रातअंत।
३	गु.	२।१९	प्रा.७:१०	स्वा	३२।२८	रा. ७:१३	वैधृ	३९।२०	रा.९:५८	गर	२।१९	प्रा.७:१०	वणि	तुला	--	दिनरात	२९।५२	६:१४	६:११	५।०७।५९।५३	५९	स्थिर	२५ सित	विनायकी श्री गणेश ४ व्रतं। सिन्दूर तृतीया। रवियोग सू.उ.से रात्रि ७:१३ तक । भद्रा रात्रि ८:२३ से रात्रिअंत (पाताल)। वैधृति सू.उ.से (A)
४	शु.	८।२८	दि.९:३८	विशा	३९।५८	रा. १०:१४	विष्कु	४१।४१	रा.१०:५५	भद्रा	८।२८	दि.९:३८	बव	तुला	२३।०४	दि. ३:२८ तक	२९।४८	६:१५	६:१०	५।०८।५८।४२	५९	मातंग	२६ सित	उपांग ललिता व्रत। रवियोग रात्रि १०:१४ से रात्रिअंत। सर्वार्थसिद्धी रात्रि १०:१४ से रातअंत। भद्रा सू.उ.से दिन ९:३८ (पाताल)।
५	श.	१४।४२	दि.१२:०८	अनु	४७।२२	रा. १:१२	प्रीति	४३।५७	रा.११:५०	बाल	१४।४२	दि.१२:०८	कौल	वृश्चिक	xx	दिनरात	२९।४५	६:१५	६:९	५।०९।५७।३२	५९	अमृत	२७ सित	मूल रात १:१२ से रातअंत। रवियोग सू.उ.से प्रातः ७:१५ तक , पुनः रात्रि १:१२ से रात्रिअंत। हस्ते रवि प्रातः ७:१५ समये। चातक वाहनं (B)
६	र.	२०।३५	दि.२:२९	ज्ये	५४।१५	रा. ३:५७	आयु	४५।४७	रा.१२:३४	तैति	२०।३५	दि.२:२९	गर	वृश्चिक	५४।१५	रा. ३:५७ तक	२९।४२	६:१५	६:८	५।१०।५६।२५	५९	काण	२८ सित	स्कंद षष्ठी। मूल दिनरात। रवियोग सू.उ.से रात्रि ३:५७ तक । सर्वार्थसिद्धी रात्रि ३:५७ से रातअंत। चित्रायां वुधः रात्रि ११:०४ समये।
७	चं.	२५।३८	दि.४:३१	मूल	६०।०	वृद्धि	सौभ	४६।५२	रा.१:००	वणि	२५।३८	दि.४:३१	भद्रा	धनु	xx	दिनरात	२९।३८	६:१६	६:७	५।११।५५।२०	५९	लुंबक	२९ सित	पर्जन्य सप्तमी, मूल सू.उ.से वृद्धि दिनरात तक। भद्रा दिन ४:३१ से रात्रि ५:२४ (पाताल)।
८	मं.	२९।२६	सा.६:०२	मूल	०।१९	प्रा. ६:१९	शोभ	४६।५३	रा.१:०१	बव	२९।२६	सा.६:०२	बाल	धनु	xx	दिनरात	२९।३५	६:१६	६:६	५।१२।५४।१६	५९	छत्र	३० सित	नवरात्र दुर्गा अष्टमी व्रत। सरस्वती पूजन। मूल सू.उ.से प्रातः ६:१९ तक। (A) रा.९:५८ वजे तक। । पूर्वाफाल्गुण्यां शुक्रः रात्रि १०:१० समये।
९	बु.	३१।३७	सा.६:५५	पू.षा	४।३२	दि. ८:०५	अति	४५।३४	रा.१२:३०	बाल	०।५६	प्रा.६:३९	कौल	धनु	२०।१६	दि. २:२३ तक	२९।३२	६:१६	६:५	५।१३।५३।१५	५९	श्रीवत्स	१ अक्टू	दुर्गा नवमी, सतयुगादि तिथि, मन्वादिति। रवियोग दिन ८:०५ से रात्रिअंत। (B) सुवृष्टि। स्त्री. नपु.योग अल्पवृष्टि। अग्निनाड़ी।
१०	गु.	३१।५७	रा.७:०३	उ.षा	७।१३	दि. ९:१०	सुक	४२।४७	रा.११:२३	तैति	२।१३	प्रा.७:१०	गर	मकर	xx	दिनरात	२९।२८	६:१७	६:४	५।१४।५२।१६	५९	ध्वांक्ष	२ अक्टू	विजया दशमी, शमी पूजन, नीलकण्ठ दर्शन। रवियोग सू.उ.सेरात्रिअंत। तुलायां बुधः रात्रि ३:४२ समये।
११	शु.	३०।२१	सा.६:२५	श्रव	८।३	दि. ९:३०	धृति	३८।२७	रा.९:४०	वणि	१।३७	प्रा.६:५६	भद्रा	मकर	३७।३९	रा. ९:२१ तक	२९।२५	६:१७	६:३	५।१५।५१।१८	५९	धूम्र	३ अक्टू	पापांकुशा एकादशी व्रत सर्वे। पंचक प्रारंभ रा. ९:२१ तक समये। सर्वार्थसिद्धी, रवियोग सू.उ.से दिन ९:३० तक । भद्रा प्रातः ६:५६ से सायं (C)
१२	श.	२६।५३	सा.५:०२	धनि	७।२	दि. ९:०६	शूल	३२।३९	रा.७:२१	बाल	२६।५३	सा.५:०२	कौल	कुंभ	xx	दिनरात	२९।२२	६:१७	६:२	५।१६।५०।२३	५९	प्रवर्ध	४ अक्टू	शनिप्रदोष व्रतं। पद्मनाभ व्रत। पंचक दिनरात। द्विपुष्कर योग सूर्योदय से दिन ९:०६ तक। (C) ६:२५ (पाताल)। पूर्वभाद्रपदे शनि दिन ४:३९ समये।
१३	र.	२१।४४	दि.२:५९	शत, पू.भा	४:१६।५१:५१	प्रा. ७:६०, रा.६:१७	गंड	२५।३२	दि.४:३०	तैति	२१।४४	दि.२:५९	गर	कुंभ	४६।०३	रा. १२:४३ तक	२९।१८	६:१८	६:१	५।१७।४९।३०	५९	राक्षस	५ अक्टू	पंचक दिनरात। रवियोग प्रातः ७:६० से रात्रि ५:४६ तक । क्रांतिसाम्य दिन ११:४३ से दिन ३:४५।
१४	चं.	१५।१२	दि.१२:२३	उ.भा	५४।२४	रा. ४:०४	बृद्धि	१७।१७	दि.१:१३	वणि	१५।१२	दि.१२:२३	भद्रा	मीन	xx	दिनरात	२९।१५	६:१८	६:०	५।१८।४८।३९	५९	गद	६ अक्टू	शरद पूर्णिमा। पंचक दिनरात। मूल रात ४:०४ से रातअंत। भद्रा दिन १२:२३ से रात्रि १०:५३ (भूमि)। उत्तराफाल्गुण्यां शुक्रः सायं ६:०३ समये।
१५,१	मं.	७।३४, ५९।१०	दि.९:२०,रा ५:५१	रेव	४८।२	रा. १:३१	ध्रुव, व्या	८।१९, ५९।५७	दि.१:३४, रा.६:१८	बव	७।३४	दि.९:२०	बाल	मीन	४८।०३	रा. १:३१ तक	२९।१२	६:१८	५:५९	५।१९।४७।५०	५९	शुभ	७ अक्टू	वाल्मीकि जयंती, सिंगाजी मेला प्रारंभ। पंचक समाप्त रा. १ :३१ समये। मूल दिनरात। अमृतसिद्धि रात्रि १:३१ से रातअंत। स्वाते वुधः दिन १२:१६ समये।

सूर्योदयकालीन दैनिक ग्रह स्पष्ट । ग्रह गति कलाओं में दी गई है। पक्षारंभिक अयनांश २४-१३-०२

तिथि		चन्द्र		मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		राहु	चंद्र उदयास्त समय	
															उदय	अस्त
वार		राशि अंश कला वि.	गति	उदय-मार्गी	गति	अस्त-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-वक्री	गति	वक्र गति ३ कला	दिन	रात
१	चं.	५।०७।१९।२९	७३४	६।५।३५।३३	४०	५।१२।७।४०	१०३	२।२७।०४।०८	८	४।०८।५०।३९	७३	११।०४।१२।१८	५	१०।२३।१७।४९	६:४७	६:५७
२	मं.	५।१९।३३।२४	७२४	६।६।१५।५२	४०	५।१३।५०।४६	१०२	२।२७।१२।३५	८	४।१०।०४।०६	७४	११।०४।०७।३९	५	१०।२३।१४।३८	७:३६	७:२५
३	बु.	६।०१।३७।४६	७१७	६।६।५६।१५	४०	५।१५।३२।५२	१०१	२।२७।२०।५५	८	४।११।१७।३६	७४	११।०४।०३।०१	५	१०।२३।११।२७	८:२५	७:५४
३	गु.	६।१३।३४।३८	७१२	६।७।३६।४२	४१	५।१७।१३।५९	१००	२।२७।२९।०८	८	४।१२।३१।१०	७४	११।०३।५८।२४	५	१०।२३।०८।१७	९:१४	८:२४
४	शु.	६।२५।२६।४४	७११	६।८।१७।१३	४१	५।१८।५४।१०	९९	२।२७।३७।१२	८	४।१३।४४।४७	७४	११।०३।५३।४६	५	१०।२३।०५।०६	१०:०४	८:५८
५	श.	७।०७।१७।११	७१३	६।८।५७।४७	४१	५।२०।३३।२४	९८	२।२७।४५।०८	८	४।१४।५८।२७	७४	११।०३।४९।१०	५	१०।२३।०१।५५	१०:५३	९:३६
६	र.	७।१९।१०।०२	७१९	६।९।३८।२५	४१	५।२२।११।४४	९७	२।२७।५२।५६	८	४।१६।१२।१०	७४	११।०३।४४।३५	५	१०।२२।५८।४४	११:४३	१०:१८
७	चं.	८।०१।०८।५६	७२९	६।१०।१९।७	४१	५।२३।४९।९	९७	२।२८।००।३७	८	४।१७।२५।५६	७४	११।०३।४०।००	५	१०।२२।५५।३३	१२:३१	११:०६
८	मं.	८।१३।१८।१४	७४४	६।१०।५९।५३	४१	५।२५।२५।४०	९६	२।२८।०८।०८	७	४।१८।३९।४५	७४	११।०३।३५।२७	५	१०।२२।५२।२३	१:१७	११:५७
९	बु.	८।२५।४२।१९	७६३	६।११।४०।४३	४१	५।२७।१।२०	९५	२।२८।१५।३२	७	४।१९।५३।३७	७४	११।०३।३०।५५	५	१०।२२।४९।१२	२:००	१२:५१
१०	गु.	९।०८।२५।२३	७८६	६।१२।२१।३६	४१	५।२८।३६।८	९४	२।२८।२२।४६	७	४।२१।०७।३३	७४	११।०३।२६।२४	४	१०।२२।४६।०१	२:४०	१:४७
११	शु.	९।२१।३१।०७	८११	६।१३।२।३३	४१	६।०।१०।६	९३	२।२८।२९।५३	७	४।२२।२१।३१	७४	११।०३।२१।५५	४	१०।२२।४२।५०	३:१६	२:४५
१२	श.	१०।०५।०१।६०	८३७	६।१३।४३।३४	४१	६।१।४३।१४	९२	२।२८।३६।५०	७	४।२३।३५।३२	७४	११।०३।१७।२८	४	१०।२२।३९।३९	३:५२	३:४४
१३	र.	१०।१८।५८।५१	८६१	६।१४।२४।३९	४१	६।३।१५।३२	९१	२।२८।४३।३९	७	४।२४।४९।३६	७४	११।०३।१३।०३	४	१०।२२।३६।२९	४:२७	४:४५
१४	चं.	११।०३।२०।१५	८८२	६।१५।५।४७	४१	६।४।४७।२	९१	२।२८।५०।१८	७	४।२६।०३।४२	७४	११।०३।०८।४०	४	१०।२२।३३।१८	५:०४	५:४९
१५,१	मं.	११।१८।०२।१६	८९६	६।१५।४६।५९	४१	६।६।१७।४३	९०	२।२८।५६।४९	६	४।२७।१७।५२	७४	११।०३।०४।१९	४	१०।२२।३०।०७	५:४४	६:५७

लग्न प्रारंभ समय (भारतीय स्टेंडर्ड समय)

दिनांक	प्रातः पूर्व	प्रातः	दिन				सायं	रात्रि					शुभ बली लग्नें
	कन्यायां	तुलायां	वृश्चिके	धनुषे	मकरे	कुंभे	मीने	मेषे	वृषे	मिथुने	कर्के	सिंहे	इन लग्नों में गुरु, शुक्र या बुध केन्द्र त्रिकोण में होने से दोष समूह नाशक सुयोग।
२२ सित	५:५०	८:०१	१०:१६	१२:३२	२:३८	४:२४	५:५७	७:२८	९:०८	११:०७	१:२१	३:३७	८,९,११,१,२,३,
२३ सित	५:४६	७:५७	१०:१२	१२:२८	२:३४	४:२०	५:५३	७:२४	९:०४	११:०३	१:१७	३:३३	८,९,१०,११,१,२,३,
२४ सित	५:४२	७:५३	१०:०८	१२:२४	२:३०	४:१७	५:५०	७:२०	९:०१	१०:५९	१:१३	३:२९	८,९,१०,११,१,२,३,
२५ सित	५:३८	७:४९	१०:०४	१२:२०	२:२६	४:१३	५:४६	७:१६	८:५७	१०:५५	१:०९	३:२५	८,९,१०,११,१,२,
२६ सित	५:३४	७:४५	१०:००	१२:१६	२:२२	४:०९	५:४२	७:१२	८:५३	१०:५१	१:०५	३:२१	८,९,११,१,२,३,
२७ सित	५:३०	७:४१	९:५६	१२:१३	२:१८	४:०५	५:३८	७:०८	८:४९	१०:४७	१:०१	३:१७	९,११,१,२,३,
२८ सित	५:२६	७:३७	९:५२	१२:०९	२:१४	४:०१	५:३४	७:०४	८:४५	१०:४३	१२:५७	३:१४	८,९,११,१,२,४,
२९ सित	५:२२	७:३३	९:४८	१२:०५	२:१०	३:५७	५:३०	७:०१	८:४१	१०:३९	१२:५३	३:१०	८,९,११,१,२,३,
३० सित	५:१८	७:२९	९:४४	१२:०१	२:०६	३:५३	५:२६	६:५७	८:३७	१०:३५	१२:४९	३:०६	८,९,१०,११,१,२,३,
०१ अक्टू	५:१४	७:२५	९:४०	११:५७	२:०२	३:४९	५:२२	६:५३	८:३३	१०:३१	१२:४५	३:०२	८,९,१०,११,१,२,३,
०२ अक्टू	५:१०	७:२१	९:३६	११:५३	१:५८	३:४५	५:१८	६:४९	८:२९	१०:२७	१२:४१	२:५८	८,९,१०,११,१,२,३,
०३ अक्टू	५:०६	७:१७	९:३२	११:४९	१:५४	३:४१	५:१४	६:४५	८:२५	१०:२३	१२:३७	२:५४	७,९,१०,११,१,२,४,
०४ अक्टू	५:०२	७:१३	९:२९	११:४५	१:५०	३:३७	५:१०	६:४१	८:२१	१०:१९	१२:३३	२:५०	७,९,१०,११,१,२,४,
०५ अक्टू	४:५८	७:०९	९:२५	११:४१	१:४६	३:३३	५:०६	६:३७	८:१७	१०:१६	१२:२९	२:४६	७,९,१०,१,२,४,
०६ अक्टू	४:५४	७:०६	९:२१	११:३७	१:४३	३:२९	५:०२	६:३३	८:१३	१०:१२	१२:२५	२:४२	७,९,१०,१,२,३,४,
०७ अक्टू	४:५०	७:०२	९:१७	११:३३	१:३९	३:२५	४:५८	६:२९	८:०९	१०:०८	१२:२१	२:३८	७,८,९,११,१,२,३,४,

तिथि १
चन्द्रवार
इष्ट ०।०

७ मं.
५ शु.के.
८
६ सू.चं.बु.
४
९
卐
३ गु.
१०
१२ श.
२
११रा.
१

आश्विनशुक्ल २ स्वाते भौम अनावृष्टि। आश्विनशुक्ल ६ चित्रायां बुध - चित्रायांगणिकाशिल्पिद्विजपीड़ाल्पवर्षणम्।। चित्रा में हो तो वर्षा कम हो और वेश्या तथा शिल्पी लोग और ब्राह्मणों में पीड़ा हो। आश्विनशुक्ल १५ स्वाते बुध - स्वातौबुधेमंदवृष्टिशाखायांसुभिक्षता। स्वाती में बुध हो तो मन्द वर्षा हो

तिथि ७
चन्द्रवार
इष्ट ०।०

७ मं.
५ शु.के
८
६ सू.बु.
४
९ चं.
卐
३ गु.
१०
१२ श.
२
११ रा.
१

कार्तिक कृष्णपक्ष। शुभ विक्रम संवत् २०८२ शकः १९४७। सिद्धार्थ संवत्सर। कलियुग संवत् ५१२६। शरद ऋतुः। श्री सूर्य दक्षिणायन-दक्षिणगोले। अक्टूबर ईसवी सन् २०२५। अक्टूबर। वंगला सन् १४३२ । वीर निर्वाण संवत् २५५१।

१४	तिथि			नक्षत्र			योग			करण (प्रातः एवं सायंकाल में)				चन्द्रमा राशि समाप्ती काल			श्री सूर्य					आनंदादि योग	दिनांक	(कृपया ध्यान रखें कि इस वर्ष चंद्र राशि का समाप्ती काल दिया है)। गुरु उदयपूर्वेः। शुक्र उदयपूर्वेः मूल निवास भूमि
तिथि	वार	घटिपल	घंटामिनट	नक्षत्र	घटिपल	घंटामिनट	योग	घटिपल	घंटामिनट	प्रातः	घटिपल	घंटामिनट	सायं	राशि	घटिपल	घंटामिनट	दिनमान	सू.उ.	अस्त	उदयकालीन स्पष्ट	गति			पक्षारंभिक नक्षत्र-हस्ते रविः, स्वाते भौमः, स्वाते वुधः, पुनर्वसे गुरौ, उत्तराफाल्गुण्यां शुक्रः,पूर्वभाद्रपदे शनिः, पूर्वभाद्रपदे राहु, पूर्वाफाल्गुण्यां केतु।
२	बु.	५०।२४	रा.२:२८	अश्वि	४१।१८	रा. १०:५०	हर्ष	४८।१८	रा.१:३८	तैति	२४।४७	दि.४:१४	गर	मेष	--	दिनरात	२९।०८	६:१९	५:५८	५।२०।४७।०३	५९	मृत्यु	८ अक्टू	कार्तिक स्नान प्रारंभ। मूल सू.उ.से रात १०:५० तक। बुध उदय पश्चिमेः सायं ६:४७ समये।
३	गु.	४१।४५	रा.११:०१	भर	३४।३५	रा. ८:०९	वज्र	३८।१८	रा.९:३८	वणि	१६।३	दि.१२:४५	भद्रा	मेष	४७।५४	रा. १:२९ तक	२९।०५	६:१९	५:५७	५।२१।४६।१८	५९	पद्म	९ अक्टू	भद्रा दिन १२:४५ से रात्रि ११:०१ (स्वर्ग)। कन्यायां शुक्रः दिन १०:४५ समये।
४	शु.	३३।३४	रा.७:४५	कृत्ति	२८।१५	सा. ५:३८	सिद्धि	२८।४०	सा.५:४८	बव	७।३२	दि.९:२०	बाल	वृष	--	दिनरात	२९।०२	६:२०	५:५६	५।२२।४५।३५	५९	छत्र	१० अक्टू	करवा चौथ व्रत। चंद्रोदय रात ८:३३। संकष्टी ४ व्रतं। व्यतिपात् सा.५:४८ वजे तक। से रातअंत। चित्रायां रवि रात्रि ८:१५ समये।
५	श.	२६।१२	दि.४:४९	रोहि	२२।४२	दि. ३:२५	व्यति	१९।३९	दि.२:१२	तैति	२६।१२	दि.४:४९	गर	वृष	५०।१५	रा. २:२६ तक	२८।५८	६:२०	५:५५	५।२३।४४।५४	५९	श्रीवत्स	११ अक्टू	अमृतसिद्धि दिन ३:२५ पर्यन्त। व्यतिपात् सू.उ.से दि.२:१२ वजे तक।। ($) भद्रा दिन १:५९ से रात्रि २:५२ (पाताल)। (&)
६	र.	१९।५९	दि.२:२०	मृग	१८।१७	दि. १:३९	वरी	११।३१	दि.१०:५७	वणि	१९।५९	दि.२:२०	भद्रा	मिथुन	××	दिनरात	२८।५५	६:२०	५:५४	५।२४।४४।१५	५९	सौम्य	१२ अक्टू	रवियोग दिन १:३९ से रात्रिअंत। भद्रा दिन २:२० से रात्रि १:१७ (स्वर्ग)। (&) वैधृति रा.२:१० वजे तक। से रातअंत।
७	चं.	१५।११	दि.१२:२५	आर्द्रा	१५।१७	दि. १२:२८	परि, शिव	४।३०, ५९।५८	दि.८:०९, रा.६:२०	बव	१५।११	दि.१२:२५	बाल	मिथुन	५८।५७	रा. ५:५६ तक	२८।५२	६:२१	५:५४	५।२५।४३।३९	५९	कालदंड	१३ अक्टू	कालाष्टमी व्रतं। रवियोग सू.उ.से दिन १२:२८ तक । विशाखायां भौमः दिन ८:५६ समये।
८	मं.	१२।०१	दि.११:१०	पुन	१३।५३	दि. ११:५५	सिद्ध	५४।३२	रा.४:१०	कौल	१२।१	दि.११:१०	तैति	कर्क	××	दिनरात	२८।४८	६:२१	५:५३	५।२६।४३।०४	५९	स्थिर	१४ अक्टू	अहोई अष्टमी। मंगल पुष्य योग दिन ११:५५ से रातअंत। (%) २:०४ से रातअंत। क्रांतिसाम्य दिन ८:४२ से दिन १:०६। हस्ते शुक्रः दिन १२:१५ समये।
९	बु.	१०।३३	दि.१०:३५	पुष्य	१४।१०	दि. १२:०२	साध्य	५१।३२	रा.२:५९	गर	१०।३३	दि.१०:३५	वणि	कर्क	××	दिनरात	२८।४५	६:२२	५:५२	५।२७।४२।३१	५९	मातंग	१५ अक्टू	मूल दिन १२:०२ से रातअंत। ज्वालामुखीयो दिन १२:०२ से रातअंत। बुध पुष्य योग सू उ से दिन १२:०२ तक। भद्रा रात्रि १०:३४ से रात्रिअंत (भूमि)।
१०	गु.	१०।४२	दि.१०:३९	श्ले	१५।६०	दि. १२:४६	शुभ	४९।४१	रा.२:१५	भद्रा	१०।४२	दि.१०:३९	बव	कर्क	१५।६०	दि. १२:४६ तक	२८।४२	६:२२	५:५१	५।२८।४२।०१	६०	अमृत	१६ अक्टू	मूल दिनरात। ज्वालामुखी योग सू.उ. से दिन १०:३९। भद्रा सू.उ.से दिन १०:३९(भूमि)। विशाखायां वुधः रात्रि ७:०२ समये।
११	शु.	१२।१९	दि.११:१८	मघा	१९।१३	दि. २:०४	शुक्ल	४८।४९	रा.१:५४	बाल	१२।१९	दि.११:१८	कौल	सिंह	××	दिनरात	२८।३९	६:२३	५:५०	५।२९।४१।३२	६०	काण	१७ अक्टू	रमा एकादशी व्रत सर्वे। गोवत्स द्वादशी। तुलायां रवि दिन १:४९ समये। पुण्यकाल आज। मूल सू.उ.से दिन २:०४ तक। सिद्धयोग दिन (%)
१२	श.	१५।०९	दि.१२:२७	पू.फा.	२३।३५	दि. ३:४९	ब्रह्म	४८।४७	रा.१:५४	तैति	१५।९	दि.१२:२७	गर	सिंह	३९।४९	रा. १०:१९ तक	२८।३५	६:२३	५:४९	६।००।४१।०६	६०	लुंबक	१८ अक्टू	शनिप्रदोष व्रतं। धन त्रयोदशी, यम दीपदान। गुरु कर्के सायं ५:१८ समये।
१३	र.	१८।५९	दि.१:५९	उ.फा.	२८।५३	सा. ५:५७	ऐंद्र	४९।२६	रा.२:१०	वणि	१८।५९	दि.१:५९	भद्रा	कन्या	××	दिनरात	२८।३२	६:२४	५:४८	६।०१।४०।४१	६०	मित्र	१९ अक्टू	नरक चतुर्दशी रात्रिअंत में स्नान दान। मासिक शिवरात्रि व्रतं। सर्वार्थसिद्धी सायं ५:५७ पर्यन्त। अमृतसिद्धि सायं ५:५७ से रातअंत। ($)
१४	चं.	२३।३८	दि.३:५१	हस्त	३४।५६	रा. ८:२२	वैधृ	५०।३८	रा.२:३९	शकु	२३।३८	दि.३:५१	चतु	कन्या	××	दिनरात	२८।२९	६:२४	५:४८	६।०२।४०।१९	६०	वज्र	२० अक्टू	जिन स्थानों पर सूर्यास्त सायं ५.५९ के पश्चात है वहां दीपावली, श्री महालक्ष्मी पूजन आज प्रदोषकाल में होगा। वैधृति सू.उ. से रा.
३०	मं.	२८।५७	सा.५:५९	चित्रा	४१।३६	रा. ११:०३	विष्कु	५२।१७	रा.३:१९	नाग	२८।५७	सा.५:५९	किंस्तु	कन्या	८।१०	दि. ९:४० तक	२८।२६	६:२४	५:४७	६।०३।३९।५९	६०	ध्वांक्ष	२१ अक्टू	जिन स्थानों पर सूर्यास्त सायं ५.५९ से पहले है वहां दीपावली, श्री महालक्ष्मी पूजन आज प्रदोषकाल में होगा। स्नानदान अमावस्या

सूर्योदयकालीन दैनिक ग्रह स्पष्ट । ग्रह गति कलाओं में दी गई है। पक्षारंभिक अयनांश २४-१३-०४

तिथि		चन्द्र		मंगल		बुध		गुरू		शुक्र		शनि		राहू	चंद्र उदयास्त समय उदय	अस्त
वार		राशि अंश कला वि.	गति	उदय-मार्गी	गति	अस्त-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-वक्री	गति	वक्र गति ३ कला	दिन	रात
२	बु.	०।०२।५८।३९	९०३	६।१६।२८।१५	४१	६।७।४७।३५	८९	२।२९।०३।१०	६	४।२८।३२।०४	७४	११।०३।००।००	४	१०।२२।२६।५६	६:२९	७:३०
३	गु.	०।१८।०९।१९	९००	६।१७।९।३५	४१	६।९।१६।३९	८८	२।२९।०९।२२	६	४।२९।४६।१८	७४	११।०२।५५।४४	४	१०।२२।२३।४५	७:२०	८:४३
४	शु.	१।०३।०१।२५	८८९	६।१७।५०।५९	४१	६।१०।४४।५५	८७	२।२९।१५।२५	६	५।०१।००।३६	७४	११।०२।५१।३१	४	१०।२२।२०।३५	८:३३	९:५८
५	श.	१।१७।५०।२५	८७१	६।१८।३२।२६	४२	६।१२।१२।२१	८७	२।२९।२१।१८	६	५।०२।१४।५५	७४	११।०२।४७।२०	४	१०।२२।१७।२४	९:२३	११:१३
६	र.	२।०२।२१।२६	८४९	६।१९।१३।५७	४२	६।१३।३८।५७	८६	२।२९।२७।०२	६	५।०३।२९।१७	७४	११।०२।४३।१२	४	१०।२२।१४।१३	१०:३३	१२:२२
७	चं.	२।१६।३०।०१	८२४	६।१९।५५।३२	४२	६।१५।४।४३	८५	२।२९।३२।३६	५	५।०४।४३।४२	७४	११।०२।३९।०७	४	१०।२२।११।०२	११:४३	१:२४
८	मं.	३।००।१४।३१	८०१	६।२०।३७।१०	४२	६।१६।२९।३७	८४	२।२९।३७।६०	५	५।०५।५८।०९	७४	११।०२।३५।०६	४	१०।२२।०७।५१	१२:५१	२:१७
९	बु.	३।१३।३५।४७	७८१	६।२१।१८।५२	४२	६।१७।५३।३७	८३	२।२९।४३।१४	५	५।०७।१२।३८	७५	११।०२।३१।०७	४	१०।२२।०४।४१	१:५५	३:०२
१०	गु.	३।२६।३६।२६	७६३	६।२२।०।३८	४२	६।१९।१६।४२	८२	२।२९।४८।१८	५	५।०८।२७।१०	७५	११।०२।२७।१२	४	१०।२२।०१।३०	२:५४	३:४०
११	शु.	४।०९।१९।५५	७५०	६।२२।४२।२८	४२	६।२०।३८।४९	८१	२।२९।५३।१२	५	५।०९।४१।४४	७५	११।०२।२३।२१	४	१०।२१।५८।१९	३:४८	४:१४
१२	श.	४।२१।४९।३८	७३९	६।२३।२४।२२	४२	६।२१।५९।५५	८०	२।२९।५७।५६	५	५।१०।५६।२०	७५	११।०२।१९।३३	४	१०।२१।५५।०८	४:४०	४:४५
१३	र.	५।०४।०८।३१	७३०	६।२४।६।१९	४२	६।२३।१९।५८	७९	३।००।०२।२९	४	५।१२।१०।५८	७५	११।०२।१५।४९	४	१०।२१।५१।५७	५:३०	५:१४
१४	चं.	५।१६।१८।५०	७२३	६।२४।४८।२०	४२	६।२४।३८।५३	७८	३।००।०६।५२	४	५।१३।२५।३८	७५	११।०२।१२।०९	४	१०।२१।४८।४६	६:१९	५:४३
३०	मं.	५।२८।२२।१६	७१८	६।२५।३०।२४	४२	६।२५।५६।३५	७६	३।००।११।०४	४	५।१४।४०।२०	७५	११।०२।०८।३३	४	१०।२१।४५।३६	××	६:१३

लग्न प्रारंभ समय (भारतीय स्टेंडर्ड समय)

दिनांक	प्रातः पूर्व	प्रातः	दिन				सायं	रात्रि					शुभ बली लग्नें
	कन्यायां	तुलायां	वृश्चिके	धनुषे	मकरे	कुंभे	मीने	मेषे	वृषे	मिथुने	कर्के	सिंहे	इन लग्नों में गुरु, शुक्र या बुध केन्द्र त्रिकोण में होने से दोष समूह नाशक सुयोग।
०८ अक्टू	४:४६	६:५८	९:१३	११:२९	१:३५	३:२१	४:५४	६:२५	८:०५	१०:०४	१२:१८	२:३४	७,८,९,१०,११,१,२,३,४,
०९ अक्टू	४:४२	६:५४	९:०९	११:२५	१:३१	३:१७	४:५०	६:२१	८:०१	९:६०	१२:१४	२:३०	७,८,९,१०,१,२,३,४,
१० अक्टू	४:३९	६:५०	९:०५	११:२१	१:२७	३:१३	४:४६	६:१७	७:५७	९:५६	१२:१०	२:२६	७,९,१,२,४,
११ अक्टू	४:३५	६:४६	९:०१	११:१७	१:२३	३:०९	४:४३	६:१३	७:५३	९:५२	१२:०६	२:२२	७,९,१०,१,२,४,
१२ अक्टू	४:३१	६:४२	८:५७	११:१३	१:१९	३:०६	४:३९	६:०९	७:५०	९:४८	१२:०२	२:१८	७,९,१०,१,२,३,४,
१३ अक्टू	४:२७	६:३८	८:५३	११:०९	१:१५	३:०२	४:३५	६:०५	७:४६	९:४४	११:५८	२:१४	७,९,१०,११,१,२,३,४
१४ अक्टू	४:२३	६:३४	८:४९	११:०५	१:११	२:५८	४:३१	६:०१	७:४२	९:४०	११:५४	२:१०	७,९,१०,११,१,२,४
१५ अक्टू	४:१९	६:३०	८:४५	११:०२	१:०७	२:५४	४:२७	५:५७	७:३८	९:३६	११:५०	२:०७	७,९,११,१,२,४,
१६ अक्टू	४:१५	६:२६	८:४१	१०:५८	१:०३	२:५०	४:२३	५:५३	७:३४	९:३२	११:४६	२:०३	७,९,१०,११,२,३,
१७ अक्टू	४:११	६:२२	८:३७	१०:५४	१२:५९	२:४६	४:१९	५:५०	७:३०	९:२८	११:४२	१:५९	७,९,११,३,६,
१८ अक्टू	४:०७	६:१८	८:३३	१०:५०	१२:५५	२:४२	४:१५	५:४६	७:२६	९:२४	११:३८	१:५५	७,९,१२,१,२,४,
१९ अक्टू	४:०३	६:१४	८:२९	१०:४६	१२:५१	२:३८	४:११	५:४२	७:२२	९:२०	११:३४	१:५१	९,१०,१२,१,२,४,
२० अक्टू	३:५९	६:१०	८:२५	१०:४२	१२:४७	२:३४	४:०७	५:३८	७:१८	९:१६	११:३०	१:४७	९,१०,१२,१,२,४,
२१ अक्टू	३:५५	६:०६	८:२१	१०:३८	१२:४३	२:३०	४:०३	५:३४	७:१४	९:१२	११:२६	१:४३	९,१०,१२,१,२,६,

तिथि २
बुधवार
इष्ट ०।०

७ मं.बु.
५ शु.के.
८
६ सू.
४
९
卐
३ गु.
१०
१२ श.
२
११ रा.
१ चं.

तुला संक्रान्ति फलम्- कार्तिक कृष्ण ११ शुक्रवासरे दिन १:४९ समये तुलासंक्रान्ति प्रवेशः तस्य पुण्यकाल आज। वार नाम मिश्रा संज्ञक संक्रांति पशुपालक एवं तत्संबंधी उत्पादकों को लाभकारी है। तस्य काले मघानक्षत्र नाम घोरा संज्ञक संक्रांति निर्धनवर्ग को सुखद। मुहूर्त्त ३० अनाज मूल्य समता। कौलव करण फल- वराह वाहनं, वृष उपवाहनं, हरित वस्त्रं, खड्ग आयुधं, ताम्र पात्रं, भिक्षा भक्षणं, चंदन लेपनं, सर्प वर्ण, मौलश्री पुष्पं, मोती भूषणं, हरित कंचुकी, कुमारी अवस्था, उतिष्टा स्थिति। मंहगाई भाव सूचक। तेल तिल रूई कपास के सस्ते होने की संभावना है। कार्तिककृष्ण ७ विशाखायां भाम गेहूं कपास महंगे। कार्तिककृष्ण १० विशाखयां बुध - व्याधिर्भयंचदुर्भिक्षंकिंचित्कुत्रापिजायते।। विशाखा में हो तो सुभिक्ष हो। कहीं व्याधि भय और दुर्भिक्ष भी हो।।

तिथि ९
बुधवार
इष्ट ०।०

७ मं.बु.
५ के
८
६ सू.शु.
४ चं.
९
卐
३ गु.
१०
१२ श.
२
११ रा.
१

१५	तिथि			नक्षत्र			योग			करण (प्रातः एवं सायंकाल में)				चन्द्रमा राशि समाप्ती काल			श्री सूर्य					आनंदादि योग	दिनांक	(कृपया ध्यान रखें कि इस वर्ष चंद्र राशि का समाप्ती काल दिया है)। गुरु उदयपूर्वे:। शुक्र उदयपूर्वे: । मूल निवास भूमि
तिथि	वार	घटिपल	घंटामिनट	नक्षत्र	घटिपल	घंटामिनट	योग	घटिपल	घंटामिनट	प्रातः	घटिपल	घंटामिनट	सायं	राशि	घटिपल	घंटामिनट	दिनमान	सू.उ.	अस्त	उदयकालीन स्पष्ट	गति			पक्षारंभिक नक्षत्र-चित्रायां रविः, विशाखायां भौमः, विशाखायां वुधः, पुनर्वसे गुरौ, हस्ते शुक्रः, पूर्वभाद्रपदे शनिः, पूर्वभाद्रपदे राहु, पूर्वाफाल्गुण्यां केतु।
१	बु.	३४।४८	रा.८:२०	स्वा	४८।४३	रा. १:५४	प्रीति	५४।१८	रा.४:०८	किंस्तु	१।४७	प्रा.७:०८	बव	तुला	--	दिनरात	२८।२३	६:२५	५:४६	६।०४।३९।४०	६०	धूम्र	२२ अक्टू	गोवर्धन पूजा, अन्नकूट। (&) २:३२ तक । अमृतसिद्धि दिन १२:३२ से रातअंत। भद्रा रात्रि १०:३४ से रात्रिअंत (भूमि)।
२	गु.	४०।५९	रा.१०:४९	विशा	५६।९	रा. ४:५३	आयु	५६।३१	रा.५:०२	बाल	७।५१	दि.९:३४	कौल	तुला	३९।१७	रा. १०:०८ तक	२८।२०	६:२५	५:४५	६।०५।३९।२४	६०	प्रवर्ध	२३ अक्टू	यम द्वितीया,भाई दोज। चित्रगुप्त पूजन। रवियोग रात्रि ४:५३ से रात्रिअंत। सर्वार्थसिद्धी रात्रि ४:५३ से रातअंत। मंगल अस्त पश्चिमे सायं- १८:५४ समये।
३	शु.	४७।१८	रा.१:२१	अनु	६०।०	वृद्धि	सौभ	५८।४७	रा.५:५७	तैति	१४।८	दि.१२:०५	गर	वृश्चिक	--	दिनरात	२८।१६	६:२६	५:४५	६।०६।३९।१०	६०	राक्षस	२४ अक्टू	मूल वृद्धि दिनरात से रातअंत। रवियोग सू.उ.से प्रातः ६:४६ तक। सर्वार्थसिद्धी रात्रि ७:५३ पर्यन्त। स्वाते रवि प्रातः ६:४६ समये। वृश्चिके बुधः दिन १२:३६ समये।
४	श.	५३।२८	रा.३:५०	अनु	३।३८	प्रा. ७:५४	शोभ	६०	वृद्धि	वणि	२०।२४	दि.२:३६	भद्रा	वृश्चिक	--	दिनरात	२८।१३	६:२६	५:४४	६।०७।३८।५७	६०	अमृत	२५ अक्टू	विनायकी श्री गणेश ४ व्रतं। नागव्रत। मूल प्रातः ७:५४ से रातअंत। रवियोग प्रातः ७:५४ से रात्रिअंत। भद्रा दिन २:३६ से रात्रि ३:५० (स्वर्ग)।
५	र.	५९।०९	रा.६:०७	ज्ये	१०।५२	दि. १०:४८	शोभ	०।५३	प्रा.६:४८	बव	२६।२०	दि.४:५९	बाल	वृश्चिक	१०।५२	दि. १०:४८ तक	२८।१०	६:२७	५:४३	६।०८।३८।४७	६०	काण	२६ अक्टू	जयापंचमी, पांडवपंचमी। मूल दिनरात। रवियोग सू.उ.से दिन १०:४८ तक । सर्वार्थसिद्धी दिन १०:४८ से रातअंत।
६	चं.	६०।००	वृद्धि	मूल	१७।३१	दि. १:२८	अति	२।३३	प्रा.७:२९	कौल	२७।३६	रा ७:०५	तैति	धनु	××	दिनरात	२८।०७	६:२७	५:४२	६।०९।३८।३८	६०	लुंबक	२७ अक्टू	मूल सू.उ.से दिन १:२८ तक। रवियोग दिन १:२८ से रात्रिअंत। वृश्चिके भौमः दिन ३:२४ समये। अनुराधायां वुधः दिन ९:३३ समये। चित्रायां शुक्रः रात्रि ५:०८ समये।
६	मं.	३।५३	दि.८:०१	पू.षा	२३।९	दि. ३:४४	सुक	३।३१	प्रा.७:५२	तैति	३।५३	दि.८:०१	गर	धनु	३९।२३	रा. १०:१३ तक	२८।०४	६:२८	५:४२	६।१०।३८।३२	६०	मित्र	२८ अक्टू	सूर्य षष्ठी। रवियोग सू.उ.से दिन ३:४४ तक । ($) रात्रि ८:१९ से रात्रिअंत (भूमि)। अनुराधायां भौमः दिन ८:०० समये।
७	बु.	७।१६	दि.९:२३	उ.षा	२७।२६	सा. ५:२७	धृति	३।२९	प्रा.७:५२	वणि	७।१६	दि.९:२३	भद्रा	मकर	××	दिनरात	२८।०१	६:२९	५:४१	६।११।३८।२८	६०	वज्र	२९ अक्टू	शाक सप्तमी, पूषा सप्तमी, कल्पादि तिथि। भद्रा दिन ९:२३ से रात्रि ९:४७ (पाताल)।
८	गु.	८।५९	दि.१०:०५	श्रव	२९।६०	सा. ६:२९	शूल, गंड़	२।१२, ५९।५८	प्रा.७:२२, रा.६:२१	बव	८।५९	दि.१०:०५	बाल	मकर	××	दिनरात	२७।५८	६:२९	५:४०	६।१२।३८।२५	६०	ध्वज	३० अक्टू	मासिक दुर्गाष्टमी व्रत। गोप अष्टमी। आंवला (अक्षय) नवमी। रवियोग सायं ६:२९ से रात्रिअंत। क्रांतिसाम्य रात्रि १:०४ से रात्रि ५:२३।
९	शु.	८।४७	दि.१०:०१	धनि	३०।३८	सा. ६:४५	बृद्धि	५४।६०	रा.४:२९	कौल	८।४७	दि.१०:०१	तैति	मकर	०।४८	प्रा. ६:४९ तक	२७।५५	६:३०	५:४०	६।१३।३८।२४	६०	धाता	३१ अक्टू	पंचक प्रारंभ प्रा. ६:४९ तक समये। रवियोग दिनरात। (#) भद्रा सू.उ.से प्रातः ७:२९(भूमि)। तुलायां शुक्रः दिन १:११ समये।
१०	श.	६।३५	दि.९:०८	शत	२९।१७	सा. ६:१३	ध्रुव	४८।५६	रा.२:०४	गर	६।३५	दि.९:०८	वणि	कुंभ	××	दिनरात	२७।५२	६:३०	५:३९	६।१४।३८।२६	६०	आनंद	०१ नव	देवप्रवोधिनी एकादशी व्रत स्मार्त। आशा दशमी। कंस वध दिवस। मन्वादि तिथि। पंचक दिनरात। रवियोग सू.उ.से सायं ६:१३ तक । भद्रा ($)
११,१२	र.	२।२५, ५६।२१	प्रा.७:२१,रा ५:०७	पू.भा	२६।३	दि. ४:५६	व्या	४१।२४	रा.११:०४	भद्रा	२।२५	प्रा.७:२१	बव	कुंभ	१२।०७	दि. ११:२१ तक	२७।४९	६:३१	५:३८	६।१५।३८।२९	६०	चर	०२ नव	देवप्रवोधिनी एकादशी व्रत वैष्णव। तुलसी विवाह। श्री कालीदास ज.। मन्वादि तिथि। पंचक दिनरात। सर्वार्थसिद्धी दिन ४:५६ से रातअंत। (#)
१३	चं.	४८।४६	रा.२:०२	उ.भा	२१।११	दि. २:६०	हर्ष	३२।३७	रा.७:३४	कौल	२२।३७	दि.३:३४	तैति	मीन	××	दिनरात	२७।४६	६:३१	५:३८	६।१६।३८।३४	६०	गद	०३ नव	सोमप्रदोष व्रतं। पंचक दिनरात। मूल दिन २:६० से रातअंत। रवियोग दिन २:६० से रात्रिअंत।
१४	मं.	४०।०६	रा.१०:३४	रेव	१५।०	दि. १२:३२	वज्र	२२।५१	दि.३:४०	गर	१४।३४	दि.१२:२१	वणि	मीन	१५।००	दि. १२:३२ तक	२७।४३	६:३२	५:३७	६।१७।३८।४१	६०	शुभ	०४ नव	वैकुण्ठ चतुर्दशी। पाषाण चतुर्दशी। जैन चतुर्मास समाप्त। ब्रह्मकूर्च। पंचक समाप्त दि. १२ :३२ समये। मूल दिनरात। रवियोग सू.उ.से दिन (&)
१५	बु.	३०।४६	सा.६:५१	अश्वि	७।५३	दि. ९:४२	सिद्धि	१२।२३	दि.११:३०	भद्रा	५।३४	दि.८:४६	बव	मेष	××	दिनरात	२७।४१	६:३२	५:३७	६।१८।३८।५०	६०	मृत्यु	०५ नव	पूर्णिमा। गुरुनानक जयंती। मन्वादि तिथि। मूल सू.उ.से दिन ९:४२ तक। भद्रा सू.उ.से दिन ८:४६ (स्वर्ग)। व्यतिपात् दि.११:३० वजे तक। से रातअंत।

सूर्योदयकालीन दैनिक ग्रह स्पष्ट । ग्रह गति कलाओं में दी गई है। पक्षारंभिक अयनांश २४-१३-०६

तिथि		चन्द्र		मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		राहु	चंद्र उदयास्त समय: उदय	अस्त
वार		राशि अंश कला वि.	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-वक्री	गति	वक्र गति ३ कला	दिन	रात
१	बु.	६।१०।२०।१५	७१४	६।२६।१२।३३	४२	६।२७।१२।६०	७५	३।००।१५।०६	४	५।१५।५५।०४	७५	११।०२।०५।०१	३	१०।२१।४२।२५	७:१०	६:२६
२	गु.	६।२२।१४।१२	७१२	६।२६।५४।४५	४२	६।२८।२८।१	७४	३।००।१८।५७	४	५।१७।०९।५०	७५	११।०२।०१।३३	३	१०।२१।३९।१४	७:५९	६:५९
३	शु.	७।०४।०५।४२	७११	६।२७।३७।१	४२	६।२९।४१।३१	७२	३।००।२२।३७	३	५।१८।२४।३८	७५	११।०१।५८।१०	३	१०।२१।३६।०३	८:४९	७:३६
४	श.	७।१५।५६।४७	७१३	६।२८।१९।२०	४२	७।०।५३।२२	७०	३।००।२६।०७	३	५।१९।३९।२८	७५	११।०१।५४।५१	३	१०।२१।३२।५२	९:३९	८:१७
५	र.	७।२७।४९।५२	७१८	६।२९।१।४३	४२	७।२।३।२६	६८	३।००।२९।२५	३	५।२०।५४।११	७५	११।०१।५१।३७	३	१०।२१।२९।४१	१०:२८	९:०२
६	चं.	८।०९।४७।५७	७२७	६।२९।४४।१०	४३	७।३।११।३०	६६	३।००।३२।३२	३	५।२२।०९।१३	७५	११।०१।४८।२७	३	१०।२१।२६।३१	११:१४	९:५१
६	मं.	८।२१।५४।३७	७३९	७।०।२६।४१	४३	७।४।१७।२४	६३	३।००।३५।२८	३	५।२३।२४।०८	७५	११।०१।४५।२२	३	१०।२१।२३।२०	११:५७	१०:४३
७	बु.	९।०४।१४।०२	७५७	७।१।९।१५	४३	७।५।२०।५३	६१	३।००।३८।१३	३	५।२४।३९।०४	७५	११।०१।४२।२२	३	१०।२१।२०।०९	१२:३७	११:३७
८	गु.	९।१६।५०।४६	७७९	७।१।५१।५३	४३	७।६।२१।४१	५८	३।००।४०।४७	२	५।२५।५४।०३	७५	११।०१।३९।२७	३	१०।२१।१६।५८	१:१४	१२:३२
९	शु.	९।२९।४९।२२	८०४	७।२।३४।३४	४३	७।७।१९।३२	५५	३।००।४३।०९	२	५।२७।०९।०२	७५	११।०१।३६।३७	३	१०।२१।१३।४७	१:४८	१:२९
१०	श.	१०।१३।१३।४२	८३३	७।३।१७।२०	४३	७।८।१४।३	५१	३।००।४५।२०	२	५।२८।२४।०४	७५	११।०१।३३।५२	३	१०।२१।१०।३६	२:२२	२:२७
११,१२	र.	१०।२७।०६।१२	८६१	७।४।०।८	४३	७।९।४।५४	४७	३।००।४७।१९	२	५।२९।३९।०६	७५	११।०१।३१।१३	३	१०।२१।०७।२६	२:५७	३:२८
१३	चं.	११।११।२७।०२	८८६	७।४।४३।१	४३	७।९।५१।३८	४२	३।००।४९।०६	२	६।००।५४।११	७५	११।०१।२८।३९	२	१०।२१।०४।१५	३:३५	४:३३
१४	मं.	११।२६।१३।२४	९०६	७।५।२५।५७	४३	७।१०।३३।४६	३७	३।००।५०।४२	१	६।०२।०९।१६	७५	११।०१।२६।१०	२	१०।२१।०१।०४	४:१६	५:४३
१५	बु.	०।११।११।२४	९१७	७।६।८।५७	४३	७।११।१०।४८	३१	३।००।५२।०६	१	६।०३।२४।२३	७५	११।०१।२३।४६	२	१०।२०।५७।५३	५:०४	६:५७

लग्न प्रारंभ समय (भारतीय स्टेंडर्ड समय)

दिनांक	प्रातः पूर्व	प्रातः	दिन				सायं	रात्रि					शुभ बली लग्नें
	तुलायां	वृश्चिके	धनुषे	मकरे	कुंभे	मीने	मेषे	वृषे	मिथुने	कर्के	सिंहे	कन्यायां	इन लग्नों में गुरु, शुक्र या बुध केन्द्र त्रिकोण में होने से दोष समूह नाशक सुयोग।
२२ अक्टू	६:०२	८:१८	१०:३४	१२:३९	२:२६	३:५९	५:३०	७:१०	९:०९	११:२२	१:३९	३:५१	९,१०,१२,१,२,६,
२३ अक्टू	५:५८	८:१४	१०:३०	१२:३५	२:२२	३:५५	५:२६	७:०६	९:०५	११:१८	१:३५	३:४७	९,१०,१२,२,६,
२४ अक्टू	५:५५	८:१०	१०:२६	१२:३२	२:१८	३:५१	५:२२	७:०२	९:०१	११:१४	१:३१	३:४३	९,१०,१२,२,६,
२५ अक्टू	५:५१	८:०६	१०:२२	१२:२८	२:१४	३:४७	५:१८	६:५८	८:५७	११:११	१:२७	३:३९	१०,३,
२६ अक्टू	५:४७	८:०२	१०:१८	१२:२४	२:१०	३:४३	५:१४	६:५४	८:५३	११:०७	१:२३	३:३५	१०,१२,३,४,
२७ अक्टू	५:४३	७:५८	१०:१४	१२:२०	२:०६	३:३९	५:१०	६:५०	८:४९	११:०३	१:१९	३:३२	९,१२,३,४,६,
२८ अक्टू	५:३९	७:५४	१०:१०	१२:१६	२:०२	३:३५	५:०६	६:४६	८:४५	१०:५९	१:१५	३:२८	८,१०,१२,१,३,४,६,
२९ अक्टू	५:३५	७:५०	१०:०६	१२:१२	१:५९	३:३२	५:०२	६:४२	८:४१	१०:५५	१:११	३:२४	८,१०,१२,१,३,४,६,
३० अक्टू	५:३१	७:४६	१०:०२	१२:०८	१:५५	३:२८	४:५८	६:३९	८:३७	१०:५१	१:०७	३:२०	९,१०,१,३,४,६,
३१ अक्टू	५:२७	७:४२	९:५८	१२:०४	१:५१	३:२४	४:५४	६:३५	८:३३	१०:४७	१:०३	३:१६	९,१०,१,२,३,६,
०१ नव	५:२३	७:३८	९:५४	११:६०	१:४७	३:२०	४:५०	६:३१	८:२९	१०:४३	१२:५९	३:१२	१०,१२,२,३,६,
०२ नव	५:१९	७:३४	९:५१	११:५६	१:४३	३:१६	४:४६	६:२७	८:२५	१०:३९	१२:५६	३:०८	१०,१२,२,३,६,
०३ नव	५:१५	७:३०	९:४७	११:५२	१:३९	३:१२	४:४२	६:२३	८:२१	१०:३५	१२:५२	३:०४	८,१०,१२,१,२,३,
०४ नव	५:११	७:२६	९:४३	११:४८	१:३५	३:०८	४:३९	६:१९	८:१७	१०:३१	१२:४८	२:६०	८,१०,१२,१,३,४,
०५ नव	५:०७	७:२२	९:३९	११:४४	१:३१	३:०४	४:३५	६:१५	८:१३	१०:२७	१२:४४	२:५६	८,१०,१२,३,४,

तिथि १
बुधवार
इष्ट ०।०

८ | ६ शु. | ९ | ७ सू.चं.मं.बु. | ५ के. | १० | 卐 | ४ गु. | ११ रा. | १ | ३ | १२ श. | २

कार्तिकशुक्ल १० अनुराधायां भौम सुभिध्क्ष,पशुओं में रह्रोग। कार्तिकशुक्ल ६ अनुराधायां बुध - सुभिक्षमनुराधायांपक्षिपीड़ाप्रजासुखम्। अनुराधा में सुभिक्ष हो, पशुओं में पीड़ा हो, मनुष्यों को सुख हो।

तिथि ७
बुधवार
इष्ट ०।०

८ मं.बु. | ६ शु. | ९ | ७ सू. | ५ के | १० चं. | 卐 | ४ गु. | ११ रा. | १ | ३ | १२ श. | २

मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष। शुभ विक्रम संवत् २०८२ शकः १९४७। सिद्धार्थ संवत्सर। कलियुग संवत् ५१२६। हेमन्त ऋतुः। श्री सूर्य दक्षिणायन-दक्षिणगोले। नवम्बर ईसवी सन् २०२५। नवम्बर। वंगला सन् १४३२ । वीर निर्वाण संवत् २५५२।

१५		तिथि		नक्षत्र			योग			करण (प्रातः एवं सायंकाल में)				चन्द्रमा राशि समाप्ती काल		
तिथि	वार	घटिपल	घंटामिनट	नक्षत्र	घटिपल	घंटामिनट	योग	घटिपल	घंटामिनट	प्रातः	घटिपल	घंटामिनट	सायं	राशि	घटिपल	घंटामिनट
१	गु.	२१।११	दि.३:०१	भर, कृत्ति	०:१४।५२:३३	प्रा. ६:३९, रा.३:३४	व्यति, वरी	१।३१, ५९।४८	प्रा.७:०९, रा.६:२८	कौल	२१।११	दि.३:०१	तैति	मेष	१३।१९	दि. ११:५३ तक
२	शु.	११।४२	दि.११:१५	रोहि	४५।२१	रा. १२:४२	परि	४०।६	रा.१०:३६	गर	११।४२	दि.११:१५	वणि	वृष	--	दिनरात
३,४	श.	२।४५, ५४।४६	प्रा.७:४०,रा ४:२१	मृग	३९।५	रा. १०:१२	शिव	३०।१८	सा.६:४२	भद्रा	२।४५	प्रा.७:४०	बव	वृष	१२।०३	दि. ११:२४ तक
५	र.	४८।३७	रा.२:०२	आर्द्रा	३४।७	रा. ८:१४	सिद्ध	२१।३०	दि.३:११	कौल	२१।४२	दि.३:१६	तैति	मिथुन	--	दिनरात
६	चं.	४४।०५	रा.१२:१३	पुन	३०।४८	सा. ६:५५	साध्य	१३।५७	दि.१२:१०	गर	१६।८	दि.१:०३	वणि	मिथुन	१६।२४	दि. १:०९ तक
७	मं.	४१।३१	रा.११:१३	पुष्य	२९।२६	सा. ६:२२	शुभ	७।५५	दि.९:४६	भद्रा	१२।२९	दि.११:३६	बव	कर्क	××	दिनरात
८	बु.	४१।०२	रा.११:०१	श्ले	३०।५	सा. ६:३९	शुक्ल	३।३२	दि.८:०२	बाल	१०।५६	दि.१०:५९	कौल	कर्क	३०।०५	सा. ६:३९ तक
९	गु.	४२।३०	रा.११:३७	मघा	३२।४०	रा. ७:४२	ब्रह्म, ऐंद्र	०।४८, ५९।५९	प्रा.६:५७, रा.६:३७	तैति	११।२८	दि.११:१३	गर	सिंह	××	दिनरात
१०	शु.	४५।४०	रा.१२:५४	पू.फा.	३६।५७	रा. ९:२५	वैधृ	५९।३२	रा.६:२७	वणि	१३।५२	दि.१२:११	भद्रा	सिंह	५३।१०	रा. ३:५४ तक
११	श.	५०।०९	रा.२:४२	उ.फा.	४२।३२	रा. ११:३९	विष्कु	६०	वृद्धि	बव	१७।४७	दि.१:४५	बाल	कन्या	××	दिनरात
१२	र.	५५।३४	रा.४:५३	हस्त	४९।१	रा. २:१६	विष्कु	०।२६	प्रा.६:५०	कौल	२२।४८	दि.३:४७	तैति	कन्या	××	दिनरात
१३	चं.	६०।००	वृद्धि	चित्रा	५६।५	रा. ५:०६	प्रीति	१।५८	प्रा.७:२७	गर	२६।६०	सा.६:०५	वणि	कन्या	२२।३१	दि. ३:४० तक
१३	मं.	१।३२	प्रा.७:१८	स्वा	६०।०	वृद्धि	आयु	३।५२	दि.८:१४	वणि	१।३२	प्रा.७:१८	भद्रा	तुला	××	दिनरात
१४	बु.	७।४७	दि.९:४८	स्वा	३।२५	दि. ८:०३	सौभ	५।५७	दि.९:०४	शकु	७।४७	दि.९:४८	चतु	तुला	५३।५८	रा. ४:१७ तक
३०	गु.	१४।०४	दि.१२:२०	विशा	१०।४८	दि. ११:०१	शोभ	८।३	दि.९:५५	नाग	१४।४	दि.१२:२०	किंस्तु	वृश्चिक	××	दिनरात

तिथि	वार	श्री सूर्य दिनमान	सू.उ.	अस्त	उदयकालीन स्पष्ट	गति	आनंदादि योग	दिनांक	(कृपया ध्यान रखें कि इस वर्ष चंद्र राशि का समाप्ती काल दिया है)। गुरु उदयपूर्वेः। शुक्र उदयपूर्वेः। मूल निवास पाताले। पक्षारंभिक नक्षत्र-स्वाते रविः, अनुराधायां भौमः, अनुराधायां वुधः, पुनर्वसे गुरौ, चित्रायां शुक्रः, पूर्वभाद्रपदे शनिः, पूर्वभाद्रपदे राहु, पूर्वाफाल्गुण्यां केतु।
१	गु.	२७।३८	६:३३	५:३६	६।१९।३९।००	६०	पद्म	०६ नव	धन्य व्रतारंभ। व्यतिपात् सू.उ.से प्रा.७:०९ वजे तक। विशाखायां रवि दिन २:५५ समये।
२	शु.	२७।३५	६:३४	५:३६	६।२०।३९।१३	६०	मित्र	०७ नव	भद्रा रात्रि ९:२६ से रात्रिअंत (स्वर्ग)। स्वाते शुक्रः रात्रि ९:०२ समये।
३,४	श.	२७।३२	६:३४	५:३५	६।२१।३९।२७	६०	वज्र	०८ नव	संकष्टी श्री गणेश ४ व्रतं। भद्रा सू.उ.से प्रातः ७:४०(स्वर्ग)।
५	र.	२७।२९	६:३५	५:३५	६।२२।३९।४३	६०	ध्वांक्ष	०९ नव	
६	चं.	२७।२७	६:३६	५:३४	६।२३।४०।०१	६०	धूम्र	१० नव	रवियोग सायं ६:५५ से रात्रिअंत। सर्वार्थसिद्धी सायं ६:५५ से रातअंत। भद्रा रात्रि १२:१३ से रात्रिअंत (भूमि)। बुध वक्री प्रातः १:०५ समये
७	मं.	२७।२४	६:३६	५:३४	६।२४।४०।२१	६०	प्रवर्ध	११ नव	कालभैरव जयंती। सर्वार्थसिद्धी, मूल सायं. ६:२२ से रातअंत। रवियोग सू.उ.से सायं ६:२२ तक, क्रांतिसाम्य दिन ३:४८ से रात्रि ८:०३। (A)
८	बु.	२७।२२	६:३७	५:३३	६।२५।४०।४२	६०	राक्षस	१२ नव	काल भैरव अष्टमी। मूल दिनरात। बुध अस्त पश्चिमेः सायं ६:२८ समये। (A) भद्रा सू.उ.से दिन ११:३६(भूमि)।
९	गु.	२७।१९	६:३७	५:३३	६।२६।४१।०५	६०	मुसल	१३ नव	मूल सू.उ.से रात ७:४२ तक।
१०	शु.	२७।१६	६:३८	५:३३	६।२७।४१।३०	६०	सिद्धि	१४ नव	सिद्धयोग रात्रि ९:२५ पर्यन्त। भद्रा दिन १२:११ से रात्रि १२:५४ (पाताल)। वैधृति सू.उ.से रा.६:२७ वजे तक।।
११	श.	२७।१४	६:३९	५:३२	६।२८।४१।५६	६०	उत्पात	१५ नव	उत्पन्ना एकादशी व्रत सर्वे।
१२	र.	२७।१२	६:३९	५:३२	६।२९।४२।२४	६०	मानस	१६ नव	वृश्चिके रवि दिन १:३८ समये। पुण्यकाल आज। द्विपुष्कर योग रातअंत २।१६ से से रात्रि ४:५३ तक। अमृतसिद्धि रात्रि २:१६ पर्यन्त।
१३	चं.	२७।०९	६:४०	५:३२	७।००।४२।५३	६१	मुद्गर	१७ नव	सोमप्रदोष व्रतं।
१३	मं.	२७।०७	६:४१	५:३१	७।०१।४३।२५	६१	ध्वज	१८ नव	मासिक शिवरात्रि व्रतं। भद्रा प्रातः ७:१८ से रात्रि ८:३२ (पाताल)। विशाखायां शुक्रः दिन १२:१३ समये।
१४	बु.	२७।०५	६:४१	५:३१	७।०२।४३।५७	६१	धूम्र	१९ नव	अनुराधायां रवि रात्रि ८:५८ समये। ज्येष्ठायां भौमः रात्रि ७:१३ समये।
३०	गु.	२७।०२	६:४२	५:३१	७।०३।४४।३२	६१	प्रवर्ध	२० नव	अमावस्या। द्वापर युगादि तिथि। सर्वार्थसिद्धी दिन ११:०१ से रातअंत। विशाखायां वुधः रात्रि ४:०२ समये।

सूर्योदयकालीन दैनिक ग्रह स्पष्ट । ग्रह गति कलाओं में दी गई है। पक्षारंभिक अयनांश २४-१३-०८

तिथि		चन्द्र		मंगल		बुध		गुरू		शुक्र		शनि		राहू	चंद्र उदयास्त समय उदय	अस्त
	वार	राशि अंश कला वि.	गति	अस्त-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-वक्री	गति	वक्र गति ३ कला	दिन	रात
१	गु.	०।२६।३६।२३	९१८	७।६।५१।६०	४३	७।११।४२।९	२५	३।००।५३।१९	१	६।०४।३९।३१	७५	११।०१।२१।२८	२	१०।२०।५४।४२	५:६०	७:३१
२	शु.	१।११।५३।५७	९०८	७।७।३५।७	४३	७।१२।७।१२	१८	३।००।५४।२०	१	६।०५।५४।४१	७५	११।०१।१९।१६	२	१०।२०।५१।३१	७:०३	८:४९
३,४	श.	१।२७।०१।३०	८८८	७।८।१८।१७	४३	७।१२।२५।१७	१०	३।००।५५।०८	१	६।०७।०९।५२	७५	११।०१।१७।०९	२	१०।२०।४८।२०	८:१३	१०:०३
५	र.	२।११।४९।४४	८६२	७।९।१।३१	४३	७।१२।३५।४४	२	३।००।५५।४५	०	६।०८।२५।०३	७५	११।०१।१५।०९	२	१०।२०।४५।०९	९:२७	११:१०
६	चं.	२।२६।१२।०८	८३३	७।९।४४।४९	४३	७।१२।३७।५०	-७	३।००।५६।१०	०	६।०९।४०।१६	७५	११।०१।१३।१४	२	१०।२०।४१।५९	१०:३८	१२:०९
७	मं.	३।१०।०५।२८	८०४	७।१०।२८।१०	४३	७।१२।३०।५८	-१६	३।००।५६।२३	०	६।१०।५५।३१	७५	११।०१।११।२४	२	१०।२०।३८।४८	११:४५	१२:५८
८	बु.	३।२३।२९।५२	७७८	७।११।११।३५	४३	७।१२।१४।३३	-२६	३।००।५६।२४	०	६।१२।१०।४६	७५	११।०१।०९।४१	२	१०।२०।३५।३७	१२:४७	१:३९
९	गु.	४।०६।२८।०६	७५६	७।११।५५।३	४४	७।११।४८।१०	-३७	३।००।५६।१३	०	६।१३।२६।०२	७५	११।०१।०८।०४	२	१०।२०।३२।२६	१:४३	२:१४
१०	शु.	४।१९।०४।३४	७४०	७।१२।३८।३५	४४	७।११।११।३४	-४७	३।००।५५।५०	१	६।१४।४१।१९	७५	११।०१।०६।३३	१	१०।२०।२९।१५	२:३५	२:४६
११	श.	५।०१।२४।१४	७२८	७।१३।२२।१०	४४	७।१०।२४।५२	-५६	३।००।५५।१६	१	६।१५।५६।३७	७५	११।०१।०५।०८	१	१०।२०।२६।०४	३:२५	३:१६
१२	र.	५।१३।३१।५५	७२०	७।१४।५।४९	४४	७।९।२८।३१	-६५	३।००।५४।२९	१	६।१७।११।५६	७५	११।०१।०३।४८	१	१०।२०।२२।५३	४:१४	३:४४
१३	चं.	५।२५।३१।४०	७१५	७।१४।४९।३२	४४	७।८।२३।२६	-७२	३।००।५३।३०	१	६।१८।२७।१६	७५	११।०१।०२।३६	१	१०।२०।१९।४२	५:०३	४:१४
१३	मं.	६।०७।२६।४३	७१३	७।१५।३३।१७	४४	७।७।११।२	-७८	३।००।५२।१९	१	६।१९।४२।३७	७५	११।०१।०१।२९	१	१०।२०।१६।३१	५:५२	४:४५
१४	बु.	६।१९।१९।२६	७१२	७।१६।१७।७	४४	७।५।५३।१३	-८१	३।००।५०।५६	२	६।२०।५७।५८	७५	११।०१।००।२९	१	१०।२०।१३।२१	६:४२	५:२०
३०	गु.	७।०१।११।३६	७१३	७।१७।०।५९	४४	७।४।३२।११	-८१	३।००।४९।२१	२	६।२२।१३।२०	७५	११।००।५९।३४	१	१०।२०।१०।१०	××	५:५९

लग्न प्रारंभ समय (भारतीय स्टेंडर्ड समय)

दिनांक	प्रातः पूर्व तुलायां	प्रातः वृश्चिके	दिन धनुषे	दिन मकरे	दिन कुंभे	दिन मीने	सायं मेषे	रात्रि वृषे	रात्रि मिथुने	रात्रि कर्के	रात्रि सिंहे	रात्रि कन्यायां	शुभ बली लग्नें (इन लग्नों में गुरु, शुक्र या बुध केन्द्र त्रिकोण में होने से दोष समूह नाशक सुयोग।)
०६ नव	५:०३	७:१८	९:३५	११:४०	१:२७	२:६०	४:३१	६:११	८:०९	१०:२३	१२:४०	२:५२	८,१०,१२,२,३,४,
०७ नव	४:५९	७:१४	९:३१	११:३६	१:२३	२:५६	४:२७	६:०७	८:०५	१०:१९	१२:३६	२:४८	८,१०,१२,१,२,४,
०८ नव	४:५५	७:१०	९:२७	११:३२	१:१९	२:५२	४:२३	६:०३	८:०१	१०:१५	१२:३२	२:४४	८,१०,१२,१,३,
०९ नव	४:५१	७:०७	९:२३	११:२८	१:१५	२:४८	४:१९	५:५९	७:५८	१०:११	१२:२८	२:४०	८,१०,१२,३,
१० नव	४:४७	७:०३	९:१९	११:२४	१:११	२:४४	४:१५	५:५५	७:५४	१०:०७	१२:२४	२:३६	८,१०,१२,२,३,४,
११ नव	४:४४	६:५९	९:१५	११:२१	१:०७	२:४०	४:११	५:५१	७:५०	१०:०३	१२:२०	२:३२	८,१०,१२,२,३,४,
१२ नव	४:४०	६:५५	९:११	११:१७	१:०३	२:३६	४:०७	५:४७	७:४६	९:६०	१२:१६	२:२८	८,१०,१२,३,
१३ नव	४:३६	६:५१	९:०७	११:१३	१२:५९	२:३२	४:०३	५:४३	७:४२	९:५६	१२:१२	२:२४	८,१०,१२,३,
१४ नव	४:३२	६:४७	९:०३	११:०९	१२:५५	२:२८	३:५९	५:३९	७:३८	९:५२	१२:०८	२:२१	८,१०,१२,१,३,
१५ नव	४:२८	६:४३	८:५९	११:०५	१२:५१	२:२४	३:५५	५:३५	७:३४	९:४८	१२:०४	२:१७	८,१०,१२,३,४,
१६ नव	४:२४	६:३९	८:५५	११:०१	१२:४८	२:२१	३:५१	५:३१	७:३०	९:४४	१२:००	२:१३	८,१०,१२,१,२,३,४,७,
१७ नव	४:२०	६:३५	८:५१	१०:५७	१२:४४	२:१७	३:४७	५:२८	७:२६	९:४०	११:५६	२:०९	८,१०,१२,१,२,३,
१८ नव	४:१६	६:३१	८:४७	१०:५३	१२:४०	२:१३	३:४३	५:२४	७:२२	९:३६	११:५२	२:०५	८,१०,१२,१,२,
१९ नव	४:१२	६:२७	८:४३	१०:४९	१२:३६	२:०९	३:३९	५:२०	७:१८	९:३२	११:४८	२:०१	८,१०,१२,२,३,७,
२० नव	४:०८	६:२३	८:४०	१०:४५	१२:३२	२:०५	३:३५	५:१६	७:१४	९:२८	११:४५	१:५७	८,१०,१२,३,६,७

तिथि १ गुरुवार इष्ट ०।०

८ मं.बु.		६
९	७ सू.शु.	५ के.
१०	卐	४ गु.
११ रा.	१ चं.	३
१२ श.		२

वृश्चिक संक्रान्ति फलम्- मार्गशीर्ष कृष्ण १२ रविवासरे दिन १:३८ समये वृश्चिकसंक्रान्ति प्रवेशः तस्य पुण्यकाल आज। वार नाम घोरा संज्ञक संक्रांति दलितवर्ग, निर्धनों, अनुसूचितजाति एवं जनजातीय वर्ग को शुभ है। तस्य काले हस्तनक्षत्र नाम ध्वांक्षी संज्ञक संक्रांति वणिकानाम् सुखदाः। मुहूर्त्त ३० मूल्य साम्यः। कौलव करण फल- वराह वाहनं, वृष उपवाहनं, हरित वस्त्रं, खड्ग आयुधं, ताम्र पात्रं, भिक्षा भक्षणं, चंदन लेपनं, सर्प वर्ण, मौलश्री पुष्पं, मोती भूषणं, हरित कंचुकी, कुमारी अवस्था, उतिष्ठा स्थिति। मंहगाई भाव सूचक। राज्य सरकारों में विद्रोह संकेत। ठंड अधिक पड़े। कपास, सूत, तेल महँगे होंगे। सोना खरीदने से लाभ होगा। मार्गशीर्षकृष्ण १४ ज्येष्ठायां भौम अल्प वृष्टि मार्गशीर्षकृष्ण ३० विशाखयां बुध - व्याधिर्भयंचदुर्भिक्षंकिंचित्कुत्रापिजायते।। विशाखा में हो तो सुभिक्ष हो। कहीं व्याधि भय और दुर्भिक्ष भी हो।।

तिथि ९ गुरुवार इष्ट ०।०

८ मं.बु.		६
९	७ सू.शु.	५ चं.के
१०	卐	४ गु.
११ रा.	१	३
१२ श.		२

१४	तिथि			नक्षत्र			योग			करण (प्रातः एवं सायंकाल में)				चन्द्रमा राशि समाप्ती काल			श्री सूर्य					आनंदादि योग	दिनांक	(कृपया ध्यान रखें कि इस वर्ष चंद्र राशि का समाप्ती काल दिया है)। गुरु उदयपूर्वेः। शुक्र उदयपूर्वेः । मूल निवास पाताले
तिथि	वार	घटिपल	घंटामिनट	नक्षत्र	घटिपल	घंटामिनट	योग	घटिपल	घंटामिनट	प्रातः	घटिपल	घंटामिनट	सायं	राशि	घटिपल	घंटामिनट	दिनमान	सू.उ.	अस्त	उदयकालीन स्पष्ट	गति			पक्षारंभिक नक्षत्र-अनुराधायां रविः, ज्येष्ठायां भौमः, विशाखायां वुधः, पुनर्वसे गुरौ, विशाखायां शुक्रः, पूर्वभाद्रपदे शनिः, पूर्वभाद्रपदे राहु, पूर्वाफाल्गुण्यां केतु।
१	शु.	२०।१३	दि.२:४८	अनु	१८।५	दि. १:५७	अति	१०।५	दि.१०:४५	बव	२०।१३	दि.२:४८	बाल	वृश्चिक	--	दिनरात	२७।००	६:४३	५:३१	७।०४।४५।०७	६१	राक्षस	२१ नव	मूल दिन १:५७ से रातअंत। सर्वार्थसिद्धी दिन १:५७ पर्यन्त।
२	श.	२६।०७	सा.५:१०	ज्ये	२५।६	दि. ४:४६	सुक	११।५५	दि.११:२९	कौल	२६।७	सा.५:१०	तैति	वृश्चिक	२५।०६	दि. ४:४६ तक	२६।५८	६:४३	५:३१	७।०५।४५।४५	६१	मुसल	२२ नव	पितृ पूजन। मूल दिनरात।
३	र.	३१।३५	रा.७:२२	मूल	३१।४३	रा. ७:२५	धृति	१३।२८	दि.१२:०७	गर	३१।३५	रा ७:२२	वणि	धनु	--	दिनरात	२६।५६	६:४४	५:३०	७।०६।४६।२३	६१	सिद्धि	२३ नव	मूल सू.उ.से रात ७:२५ तक। रवियोग रात्रि ७:२५ से रात्रिअंत। सर्वार्थसिद्धी रात्रि ७:२५ पर्यन्त। तुलायां बुधः रात्रि ८:११ समये। शतभिषायां राहु ११:२३ समये।
४	चं.	३६।२५	रा.९:१९	पू.षा	३७।४४	रा. ९:५०	शूल	१४।३५	दि.१२:३५	वणि	४।९	दि.८:२४	भद्रा	धनु	५४।१०	रा. ४:२५ तक	२६।५४	६:४५	५:३०	७।०७।४७।०३	६१	उत्पात	२४ नव	विनायकी श्री गणेश ४ व्रतं। रवियोग सू.उ.से रात्रि ९:५० तक । भद्रा दिन ८:२४ से रात्रि ९:१९ (पाताल)। बुध उदय पूर्वेः प्रातः ६:०४ समये।
५	मं.	४०।२१	रा.१०:५४	उ.षा	४२।५४	रा. ११:५५	गंड़	१५।५	दि.१२:४७	बव	८।३३	दि.१०:११	बाल	मकर	××	दिनरात	२६।५२	६:४५	५:३०	७।०८।४७।४५	६१	मानस	२५ नव	श्री राम विवाहोत्सव। रवियोग रात्रि ११:५५ से रात्रिअंत। क्रांतिसाम्य प्रातः ७:२२ से दिन ११:५१।
६	बु.	४३।०४	रा.११:६०	श्रव	४६।५३	रा. १:३१	बृद्धि	१४।४६	दि.१२:४१	कौल	११।५४	दि.११:३२	तैति	मकर	××	दिनरात	२६।५०	६:४६	५:३०	७।०९।४८।२८	६१	छत्र	२६ नव	चम्पा षष्ठी। रवियोग सू.उ.से रात्रि १:३१ तक । वृश्चिके शुक्रः दिन ११:१७ समये।
७	गु.	४४।१४	रा.१२:२८	धनि	४९।२१	रा. २:३१	ध्रुव	१३।२४	दि.१२:०८	गर	१३।५२	दि.१२:१९	वणि	मकर	१८।१६	दि. २:०५ तक	२६।४८	६:४७	५:३०	७।१०।४९।१२	६१	श्रीवत्स	२७ नव	अंशुमान सप्तमी, मित्र सप्तमी, नन्दा सप्तमी। पंचक प्रारंभ दि. २:०५ तक समये। भद्रा रात्रि १२:२८ से रात्रिअंत (पाताल)। मार्गी शनि रात्रि ५:३३ समये।
८	शु.	४३।३४	रा.१२:१३	शत	५०।३	रा. २:४९	व्या	१०।४४	दि.११:०५	भद्रा	१४।८	दि.१२:२७	बव	कुंभ	××	दिनरात	२६।४६	६:४७	५:३०	७।११।४९।५८	६१	सौम्य	२८ नव	मासिक दुर्गाष्टमी व्रत। बुधाष्टमी। पंचक दिनरात। रवियोग रात्रि २:४९ से रात्रिअंत। भद्रा सू.उ.से दिन १२:२७(भूमि)। अनुराधायां शुक्रः रात्रि २:५५ समये
९	श.	४०।५७	रा.११:११	पू.भा	४८।४९	रा. २:२०	हर्ष	६।३८	दि.९:२७	बाल	१२।३२	दि.११:४९	कौल	कुंभ	३४।१२	रा. ८:२९ तक	२६।४५	६:४८	५:३०	७।१२।५०।४५	६१	कालदंड़	२९ नव	नन्दनी नवमी। पंचक दिनरात। रवियोग दिनरात।
१०	र.	३६।२५	रा.९:२३	उ.भा	४५।४२	रा. १:०६	वज्र, सिद्धि	१।१, ५९।५२	प्रा.७:१३, रा.६:४६	तैति	९।१	दि.१०:२५	गर	मीन	××	दिनरात	२६।४३	६:४९	५:३०	७।१३।५१।३३	६१	स्थिर	३० नव	पदार्थ दशमी व्रतारम्भ। पंचक दिनरात। मूल रात १:०६ से रातअंत। रवियोग सू.उ.से रात्रि १:०६ तक । सर्वार्थसिद्धी रात्रि १:०६ पर्यन्त। (A)
११	चं.	३०।०९	सा.६:५३	रेव	४०।५५	रा. ११:११	व्यति	४५।९	रा.१२:५३	वणि	३।४१	दि.८:१८	भद्रा	मीन	४०।५५	रा. ११:११ तक	२६।४१	६:४९	५:३०	७।१४।५२।२२	६१	मातंग	०१ दिस	मोक्षदा एकादशी व्रत सर्वे। श्री गीता जयंती। पंचक समाप्त रा. ११:११ समये। मूल दिनरात। भद्रा दिन ८:१८ से सायं ६:५३ (भूमि)। व्यतिपात् (B)
१२	मं.	२२।३०	दि.३:५०	अश्वि	३४।४६	रा. ८:४५	वरी	३५।३०	रा.९:०२	बाल	२२।३०	दि.३:५०	कौल	मेष	××	दिनरात	२६।४०	६:५०	५:३०	७।१५।५३।१३	६१	अमृत	०२ दिस	मंगलप्रदोष व्रतं। जनार्दन पूजन। मूल सू.उ.से रात ८:४५ तक। रवियोग रात्रि ८:४५ से रात्रि १:१७ तक । अमृतसिद्धि रात्रि ८:४५ पर्यन्त। (C)
१३	बु.	१३।४७	दि.१२:२२	भर	२७।४२	सा. ५:५५	परि	२५।६	दि.४:५३	तैति	१३।४७	दि.१२:२२	गर	मेष	४०।४९	रा. ११:११ तक	२६।३९	६:५१	५:३०	७।१६।५४।०४	६१	काण	०३ दिस	अनंग त्रयोदशी। शिव चतुर्दशी। रवियोग सायं ५:५५ से रात्रिअंत। सर्वार्थसिद्धी सायं ५:५५ से रातअंत।
१४,१५	गु.	४।२३, ५४।४१	दि.८:३७,रा ४:४५	कृत्ति	२०।५	दि. २:५४	शिव	१४।१५	दि.१२:३४	वणि	४।२३	दि.८:३७	भद्रा	वृष	××	दिनरात	२६।३७	६:५१	५:३०	७।१७।५४।५७	६१	लुंबक	०४ दिस	पूर्णिमा। श्री दत्तात्रेय जयंती। रवियोग सू.उ.से दिन २:५४ तक । भद्रा दिन ८:३७ से सायं ६:४१ (स्वर्ग)।

सूर्योदयकालीन दैनिक ग्रह स्पष्ट । ग्रह गति कलाओं में दी गई है। पक्षारंभिक अयनांश २४-१३-११

तिथि		चन्द्र		मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		राहु	चंद्र उदयास्त समय: उदय	अस्त
वार		राशि अंश कला वि.	गति	अस्त-मार्गी	गति	अस्त-वक्री	गति	उदय-वक्री	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-वक्री	गति	वक्र गति ३ कला	दिन	रात
१	शु.	७।१३।०४।३४	७१५	७।१७।४४।५५	४४	७।३।१०।५८	-७९	३।००।४७।३४	२	६।२३।२८।४३	७५	११।००।५८।४७	१	१०।२०।०६।५९	७:३५	६:१६
२	श.	७।२४।५९।३३	७१८	७।१८।२८।५५	४४	७।१।५१।५१	-७४	३।००।४५।३५	२	६।२४।४४।०७	७५	११।००।५८।०५	१	१०।२०।०३।४८	८:२५	७:००
३	र.	८।०६।५७।४६	७२३	७।१९।१२।५८	४४	७।०।३७।३६	-६७	३।००।४३।२५	२	६।२५।५९।३१	७५	११।००।५७।३०	०	१०।२०।००।३७	९:१३	७:४९
४	चं.	८।१९।००।५०	७३०	७।१९।५७।४	४४	६।२९।३०।३२	-५८	३।००।४१।०२	३	६।२७।१४।५७	७५	११।००।५७।०१	०	१०।१९।५७।२६	९:५७	८:४०
५	मं.	९।०१।१०।५५	७४०	७।२०।४१।१३	४४	६।२८।३२।३४	-४८	३।००।३८।२८	३	६।२८।३०।२२	७५	११।००।५६।३९	०	१०।१९।५४।१५	१०:३७	९:३३
६	बु.	९।१३।३०।५९	७५४	७।२१।२५।२६	४४	६।२७।४५।३	-३६	३।००।३५।४२	३	६।२९।४५।४८	७५	११।००।५६।२३	०	१०।१९।५१।०४	११:१४	१०:२६
७	गु.	९।२६।०४।५२	७७२	७।२२।९।४३	४४	६।२७।८।५०	-२५	३।००।३२।४५	३	७।०१।०१।१५	७५	११।००।५६।१३	०	१०।१९।४७।५३	११:४८	११:२०
८	शु.	१०।०८।५६।५९	७९५	७।२२।५४।२	४४	६।२६।४४।१४	-१३	३।००।२९।३६	३	७।०२।१६।४२	७५	११।००।५६।१०	०	१०।१९।४४।४२	१२:२१	१२:१५
९	श.	१०।२२।११।५०	८२१	७।२३।३८।२५	४४	६।२६।३१।११	-२	३।००।२६।१६	४	७।०३।३२।१०	७५	११।००।५६।१४	०	१०।१९।४१।३२	१२:५५	१:१३
१०	र.	११।०५।५३।०२	८४९	७।२४।२२।५१	४४	६।२६।२९।१७	९	३।००।२२।४४	४	७।०४।४७।३८	७५	११।००।५६।२३	०	१०।१९।३८।२१	१:२९	२:१३
११	चं.	११।२०।०२।२४	८७६	७।२५।७।२०	४५	६।२६।३७।५२	१८	३।००।१९।०१	४	७।०६।०३।०७	७५	११।००।५६।४०	०	१०।१९।३५।१०	२:०७	३:१९
१२	मं.	०।०४।३८।५३	८९९	७।२५।५१।५३	४५	६।२६।५६।११	२७	३।००।१५।०७	४	७।०७।१८।३६	७५	११।००।५७।०३	०	१०।१९।३१।५९	२:५१	४:३०
१३	बु.	०।१९।३८।०३	९१४	७।२६।३६।२९	४५	६।२७।२३।२१	३५	३।००।११।०३	४	७।०८।३४।०६	७५	११।००।५७।३२	१	१०।१९।२८।४८	३:४१	५:४५
१४,१५	गु.	१।०४।५२।१४	९११	७।२७।२१।८	४५	६।२७।५८।२९	४२	३।००।०६।४७	४	७।०९।४९।३६	७६	११।००।५८।०८	१	१०।१९।२५।३७	४:४०	७:०२

लग्न प्रारंभ समय (भारतीय स्टेंडर्ड समय)

दिनांक	प्रातः पूर्व	प्रातः	दिन				सायं	रात्रि					शुभ बली लग्नें
	वृश्चिके	धनुषे	मकरे	कुंभे	मीने	मेषे	वृषे	मिथुने	कर्के	सिंहे	कन्यायां	तुलायां	इन लग्नों में गुरु, शुक्र या बुध केन्द्र त्रिकोण में होने से दोष समूह नाशक सुयोग।
२१ नव	६:१९	८:३६	१०:४१	१२:२८	२:०१	३:३१	५:१२	७:१०	९:२४	११:४१	१:५३	४:०४	८,१०,१२,३,७,
२२ नव	६:१५	८:३२	१०:३७	१२:२४	१:५७	३:२८	५:०८	७:०६	९:२०	११:३७	१:४९	४:००	८,१०,१२,३,४,७,
२३ नव	६:११	८:२८	१०:३३	१२:२०	१:५३	३:२४	५:०४	७:०२	९:१६	११:३३	१:४५	३:५६	८,१०,१२,३,४,७,
२४ नव	६:०७	८:२४	१०:२९	१२:१६	१:४९	३:२०	४:६०	६:५८	९:१२	११:२९	१:४१	३:५२	१०,१२,१,३,४,७,
२५ नव	६:०३	८:२०	१०:२५	१२:१२	१:४५	३:१६	४:५६	६:५४	९:०८	११:२५	१:३७	३:४८	१०,१२,१,३,४,७,
२६ नव	५:५९	८:१६	१०:२१	१२:०८	१:४१	३:१२	४:५२	६:५०	९:०४	११:२१	१:३३	३:४४	१०,१२,१,३,४,७,
२७ नव	५:५६	८:१२	१०:१७	१२:०४	१:३७	३:०८	४:४८	६:४७	९:००	११:१७	१:२९	३:४०	८,१०,१२,१,२,३,७,
२८ नव	५:५२	८:०८	१०:१३	१२:००	१:३३	३:०४	४:४४	६:४३	८:५६	११:१३	१:२५	३:३६	८,१०,१२,१,२,३,६,७,
२९ नव	५:४८	८:०४	१०:१०	११:५६	१:२९	२:६०	४:४०	६:३९	८:५२	११:०९	१:२१	३:३३	८,१०,१२,२,३,७,
३० नव	५:४४	८:००	१०:०६	११:५२	१:२५	२:५६	४:३६	६:३५	८:४९	११:०५	१:१७	३:२९	८,१०,१२,२,३,७,
०१ दिस	५:४०	७:५६	१०:०२	११:४८	१:२१	२:५२	४:३२	६:३१	८:४५	११:०१	१:१३	३:२५	८,१०,१२,१,३,७,
०२ दिस	५:३६	७:५२	९:५८	११:४४	१:१७	२:४८	४:२८	६:२७	८:४१	१०:५७	१:१०	३:२१	८,१०,१२,१,३,४,७,
०३ दिस	५:३२	७:४८	९:५४	११:४०	१:१३	२:४४	४:२४	६:२३	८:३७	१०:५३	१:०६	३:१७	८,१०,१२,२,३,४,७,
०४ दिस	५:२८	७:४४	९:५०	११:३७	१:१०	२:४०	४:२०	६:१९	८:३३	१०:४९	१:०२	३:१३	८,१०,१२,२,३,४,७,

तिथि १
शुक्रवार
इष्ट ०।०

९ | ७ शु. | १० | ८ सू.चं.मं.बु. | ६ | ११ रा. | 卐 | ५ के. | १२ श. | २ | ४ गु. | १ | ३

(A) बुध मार्गी प्रातः -३:२४ समये
(B) सू.उ.से रा.१२:५३ वजे तक।
(C) ज्येष्ठायां रवि रात्रि १:१७ समये।

तिथि ८
शुक्रवार
इष्ट ०।०

९ | ७ बु. | १० | ८ सू.मं.शु. | ६ | ११ चं.रा. | 卐 | ५ के. | १२ श. | २ | ४ गु. | १ | ३

पौष कृष्णपक्ष। शुभ विक्रम संवत् २०८२ शकः १९४७। सिद्धार्थ संवत्सर। कलियुग संवत् ५१२६। हेमन्त ऋतुः। श्री सूर्य दक्षिणायन-दक्षिणगोले। दिसम्बर ईसवी सन् २०२५। दिसम्बर। वंगला सन् १४३२ । वीर निर्वाण संवत् २५५२।

१६	तिथि			नक्षत्र			योग			करण (प्रातः एवं सायंकाल में)				चन्द्रमा राशि समाप्ती काल			श्री सूर्य					आनंदादि	दिनांक	(कृपया ध्यान रखें कि इस वर्ष चंद्र राशि का समाप्ती काल दिया है)। गुरु उदयपूर्वेः। शुक्र उदय-अस्त पूर्वेः १शनौ — मूल निवास भूमि
तिथि	वार	घटिपल	घंटामिनट	नक्षत्र	घटिपल	घंटामिनट	योग	घटिपल	घंटामिनट	प्रातः	घटिपल	घंटामिनट	सायं	राशि	घटिपल	घंटामिनट	दिनमान	सू.उ.	अस्त	उदयकालीन स्पष्ट	गति	योग		पक्षारंभिक नक्षत्र-ज्येष्ठायां रविः, ज्येष्ठायां भौमः, विशाखायां वुधः, पुनर्वसे गुरौ, अनुराधायां शुक्रः, पूर्वभाद्रपदे शनिः, शतभिषायां राहु, पूर्वाफाल्गुण्यां केतु।
१	शु.	४५।२३	रा.१:०१	रोहि	१२।२४	दि. ११:५०	सिद्ध, साध्य	३।१५, ५९।५०	दि.८:१०, रा.६:४९	बाल	२०।२	दि.२:५३	कौल	वृष	३८।४१	रा. १०:२१ तक	२६।३६	६:५२	५:३०	७।१८।५५।५१	६१	मित्र	०५ दिस	गुरु मिथुने रात्रि ७:०२ समये।
२	श.	३६।४७	रा.९:३६	मृग, आर्द्रा	५:४।५८:३६	दि. ८:५४, रा.६:११	शुभ	४२।३२	रा.११:५४	तैति	१०।५७	दि.११:१५	गर	मिथुन	--	दिनरात	२६।३५	६:५३	५:३१	७।१९।५६।४६	६१	वज्र	०६ दिस	द्विपुष्कर योग सूर्योदय से दिन ८:५४ तक। क्रांतिसाम्य रात्रि ५:१५ से रातअंत। वृश्चिके बुधः रात्रि ८:३० समये।
३	र.	२९।२०	सा.६:३७	पुन	५३।३५	रा. ४:१९	शुक्ल	३३।३१	रा.८:१८	वणि	२।४३	प्रा.७:५९	भद्रा	मिथुन	३९।४९	रा. १०:४९ तक	२६।३३	६:५३	५:३१	७।२०।५७।४२	६१	ध्वज	०७ दिस	संकष्टी श्री गणेश ४ व्रतं। रविपुष्य योग रात्रि ४:१९ से रातअंत। भद्रा प्रातः ७:५९ से सायं ६:३७ (स्वर्ग)। क्रांतिसाम्य प्रातः ५:१४ से दिन (A)
४	चं.	२३।२४	दि.४:१६	पुष्य	५०।१६	रा. ३:०१	ब्रह्म	२५।४४	सा.५:१२	बाल	२३।२४	दि.४:१६	कौल	कर्क	--	दिनरात	२६।३२	६:५४	५:३१	७।२१।५८।३९	६१	धाता	०८ दिस	मूल रात ३:०१ से रातअंत। सर्वार्थसिद्धी रात्रि ३:०१ पर्यन्त। सोम पुष्य योग सू उ से रात्रि ३:०१ तक।
५	मं.	१९।२२	दि.२:४०	श्ले	४८।५७	रा. २:२९	ऐंद्र	१९।२८	दि.२:४२	तैति	१९।२२	दि.२:४०	गर	कर्क	४८।५७	रा. २:२९ तक	२६।३१	६:५५	५:३१	७।२२।५९।३७	६१	आनंद	०९ दिस	मूल दिनरात। रवियोग रात्रि २:२९ से रात्रिअंत। सर्वार्थसिद्धी रात्रि २:२९ पर्यन्त। वैघृति दि.२:४२ वजे तक। से रातअंत। अनुराधायां वुधः रात्रि (B)
६	बु.	१७।२९	दि.१:५५	मघा	४९।४४	रा. २:४९	वैधृ	१४।५३	दि.१२:५२	वणि	१७।२९	दि.१:५५	भद्रा	सिंह	××	दिनरात	२६।३०	६:५५	५:३१	७।२४।००।३६	६१	चर	१० दिस	मूल सू.उ.से रात २:४९ तक। रवियोग सू.उ.से रात्रि २:४९ तक । भद्रा दिन १:५५ से रात्रि १:५२ (भूमि)। वैघृति सू.उ.से दि.१२:५२ वजे तक। ।
७	गु.	१७।४९	दि.२:०४	पू.फा.	५२।३६	रा. ३:५८	विष्कु	१२।१	दि.११:४४	बव	१७।४९	दि.२:०४	बाल	सिंह	××	दिनरात	२६।२९	६:५६	५:३२	७।२५।०१।३५	६१	गद	११ दिस	कालाष्टमी व्रतं। (A) ९:१९। मूले धनुषे च भौमः रात्रि ८:०३।
८	शु.	२०।१४	दि.३:०२	उ.फा.	५७।१७	रा. ५:५२	प्रीति	१०।४६	दि.११:१५	कौल	२०।१४	दि.३:०२	तैति	सिंह	८।३७	दि. १०:२३ तक	२६।२९	६:५७	५:३२	७।२६।०२।३६	६१	शुभ	१२ दिस	रूक्मणी अष्टमी। (B) २:२६ समये। ज्येष्ठायां शुक्रः सायं ५:२१ समये।
९	श.	२४।२४	दि.४:४३	हस्त	६०।०	वृद्धि	आयु	१०।५५	दि.११:१९	गर	२४।२४	दि.४:४३	वणि	कन्या	××	दिनरात	२६।२८	६:५७	५:३२	७।२७।०३।३७	६१	मृत्यु	१३ दिस	शुक्र अस्त पूर्वेः प्रातः ६:२९ समये। भद्रा रात्रि ५:४३ से रात्रिअंत (पाताल)।
१०	र.	२९।५१	सा.६:५४	हस्त	३।२८	दि. ८:२१	सौभ	१२।६	दि.११:४८	भद्रा	२९।५१	सा.६:५४	बव	कन्या	३६।५९	रा. ९:४५ तक	२६।२७	६:५८	५:३३	७।२८।०४।३९	६१	मानस	१४ दिस	अमृतसिद्धि दिन ८:२१ पर्यन्त। भद्रा सू.उ.से सायं ६:५४(पाताल)।
११	चं.	३६।०५	रा.९:२४	चित्रा	१०।३४	दि. ११:१२	शोभ	१३।५७	दि.१२:३३	बव	२।५१	दि.८:०७	बाल	तुला	××	दिनरात	२६।२७	६:५८	५:३३	७।२९।०५।४२	६१	मुद्गर	१५ दिस	सफला एकादशी व्रत सर्वे। धनुषे मूले च रवि रात्रि ४:१९ समये।
१२	मं.	४२।३५	रा.१२:०१	स्वा	१८।५	दि. २:१३	अति	१६।७	दि.१:२६	कौल	९।१९	दि.१०:४२	तैति	तुला	××	दिनरात	२६।२६	६:५९	५:३३	८।००।०६।४६	६१	ध्वज	१६ दिस	धनु खरमास प्रारंभ। त्रिपुष्कर योग दिन २।१३ से से रात्रि १२:०१ तक
१३	बु.	४९।०१	रा.२:३६	विशा	२५।३६	सा. ५:१४	सुक	१८।१९	दि.२:१९	गर	१५।४९	दि.१:१९	वणि	तुला	८।४५	दि. १०:२९ तक	२६।२६	६:५९	५:३४	८।०१।०७।५०	६१	धाता	१७ दिस	बुधप्रदोष व्रतं। धनु खरमास। अमृतसिद्धि सायं ५:१४ से रातअंत। भद्रा रात्रि २:३६ से रात्रिअंत (स्वर्ग)।
१४	गु.	५५।०४	रा.५:०१	अनु	३२।५१	रा. ८:०८	धृति	२०।१९	दि.३:०७	भद्रा	२२।४	दि.३:५०	शकु	वृश्चिक	××	दिनरात	२६।२६	६:६०	५:३४	८।०२।०८।५५	६१	आनंद	१८ दिस	मासिक शिवरात्रि व्रतं। धनु खरमास। मूल रात ८:०८ से रातअंत। सर्वार्थसिद्धी रात्रि ८:०८ पर्यन्त। भद्रा सू.उ.से दिन ३:५०(स्वर्ग)।
३०	शु.	६०।००	वृद्धि	ज्ये	३९।३७	रा. १०:५१	शूल	२१।५७	दि.३:४७	चतु	२७।१६	सा.६:०८	नाग	वृश्चिक	३९।३७	रा. १०:५१ तक	२६।२५	७:०	५:३५	८।०३।१०।०१	६१	चर	१९ दिस	अमावस्या।धनु खरमास। मूल दिनरात। ज्येष्ठायां वुधः रात्रि ६:०६ समये।
३०	श.	०।३३	प्रा.७:१४	मूल	४५।४७	रा. १:२०	गंड़	२३।८	दि.४:१६	नाग	०।३३	प्रा.७:१४	किंस्तु	धनु	××	दिनरात	२६।२५	७:१	५:३५	८।०४।११।०७	६१	गद	२० दिस	शनिचरी अमावस्या।धनु खरमास। मूल सू.उ.से रात १:२० तक। क्रांतिसाम्य दिन १०:४५ से दिन ३:१८। शुक्रः धनुषे मूलेश्च प्रातः ७:३८ समये।

सूर्योदयकालीन दैनिक ग्रह स्पष्ट । ग्रह गति कलाओं में दी गई है। पक्षारंभिक अयनांश २४-१३-१३

तिथि		चन्द्र		मंगल		बुध		गुरू		शुक्र		शनि		राहू	चंद्र उदयास्त समय: उदय	अस्त
	वार	राशि अंश कला वि.	गति	अस्त-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-वक्री	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	वक्र गति ३ कला	दिन	रात
१	शु.	१।२०।११।२०	९१३	७।२८।५।५०	४५	६।२८।४०।४५	४९	३।००।०२।२०	५	७।११।०५।०६	७६	११।००।५८।५०	१	१०।१९।२२।२६	५:४७	७:३५
२	श.	२।०५।२४।२०	८९७	७।२८।५०।३५	४५	६।२९।२९।१८	५४	२।२९।५७।४४	५	७।१२।२०।३६	७६	११।००।५९।३८	१	१०।१९।१९।१५	७:००	८:४७
३	र.	२।२०।२१।०१	८७२	७।२९।३५।२४	४५	७।०।२३।२५	५९	२।२९।५२।५६	५	७।१३।३६।०७	७६	११।०१।००।३४	१	१०।१९।१६।०४	८:१५	९:५२
४	चं.	३।०४।५३।२४	८४३	८।०।२०।१५	४५	७।१।२२।२२	६३	२।२९।४७।५९	५	७।१४।५१।३८	७६	११।०१।०१।३५	१	१०।१९।१२।५३	९:२७	१०:४६
५	मं.	३।१८।५६।४७	८१३	८।१।५।१०	४५	७।२।२५।३४	६७	२।२९।४२।५१	५	७।१६।०७।१०	७६	११।०१।०२।४३	१	१०।१९।०९।४२	१०:३३	११:३२
६	बु.	४।०२।२९।५०	७८४	८।१।५०।७	४५	७।३।३२।२८	७०	२।२९।३७।३४	५	७।१७।२२।४१	७६	११।०१।०३।५७	१	१०।१९।०६।३२	११:३३	१२:११
७	गु.	४।१५।३४।११	७६०	८।२।३५।८	४५	७।४।४२।३३	७३	२।२९।३२।०७	६	७।१८।३८।१३	७६	११।०१।०५।१८	१	१०।१९।०३।२१	१२:२८	१२:४४
८	शु.	४।२८।१३।४२	७४०	८।३।२०।१२	४५	७।५।५५।२६	७५	२।२९।२६।३०	६	७।१९।५३।४५	७६	११।०१।०६।४५	२	१०।१९।००।१०	१:१९	१:१५
९	श.	५।१०।३३।२५	७२५	८।४।५।१८	४५	७।७।१०।४३	७७	२।२९।२०।४५	६	७।२१।०९।१७	७६	११।०१।०८।१९	२	१०।१८।५६।५९	२:०९	१:४४
१०	र.	५।२२।३८।४३	७१६	८।४।५०।२८	४५	७।८।२८।६	७९	२।२९।१४।५०	६	७।२२।२४।४९	७६	११।०१।०९।५९	२	१०।१८।५३।४८	२:५८	२:१४
११	चं.	६।०४।३४।४६	७११	८।५।३५।४१	४५	७।९।४७।१७	८१	२।२९।०८।४६	६	७।२३।४०।२२	७६	११।०१।११।४५	२	१०।१८।५०।३७	३:४७	२:४४
१२	मं.	६।१६।२६।०२	७१०	८।६।२०।५६	४५	७।११।८।३	८२	२।२९।०२।३४	६	७।२४।५५।५४	७६	११।०१।१३।३७	२	१०।१८।४७।२६	४:३७	३:१८
१३	बु.	६।२८।१६।११	७१२	८।७।६।१५	४५	७।१२।३०।१२	८३	२।२८।५६।१४	६	७।२६।११।२६	७६	११।०१।१५।३६	२	१०।१८।४४।१५	५:२७	३:५६
१४	गु.	७।१०।०८।०६	७१६	८।७।५१।३६	४५	७।१३।५३।३२	८४	२।२८।४९।४६	७	७।२७।२६।५९	७६	११।०१।१७।४१	२	१०।१८।४१।०४	६:१८	४:३८
३०	शु.	७।२२।०३।५३	७२१	८।८।३६।६०	४५	७।१५।१७।५५	८५	२।२८।४३।१०	७	७।२८।४२।३२	७६	११।०१।१९।५२	२	१०।१८।३७।५३	××	५:२५
३०	श.	८।०४।०४।५९	७२७	८।९।२२।२७	४५	७।१६।४३।१३	८६	२।२८।३६।२६	७	७।२९।५८।०४	७६	११।०१।२२।०९	२	१०।१८।३४।४२	७:०९	५:४५

लग्न प्रारंभ समय (भारतीय स्टेंडर्ड समय)

दिनांक	प्रातः पूर्व: वृश्चिके	प्रातः: धनुषे	दिन: मकरे	दिन: कुंभे	दिन: मीने	दिन: मेषे	सायं: वृषे	रात्रि: मिथुने	रात्रि: कर्के	रात्रि: सिंहे	रात्रि: कन्यायां	रात्रि: तुलायां	शुभ बली लग्नें (इन लग्नों में गुरु, शुक्र या बुध केन्द्र त्रिकोण में होने से दोष समूह नाशक सुयोग।)
०५ दिस	५:२४	७:४०	९:४६	११:३३	१:०६	२:३६	४:१७	६:१५	८:२९	१०:४५	१२:५८	३:०९	८,१०,१२,१,३,४,७,
०६ दिस	५:२०	७:३६	९:४२	११:२९	१:०२	२:३२	४:१३	६:११	८:२५	१०:४१	१२:५४	३:०५	९,१०,११,१,२,३,६,७,
०७ दिस	५:१६	७:३३	९:३८	११:२५	१२:५८	२:२८	४:०९	६:०७	८:२१	१०:३७	१२:५०	३:०१	९,११,२,३,६,
०८ दिस	५:१२	७:२९	९:३४	११:२१	१२:५४	२:२४	४:०५	६:०३	८:१७	१०:३४	१२:४६	२:५७	९,११,२,३,४,६,
०९ दिस	५:०८	७:२५	९:३०	११:१७	१२:५०	२:२०	४:०१	५:५९	८:१३	१०:३०	१२:४२	२:५३	९,११,२,३,४,६,
१० दिस	५:०४	७:२१	९:२६	११:१३	१२:४६	२:१७	३:५७	५:५५	८:०९	१०:२६	१२:३८	२:४९	९,११,३,६,
११ दिस	५:००	७:१७	९:२२	११:०९	१२:४२	२:१३	३:५३	५:५१	८:०५	१०:२२	१२:३४	२:४५	९,११,३,६,
१२ दिस	४:५६	७:१३	९:१८	११:०५	१२:३८	२:०९	३:४९	५:४७	८:०१	१०:१८	१२:३०	२:४१	९,११,३,४,६,
१३ दिस	४:५२	७:०९	९:१४	११:०१	१२:३४	२:०५	३:४५	५:४३	७:५७	१०:१४	१२:२६	२:३७	९,११,३,४,६,
१४ दिस	४:४८	७:०५	९:१०	१०:५७	१२:३०	२:०१	३:४१	५:३९	७:५३	१०:१०	१२:२२	२:३३	९,११,२,३,६,
१५ दिस	४:४५	७:०१	९:०६	१०:५३	१२:२६	१:५७	३:३७	५:३६	७:४९	१०:०६	१२:१८	२:२९	९,११,३,६,
१६ दिस	४:४१	६:५७	९:०२	१०:४९	१२:२२	१:५३	३:३३	५:३२	७:४५	१०:०२	१२:१४	२:२६	९,११,२,३,४,
१७ दिस	४:३७	६:५३	८:५९	१०:४५	१२:१८	१:४९	३:२९	५:२८	७:४१	९:५८	१२:१०	२:२२	९,११,४,
१८ दिस	४:३३	६:४९	८:५५	१०:४१	१२:१४	१:४५	३:२५	५:२४	७:३८	९:५४	१२:०६	२:१८	९,११,४,
१९ दिस	४:२९	६:४५	८:५१	१०:३७	१२:१०	१:४१	३:२१	५:२०	७:३४	९:५०	१२:०२	२:१४	९,११,४,
२० दिस	४:२५	६:४१	८:४७	१०:३३	१२:०६	१:३७	३:१७	५:१६	७:३०	९:४६	११:५९	२:१०	९,११,१,२,३,४,

तिथि १
शुक्रवार
इष्ट ०।०

९ — ७ बु.
१० — ८ सू.मं.शु. — ६
११ रा. — 卐 — ५ के.
१२ श. — २ चं. — ४ गु.
१ — ३

धनु संक्रान्ति फलम्- पौष कृष्ण ११ सोमवासरे रात्रि ४:१९ समये धनुसंक्रान्ति प्रवेशः तस्य पुण्यकाल परा दिवसे। वार नाम ध्वांक्षी संज्ञक संक्रांति व्यापारीवर्ग एवं उद्योगपतियों को शुभकारी है। तस्य काले स्वानक्षत्र नाम महोदरी संज्ञक संक्रांति चोर, तस्करो एवं जमाखोरों का सुखद। मुहूर्त्त १५ अनाज मूल्य में वृद्धि संकेतक। कौलव करण फल- वराह वाहनं, वृष उपवाहनं, हरित वस्त्रं, खड्ग आयुधं, ताम्र पात्रं, भिक्षा भक्षणं, चंदन लेपनं, सर्प वर्ण, मौलश्री पुष्पं, मोती भूषणं, हरित कंचुकी, कुमारी अवस्था, उतिष्टा स्थिति। मंहगाई भाव सूचक। दो माह तक निज कुल या पडौसी देशों में विरोध रहेगा। ओले गिरने से चना मसूर की फसलौं में नुकसान के संकेत। पौषकृष्ण ३ मूले भौम अनांज महंगे,सैनिकों को कष्ट। पौषकृष्ण ५ अनुराधायां बुध - सुभिक्षमनुराधायांपक्षिपीड़ाप्रजासुखम्। अनुराधा में सुभिक्ष हो, पशुओं में पीड़ा हो, मनुष्यों को सुख हो। पौषकृष्ण ३० ज्येष्ठायां बुध - ज्येष्ठायामिक्षुशाल्याज्यमहर्घताश्वरोगिता।। ज्येष्ठ में हो तो ईख, शाली-और घी महँगे हों तथा घोड़ों में रोग हो।

तिथि ८
शुक्रवार
इष्ट ०।०

९ मं. — ७
१० — ८ सू.बु.शु. — ६
११ रा. — 卐 — ५ चं.के
१२ श. — २ — ४
१ — ३ गु.

१४	तिथि			नक्षत्र			योग			करण (प्रात: एवं सायंकाल में)				चन्द्रमा राशि समाप्ती काल			श्री सूर्य					आनंदादि योग	दिनांक	(कृपया ध्यान रखें कि इस वर्ष चंद्र राशि का समाप्ती काल दिया है)। गुरु उदयपूर्वे:। शुक्र अस्तपूर्वे: । मूल निवास भूमि
तिथि	वार	घटिपल	घंटामिनट	नक्षत्र	घटिपल	घंटामिनट	योग	घटिपल	घंटामिनट	प्रात:	घटिपल	घंटामिनट	सायं	राशि	घटिपल	घंटामिनट	दिनमान	सू.उ.	अस्त	उदयकालीन स्पष्ट	गति			पक्षारंभिक नक्षत्र-मूले रवि:, मूले भौम:, ज्येष्ठायां वुध:, पुनर्वसे गुरौ, मूले शुक्र:, पूर्वभाद्रपदे शनि:, शतभिषायां राहु, पूर्वाफाल्गुण्यां केतु।
१	र.	५।२०	दि.९:१०	पू.षा	५१।१७	रा. ३:३२	बृद्धि	२३।४८	दि.४:३३	बव	५।२०	दि.९:१०	बाल	धनु	--	दिनरात	२६।२५	७:१	५:३६	८।०५।१२।१३	६१	शुभ	२१ दिस	धनु खरमास। सर्वार्थसिद्धी रात्रि ३:३२ से रातअंत।
२	चं.	९।२४	दि.१०:४८	उ.षा	५६।४	रा. ५:२८	ध्रुव	२३।५५	दि.४:३६	कौल	९।२४	दि.१०:४८	तैति	धनु	७।३३	दि. १०:०३ तक	२६।२५	७:२	५:३६	८।०६।१३।२०	६१	मृत्यु	२२ दिस	धनु खरमास। श्री सूर्य उत्तरायने रात्रि ८:०९। रवियोग रात्रि ५:२८ से रात्रिअंत। सर्वार्थसिद्धी रात्रि ५:२८ से रातअंत।
३	मं.	१२।४२	दि.१२:०७	श्रव	६०।०	वृद्धि	व्या	२३।२६	दि.४:२५	गर	१२।४२	दि.१२:०७	वणि	मकर	--	दिनरात	२६।२५	७:२	५:३७	८।०७।१४।२८	६१	पद्म	२३ दिस	धनु खरमास। रवियोग सू.उ.से रात्रि ७:०४ तक । भद्रा रात्रि १२:३९ से रात्रिअंत (पाताल)।
४	बु.	१५।०६	दि.१:०५	श्रव	०।३	प्रा. ७:०४	हर्ष	२२।१५	दि.३:५७	भद्रा	१५।६	दि.१:०५	बव	मकर	३१।३४	रा. ७:४० तक	२६।२५	७:३	५:३७	८।०८।१५।३५	६१	छत्र	२४ दिस	विनायकी श्री गणेश ४ व्रतं। धनु खरमास। पंचक प्रारंभ रा. ७:४० तक समये। रवियोग सू.उ.से प्रात: ७:०४ तक। भद्रा सू.उ.से दिन १:०५ (पाताल)।
५	गु.	१६।२७	दि.१:३८	धनि	३।२	दि. ८:१६	वज्र	२०।१५	दि.३:०९	बाल	१६।२७	दि.१:३८	कौल	कुंभ	××	दिनरात	२६।२६	७:३	५:३८	८।०९।१६।४४	६१	श्रीवत्स	२५ दिस	धनु खरमास। पंचक दिनरात। रवियोग दिन ८:१६ से रात्रिअंत। पूर्वाषाढ़े भौम: दिन १२:०७ समये।
६	शु.	१६।३४	दि.१:४१	शत	४।५०	दि. ८:६०	सिद्धि	१७।१८	दि.१:५९	तैति	१६।३४	दि.१:४१	गर	कुंभ	५०।१७	रा. ३:१० तक	२६।२६	७:४	५:३८	८।१०।१७।५२	६१	सौम्य	२६ दिस	धनु खरमास। पंचक दिनरात। रवियोग सू.उ.से दिन ८:६० तक । व्यतिपात् दि.१:५९ वजे तक। से रातअंत।
७	श.	१५।१३	दि.१:०९	पू.भा	५।१७	दि. ९:११	व्यति	१३।१३	दि.१२:२१	वणि	१५।१३	दि.१:०९	भद्रा	मीन	××	दिनरात	२६।२६	७:४	५:३९	८।११।१९।०१	६१	कालदंड़	२७ दिस	उभय सप्तमी, भग सप्तमी।धनु खरमास। पंचक दिनरात। भद्रा दिन १:०९ से रात्रि १२:३९ (भूमि)। व्यतिपात् सू.उ.से दि.१२:२१ वजे तक।
८	र.	१२।१९	दि.१२:००	उ.भा	४।१३	दि. ८:४६	वरी	७।५६	दि.१०:१५	बव	१२।१९	दि.१२:००	बाल	मीन	××	दिनरात	२६।२७	७:४	५:३९	८।१२।२०।१०	६१	स्थिर	२८ दिस	मासिक दुर्गाष्टमी व्रत। धनु खरमास। पंचक दिनरात। मूल दिन ८:४६ से रातअंत। रवियोग दिन ८:४६ से रात्रि ६:३३ तक । सर्वार्थसिद्धी (A)
९	चं.	७।५१	दि.१०:१३	रेव, अश्वि	१: ३७।५७: ३०	प्रा. ७:४४, रा.६:०५	परि, शिव	१।२५, ५९।५२	प्रा.७:३९, रा.७:०२	कौल	७।५१	दि.१०:१३	तैति	मीन	१।३७	प्रा. ७:४४ तक	२६।२८	७:५	५:४०	८।१३।२१।११	६१	मातंग	२९ दिस	धनु खरमास। पंचक समाप्त प्रा. ७ :४४ समये। मूल दिनरात। रवियोग प्रात: ७:४४ से रात्रि ५:३३ तक पुन:पुन:रात्रि ५:३३ से रात्रिअंत। (B)
१०,११	मं.	१।५७, ५४।४९	प्रा.७:५२,रा ५:०१	भर	५२।६	रा. ३:५६	सिद्ध	४४।४४	रा.१२:५९	गर	१।५७	प्रा.७:५२	वणि	मेष	××	दिनरात	२६।२८	७:५	५:४०	८।१४।२२।२९	६१	मुसल	३० दिस	मन्वादि तिथि।धनु खरमास। रवियोग सू.उ.से रात्रि ३:५६ तक। सर्वार्थसिद्धी रात्रि ३:५६ से रातअंत। भद्रा सायं ६:२५ से रात्रि ४:५८ (स्वर्ग)। (C)
१२	बु.	४६।३६	रा.१:४४	कृत्ति	४५।५१	रा. १:२६	साध्य	३५।१०	रा.९:०९	बव	२०।४२	दि.३:२२	बाल	मेष	५।३९	दि. ९:२१ तक	२६।२९	७:५	५:४१	८।१५।२३।३८	६१	सिद्धि	३१ दिस	पुत्रदा एकादशी व्रत सर्वे। धनु खरमास। सर्वार्थसिद्धी दिनरात। बुध अस्त पूर्वे: प्रात: ६:१२ समये। (C) पूर्वाषाढ़े शुक्र: रात्रि ९:५२ समये।
१३	गु.	३८।०३	रा.१०:१९	रोहि	३९।९	रा. १०:४५	शुभ	२५।१०	सा.५:१०	कौल	१२।२३	दि.१२:०३	तैति	वृष	××	दिनरात	२६।३०	७:६	५:४२	८।१६।२४।४८	६१	उत्पात	०१ जन	गुरुप्रदोष व्रतं। घृत दान।धनु खरमास। रवियोग रात्रि १०:४५ से रात्रिअंत। क्रांतिसाम्य रात्रि १०:२८ से रात्रि २:२८। क्रांतिसाम्य रात्रि १०:२८ से रात्रि २:२८।
१४	शु.	२९।२८	सा.६:५३	मृग	३२।२४	रा. ८:०४	शुक्ल	१४।६०	दि.१:०६	गर	३।४४	दि.८:३६	वणि	वृष	५।४५	दि. ९:२४ तक	२६।३१	७:६	५:४२	८।१७।२५।५८	६१	मानस	०२ जन	धनु खरमास। रवियोग सू.उ.से रात्रि ८:०४ तक । भद्रा सायं ६:५३ से रात्रि ५:११ (स्वर्ग)। (B) मूले श्च धनुषे बुध प्रात: ७:२० समये
१५	श.	२१।१३	दि.३:३६	आर्द्रा	२६।२	सा. ५:३१	ब्रह्म, ऐंद्र	४।५८, ५९।५४	दि.९:०५, रा.७:०४	बव	२१।१३	दि.३:३६	बाल	मिथुन	××	दिनरात	२६।३२	७:६	५:४३	८।१८।२७।०८	६१	मुद्गर	०३ जन	पूर्णिमा। धनु खरमास। (A) दिन ८:४६ पर्यन्त। पूर्वाषाढ़े रवि रात्रि ६:३३ समये।

सूर्योदयकालीन दैनिक ग्रह स्पष्ट । ग्रह गति कलाओं में दी गई है। पक्षारंभिक अयनांश २४-१३-१६

तिथि		चन्द्र		मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		राहु	चंद्र उदयास्त समय: उदय	अस्त
वार		राशि अंश कला वि.	गति	अस्त-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-वक्री	गति	अस्त-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	वक्र गति ३ कला	दिन	रात
१	र.	८।१६।१२।२०	७३४	८।१०।७।५६	४६	७।१८।९।२०	८७	२।२८।२९।३६	७	८।०१।१३।३७	७६	११।०१।२४।३२	२	१०।१८।३१।३२	७:५५	६:३६
२	चं.	८।२८।२६।३७	७४२	८।१०।५३।२९	४६	७।१९।३६।९	८७	२।२८।२२।३८	७	८।०२।२९।१०	७६	११।०१।२७।०२	३	१०।१८।२८।२१	८:३८	७:२९
३	मं.	९।१०।४८।३३	७५१	८।११।३९।४	४६	७।२१।३।३८	८८	२।२८।१५।३४	७	८।०३।४४।४२	७६	११।०१।२९।३७	३	१०।१८।२५।१०	९:१६	८:२३
४	बु.	९।२३।१९।२०	७६२	८।१२।२४।४१	४६	७।२२।३१।४०	८९	२।२८।०८।२३	७	८।०५।००।१५	७६	११।०१।३२।१८	३	१०।१८।२१।५९	९:५१	९:१७
५	गु.	१०।०६।००।५४	७७५	८।१३।१०।२२	४६	७।२४।०।१५	८९	२।२८।०१।०६	७	८।०६।१५।४७	७६	११।०१।३५।०६	३	१०।१८।१८।४८	१०:२४	१०:११
६	शु.	१०।१८।५६।०६	७९२	८।१३।५६।५	४६	७।२५।२९।१८	८९	२।२७।५३।४४	७	८।०७।३१।२०	७६	११।०१।३७।५९	३	१०।१८।१५।३७	१०:५७	११:०७
७	श.	११।०२।०८।२२	८१३	८।१४।४१।५१	४६	७।२६।५८।४८	९०	२।२७।४६।१६	८	८।०८।४६।५२	७६	११।०१।४०।५८	३	१०।१८।१२।२६	११:३०	१२:०४
८	र.	११।१५।४१।०९	८३६	८।१५।२७।३९	४६	७।२८।२८।४३	९०	२।२७।३८।४३	८	८।१०।०२।२४	७६	११।०१।४४।०३	३	१०।१८।०९।१५	१२:०५	१:०५
९	चं.	११।२९।३६।५२	८५९	८।१६।१३।३०	४६	७।२९।५९।२	९१	२।२७।३१।०६	८	८।११।१७।५६	७६	११।०१।४७।१४	३	१०।१८।०६।०४	१२:४४	२:११
१०,११	मं.	०।१३।५५।५४	८८०	८।१६।५९।२३	४६	८।१।२९।४३	९१	२।२७।२३।२४	८	८।१२।३३।२८	७६	११।०१।५०।३०	३	१०।१८।०२।५४	१:३०	३:२१
१२	बु.	०।२८।३५।४८	८९५	८।१७।४५।१९	४६	८।३।०।४६	९१	२।२७।१५।३८	८	८।१३।४८।६०	७६	११।०१।५३।५२	३	१०।१७।५९।४३	२:२३	४:३६
१३	गु.	१।१३।३१।०५	९०३	८।१८।३१।१७	४६	८।४।३२।११	९२	२।२७।०७।४९	८	८।१५।०४।३१	७६	११।०१।५७।२०	४	१०।१७।५६।३२	३:२४	५:५१
१४	शु.	१।२८।३३।४२	९०१	८।१९।१७।१७	४६	८।६।३।५७	९२	२।२६।५९।५६	८	८।१६।२०।०२	७६	११।०२।००।५३	४	१०।१७।५३।२१	४:३३	७:०२
१५	श.	२।१३।३४।१६	८८९	८।२०।३।२०	४६	८।७।३६।४	९२	२।२६।५१।६०	८	८।१७।३५।३३	७६	११।०२।०४।३२	४	१०।१७।५०।१०	५:४७	८:०५

लग्न प्रारंभ समय (भारतीय स्टेंडर्ड समय)

दिनांक	प्रात: पूर्व	प्रात:	दिन				सायं	रात्रि					शुभ बली लग्नें
	धनुषे	मकरे	कुंभे	मीने	मेषे	वृषे	मिथुने	कर्के	सिंहे	कन्यायां	तुलायां	वृश्चिके	इन लग्नों में गुरु, शुक्र या बुध केन्द्र त्रिकोण में होने से दोष समूह नाशक सुयोग।
२१ दिस	६:३७	८:४३	१०:२९	१२:०२	१:३३	३:१३	५:१२	७:२६	९:४२	११:५५	२:०६	४:२१	९,११,१,२,४,
२२ दिस	६:३३	८:३९	१०:२६	११:५९	१:२९	३:१०	५:०८	७:२२	९:३८	११:५१	२:०२	४:१७	९,११,१,२,४,८,
२३ दिस	६:२९	८:३५	१०:२२	११:५५	१:२५	३:०६	५:०४	७:१८	९:३४	११:४७	१:५८	४:१३	९,११,१,२,४,८,
२४ दिस	६:२५	८:३१	१०:१८	११:५१	१:२१	३:०२	५:००	७:१४	९:३०	११:४३	१:५४	४:०९	९,११,१,२,४,६,
२५ दिस	६:२२	८:२७	१०:१४	११:४७	१:१७	२:५८	४:५६	७:१०	९:२६	११:३९	१:५०	४:०५	९,११,१,२,४,६,
२६ दिस	६:१८	८:२३	१०:१०	११:४३	१:१३	२:५४	४:५२	७:०६	९:२३	११:३५	१:४६	४:०१	९,११,१,२,३,४,६,
२७ दिस	६:१४	८:१९	१०:०६	११:३९	१:०९	२:५०	४:४८	७:०२	९:१९	११:३१	१:४२	३:५७	९,११,१,२,३,४,६,
२८ दिस	६:१०	८:१५	१०:०२	११:३५	१:०६	२:४६	४:४४	६:५८	९:१५	११:२७	१:३८	३:५३	९,११,१,२,३,४,६,
२९ दिस	६:०६	८:११	९:५८	११:३१	१:०२	२:४२	४:४०	६:५४	९:११	११:२३	१:३४	३:४९	९,११,१,३,६,
३० दिस	६:०२	८:०७	९:५४	११:२७	१२:५८	२:३८	४:३६	६:५०	९:०७	११:१९	१:३०	३:४५	९,११,६,७,
३१ दिस	५:५८	८:०३	९:५०	११:२३	१२:५४	२:३४	४:३२	६:४६	९:०३	११:१५	१:२६	३:४१	९,११,६,
०१ जन	५:५४	७:५९	९:४६	११:१९	१२:५०	२:३०	४:२८	६:४२	८:५९	११:११	१:२२	३:३८	९,११,१,३,६,
०२ जन	५:५०	७:५५	९:४२	११:१५	१२:४६	२:२६	४:२५	६:३८	८:५५	११:०७	१:१८	३:३४	९,११,१,३,६,
०३ जन	५:४६	७:५२	९:३८	११:११	१२:४२	२:२२	४:२१	६:३४	८:५१	११:०३	१:१५	३:३०	९,११,६,

तिथि १
रविवार
इष्ट ०।०

१० ८ बु.
११ रा. ९ सू.चं.मं.शु. ७
१२ श. 卐 ६
१ ३ गु. ५ के.
२ ४

पौषशुक्ल ५ पूर्वाषाढे भौम अतिवर्षा, सुभिक्ष, तिल घी उड़द के भाव बढेंगे। पौषशुक्ल ९ मूले बुध - मूलेपक्षिपशूनांचबालपीड़ाविजायते। मूल में हो तो पशु पक्षी और बालकों में पीड़ा हो।

तिथि ८
रविवार
इष्ट ०।०

१० ८ बु.
११ रा. ९ सू.मं.शु. ७
१२ चं.श. 卐 ६
१ ३ गु. ५ के.
२ ४

माघ कृष्णपक्ष। शुभ विक्रम संवत् २०८२ शक: १९४७। सिद्धार्थ संवत्सर। कलियुग संवत् ५१२६। शिशिर ऋतुः। श्री सूर्य उत्तरायन-दक्षिणगोले। जनवरी ईसवी सन् २०२६। जनवरी। वंगला सन् १४३२ । वीर निर्वाण संवत् २५५२।

१५	तिथि			नक्षत्र			योग			करण (प्रातः एवं सायंकाल में)				चन्द्रमा राशि समाप्ती काल			श्री सूर्य					आनंदादि योग	दिनांक	(कृपया ध्यान रखें कि इस वर्ष चंद्र राशि का समाप्ती काल दिया है)। गुरु उदयपूर्वे:। शुक्र अस्तपूर्वे: मूल निवास स्वर्गे
तिथि	वार	घटिपल	घंटामिनट	नक्षत्र	घटिपल	घंटामिनट	योग	घटिपल	घंटामिनट	प्रातः	घटिपल	घंटामिनट	सायं	राशि	घटिपल	घंटामिनट	दिनमान	सू.उ.	अस्त	उदयकालीन स्पष्ट	गति			पक्षारंभिक नक्षत्र-पूर्वाषाढ़े रविः, पूर्वाषाढ़े भौमः, मूले वुधः, पुनर्वसे गुरौ, पूर्वाषाढ़े शुक्रः, पूर्वभाद्रपदे शनिः, शतभिषायां राहु, पूर्वाफाल्गुण्यां केतु।
१	र.	१३।४३	दि.१२:३६	पुन	२०।२७	दि. ३:१७	वैधृ	४६।५६	रा.१:५३	कौल	१३।४३	दि.१२:३६	तैति	मिथुन	६।४०	दि. ९:४६ तक	२६।३३	७:७	५:४४	८।१९।२८।१७	६१	ध्वज	०४ जन	धनु खरमास। रविपुष्य योग दिन ३:१७ से रातअंत। रवि पुष्य योग दिन ३:१७ से रातअंत। वैघृति सू.उ.से रा.१:५३ वजे तक।
२	चं.	७।२१	दि.१०:०३	पुष्य	१६।५	दि. १:३३	विष्कु	३९।३२	रा.१०:५६	गर	७।२१	दि.१०:०३	वणि	कर्क	--	दिनरात	२६।३४	७:७	५:४४	८।२०।२९।२७	६१	धाता	०५ जन	गुरू गोविन्द सिंह जयंती। धनु खरमास। मूल दिन १:३३ से रातअंत। सर्वार्थसिद्धी दिन १:३३ पर्यन्त। सोम पुष्य योग सू उ से दिन १:३३ तक। (A)
३,४	मं.	२।३३, ५१।३८	दि.८:०८,रा.६:५८	श्ले	१३।१९	दि. १२:२६	प्रीति	३३।३१	रा.८:३१	भद्रा	२।३३	दि.८:०८	बव	कर्क	१३।१९	दि. १२:२६ तक	२६।३५	७:७	५:४५	८।२१।३०।३६	६१	आनंद	०६ जन	संकष्टी श्री गणेश ४ व्रतं। धनु खरमास। मूल दिनरात। सर्वार्थसिद्धी दिन १२:२६ पर्यन्त। भद्रा सू.उ.से दिन ८:०८(भूमि)। पूर्वाषाढ़े वुधः (B)
५	बु.	५८।५१	रा.६:४०	मघा	१२।२५	दि. १२:०५	आयु	२९।१	सा.६:४४	कौल	२९।१४	सा.६:४९	तैति	सिंह	--	दिनरात	२६।३६	७:७	५:४६	८।२२।३१।४६	६१	चर	०७ जन	धनु खरमास। मूल सू.उ.से दिन १२:०५ तक। (A) भद्रा रात्रि ९:०४ से रात्रिअंत (भूमि)।
६	गु.	६०।००	वृद्धि	पू.फा.	१३।३४	दि. १२:३३	सौभ	२६।८	सा.५:३४	गर	२९।२१	सा.६:५४	वणि	सिंह	२९।१४	सा. ६:४९ तक	२६।३८	७:७	५:४६	८।२३।३२।५५	६१	गद	०८ जन	धनु खरमास। रवियोग दिन १२:३३ से रात्रिअंत। (B) रात्रि ११:५४ समये।
६	शु.	०।०८	प्रा.७:१०	उ.फा.	१६।४२	दि. १:४८	शोभ	२४।४९	सा.५:०३	वणि	०।८	प्रा.७:१०	भद्रा	कन्या	××	दिनरात	२६।३९	७:७	५:४७	८।२४।३४।०४	६१	शुभ	०९ जन	धनु खरमास। रवियोग सू.उ.से दिन १:४८ तक । भद्रा प्रातः ७:१० से रात्रि ७:४८ (पाताल)।
७	श.	३।२३	दि.८:२९	हस्त	२१।३६	दि. ३:४६	अति	२४।५१	सा.५:०४	बव	३।२३	दि.८:२९	बाल	कन्या	५४।३१	रा. ४:५६ तक	२६।४०	७:७	५:४८	८।२५।३५।१३	६१	मृत्यु	१० जन	कालाष्टमी व्रतं। धनु खरमास। उत्तराषाढ़े शुक्रः दिन १२:१२ समये।
८	र.	८।१२	दि.१०:२४	चित्रा	२७।५२	सा. ६:१६	सुक	२५।५७	सा.५:३०	कौल	८।१२	दि.१०:२४	तैति	तुला	××	दिनरात	२६।४२	७:८	५:४८	८।२६।३६।२१	६१	पद्म	११ जन	धनु खरमास। उत्तराषाढ़े रवि दिन ८:३३ समये। उत्तराषाढ़े भौमः रात्रि ९:०३ समये।
९	चं.	१४।०५	दि.१२:४६	स्वा	३४।६०	रा. ९:०७	धृति	२७।४६	सा.६:१४	गर	१४।५	दि.१२:४६	वणि	तुला	××	दिनरात	२६।४४	७:८	५:४९	८।२७।३७।२९	६१	छत्र	१२ जन	धनु खरमास। भद्रा रात्रि २:०२ से रात्रिअंत (पाताल)। मकरे शुक्रः रात्रि ३:४८ समये।
१०	मं.	२०।३०	दि.३:१९	विशा	४२।२९	रा. १२:०७	शूल	२९।५४	रा.७:०५	भद्रा	२०।३०	दि.३:१९	बव	तुला	२५।३६	सा. ५:२२ तक	२६।४५	७:८	५:५०	८।२८।३८।३७	६१	श्रीवत्स	१३ जन	लोहिणी उत्सव। धनु खरमास। भद्रा सू.उ.से दिन ३:१९(पाताल)।
११	बु.	२६।५४	सा.५:५३	अनु	४९।५२	रा. ३:०४	गंड़	३१।६०	रा.७:५६	बाल	२६।५४	सा.५:५३	कौल	वृश्चिक	××	दिनरात	२६।४७	७:८	५:५०	८।२९।३९।४४	६१	सौम्य	१४ जन	षट्तिला एकादशी व्रत सर्वे। मकर संक्रांति। मकरे रवि दिन ३:०५ समये। पुण्यकाल अद्य दिवसे। मूल रात ३:०४ से रातअंत। अमृतसिद्धि (C)
१२	गु.	३२।५३	रा.८:१७	ज्ये	५६।४३	रा. ५:४९	बृद्धि	३३।४५	रा.८:३८	कौल	०।२	प्रा.७:०८	तैति	वृश्चिक	५६।४३	रा. ५:४९ तक	२६।४९	७:८	५:५१	९।००।४०।५१	६१	कालदंड़	१५ जन	मूल दिनरात। मकरे भौमः रात्रि ४:२२ समये। उत्तराषाढ़े वुधः दिन ९:१२ समये। (C) रात्रि ३:०४ पर्यन्त। क्रांतिसाम्य दिन २:१९ से सायं ६:५५।
१३	शु.	३८।०५	रा.१०:२२	मूल	६०।०	वृद्धि	ध्रुव	३४।५६	रा.९:०६	गर	५।३९	दि.९:२३	वणि	धनु	××	दिनरात	२६।५१	७:८	५:५२	९।०१।४१।५७	६१	स्थिर	१६ जन	शुक्रप्रदोष व्रतं। मासिक शिवरात्रि व्रतं। मूल सू.उ.से वृद्धि दिनरात तक। भद्रा रात्रि १०:२२ से रात्रिअंत (पाताल)।
१४	श.	४२।१९	रा.१२:०३	मूल	२।४५	दि. ८:१३	व्या	३५।२३	रा.९:१७	भद्रा	१०।२२	दि.११:१६	शकु	धनु	××	दिनरात	२६।५३	७:७	५:५३	९।०२।४३।०३	६१	गद	१७ जन	मूल सू.उ.से दिन ८:१३ तक। भद्रा सू.उ.से दिन ११:१६(पाताल)। मकरे बुधः दिन १०:१६ समये।
३०	र.	४५।२९	रा.१:१९	पू.षा	७।४५	दि. १०:१३	हर्ष	३५।२	रा.९:०८	चतु	१४।३	दि.१२:४४	नाग	धनु	२३।४८	दि. ४:३८ तक	२६।५५	७:७	५:५३	९।०३।४४।०९	६१	शुभ	१८ जन	मौनी अमावस्या। विधि पूजन, कलियुगादि तिथि। सर्वार्थसिद्धी दिन १०:१३ से रातअंत।

सूर्योदयकालीन दैनिक ग्रह स्पष्ट । ग्रह गति कलाओं में दी गई है। पक्षारंभिक अयनांश २४-१३-१९

तिथि		चन्द्र		मंगल		बुध		गुरू		शुक्र		शनि		राहू	चंद्र उदयास्त समय: उदय	अस्त
वार		राशि अंश कला वि.	गति	अस्त-मार्गी	गति	अस्त-मार्गी	गति	उदय-वक्री	गति	अस्त-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	वक्र गति ३ कला	दिन	रात
१	र.	२।२८।२३।२७	८७०	८।२०।४९।२६	४६	८।९।८।३२	९३	२।२६।४४।०२	८	८।१८।५१।०४	७६	११।०२।०८।१७	४	१०।१७।४६।५९	७:०१	८:२९
२	चं.	३।१२।५३।२२	८४५	८।२१।३५।३३	४६	८।१०।४१।२२	९३	२।२६।३६।०१	८	८।२०।०६।३५	७६	११।०२।१२।०६	४	१०।१७।४३।४८	८:११	९:१९
३,४	मं.	३।२६।५८।३१	८१८	८।२२।२१।४३	४६	८।१२।१४।३४	९४	२।२६।२७।५८	८	८।२१।२२।०५	७६	११।०२।१६।०२	४	१०।१७।४०।३८	९:१५	१०:०२
५	बु.	४।१०।३६।१९	७९१	८।२३।७।५५	४६	८।१३।४८।९	९४	२।२६।१९।५४	८	८।२२।३७।३५	७५	११।०२।२०।०२	४	१०।१७।३७।२७	१०:१४	१०:३९
६	गु.	४।२३।४६।५३	७६६	८।२३।५४।१०	४६	८।१५।२२।६	९४	२।२६।११।४९	८	८।२३।५३।०५	७५	११।०२।२४।०८	४	१०।१७।३४।१६	११:०८	११:११
६	शु.	५।०६।३२।३८	७४५	८।२४।४०।२६	४६	८।१६।५६।२७	९५	२।२६।०३।४३	८	८।२५।०८।३४	७५	११।०२।२८।१८	४	१०।१७।३१।०५	११:६०	११:४२
७	श.	५।१८।५७।३५	७२९	८।२५।२६।४५	४६	८।१८।३१।१२	९५	२।२५।५५।३७	८	८।२६।२४।०३	७५	११।०२।३२।३४	४	१०।१७।२७।५४	१२:४९	१२:११
८	र.	६।०१।०६।३३	७१८	८।२६।१३।६	४६	८।२०।६।२३	९६	२।२५।४७।३०	८	८।२७।३९।३२	७५	११।०२।३६।५५	४	१०।१७।२४।४३	१:३९	१२:४२
९	चं.	६।१३।०४।३९	७१२	८।२६।५९।२९	४६	८।२१।४१।६०	९६	२।२५।३९।२४	८	८।२८।५५।००	७५	११।०२।४१।२२	५	१०।१७।२१।३३	२:२९	१:१५
१०	मं.	६।२४।५६।४६	७११	८।२७।४५।५३	४६	८।२३।१८।४	९७	२।२५।३१।१९	८	९।००।१०।२८	७५	११।०२।४५।५३	५	१०।१७।१८।२२	३:२०	१:५१
११	बु.	७।०६।४७।२३	७१३	८।२८।३२।२०	४६	८।२४।५४।३५	९७	२।२५।२३।१४	८	९।०१।२५।५६	७५	११।०२।५०।२८	५	१०।१७।१५।११	४:११	२:३२
१२	गु.	७।१८।४०।२७	७१९	८।२९।१८।४९	४७	८।२६।३१।३५	९७	२।२५।१५।११	८	९।०२।४१।२३	७५	११।०२।५५।०९	५	१०।१७।१२।००	५:०१	३:१७
१३	शु.	८।००।३९।१५	७२७	९।०।५।२०	४७	८।२८।९।५	९८	२।२५।०७।१०	८	९।०३।५६।४९	७५	११।०२।५९।५५	५	१०।१७।०८।४९	५:४९	४:०७
१४	श.	८।१२।४६।१९	७३७	९।०।५१।५३	४७	८।२९।४७।५	९९	२।२४।५९।१२	८	९।०५।१२।१६	७५	११।०३।०४।४५	५	१०।१७।०५।३८	६:३४	४:६०
३०	र.	८।२५।०३।२२	७४८	९।१।३८।२७	४७	९।१।२५।३७	९९	२।२४।५१।१५	८	९।०६।२७।४१	७५	११।०३।०९।४०	५	१०।१७।०२।२८	××	५:५४

लग्न प्रारंभ समय (भारतीय स्टेंडर्ड समय)

दिनांक	प्रातः पूर्व: धनुषे	प्रातः: मकरे	दिन: कुंभे	मीने	मेषे	वृषे	सायं: मिथुने	रात्रि: कर्के	सिंहे	कन्यायां	तुलायां	वृश्चिके	शुभ बली लग्नें (इन लग्नों में गुरु, शुक्र या बुध केन्द्र त्रिकोण में होने से दोष समूह नाशक सुयोग।)
०४ जन	५:४२	७:४८	९:३४	११:०७	१२:३८	२:१८	४:१७	६:३०	८:४७	१०:५९	१:११	३:२६	९,११,६,
०५ जन	५:३८	७:४४	९:३०	११:०३	१२:३४	२:१४	४:१३	६:२७	८:४३	१०:५५	१:०७	३:२२	९,११,३,६,
०६ जन	५:३४	७:४०	९:२६	१०:५९	१२:३०	२:१०	४:०९	६:२३	८:३९	१०:५१	१:०३	३:१८	९,११,३,७,
०७ जन	५:३०	७:३६	९:२२	१०:५५	१२:२६	२:०६	४:०५	६:१९	८:३५	१०:४८	१२:५९	३:१४	९,११,३,६,
०८ जन	५:२६	७:३२	९:१८	१०:५२	१२:२२	२:०२	४:०१	६:१५	८:३१	१०:४४	१२:५५	३:१०	९,११,१,६,
०९ जन	५:२२	७:२८	९:१५	१०:४८	१२:१८	१:५९	३:५७	६:११	८:२७	१०:४०	१२:५१	३:०६	९,११,१,६,
१० जन	५:१८	७:२४	९:११	१०:४४	१२:१४	१:५५	३:५३	६:०७	८:२३	१०:३६	१२:४७	३:०२	९,११,१,२,४,६,७,
११ जन	५:१४	७:२०	९:०७	१०:४०	१२:१०	१:५१	३:४९	६:०३	८:१९	१०:३२	१२:४३	२:५८	९,११,१,६,
१२ जन	५:११	७:१६	९:०३	१०:३६	१२:०६	१:४७	३:४५	५:५९	८:१६	१०:२८	१२:३९	२:५४	९,११,१,३,६,
१३ जन	५:०७	७:१२	८:५९	१०:३२	१२:०२	१:४३	३:४१	५:५५	८:१२	१०:२४	१२:३५	२:५०	९,१०,११,२,४,६,७,
१४ जन	५:०३	७:०८	८:५५	१०:२८	११:५९	१:३९	३:३७	५:५१	८:०८	१०:२०	१२:३१	२:४६	९,११,२,६,७,
१५ जन	४:५९	७:०४	८:५१	१०:२४	११:५५	१:३५	३:३३	५:४७	८:०४	१०:१६	१२:२७	२:४२	११,१,२,३,७,९,
१६ जन	४:५५	७:००	८:४७	१०:२०	११:५१	१:३१	३:२९	५:४३	७:६०	१०:१२	१२:२३	२:३८	११,१,२,३,४,६,७,९,
१७ जन	४:५१	६:५६	८:४३	१०:१६	११:४७	१:२७	३:२५	५:३९	७:५६	१०:०८	१२:१९	२:३४	११,१,२,४,६,७,९,
१८ जन	४:४७	६:५२	८:३९	१०:१२	११:४३	१:२३	३:२१	५:३५	७:५२	१०:०४	१२:१५	२:३०	११,१,२,३,४,७,९,

तिथि १
रविवार
इष्ट ०।०

१०
८
११ रा.
९ सू.मं.बु.शु.
७
१२ श.
卐
६
१
३ चं.गु.
५ के.
२
४

मकर संक्रान्ति फलम्- माघ कृष्ण ११ बुधवासरे दिन ३:०५ समये मकरसंक्रान्ति प्रवेशः तस्य पुण्यकाल अद्य दिवसे। वार नाम मंदाकिनी संज्ञक संक्रांति सैनिकवर्ग, राजनैतिक लोगों, अधिकारियों को शुभकारी है। तस्य काले अनुनक्षत्र नाम मंदाकिनी संज्ञक संक्रांति सैनिकवर्ग, पुलिष आदि को सुखद। मुहूर्त्त ३० अनाज मूल्य समता। बालव करण फल- व्याघ्र वाहनं, अश्व उपवाहनं, पीत वस्त्रं, गदा आयुधं, रूपा पात्रं, पायस (खीर) भक्षणं, कुमकुम लेपनं, भूत वर्ण, चमेली पुष्पं, कंकण भूषणं, पर्ण कंचुकी, वाल्य अवस्था, उपविष्टा स्थिति। स्थिर भाव सूचक। ० माघकृष्ण ८ उत्तराषाढे भौम अतिवर्षा, सुभिक्ष, तिल घी उड़द के भाव बढेंगे। माघकृष्ण ३ पुर्वाषाढे बुध - धान्यंमंदचपूषायांव्याधिर्ग्रीष्मेपिवर्षणम्।। पूर्वाषाढ़ में हो तो धान्य मन्दा हो और ग्रीष्म में व्याधि तथा वर्षा हो। माघकृष्ण १२ उत्तराषाढे बुध - उषायांसस्यष्पित्तिरष्टवर्षशिशुक्षयः। उत्तराषाढ में हो तो अन्न की उत्पत्ति हो, आठ वर्ष तक की उम्र के बालकों का नाश हो।

तिथि ८
रविवार
इष्ट ०।०

१०
८
११ रा.
९ सू.मं.बु.शु.
७ चं.
१२ श.
卐
६
१
३ गु.
५ के.
२
४

१४	तिथि			नक्षत्र			योग			करण (प्रातः एवं सायंकाल में)				चन्द्रमा राशि समाप्ती काल			श्री सूर्य					आनंदादि योग	दिनांक	(कृपया ध्यान रखें कि इस वर्ष चंद्र राशि का समाप्ती काल दिया है)। गुरु उदयपश्चिमेः। शुक्र अस्त-पूर्णिमा को उदयपश्चिमेः । मूल निवास स्वर्गे
तिथि	वार	घटिपल	घंटामिनट	नक्षत्र	घटिपल	घंटामिनट	योग	घटिपल	घंटामिनट	प्रातः	घटिपल	घंटामिनट	सायं	राशि	घटिपल	घंटामिनट	दिनमान	सू.उ.	अस्त	उदयकालीन स्पष्ट	गति			पक्षारंभिक नक्षत्र-उत्तराषाढ़े रविः, उत्तराषाढ़े भौमः, उत्तराषाढ़े वुधः, पुनर्वसे गुरौ, उत्तराषाढ़े शुक्रः, पूर्वभाद्रपदे शनिः, शतभिषायां राहु, पूर्वाफाल्गुण्यां केतु।
१	चं.	४७।३७	रा.२:१०	उ.षा	११।४५	दि. ११:४९	वज्र	३३।५४	रा.८:४१	किंस्तु	१६।४०	दि.१:४७	बव	मकर	--	दिनरात	२६।५७	७:७	५:५४	९।०४।४५।१३	६१	काण	१९ जन	गुप्त नवरात्रि प्रारंभ। सर्वार्थसिद्धी दिन ११:४९ से रातअंत।
२	मं.	४८।४४	रा.२:३७	श्रव	१४।४६	दि. १:०२	सिद्धि	३१।६०	रा.७:५५	बाल	१८।१६	दि.२:२५	कौल	मकर	४५।५६	रा. १:३० तक	२६।५९	७:७	५:५५	९।०५।४६।१७	६१	लुंबक	२० जन	पंचक प्रारंभ रा. १:३० तक समये। द्विपुष्कर योग दिन १।०२ से से रात्रि २:३७ तक। व्यतिपात् रा.७:५५ वजे तक। से रातअंत। श्रवणे (A)
३	बु.	४८।५४	रा.२:४१	धनि	१६।५१	दि. १:५२	व्यति	२९।२२	सा.६:५२	तैति	१८।५४	दि.२:४१	गर	कुंभ	--	दिनरात	२७।०१	७:७	५:५५	९।०६।४७।२१	६१	मित्र	२१ जन	गुड़-लवण दान व्रत। पंचक दिनरात। रवियोग दिन १:५२ से रात्रिअंत। व्यतिपात् सू.उ.से सा.६:५२ वजे तक।
४	गु.	४८।१०	रा.२:२३	शत	१८।४	दि. २:२०	वरी	२६।२	सा.५:३१	वणि	१८।३७	दि.२:३४	भद्रा	कुंभ	--	दिनरात	२७।०३	७:७	५:५६	९।०७।४८।२३	६१	वज्र	२२ जन	विनायकी श्री गणेश ४ व्रतं। वरदा ४ दुण्ढिपूजन। पंचक दिनरात। रवियोग सू.उ.से दिन २:२० तक । भद्रा दिन २:३४ से रात्रि २:२३ (भूमि)।
५	शु.	४६।२९	रा.१:४२	पू.भा	१८।२३	दि. २:२८	परि	२१।५९	दि.३:५४	बव	१७।२५	दि.२:०५	बाल	कुंभ	३।२७	दि. ८:३० तक	२७।०६	७:७	५:५७	९।०८।४९।२५	६१	ध्वांक्ष	२३ जन	वसन्तपंचमी, सरस्वती जयंती, श्री पंचमी। पंचक दिनरात। रवियोग दिन २:२८ से रात्रिअंत। श्रवणे वुधः दिन १०:१८ समये।
६	श.	४३।५१	रा.१२:३९	उ.भा	१७।४७	दि. २:१३	शिव	१७।१२	दि.१:५९	कौल	१५।१७	दि.१:१३	तैति	मीन	××	दिनरात	२७।०८	७:६	५:५८	९।०९।५०।२७	६१	धूम्र	२४ जन	मन्दार षष्ठी, दारिद्रहरण व्रतारम्भ। पंचक दिनरात। मूल दिन २:१३ से रातअंत। रवियोग सू.उ.से दिन १०:५२ तक, पुनः दिन २:१३ से (B)
७	र.	४०।१२	रा.११:११	रेव	१६।१४	दि. १:३६	सिद्ध	११।४०	दि.११:४६	गर	१२।१०	दि.११:५८	वणि	मीन	१६।१४	दि. १:३६ तक	२७।१०	७:६	५:५८	९।१०।५१।२७	६१	प्रवर्ध	२५ जन	नर्मदा जयंती। भानु सप्तमी, अचला सप्तमी, मन्वादितिथि। पंचक समाप्त दि. १ :३६ समये। मूल दिनरात। रवियोग सू.उ.से दिन १:३६ तक । (C)
८	चं.	३५।३५	रा.९:२०	अश्वि	१३।४२	दि. १२:३५	साध्य, शुभ	५।२१, ५९।५७	दि.९:१४, रा.७:०५	भद्रा	८।५	दि.१०:२०	बव	मेष	××	दिनरात	२७।१३	७:६	५:५९	९।११।५२।२६	६१	राक्षस	२६ जन	मासिक दुर्गाष्टमी व्रत। भीष्म अष्टमी गणतंत्र दिवस। मूल सू.उ.से दिन १२:३५ तक। भद्रा सू.उ.से दिन १०:२० (स्वर्ग)।
९	मं.	३०।०६	रा.७:०८	भर	१०।१६	दि. ११:१२	शुक्ल	५०।२६	रा.३:१६	बाल	३।३	दि.८:१९	कौल	मेष	२४।१४	दि. ४:४७ तक	२७।१५	७:६	५:६०	९।१२।५३।२५	६१	मुसल	२७ जन	महानंदा नवमी। रवियोग दिन ११:१२ से रात्रिअंत। सर्वार्थसिद्धी दिन ११:१२ से रातअंत। क्रांतिसाम्य दिन ११:६० से दिन ४:०६।
१०	बु.	२३।५३	दि.४:३९	कृत्ति	६।३	दि. ९:३०	ब्रह्म	४२।७	रा.११:५६	गर	२३।५३	दि.४:३९	वणि	वृष	××	दिनरात	२७।१८	७:५	६:०	९।१३।५४।२३	६१	सिद्धि	२८ जन	रवियोग सू.उ.सेरात्रिअंत। सर्वार्थसिद्धी दिनरात। भद्रा रात्रि ३:२० से रात्रिअंत (स्वर्ग)। श्रवणे भौमः रात्रि १२:३७ समये।
११	गु.	१७।१२	दि.१:५८	रोहि, मृग	१:१४।५६:६	प्रा. ७:३४, रा.५:३१	ऐंद्र	३३।३१	रा.८:२९	भद्रा	१७।१२	दि.१:५८	बव	वृष	२८।४०	सा. ६:३३ तक	२७।२०	७:५	६:१	९।१४।५५।२०	६१	उत्पात	२९ जन	जया एकादशी व्रत सर्वे। रवियोग सू.उ.से प्रातः ७:३४ तक । भद्रा सू.उ.से दिन १:५८(स्वर्ग)। वैधृति रा.८:२९ वजे तक। से रातअंत।
१२	शु.	१०।१७	दि.११:११	आर्द्रा	५१।१	रा. ३:२९	वैधृ	२४।५०	सा.५:००	बाल	१०।१७	दि.११:११	कौल	मिथुन	××	दिनरात	२७।२३	७:५	६:२	९।१५।५६।१५	६१	पद्म	३० जन	शुक्रप्रदोष व्रतं। तिल द्वादशी, भीष्म द्वादशी। रवियोग रात्रि ३:२९ से रात्रिअंत। सर्वार्थसिद्धी रात्रि ३:२९ से रातअंत। वैधृति सू.उ.से सा.५:०० (D)
१३,१४	श.	३।२७, ५७।०३	दि.८:२७,रा ५:५३	पुन	४६।२१	रा. १:३७	विष्कु	१६।१९	दि.१:३६	तैति	३।२७	दि.८:२७	गर	मिथुन	३२।३०	रा. ८:०४ तक	२७।२५	७:४	६:२	९।१६।५७।१०	६१	छत्र	३१ जन	दिनत्रय व्रतारंभ। रवियोग सू.उ.से रात्रि १:३७ तक । शनि पुष्य योग रात्रि १:३७ से रातअंत। भद्रा रात्रि ५:५४ से रातअंत। धनिष्ठायां शुक्रः सायं ५:२८ समये।
१५	र.	५१।३६	रा.३:४२	पुष्य	४२।२६	रा. १२:०२	प्रीति	८।१२	दि.१०:२१	भद्रा	२४।१९	दि.४:४८	बव	कर्क	××	दिनरात	२७।२८	७:४	६:३	९।१७।५८।०४	६१	श्रीवत्स	०१ फर	माघी पूर्णिमा। संत रविदास जयंती, ललिता जयंती। शुक्र उदय पश्चिमेः प्रातः ६:२९ समये । मूल रात १२:०२ से रातअंत। रवि पुष्य योग सूउ से (E)

सूर्योदयकालीन दैनिक ग्रह स्पष्ट । ग्रह गति कलाओं में दी गई है। पक्षारंभिक अयनांश २४-१३-२२

तिथि		चन्द्र		मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		राहु	चंद्र उदयास्त समय: उदय	अस्त
वार		राशि अंश कला वि.	गति	अस्त-मार्गी	गति	अस्त-मार्गी	गति	उदय-वक्री	गति	अस्त-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	वक्र गति ३ कला	दिन	रात
१	चं.	९।०७।३१।२०	७५९	९।२।२५।३	४७	९।३।४।४१	१००	२।२४।४३।२२	८	९।०७।४३।०६	७५	११।०३।१४।३९	५	१०।१६।५९।१७	७:१५	६:१७
२	मं.	९।२०।१०।२७	७७०	९।३।११।४२	४७	९।४।४४।१७	१००	२।२४।३५।३२	८	९।०८।५८।३१	७५	११।०३।१९।४३	५	१०।१६।५६।०६	७:५२	७:१२
३	बु.	१०।०३।००।३४	७८१	९।३।५८।२१	४७	९।६।२४।२७	१०१	२।२४।२७।४५	८	९।१०।१३।५५	७५	११।०३।२४।५१	५	१०।१६।५२।५५	८:२७	८:०८
४	गु.	१०।१६।०१।३३	७९२	९।४।४५।३	४७	९।८।५।११	१०१	२।२४।२०।०३	८	९।११।२९।१९	७५	११।०३।३०।०४	५	१०।१६।४९।४४	८:६०	९:०३
५	शु.	१०।२९।१३।४१	८०४	९।५।३१।४६	४७	९।९।४६।२९	१०२	२।२४।१२।२४	८	९।१२।४४।४२	७५	११।०३।३५।२१	५	१०।१६।४६।३४	९:३३	१०:००
६	श.	११।१२।३७।४७	८१७	९।६।१८।३१	४७	९।११।२८।२१	१०२	२।२४।०४।५१	७	९।१४।००।०४	७५	११।०३।४०।४२	५	१०।१६।४३।२३	१०:०८	१०:६०
७	र.	११।२६।१५।०५	८३२	९।७।५।१७	४७	९।१३।१०।४८	१०३	२।२३।५७।२२	७	९।१५।१५।२६	७५	११।०३।४६।०८	५	१०।१६।४०।१२	१०:४५	१२:०३
८	चं.	०।१०।०६।४२	८४६	९।७।५२।५	४७	९।१४।५३।४८	१०४	२।२३।४९।५९	७	९।१६।३०।४७	७५	११।०३।५१।३७	६	१०।१६।३७।०१	११:२८	१:१०
९	मं.	०।२४।१२।५४	८६०	९।८।३८।५५	४७	९।१६।३७।२२	१०४	२।२३।४२।४१	७	९।१७।४६।०८	७५	११।०३।५७।११	६	१०।१६।३३।५१	१२:१६	२:२०
१०	बु.	१।०८।३२।२४	८७०	९।९।२५।४६	४७	९।१८।२१।२७	१०५	२।२३।३५।२९	७	९।१९।०१।२७	७५	११।०४।०२।४८	६	१०।१६।३०।४०	१:११	३:३३
११	गु.	१।२३।०२।०३	८७५	९।१०।१२।३८	४७	९।२०।६।३	१०५	२।२३।२८।२४	७	९।२०।१६।४६	७५	११।०४।०८।३०	६	१०।१६।२७।२९	२:१५	४:४३
१२	शु.	२।०७।३६।५५	८७४	९।१०।५९।३२	४७	९।२१।५१।७	१०५	२।२३।२१।२४	७	९।२१।३२।०५	७५	११।०४।१४।१५	६	१०।१६।२४।१८	३:२५	५:४८
१३,१४	श.	२।२२।१०।४८	८६६	९।११।४६।२७	४७	९।२३।३६।३६	१०६	२।२३।१४।३२	७	९।२२।४७।२३	७५	११।०४।२०।०४	६	१०।१६।२१।०८	४:३७	६:४५
१५	र.	३।०६।३७।०६	८५३	९।१२।३३।२३	४७	९।२५।२२।२७	१०६	२।२३।०७।४७	७	९।२४।०२।३९	७५	११।०४।२५।५७	६	१०।१६।१७।५७	५:४८	७:३४

लग्न प्रारंभ समय (भारतीय स्टेंडर्ड समय)

दिनांक	प्रातः पूर्व	प्रातः	दिन				सायं	रात्रि					शुभ बली लग्नें
	मकरे	कुंभे	मीने	मेषे	वृषे	मिथुने	कर्के	सिंहे	कन्यायां	तुलायां	वृश्चिके	धनुषे	इन लग्नों में गुरु, शुक्र या बुध केन्द्र त्रिकोण में होने से दोष समूह नाशक सुयोग।
१९ जन	६:४८	८:३५	१०:०८	११:३९	१:१९	३:१८	५:३१	७:४८	१०:००	१२:११	२:२७	४:४३	११,१,२,३,४,७,९,
२० जन	६:४४	८:३१	१०:०४	११:३५	१:१५	३:१४	५:२७	७:४४	९:५६	१२:०७	२:२३	४:३९	११,१,२,३,७,८,९,
२१ जन	६:४१	८:२७	१०:००	११:३१	१:११	३:१०	५:२३	७:४०	९:५२	१२:०४	२:१९	४:३५	११,१,२,३,६,७,९,
२२ जन	६:३७	८:२३	९:५६	११:२७	१:०७	३:०६	५:२०	७:३६	९:४८	११:६०	२:१५	४:३१	११,१,२,३,६,७,९,
२३ जन	६:३३	८:१९	९:५२	११:२३	१:०३	३:०२	५:१६	७:३२	९:४४	११:५६	२:११	४:२७	११,१,२,३,६,७,८,९,
२४ जन	६:२९	८:१५	९:४८	११:१९	१२:५९	२:५८	५:१२	७:२८	९:४१	११:५२	२:०७	४:२३	११,१,२,३,४,६,७,९,
२५ जन	६:२५	८:११	९:४४	११:१५	१२:५५	२:५४	५:०८	७:२४	९:३७	११:४८	२:०३	४:१९	११,१,२,३,४,७,९,
२६ जन	६:२१	८:०८	९:४१	११:११	१२:५२	२:५०	५:०४	७:२०	९:३३	११:४४	१:५९	४:१५	११,१,२,३,४,७,९,
२७ जन	६:१७	८:०४	९:३७	११:०७	१२:४८	२:४६	४:६०	७:१६	९:२९	११:४०	१:५५	४:११	११,१,२,३,४,७,९,
२८ जन	६:१३	७:६०	९:३३	११:०३	१२:४४	२:४२	४:५६	७:१२	९:२५	११:३६	१:५१	४:०७	११,१,२,३,७,९,
२९ जन	६:०९	७:५६	९:२९	१०:५९	१२:४०	२:३८	४:५२	७:०८	९:२१	११:३२	१:४७	४:०४	११,१,२,३,६,७,९,
३० जन	६:०५	७:५२	९:२५	१०:५५	१२:३६	२:३४	४:४८	७:०५	९:१७	११:२८	१:४३	३:६०	११,१,२,३,६,७,८,९,
३१ जन	६:०१	७:४८	९:२१	१०:५२	१२:३२	२:३०	४:४४	७:०१	९:१३	११:२४	१:३९	३:५६	११,१,२,३,४,६,७,८,९,
०१ फर	५:५७	७:४४	९:१७	१०:४८	१२:२८	२:२६	४:४०	६:५७	९:०९	११:२०	१:३५	३:५२	११,१,२,३,४,६,७,९,

तिथि १
चन्द्रवार
इष्ट ०।०

११ रा. | ९
१२ श. | १० सू.चं.मं.बु.शु. | ८
१ | 卐 | ७
२ | ४ | ६
३ गु. | ५ के.

माघशुक्ल १० श्रवणे भौम अंत समयमें वर्षा, कम अन्न उपजेगा। माघशुक्ल ५ श्रवणे बुध - श्रुतौगुड़ातसीधान्यचणकेषुहिमाद्भयम्।। श्रवण में हो तो गुड़ अलसी और चणे आदि धान्य में बर्फ ओले गिरने का भय हो। माघशुक्ल १२ धनिष्ठायां बुध - वासवेतुगवांपीड़ाबारुणेशूद्ररोगता। धनिष्ठा में गायों को पीड़ा हो।

(A) शुक्रः रात्रि २:४१ समये। उत्तरभाद्रपदे शनि दिन ८:२७ समये। (B) रात्रिअंत। श्रवणे रवि दिन १०:५२ समये। (C) सर्वार्थसिद्धी दिन १:३६ से रातअंत। भद्रा रात्रि ११:११ से रात्रिअंत (भूमि)। (D) वजे तक। धनिष्ठायां वुधः रात्रि ३:१८ समये। (E) रात्रि १२:०२ तक। भद्रा सू.उ.से दिन ४:४८(भूमि)।

तिथि ८
चन्द्रवार
इष्ट ०।०

११ रा. | ९
१२ श. | १० सू.मं.बु.शु. | ८
१ चं. | 卐 | ७
२ | ४ | ६
३ गु. | ५ के.

फाल्गुन कृष्णपक्ष। शुभ विक्रम संवत् २०८२ शकः १९४७। सिद्धार्थ संवत्सर। कलियुग संवत् ५१२६। शिशिर ऋतुः। श्री सूर्य उत्तरायन-दक्षिणगोले। फरवरी ईसवी सन् २०२६। फरवरी। वंगला सन् १४३२ । वीर निर्वाण संवत् २५५२।

१६		तिथि		नक्षत्र			योग			करण (प्रातः एवं सायंकाल में)				चन्द्रमा राशि समाप्ती काल			श्री सूर्य					आनंदादि योग	दिनांक	(कृपया ध्यान रखें कि इस वर्ष चंद्र राशि का समाप्ती काल दिया है)। गुरु उदयपश्चिमेः। शुक्र उदयपश्चिमेः। मूल निवास पाताले
तिथि	वार	घटिपल	घंटामिनट	नक्षत्र	घटिपल	घंटामिनट	योग	घटिपल	घंटामिनट	प्रातः	घटिपल	घंटामिनट	सायं	राशि	घटिपल	घंटामिनट	दिनमान	सू.उ.	अस्त	उदयकालीन स्पष्ट	गति			पक्षारंभिक नक्षत्र-श्रवणे रविः, श्रवणे भौमः, धनिष्ठायां वुधः, पुनर्वसे गुरौ, धनिष्ठायां शुक्रः, उत्तरभाद्रपदे शनिः, शतभिषायां राहु, पूर्वाफाल्गुण्यां केतु।
१	चं.	४७।१७	रा.१:५८	श्ले	३९।३५	रा. १०:५३	आयु, सौभ	०।४६, ५९।५३	प्रा.७:२२, रा.७:०१	बाल	१९।२०	दि.२:४८	कौल	कर्क	३९।३५	रा. १०:५३ तक	२७।३१	७:३	६:४	९।१८।५८।५७	६१	सौम्य	०२ फर	मूल दिनरात।
२	मं.	४४।२३	रा.१२:४८	मघा	३८।८	रा. १०:१८	शोभ	४९।१३	रा.२:४४	तैति	१५।३९	दि.१:१८	गर	सिंह	--	दिनरात	२७।३४	७:३	६:४	९।१९।५९।४८	६१	कालदंड़	०३ फर	मूल सू.उ.से रात १०:१८ तक। कुंभे बुधः रात्रि ९:४५ समये।
३	बु.	४३।१०	रा.१२:१८	पू.फा.	३८।१७	रा. १०:२१	अति	४५।२२	रा.१:११	वणि	१३।३२	दि.१२:२७	भद्रा	सिंह	५३।२८	रा. ४:२६ तक	२७।३६	७:२	६:५	९।२१।००।३९	६१	स्थिर	०४ फर	भद्रा दिन १२:२७ से रात्रि १२:१८ (भूमि)।
४	गु.	४३।४४	रा.१२:३२	उ.फा.	४०।१०	रा. ११:०६	सुक	४२।५४	रा.१२:१२	बव	१३।१२	दि.१२:१९	बाल	कन्या	--	दिनरात	२७।३९	७:२	६:६	९।२२।०१।२८	६१	मातंग	०५ फर	संकष्टी श्री गणेश ४ व्रतं। कुंभे शुक्रः रात्रि १:०१ समये।
५	शु.	४६।०५	रा.१:२७	हस्त	४३।४६	रा. १२:३२	धृति	४१।४७	रा.११:४४	कौल	१४।४१	दि.१२:५४	तैति	कन्या	××	दिनरात	२७।४२	७:१	६:६	९।२३।०२।१६	६१	अमृत	०६ फर	धनिष्ठायां रवि दिन २:०२ समये। बुध उदय पश्चिमेः सायं ६:५५ समये।
६	श.	५०।०१	रा.३:०१	चित्रा	४८।५४	रा. २:३४	शूल	४१।५४	रा.११:४६	गर	१७।५३	दि.२:१०	वणि	कन्या	१६।०९	दि. १:२९ तक	२७।४५	७:१	६:७	९।२४।०३।०३	६१	काण	०७ फर	रवियोग रात्रि २:३४ से रात्रिअंत। सर्वार्थसिद्धी रात्रि २:३४ से रातअंत। भद्रा रात्रि ३:०१ से रात्रिअंत (पाताल)। शतभिषायां वुधः दिन ४:२३ समये।
७	र.	५५।१२	रा.५:०५	स्वा	५५।१४	रा. ५:०६	गंड़	४२।५९	रा.१२:१२	भद्रा	२२।३१	दि.४:०१	बव	तुला	××	दिनरात	२७।४८	७:०	६:८	९।२५।०३।४८	६१	लुंबक	०८ फर	रवियोग सू.उ.से रात्रि ५:०६ तक । क्रांतिसाम्य सायं ६:३९ से रात्रि ११:१२। भद्रा सू.उ.से दिन ४:०१(पाताल)।
८	चं.	६०।००	वृद्धि	विशा	६०।०	वृद्धि	बृद्धि	४४।४४	रा.१२:५३	बाल	२६।५९	सा.६:१६	कौल	तुला	४५।३३	रा. १:१३ तक	२७।५१	६:६०	६:८	९।२६।०४।३३	६१	मित्र	०९ फर	कालाष्टमी व्रतं। सर्वार्थसिद्धी रात्रि ७:५६ से रातअंत।
८	मं.	१।१३	प्रा.७:२८	विशा	२।२१	प्रा. ७:५६	ध्रुव	४६।४६	रा.१:४२	कौल	१।१३	प्रा.७:२८	तैति	वृश्चिक	××	दिनरात	२७।५४	६:५९	६:९	९।२७।०५।१६	६१	श्रीवत्स	१० फर	सीता अष्टमी।
९	बु.	७।२८	दि.९:५८	अनु	९।४२	दि. १०:५१	व्या	४८।४३	रा.२:२८	गर	७।२८	दि.९:५८	वणि	वृश्चिक	××	दिनरात	२७।५७	६:५९	६:९	९।२८।०५।५७	६१	सौम्य	११ फर	मूल दिन १०:५१ से रातअंत। अमृतसिद्धि दिन १०:५१ पर्यन्त। भद्रा रात्रि ११:११ से रात्रिअंत (स्वर्ग)। शतभिषायां शुक्रः दिन ८:४० समये।
१०	गु.	१३।२४	दि.१२:२०	ज्ये	१६।४३	दि. १:३९	हर्ष	५०।१४	रा.३:०४	भद्रा	१३।२४	दि.१२:२०	बव	वृश्चिक	१६।४३	दि. १:३९ तक	२७।६०	६:५८	६:१०	९।२९।०६।३७	६१	कालदंड़	१२ फर	कुंभे रवि रात्रि ४:०५ समये। पुण्यकाल परा दिवसे। मूल दिनरात। भद्रा सू.उ.से दिन १२:२०(स्वर्ग)।
११	शु.	१८।३४	दि.२:२३	मूल	२२।६०	दि. ४:०९	वज्र	५१।०	रा.३:२२	बाल	१८।३४	दि.२:२३	कौल	धनु	××	दिनरात	२८।०३	६:५७	६:११	१०।००।०७।१६	६१	स्थिर	१३ फर	विजया एकादशी व्रत सर्वे। मूल सू.उ.से दिन ४:०९ तक।
१२	श.	२२।३५	दि.३:५९	पू.षा	२८।१०	सा. ६:१३	सिद्धि	५०।४९	रा.३:१६	तैति	२२।३५	दि.३:५९	गर	धनु	४४।१८	रा. १२:४० तक	२८।०६	६:५७	६:११	१०।०१।०७।५४	६१	मातंग	१४ फर	शनिप्रदोष व्रतं। व्यतिपात् रा.३:१६ वजे तक। से रातअंत। धनिष्ठायां भौमः रात्रि १२:३८ समये।
१३	र.	२५।१५	सा.५:०२	उ.षा	३२।३	रा. ७:४५	व्यति	४९।३३	रा.२:४५	वणि	२५।१५	सा.५:०२	भद्रा	मकर	××	दिनरात	२८।०९	६:५६	६:१२	१०।०२।०८।३०	६१	अमृत	१५ फर	महाशिवरात्रि व्रतं। सर्वार्थसिद्धी रात्रि ७:४५ पर्यन्त। भद्रा सायं ५:०२ से रात्रि ५:२४ (पाताल)। व्यतिपात् सू.उ.से रा.२:४५ वजे तक। (A)
१४	चं.	२६।२९	सा.५:३१	श्रव	३४।३३	रा. ८:४४	वरी	४७।११	रा.१:४८	शकु	२६।२९	सा.५:३१	चतु	मकर	××	दिनरात	२८।१२	६:५५	६:१२	१०।०३।०९।०४	६१	सिद्धि	१६ फर	सर्वार्थसिद्धी रात्रि ८:४४ पर्यन्त। (A) पूर्वभाद्रपदे वुधः रात्रि ९:३८ समये।
३०	मं.	२६।२०	सा.५:२७	धनि	३५।४३	रा. ९:१२	परि	४३।४७	रा.१२:२५	नाग	२६।२०	सा.५:२७	किंस्तु	मकर	५।२३	दि. ९:०४ तक	२८।१५	६:५५	६:१३	१०।०४।०९।३७	६१	उत्पात	१७ फर	अमावस्या। सूर्य ग्रहण विदेशों में। पंचक प्रारंभ दि. ९:०४ तक समये।

सूर्योदयकालीन दैनिक ग्रह स्पष्ट । ग्रह गति कलाओं में दी गई है। पक्षारंभिक अयनांश २४-१३-२४

तिथि		चन्द्र		मंगल		बुध		गुरू		शुक्र		शनि		राहू	चंद्र उदयास्त समय: उदय	अस्त
	वार	राशि अंश कला वि.	गति	अस्त-मार्गी	गति	अस्त-मार्गी	गति	उदय-वक्री	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	वक्र गति ३ कला	दिन	रात
१	चं.	३।२०।४९।४२	८३४	९।१३।२०।२०	४७	९।२७।८।३४	१०६	२।२३।०१।०९	७	९।२५।१७।५६	७५	११।०४।३१।५३	६	१०।१६।१४।४६	६:५४	७:५२
२	मं.	४।०४।४३।४५	८१२	९।१४।७।११	४७	९।२८।५४।५२	१०६	२।२२।५४।३९	६	९।२६।३३।११	७५	११।०४।३७।५३	६	१०।१६।११।३५	७:५६	८:३२
३	बु.	४।१८।१६।११	७९०	९।१४।५४।११	४७	१०।०।४१।१३	१०६	२।२२।४८।१७	६	९।२७।४८।२५	७५	११।०४।४३।५६	६	१०।१६।०८।२५	८:५३	९:०६
४	गु.	५।०१।२५।५७	७६८	९।१५।४१।२०	४७	१०।२।२७।३०	१०६	२।२२।४२।०३	६	९।२९।०३।३९	७५	११।०४।५०।०३	६	१०।१६।०५।१४	९:४७	९:३८
५	शु.	५।१४।१३।५६	७४९	९।१६।२८।२३	४७	१०।४।१३।३०	१०६	२।२२।३५।५७	६	१०।००।१८।५२	७५	११।०४।५६।१३	६	१०।१६।०२।०३	१०:३८	१०:०८
६	श.	५।२६।४२।३९	७३३	९।१७।१५।२६	४७	१०।५।५९।३	१०५	२।२२।३०।००	६	१०।०१।३४।०४	७५	११।०५।०२।२७	६	१०।१५।५८।५३	११:२८	१०:३९
७	र.	६।०८।५५।४२	७२२	९।१८।२।३०	४७	१०।७।४३।५४	१०४	२।२२।२४।१२	६	१०।०२।४९।१५	७५	११।०५।०८।४३	६	१०।१५।५५।४२	१२:१९	११:११
८	चं.	६।२०।५७।२०	७१५	९।१८।४९।३५	४७	१०।९।२७।४५	१०३	२।२२।१८।३३	५	१०।०४।०४।२५	७५	११।०५।१५।०३	६	१०।१५।५२।३१	१:१०	११:४५
८	मं.	७।०२।५२।०६	७१२	९।१९।३६।४१	४७	१०।११।१०।१६	१०१	२।२२।१३।०३	५	१०।०५।१९।३४	७५	११।०५।२१।२६	६	१०।१५।४९।२०	२:०१	१२:२५
९	बु.	७।१४।४४।३३	७१५	९।२०।२३।४८	४७	१०।१२।५१।५	९९	२।२२।०७।४३	५	१०।०६।३४।४२	७५	११।०५।२७।५२	६	१०।१५।४६।१०	२:५२	१:०९
१०	गु.	७।२६।३९।०६	७२१	९।२१।१०।५६	४७	१०।१४।२९।४७	९६	२।२२।०२।३३	५	१०।०७।४९।४९	७५	११।०५।३४।२०	७	१०।१५।४२।५९	३:४१	१:५७
११	शु.	८।०८।३९।५५	७३१	९।२१।५८।५	४७	१०।१६।५।५२	९३	२।२१।५७।३२	५	१०।०९।०४।५५	७५	११।०५।४०।५२	७	१०।१५।३९।४८	४:२७	२:४९
१२	श.	८।२०।५०।४३	७४४	९।२२।४५।१४	४७	१०।१७।३८।४८	८९	२।२१।५२।४१	५	१०।१०।१९।६०	७५	११।०५।४७।२६	७	१०।१५।३६।३८	५:१०	३:४३
१३	र.	९।०३।१४।३५	७५९	९।२३।३२।२४	४७	१०।१९।८।१	८५	२।२१।४८।०१	५	१०।११।३५।०४	७५	११।०५।५४।०३	७	१०।१५।३३।२७	५:४९	४:३९
१४	चं.	९।१५।५३।३९	७७५	९।२४।१९।३५	४७	१०।२०।३२।५४	८०	२।२१।४३।३१	४	१०।१२।५०।०६	७५	११।०६।००।४३	७	१०।१५।३०।१६	६:२५	५:३५
३०	मं.	९।२८।४८।५४	७९१	९।२५।६।४६	४७	१०।२१।५२।४६	७४	२।२१।३९।११	४	१०।१४।०५।०८	७५	११।०६।०७।२५	७	१०।१५।२७।०६	××	६:३०

लग्न प्रारंभ समय (भारतीय स्टेंडर्ड समय)

दिनांक	प्रातः पूर्व	प्रातः	दिन				सायं	रात्रि					शुभ बली लग्नें
	मकरे	कुंभे	मीने	मेषे	वृषे	मिथुने	कर्के	सिंहे	कन्यायां	तुलायां	वृश्चिके	धनुषे	इन लग्नों में गुरु, शुक्र या बुध केन्द्र त्रिकोण में होने से दोष समूह नाशक सुयोग।
०२ फर	५:५३	७:४०	९:१३	१०:४४	१२:२४	२:२२	४:३६	६:५३	९:०५	११:१६	१:३१	३:४८	११,१,२,३,७,९,
०३ फर	५:४९	७:३६	९:०९	१०:४०	१२:२०	२:१८	४:३२	६:४९	९:०१	११:१२	१:२७	३:४४	११,१,२,३,७,९,
०४ फर	५:४५	७:३२	९:०५	१०:३६	१२:१६	२:१४	४:२८	६:४५	८:५७	११:०८	१:२३	३:४०	११,१,२,४,६,७,८,९,
०५ फर	५:४१	७:२८	९:०१	१०:३२	१२:१२	२:११	४:२४	६:४१	८:५३	११:०४	१:२०	३:३६	११,१,२,४,६,७,८,९,
०६ फर	५:३७	७:२४	८:५७	१०:२८	१२:०८	२:०७	४:२०	६:३७	८:४९	११:००	१:१६	३:३२	११,२,६,७,८,९,
०७ फर	५:३४	७:२०	८:५३	१०:२४	१२:०४	२:०३	४:१६	६:३३	८:४५	१०:५७	१:१२	३:२८	११,२,७,८,९,
०८ फर	५:३०	७:१६	८:४९	१०:२०	१२:००	१:५९	४:१३	६:२९	८:४१	१०:५३	१:०८	३:२४	११,२,७,८,९,
०९ फर	५:२६	७:१२	८:४५	१०:१६	११:५६	१:५५	४:०९	६:२५	८:३७	१०:४९	१:०४	३:२०	११,२,३,७,८,९,
१० फर	५:२२	७:०८	८:४१	१०:१२	११:५२	१:५१	४:०५	६:२१	८:३४	१०:४५	१२:६०	३:१६	११,२,७,८,९,
११ फर	५:१८	७:०४	८:३७	१०:०८	११:४८	१:४७	४:०१	६:१७	८:३०	१०:४१	१२:५६	३:१२	११,२,७,८,९,
१२ फर	५:१४	७:०१	८:३४	१०:०४	११:४५	१:४३	३:५७	६:१३	८:२६	१०:३७	१२:५२	३:०८	११,२,३,७,८,९,
१३ फर	५:१०	६:५७	८:३०	१०:००	११:४१	१:३९	३:५३	६:०९	८:२२	१०:३३	१२:४८	३:०४	११,२,३,६,७,८,९,
१४ फर	५:०६	६:५३	८:२६	९:५६	११:३७	१:३५	३:४९	६:०५	८:१८	१०:२९	१२:४४	३:००	११,२,६,७,८,९,
१५ फर	५:०२	६:४९	८:२२	९:५२	११:३३	१:३१	३:४५	६:०२	८:१४	१०:२५	१२:४०	२:५७	११,२,६,७,८,९,
१६ फर	४:५८	६:४५	८:१८	९:४८	११:२९	१:२७	३:४१	५:५८	८:१०	१०:२१	१२:३६	२:५३	११,२,६,७,८,९,
१७ फर	४:५४	६:४१	८:१४	९:४५	११:२५	१:२३	३:३७	५:५४	८:०६	१०:१७	१२:३२	२:४९	११,२,६,७,८,९,

तिथि १
चन्द्रवार
इष्ट ०।०

११ रा. | ९
१२ श. | १० सू.मं.बु.शु. | ८
१ | 卐 | ७
२ | ४ चं. | ६
३ गु. | ५ के.

कुंभ संक्रान्ति फलम्- फाल्गुन कृष्ण १० गुरुवासरे रात्रि ४:०५ समये कुंभसंक्रान्ति प्रवेशः तस्य पुण्यकाल परा दिवसे। वार नाम मंदा संज्ञक संक्रांति बुद्धिजीवी वर्ग, लेखको, अध्यापकों, व्राम्हणों, वैज्ञानिकों आदि को शुभद है। तस्य काले मूलनक्षत्र नाम राक्षसी संज्ञक संक्रांति चाण्ड़ालवर्ग को सुखद। मुहूर्त्त ३० अनाज मूल्य समता। बालव करण फल- व्याघ्र वाहनं, अश्व उपवाहनं, पीत वस्त्रं, गदा आयुधं, रूपा पात्रं, पायस (खीर) भक्षणं, कुमकुम लेपनं, भूत वर्ण, चमेली पुष्पं, कंकण भूषणं, पर्ण कंचुकी, वाल्य अवस्था, उपविष्टा स्थिति। स्थिर भाव सूचक। कई प्रकार के रोग फैलेंगे। फाल्गुनकृष्ण १२ धनिष्ठायां भौम समृद्धि, अनाज गुड़ सस्ते। फाल्गुनकृष्ण ६ शतभिषायां बुध - शतभिषा में शूद्रों में रोग हो। फाल्गुनकृष्ण १३ पूर्वभाद्रपदे बुध - दुर्भिक्षमथपूभायांक्षेममारोग्यतास्मृता।। पूर्वाभाद्रपद में हो तो दुर्भिक्ष हो और क्षेम तथा आरोग्य हो।

तिथि ८
चन्द्रवार
इष्ट ०।०

११ बु.शु.रा. | ९
१२ श. | १० सू.मं. | ८
१ | 卐 | ७ चं.
२ | ४ | ६
३ गु. | ५ के.

१४	तिथि			नक्षत्र			योग			करण (प्रातः एवं सायंकाल में)				चन्द्रमा राशि समाप्ती काल			श्री सूर्य					आनंदादि योग	दिनांक	(कृपया ध्यान रखें कि इस वर्ष चंद्र राशि का समाप्ती काल दिया है)। गुरु उदयपश्चिमेः। शुक्र उदयपश्चिमेः। मूल निवास पाताले
तिथि	वार	घटिपल	घंटामिनट	नक्षत्र	घटिपल	घंटामिनट	योग	घटिपल	घंटामिनट	प्रातः	घटिपल	घंटामिनट	सायं	राशि	घटिपल	घंटामिनट	दिनमान	सू.उ.	अस्त	उदयकालीन स्पष्ट	गति			पक्षारंभिक नक्षत्र-धनिष्ठायां रविः, धनिष्ठायां भौमः, पूर्वभाद्रपदे वुधः, पुनर्वसे गुरौ, शतभिषायां शुक्रः, उत्तरभाद्रपदे शनिः, शतभिषायां राहु, पूर्वाफाल्गुण्यां केतु।
१	बु.	२४।५७	दि.४:५३	शत	३५।४३	रा. ९:११	शिव	३९।२७	रा.१०:४१	बव	२४।५७	दि.४:५३	बाल	कुंभ	--	दिनरात	२८।१९	६:५४	६:१३	१०।०५।१०।०९	६०	मानस	१८ फर	पंचक दिनरात। (&) वालामुखीयो प्रातः ७:०५ से दिन ३:१० तक। भद्रा प्रातः ७:०५ से सायं ६:०१ (स्वर्ग)। वैधृति प्रा.७:२६ वजे से रातअंत।
२	गु.	२२।३०	दि.३:५३	पू.भा	३४।४३	रा. ८:४७	सिद्ध	३४।२०	रा.८:३७	कौल	२२।३०	दि.३:५३	तैति	कुंभ	२०।०४	दि. २:५५ तक	२८।२२	६:५३	६:१४	१०।०६।१०।३८	६०	मुद्गर	१९ फर	फु लेरा दोज। श्री रामकृष्ण परमहंस जयंती। पंचक दिनरात। शतभिषायां रवि सायं ६:३२ समये।
३	शु.	१९।१२	दि.२:३३	उ.भा	३२।५५	रा. ८:०२	साध्य	२८।३५	सा.६:१८	गर	१९।१२	दि.२:३३	वणि	मीन	--	दिनरात	२८।२५	६:५२	६:१४	१०।०७।११।०७	६०	ध्वज	२० फर	मधुक तृतीया। पंचक दिनरात। मूल रात ८:०२ से रातअंत। रवियोग रात्रि ८:०२ से रात्रिअंत। अमृतसिद्धियोग रात्रि ८:०२ से रातअंत। भद्रा (A)
४	श.	१५।१३	दि.१२:५७	रेव	३०।२९	रा. ७:०३	शुभ	२२।१९	दि.३:४७	भद्रा	१५।१३	दि.१२:५७	बव	मीन	३०।२९	रा. ७:०३ तक	२८।२८	६:५२	६:१५	१०।०८।११।३३	६०	धाता	२१ फर	विनायकी श्री गणेश ४ व्रतं। अविघ्नकरण ब्रतारंभ। पंचक समाप्त रा. ७ :३ समये। मूल दिनरात। रवियोग सू.उ.से रात्रि ७:०३ तक ।(B)
५	र.	१०।४३	दि.११:०८	अश्वि	२७।३५	सा. ५:५३	शुक्ल	१५।३९	दि.१:०७	बाल	१०।४३	दि.११:०८	कौल	मेष	××	दिनरात	२८।३२	६:५१	६:१६	१०।०९।११।५९	६०	आनंद	२२ फर	मूल सू.उ.से सायं. ५:५३ तक। रवियोग सायं ५:५३ से रात्रिअंत। सर्वार्थसिद्धी सायं ५:५३ पर्यन्त। (A) रात्रि १:४८ से रात्रिअंत (भूमि)।
६	चं.	५।४९	दि.९:१०	भर	२४।२०	दि. ४:३४	ब्रह्म	८।४१	दि.१०:१९	तैति	५।४९	दि.९:१०	गर	मेष	३८।२९	रा. १०:१४ तक	२८।३५	६:५०	६:१६	१०।१०।१२।२२	६०	चर	२३ फर	रवियोग सू.उ.से दिन ४:३४ तक । कुंभे भौमः दिन ११:५३ समये। (B) क्रांतिसाम्य रात्रि ९:३३ से रात्रि १:४२। भद्रा सू.उ.से दिन (%)
७,८	मं.	०।३९, ५५।११	प्रा.७:०५,रा ४:५६	कृत्ति	२०।५२	दि. ३:१०	ऐंद्र	१।३१	प्रा.७:२६	वणि	०।३९	प्रा.७:०५	भद्रा	वृष	××	दिनरात	२८।३८	६:४९	६:१७	१०।११।१२।४४	६०	गद	२४ फर	होलाष्टक प्रारंभ। जिष्णु सप्तमीव्रत। मासिक दुर्गाष्टमी व्रत। त्रिपुष्कर योग सूर्योदय से प्रातः ७:०५ तक। सर्वार्थसिद्धी दिन ३:१० पर्यन्त। (&)
९	बु.	४९।५९	रा.२:४८	रोहि	१७।१८	दि. १:४४	विष्कु	४६।५४	रा.१:३४	बाल	२२।३९	दि.३:५२	कौल	वृष	४५।३१	रा. १:०१ तक	२८।४१	६:४९	६:१७	१०।१२।१३।०४	६०	शुभ	२५ फर	रवियोग दिन १:४४ से रात्रिअंत। सर्वार्थसिद्धी दिनरात। ज्वालामुखी योग सू.उ. से दिन १:४४। (%) १२:५७(भूमि)। पूर्वभाद्रपदे शुक्रः रात्रि १२:२८ समये।
१०	गु.	४४।४५	रा.१२:४२	मृग	१३।४५	दि. १२:१८	प्रीति	३९।४१	रा.१०:४०	तैति	१७।२१	दि.१:४४	गर	मिथुन	××	दिनरात	२८।४५	६:४८	६:१८	१०।१३।१३।२२	६०	मृत्यु	२६ फर	रवियोग सू.उ.सेरात्रिअंत। बुध वक्री दिन १२:२३ समये (D) पश्चिमेः रात्रि ७:०९ समये। मीने शुक्रः रात्रि १२:४७ समये।
११	शु.	३९।४८	रा.१०:४२	आर्द्रा	१०।२३	दि. १०:५६	आयु	३२।४१	रा.७:५१	वणि	१२।१४	दि.११:४०	भद्रा	मिथुन	५३।०३	रा. ४:०० तक	२८।४८	६:४७	६:१८	१०।१४।१३।३९	६०	पद्म	२७ फर	आमलकी एकादशी व्रत सर्वे। रवियोग सू.उ.से दिन १०:५६ तक । सर्वार्थसिद्धी दिन १०:५६ से रातअंत। भद्रा दिन ११:४० से रात्रि १०:४२ (स्वर्ग)।
१२	श.	३५।१७	रा.८:५३	पुन	७।२०	दि. ९:४२	सौभ	२५।६०	सा.५:१०	बव	७।२६	दि.९:४५	बाल	कर्क	××	दिनरात	२८।५१	६:४६	६:१९	१०।१५।१३।५४	६०	छत्र	२८ फर	पापनाशनी, सुकृत द्वादशीव्रत। त्रिपुष्कर योग सूर्योदय से दिन ९:४२ तक। शनि पुष्य योग दिन ९:४२ से रातअंत।
१३	र.	३१।२३	रा.७:१८	पुष्य	४।४९	दि. ८:४१	शोभ	१९।४७	दि.२:४०	कौल	३।१०	दि.८:०१	तैति	कर्क	××	दिनरात	२८।५५	६:४५	६:१९	१०।१६।१४।०७	६०	श्रीवत्स	०१ मार्च	रविप्रदोष व्रतं। नन्द त्रयोदशी। मूल दिन ८:४१ से रातअंत। रवियोग दिन ८:४१ से रात्रिअंत। रविपुष्य योग सू उ से दिन ८:४१ तक। बुध अस्त (D)
१४	चं.	२८।१९	सा.६:०४	श्ले	३।०	प्रा. ७:५६	अति	१४।१२	दि.१२:२५	वणि	२८।१९	सा.६:०४	भद्रा	कर्क	३।००	प्रा. ७:५६ तक	२८।५८	६:४४	६:२०	१०।१७।१४।१८	६०	सौम्य	०२ मार्च	होलिका दहन भद्रा उपरान्त रात्रिअंत ५.३३ से सूर्योदय ६.३५ के बीच। महेश व्रतारंभ, बृषदानव्रत।
१५	मं.	२६।१९	सा.५:१५	मघा	२।९	प्रा. ७:३५	सुक	९।२३	दि.१०:२९	बव	२६।१९	सा.५:१५	बाल	सिंह	××	दिनरात	२९।०१	६:४३	६:२०	१०।१८।१४।२८	६०	कालदंड़	०३ मार्च	मन्वादितिथि, अशोकव्रत। लक्ष्मीनारायणव्रत। चैतन्य महाप्रभु ज.। खग्रास चन्द्रग्रहण।

सूर्योदयकालीन दैनिक ग्रह स्पष्ट । ग्रह गति कलाओं में दी गई है। पक्षारंभिक अयनांश २४-१३-२७

तिथि		चन्द्र		मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		राहु	चंद्र उदयास्त समय: उदय	अस्त
	वार	राशि अंश कला वि.	गति	अस्त-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-वक्री	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	वक्र गति ३ कला	दिन	रात
१	बु.	१०।१२।००।०९	८०६	९।२५।५३।५८	४७	१०।२३।६।५८	६८	२।२१।३५।०३	४	१०।१५।२०।०९	७५	११।०६।१४।१०	७	१०।१५।२३।५५	६:६०	६:५६
२	गु.	१०।२५।२६।०९	८१९	९।२६।४१।१०	४७	१०।२४।१४।४७	६१	२।२१।३१।०४	४	१०।१६।३५।०८	७५	११।०६।२०।५७	७	१०।१५।२०।४४	७:३४	७:५४
३	शु.	११।०९।०४।५९	८२९	९।२७।२८।२३	४७	१०।२५।१५।३३	५३	२।२१।२७।१७	४	१०।१७।५०।०६	७५	११।०६।२७।४७	७	१०।१५।१७।३४	८:०९	८:५४
४	श.	११।२२।५४।२३	८३८	९।२८।१५।३६	४७	१०।२६।८।३७	४५	२।२१।२३।४१	३	१०।१९।०५।०३	७५	११।०६।३४।३९	७	१०।१५।१४।२३	८:४७	९:५७
५	र.	०।०६।५२।०६	८४४	९।२९।२।५०	४७	१०।२६।५३।२२	३६	२।२१।२०।१६	३	१०।२०।१९।५९	७५	११।०६।४१।३३	७	१०।१५।११।१२	९:२९	११:०४
६	चं.	०।२०।५६।०२	८४८	९।२९।५०।४	४७	१०।२७।२९।१५	२७	२।२१।१७।०३	३	१०।२१।३४।५३	७५	११।०६।४८।२९	७	१०।१५।०८।०२	१०:१५	१२:१३
७,८	मं.	१।०५।०४।१४	८५०	१०।०।३७।१८	४७	१०।२७।५५।५१	१७	२।२१।१४।००	३	१०।२२।४९।४६	७५	११।०६।५५।२८	७	१०।१५।०४।५१	११:०८	१:२४
९	बु.	१।१९।१४।४४	८५१	१०।१।२४।३३	४७	१०।२८।१२।४९	७	२।२१।११।०९	३	१०।२४।०४।३८	७५	११।०७।०२।२८	७	१०।१५।०१।४०	१२:०८	२:३४
१०	गु.	२।०३।२५।२६	८४९	१०।२।११।४८	४७	१०।२८।१९।५९	-३	२।२१।०८।३०	२	१०।२५।१९।२८	७५	११।०७।०९।३०	७	१०।१४।५८।३०	१:१४	३:३८
११	शु.	२।१७।३३।५८	८४४	१०।२।५९।३	४७	१०।२८।१७।११	-१२	२।२१।०६।०२	२	१०।२६।३४।१७	७५	११।०७।१६।३४	७	१०।१४।५५।११	२:२३	४:३६
१२	श.	३।०१।३७।४३	८३६	१०।३।४६।१८	४७	१०।२८।४।५९	-२२	२।२१।०३।४५	२	१०।२७।४९।०५	७५	११।०७।२३।४०	७	१०।१४।५२।०८	३:३२	५:२६
१३	र.	३।१५।३३।५०	८२६	१०।४।३३।३३	४७	१०।२७।४३।२२	-३०	२।२१।०१।४०	२	१०।२९।०३।५१	७५	११।०७।३०।४८	७	१०।१४।४८।५८	४:३९	६:०९
१४	चं.	३।२९।१९।२०	८१२	१०।५।२०।४८	४७	१०।२७।१२।६०	-३८	२।२०।५९।४७	२	११।००।१८।३६	७५	११।०७।३७।५७	७	१०।१४।४५।४७	५:४१	६:४७
१५	मं.	४।१२।५१।२९	७९७	१०।६।८।३	४७	१०।२६।३४।४१	-४५	२।२०।५८।०६	१	११।०१।३३।२०	७५	११।०७।४५।०८	७	१०।१४।४२।३६	६:३९	७:२१

लग्न प्रारंभ समय (भारतीय स्टेंडर्ड समय)

दिनांक	प्रातः पूर्व: कुंभे	प्रातः: मीने	दिन: मेषे	वृषे	मिथुने	कर्के	सायं: सिंहे	रात्रि: कन्यायां	तुलायां	वृश्चिके	धनुषे	मकरे	शुभ बली लग्नें (इन लग्नों में गुरु, शुक्र या बुध केन्द्र त्रिकोण में होने से दोष समूह नाशक सुयोग।)
१८ फर	६:३७	८:१०	९:४१	११:२१	१:१९	३:३३	५:५०	८:०२	१०:१३	१२:२८	२:४५	४:५०	११,२,३,६,७,८,९,
१९ फर	६:३३	८:०६	९:३७	११:१७	१:१५	३:२९	५:४६	७:५८	१०:०९	१२:२४	२:४१	४:४६	११,२,३,६,७,८,९,
२० फर	६:२९	८:०२	९:३३	११:१३	१:११	३:२५	५:४२	७:५४	१०:०५	१२:२०	२:३७	४:४२	११,२,३,६,७,८,९,
२१ फर	६:२५	७:५८	९:२९	११:०९	१:०७	३:२१	५:३८	७:५०	१०:०१	१२:१६	२:३३	४:३८	११,२,३,६,७,८,९,
२२ फर	६:२१	७:५४	९:२५	११:०५	१:०४	३:१७	५:३४	७:४६	९:५७	१२:१३	२:२९	४:३४	११,२,३,६,७,८,९,
२३ फर	६:१७	७:५०	९:२१	११:०१	१२:६०	३:१३	५:३०	७:४२	९:५४	१२:०९	२:२५	४:३०	११,२,६,७,८,९,
२४ फर	६:१३	७:४६	९:१७	१०:५७	१२:५६	३:०९	५:२६	७:३८	९:५०	१२:०५	२:२१	४:२७	११,२,६,७,८,९,
२५ फर	६:०९	७:४२	९:१३	१०:५३	१२:५२	३:०६	५:२२	७:३४	९:४६	१२:०१	२:१७	४:२३	११,२,३,६,७,९,
२६ फर	६:०५	७:३८	९:०९	१०:४९	१२:४८	३:०२	५:१८	७:३०	९:४२	११:५७	२:१३	४:१९	११,२,३,६,७,९,
२७ फर	६:०१	७:३४	९:०५	१०:४५	१२:४४	२:५८	५:१४	७:२७	९:३८	११:५३	२:०९	४:१५	११,२,६,७,९,
२८ फर	५:५७	७:३१	९:०१	१०:४१	१२:४०	२:५४	५:१०	७:२३	९:३४	११:४९	२:०५	४:११	११,२,६,७,९,
०१ मार्च	५:५४	७:२७	८:५७	१०:३८	१२:३६	२:५०	५:०६	७:१९	९:३०	११:४५	२:०१	४:०७	११,२,३,६,७,९,
०२ मार्च	५:५०	७:२३	८:५३	१०:३४	१२:३२	२:४६	५:०२	७:१५	९:२६	११:४१	१:५७	४:०३	११,२,३,६,७,८,९,
०३ मार्च	५:४६	७:१९	८:४९	१०:३०	१२:२८	२:४२	४:५८	७:११	९:२२	११:३७	१:५३	३:५९	११,२,४,६,७,८,९,

तिथि १
बुधवार
इष्ट ०।०

१२ श. | १० मं.
१ | ११ सू.चं.बु.शु.रा. | ९
२ | 卐 | ८
३ गु. | ५ के. | ७
४ | ६

फाल्गुन शुक्ल १५ शतभिायां भौम चूहा, इल्ली कीट प्रकोप तव भी अच्छा अनाज उत्पादन।

तिथि ९
बुधवार
इष्ट ०।०

१२ श. | १०
१ | ११ सू.मं.बु.शु.रा. | ९
२ चं. | 卐 | ८
३ गु. | ५ के. | ७
४ | ६

चैत्र कृष्णपक्ष। शुभ विक्रम संवत् २०८२ शकः १९४७। सिद्धार्थ-रौद्र संवत्सर। कलियुग संवत् ५१२६। वसन्त ऋतुः। श्री सूर्य उत्तरायन-दक्षिणगोले। मार्च ईसवी सन् २०२६। मार्च। वंगला सन् १४३१ -१४३२ । वीर निर्वाण संवत् २५५१ -२५५२।

१६	तिथि			नक्षत्र			योग			करण (प्रातः एवं सायंकाल में)				चन्द्रमा राशि समाप्ती काल			श्री सूर्य					आनंदादि योग	दिनांक	(कृपया ध्यान रखें कि इस वर्ष चंद्र राशि का समाप्ती काल दिया है)। गुरु उदयपश्चिमेः। शुक्र उदयपश्चिमेः। मूल निवास भूमि
तिथि	वार	घटिपल	घंटामिनट	नक्षत्र	घटिपल	घंटामिनट	योग	घटिपल	घंटामिनट	प्रातः	घटिपल	घंटामिनट	सायं	राशि	घटिपल	घंटामिनट	दिनमान	सू.उ.	अस्त	उदयकालीन स्पष्ट	गति			पक्षारंभिक नक्षत्र-शतभिषायां रविः, शतभिषायां भौमः, पूर्वभाद्रपदे वुधः, पुनर्वसे गुरौ, पूर्वभाद्रपदे शुक्रः, उत्तरभाद्रपदे शनिः, शतभिषायां राहु, पूर्वाफाल्गुण्यां केतु।
१	बु.	२५।३३	दि.४:५६	पू.फा.	२।२७	प्रा. ७:४२	धृति	५।३२	दि.८:५५	कौल	२५।३३	दि.४:५६	तैति	सिंह	१७।५१	दि. १:५१ तक	२९।०५	६:४३	६:२०	१०।१९।१४।३६	६०	स्थिर	०४ मार्च	होली उत्सव। पूर्वभाद्रपदे रवि रात्रि १२:५० समये। उत्तरभाद्रपदे शुक्रः दिन ४:५९ समये।
२	गु.	२६।१२	सा.५:११	उ.फा.	४।६	दि. ८:२०	शूल	२।४४	प्रा.७:४७	गर	२६।१२	सा.५:११	वणि	कन्या	--	दिनरात	२९।०८	६:४२	६:२१	१०।२०।१४।४२	६०	मातंग	०५ मार्च	क्रांतिसाम्य रात्रि १:४९ से रात्रि ६:११। भद्रा रात्रि ५:२८ से रात्रिअंत (पाताल)।
३	शु.	२८।१९	सा.६:०१	हस्त	७।११	दि. ९:३३	गंड़	१।६	प्रा.७:०७	भद्रा	२८।१९	सा.६:०१	बव	कन्या	३९।१९	रा. १०:२४ तक	२९।११	६:४१	६:२१	१०।२१।१४।४६	६०	अमृत	०६ मार्च	संकष्ठी श्री गणेश ४ व्रतं। भद्रा सू.उ.से सायं ६:०१(पाताल)।
४	श.	३१।५१	रा.७:२४	चित्रा	११।४०	दि. ११:२०	बृद्धि	०।३५	प्रा.६:५४	बाल	३१।५१	रा ७:२४	कौल	तुला	--	दिनरात	२९।१५	६:४०	६:२२	१०।२२।१४।४८	६०	काण	०७ मार्च	सर्वार्थसिद्धी दिन ११:२० से रातअंत।
५	र.	३६।३५	रा.९:१७	स्वा	१७।२२	दि. १:३६	ध्रुव	१।७	प्रा.७:०६	कौल	३।५९	दि.८:१५	तैति	तुला	××	दिनरात	२९।१८	६:३९	६:२२	१०।२३।१४।४८	६०	लुंबक	०८ मार्च	रंग पंचमी। ($) सर्वार्थसिद्धी रात्रि ४:०५ से रातअंत। क्रांतिसाम्य दिन ९:४६ से दिन १:५२।
६	चं.	४२।१२	रा.११:३१	विशा	२४।१	दि. ४:१४	व्या	२।२७	प्रा.७:३७	गर	९।१६	दि.१०:२०	वणि	तुला	७।१५	दि. ९:३२ तक	२९।२१	६:३८	६:२३	१०।२४।१४।४७	६०	मित्र	०९ मार्च	एकनाथ षष्ठी। रवियोग दिन ४:१४ से रात्रिअंत। सर्वार्थसिद्धी दिन ४:१४ से रातअंत। भद्रा रात्रि ११:३१ से रात्रिअंत (स्वर्ग)।
७	मं.	४८।१५	रा.१:५५	अनु	३१।११	रा. ७:०५	हर्ष	४।२०	दि.८:२१	भद्रा	१५।११	दि.१२:४२	बव	वृश्चिक	××	दिनरात	२९।२५	६:३७	६:२३	१०।२५।१४।४३	६०	वज्र	१० मार्च	शीतला सप्तमी, बसौड़ा। शीतला सप्तमी व्रत। मूल रात ७:०५ से रातअंत। रवियोग सू.उ.से रात्रि ७:०५ तक। भद्रा सू.उ.से दिन १२:४२(स्वर्ग)। (A)
८	बु.	५४।१५	रा.४:१८	ज्ये	३८।२४	रा. ९:५८	वज्र	६।२५	दि.९:१०	बाल	२१।१६	दि.३:०७	कौल	वृश्चिक	३८।२४	रा. ९:५८ तक	२९।२८	६:३६	६:२४	१०।२६।१४।३८	६०	ध्वांक्ष	११ मार्च	सिद्धार्थ संवत्सर समाप्त दि.२:२७ वजे। रौद्र प्रारंभ। सिद्धार्थ संवत्सर समाप्त दि.२:२७ वजे। रौद्र प्रारंभ। कालाष्टमी व्रतं। शीतला अष्टमी (B)
९	गु.	५९।४०	रा.६:२७	मूल	४५।११	रा. १२:४०	सिद्धि	८।१९	दि.९:५५	तैति	२६।५९	सा.५:२३	गर	धनु	××	दिनरात	२९।३२	६:३५	६:२४	१०।२७।१४।३१	६०	धूम्र	१२ मार्च	गुरुमार्गी १०:२१। मूल सू.उ.से रात १२:४० तक। व्यतिपात् दि.९:५५ वजे तक। से रातअंत।
१०	शु.	६०।००	वृद्धि	पू.षा	५१।२	रा. २:५९	व्यति	९।४१	दि.१०:२७	वणि	२७।५०	रा ७:१९	भद्रा	धनु	××	दिनरात	२९।३५	६:३४	६:२४	१०।२८।१४।२२	६०	प्रवर्ध	१३ मार्च	भद्रा रात्रि ७:१९ से रा.अंत (पाताल)। व्यतिपात् सू.उ.से दि.१०:२७ वजे तक। (A) शतभिषायां वुधः दिन ८:०० समये। शनि अस्त पश्चिमेः (&)
१०	श.	३।५५	दि.८:०८	उ.षा	५५।३३	रा. ४:४७	वरी	१०।१०	दि.१०:३७	भद्रा	३।५५	दि.८:०८	बव	धनु	७।१८	दि. ९:२८ तक	२९।३८	६:३३	६:२५	१०।२९।१४।१०	६०	राक्षस	१४ मार्च	सर्वार्थसिद्धी रात्रि ४:४७ से रातअंत। भद्रा सू.उ.से दिन ८:०८(पाताल)। मीने रवि रात्रि १२:५७ समये। पुण्यकाल परा दिवसे। बुध उदय पूर्वेः (C)
११	र.	६।४२	दि.९:१३	श्रव	५८।२७	रा. ५:५५	परि	९।३१	दि.१०:२१	बाल	६।४२	दि.९:१३	कौल	मकर	××	दिनरात	२९।४२	६:३२	६:२५	११।००।१३।५७	६०	गद	१५ मार्च	पापमोचनी एकादशी व्रत सर्वे। मीन खरमास। द्विपुष्कर योग रातअंत ५।५५ से से रातअंत रेवत्यां शुक्रः दिन १०:२६ समये।
१२	चं.	७।४७	दि.९:३८	धनि	५९।३८	रा. ६:२३	शिव	७।३४	दि.९:३३	तैति	७।४७	दि.९:३८	गर	मकर	२९।०४	सा. ६:०९ तक	२९।४५	६:३१	६:२६	११।०१।१३।४२	६०	शुभ	१६ मार्च	सोमप्रदोष व्रतं। मीन खरमास। पंचक प्रारंभ सा. ६:०९ तक समये। (&) सायं ११:२० समये।
१३	मं.	७।०७	दि.९:२१	शत	५९।९	रा. ६:१०	सिद्ध, साध्य	४।१७, ५९।५९	दि.८:१३, रा.६:३०	वणि	७।७	दि.९:२१	भद्रा	कुंभ	××	दिनरात	२९।४९	६:३१	६:२६	११।०२।१३।२५	६०	मृत्यु	१७ मार्च	मासिक शिवरात्रि व्रतं। मीन खरमास। पंचक दिनरात। भद्रा दिन ९:२१ से रात्रि ८:५५ (भूमि)। (C) प्रातः ५:४७ समये।
१४	बु.	४।४९	दि.८:२५	पू.भा	५७।१०	रा. ५:२२	शुभ	५३।४८	रा.४:०१	शकु	४।४९	दि.८:२५	चतु	कुंभ	४२।४०	रा. ११:३४ तक	२९।५२	६:३०	६:२६	११।०३।१३।०६	६०	पद्म	१८ मार्च	केदार दर्शन।मीन खरमास। पंचक दिनरात। उत्तरभाद्रपदे रवि दिन ९:१६ समये। (B) वसौरा। संतनाष्टमी। मूल दिनरात।
३०,१	गु.	१।०३, ५६।०६	प्रा.६:५४,रा ४:५४	उ.भा	५४।१	रा. ४:०५	शुक्ल	४६।५८	रा.१:१६	नाग	१।३	प्रा.६:५४	किंस्तु	मीन	××	दिनरात	२९।५५	६:२९	६:२७	११।०४।१२।४५	६०	छत्र	१९ मार्च	अमावस्या। नूतन संवत्सर २०८३ प्रारंभ, चैत्र नवरात्रि, घट स्थापन प्रातः ६.५४ से ९.४६ के बीच। वह्नि व्रत। मूल रात ४:०५ से रातअंत। ($)

सूर्योदयकालीन दैनिक ग्रह स्पष्ट । ग्रह गति कलाओं में दी गई है। पक्षारंभिक अयनांश २४-१३-२८

तिथि		चन्द्र		मंगल		बुध		गुरू		शुक्र		शनि		राहू	चंद्र उदयास्त समय: उदय	अस्त
वार		राशि अंश कला वि.	गति	अस्त-मार्गी	गति	अस्त-वक्री	गति	उदय-वक्री	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	वक्र गति ३ कला	दिन	रात
१	बु.	४।२६।०८।०४	७८०	१०।६।५५।१८	४७	१०।२५।४९।२५	-५१	२।२०।५६।३६	१	११।०२।४८।०१	७५	११।०७।५२।२०	७	१०।१४।३९।२६	७:३४	७:३५
२	गु.	५।०९।०७।४७	७६३	१०।७।४२।३३	४७	१०।२४।५८।२०	-५६	२।२०।५५।११	१	११।०४।०२।४२	७५	११।०७।५९।३४	७	१०।१४।३६।१५	८:२६	८:०५
३	शु.	५।२१।५०।३२	७४७	१०।८।२९।४८	४७	१०।२४।२।४४	-५९	२।२०।५४।१३	१	११।०५।१७।२१	७५	११।०८।०६।५०	७	१०।१४।३३।०४	९:१७	८:३६
४	श.	६।०४।१७।२६	७३३	१०।९।१७।३	४७	१०।२३।४।०	-६०	२।२०।५३।१८	१	११।०६।३१।५८	७५	११।०८।१४।०६	७	१०।१४।२९।५४	१०:०८	९:०७
५	र.	६।१६।३०।४४	७२३	१०।१०।४।१७	४७	१०।२२।३।३५	-६१	२।२०।५२।३६	१	११।०७।४६।३३	७५	११।०८।२१।२४	७	१०।१४।२६।४३	१०:५९	९:४१
६	चं.	६।२८।३३।२९	७१६	१०।१०।५१।३१	४७	१०।२१।२।५४	-६०	२।२०।५२।०५	०	११।०९।०१।०७	७५	११।०८।२८।४३	७	१०।१४।२३।३३	११:५०	१०:१८
७	मं.	७।१०।२९।२४	७१३	१०।११।३८।४५	४७	१०।२०।३।१८	-५७	२।२०।५१।४७	०	११।१०।१५।४०	७५	११।०८।३६।०३	७	१०।१४।२०।२२	१२:४१	१०:६०
८	बु.	७।२२।२२।३४	७१५	१०।१२।२५।५८	४७	१०।१९।६।१	-५४	२।२०।५१।४०	०	११।११।३०।११	७४	११।०८।४३।२४	७	१०।१४।१७।११	१:३१	११:४६
९	गु.	८।०४।१७।१६	७२१	१०।१३।१३।११	४७	१०।१८।१२।९	-५०	२।२०।५१।४४	०	११।१२।४४।४०	७४	११।०८।५०।४६	७	१०।१४।१४।०१	२:१८	१२:३७
१०	शु.	८।१६।१८।०१	७३१	१०।१४।०।२४	४७	१०।१७।२२।३६	-४४	२।२०।५२।०१	०	११।१३।५९।०७	७४	११।०८।५८।०९	७	१०।१४।१०।५०	३:०२	१:३०
१०	श.	८।२८।२९।१८	७४६	१०।१४।४७।३६	४७	१०।१६।३८।६	-३९	२।२०।५२।२१	१	११।१५।१३।३३	७४	११।०९।०५।३३	७	१०।१४।०७।३९	३:४३	२:२५
११	र.	९।१०।५५।११	७६४	१०।१५।३४।४७	४७	१०।१५।५९।१४	-३३	२।२०।५३।०९	१	११।१६।२७।५७	७४	११।०९।१२।५७	७	१०।१४।०४।२९	४:२०	३:२१
१२	चं.	९।२३।३९।३९	७८५	१०।१६।२१।५८	४७	१०।१५।२६।२१	-२७	२।२०।५४।०१	१	११।१७।४२।११	७४	११।०९।२०।२३	७	१०।१४।०१।१८	४:५६	४:१७
१३	मं.	१०।०६।४४।४५	८०७	१०।१७।९।८	४७	१०।१४।५९।४१	-२०	२।२०।५५।०४	१	११।१८।५६।३९	७४	११।०९।२७।४८	७	१०।१३।५८।०८	५:३१	५:१४
१४	बु.	१०।२०।११।३१	८२७	१०।१७।५६।१८	४७	१०।१४।३९।२२	-१४	२।२०।५६।११	१	११।२०।१०।५८	७४	११।०९।३५।१५	७	१०।१३।५४।५७	६:०७	६:१३
३०,१	गु.	११।०३।५८।५९	८४५	१०।१८।४३।२७	४७	१०।१४।२५।२३	-८	२।२०।५७।४५	२	११।२१।२५।१४	७४	११।०९।४२।४२	७	१०।१३।५१।४६	६:४५	७:१३

लग्न प्रारंभ समय (भारतीय स्टेंडर्ड समय)

दिनांक	प्रातः पूर्व	प्रातः	दिन				सायं	रात्रि					शुभ बली लग्नें
	कुंभे	मीने	मेषे	वृषे	मिथुने	कर्के	सिंहे	कन्यायां	तुलायां	वृश्चिके	धनुषे	मकरे	इन लग्नों में गुरु, शुक्र या बुध केन्द्र त्रिकोण में होने से दोष समूह नाशक सुयोग।
०४ मार्च	५:४२	७:१५	८:४५	१०:२६	१२:२४	२:३८	४:५५	७:०७	९:१८	११:३३	१:५०	३:५५	११,२,४,६,७,८,९,१०,
०५ मार्च	५:३८	७:११	८:४१	१०:२२	१२:२०	२:३४	४:५१	७:०३	९:१४	११:२९	१:४६	३:५१	११,२,४,६,७,८,९,
०६ मार्च	५:३४	७:०७	८:३८	१०:१८	१२:१६	२:३०	४:४७	६:५९	९:१०	११:२५	१:४२	३:४७	११,२,६,७,९,
०७ मार्च	५:३०	७:०३	८:३४	१०:१४	१२:१२	२:२६	४:४३	६:५५	९:०६	११:२१	१:३८	३:४३	११,२,६,७,९,
०८ मार्च	५:२६	६:५९	८:३०	१०:१०	१२:०८	२:२२	४:३९	६:५१	९:०२	११:१७	१:३४	३:३९	११,२,३,६,७,९,
०९ मार्च	५:२२	६:५५	८:२६	१०:०६	१२:०४	२:१८	४:३५	६:४७	८:५८	११:१३	१:३०	३:३५	११,२,६,७,९,
१० मार्च	५:१८	६:५१	८:२२	१०:०२	१२:००	२:१४	४:३१	६:४३	८:५४	११:०९	१:२६	३:३१	११,६,९,
११ मार्च	५:१४	६:४७	८:१८	९:५८	११:५७	२:१०	४:२७	६:३९	८:५०	११:०६	१:२२	३:२७	११,२,६,७,९,
१२ मार्च	५:१०	६:४३	८:१४	९:५४	११:५३	२:०६	४:२३	६:३५	८:४७	११:०२	१:१८	३:२४	११,२,३,४,६,७,९,
१३ मार्च	५:०६	६:३९	८:१०	९:५०	११:४९	२:०२	४:१९	६:३१	८:४३	१०:५८	१:१४	३:२०	११,२,४,६,७,९,
१४ मार्च	५:०२	६:३५	८:०६	९:४६	११:४५	१:५९	४:१५	६:२७	८:३९	१०:५४	१:१०	३:१६	११,२,३,४,६,७,८,९,
१५ मार्च	४:५८	६:३१	८:०२	९:४२	११:४१	१:५५	४:११	६:२४	८:३५	१०:५०	१:०६	३:१२	२,३,४,६,७,८,९,११,
१६ मार्च	४:५४	६:२७	७:५८	९:३८	११:३७	१:५१	४:०७	६:२०	८:३१	१०:४६	१:०२	३:०८	२,३,६,७,९,११,
१७ मार्च	४:५१	६:२४	७:५४	९:३४	११:३३	१:४७	४:०३	६:१६	८:२७	१०:४२	१२:५८	३:०४	२,३,६,७,९,११,
१८ मार्च	४:४७	६:२०	७:५०	९:३१	११:२९	१:४३	३:५९	६:१२	८:२३	१०:३८	१२:५४	२:६०	२,३,६,७,९,११,
१९ मार्च	४:४३	६:१६	७:४६	९:२७	११:२५	१:३९	३:५५	६:०८	८:१९	१०:३४	१२:५०	२:५६	२,३,६,७,९,११,

तिथि १
बुधवार
इष्ट ०।०

१२ शु.श. | १० | १ | ११ सू.मं.बु.रा. | ९ | २ | 卐 | ८ | ३ गु. | ५ चं.के. | ७ | ४ | ६

मीन संक्रान्ति फलम्- चैत्र कृष्ण १० शनिवासरे रात्रि १२:५७ समये मीनसंक्रान्ति प्रवेशः तस्य पुण्यकाल परा दिवसे। वार नाम राक्षसी संज्ञक संक्रांति दुष्ट वर्ग को सुखकारी है। तस्य काले उ.षानक्षत्र नाम घोरा संज्ञक संक्रांति निर्धनवर्ग को सुखद। ४५ अनाज मूल्य में गिरावट संकेतक। बालव करण फल- व्याघ्र वाहनं, अश्व उपवाहनं, पीत वस्त्रं, गदा आयुधं, रूपा पात्रं, पायस (खीर) भक्षणं, कुमकुम लेपनं, भूत वर्ण, चमेली पुष्पं, कंकण भूषणं, पर्ण कंचुकी, वाल्य अवस्था, उपविष्टा स्थिति। स्थिर भाव सूचक। गेहूँ तथा चनों आदि अनाज मँहगाई का संकेत है। चैत्रकृष्ण ७ शतभिषायां बुध - शतभिषा में शूद्रों में रोग हो।

तिथि ८
बुधवार
इष्ट ०।०

१२ शु.श. | १० | १ | ११ सू.मं.बु.रा. | ९ | २ | 卐 | ८ चं. | ३ गु. | ५ के | ७ | ४ | ६

卐 दैनिक चंद्र नक्षत्र चरण 卐

संकेत - अ. ४ च - का अर्थ है, अश्विनी नक्षत्र का चतुर्थ चरण। समय रेलवे पद्धति के अनुसार है।

चैत्र शु. १ र. (३० मार्च)- रे.३च.-११:१९ तक। रे.४च.-१६:३६ तक। अ.१च.-५८७:५९ तक।
चैत्र शु. २ चं. (३१ मार्च)- अ.३च.-८:२९ तक। अ.४च.-१३:४८ तक। भ.१च.-१९:०८ तक।
चैत्र शु. ४ मं. (०१ अप्रै)- भ.४च.-११:१० तक। कृ.१च.-१६:३५ तक। कृ.२च.-२१:६० तक।
चैत्र शु. ५ बु. (०२ अप्रै)- कृ.४च.-८:५२ तक। रो.१च.-१४:२४ तक। रो.२च.-१९:५७ तक।
चैत्र शु. ६ गु. (०३ अप्रै)- रो.४च.-७:०२ तक। मृ.१च.-१२:४४ तक। मृ.२च.-१८:२६ तक।
चैत्र शु. ७ शु. (०४ अप्रै)- आ.१च.-११:४१ तक। आ.२च.-१७:३४ तक। आ.३च.-२३:२७ तक।
चैत्र शु. ८ श. (०५ अप्रै)- पुन१च.-११:२१ तक। पुन२च.-१७:२४ तक। पुन३च.-२३:२८ तक।
चैत्र शु. ९ र. (०६ अप्रै)- पुष्१च.-११:४४ तक। पुष्२च.-१७:५८ तक। पुष्३च.-२४:१२ तक।
चैत्र शु. १० चं. (०७ अप्रै)- पुष्४च.-६:२५ तक। श्लेे१च.-१२:४८ तक। श्लेे२च.-१९:११ तक।
चैत्र शु. ११ मं. (०८ अप्रै)- श्लेे४च.-७:५८ तक। मघ१च.-१४:२८ तक। मघ२च.-२०:५९ तक।
चैत्र शु. १२ बु. (०९ अप्रै)- मघ४च.-१०:०२ तक। पूफ१च.-१६:३८ तक। पूफ२च.-२३:१४ तक।
चैत्र शु. १३ गु. (१० अप्रै)- पूफ४च.-१२:३० तक। उफ१च.-१९:११ तक। उफ२च.-२५:५१ तक।
चैत्र शु. १४ शु. (११ अप्रै)- उफ३च.-८:३२ तक। उफ४च.-१५:१५ तक। ह.१च.-२१:५९ तक।
चैत्र शु. १५ श. (१२ अप्रै)- ह.३च.-११:२७ तक। ह.४च.-१८:१२ तक। चि.१च.-२४:५७ तक।
वैशाख कृ. १ र. (१३ अप्रै)- चि.२च.-७:४२ तक। चि.३च.-१४:२८ तक। चि.४च.-२१:१४ तक।
वैशाख कृ. १ चं. (१४ अप्रै)- स्व.२च.-१०:४५ तक। स्व.३च.-१७:३१ तक। स्व.४च.-२४:१६ तक।
वैशाख कृ. २ मं. (१५ अप्रै)- विश१च.-७:०१ तक। विश२च.-१३:४५ तक। विश३च.-२०:२९ तक।
वैशाख कृ. ३ बु. (१६ अप्रै)- अनु१च.-९:५५ तक। अनु२च.-१६:३६ तक। अनु३च.-२३:१७ तक।

वैशाख कृ. ४ गु. (१७ अप्रै)- ज्ये१च.-१२:३५ तक। ज्ये२च.-१९:१२ तक। ज्ये३च.-२५:४९ तक।
वैशाख कृ. ५ शु. (१८ अप्रै)- ज्ये४च.-८:२४ तक। मू.१च.-१४:५५ तक। मू.२च.-२१:२६ तक।
वैशाख कृ. ६ श. (१९ अप्रै)- मू.४च.-१०:२३ तक। पूष१च.-१६:४८ तक। पूष२च.-२३:१२ तक।
वैशाख कृ. ७ र. (२० अप्रै)- पूष४च.-११:५० तक। उष१च.-१८:०६ तक। उष२च.-२४:२१ तक।
वैशाख कृ. ८ चं. (२१ अप्रै)- उष३च.-६:३४ तक। अभि.-१४:१६ तक। श्र.१च.-१८:४३ तक।
वैशाख कृ. ९ मं. (२२ अप्रै)- श्र.३च.-६:५० तक। श्र.४च.-१२:४४ तक। ध.१च.-१८:३७ तक।
वैशाख कृ. १० बु. (२३ अप्रै)- ध.३च.-६:२३ तक। ध.४च.-१२:०५ तक। श.१च.-१७:४८ तक।
वैशाख कृ. ११ गु. (२४ अप्रै)- श.४च.-१०:४५ तक। पूभ१च.-१६:१८ तक। पूभ२च.-२१:५० तक।
वैशाख कृ. १२ शु. (२५ अप्रै)- पूभ.४च.-८:४९ तक। उभ.१च.-१४:१३ तक। उभ.२च.-१९:३७ तक।
वैशाख कृ. १३ श. (२६ अप्रै)- उभ.४च.-६:२३ तक। रे.१च.-११:४१ तक। रे.२च.-१६:५९ तक।
वैशाख कृ. ३० र. (२७ अप्रै)- अ.१च.-८:५१ तक। अ.२च.-१४:०६ तक। अ.३च.-१९:२२ तक।
वैशाख शु. १ चं. (२८ अप्रै)- भ.२च.-११:०७ तक। भ.३च.-१६:२३ तक। भ.४च.-२१:३९ तक।
वैशाख शु. २ मं. (२९ अप्रै)- कृ.२च.-८:१२ तक। कृ.३च.-१३:३२ तक। कृ.४च.-१८:५२ तक।
वैशाख शु. ३ बु. (३० अप्रै)- रो.३च.-१०:५८ तक। रो.४च.-१६:२५ तक। मृ.१च.-२१:५३ तक।
वैशाख शु. ४ गु. (०१ मई)- मृ.३च.-८:५२ तक। मृ.४च.-१४:२९ तक। आ.१च.-२०:०६ तक।
वैशाख शु. ५ शु. (०२ मई)- आ.३च.-७:२३ तक। आ.४च.-१३:१२ तक। पुन१च.-१९:०० तक।
वैशाख शु. ६ श. (०३ मई)- पुन३च.-६:३९ तक। पुन४च.-१२:४० तक। पुष्१च.-१८:४२ तक।
वैशाख शु. ७ र. (०४ मई)- पुष्३च.-६:४६ तक। पुष्४च.-१२:५९ तक। श्लेे१च.-१९:१२ तक।

वैशाख शु. ८ चं. (०५ मई)- श्लेे३च.-७:४२ तक। श्लेे४च.-१४:०६ तक। मघ१च.-२०:३१ तक।
वैशाख शु. ९ मं. (०६ मई)- मघ३च.-९:२४ तक। मघ४च.-१५:५७ तक। पूफ१च.-२२:३० तक।
वैशाख शु. १० बु. (०७ मई)- पूफ३च.-११:४२ तक। पूफ४च.-१८:२२ तक। उफ१च.-२५:०२ तक।
वैशाख शु. ११ गु. (०८ मई)- उफ२च.-७:४३ तक। उफ३च.-१४:२७ तक। उफ४च.-२१:१२ तक।
वैशाख शु. १२ शु. (०९ मई)- ह.२च.-१०:४१ तक। ह.३च.-१७:२८ तक। ह.४च.-२४:१४ तक।
वैशाख शु. १३ श. (१० मई)- चि.१च.-७:०० तक। चि.२च.-१३:४७ तक। चि.३च.-२०:३४ तक।
वैशाख शु. १४ र. (११ मई)- स्व.१च.-१०:०६ तक। स्व.२च.-१६:५२ तक। स्व.३च.-२३:३७ तक।
वैशाख शु. १५ चं. (१२ मई)- स्व.४च.-६:२२ तक। विश१च.-१३:०५ तक। विश२च.-१९:४९ तक।
ज्येष्ठ कृ. १ मं. (१३ मई)- विश४च.-९:१३ तक। अनु१च.-१५:५३ तक। अनु२च.-२२:३३ तक।
ज्येष्ठ कृ. २ बु. (१४ मई)- अनु४च.-११:४९ तक। ज्ये१च.-१८:२६ तक। ज्ये२च.-२५:०२ तक।
ज्येष्ठ कृ. ३ गु. (१५ मई)- ज्ये३च.-७:३६ तक। ज्ये४च.-१४:०८ तक। मू.१च.-२०:४० तक।
ज्येष्ठ कृ. ४ शु. (१६ मई)- मू.३च.-९:४० तक। मू.४च.-१६:०७ तक। पूष१च.-२२:३४ तक।
ज्येष्ठ कृ. ५ श. (१७ मई)- पूष३च.-११:२२ तक। पूष४च.-१७:४३ तक। उष१च.-२४:०५ तक।
ज्येष्ठ कृ. ५ र. (१८ मई)- उष२च.-६:२४ तक। उष३च.-१२:३९ तक। अभि.-२०:३३ तक।
ज्येष्ठ कृ. ६ चं. (१९ मई)- श्र.२च.-७:१९ तक। श्र.३च.-१३:२५ तक। श्र.४च.-१९:३१ तक।
ज्येष्ठ कृ. ७ मं. (२० मई)- ध.२च.-७:३९ तक। ध.३च.-१३:३६ तक। ध.४च.-१९:३३ तक।
ज्येष्ठ कृ. ९ बु. (२१ मई)- श.२च.-७:२३ तक। श.३च.-१३:१० तक। श.४च.-१८:५७ तक।
ज्येष्ठ कृ. १० गु. (२२ मई)- पूभ२च.-६:३० तक। पूभ.३च.-१२:०७ तक। पूभ.४च.-१७:४४ तक।

ज्येष्ठ कृ. ११ शु. (२३ मई)- उभ.३च.-१०:२९ तक। उभ.४च.-१५:५७ तक। रे.१च.-२१:२६ तक।
ज्येष्ठ कृ. १२ श. (२४ मई)- रे.३च.-८:२० तक। रे.४च.-१३:४२ तक। अ.१च.-५९३:३६ तक।
ज्येष्ठ कृ. १३ र. (२५ मई)- अ.३च.-५:४८ तक। अ.४च.-११:०७ तक। भ.१च.-१६:२५ तक।
ज्येष्ठ कृ. १४ चं. (२६ मई)- भ.४च.-८:१९ तक। कृ.१च.-१३:३७ तक। कृ.२च.-१८:५५ तक।
ज्येष्ठ कृ. ३० मं. (२७ मई)- रो.१च.-१०:५० तक। रो.२च.-१६:१० तक। रो.३च.-२१:३१ तक।
ज्येष्ठ शु. २ बु. (२८ मई)- मृ.१च.-८:१४ तक। मृ.२च.-१३:४१ तक। मृ.३च.-१९:०७ तक।
ज्येष्ठ शु. ३ गु. (२९ मई)- आ.१च.-६:०० तक। आ.२च.-११:३६ तक। आ.३च.-१७:११ तक।
ज्येष्ठ शु. ४ शु. (३० मई)- पुन२च.-१०:०६ तक। पुन३च.-१५:५३ तक। पुन४च.-२१:४० तक।
ज्येष्ठ शु. ५ श. (३१ मई)- पुष्२च.-९:२० तक। पुष्३च.-१५:१९ तक। पुष्४च.-२१:१८ तक।
ज्येष्ठ शु. ६ र. (०१ जून)- श्लेे२च.-९:२४ तक। श्लेे३च.-१५:३५ तक। श्लेे४च.-२१:४७ तक।
ज्येष्ठ शु. ७ चं. (०२ जून)- मघ२च.-१०:१८ तक। मघ३च.-१६:४१ तक। मघ४च.-२३:०४ तक।
ज्येष्ठ शु. ८ मं. (०३ जून)- पूफ२च.-११:६० तक। पूफ३च.-१८:३२ तक। पूफ४च.-२५:०५ तक।
ज्येष्ठ शु. ९ बु. (०४ जून)- उफ१च.-७:४० तक। उफ२च.-१४:२० तक। उफ३च.-२१:०० तक।
ज्येष्ठ शु. १० गु. (०५ जून)- ह.१च.-१०:२३ तक। ह.२च.-१७:०८ तक। ह.३च.-२३:५३ तक।
ज्येष्ठ शु. ११ शु. (०६ जून)- ह.४च.-६:३८ तक। चि.१च.-१३:२४ तक। चि.२च.-२०:११ तक।
ज्येष्ठ शु. १२ श. (०७ जून)- चि.४च.-९:४४ तक। स्व.१च.-१६:३० तक। स्व.२च.-२३:१६ तक।
ज्येष्ठ शु. १२ र. (०८ जून)- स्व.३च.-६:०३ तक। स्व.४च.-१२:४६ तक। विश१च.-१९:३० तक।
ज्येष्ठ शु. १३ चं. (०९ जून)- विश३च.-८:५६ तक। विश४च.-१५:३६ तक। अनु१च.-२२:१६ तक।

ज्येष्ठ शु. १४ मं. (१० जून)- अनु३च.-११:३१ तक। अनु४च.-१८:०६ तक। ज्ये१च.-२४:४१ तक।
ज्येष्ठ शु. १५ बु. (११ जून)- ज्ये२च.-७:१५ तक। ज्ये३च.-१३:४४ तक। ज्ये४च.-२०:१४ तक।
आषाढ़ कृ. १ गु. (१२ जून)- मू.२च.-९:१० तक। मू.३च.-१५:३४ तक। मू.४च.-२१:५८ तक।
आषाढ़ कृ. २ शु. (१३ जून)- पूष२च.-१०:४३ तक। पूष३च.-१७:०१ तक। पूष४च.-२३:२० तक।
आषाढ़ कृ. ३ श. (१४ जून)- उष१च.-५:३९ तक। उष२च.-११:५३ तक। उष३च.-१८:०७ तक।
आषाढ़ कृ. ४ र. (१५ जून)- श्र.१च.-६:३३ तक। श्र.२च.-१२:४२ तक। श्र.३च.-१८:५० तक।
आषाढ़ कृ. ५ चं. (१६ जून)- ध.१च.-७:०५ तक। ध.२च.-१३:०८ तक। ध.३च.-१९:१० तक।
आषाढ़ कृ. ६ मं. (१७ जून)- श.१च.-७:१४ तक। श.२च.-१३:१० तक। श.३च.-१९:०६ तक।
आषाढ़ कृ. ७ बु. (१८ जून)- पूभ१च.-६:५७ तक। पूभ२च.-१२:४६ तक। पूभ.३च.-१८:३५ तक।
आषाढ़ कृ. ८ गु. (१९ जून)- उभ.१च.-६:१२ तक। उभ.२च.-११:५४ तक। उभ.३च.-१७:३६ तक।
आषाढ़ कृ. ९ शु. (२० जून)- रे.२च.-१०:३५ तक। रे.३च.-१६:०९ तक। रे.४च.-२१:४४ तक।
आषाढ़ कृ. १० श. (२१ जून)- अ.२च.-८:५० तक। अ.३च.-१४:१९ तक। अ.४च.-१९:४८ तक।
आषाढ़ कृ. १२ र. (२२ जून)- भ.२च.-६:४५ तक। भ.३च.-१२:१० तक। भ.४च.-१७:३५ तक।
आषाढ़ कृ. १३ चं. (२३ जून)- कृ.३च.-९:४९ तक। कृ.४च.-१५:१३ तक। रो.१च.-२०:३७ तक।
आषाढ़ कृ. १४ मं. (२४ जून)- रो.३च.-७:२६ तक। रो.४च.-१२:५२ तक। मृ.१च.-१८:१८ तक।
आषाढ़ कृ. ३० बु. (२५ जून)- मृ.४च.-१०:४० तक। आ.१च.-१६:११ तक। आ.२च.-२१:४१ तक।
आषाढ़ शु. १ गु. (२६ जून)- आ.४च.-८:४७ तक। पुन१च.-१४:२६ तक। पुन२च.-२०:०४ तक।
आषाढ़ शु. २ शु. (२७ जून)- पुन४च.-७:२४ तक। पुष्१च.-१३:१३ तक। पुष्२च.-१९:०१ तक।

दैनिक चंद्र नक्षत्र चरण

संकेत - अ. ४ च - का अर्थ है, अश्विनी नक्षत्र का चतुर्थ चरण। समय रेलवे पद्धति के अनुसार है।

आषाढ़ शु. ३ श. (२८ जून)- पुष्४च.-६:४० तक। श्लेश१च.-१२:४० तक। श्लेश२च.-१८:३९ तक।

आषाढ़ शु. ४ र. (२९ जून)- श्लेष४च.-६:४१ तक। मघ१च.-१२:५२ तक। मघ२च.-१९:०३ तक।

आषाढ़ शु. ५ चं. (३० जून)- मघ४च.-७:२९ तक। पूफ१च.-१३:५१ तक। पूफ२च.-२०:१४ तक।

आषाढ़ शु. ६ मं. (०१ जुला)- पूफ४च.-९:०३ तक। उफ१च.-१५:३५ तक। उफ२च.-२२:०७ तक।

आषाढ़ शु. ७ बु. (०२ जुला)- उफ४च.-११:१६ तक। ह. १च.-१७:५५ तक। ह. २च.-२४:३४ तक।

आषाढ़ शु. ८ गु. (०३ जुला)- ह. ३च.-७:१४ तक। ह. ४च.-१३:५८ तक। चि.१च.-२०:४१ तक।

आषाढ़ शु. ९ शु. (०४ जुला)- चि.३च.-१०:०९ तक। चि.४च.-१६:५४ तक। स्व.१च.-२३:४० तक।

आषाढ़ शु. १० श. (०५ जुला)- स्व.२च.-६:२५ तक। स्व.३च.-१३:०९ तक। स्व.४च.-१९:५४ तक।

आषाढ़ शु. ११ र. (०६ जुला)- विश.२च.-९:२१ तक। विश३च.-१६:०३ तक। विश४च.-२२:४४ तक।

आषाढ़ शु. १२ चं. (०७ जुला)- अनु२च.-१२:०२ तक। अनु३च.-१८:३८ तक। अनु४च.-२५:१५ तक।

आषाढ़ शु. १३ मं. (०८ जुला)- ज्ये१च.-७:४९ तक। ज्ये२च.-१४:१९ तक। ज्ये३च.-२०:४९ तक।

आषाढ़ शु. १४ बु. (०९ जुला)- मू.१च.-९:४६ तक। मू.२च.-१६:०९ तक। मू.३च.-२२:३२ तक।

आषाढ़ शु. १५ गु. (१० जुला)- पूष१च.-११:१२ तक। पूष२च.-१७:२८ तक। पूष३च.-२३:४५ तक।

श्रावण कृ. १ शु. (११ जुला)- पूष४च.-६:०१ तक। उष१च.-१२:१० तक। उष२च.-१८:२० तक।

श्रावण कृ. २ श. (१२ जुला)- अभि.-८:१६ तक। श्र.१च.-१२:४२ तक। श्र.२च.-१८:४६ तक।

श्रावण कृ. ३ र. (१३ जुला)- श्र.४च.-६:५३ तक। ध.१च.-१२:५२ तक। ध.२च.-१८:५० तक।

श्रावण कृ. ४ चं. (१४ जुला)- ध.४च.-६:४७ तक। श.१च.-१२:४२ तक। श.२च.-१८:३६ तक।

श्रावण कृ. ५ मं. (१५ जुला)- श.४च.-६:२४ तक। पूभ१च.-१२:१५ तक। पूभ२च.-१८:०५ तक।

श्रावण कृ. ६ बु. (१६ जुला)- उभ.१च.-११:३२ तक। उभ.२च.-१७:१८ तक। उभ.३च.-२३:०४ तक।

श्रावण कृ. ७ गु. (१७ जुला)- रे.१च.-१०:३३ तक। रे.२च.-१६:१५ तक। रे.३च.-२१:५७ तक।

श्रावण कृ. ८ शु. (१८ जुला)- अ. १च.-९:२० तक। अ. २च.-१४:५८ तक। अ. ३च.-२०:३७ तक।

श्रावण कृ. ९ श. (१९ जुला)- भ.१च.-७:५३ तक। भ.२च.-१३:२८ तक। भ.३च.-१९:०३ तक।

श्रावण कृ. १० र. (२० जुला)- कृ.१च.-६:१४ तक। कृ.२च.-११:४७ तक। कृ.३च.-१७:२१ तक।

श्रावण कृ. ११ चं. (२१ जुला)- रो.२च.-१०:०१ तक। रो.३च.-१५:३४ तक। रो.४च.-२१:०८ तक।

श्रावण कृ. १२ मं. (२२ जुला)- मृ.२च.-८:१५ तक। मृ.३च.-१३:५० तक। मृ.४च.-१९:२६ तक।

श्रावण कृ. १४ बु. (२३ जुला)- आ.२च.-६:३७ तक। आ.३च.-१२:१६ तक। आ.४च.-१७:५६ तक।

श्रावण कृ. ३० गु. (२४ जुला)- पुन३च.-११:०० तक। पुन४च.-१६:४६ तक। पुष्१च.-२२:३२ तक।

श्रावण शु. १ शु. (२५ जुला)- पुष्३च.-१०:१० तक। पुष्४च.-१६:०४ तक। श्ले१च.-२१:५८ तक।

श्रावण शु. २ श. (२६ जुला)- श्ले३च.-९:५४ तक। श्ले४च.-१५:५८ तक। मघ१च.-२२:०१ तक।

श्रावण शु. ३ र. (२७ जुला)- मघ३च.-१०:१७ तक। मघ४च.-१६:३१ तक। पूफ१च.-२२:४५ तक।

श्रावण शु. ४ चं. (२८ जुला)- पूफ३च.-११:२१ तक। पूफ४च.-१७:४५ तक। उफ१च.-२४:०९ तक।

श्रावण शु. ५ मं. (२९ जुला)- उफ२च.-६:३४ तक। उफ३च.-१३:०६ तक। उफ४च.-१९:३८ तक।

श्रावण शु. ६ बु. (३० जुला)- ह. २च.-८:४५ तक। ह. ३च.-१५:२४ तक। ह. ४च.-२२:०३ तक।

श्रावण शु. ७ गु. (३१ जुला)- चि.२च.-११:२४ तक। चि.३च.-१८:०६ तक। चि.४च.-२४:४९ तक।

श्रावण शु. ८ शु. (०१ अग)- स्व.१च.-७:३२ तक। स्व.२च.-१४:१७ तक। स्व.३च.-२१:०१ तक।

श्रावण शु. ८ श. (०२ अग)- विश१च.-१०:२९ तक। विश.२च.-१७:१२ तक। विश३च.-२३:५५ तक।

श्रावण शु. ९ र. (०३ अग)- विश४च.-६:३८ तक। अनु१च.-१३:१७ तक। अनु२च.-१९:५६ तक।

श्रावण शु. १० चं. (०४ अग)- अनु४च.-९:१३ तक। ज्ये१च.-१५:४६ तक। ज्ये२च.-२२:२० तक।

श्रावण शु. ११ मं. (०५ अग)- ज्ये४च.-११:२२ तक। मू.१च.-१७:४८ तक। मू.२च.-२४:१५ तक।

श्रावण शु. १२ बु. (०६ अग)- मू.३च.-६:४१ तक। मू.४च.-१२:५९ तक। पूष१च.-१९:१७ तक।

श्रावण शु. १३ गु. (०७ अग)- पूष३च.-७:५१ तक। पूष४च.-१४:०१ तक। उष१च.-२०:११ तक।

श्रावण शु. १४ शु. (०८ अग)- उष३च.-८:२७ तक। अभि.-१६:०५ तक। श्र.१च.-२०:३० तक।

श्रावण शु. १५ श. (०९ अग)- श्र.३च.-८:३० तक। श्र.४च.-१४:२४ तक। ध.१च.-२०:१८ तक।

भाद्रपद कृ. १ र. (१० अग)- ध.३च.-८:०४ तक। ध.४च.-१३:५२ तक। श.१च.-१९:४० तक।

भाद्रपद कृ. २ चं. (११ अग)- श.३च.-७:१६ तक। श.४च.-१२:५९ तक। पूभ१च.-१८:४३ तक।

भाद्रपद कृ. ३ मं. (१२ अग)- पूभ.३च.-६:१० तक। पूभ.४च.-११:५० तक। उभ.१च.-१७:३० तक।

भाद्रपद कृ. ४ बु. (१३ अग)- उभ.४च.-१०:३० तक। रे.१च.-१६:०९ तक। रे.२च.-२१:४७ तक।

भाद्रपद कृ. ६ गु. (१४ अग)- रे.४च.-९:०४ तक। अ. १च.-६१६:३९ तक। अ. २च.-१२२४:१५ तक।

भाद्रपद कृ. ७ शु. (१५ अग)- अ. ४च.-७:३४ तक। भ.१च.-१३:१२ तक। भ.२च.-१८:४९ तक।

भाद्रपद कृ. ८ श. (१६ अग)- भ.४च.-६:०५ तक। कृ.१च.-११:४४ तक। कृ.२च.-१७:२२ तक।

भाद्रपद कृ. ९ र. (१७ अग)- रो.१च.-१०:१९ तक। रो.२च.-१५:५९ तक। रो.३च.-२१:३९ तक।

भाद्रपद कृ. १० चं. (१८ अग)- मृ.१च.-९:०१ तक। मृ.२च.-१४:४४ तक। मृ.३च.-२०:२६ तक।

भाद्रपद कृ. ११ मं. (१९ अग)- आ.१च.-७:५३ तक। आ.२च.-१३:३९ तक। आ.३च.-१९:२५ तक।

भाद्रपद कृ. १२ बु. (२० अग)- पुन१च.-६:५९ तक। पुन२च.-१२:५० तक। पुन३च.-१८:४० तक।

भाद्रपद कृ. १३ गु. (२१ अग)- पुष्१च.-६:२३ तक। पुष्२च.-१२:१९ तक। पुष्३च.-१८:१६ तक।

भाद्रपद कृ. १४ शु. (२२ अग)- श्ले१च.-६:०९ तक। श्ले२च.-१२:१३ तक। श्ले३च.-१८:१६ तक।

भाद्रपद कृ. ३० श. (२३ अग)- मघ१च.-६:२४ तक। मघ२च.-१२:३५ तक। मघ३च.-१८:४६ तक।

भाद्रपद शु. १ र. (२४ अग)- पूफ१च.-७:११ तक। पूफ२च.-१३:३० तक। पूफ३च.-१९:४९ तक।

भाद्रपद शु. २ चं. (२५ अग)- उफ१च.-८:३१ तक। उफ२च.-१४:५९ तक। उफ३च.-२१:२६ तक।

भाद्रपद शु. ३ मं. (२६ अग)- ह. १च.-१०:२६ तक। ह. २च.-१६:६० तक। ह. ३च.-२३:३४ तक।

भाद्रपद शु. ४ बु. (२७ अग)- ह. ४च.-६:०९ तक। चि.१च.-१२:४९ तक। चि.२च.-१९:२९ तक।

भाद्रपद शु. ५ गु. (२८ अग)- चि.४च.-८:५० तक। स्व.१च.-१५:३४ तक। स्व.२च.-२२:१७ तक।

भाद्रपद शु. ६ शु. (२९ अग)- स्व.४च.-११:४५ तक। विश१च.-१८:२९ तक। विश.२च.-२५:१४ तक।

भाद्रपद शु. ७ श. (३० अग)- विश३च.-७:५८ तक। विश४च.-१४:४१ तक। अनु१च.-२१:२४ तक।

भाद्रपद शु. ८ र. (३१ अग)- अनु३च.-१०:४८ तक। अनु४च.-१७:२८ तक। ज्ये१च.-२४:०७ तक।

भाद्रपद शु. ९ चं. (०१ सित)- ज्ये२च.-६:४६ तक। ज्ये३च.-१३:१९ तक। ज्ये४च.-१९:५२ तक।

भाद्रपद शु. १० मं. (०२ सित)- मू.२च.-८:५६ तक। मू.३च.-१५:२१ तक। मू.४च.-२१:४७ तक।

भाद्रपद शु. ११ बु. (०३ सित)- पूष२च.-१०:३१ तक। पूष३च.-१६:४८ तक। पूष४च.-२३:०४ तक।

भाद्रपद शु. १२ गु. (०४ सित)- उष२च.-११:२८ तक। उष३च.-१७:३४ तक। अभि.-२५:१८ तक।

भाद्रपद शु. १३ शु. (०५ सित)- श्र.२च.-११:४३ तक। श्र.३च.-१७:३९ तक। श्र.४च.-२३:३६ तक।

भाद्रपद शु. १४ श. (०६ सित)- ध.२च.-११:२० तक। ध.३च.-१७:०७ तक। ध.४च.-२२:५४ तक।

भाद्रपद शु. १५ र. (०७ सित)- श.२च.-१०:२३ तक। श.३च.-१६:०२ तक। श.४च.-२१:४१ तक।

आश्विन कृ. १ चं. (०८ सित)- पूभ२च.-८:५७ तक। पूभ.३च.-१४:३० तक। पूभ.४च.-२०:०३ तक।

आश्विन कृ. २ मं. (०९ सित)- उभ.२च.-७:१० तक। उभ.३च.-१२:३९ तक। उभ.४च.-१८:०९ तक।

आश्विन कृ. ३ बु. (१० सित)- रे.३च.-१०:३७ तक। रे.४च.-१६:०५ तक। अ. १च.-६०६:५० तक।

आश्विन कृ. ४ गु. (११ सित)- अ. ३च.-८:३० तक। अ. ४च.-१३:५९ तक। भ.१च.-१९:२८ तक।

आश्विन कृ. ५ शु. (१२ सित)- भ.३च.-६:२७ तक। भ.४च.-११:५९ तक। कृ.१च.-१७:३१ तक।

आश्विन कृ. ६ श. (१३ सित)- कृ.४च.-१०:१० तक। रो.१च.-१५:४७ तक। रो.२च.-२१:२४ तक।

आश्विन कृ. ८ र. (१४ सित)- रो.४च.-८:३९ तक। मृ.१च.-१४:२२ तक। मृ.२च.-२०:०४ तक।

आश्विन कृ. ९ चं. (१५ सित)- मृ.४च.-७:३० तक। आ.१च.-१३:१९ तक। आ.२च.-१९:०८ तक।

आश्विन कृ. १० मं. (१६ सित)- आ.४च.-६:४६ तक। पुन१च.-१२:४२ तक। पुन२च.-१८:३७ तक।

आश्विन कृ. ११ बु. (१७ सित)- पुन४च.-६:२८ तक। पुष्१च.-१२:३० तक। पुष्२च.-१८:३२ तक।

आश्विन कृ. १२ गु. (१८ सित)- पुष्४च.-६:३६ तक। श्ले१च.-१२:४५ तक। श्ले२च.-१८:५३ तक।

आश्विन कृ. १३ शु. (१९ सित)- श्ले४च.-७:११ तक। मघ१च.-१३:२५ तक। मघ२च.-१९:४० तक।

आश्विन कृ. १४ श. (२० सित)- मघ४च.-८:११ तक। पूफ१च.-१४:३१ तक। पूफ२च.-२०:५२ तक।

आश्विन कृ. ३० र. (२१ सित)- पूफ४च.-९:३७ तक। उफ१च.-१६:०३ तक। उफ२च.-२२:३० तक।

आश्विन शु. १ चं. (२२ सित)- उफ४च.-११:२८ तक। ह. १च.-१८:०१ तक। ह. २च.-२४:३३ तक।

आश्विन शु. २ मं. (२३ सित)- ह. ३च.-७:०६ तक। ह. ४च.-१३:४४ तक। चि.१च.-२०:२२ तक।

आश्विन शु. ३ बु. (२४ सित)- चि.३च.-९:३९ तक। चि.४च.-१६:२१ तक। स्व.१च.-२३:०३ तक।

आश्विन शु. ३ गु. (२५ सित)- स्व.३च.-१२:२९ तक। स्व.४च.-१९:१३ तक। विश१च.-२५:५८ तक।

दैनिक चंद्र नक्षत्र चरण

आश्विन शु. ४ शु. (२६ सित)- विश२च.-८:४३ तक। विश३च.-१५:२८ तक। विश४च.-२२:१४ तक।

आश्विन शु. ५ श. (२७ सित)- अनु२च.-११:४४ तक। अनु३च.-१८:२८ तक। अनु४च.-२५:१२ तक।

आश्विन शु. ६ र. (२८ सित)- ज्ये१च.-७:५५ तक। ज्ये२च.-१४:३६ तक। ज्ये३च.-२१:१७ तक।

आश्विन शु. ७ चं. (२९ सित)- मू.१च.-१०:३४ तक। मू.२च.-१७:०९ तक। मू.३च.-२३:४४ तक।

आश्विन शु. ८ मं. (३० सित)- मू.४च.-६:१९ तक। पूष१च.-१२:४६ तक। पूष२च.-१९:१३ तक।

आश्विन शु. ९ बु. (०१ अक्टू)- पूष४च.-८:०५ तक। उष१च.-१४:२३ तक। उष२च.-२०:४० तक।

आश्विन शु. १० गु. (०२ अक्टू)- अभि.-१०:४८ तक। श्र.१च.-१५:१७ तक। श्र.२च.-२१:२३ तक।

आश्विन शु. ११ शु. (०३ अक्टू)- श्र.४च.-९:३० तक। ध.१च.-१५:२६ तक। ध.२च.-२१:२१ तक।

आश्विन शु. १२ श. (०४ अक्टू)- ध.४च.-९:०६ तक। श.१च.-१४:५० तक। श.२च.-२०:३४ तक।

आश्विन शु. १३ र. (०५ अक्टू)- श.४च.-७:६० तक। पूभ१च.-१३:३४ तक। पूभ२च.-१९:०९ तक।

आश्विन शु. १४ चं. (०६ अक्टू)- उभ.१च.-११:४४ तक। उभ.२च.-१७:११ तक। उभ.३च.-२२:३७ तक।

आश्विन शु. १५ मं. (०७ अक्टू)- रे.१च.-९:२८ तक। रे.२च.-१४:४९ तक। रे.३च.-२०:१० तक।

कार्तिक कृ. २ बु. (०८ अक्टू)- अ.१च.-६:५३ तक। अ.२च.-१२:१२ तक। अ.३च.-१७:३१ तक।

कार्तिक कृ. ३ गु. (०९ अक्टू)- भ.२च.-९:२९ तक। भ.३च.-१४:४९ तक। भ.४च.-२०:०९ तक।

कार्तिक कृ. ४ शु. (१० अक्टू)- कृ.२च.-६:५० तक। कृ.३च.-१२:१४ तक। कृ.४च.-१७:३८ तक।

कार्तिक कृ. ५ श. (११ अक्टू)- रो.३च.-९:५४ तक। रो.४च.-१५:२५ तक। मृ.१च.-२०:५६ तक।

कार्तिक कृ. ६ र. (१२ अक्टू)- मृ.३च.-७:६० तक। मृ.४च.-१३:३९ तक। आ.१च.-१९:१९ तक।

कार्तिक कृ. ७ चं. (१३ अक्टू)- आ.३च.-६:३८ तक। आ.४च.-१२:२८ तक। पुन१च.-१८:१७ तक।

कार्तिक कृ. ८ मं. (१४ अक्टू)- पुन४च.-११:५५ तक। पुष्१च.-१७:५४ तक। पुष्२च.-२३:५४ तक।

कार्तिक कृ. ९ बु. (१५ अक्टू)- पुष्४च.-१२:०२ तक। श्ले१च.-१८:१० तक। श्ले२च.-२४:१९ तक।

कार्तिक कृ. १० गु. (१६ अक्टू)- श्ले३च.-६:२९ तक। श्ले४च.-१२:४६ तक। मघ१च.-१९:०३ तक।

कार्तिक कृ. ११ शु. (१७ अक्टू)- मघ३च.-७:४० तक। मघ४च.-१४:०४ तक। पूफ१च.-२०:२८ तक।

कार्तिक कृ. १२ श. (१८ अक्टू)-पूफ३च.-९:१९ तक। पूफ४च.-१५:४९ तक। उफ१च.-२२:१९ तक।

कार्तिक कृ. १३ र. (१९ अक्टू)-उफ३च.-११:२२ तक। उफ४च.-१७:५७ तक। ह.१च.-२४:३१ तक।

कार्तिक कृ. १४ चं. (२० अक्टू)- ह.२च.-७:०६ तक। ह.३च.-१३:४४ तक। ह.४च.-२०:२२ तक।

कार्तिक कृ. ३० मं. (२१ अक्टू)- चि.२च.-९:४० तक। चि.३च.-१६:२२ तक। चि.४च.-२३:०३ तक।

कार्तिक शु. १ बु. (२२ अक्टू)- स्व.२च.-१२:२७ तक। स्व.३च.-१९:११ तक। स्व.४च.-२५:५४ तक।

कार्तिक शु. २ गु. (२३ अक्टू)- विश१च.-८:३९ तक। विश२च.-१५:२३ तक। विश३च.-२२:०८ तक।

कार्तिक शु. ३ शु. (२४ अक्टू)- अनु१च.-११:३८ तक। अनु२च.-१८:२३ तक। अनु३च.-२५:०८ तक।

कार्तिक शु. ४ श. (२५ अक्टू)- अनु४च.-७:५४ तक। ज्ये१च.-१४:३८ तक। ज्ये२च.-२१:२१ तक।

कार्तिक शु. ५ र. (२६ अक्टू)- ज्ये४च.-१०:४८ तक। मू.१च.-१७:२९ तक। मू.२च.-२४:१० तक।

कार्तिक शु. ६ चं. (२७ अक्टू)- मू.३च.-६:५१ तक। मू.४च.-१३:२८ तक। पूष१च.-२०:०४ तक।

कार्तिक शु. ६ मं. (२८ अक्टू)- पूष३च.-९:१४ तक। पूष४च.-१५:४४ तक। उष१च.-२२:१३ तक।

कार्तिक शु. ७ बु. (२९ अक्टू)- उष३च.-११:०६ तक। अभि.-१९:०८ तक। श्र.१च.-२३:४७ तक।

कार्तिक शु. ८ गु. (३० अक्टू)- श्र.३च.-१२:१९ तक। श्र.४च.-१८:२९ तक। ध.१च.-२४:३९ तक।

कार्तिक शु. ९ शु. (३१ अक्टू)- ध.२च.-६:४९ तक। ध.३च.-१२:४७ तक। ध.४च.-१८:४५ तक।

कार्तिक शु. १० श. (०१ नव)- श.२च.-६:४१ तक। श.३च.-१२:२७ तक। श.४च.-१८:१३ तक।

कार्तिक शु. ११ र. (०२ नव)- पूभ.३च.-११:२१ तक। पूभ.४च.-१६:५६ तक। उभ.१च.-२२:३१ तक।

कार्तिक शु. १३ चं. (०३ नव)- उभ.३च.-९:३५ तक। उभ.४च.-१४:६० तक। रे.१च.-२०:२५ तक।

कार्तिक शु. १४ मं. (०४ नव)- रे.३च.-७:१४ तक। रे.४च.-१२:३२ तक। अ.१च.-५८४:४३ तक।

कार्तिक शु. १५ बु. (०५ नव)- अ.४च.-९:४२ तक। भ.१च.-१४:५६ तक। भ.२च.-२०:१० तक।

मार्गशीर्ष कृ. १ गु. (०६ नव)- भ.४च.-६:३९ तक। कृ.१च.-११:५३ तक। कृ.२च.-१७:०७ तक।

मार्गशीर्ष कृ. २ शु. (०७ नव)- रो.१च.-८:५० तक। रो.२च.-१४:०८ तक। रो.३च.-१९:२५ तक।

मार्गशीर्ष कृ. ३ श. (०८ नव)- मृ.२च.-११:२४ तक। मृ.३च.-१६:४८ तक। मृ.४च.-२२:१२ तक।

मार्गशीर्ष कृ. ५ र. (०९ नव)- आ.२च.-९:०६ तक। आ.३च.-१४:४० तक। आ.४च.-२०:१४ तक।

मार्गशीर्ष कृ. ६ चं. (१० नव)- पुन२च.-७:२४ तक। पुन३च.-१३:०९ तक। पुन४च.-१८:५५ तक।

मार्गशीर्ष कृ. ७ मं. (११ नव)- पुष्३च.-१२:२४ तक। पुष्४च.-१८:२२ तक। श्ले१च.-२४:२० तक।

मार्गशीर्ष कृ. ८ बु. (१२ नव)- श्ले३च.-१२:२९ तक। श्ले४च.-१८:३९ तक। मघ१च.-२४:४९ तक।

मार्गशीर्ष कृ. ९ गु. (१३ नव)- मघ२च.-७:०० तक। मघ३च.-१३:२१ तक। मघ४च.-१९:४२ तक।

मार्गशीर्ष कृ. १० शु. (१४ नव)- पूफ२च.-८:२६ तक। पूफ३च.-१४:५५ तक। पूफ४च.-२१:२५ तक।

मार्गशीर्ष कृ. ११ श. (१५ नव)-उफ२च.-१०:२८ तक। उफ३च.-१७:०४ तक। उफ४च.-२३:३९ तक।

मार्गशीर्ष कृ. १२ र. (१६ नव)- ह.२च.-१२:५६ तक। ह.३च.-१९:३६ तक। ह.४च.-२६:१६ तक।

मार्गशीर्ष कृ. १३ चं. (१७ नव)- चि.१च.-८:५८ तक। चि.२च.-१५:४० तक। चि.३च.-२२:२३ तक।

मार्गशीर्ष कृ. १३ मं. (१८ नव)-स्व.१च.-११:५० तक। स्व.२च.-१८:३५ तक। स्व.३च.-२५:१९ तक।

मार्गशीर्ष कृ. १४ बु. (१९ नव)- स्व.४च.-८:०३ तक। विश१च.-१४:४८ तक। विश२च.-२१:३२ तक।

मार्गशीर्ष कृ. ३० गु. (२० नव)-विश४च.-११:०१ तक। अनु१च.-१७:४५ तक। अनु२च.-२४:२९ तक।

मार्गशीर्ष शु. १ शु. (२१ नव)- अनु३च.-७:१४ तक। अनु४च.-१३:५७ तक। ज्ये१च.-२०:३९ तक।

मार्गशीर्ष शु. २ श. (२२ नव)- ज्ये३च.-१०:०५ तक। ज्ये४च.-१६:४६ तक। मू.१च.-२३:२७ तक।

मार्गशीर्ष शु. ३ र. (२३ नव)- मू.३च.-१२:४७ तक। मू.४च.-१९:२५ तक। पूष१च.-२६:०४ तक।

मार्गशीर्ष शु. ४ चं. (२४ नव)- पूष२च.-८:४१ तक। पूष३च.-१५:१६ तक। पूष४च.-२१:५० तक।

मार्गशीर्ष शु. ५ मं. (२५ नव)- उष२च.-१०:५७ तक। उष३च.-१७:२६ तक। अभि.-२५:३९ तक।

मार्गशीर्ष शु. ६ बु. (२६ नव)- श्र.२च.-१२:४७ तक। श्र.३च.-१९:०९ तक। श्र.४च.-२५:३१ तक।

मार्गशीर्ष शु. ७ गु. (२७ नव)- ध.१च.-७:५२ तक। ध.२च.-१४:०५ तक। ध.३च.-२०:१८ तक।

मार्गशीर्ष शु. ८ शु. (२८ नव)- श.१च.-८:४२ तक। श.२च.-१४:४४ तक। श.३च.-२०:४६ तक।

मार्गशीर्ष शु. ९ श. (२९ नव)- पूभ१च.-८:४८ तक। पूभ२च.-१४:३८ तक। पूभ.३च.-२०:२९ तक।

मार्गशीर्ष शु. १० र. (३० नव)- उभ.१च.-८:०८ तक। उभ.२च.-१३:४८ तक। उभ.३च.-१९:२७ तक।

मार्गशीर्ष शु. ११ चं. (०१ दिस)- रे.२च.-१२:१४ तक। रे.३च.-१७:४३ तक। रे.४च.-२३:११ तक।

मार्गशीर्ष शु. १२ मं. (०२ दिस)- अ.२च.-१०:०४ तक। अ.३च.-१५:२४ तक। अ.४च.-२०:४५ तक।

मार्गशीर्ष शु. १३ बु. (०३ दिस)- भ.२च.-७:२५ तक। भ.३च.-१२:४० तक। भ.४च.-१७:५५ तक।

मार्गशीर्ष शु. १४ गु. (०४ दिस)- कृ.३च.-९:४० तक। कृ.४च.-१४:५४ तक। रो.१च.-२०:०७ तक।

पौष कृ. १ शु. (०५ दिस)- रो.४च.-११:५० तक। मृ.१च.-१७:०५ तक। मृ.२च.-२२:२१ तक।

पौष कृ. २ श. (०६ दिस)- मृ.४च.-८:५४ तक। आ.१च.-१४:१५ तक। आ.२च.-१९:३७ तक।

पौष कृ. ३ र. (०७ दिस)- पुन१च.-११:४९ तक। पुन२च.-१७:१९ तक। पुन३च.-२२:४९ तक।

पौष कृ. ४ चं. (०८ दिस)- पुष्१च.-९:५६ तक। पुष्२च.-१५:३८ तक। पुष्३च.-२१:१९ तक।

पौष कृ. ५ मं. (०९ दिस)- श्ले१च.-८:४७ तक। श्ले२च.-१४:४१ तक। श्ले३च.-२०:३५ तक।

पौष कृ. ६ बु. (१० दिस)- मघ१च.-८:२७ तक। मघ२च.-१४:३५ तक। मघ३च.-२०:४२ तक।

पौष कृ. ७ गु. (११ दिस)- पूफ१च.-९:०१ तक। पूफ२च.-१५:२० तक। पूफ३च.-२१:३९ तक।

पौष कृ. ८ शु. (१२ दिस)- उफ१च.-१०:२३ तक। उफ२च.-१६:५३ तक। उफ३च.-२३:२२ तक।

पौष कृ. ९ श. (१३ दिस)- ह.१च.-१२:२८ तक। ह.२च.-१९:०५ तक। ह.३च.-२५:४२ तक।

पौष कृ. १० र. (१४ दिस)- ह.४च.-८:२१ तक। चि.१च.-१५:०३ तक। चि.२च.-२१:४५ तक।

पौष कृ. ११ चं. (१५ दिस)- चि.४च.-११:१२ तक। स्व.१च.-१७:५७ तक। स्व.२च.-२४:४२ तक।

पौष कृ. १२ मं. (१६ दिस)- स्व.३च.-७:२७ तक। स्व.४च.-१४:१३ तक। विश१च.-२०:५८ तक।

पौष कृ. १३ बु. (१७ दिस)- विश३च.-१०:२९ तक। विश४च.-१७:१४ तक। अनु१च.-२३:५९ तक।

पौष कृ. १४ गु. (१८ दिस)- अनु३च.-१३:२६ तक। अनु४च.-२०:०८ तक। ज्ये१च.-२६:५१ तक।

पौष कृ. ३० शु. (१९ दिस)- ज्ये२च.-९:३२ तक। ज्ये३च.-१६:१२ तक। ज्ये४च.-२२:५१ तक।

पौष कृ. ३० श. (२० दिस)- मू.२च.-१२:०८ तक। मू.३च.-१८:४४ तक। मू.४च.-२५:२० तक।

पौष शु. १ र. (२१ दिस)- पूष१च.-७:५६ तक। पूष२च.-१४:२८ तक। पूष३च.-२१:०० तक।

पौष शु. २ चं. (२२ दिस)- उष१च.-१०:०३ तक। उष२च.-१६:३१ तक। उष३च.-२२:६० तक।

पौष शु. ३ मं. (२३ दिस)- अभि.-७:१२ तक। श्र.१च.-११:५३ तक। श्र.२च.-१८:१६ तक।

पौष शु. ४ बु. (२४ दिस)- श्र.४च.-७:०४ तक। ध.१च.-१३:२२ तक। ध.२च.-१९:४० तक।

दैनिक चंद्र नक्षत्र चरण

संकेत - अ. ४ च - का अर्थ है, अश्विनी नक्षत्र का चतुर्थ चरण। समय रेलवे पद्धति के अनुसार है।

पौष शु. ५ गु. (२५ दिस)- ध.४च.-८:१६ तक। श.१च.-१४:२७ तक। श.२च.-२०:३९ तक।
पौष शु. ६ शु. (२६ दिस)- श.४च.-८:६० तक। पूभ१च.-१५:०३ तक। पूभ२च.-२१:०७ तक।
पौष शु. ७ श. (२७ दिस)- पूभ.४च.-९:११ तक। उभ.१च.-१५:०५ तक। उभ.२च.-२०:६० तक।
पौष शु. ८ र. (२८ दिस)- उभ.४च.-८:४६ तक। रे.१च.-१४:३० तक। रे.२च.-२०:१५ तक।
पौष शु. ९ चं. (२९ दिस)- रे.४च.-७:४४ तक। अ. १च.-६११:१२ तक। अ. २च.-१२१४:४० तक।
पौष शु. १० मं. (३० दिस)- भ.१च.-११:३४ तक। भ.२च.-१७:०१ तक। भ.३च.-२२:२८ तक।
पौष शु. १२ बु. (३१ दिस)- कृ.१च.-९:२१ तक। कृ.२च.-१४:४३ तक। कृ.३च.-२०:०४ तक।
पौष शु. १३ गु. (०१ जन)- रो.२च.-१२:०७ तक। रो.३च.-१७:२६ तक। रो.४च.-२२:४५ तक।
पौष शु. १४ शु. (०२ जन)- मृ.२च.-९:२४ तक। मृ.३च.-१४:४४ तक। मृ.४च.-२०:०४ तक।
पौष शु. १५ श. (०३ जन)- आ.३च.-१२:०७ तक। आ.४च.-१७:३१ तक। पुन१च.-२२:५५ तक।
माघ कृ. १ र. (०४ जन)- पुन३च.-९:४६ तक। पुन४च.-१५:१७ तक। पुष्१च.-२०:४८ तक।
माघ कृ. २ चं. (०५ जन)- पुष्३च.-७:५२ तक। पुष्४च.-१३:३३ तक। श्ले१च.-१९:१४ तक।
माघ कृ. ३ मं. (०६ जन)- श्ले४च.-१२:२६ तक। मघ१च.-१८:१९ तक। मघ२च.-२४:११ तक।
माघ कृ. ५ बु. (०७ जन)- मघ४च.-१२:०५ तक। पूफ१च.-१८:१० तक। पूफ२च.-२४:१४ तक।
माघ कृ. ६ गु. (०८ जन)- पूफ४च.-१२:३३ तक। उफ१च.-१८:४९ तक। उफ२च.-२५:०५ तक।
माघ कृ. ६ शु. (०९ जन)- उफ३च.-७:२२ तक। उफ४च.-१३:४८ तक। ह.१च.-२०:१५ तक।
माघ कृ. ७ श. (१० जन)- ह. ३च.-९:११ तक। ह. ४च.-१५:४६ तक। चि.१च.-२२:२१ तक।

माघ कृ. ८ र. (११ जन)- चि.३च.-११:३५ तक। चि.४च.-१८:१६ तक। स्व.१च.-२४:५७ तक।
माघ कृ. ९ चं. (१२ जन)- स्व.२च.-७:३९ तक। स्व.३च.-१४:२३ तक। स्व.४च.-२१:०७ तक।
माघ कृ. १० मं. (१३ जन)- विश.२च.-१०:३७ तक। विश३च.-१७:२२ तक। विश४च.-२४:०७ तक।
माघ कृ. ११ बु. (१४ जन)- अनु२च.-१३:३७ तक। अनु३च.-२०:२० तक। अनु४च.-२७:०४ तक।
माघ कृ. १२ गु. (१५ जन)- ज्ये१च.-९:४७ तक। ज्ये२च.-१६:२८ तक। ज्ये३च.-२३:०८ तक।
माघ कृ. १३ शु. (१६ जन)- मू. १च.-१२:२६ तक। मू.२च.-१९:०२ तक। मू.३च.-२५:३८ तक।
माघ कृ. १४ श. (१७ जन)- मू.४च.-८:१३ तक। पूष१च.-१४:४४ तक। पूष२च.-२१:१५ तक।
माघ कृ. ३० र. (१८ जन)- पूष४च.-१०:१३ तक। उष१च.-१६:३८ तक। उष२च.-२३:०४ तक।
माघ शु. १ चं. (१९ जन)- अभि.-१३:३० तक। श्र.१च.-१८:०९ तक। श्र.२च.-२४:२८ तक।
माघ शु. २ मं. (२० जन)- श्र.४च.-१३:०२ तक। ध.१च.-१९:१६ तक। ध.२च.-२५:३० तक।
माघ शु. ३ बु. (२१ जन)- ध.३च.-७:४३ तक। ध.४च.-१३:५२ तक। श.१च.-२०:०० तक।
माघ शु. ४ गु. (२२ जन)- श.३च.-८:१७ तक। श.४च.-१४:२० तक। पूभ१च.-२०:२४ तक।
माघ शु. ५ शु. (२३ जन)- पूभ.३च.-८:३० तक। पूभ.४च.-१४:२८ तक। उभ.१च.-२०:२६ तक।
माघ शु. ६ श. (२४ जन)- उभ.३च.-८:२१ तक। उभ.४च.-१४:१३ तक। रे.१च.-२०:०६ तक।
माघ शु. ७ र. (२५ जन)- रे.३च.-७:४९ तक। रे.४च.-१३:३६ तक। अ. १च.-६३६:५७ तक।
माघ शु. ८ चं. (२६ जन)- अ. ४च.-१२:३५ तक। भ.१च.-१८:१५ तक। भ.२च.-२३:५५ तक।
माघ शु. ९ मं. (२७ जन)- भ.४च.-११:१२ तक। कृ.१च.-१६:४७ तक। कृ.२च.-२२:२२ तक।

माघ शु. १० बु. (२८ जन)- कृ.४च.-९:३० तक। रो.१च.-१५:०१ तक। रो.२च.-२०:३३ तक।
माघ शु. ११ गु. (२९ जन)- रो.४च.-७:३४ तक। मृ.१च.-१३:०४ तक। मृ.२च.-१८:३३ तक।
माघ शु. १२ शु. (३० जन)- आ.१च.-११:०० तक। आ.२च.-१६:३० तक। आ.३च.-२१:५९ तक।
माघ शु. १३ श. (३१ जन)- पुन१च.-८:५९ तक। पुन२च.-१४:३२ तक। पुन३च.-२०:०४ तक।
माघ शु. १५ र. (०१ फर)- पुष्१च.-७:०९ तक। पुष्२च.-१२:४६ तक। पुष्३च.-१८:२४ तक।
फाल्गुन कृ. १ चं. (०२ फर)- श्ले२च.-११:२३ तक। श्ले३च.-१७:०८ तक। श्ले४च.-२२:५३ तक।
फाल्गुन कृ. २ मं. (०३ फर)- मघ२च.-१०:२९ तक। मघ३च.-१६:२३ तक। मघ४च.-२२:१८ तक।
फाल्गुन कृ. ३ बु. (०४ फर)- पूफ२च.-१०:१२ तक। पूफ३च.-१६:१६ तक। पूफ४च.-२२:२१ तक।
फाल्गुन कृ. ४ गु. (०५ फर)- उफ२च.-१०:३६ तक। उफ३च.-१६:५१ तक। उफ४च.-२३:०६ तक।
फाल्गुन कृ. ५ शु. (०६ फर)- ह. २च.-११:४२ तक। ह. ३च.-१८:०७ तक। ह. ४च.-२४:३२ तक।
फाल्गुन कृ. ६ श. (०७ फर)- चि.२च.-१३:२९ तक। चि.३च.-२०:०१ तक। चि.४च.-२६:३४ तक।
फाल्गुन कृ. ७ र. (०८ फर)- स्व.१च.-९:०९ तक। स्व.२च.-१५:४८ तक। स्व.३च.-२२:२७ तक।
फाल्गुन कृ. ८ चं. (०९ फर)- विश१च.-११:४७ तक। विश.२च.-१८:३० तक। विश३च.-२५:१३ तक।
फाल्गुन कृ. ८ मं. (१० फर)- विश४च.-७:५६ तक। अनु१च.-१४:४० तक। अनु२च.-२१:२४ तक।
फाल्गुन कृ. ९ बु. (११ फर)- अनु४च.-१०:५१ तक। ज्ये१च.-१७:३४ तक। ज्ये२च.-२४:१७ तक।
फाल्गुन कृ. १० गु. (१२ फर)- ज्ये३च.-६:६० तक। ज्ये४च.-१३:३९ तक। मू. १च.-२०:१९ तक।
फाल्गुन कृ. ११ शु. (१३ फर)- मू.३च.-९:३५ तक। मू.४च.-१६:०९ तक। पूष१च.-२२:४३ तक।

फाल्गुन कृ. १२ श. (१४ फर)- पूष३च.-११:४६ तक। पूष४च.-१८:१३ तक। उष१च.-२४:४० तक।
फाल्गुन कृ. १३ र. (१५ फर)- उष२च.-७:०६ तक। उष३च.-१३:२६ तक। अभि.-२१:२६ तक।
फाल्गुन कृ. १४ चं. (१६ फर)- श्र.२च.-८:२१ तक। श्र.३च.-१४:३३ तक। श्र.४च.-२०:४४ तक।
फाल्गुन कृ. ३० मं. (१७ फर)- ध.२च.-९:०४ तक। ध.३च.-१५:०८ तक। ध.४च.-२१:१२ तक।
फाल्गुन शु. १ बु. (१८ फर)- श.२च.-९:१७ तक। श.३च.-१५:१४ तक। श.४च.-२१:११ तक।
फाल्गुन शु. २ गु. (१९ फर)- पूभ२च.-९:०३ तक। पूभ.३च.-१४:५५ तक। पूभ.४च.-२०:४७ तक।
फाल्गुन शु. ३ शु. (२० फर)- उभ.२च.-८:२८ तक। उभ.३च.-१४:१५ तक। उभ.४च.-२०:०२ तक।
फाल्गुन शु. ४ श. (२१ फर)- रे.२च.-७:३६ तक। रे.३च.-१३:२० तक। रे.४च.-१९:०३ तक।
फाल्गुन शु. ५ र. (२२ फर)- अ. ३च.-१२:१२ तक। अ. ४च.-१७:५३ तक। भ.१च.-२३:३४ तक।
फाल्गुन शु. ६ चं. (२३ फर)- भ.३च.-१०:५५ तक। भ.४च.-१६:३४ तक। कृ.१च.-२२:१४ तक।
फाल्गुन शु. ७ मं. (२४ फर)- कृ.३च.-९:३२ तक। कृ.४च.-१५:१० तक। रो.१च.-२०:४९ तक।
फाल्गुन शु. ९ बु. (२५ फर)- रो.३च.-८:०५ तक। रो.४च.-१३:४४ तक। मृ.१च.-१९:२२ तक।
फाल्गुन शु. १० गु. (२६ फर)- मृ.४च.-१२:१८ तक। आ.१च.-१७:५७ तक। आ.२च.-२३:३७ तक।
फाल्गुन शु. ११ शु. (२७ फर)- आ.४च.-१०:५६ तक। पुन१च.-१६:३७ तक। पुन२च.-२२:१९ तक।
फाल्गुन शु. १२ श. (२८ फर)- पुन४च.-९:४२ तक। पुष्१च.-१५:२७ तक। पुष्२च.-२१:११ तक।
फाल्गुन शु. १३ र. (०१ मार्च)- पुष्४च.-८:४१ तक। श्ले१च.-१४:३० तक। श्ले२च.-२०:१८ तक।
फाल्गुन शु. १४ चं. (०२ मार्च)- श्ले४च.-७:५६ तक। मघ१च.-१३:५१ तक। मघ२च.-१९:४६ तक।

फाल्गुन शु. १५ मं. (०३ मार्च)- मघ४च.-७:३५ तक। पूफ१च.-१३:३७ तक। पूफ२च.-१९:३८ तक।
चैत्र कृ. १ बु. (०४ मार्च)- पूफ४च.-७:४२ तक। उफ१च.-१३:५१ तक। उफ२च.-२०:०० तक।
चैत्र कृ. २ गु. (०५ मार्च)- उफ४च.-८:२० तक। ह. १च.-१४:३८ तक। ह. २च.-२०:५५ तक।
चैत्र कृ. ३ शु. (०६ मार्च)- ह. ४च.-९:३३ तक। चि.१च.-१५:५९ तक। चि.२च.-२२:२४ तक।
चैत्र कृ. ४ श. (०७ मार्च)- चि.४च.-११:२० तक। स्व.१च.-१७:५३ तक। स्व.२च.-२४:२५ तक।
चैत्र कृ. ५ र. (०८ मार्च)- स्व.३च.-६:५७ तक। स्व.४च.-१३:३६ तक। विश१च.-२०:१४ तक।
चैत्र कृ. ६ चं. (०९ मार्च)- विश३च.-९:३२ तक। विश४च.-१६:१४ तक। अनु१च.-२२:५७ तक।
चैत्र कृ. ७ मं. (१० मार्च)- अनु३च.-१२:२२ तक। अनु४च.-१९:०५ तक। ज्ये१च.-२५:४९ तक।
चैत्र कृ. ८ बु. (११ मार्च)- ज्ये२च.-८:३२ तक। ज्ये३च.-१५:१५ तक। ज्ये४च.-२१:५८ तक।
चैत्र कृ. ९ गु. (१२ मार्च)- मू.२च.-११:२० तक। मू.३च.-१८:०० तक। मू.४च.-२४:४० तक।
चैत्र कृ. १० शु. (१३ मार्च)- पूष१च.-७:१८ तक। पूष२च.-१३:५१ तक। पूष३च.-२०:२५ तक।
चैत्र कृ. १० श. (१४ मार्च)- उष१च.-९:२८ तक। उष२च.-१५:५५ तक। उष३च.-२२:२१ तक।
चैत्र कृ. ११ र. (१५ मार्च)- श्र.१च.-११:०५ तक। श्र.२च.-१७:२२ तक। श्र.३च.-२३:३९ तक।
चैत्र कृ. १२ चं. (१६ मार्च)- ध.१च.-१२:०२ तक। ध.२च.-१८:०९ तक। ध.३च.-२४:१६ तक।
चैत्र कृ. १३ मं. (१७ मार्च)- श.१च.-१२:१९ तक। श.२च.-१८:१६ तक। श.३च.-२४:१३ तक।
चैत्र कृ. १४ बु. (१८ मार्च)- पूभ१च.-११:५८ तक। पूभ२च.-१७:४६ तक। पूभ.३च.-२३:३४ तक।
चैत्र कृ. ३० गु. (१९ मार्च)- उभ.१च.-११:०३ तक। उभ.२च.-१६:४४ तक। उभ.३च.-२२:२४ तक।

चर सारिणी (८ अक्षांस से ३६ अक्षांस तक)(चर फल मिनट में प्रदर्शित है जो कि उत्तर क्रान्ति में धन व दक्षिण क्रान्ति में ऋण होता है)

अक्षांस

सूर्य क्रांति

अंश	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	
०१	०२	०२	०२	०१	०१	०१	०१	०१	०१	०१	०१	०१	०१	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	०१	०१	०१	०१
०२	०३	०३	०३	०२	०२	०२	०२	०२	०२	०२	०१	०१	०१	०१	०१	०१	००	००	००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२
०३	०४	०४	०४	०४	०३	०३	०३	०३०	०३	०२	०२	०२	०२	०१	०१	०१	०१	००	००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०३	०३
०४	०६	०५	०५	०५	०४	०४	०४	०४	०३	०३	०२	०२	०२	०२	०१	०१	०१	००	००	००	००	०१	०१	०१	०२	०२	०३	०३	०४	०४
०५	०७	०७	०६	०६	०५	०५	०५	०५	०४	०३	०३	०३	०३	०२	०२	०१	०१	०१	००	००	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०४	०४	०४	०५
०६	०८	०८	०८	०७	०६	०६	०६	०५	०५	०४	०४	०३	०३	०३	०२	०२	०१	०१	००	००	०१	०१	०२	०२	०३	०३	०५	०५	०५	०६
०७	१०	०९	०९	०८	०८	०७	०७	०६	०५	०५	०४	०४	०४	०३	०२	०२	०१	०१	००	००	०१	०१	०२	०३	०३	०४	०६	०६	०६	०७
०८	११	१०	१०	१०	०९	०८	०८	०७	०६	०५	०५	०४	०४	०४	०३	०२	०२	०१	००	००	०१	०२	०३	०३	०४	०५	०६	०६	०७	०८
०९	१३	१२	१२	११	१०	०९	०९	०८	०७	०६	०५	०५	०५	०४	०३	०३	०२	०१	००	००	०१	०२	०३	०४	०४	०६	०६	०७	०८	०९
१०	१४	१४	१३	१२	११	११	११	०९	०८	०७	०६	०५	०५	०५	०४	०३	०२	०१	००	००	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०
११	१६	१५	१४	१३	१२	१२	१२	१०	०८	०८	०७	०६	०६	०५	०४	०३	०२	०१	००	०१	०१	०२	०४	०४	०६	०६	०८	०९	१०	११
१२	१७	१६	१६	१५	१४	१३	१३	११	०९	०८	०७	०६	०६	०५	०४	०३	०२	०१	००	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०९	१०	११	१२
१३	१९	१८	१७	१६	१५	१४	१४	१२	१०	०९	०८	०७	०७	०६	०५	०४	०३	०१	००	०१	०२	०३	०४	०६	०७	०८	१०	११	१२	१३
१४	२०	१९	१८	१७	१६	१५	१५	१३	११	०९	०८	०७	०७	०६	०५	०४	०३	०२	००	०१	०२	०३	०५	०६	०७	०९	१०	१२	१३	१४
१५	२२	२०	१९	१८	१७	१६	१६	१४	१२	१०	०९	०८	०८	०७	०५	०४	०३	०२	००	०१	०२	०४	०५	०७	०८	१०	११	१३	१४	१५
१६	२३	२२	२१	२०	१९	१७	१७	१५	१२	११	१०	०८	०८	०७	०६	०४	०३	०२	००	०१	०२	०४	०५	०७	०९	१०	१२	१४	१५	१६
१७	२४	२३	२२	२१	२०	१८	१८	१६	१३	१२	१०	०९	०९	०८	०६	०५	०३	०२	००	०१	०३	०४	०६	०८	०९	११	१३	१५	१६	१७
१८	२६	२४	२३	२२	२१	१९	१९	१७	१४	१२	११	१०	१०	०८	०६	०५	०३	०२	००	०१	०३	०५	०६	०८	१०	१२	१४	१६	१७	१८
१९	२८	२६	२५	२३	२२	२०	२०	१८	१५	१३	१२	१०	१०	०८	०७	०५	०४	०२	००	०१	०३	०५	०७	०९	११	१३	१५	१७	१८	१९
२०	२९	२८	२६	२५	२३	२१	२१	१८	१५	१४	१२	११	११	०९	०७	०५	०४	०२	००	०२	०३	०५	०७	०९	११	१३	१६	१८	२०	२०
२१	३१	२९	२८	२६	२४	२३	२३	१९	१६	१४	१३	११	११	०९	०७	०६	०४	०२	००	०२	०४	०६	०८	१०	१२	१४	१७	१९	२१	२१
२२	३३	३१	२९	२८	२६	२४	२४	२०	१७	१५	१३	१२	१२	१०	०८	०६	०४	०२	००	०२	०४	०६	०८	११	१३	१५	१७	२०	२३	२२
२३	३४	३२	३०	२९	२७	२५	२५	२१	१८	१६	१४	१२	१२	१०	०८	०६	०४	०२	००	०२	०४	०७	०९	११	१३	१६	१८	२१	२४	२३
२४	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२६	२३	१९	१७	१५	१३	१३	११	०९	०७	०४	०२	००	०२	०५	०७	०९	१२	१४	१९	१९	२२	२५	२४
	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	

1. देशान्तर – पृथ्वी के उत्तर–दक्षिण दिशा में खीची गई काल्पनिक रेखा पर आने वाले समस्त स्थानों का एक ही रखांश होता है। उदाहरण के लिये ग्वालियर का रेखांश ७८°१०' है जो कि उत्तर में काश्मीर में दक्षिण में मद्रास में भी है। इस रेखांश वाले स्थानों से पश्चिम दिशा में चलने पर एक अंश रेखांश कम हो जाता है। इसी प्रकार पूर्व में चलने पर एक अंश बढ़ जाता है। एक अंश रेखांश कम होने पर सुर्योदय या लग्न समय में चार मिनट कम हो जाते है। इसी प्रकार रेखांश बढ़ने पर चार मिनट समय बढ़ जाता है। यह समयांतर देशांतर संस्कार कहलाता है।

2. चरान्तर – भूमध्य रेखा के समानान्तर पूर्व पश्चिम दिशा में काल्पनिक रेखाएं अक्षांश कहलाती है। इस रेखा पर पश्चिम से पूर्व तक के समस्त स्थानों का एक ही अक्षांश होता है। एक अक्षांश रेखा से उत्तर या दक्षिण की ओर दूसरी अक्षांश रेखा की ओर चलने में सूर्योदय या लग्न के समय में जो समयान्तर आता है। वह चरान्तर कहलाता है। चरान्तर का मान अक्षांश एवं सूर्य क्रांति पर निर्भर रहता है। इस पंचाग में प्रतिदिन की सूर्य क्रांती दी गई है। जिस दिन का चरान्तर ज्ञात करना हो। उस दिन पंचाग में क्रांति देखकर उपरोक्त सारणी की प्रथम खड़ी पंक्ति में क्रांति के सामने एवं अपने स्थाने के अक्षांश के नीचे कोष्ठक में जो अंक मिले वह चर मिनट में होगा। यदि सूर्य क्रांति उत्तर हो तो चरान्तर फल (+) धनात्मक होता है। दक्षिण क्रांति में (–) ऋणात्मक होता है। इसी प्रकार पंचांग स्थान अक्षांस का चर निकालने पर दोंनों अक्षासों के वीच चरान्तर होता है। जिनमें पलात्मक चरान्तर की आवश्यकता हो वे चरान्तर फल को ढाई गुणा कर ले। उदाहरण के लिये १ जनवरी को क्रान्ति २३.२ दक्षिण है। पंचांग स्थान का अक्षांस २६ है एवं १९ अक्षांस पर चरान्तर निकालना है। उपरोक्त चर सारिणी में २३ क्रान्ति के सामने १९ अक्षांस पर चर १२ मिनट मिला। इसी प्रकार पंचांग स्थान के अक्षांस २६ पर उस दिन २३ क्रान्ति के सामने चर ०० मिला। इन दोनों में १२ मिनट का अंतर चरान्तर हुआ। चूंकि १ जनवरी को क्रान्ति दक्षिण है, इसलिए चरान्तर ऋण (–१२) होगा।

3. इष्टान्तर – देशान्तर एवं चरान्तर का योग इष्टान्तर होता है। माना कि किसी स्थान का देशांतर –४ मिनट है तथा किसी दिन चरान्तर +२ मिनट है तो इष्टान्तर (–४ + २) =(– २) मिनट होगा तब स्थानीय सूर्योदय बनाने के लिए पंचाग में दिये गये सूर्यादय में से २ मिनट घटाना चाहिए।

दैनिक सूर्य क्रान्ति (अंश कला में) धन (+) चिन्ह में उत्तर तथा ऋण (–) चिन्ह में दक्षिण क्रान्ति है।

दिनांक	जनवरी		फरवरी		मार्च		अप्रैल		मई		जून		जुलाई		अगस्त		सितम्बर		अक्टूबर		नवम्बर		दिसम्बर		दिनांक
१	–२३	२	–१७	१५	–७	४७	+४	२५	+१४	५९	+२२	०	+२३	८	+१८	६	+८	२४	–३	४	–१४	२०	–२१	४५	१
२	–२२	५८	–१६	५८	–७	२४	+४	४८	+१५	१७	+२२	८	+२३	४	+१७	५१	+८	२	–३	२७	–१४	३९	–२१	५४	२
३	–२२	५२	–१६	४०	–७	२	+५	११	+१५	३५	+२२	१६	+२२	५९	+१७	३५	+७	४०	–३	५०	–१४	५८	–२२	३	३
४	–२२	४६	–१६	२३	–६	३९	+५	३४	+१५	५२	+२२	२३	+२२	५४	+१७	१९	+७	१८	–४	१४	–१५	१७	–२२	१२	४
५	–२२	४०	–१६	५	–६	१६	+५	५७	+१६	९	+२२	३०	+२२	४९	+१७	३	+६	५६	–४	३७	–१५	३५	–२२	२०	५
६	–२२	३३	–१५	४६	–५	५२	+६	२०	+१६	२७	+२२	३७	+२२	४३	+१६	४७	+६	३३	–४	६०	–१५	५३	–२२	२७	६
७	–२२	२६	–१५	२८	–५	२९	+६	४३	+१६	४३	+२२	४३	+२२	३७	+१६	३१	+६	११	–५	२३	–१६	११	–२२	३४	७
८	–२२	१८	–१५	९	–५	६	+७	५	+१६	६०	+२२	४९	+२२	३१	+१६	१४	+५	४९	–५	४६	–१६	२९	–२२	४१	८
९	–२२	१०	–१४	५०	–४	४२	+७	२७	+१७	१६	+२२	५४	+२२	२४	+१५	५७	+५	२६	–६	९	–१६	४६	–२२	४७	९
१०	–२२	२	–१४	३१	–४	१९	+७	५०	+१७	३२	+२२	५९	+२२	१६	+१५	३९	+५	३	–६	३१	–१७	३	–२२	५३	१०
११	–२१	५३	–१४	१२	–३	५५	+८	१२	+१७	४८	+२३	४	+२२	९	+१५	२२	+४	४१	–६	५४	–१७	२०	–२२	५८	११
१२	–२१	४४	–१३	५२	–३	३२	+८	३४	+१८	३	+२३	८	+२२	१	+१५	४	+४	१८	–७	१७	–१७	३७	–२३	३	१२
१३	–२१	३४	–१३	३२	–३	८	+८	५६	+१८	१८	+२३	११	+२१	५२	+१४	४६	+३	५५	–७	३९	–१७	५३	–२३	८	१३
१४	–२१	२४	–१३	१२	–२	४५	+९	१८	+१८	३३	+२३	१५	+२१	४४	+१४	२७	+३	३२	–८	२	–१८	९	–२३	११	१४
१५	–२१	१३	–१२	५१	–२	२१	+९	३९	+१८	४७	+२३	१८	+२१	३४	+१४	९	+३	९	–८	२४	–१८	२४	–२३	१५	१५
१६	–२१	२	–१२	३१	–१	५७	+१०	०	+१९	१	+२३	२०	+२१	२५	+१३	५०	+२	४६	–८	४६	–१८	४०	–२३	१८	१६
१७	–२०	५०	–१२	१०	–१	३४	+१०	२२	+१९	१५	+२३	२२	+२१	१५	+१३	३१	+२	२३	–९	८	–१८	५४	–२३	२१	१७
१८	–२०	३९	–११	४९	–१	१०	+१०	४३	+१९	२९	+२३	२४	+२१	५	+१३	१२	+१	५९	–९	३०	–१९	९	–२३	२३	१८
१९	–२०	२६	–११	२८	–०	४६	+११	४	+१९	४२	+२३	२५	+२०	५४	+१२	५३	+१	३६	–९	५२	–१९	२३	–२३	२४	१९
२०	–२०	१४	–११	६	–०	२३	+११	२४	+१९	५४	+२३	२६	+२०	४३	+१२	३३	+१	१३	–१०	१४	–१९	३७	–२३	२५	२०
२१	–२०	१	–१०	४५	+०	०	+११	४५	+२०	७	+२३	२६	+२०	३२	+१२	१३	+०	५०	–१०	३५	–१९	५१	–२३	२६	२१
२२	–१९	४७	–१०	२३	+०	२५	+१२	५	+२०	१९	+२३	२६	+२०	२०	+११	५३	+०	२६	–१०	५६	–२०	४	–२३	२६	२२
२३	–१९	३४	–१०	१	+०	४८	+१२	२५	+२०	३१	+२३	२६	+२०	८	+११	३३	+०	३	–११	१८	–२०	१७	–२३	२६	२३
२४	–१९	२०	–९	३९	+१	१२	+१२	४५	+२०	४२	+२३	२५	+१९	५६	+११	१३	–०	२०	–११	३९	–२०	२९	–२३	२५	२४
२५	–१९	५	–९	१७	+१	३६	+१३	५	+२०	५३	+२३	२४	+१९	४३	+१०	५२	–०	४४	–११	५९	–२०	४१	–२३	२४	२५
२६	–१८	५०	–८	५५	+१	५९	+१३	२५	+२१	४	+२३	२२	+१९	३०	+१०	३१	–१	७	–१२	२०	–२०	५३	–२३	२२	२६
२७	–१८	३५	–८	३२	+२	२३	+१३	४४	+२१	१४	+२३	२०	+१९	१७	+१०	१०	–१	३१	–१२	४१	–२१	४	–२३	२०	२७
२८	–१८	२०	–८	१०	+२	४६	+१४	३	+२१	२४	+२३	१८	+१९	३	+९	४९	–१	५४	–१३	१	–२१	१५	–२३	१८	२८
२९	–१८	४			+३	१०	+१४	२२	+२१	३४	+२३	१५	+१८	४९	+९	२८	–२	१७	–१३	२१	–२१	२६	–२३	१५	२९
३०	–१७	४८			+३	३३	+१४	४०	+२१	४३	+२३	११	+१८	३५	+९	७	–२	४१	–१३	४१	–२१	३६	–२३	११	३०
३१	–१७	३१			३	५६			+२१	५२			+१८	२१	८	४५			–१४	०			–२३	७	३१

२१ से २७ अक्ष पट्टियों पर मध्यम सूर्योदय एवं सूर्यास्त (सूर्य बिंब केन्द्रीय–शास्त्रीय, वेलान्तर संस्कार युक्त)(सूर्यास्त में १२ जोडकर उसमें से सूर्योदय घटाने पर शेष को ढ़ाई गुना करने पर दिनमान घटी प्राप्त होता है।)

किसी दिनांक को अपने ग्राम स्थान का स्टैण्डर्ड सूर्योदय या स्टैण्डर्ड सूर्यास्त जानने के लिए अपने ग्राम की अक्ष पट्टी एवं स्टैण्डर्ड अन्तर का ज्ञान अक्षांस सारणी से कर, नीचे लिखी अपने स्थान की अक्ष पट्टी में उस दिनांक के स्थानीय सू.उ. या सू.अ. में स्टैण्डर्ड अन्तर का विपरीत संस्कार करें। बीच के दिनांकों के लिए अनुपात करें।

अक्षपट्टी	२१		२२		२३		२४		२५		२६		२७	
	अक्षांस २१ ।३०		अक्षांस २२ ।३०		अक्षांस २३ ।३०		अक्षांस २४ ।३०		अक्षांस २५ ।३०		अक्षांस २६ ।३०		अक्षांस २७ ।३०	
दिनांक	सू.उ.	अस्त	सू.उ.	अस्त	सू.उ.	अस्त	सू.उ.	अस्त	सू.उ.	अस्त	सू.उ.	अस्त	सू.उ.	अस्त
०१.जन.	६.४२	५.२५	६.४४	५.२३	६.४६	५.२१	६.४८	५.१९	६.५०	५.१७	६.५२	५.१५	६.५४	५.१२
०५.जन.	६.४३	५.२७	६.४५	५.२५	६.४७	५.२३	६.४९	५.२१	६.५१	५.१९	६.५३	५.१७	६.५५	५.१५
०९.जन.	६.४४	५.३०	६.४६	५.२८	६.४८	५.२६	६.५०	५.२४	६.५२	५.२२	६.५४	५.२०	६.५६	५.१८
१३.जन.	६.४४	५.३३	६.४६	५.३१	६.४८	५.२९	६.५०	५.२७	६.५२	५.२५	६.५४	५.२३	६.५६	५.२१
१७.जन.	६.४४	५.३६	६.४६	५.३४	६.४८	५.३२	६.५०	५.३०	६.५२	५.२८	६.५३	५.२६	६.५५	५.२४
२१.जन.	६.४४	५.३८	६.४६	५.३७	६.४७	५.३५	६.४९	५.३३	६.५१	५.३१	६.५३	५.२९	६.५५	५.२८
२५.जन.	६.४३	५.४१	६.४५	५.३९	६.४७	५.३८	६.४८	५.३६	६.५०	५.३४	६.५२	५.३३	६.५३	५.३१
२९.जन.	६.४२	५.४४	६.४४	५.४२	६.४५	५.४१	६.४७	५.३९	६.४८	५.३७	६.५०	५.३६	६.५२	५.३४
०२.फर.	६.४१	५.४६	६.४२	५.४५	६.४४	५.४३	६.४५	५.४२	६.४७	५.४०	६.४८	५.३९	६.५०	५.३७
०६.फर.	६.३९	५.४९	६.४१	५.४७	६.४२	५.४६	६.४३	५.४५	६.४५	५.४३	६.४६	५.४२	६.४७	५.४०
१०.फर.	६.३७	५.५१	६.३८	५.५०	६.४०	५.४८	६.४१	५.४७	६.४२	५.४६	६.४३	५.४५	६.४५	५.४३
१४.फर.	६.३५	५.५३	६.३६	५.५२	६.३७	५.५१	६.३८	५.५०	६.३९	५.४९	६.४१	५.४७	६.४२	५.४६
१८.फर.	६.३२	५.५५	६.३३	५.५४	६.३४	५.५३	६.३५	५.५२	६.३६	५.५१	६.३७	५.५०	६.३८	५.४९
२२.फर.	६.३०	५.५७	६.३०	५.५६	६.३१	५.५५	६.३२	५.५४	६.३३	५.५४	६.३४	५.५३	६.३५	५.५२
२६.फर.	६.२७	५.५९	६.२७	५.५८	६.२८	५.५७	६.२९	५.५७	६.३०	५.५६	६.३०	५.५५	६.३१	५.५४
०२.मार्च	६.२३	६.१	६.२४	५.६०	६.२५	५.५९	६.२५	५.५९	६.२६	५.५८	६.२७	५.५७	६.२७	५.५७
०६.मार्च	६.२०	६.२	६.२१	६.२	६.२१	६.१	६.२२	६.१	६.२२	६.०	६.२३	५.६०	६.२३	५.५९
१०.मार्च	६.१७	६.४	६.१७	६.३	६.१७	६.३	६.१८	६.३	६.१८	६.२	६.१८	६.२	६.१९	६.२
१४.मार्च	६.१३	६.५	६.१३	६.५	६.१४	६.५	६.१४	६.४	६.१४	६.४	६.१४	६.४	६.१४	६.४
१८.मार्च	६.१०	६.६	६.१०	६.६	६.१०	६.६	६.१०	६.६	६.१०	६.६	६.१०	६.६	६.१०	६.६
२२.मार्च	६.६	६.८	६.६	६.८	६.६	६.८	६.६	६.८	६.६	६.८	६.६	६.८	६.६	६.८
२६.मार्च	६.२	६.९	६.२	६.९	६.२	६.९	६.२	६.१०	६.१	६.१०	६.१	६.१०	६.१	६.१०
३०.मार्च	५.५९	६.१०	५.५८	६.११	५.५८	६.११	५.५८	६.११	५.५७	६.१२	५.५७	६.१२	५.५७	६.१२
०३.अप्रै.	५.५५	६.१२	५.५४	६.१२	५.५४	६.१२	५.५४	६.१३	५.५३	६.१३	५.५३	६.१४	५.५२	६.१४
०७.अप्रै.	५.५१	६.१३	५.५१	६.१३	५.५०	६.१४	५.५०	६.१५	५.४९	६.१५	५.४८	६.१६	५.४८	६.१६
११.अप्रै.	५.४८	६.१४	५.४७	६.१५	५.४६	६.१६	५.४६	६.१६	५.४५	६.१७	५.४४	६.१८	५.४४	६.१८
१५.अप्रै.	५.४५	६.१६	५.४४	६.१६	५.४३	६.१७	५.४२	६.१८	५.४१	६.१९	५.४०	६.२०	५.४०	६.२१
१९.अप्रै.	५.४१	६.१७	५.४०	६.१८	५.३९	६.१९	५.३८	६.२०	५.३८	६.२१	५.३७	६.२२	५.३६	६.२३
२३.अप्रै.	५.३८	६.१८	५.३७	६.१९	५.३६	६.२०	५.३५	६.२२	५.३४	६.२३	५.३३	६.२४	५.३२	६.२५
२७.अप्रै.	५.३५	६.२०	५.३४	६.२१	५.३३	६.२२	५.३२	६.२३	५.३१	६.२५	५.२९	६.२६	५.२८	६.२७

अक्षपट्टी	२१		२२		२३		२४		२५		२६		२७	
	अक्षांस २१ ।३०		अक्षांस २२ ।३०		अक्षांस २३ ।३०		अक्षांस २४ ।३०		अक्षांस २५ ।३०		अक्षांस २६ ।३०		अक्षांस २७ ।३०	
दिनांक	सू.उ.	अस्त	सू.उ.	अस्त	सू.उ.	अस्त	सू.उ.	अस्त	सू.उ.	अस्त	सू.उ.	अस्त	सू.उ.	अस्त
०१.मई.	५.३३	६.२१	५.३१	६.२३	५.३०	६.२४	५.२९	६.२५	५.२८	६.२७	५.२६	६.२८	५.२५	६.२९
०५.मई.	५.३०	६.२३	५.२९	६.२४	५.२८	६.२६	५.२६	६.२७	५.२५	६.२९	५.२३	६.३०	५.२२	६.३२
०९.मई.	५.२८	६.२५	५.२७	६.२६	५.२५	६.२८	५.२४	६.२९	५.२२	६.३१	५.२१	६.३२	५.१९	६.३४
१३.मई.	५.२६	६.२६	५.२५	६.२८	५.२३	६.३०	५.२१	६.३१	५.२०	६.३३	५.१८	६.३४	५.१६	६.३६
१७.मई.	५.२५	६.२८	५.२३	६.३०	५.२१	६.३१	५.२०	६.३३	५.१८	६.३५	५.१६	६.३७	५.१४	६.३८
२१.मई.	५.२३	६.३०	५.२२	६.३२	५.२०	६.३३	५.१८	६.३५	५.१६	६.३७	५.१४	६.३९	५.१२	६.४१
२५.मई.	५.२२	६.३२	५.२०	६.३३	५.१९	६.३५	५.१७	६.३७	५.१५	६.३९	५.१३	६.४१	५.११	६.४३
२९.मई.	५.२१	६.३३	५.२०	६.३५	५.१८	६.३७	५.१६	६.३९	५.१४	६.४१	५.१२	६.४३	५.१०	६.४५
०२.जून.	५.२१	६.३५	५.१९	६.३७	५.१७	६.३९	५.१५	६.४१	५.१३	६.४३	५.११	६.४५	५.९	६.४७
०६.जून.	५.२१	६.३६	५.१९	६.३८	५.१७	६.४०	५.१५	६.४२	५.१३	६.४५	५.११	६.४७	५.८	६.४९
१०.जून.	५.२१	६.३८	५.१९	६.४०	५.१७	६.४२	५.१५	६.४४	५.१३	६.४६	५.१०	६.४८	५.८	६.५०
१४.जून.	५.२१	६.३९	५.१९	६.४१	५.१७	६.४३	५.१५	६.४५	५.१३	६.४७	५.११	६.५०	५.८	६.५२
१८.जून.	५.२२	६.४०	५.२०	६.४२	५.१८	६.४४	५.१६	६.४७	५.१३	६.४९	५.११	६.५१	५.९	६.५३
२२.जून.	५.२३	६.४१	५.२१	६.४३	५.१८	६.४५	५.१६	६.४७	५.१४	६.५०	५.१२	६.५२	५.१०	६.५४
२६.जून.	५.२४	६.४२	५.२२	६.४४	५.१९	६.४६	५.१७	६.४८	५.१५	६.५०	५.१३	६.५२	५.११	६.५५
३०.जून.	५.२५	६.४२	५.२३	६.४४	५.२१	६.४६	५.१९	६.४९	५.१६	६.५१	५.१४	६.५३	५.१२	६.५५
०४.जुला	५.२६	६.४३	५.२४	६.४५	५.२२	६.४७	५.२०	६.४९	५.१८	६.५१	५.१६	६.५३	५.१४	६.५५
०८.जुला	५.२७	६.४३	५.२६	६.४४	५.२४	६.४६	५.२२	६.४८	५.१९	६.५१	५.१७	६.५३	५.१५	६.५५
१२.जुला.	५.२९	६.४२	५.२७	६.४४	५.२५	६.४६	५.२३	६.४८	५.२१	६.५०	५.१९	६.५२	५.१७	६.५४
१६.जुला.	५.३१	६.४१	५.२९	६.४३	५.२७	६.४५	५.२५	६.४७	५.२३	६.४९	५.२१	६.५१	५.१९	६.५३
२०.जुला	५.३२	६.४०	५.३०	६.४२	५.२९	६.४४	५.२७	६.४६	५.२५	६.४८	५.२३	६.५०	५.२१	६.५२
२४.जुला	५.३४	६.३९	५.३२	६.४१	५.३०	६.४३	५.२९	६.४४	५.२७	६.४६	५.२५	६.४८	५.२३	६.५०
२८.जुला	५.३५	६.३८	५.३४	६.३९	५.३२	६.४१	५.३०	६.४३	५.२९	६.४४	५.२७	६.४६	५.२५	६.४८
०१.अग.	५.३७	६.३६	५.३५	६.३७	५.३४	६.३९	५.३२	६.४०	५.३१	६.४२	५.२९	६.४४	५.२७	६.४५
०५.अग.	५.३८	६.३४	५.३७	६.३५	५.३५	६.३७	५.३४	६.३८	५.३२	६.४०	५.३१	६.४१	५.२९	६.४३
०९.अग.	५.४०	६.३१	५.३८	६.३३	५.३७	६.३४	५.३६	६.३५	५.३४	६.३७	५.३३	६.३८	५.३१	६.४०
१३.अग.	५.४१	६.२९	५.४०	६.३०	५.३९	६.३१	५.३७	६.३२	५.३६	६.३४	५.३५	६.३५	५.३४	६.३६
१७.अग.	५.४३	६.२६	५.४१	६.२७	५.४०	६.२८	५.३९	६.२९	५.३८	६.३०	५.३७	६.३२	५.३६	६.३३
२१.अग.	५.४४	६.२३	५.४३	६.२४	५.४२	६.२५	५.४१	६.२६	५.४०	६.२७	५.३९	६.२८	५.३८	६.२९
२५.अग.	५.४५	६.१९	५.४४	६.२०	५.४३	६.२१	५.४२	६.२२	५.४१	६.२३	५.४०	६.२४	५.३९	६.२५
२९.अग.	५.४६	६.१६	५.४५	६.१७	५.४५	६.१८	५.४४	६.१८	५.४३	६.१९	५.४२	६.२०	५.४१	६.२१

अक्षपट्टी	२१		२२		२३		२४		२५		२६		२७	
	अक्षांस २१ ।३०		अक्षांस २२ ।३०		अक्षांस २३ ।३०		अक्षांस २४ ।३०		अक्षांस २५ ।३०		अक्षांस २६ ।३०		अक्षांस २७ ।३०	
दिनांक	सू.उ.	अस्त	सू.उ.	अस्त	सू.उ.	अस्त	सू.उ.	अस्त	सू.उ.	अस्त	सू.उ.	अस्त	सू.उ.	अस्त
०२.सित.	५.४७	६.१२	५.४७	६.१३	५.४६	६.१४	५.४५	६.१४	५.४५	६.१५	५.४४	६.१६	५.४३	६.१७
०६.सित.	५.४८	६.९	५.४८	६.९	५.४७	६.१०	५.४७	६.१०	५.४६	६.११	५.४६	६.१२	५.४५	६.१२
१०.सित.	५.४९	६.५	५.४९	६.५	५.४९	६.६	५.४८	६.६	५.४८	६.७	५.४७	६.७	५.४७	६.८
१४.सित.	५.५०	६.१	५.५०	६.२	५.५०	६.२	५.५०	६.२	५.४९	६.२	५.४९	६.३	५.४९	६.३
१८.सित.	५.५१	५.५७	५.५१	५.५८	५.५१	५.५८	५.५१	५.५८	५.५१	५.५८	५.५१	५.५८	५.५०	५.५८
२२.सित.	५.५२	५.५४	५.५२	५.५४	५.५२	५.५४	५.५२	५.५४	५.५२	५.५४	५.५२	५.५४	५.५२	५.५४
२६.सित.	५.५४	५.५०	५.५४	५.५०	५.५४	५.५०	५.५४	५.४९	५.५४	५.४९	५.५४	५.४९	५.५४	५.४९
३०.सित.	५.५५	५.४६	५.५५	५.४६	५.५५	५.४५	५.५५	५.४५	५.५६	५.४५	५.५६	५.४५	५.५६	५.४५
०४.अक्टू.	५.५६	५.४२	५.५६	५.४२	५.५७	५.४२	५.५७	५.४१	५.५७	५.४१	५.५८	५.४०	५.५८	५.४०
०८.अक्टू.	५.५७	५.३९	५.५८	५.३८	५.५८	५.३८	५.५९	५.३७	५.५९	५.३७	५.६०	५.३६	६.०	५.३६
१२.अक्टू	५.५९	५.३५	५.५९	५.३५	५.६०	५.३४	६.०	५.३३	६.१	५.३३	६.२	५.३२	६.२	५.३१
१६.अक्टू	५.६०	५.३२	६.१	५.३१	६.१	५.३०	६.२	५.३०	६.३	५.२९	६.४	५.२८	६.५	५.२७
२०.अक्टू.	६.२	५.२९	६.२	५.२८	६.३	५.२७	६.४	५.२६	६.५	५.२५	६.६	५.२४	६.७	५.२३
२४.अक्टू.	६.३	५.२६	६.४	५.२५	६.५	५.२४	६.६	५.२३	६.७	५.२२	६.८	५.२१	६.९	५.२०
२८.अक्टू.	६.५	५.२३	६.६	५.२२	६.७	५.२१	६.८	५.२०	६.१०	५.१९	६.११	५.१७	६.१२	५.१६
०१.नव.	६.७	५.२१	६.८	५.१९	६.१०	५.१८	६.११	५.१७	६.१२	५.१६	६.१३	५.१४	६.१५	५.१३
०५.नव.	६.९	५.१९	६.११	५.१७	६.१२	५.१६	६.१३	५.१५	६.१५	५.१३	६.१६	५.१२	६.१७	५.१०
०९.नव.	६.११	५.१७	६.१३	५.१५	६.१४	५.१४	६.१६	५.१२	६.१७	५.११	६.१९	५.९	६.२०	५.८
१३.नव.	६.१४	५.१५	६.१५	५.१४	६.१७	५.१२	६.१८	५.११	६.२०	५.९	६.२२	५.७	६.२३	५.६
१७.नव.	६.१६	५.१४	६.१८	५.१२	६.२०	५.११	६.२१	५.९	६.२३	५.७	६.२५	५.६	६.२६	५.४
२१.नव.	६.१९	५.१३	६.२०	५.१२	६.२२	५.१०	६.२४	५.८	६.२६	५.६	६.२८	५.४	६.२९	५.३
२५.नव.	६.२१	५.१३	६.२३	५.११	६.२५	५.९	६.२७	५.७	६.२९	५.५	६.३१	५.४	६.३३	५.२
२९.नव.	६.२४	५.१३	६.२६	५.११	६.२८	५.९	६.३०	५.७	६.३२	५.५	६.३४	५.३	६.३६	५.१
०३.दिस.	६.२७	५.१३	६.२९	५.११	६.३०	५.९	६.३२	५.७	६.३४	५.५	६.३७	५.३	६.३९	५.१
०७.दिस.	६.२९	५.१४	६.३१	५.१२	६.३३	५.१०	६.३५	५.८	६.३७	५.६	६.३९	५.४	६.४१	५.१
११.दिस.	६.३२	५.१५	६.३४	५.१३	६.३६	५.११	६.३८	५.९	६.४०	५.६	६.४२	५.४	६.४४	५.२
१५.दिस.	६.३४	५.१६	६.३६	५.१४	६.३८	५.१२	६.४०	५.१०	६.४२	५.८	६.४५	५.६	६.४७	५.३
१९.दिस.	६.३६	५.१८	६.३८	५.१६	६.४०	५.१४	६.४२	५.११	६.४५	५.९	६.४७	५.७	६.४९	५.५
२३.दिस.	६.३८	५.२०	६.४०	५.१८	६.४२	५.१५	६.४५	५.१३	६.४७	५.११	६.४९	५.९	६.५१	५.७
३०.दिस.	६.४१	५.२४	६.४३	५.२१	६.४५	५.१९	६.४७	५.१७	६.४९	५.१५	६.५२	५.१३	६.५४	५.११
०३.जन.	६.४२	५.२६	६.४४	५.२४	६.४६	५.२२	६.४८	५.२०	६.५१	५.१८	६.५३	५.१६	६.५५	५.१४

लग्न एवं दशम भाव साधन विधि

स्थानीय सूर्योदय – इस पंचांग में विभिन्न अक्षांशों पर स्थानीय मध्यम सूर्योदय सारणी में दिया गया है। जन्म स्थान के निकटतम अक्षांश पर जन्म के दिन स्थानीय मध्यम सूर्योदय एक जगह लिख लें। देशान्तर सारणी से जन्म स्थान का स्टेंडर्ड अंतर देखकर उसका स्थानीय मध्यम सूर्योदय में चिन्ह के विपरीत संस्कार करने पर उस दिन स्टेडर्ड सूर्योदय प्राप्त होगा।

इष्टकाल साधन विधि – सूर्योदय से जन्म समय तक की अवधि इष्टकाल होता है। अत: जन्म समय में से सूर्योदय घटाने पर जो घंटा मिनट बचें उनका ढ़ाई गुना करने पर घटी पल में इष्टकाल निकल आता है। (विशेष – यदि जन्म समय दोपहर १२ वजे तक का हो तो यथावत ले, यदि दोपहर १२ के वाद रात्रि १२ वजे के बीच का हो तो जन्म समय में १२ जोडकर रेलवे पद्धति जैसा लिख लें, यदि जन्म समय रात्रि १२ के वाद का हो तो उसमें २४ जोडकर फिर उसमें से सूर्योदय घटाना चाहिए)।

लग्न साधन विधि – सर्व प्रथम उपरोक्त विधि से इष्टकाल निकाल लें। इष्टकालीन सूर्य के राशि अंश के अनुसार अपने नगर ग्राम की अक्ष पट्टी की लग्न सारणी से फलांक(सूर्यफल) ग्रहण करें। अपने इष्टकाल में इस फलांक को जोड़ें। यह योगफल लग्न तनु कहलाता है। इस तनु फल को पुन: अपनी लग्न सारणी में देखें। तनु फल के ऊपर लग्न के अंश व पार्श्व में लग्न राशि ज्ञात होगी अर्थात लग्न के राशि अंश ज्ञात होंगे। सूक्ष्म कला ज्ञात करने हेतु अनुपात करें।

दशम भाव साधन – दिनमान का आधा दिनार्ध कहलाता है। इष्टकाल में से दिनार्ध घटाने पर नतकाल होता है। (यदि इष्टकाल दिनार्ध से कम हो तो, इष्टकाल में पहले ६० जोड़ें फिर उसमें से दिनार्ध घटाएं तब शेष फल ही नतकाल होगा)। यदि नतकाल ३० से कम हो तो वही पश्चिम स्पष्ट नतकाल होगा। यदि नतकाल ३० से अधिक हो तो उसे ६० में से घटाने पर पूर्व स्पष्ट नतकाल प्राप्त होगा। अव पूर्ववत् लग्न साधन की तरह नतकाल को इष्टकाल मानकर दशम भाव सारणी से दशम लग्न साधन करना चाहिये।

सरल विधि :– लग्न गणना के समय जो लग्न तनु प्राप्त होता है, उसमें से ४५ घटी जोड़ने पर दशम तनु प्राप्त होता है। दशम तनु को निम्न दशम सारणी में देखने पर उसके ऊपर अंश व पार्श्व में राशि दशम भाव की राशि प्राप्त होती है।

उदाहरण – उदाहरण के लिए दिनांक १ जनवरी को २३ अक्ष पट्टी वाले स्थान जैसे भोपाल में स्थानीय मध्यम सूर्योदय सारणी में ६.४६ लिखा है। देशान्तर सारणी में देखने पर भोपाल का स्टेडर्ड अंतर (ऋण) २०मिनट.२० सेकंड मिला। इसका चिन्ह के विपरीत संस्कार अर्थात धन करने पर भोपाल में उस दिन स्टेडर्ड सूर्योदय (६.४६ +०.२०.२०) ७ वजकर ६ मिनट २० सेकण्ड हुआ। उदाहरण के लिए दिनांक १ जनवरी को रात्रि ११.५५ पर जन्म समय है। रेलवे जैसा बनाने पर जन्म समय २३.५५ होगा। २३.५५ में से दिनांक १ जनवरी का सूर्योदय ७.६.२० घटाने पर शेष १६.४८.४० घंटा मिनट में इष्टकाल होगा। इसका ढ़ाई गुना करने पर ४२ घटी १ पल इष्टकाल होगा। १ जनवरी को पंचांग में स्पष्ट सूर्य धनु राशि के अंश १६ लिखे हैं। २३ अक्ष पट्टी वाली लग्न सारणी में धनु राशि के सामने एवं १६ अंश के नीचे सूर्य फल ४८.३९ लिखा मिला, इसमें इष्टकाल जोड़ने पर ९०.४० तनुफल ६० से ज्यादा होने से उसमें से ६० घटाने पर ३०.४० हुए। ३०.४० को पुन: लग्न सारणी में देखने पर कन्या राशि के सामने ९ अंश के नीचे न्यूनतम निकटतम सूर्य फल मिला, इसलिए लग्न कन्या राशि के ९ अंश हुई।

दशम भाव के लिए ३०.४० में ४५ जोड़ने पर ७५.४० हुए, यह ६० से अधिक होने से इसमें से ६० घटाने पर १५.४० हुए। दशम भाव सारणी में मिथुन राशि के सामने १० अंश के नीचे न्यूनतम् निकटतम् मान १५.३३ होने से दशम भाव के राशि अंश २.१० हुए।

दशम भाव सारणी (भूमंडल के समस्त स्थानों के लिए)

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
मेष ०	३ ३२	३ ४१	३ ५१	४ ०	४ १०	४ १९	४ २९	४ ३८	४ ४८	४ ५७	५ ७	५ १७	५ २६	५ ३६	५ ४६
वृष १	८ २५	८ ३५	८ ४५	८ ५६	९ ६	९ १६	९ २७	९ ३७	९ ४८	९ ५८	१० ९	१० १९	१० ३०	१० ४०	१० ५१
मिथुन २	१३ ४४	१३ ५४	१४ ५	१४ १६	१४ २७	१४ ३८	१४ ४९	१५ ०	१५ ११	१५ २२	१५ ३३	१५ ४४	१५ ५५	१६ ६	१६ १७
कर्क ३	१९ ९	१९ २०	१९ ३१	१९ ४१	१९ ५२	२० २	२० १३	२० २३	२० ३३	२० ४४	२० ५४	२१ ५	२१ १५	२१ २५	२१ ३५
सिंह ४	२४ १५	२४ २४	२४ ३४	२४ ४४	२४ ५३	२५ ३	२५ १२	२५ २२	२५ ३२	२५ ४१	२५ ५०	२५ ६०	२६ ९	२६ १९	२६ २८
कन्या ५	२८ ५६	२९ ५	२९ १४	२९ २४	२९ ३३	२९ ४२	२९ ५१	३० ०	३० ९	३० १८	३० २८	३० ३७	३० ४६	३० ५५	३१ ४
तुला ६	३३ ३२	३३ ४१	३३ ५१	३४ ०	३४ १०	३४ १९	३४ २९	३४ ३८	३४ ४८	३४ ५७	३५ ७	३५ १७	३५ २६	३५ ३६	३५ ४६
वृश्चि ७	३८ २५	३८ ३५	३८ ४५	३८ ५६	३९ ६	३९ १६	३९ २७	३९ ३७	३९ ४८	३९ ५८	४० ९	४० १९	४० ३०	४० ४०	४० ५१
धनु ८	४३ ४४	४३ ५४	४४ ५	४४ १६	४४ २७	४४ ३८	४४ ४९	४५ ०	४५ ११	४५ २२	४५ ३३	४५ ४४	४५ ५५	४६ ६	४६ १७
मकर ९	४९ ९	४९ २०	४९ ३१	४९ ४१	४९ ५२	५० २	५० १३	५० २३	५० ३३	५० ४४	५० ५४	५१ ५	५१ १५	५१ २५	५१ ३५
कुम्भ १०	५४ १५	५४ २४	५४ ३४	५४ ४४	५४ ५३	५५ ३	५५ १२	५५ २२	५५ ३२	५५ ४१	५५ ५०	५५ ६०	५६ ९	५६ १९	५६ २८
मीन ११	५८ ५६	५९ ५	५९ १४	५९ २४	५९ ३३	५९ ४२	५९ ५१	० ०	० ९	० १८	० २८	० ३७	० ४६	० ५५	१ ४
अंश ->	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४

१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	अंश
५ ५५	६ ५	६ १५	६ २५	६ ३५	६ ४४	६ ५४	७ ४	७ १४	७ २४	७ ३४	७ ४४	७ ५४	८ ५	८ १५	मेष
११ २	११ १२	११ २३	११ ३४	११ ४४	११ ५५	१२ ६	१२ १७	१२ २७	१२ ३८	१२ ४९	१३ ०	१३ ११	१३ २२	१३ ३३	वृष
१६ २८	१६ ३८	१६ ४९	१७ ०	१७ ११	१७ २२	१७ ३३	१७ ४४	१७ ५४	१८ ५	१८ १६	१८ २७	१८ ३७	१८ ४८	१८ ५९	मिथुन
२१ ४५	२१ ५६	२२ ६	२२ १६	२२ २६	२२ ३६	२२ ४६	२२ ५६	२३ ६	२३ १६	२३ २६	२३ ३६	२३ ४५	२३ ५५	२४ ५	कर्क
२६ ३८	२६ ४७	२६ ५६	२७ ५	२७ १५	२७ २४	२७ ३३	२७ ४३	२७ ५२	२८ १	२८ १०	२८ १९	२८ २९	२८ ३८	२८ ४७	सिंह
३१ १३	३१ २२	३१ ३२	३१ ४१	३१ ५०	३१ ५९	३२ ८	३२ १८	३२ २७	३२ ३६	३२ ४५	३२ ५५	३३ ४	३३ १३	३३ २३	कन्या
३५ ५५	३६ ५	३६ १५	३६ २५	३६ ३५	३६ ४४	३६ ५४	३७ ४	३७ १४	३७ २४	३७ ३४	३७ ४४	३७ ५४	३८ ५	३८ १५	तुला
४१ २	४१ १२	४१ २३	४१ ३४	४१ ४४	४१ ५५	४२ ६	४२ १७	४२ २७	४२ ३८	४२ ४९	४३ ०	४३ ११	४३ २२	४३ ३३	वृश्चि
४६ २८	४६ ३८	४६ ४९	४७ ०	४७ ११	४७ २२	४७ ३३	४७ ४४	४७ ५४	४८ ५	४८ १६	४८ २७	४८ ३७	४८ ४८	४८ ५९	धनु
५१ ४५	५१ ५६	५२ ६	५२ १६	५२ २६	५२ ३६	५२ ४६	५२ ५६	५३ ६	५३ १६	५३ २६	५३ ३६	५३ ४५	५३ ५५	५४ ५	मकर
५६ ३८	५६ ४७	५६ ५६	५७ ५	५७ १५	५७ २४	५७ ३३	५७ ४३	५७ ५२	५८ १	५८ १०	५८ १९	५८ २९	५८ ३८	५८ ४७	कुम्भ
१ १३	१ २२	१ ३२	१ ४१	१ ५०	१ ५९	२ ८	२ १८	२ २७	२ ३६	२ ४५	२ ५५	३ ४	३ १३	३ २३	मीन
१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	अंश

लग्न सारणी २०। ३० अक्षांश (अक्ष पट्टी २० पर स्थित समस्त ग्रामों नगरों के लिए उपयोगी)

	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
मेष ०	३ ५	३ १३	३ २१	३ २९	३ ३७	३ ४५	३ ५४	४ २	४ १०	४ १८	४ २६	४ ३५	४ ४३	४ ५१	४ ६०
वृष	७ २०	७ २९	७ ३९	७ ४८	७ ५७	८ ७	८ १६	८ २६	८ ३५	८ ४५	८ ५५	९ ४	९ १४	९ २४	९ ३४
मिथुन	१२ १९	१२ ३०	१२ ४१	१२ ५२	१३ २	१३ १३	१३ २४	१३ ३५	१३ ४६	१३ ५७	१४ ८	१४ १९	१४ ३०	१४ ४२	१४ ५३
कर्क	१७ ५४	१८ ५	१८ १७	१८ २८	१८ ३९	१८ ५१	१९ २	१९ १३	१९ २५	१९ ३६	१९ ४७	१९ ५९	२० १०	२० २१	२० ३३
सिंह	२३ ३१	२३ ४२	२३ ५४	२४ ५	२४ १५	२४ २६	२४ ३७	२४ ४८	२४ ५९	२५ १०	२५ २१	२५ ३२	२५ ४३	२५ ५४	२६ ४
कन्या	२८ ५६	२९ ७	२९ १७	२९ २८	२९ ३९	२९ ४९	३० ०	३० ११	३० २१	३० ३२	३० ४३	३० ५३	३१ ४	३१ १५	३१ २५
तुला	३४ १७	३४ २८	३४ ३९	३४ ५०	३५ १	३५ १२	३५ २३	३५ ३४	३५ ४५	३५ ५६	३६ ७	३६ १८	३६ २९	३६ ४०	३६ ५१
वृश्चिक	३९ ५०	४० १	४० १३	४० २४	४० ३५	४० ४७	४० ५८	४१ ९	४१ २१	४१ ३२	४१ ४३	४१ ५५	४२ ६	४२ १८	४२ २९
धनु	४५ ३०	४५ ४१	४५ ५२	४६ ३	४६ १४	४६ २५	४६ ३६	४६ ४७	४६ ५८	४७ ९	४७ १९	४७ ३०	४७ ४१	४७ ५२	४८ २
मकर	५० ४६	५० ५६	५१ ५	५१ १५	५१ २५	५१ ३४	५१ ४४	५१ ५३	५२ ३	५२ १२	५२ २१	५२ ३१	५२ ४०	५२ ४९	५२ ५८
कुंभ	५५ १७	५५ २५	५५ ३४	५५ ४२	५५ ५०	५५ ५८	५६ ६	५६ १५	५६ २३	५६ ३१	५६ ३९	५६ ४७	५६ ५५	५७ ३	५७ १०
मीन	५९ १४	५९ २२	५९ ३०	५९ ३७	५९ ४५	५९ ५२	० ०	० ८	० १५	० २३	० ३०	० ३८	० ४६	० ५३	१ १

	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष ०	५ ९	५ १७	५ २५	५ ३४	५ ४२	५ ५१	५ ६०	६ ८	६ १७	६ २६	६ ३५	६ ४४	६ ५३	७ २	७ ११
वृष	९ ४४	९ ५४	१० ४	१० १४	१० २४	१० ३४	१० ४५	१० ५५	११ ५	११ १६	११ २६	११ ३७	११ ४७	११ ५८	१२ ९
मिथुन	१५ ४	१५ १५	१५ २६	१५ ३८	१५ ४९	१६ ०	१६ १२	१६ २३	१६ ३४	१६ ४६	१६ ५७	१७ ८	१७ २०	१७ ३१	१७ ४२
कर्क	२० ४४	२० ५५	२१ ७	२१ १८	२१ २९	२१ ४०	२१ ५१	२२ ३	२२ १४	२२ २५	२२ ३६	२२ ४७	२२ ५८	२३ ९	२३ २०
सिंह	२६ १५	२६ २६	२६ ३७	२६ ४८	२६ ५८	२७ ९	२७ २०	२७ ३१	२७ ४१	२७ ५२	२८ ३	२८ १३	२८ २४	२८ ३५	२८ ४५
कन्या	३१ ३६	३१ ४७	३१ ५७	३२ ८	३२ १९	३२ ३०	३२ ४०	३२ ५१	३३ २	३३ १२	३३ २३	३३ ३४	३३ ४५	३३ ५६	३४ ६
तुला	३७ २	३७ १३	३७ २४	३७ ३५	३७ ४६	३७ ५७	३८ ९	३८ २०	३८ ३१	३८ ४२	३८ ५४	३९ ५	३९ १६	३९ २७	३९ ३९
वृश्चिक	४२ ४०	४२ ५२	४३ ३	४३ १४	४३ २६	४३ ३७	४३ ४८	४३ ६०	४४ ११	४४ २२	४४ ३४	४४ ४५	४४ ५६	४५ ७	४५ १८
धनु	४८ १३	४८ २३	४८ ३४	४८ ४४	४८ ५५	४९ ५	४९ १५	४९ २६	४९ ३६	४९ ४६	४९ ५६	५० ६	५० १६	५० २६	५० ३६
मकर	५३ ७	५३ १६	५३ २५	५३ ३४	५३ ४३	५३ ५२	५४ ०	५४ ९	५४ १८	५४ २६	५४ ३५	५४ ४३	५४ ५२	५५ ०	५५ ९
कुंभ	५७ १८	५७ २६	५७ ३४	५७ ४२	५७ ५०	५७ ५७	५८ ५	५८ १३	५८ २१	५८ २८	५८ ३६	५८ ४४	५८ ५१	५८ ५९	५९ ७
मीन	१ ९	१ १६	१ २४	१ ३२	१ ३९	१ ४७	१ ५५	२ ३	२ १०	२ १८	२ २६	२ ३४	२ ४२	२ ५०	२ ५७

लग्न सारणी २१। ३० अक्षांश (अक्ष पट्टी २१ पर स्थित समस्त ग्रामों नगरों के लिए उपयोगी)

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष ०	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७
	४	११	१९	२७	३५	४३	५१	५९	७	१६	२४	३२	४०	४८	५७	५	१४	२२	३०	३९	४८	५६	५	१४	२२	३१	४०	४९	५८	७
वृष	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२
	१६	२५	३५	४४	५३	२	१२	२१	३१	४०	५०	६०	१०	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	४०	५०	०	११	२१	३२	४२	५३	३
मिथुन	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७
	१४	२५	३६	४६	५७	८	१९	३०	४१	५२	३	१४	२५	३७	४८	५९	१०	२१	३३	४४	५५	७	१८	२९	४१	५२	४	१५	२६	३८
कर्क	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३
	४९	१	१२	२३	३५	४६	५८	९	२१	३२	४३	५५	६	१८	२९	४०	५२	३	१४	२५	३७	४८	५९	११	२२	३३	४४	५५	६	१८
सिंह	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
	२९	४०	५१	२	१३	२४	३५	४६	५७	८	१९	३०	४१	५२	३	१४	२४	३५	४६	५७	८	१९	२९	४०	५१	२	१३	२३	३४	४५
कन्या	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४
	५६	६	१७	२८	३९	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३६	४७	५७	८
तुला	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९
	१९	३०	४१	५२	३	१४	२५	३६	४७	५८	९	२०	३१	४३	५४	५	१६	२७	३८	५०	१	१२	२३	३५	४६	५७	९	२०	३१	४३
वृश्चिक	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५
	५४	५	१७	२८	४०	५१	२	१४	२५	३७	४८	६०	११	२२	३४	४५	५७	८	१९	३१	४२	५४	५	१६	२७	३९	५०	१	१२	२४
धनु	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०
	३५	४६	५७	८	१९	३०	४१	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	७	१८	२८	३९	४९	६०	१०	२०	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१
मकर	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५
	५१	०	१०	२०	२९	३९	४८	५८	७	१६	२६	३५	४४	५३	२	११	२०	२९	३८	४६	५५	४	१३	२१	३०	३८	४७	५५	३	१२
कुंभ	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
	२०	२८	३६	४५	५३	१	९	१७	२५	३३	४१	४९	५७	४	१२	२०	२८	३६	४३	५१	५९	६	१४	२२	२९	३७	४५	५२	६०	७
मीन	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२
	१५	२२	३०	३७	४५	५३	०	८	१५	२३	३०	३८	४५	५३	०	८	१६	२३	३१	३८	४६	५४	१	९	१७	२५	३२	४०	४८	५६

लग्न सारणी २३। ३० अक्षांश (अक्ष पट्टी २३ पर स्थित समस्त ग्रामों नगरों के लिए उपयोगी)

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष ०	२	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६
	६०	७	१५	२३	३१	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४२	५१	५९	७	१५	२४	३२	४१	४९	५८	६	१५	२४	३२	४१	५०	५९
वृष	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११
	८	१७	२६	३५	४४	५४	३	१२	२२	३१	४१	५०	६०	१०	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	४०	५०	०	११	२१	३२	४२	५३
मिथुन	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७
	४	१४	२५	३६	४७	५७	८	१९	३०	४१	५२	४	१५	२६	३७	४८	६०	११	२२	३४	४५	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८
कर्क	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३
	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	०	१२	२३	३५	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१८	२९	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	०	१२
सिंह	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
	२३	३४	४५	५७	८	१९	३०	४१	५२	४	१५	२६	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४३	५४	५	१६	२७	३८	४९	६०	११	२२	३३	४४
कन्या	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
	५५	५	१६	२७	३८	४९	०	११	२२	३३	४४	५५	५	१६	२७	३८	४९	०	११	२२	३३	४४	५५	६	१७	२८	३९	५०	१	१२
तुला	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९
	२३	३४	४५	५६	८	१९	३०	४१	५२	३	१५	२६	३७	४८	६०	११	२२	३४	४५	५६	८	१९	३१	४२	५३	५	१६	२८	३९	५१
वृश्चिक	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५
	२	१४	२५	३७	४८	६०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	०	१२	२३	३४
धनु	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०
	४५	५६	८	१९	३०	४१	५२	३	१३	२४	३५	४६	५७	७	१८	२८	३९	४९	६०	१०	२०	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५०
मकर	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५
	०	१०	१९	२९	३८	४८	५७	६	१६	२५	३४	४३	५२	१	१०	१९	२८	३६	४५	५४	२	११	१९	२८	३६	४५	५३	१	९	१८
कुंभ	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
	२६	३४	४२	५०	५८	६	१४	२२	२९	३७	४५	५३	१	८	१६	२३	३१	३९	४६	५४	१	९	१६	२४	३१	३९	४६	५४	१	८
मीन	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
	१६	२३	३१	३८	४५	५३	०	७	१५	२२	२९	३७	४४	५२	५९	६	१४	२१	२९	३६	४४	५१	५९	६	१४	२१	२९	३७	४४	५२

लग्न सारणी २२। ३० अक्षांश (अक्ष पट्टी २२ पर स्थित समस्त ग्रामों नगरों के लिए उपयोगी)

श्री राशि	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष ०	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७
	२	९	१७	२५	३३	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३७	४५	५४	२	१०	१९	२७	३६	४४	५३	२	१०	१९	२८	३६	४५	५४	३
वृष	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११
	१२	२१	३०	४०	४९	५८	७	१७	२६	३६	४५	५५	५	१५	२४	३४	४४	५४	४	१४	२४	३५	४५	५५	६	१६	२७	३७	४८	५८
मिथुन	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७
	९	२०	३०	४१	५२	३	१४	२५	३६	४७	५८	९	२०	३१	४३	५४	५	१६	२८	३९	५०	२	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३३
कर्क	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३
	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५१	२	१३	२५	३६	४८	५९	१०	२२	३३	४५	५६	७	१८	३०	४१	५२	३	१५
सिंह	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
	२६	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४४	५५	६	१७	२८	३९	५०	१	१२	२३	३४	४५	५६	७	१७	२८	३९	५०	१	१२	२३	३३	४४
कन्या	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४
	५५	६	१७	२८	३८	४९	०	११	२२	३३	४३	५४	५	१६	२७	३८	४८	५९	१०	२१	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५९	१०
तुला	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९
	२१	३२	४३	५४	५	१६	२८	३९	५०	१	१२	२३	३४	४६	५७	८	१९	३०	४२	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१२	२४	३५	४७
वृश्चिक	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५
	५८	१०	२१	३२	४४	५५	७	१८	३०	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२१	३३	४४	५५	६	१८	२९
धनु	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०
	४०	५१	२	१३	२४	३५	४६	५७	८	१९	३०	४१	५१	२	१३	२३	३४	४४	५५	५	१५	२५	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६
मकर	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५
	५५	५	१५	२४	३४	४३	५३	२	११	२१	३०	३९	४८	५७	६	१५	२४	३३	४१	५०	५९	७	१६	२४	३३	४१	५०	५८	६	१५
कुंभ	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
	२३	३१	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३५	४३	५१	५९	६	१४	२२	२९	३७	४५	५२	०	८	१५	२३	३०	३८	४५	५३	०	८
मीन	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२
	१५	२३	३०	३८	४५	५३	०	८	१५	२२	३०	३७	४५	५२	६०	७	१५	२२	३०	३७	४५	५२	०	८	१५	२३	३१	३८	४६	५४

लग्न सारणी २४। ३० अक्षांश (अक्ष पट्टी २४ पर स्थित समस्त ग्रामों नगरों के लिए उपयोगी)

राशि	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष ०	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६
	५८	५	१३	२१	२८	३६	४४	५२	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५६	४	१२	२०	२९	३७	४५	५४	२	११	२०	२८	३७	४६	५५
वृष	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११
	४	१३	२२	३१	४०	४९	५८	८	१७	२६	३६	४५	५५	५	१४	२४	३४	४४	५४	४	१४	२४	३४	४५	५५	५	१६	२६	३७	४७
मिथुन	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७
	५८	९	२०	३०	४१	५२	३	१४	२५	३६	४७	५८	९	२१	३२	४३	५४	६	१७	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	०	१२	२३
कर्क	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३
	३५	४६	५८	९	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	०	१२	२३	३४	४६	५७	९
सिंह	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
	२०	३१	४३	५४	५	१६	२८	३९	५०	१	१२	२४	३५	४६	५७	८	१९	३१	४२	५३	४	१५	२६	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४३
कन्या	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
	५४	५	१६	२७	३८	४९	०	११	२२	३३	४४	५५	६	१७	२८	३९	५०	१	१२	२३	३४	४५	५६	७	१८	३०	४१	५२	३	१४
तुला	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९
	२५	३६	४८	५९	१०	२१	३२	४४	५५	६	१८	२९	४०	५२	३	१४	२६	३७	४८	६०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५
वृश्चिक	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५
	६	१८	३०	४१	५३	४	१६	२७	३९	५१	२	१४	२५	३७	४८	६०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५४	६	१७	२८	३९
धनु	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०
	५१	२	१३	२४	३५	४६	५७	८	१९	३०	४१	५१	२	१३	२३	३४	४४	५५	५	१५	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५५
मकर	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५
	५	१५	२४	३४	४३	५२	२	११	२०	२९	३८	४७	५६	५	१४	२३	३२	४०	४९	५८	६	१५	२३	३१	४०	४८	५६	४	१३	२१
कुंभ	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
	२९	३७	४५	५३	१	८	१६	२४	३२	४०	४७	५५	३	१०	१८	२५	३३	४०	४८	५५	३	१०	१८	२५	३२	४०	४७	५४	२	९
मीन	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
	१६	२४	३१	३८	४५	५३	०	७	१५	२२	२९	३६	४४	५१	५८	६	१३	२०	२८	३५	४३	५०	५७	५	१२	२०	२७	३५	४२	५०

लग्न सारणी २५ । ३० अक्षांश (अक्ष पट्टी २५ पर स्थित समस्त ग्रामों नगरों के लिए उपयोगी)

राशि	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष ०	२ ५५	३ ३	३ ११	३ १८	३ २६	३ ३४	३ ४१	३ ४९	३ ५७	४ ५	४ १२	४ २०	४ २८	४ ३६	४ ४४	४ ५२	५ १	५ ९	५ १७	५ २५	५ ३३	५ ४२	५ ५०	५ ५९	६ ७	६ १६	६ २४	६ ३३	६ ४२	६ ५१
वृष	६ ५९	७ ८	७ १७	७ २६	७ ३५	७ ४४	७ ५४	८ ३	८ १२	८ २२	८ ३१	८ ४१	८ ५०	८ ६०	९ ९	९ १९	९ २९	९ ३९	९ ४९	९ ५९	१० ९	१० १९	१० २९	१० ३९	१० ५०	११ ०	११ १०	११ २१	११ ३१	११ ४२
मिथुन	११ ५३	१२ ३	१२ १४	१२ २५	१२ ३६	१२ ४६	१२ ५७	१३ ८	१३ १९	१३ ३०	१३ ४२	१३ ५३	१४ ४	१४ १५	१४ २६	१४ ३८	१४ ४९	१५ ०	१५ १२	१५ २३	१५ ३४	१५ ४६	१५ ५७	१६ ९	१६ २०	१६ ३२	१६ ४३	१६ ५५	१७ ७	१७ १८
कर्क	१७ ३०	१७ ४१	१७ ५३	१८ ५	१८ १६	१८ २८	१८ ४०	१८ ५१	१९ ३	१९ १४	१९ २६	१९ ३८	१९ ४९	२० १	२० १३	२० २४	२० ३६	२० ४७	२० ५९	२१ १०	२१ २२	२१ ३४	२१ ४५	२१ ५७	२२ ८	२२ २०	२२ ३१	२२ ४३	२२ ५४	२३ ५
सिंह	२३ १७	२३ २८	२३ ४०	२३ ५१	२४ २	२४ १४	२४ २५	२४ ३६	२४ ४८	२४ ५९	२५ १०	२५ २२	२५ ३३	२५ ४४	२५ ५५	२६ ६	२६ १८	२६ २९	२६ ४०	२६ ५१	२७ २	२७ १४	२७ २५	२७ ३६	२७ ४७	२७ ५८	२८ ९	२८ २०	२८ ३१	२८ ४२
कन्या	२८ ५४	२९ ५	२९ १६	२९ २७	२९ ३८	२९ ४९	३० ०	३० ११	३० २२	३० ३३	३० ४४	३० ५५	३१ ६	३१ १८	३१ २९	३१ ४०	३१ ५१	३२ २	३२ १३	३२ २४	३२ ३५	३२ ४७	३२ ५८	३३ ९	३३ २०	३३ ३१	३३ ४२	३३ ५४	३४ ५	३४ १६
तुला	३४ २७	३४ ३८	३४ ५०	३५ १	३५ १२	३५ २४	३५ ३५	३५ ४६	३५ ५८	३६ ९	३६ २०	३६ ३२	३६ ४३	३६ ५५	३७ ६	३७ १८	३७ २९	३७ ४०	३७ ५२	३८ ३	३८ १५	३८ २७	३८ ३८	३८ ५०	३९ १	३९ १३	३९ २४	३९ ३६	३९ ४८	३९ ५९
वृश्चिक	४० ११	४० २२	४० ३४	४० ४६	४० ५७	४१ ९	४१ २१	४१ ३२	४१ ४४	४१ ५५	४२ ७	४२ १९	४२ ३०	४२ ४२	४२ ५३	४३ ५	४३ १७	४३ २८	४३ ४०	४३ ५१	४४ ३	४४ १४	४४ २६	४४ ३७	४४ ४८	४४ ६०	४५ ११	४५ २२	४५ ३४	४५ ४५
धनु	४५ ५६	४६ ७	४६ १८	४६ ३०	४६ ४१	४६ ५२	४७ ३	४७ १४	४७ २४	४७ ३५	४७ ४६	४७ ५७	४८ ७	४८ १८	४८ २९	४८ ३९	४८ ५०	४९ ०	४९ १०	४९ २१	४९ ३१	४९ ४१	४९ ५१	५० १	५० ११	५० २१	५० ३१	५० ४१	५० ५१	५१ ०
मकर	५१ १०	५१ १९	५१ २९	५१ ३८	५१ ४८	५१ ५७	५२ ६	५२ १६	५२ २५	५२ ३४	५२ ४३	५२ ५२	५३ १	५३ ९	५३ १८	५३ २७	५३ ३६	५३ ४४	५३ ५३	५४ १	५४ १०	५४ १८	५४ २७	५४ ३५	५४ ४३	५४ ५१	५४ ६०	५५ ८	५५ १६	५५ २४
कुंभ	५५ ३२	५५ ४०	५५ ४८	५५ ५५	५६ ३	५६ ११	५६ १९	५६ २६	५६ ३४	५६ ४२	५६ ४९	५६ ५७	५७ ५	५७ १२	५७ २०	५७ २७	५७ ३५	५७ ४२	५७ ४९	५७ ५७	५८ ४	५८ ११	५८ १९	५८ २६	५८ ३३	५८ ४१	५८ ४८	५८ ५५	५९ २	५९ १०
मीन	५९ १७	५९ २४	५९ ३१	५९ ३८	५९ ४६	५९ ५३	० ०	० ७	० १४	० २२	० २९	० ३६	० ४३	० ५०	० ५८	१ ५	१ १२	१ १९	१ २७	१ ३४	१ ४१	१ ४९	१ ५६	२ ३	२ ११	२ १८	२ २६	२ ३३	२ ४०	२ ४८

लग्न सारणी २७ । ३० अक्षांश (अक्ष पट्टी २७ पर स्थित समस्त ग्रामों नगरों के लिए उपयोगी)

राशि	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष ०	२ ५१	२ ५९	३ ६	३ १३	३ २१	३ २८	३ ३६	३ ४४	३ ५१	३ ५९	४ ७	४ १४	४ २२	४ ३०	४ ३८	४ ४६	४ ५४	५ २	५ १०	५ १८	५ २६	५ ३४	५ ४२	५ ५१	५ ५९	६ ८	६ १६	६ २५	६ ३३	६ ४२
वृष	६ ५१	६ ५९	७ ८	७ १७	७ २६	७ ३५	७ ४४	७ ५३	८ २	८ १२	८ २१	८ ३०	८ ४०	८ ४९	८ ५९	९ ९	९ १८	९ २८	९ ३८	९ ४८	९ ५८	१० ८	१० १८	१० २८	१० ३९	१० ४९	१० ५९	११ १०	११ २०	११ ३१
मिथुन	११ ४१	११ ५२	१२ ३	१२ १३	१२ २४	१२ ३५	१२ ४६	१२ ५७	१३ ८	१३ १९	१३ ३०	१३ ४१	१३ ५३	१४ ४	१४ १५	१४ २६	१४ ३८	१४ ४९	१५ १	१५ १२	१५ २३	१५ ३५	१५ ४७	१५ ५८	१६ १०	१६ २१	१६ ३३	१६ ४५	१६ ५६	१७ ८
कर्क	१७ २०	१७ ३१	१७ ४३	१७ ५५	१८ ६	१८ १८	१८ ३०	१८ ४२	१८ ५३	१९ ५	१९ १७	१९ २९	१९ ४०	१९ ५२	२० ४	२० १६	२० २७	२० ३९	२० ५१	२१ ३	२१ १४	२१ २६	२१ ३८	२१ ४९	२२ १	२२ १३	२२ २४	२२ ३६	२२ ४७	२२ ५९
सिंह	२३ ११	२३ २२	२३ ३४	२३ ४५	२३ ५७	२४ ८	२४ २०	२४ ३१	२४ ४३	२४ ५४	२५ ६	२५ १७	२५ २९	२५ ४०	२५ ५१	२६ ३	२६ १४	२६ २६	२६ ३७	२६ ४८	२६ ६०	२७ ११	२७ २२	२७ ३४	२७ ४५	२७ ५६	२८ ७	२८ १९	२८ ३०	२८ ४१
कन्या	२८ ५२	२९ ४	२९ १५	२९ २६	२९ ३८	२९ ४९	३० ०	३० ११	३० २३	३० ३४	३० ४५	३० ५६	३१ ८	३१ १९	३१ ३०	३१ ४१	३१ ५३	३२ ४	३२ १५	३२ २७	३२ ३८	३२ ४९	३३ ०	३३ १२	३३ २३	३३ ३५	३३ ४६	३३ ५७	३४ ९	३४ २०
तुला	३४ ३१	३४ ४३	३४ ५४	३५ ६	३५ १७	३५ २९	३५ ४०	३५ ५२	३६ ३	३६ १५	३६ २६	३६ ३८	३६ ४९	३७ १	३७ १३	३७ २४	३७ ३६	३७ ४७	३७ ५९	३८ ११	३८ २२	३८ ३४	३८ ४६	३८ ५७	३९ ९	३९ २१	३९ ३३	३९ ४४	३९ ५६	४० ८
वृश्चिक	४० २०	४० ३१	४० ४३	४० ५५	४१ ७	४१ १८	४१ ३०	४१ ४२	४१ ५४	४२ ५	४२ १७	४२ २९	४२ ४०	४२ ५२	४३ ४	४३ १५	४३ २७	४३ ३९	४३ ५०	४४ २	४४ १४	४४ २५	४४ ३७	४४ ४८	४४ ६०	४५ ११	४५ २२	४५ ३४	४५ ४५	४५ ५६
धनु	४६ ८	४६ १९	४६ ३०	४६ ४१	४६ ५२	४७ ३	४७ १४	४७ २५	४७ ३६	४७ ४७	४७ ५७	४८ ८	४८ १९	४८ २९	४८ ४०	४८ ५०	४९ १	४९ ११	४९ २१	४९ ३२	४९ ४२	४९ ५२	५० २	५० १२	५० २२	५० ३२	५० ४२	५० ५१	५१ १	५१ ११
मकर	५१ २०	५१ ३०	५१ ३९	५१ ४८	५१ ५८	५२ ७	५२ १६	५२ २५	५२ ३४	५२ ४३	५२ ५२	५३ १	५३ ९	५३ १८	५३ २७	५३ ३५	५३ ४४	५३ ५२	५४ १	५४ ९	५४ १८	५४ २६	५४ ३४	५४ ४२	५४ ५०	५४ ५८	५५ ६	५५ १४	५५ २२	५५ ३०
कुंभ	५५ ३८	५५ ४६	५५ ५३	५६ १	५६ ९	५६ १६	५६ २४	५६ ३२	५६ ३९	५६ ४७	५६ ५४	५७ १	५७ ९	५७ १६	५७ २३	५७ ३१	५७ ३८	५७ ४५	५७ ५३	५७ ६०	५८ ७	५८ १४	५८ २१	५८ २८	५८ ३५	५८ ४३	५८ ५०	५८ ५७	५९ ४	५९ ११
मीन	५९ १८	५९ २५	५९ ३२	५९ ३९	५९ ४६	५९ ५३	० ०	० ७	० १४	० २१	० २८	० ३५	० ४२	० ४९	० ५६	१ ३	१ १०	१ १७	१ २५	१ ३२	१ ३९	१ ४६	१ ५३	२ ०	२ ८	२ १५	२ २२	२ २९	२ ३७	२ ४४

लग्न सारणी २६ । ३० अक्षांश (अक्ष पट्टी २६ पर स्थित समस्त ग्रामों नगरों के लिए उपयोगी)

राशि	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष ०	२ ५४	३ १	३ ९	३ १७	३ २४	३ ३२	३ ३९	३ ४७	३ ५५	४ ३	४ १०	४ १८	४ २६	४ ३४	४ ४२	४ ५०	४ ५८	५ ६	५ १४	५ २३	५ ३१	५ ३९	५ ४७	५ ५६	६ ४	६ १३	६ २१	६ ३०	६ ३९	६ ४७
वृष	६ ५६	७ ५	७ १४	७ २३	७ ३२	७ ४१	७ ५०	७ ६०	८ ९	८ १८	८ २८	८ ३७	८ ४७	८ ५६	९ ६	९ १५	९ २५	९ ३५	९ ४५	९ ५५	१० ५	१० १५	१० २५	१० ३५	१० ४६	१० ५६	११ ६	११ १७	११ २७	११ ३८
मिथुन	११ ४९	११ ५९	१२ १०	१२ २१	१२ ३२	१२ ४२	१२ ५३	१३ ४	१३ १५	१३ २६	१३ ३८	१३ ४९	१३ ६०	१४ ११	१४ २२	१४ ३४	१४ ४५	१४ ५६	१५ ८	१५ १९	१५ ३१	१५ ४२	१५ ५४	१६ ५	१६ १७	१६ २८	१६ ४०	१६ ५१	१७ ३	१७ १५
कर्क	१७ २६	१७ ३८	१७ ५०	१८ १	१८ १३	१८ २५	१८ ३६	१८ ४८	१८ ६०	१९ ११	१९ २३	१९ ३५	१९ ४६	१९ ५८	२० १०	२० २१	२० ३३	२० ४४	२० ५६	२१ ८	२१ १९	२१ ३१	२१ ४२	२१ ५४	२२ ६	२२ १७	२२ २९	२२ ४०	२२ ५२	२३ ३
सिंह	२३ १५	२३ २६	२३ ३८	२३ ४९	२४ ०	२४ १२	२४ २३	२४ ३५	२४ ४६	२४ ५७	२५ ९	२५ २०	२५ ३१	२५ ४३	२५ ५४	२६ ५	२६ १७	२६ २८	२६ ३९	२६ ५०	२७ १	२७ १३	२७ २४	२७ ३५	२७ ४६	२७ ५७	२८ ९	२८ २०	२८ ३१	२८ ४२
कन्या	२८ ५३	२९ ४	२९ १६	२९ २७	२९ ३८	२९ ४९	३० ०	३० ११	३० २२	३० ३४	३० ४५	३० ५६	३१ ७	३१ १८	३१ २९	३१ ४०	३१ ५२	३२ ३	३२ १४	३२ २५	३२ ३६	३२ ४८	३२ ५९	३३ १०	३३ २१	३३ ३२	३३ ४४	३३ ५५	३४ ६	३४ १८
तुला	३४ २९	३४ ४०	३४ ५२	३५ ३	३५ १४	३५ २६	३५ ३७	३५ ४८	३५ ६०	३६ ११	३६ २३	३६ ३४	३६ ४६	३६ ५७	३७ ९	३७ २०	३७ ३२	३७ ४३	३७ ५५	३८ ६	३८ १८	३८ २९	३८ ४१	३८ ५३	३९ ४	३९ १६	३९ २७	३९ ३९	३९ ५१	४० २
वृश्चिक	४० १४	४० २६	४० ३७	४० ४९	४१ १	४१ १२	४१ २४	४१ ३६	४१ ४७	४१ ५९	४२ ११	४२ २२	४२ ३४	४२ ४६	४२ ५७	४३ ९	४३ २१	४३ ३२	४३ ४४	४३ ५५	४४ ७	४४ १८	४४ ३०	४४ ४१	४४ ५३	४५ ४	४५ १५	४५ २७	४५ ३८	४५ ४९
धनु	४६ ०	४६ १२	४६ २३	४६ ३४	४६ ४५	४६ ५६	४७ ७	४७ १८	४७ २९	४७ ३९	४७ ५०	४८ १	४८ १२	४८ २२	४८ ३३	४८ ४३	४८ ५४	४९ ४	४९ १४	४९ २५	४९ ३५	४९ ४५	४९ ५५	५० ५	५० १५	५० २५	५० ३५	५० ४५	५० ५४	५१ ४
मकर	५१ १४	५१ २३	५१ ३३	५१ ४२	५१ ५१	५२ १	५२ १०	५२ १९	५२ २८	५२ ३७	५२ ४६	५२ ५५	५३ ४	५३ १३	५३ २१	५३ ३०	५३ ३९	५३ ४७	५३ ५६	५४ ४	५४ १३	५४ २१	५४ २९	५४ ३८	५४ ४६	५४ ५४	५५ २	५५ १०	५५ १८	५५ २६
कुंभ	५५ ३४	५५ ४२	५५ ५०	५५ ५८	५६ ५	५६ १३	५६ २१	५६ २८	५६ ३६	५६ ४४	५६ ५१	५६ ५९	५७ ६	५७ १४	५७ २१	५७ २८	५७ ३६	५७ ४३	५७ ५१	५७ ५८	५८ ५	५८ १२	५८ २०	५८ २७	५८ ३४	५८ ४१	५८ ४९	५८ ५६	५९ ३	५९ १०
मीन	५९ १७	५९ २४	५९ ३२	५९ ३९	५९ ४६	५९ ५३	० ०	० ७	० १४	० २१	० २९	० ३६	० ४३	० ५०	० ५७	१ ४	१ १२	१ १९	१ २६	१ ३३	१ ४०	१ ४८	१ ५५	२ २	२ १०	२ १७	२ २४	२ ३२	२ ३९	२ ४७

ॐ

लग्न सारणी २८ । ३० अक्षांश (अक्ष पट्टी २८ पर स्थित समस्त ग्रामों नगरों के लिए उपयोगी)

राशि	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष ०	२ ४९	२ ५६	३ ४	३ ११	३ १८	३ २६	३ ३३	३ ४१	३ ४८	३ ५६	४ ४	४ ११	४ १९	४ २७	४ ३४	४ ४२	४ ५०	४ ५८	५ ६	५ १४	५ २२	५ ३०	५ ३८	५ ४७	५ ५५	६ ३	६ १२	६ २०	६ २९	६ ३७
वृष	६ ४६	६ ५५	७ ३	७ १२	७ २१	७ ३०	७ ३९	७ ४८	७ ५७	८ ७	८ १६	८ २५	८ ३५	८ ४४	८ ५४	९ ३	९ १३	९ २३	९ ३३	९ ४२	९ ५२	१० २	१० १३	१० २३	१० ३३	१० ४३	१० ५३	११ ४	११ १४	११ २५
मिथुन	११ ३५	११ ४६	११ ५७	१२ ८	१२ १८	१२ २९	१२ ४०	१२ ५१	१३ २	१३ १३	१३ २४	१३ ३५	१३ ४७	१३ ५८	१४ ९	१४ २१	१४ ३२	१४ ४३	१४ ५५	१५ ६	१५ १८	१५ २९	१५ ४१	१५ ५३	१६ ४	१६ १६	१६ २७	१६ ३९	१६ ५१	१७ ३
कर्क	१७ १४	१७ २६	१७ ३८	१७ ५०	१८ १	१८ १३	१८ २५	१८ ३७	१८ ४९	१९ ०	१९ १२	१९ २४	१९ ३६	१९ ४८	१९ ६०	२० ११	२० २३	२० ३५	२० ४७	२० ५९	२१ १०	२१ २२	२१ ३४	२१ ४६	२१ ५७	२२ ९	२२ २१	२२ ३२	२२ ४४	२२ ५६
सिंह	२३ ७	२३ १९	२३ ३१	२३ ४२	२३ ५४	२४ ६	२४ १७	२४ २९	२४ ४०	२४ ५२	२५ ३	२५ १५	२५ २६	२५ ३८	२५ ४९	२६ १	२६ १२	२६ २४	२६ ३५	२६ ४७	२६ ५८	२७ १०	२७ २१	२७ ३२	२७ ४४	२७ ५५	२८ ६	२८ १८	२८ २९	२८ ४१
कन्या	२८ ५२	२९ ३	२९ १५	२९ २६	२९ ३७	२९ ४९	३० ०	३० ११	३० २३	३० ३४	३० ४५	३० ५७	३१ ८	३१ १९	३१ ३१	३१ ४२	३१ ५४	३२ ५	३२ १६	३२ २८	३२ ३९	३२ ५१	३३ २	३३ १३	३३ २५	३३ ३६	३३ ४८	३३ ५९	३४ ११	३४ २२
तुला	३४ ३४	३४ ४५	३४ ५७	३५ ८	३५ २०	३५ ३१	३५ ४३	३५ ५४	३६ ६	३६ १८	३६ २९	३६ ४१	३६ ५३	३७ ४	३७ १६	३७ २८	३७ ३९	३७ ५१	३८ ३	३८ १४	३८ २६	३८ ३८	३८ ५०	३९ २	३९ १३	३९ २५	३९ ३७	३९ ४९	४० १	४० १२
वृश्चिक	४० २४	४० ३६	४० ४८	४० ६०	४१ ११	४१ २३	४१ ३५	४१ ४७	४१ ५९	४२ १०	४२ २२	४२ ३४	४२ ४६	४२ ५७	४३ ९	४३ २१	४३ ३३	४३ ४४	४३ ५६	४४ ८	४४ १९	४४ ३१	४४ ४२	४४ ५४	४५ ५	४५ १७	४५ २८	४५ ३९	४५ ५१	४६ २
धनु	४६ १३	४६ २५	४६ ३६	४६ ४७	४६ ५८	४७ ९	४७ २०	४७ ३१	४७ ४२	४७ ५३	४८ ३	४८ १४	४८ २५	४८ ३५	४८ ४६	४८ ५६	४९ ७	४९ १७	४९ २७	४९ ३७	४९ ४८	४९ ५८	५० ८	५० १८	५० २७	५० ३७	५० ४७	५० ५७	५१ ६	५१ १६
मकर	५१ २५	५१ ३५	५१ ४४	५१ ५३	५२ ३	५२ १२	५२ २१	५२ ३०	५२ ३९	५२ ४८	५२ ५७	५३ ५	५३ १४	५३ २३	५३ ३१	५३ ४०	५३ ४८	५३ ५७	५४ ५	५४ १३	५४ २२	५४ ३०	५४ ३८	५४ ४६	५४ ५४	५५ २	५५ १०	५५ १८	५५ २६	५५ ३३
कुंभ	५५ ४१	५५ ४९	५५ ५६	५६ ४	५६ १२	५६ १९	५६ २७	५६ ३४	५६ ४२	५६ ४९	५६ ५६	५७ ४	५७ ११	५७ १८	५७ २५	५७ ३३	५७ ४०	५७ ४७	५७ ५४	५८ १	५८ ८	५८ १५	५८ २२	५८ ३०	५८ ३७	५८ ४४	५८ ५१	५८ ५८	५९ ४	५९ ११
मीन	५९ १८	५९ २५	५९ ३२	५९ ३९	५९ ४६	५९ ५३	० ०	० ७	० १४	० २१	० २८	० ३५	० ४२	० ४९	० ५६	१ ३	१ ९	१ १६	१ २३	१ ३१	१ ३८	१ ४५	१ ५२	१ ५९	२ ६	२ १३	२ २०	२ २७	२ ३५	२ ४२

जन्मकालीन नक्षत्र से शुभाशुभ विचार

मूलवास – चैत्र, श्रावण, कार्तिक एवं पौष मास में धरती पर, आषाढ, भाद्रपद, आश्विन, एवं माघ में स्वर्ग तथा वैसाख, ज्येष्ठ, मार्गशीर्ष तथा फाल्गुन मासों में मूलवास पाताल में होता है। आकाश या पाताल में वास होने पर मूल साधारण अशुभ होता है।

अभुक्त मूल विचार – ज्येष्ठान्ते चर्तुनाड़िं मूलाद्य च चतुर्थकं। जन्मस्येतिनेष्ठ काल:, अभुक्त मूलं प्रकीर्तित:॥ भावार्थ–ज्येष्ठा के अंत एवं मूल के प्रारंभ की चार–चार घड़ियां अभुक्त मूल समय होता है। अभुक्त मूल में जन्म लेने बाला बालक अत्यंत अनिष्टकारी बताया गया है। अत: विधिवत् मूल शान्ति, महामृत्युंजय जाप एवं दानादि करके सूतकान्त में ही पिता को अभुक्त मूल में जन्मे बालक का मुख देखना चाहिए।

ज्वालामुखी योग – पड़वा मूल, पांचें भरणी, आठें कृतिका, नवें रोहिणी, दस अश्रेषा सुनरे सहिया। ये नक्षत्र ज्वालामुखी कहिया।। जन्मे तो जीवे नहीं, बसे तो ऊजर होय। कामिनी पहिरे चूरियां, पुरुष विहूनी होय॥

जन्म नक्षत्र से पाद विचार –आर्द्रा से स्वाती तक १० नक्षत्र रजतपाद फल सौभाग्य। विशाखा से मूल तक ४ नक्षत्र–लोहपाद– धनहानि। पूर्वाषाढ से उत्तराभाद्रपद तक ७ नक्षत्र – ताम्रपाद– सामान्य शुभ। रेवती से मृगशिरा तक ६ नक्षत्रों में जन्म से स्वर्णपाद फल सर्व सुख होता है।

जन्म के समय मूल नक्षत्र का फल

नक्षत्र	प्रथम चरण	द्वितीय चरण	तृतीय चरण	चतुर्थ चरण	शान्ति दिन
अश्विनी	पितृकष्ट	सुख	राजपद	राज सम्मान	१२ वें
मघा	पितृकष्ट	मातृकष्ट	शुभ	संपदा	१४ वें
रेवती	राज सम्मान	राजपद	धनसुख	कष्ट	१८ वें
ज्येष्ठा	ज्येष्ठ भ्रातकष्ट	लघु भ्रातकष्ट	मातृ कष्ट	स्वयं कष्ट	२७ वें
अश्लेषा	शुभ	धननाश	मातृ कष्ट	पितृकष्ट	२७ वें
मूल	पितृकष्ट	मातृ कष्ट	धननाश	शुभ	२७ वे

जन्म लग्न से कारक – मारक ग्रह

जन्म लग्न	योग कारक	शुभ कारक	अशुभ कारक	मारक ग्रह
मेष	××	गुरु, सूर्य	श. बु. शु.	शुक्र
वृष	शनि	शनि, सूर्य	गु. शु. चं.	गुरु बुध
मिथुन	××	शुक्र	गु. मं. सू.	गुरु
कर्क	मंगल	मंग. शनि	शुक्र, चन्द्र	शनि
सिंह	××	गु.,सू.,मं.	बु. शु. श.	शनि, बुध
कन्या	बुध,शुक्र	शुक्र	गु. चं. मं.	शनि,मंग.
तुला	चंद्र,बुध	शनि, बुध	गु. सू. मं.	मंगल
वृश्चिक	सूर्य,चंद	चंद्र,गुरु	मं. बु. शु.	गु.,बु.,श.
धनु	सूर्य,बुध	शुक्र	××	शनि
मकर	शुक्र	बुध,शुक्र	गु.चं.मं.	शनि
कुंभ	मंग,शुक्र	शुक्र	गु.चं.मं.	गुरु
मीन	मंग,गुरु	चन्द्र,मंग.	श. शु.सू.बु.	शनि,बुध

ग्रह स्पष्टीकरण विधि – इस पंचांग में प्रत्येक ग्रह की दैनिक गति कलाओं में दी गई है। इष्ट घटि में ६० का गुणा कर इष्ट पलों में जोड़ने पर जो इष्ट पल प्राप्त होते हैं, उसमें ग्रह की दैनिक गति का गुणा कर ३६०० भाग देने पर जो भागफल प्राप्त होता है, वह चालन कला होता है। कलात्मक चालन को अंशादि बनाकर इस पंचांग में दिये प्रात:कालीन ग्रह में जोड़ने पर इष्टकालीन ग्रह स्पष्ट हो जाता है। यदि ग्रह वक्री हो तो चालन घटाना चाहिये।

द्वादस भाव स्पष्टीकरण विधि – वर्तमान में भाव स्पष्टीकरण की दो विधियां प्रचलित हैं। पहली विधि जैमनीय मतानुसार समान भाव विभाजन अर्थात लग्न में क्रमश: १५–१५ अंश जोड़ते चले जाने पर भाव संधि एवं भाव स्पष्ट प्राप्त होते चले जाते हैं। दूसरी विधि जो कि वर्तमान में सर्वाधिक प्रचलित है, में सभी भाव समान नहीं होते। इस पद्धति से भाव स्पष्टीकरण विधि इस प्रकार है।

(१) लग्न में से दशम भाव को घटाऐं। (२) शेष को अंश बनाकर ६ से भाग दें। लब्धि को बारी–बारी से दशम भाव में क्रमश: जोड़ते जायें तो दशम भाव संधि, एकादस भाव द्वादश संधि आदि स्पष्ट होते जायेंगे। तब चलते–चलते लग्न भाव स्पष्ट आ जाएगा। (३) पूर्व षष्ठांश को १ राशि या ३० अंश में से घटालें। शेष को क्रमश: लग्न से शुरुकर जोड़ते जायें तो लग्न से लेकर चतुर्थ भाव संधि सहित स्पष्ट हो जायेंगे। (४) शेष भावों को स्पष्ट करने के लिए इन प्राप्त स्पष्ट राशि में ६ जोड़ते जाएँ तो शेष भाव स्पष्ट हो जाते हैं। उदाहरण के लिए दशम–एकादश संधि में ६ राशि जोड़ने पर चतुर्थ–पंचम भाव संधि , एकादस भाव में ६ राशि जोड़ने पर पंचम भाव व लग्न में ६ राशि जोड़ने पर सप्तम भाव स्पष्ट होता है।

आयुश्चक्रम्

दीर्घायु:	मध्यमायु:	हीनायु:
लग्नेश: चर: अष्टमेश: चर:	लग्नेश: चर: अष्टमेश: स्थिर:	लग्नेश: चर: अष्टमेश:द्विस्वभाव:
लग्नेश: स्थिर: अष्टमेश: द्विस्वभाव:	लग्नेश: स्थिर: अष्टमेश: चर:	लग्नेश: स्थिर: अष्टमेश: स्थिर:
लग्नेश: द्विस्वभाव: अष्टमेश: स्थिर:	लग्नेश: द्विस्वभाव: अष्टमेश:द्विस्वभाव:	लग्नेश: द्विस्वभाव: अष्टमेश: चर:

उपरोक्त आयुश्चक्र में लग्नेश एवं अष्टमेश से आयु विचार लिखा गया है। यह प्रथम योग है। इसी प्रकार लग्न तथा होरा से द्वितीय योग देखना चाहिये। यदि चंद्रमा लग्न–सप्तम में हो तो लग्न–चंद्र से अन्यथा शनि तथा चंद्र से आयु विचार करना चाहिये। यह तृतीय योग है। तीनों योगों से भिन्न–भिन्न आयु आने पर निम्न चक्र से स्पष्ट आयु एवं आयु खंड का ज्ञान करना चाहिये।

स्पष्टायु चक्रम्

दीर्घायु:	मध्यमायु:	हीनायु:	आयुखंड:
त्रियोगे १२०	त्रियोगे ८०	त्रियोगे ४०	४०
द्वियोगे १०८	द्वियोगे ७२	द्वियोगे ३६	३६
एकम्योगे९६	एकम्योगे६४	एकम्योगे३२	३२

उपरोक्त योगों से प्राप्त आयु अन्तिम नहीं होती है। शनि की स्थिति से आयु कक्षा में ह्रास–वृद्धि हुआ करती है। शनि के बलवान होने पर या शनि का गुरुसे स्थान सम्बन्ध होने पर आयु कक्षा में वृद्धि होती है, अर्थात हीनायु को मध्यमायु और मध्यमायु को दीर्घायु प्रदान करता है। इस प्रकार कुशल दैवज्ञ को कई अन्य योग विचार कर आयुर्निर्णय करना चाहिये।

होरा लग्न स्पष्ट विधि

होरा लग्न का आरम्भ सूर्योदय से १–१ घंटे पर्यन्त सूर्य राशि से होता है। होरा लग्न स्पष्ट करने के लिए अपने इष्टकाल में २ का गुणा कर ५ का भाग देने पर जो फल मिले उसमें सूर्य स्पष्ट जोड़ने पर होरा लग्न प्राप्त होता है।

॥ द्वादश भावों से विचारणीय विषय ॥

भाव	संज्ञा	कारक ग्रह	विषय
प्रथम	केन्द्र	सूर्य	वर्ण, शरीर, आकृति, बुद्धि, लक्षण, गुण, स्वभाव, मान, यश, विवेक, सुख, प्रवास, मस्तिष्क, आयु, निद्रा, दादा
द्वितीय	पणफर	गुरु	धन, कुटुम्ब, दक्षिण नेत्र, विद्या, वाणी, भोजन, सौन्दर्य, यात्रा, विपुल सम्पदा, आकस्मिक धन, लाटरी इत्यादि
तृतीय	आपोक्लिम उपचय	मंगल	भाई, वहन, पराक्रम, हाथ, कान, नौकर, मित्रता, दत्तक पुत्र, यश–अपयश, दमा रोग, औषधि ज्ञान इत्यादि।
चतुर्थ	केन्द्र	बुध, चन्द्र	सुख–दु:ख, माता, कृषि कार्य, वाहन, भूमि–भवन लाभ, हृदय, रहन–सहन स्तर, ऐश्वर्य इत्यादि।
पंचम	पणफर त्रिकोण	गुरु	सन्तान, बुद्धि, विद्या, प्रतिभा, दैवज्ञ गुण, भाषण, साहित्य, यंत्र–मंत्र शक्ति, प्रेम विवाह, गर्भ धारण, लाटरी इत्यादि।
षष्ठ	त्रिक	शनि, मंगल	शत्रु, रोग, व्यसन, घाव, चाचा, मामा पक्ष, हानि, चोरी भय, जेल यातना, कमर, धोखा इत्यादि।
सप्तम	केन्द्र	शुक्र	पत्नि का रूप-रंग–गुण–स्वभाव, स्त्री सुख, विवाह, व्यभिचार, गुप्त रोग, भतीजा पक्ष इत्यादि।
अष्टम	त्रिक	शनि	आयु, वालारिष्ट, आत्मघात, मृत्यु कारण, रिश्वत, भूमिगत द्रव्य, आकस्मिक लाभ, जलयात्रा, विदेश यात्रा ,गुप्त रोग।
नवम	आपोक्लिम त्रिकोण	सूर्य, गुरु	भाग्य, उन्नति, धर्म, पाप–पुण्य, दानशीलता, दैविक शक्ति, पौत्र, वायुयात्रा, विदेश यात्रा, उच्च शिक्षा इत्यादि।
दशम	केन्द्र	मंगल योगद, गु.बु.सू.कारक	कर्मक्षेत्र, वृत्ति, पद, जीविका, नौकरी, व्यवसाय, मान हानि, जीवन स्तर, राजमान, पिता का सुख इत्यादि।
एकादश	पणफर	गुरु	आय का स्तर, लाभ, आभूषण, वड़ा भाई इत्यादि।
द्वादश	आपोक्लिम त्रिक	शनि	व्यय, वाम नेत्र, विदेश यात्रा, कारावास, दण्ड, ऋण, हानि, अपयश, स्थान परिवर्तन, कलह, दुराचरण इत्यादि।

ग्रह	ग्रह अधीन विषय	विफल स्थान
सूर्य	पिता, आत्मा, ऐश्वर्य, आरोग्य, शक्ति, लक्ष्मी, अस्थि	
चन्द्र	माता, मन, बुद्धि, धन, रक्त।	सूर्य के साथ
मंगल	पराक्रम, रोग, भाई, भूमि, शासक, मज्जा एवं मांस	द्वितीय भाव में
बुध	विद्या, वाणी, बंधु, मामा, मित्र, त्वचा।	चतुर्थ भाव में
गुरु	बुद्धि, शरीर, पुष्टि, पुत्र, ज्ञान, चर्बी।	पंचम भाव में
शुक्र	स्त्री, वाहन, आभूषण, वीर्य।	षष्ट भाव में
शनि	आयु, सुख–दु:ख, नस।	सप्तम भाव में

विफल स्थानों में ग्रह शुभ फल देने में असमर्थ रहते हैं। ग्रहों की नेष्ट स्थिति में उस ग्रह से संबंधित विषयों की कमी तथा सुबल स्थिति में संबंधित विषयों का सुख रहता है। यदि जन्म के समय जो ग्रह अस्त हो उससे संबंधित विषयों की कमी आजीवन रहती है। इसी तरह ग्रह का बल ज्ञात कर फलादेश करने वाले विद्वान सर्वत्र यश, सम्मान एवं लक्ष्मी पाते हैं।

भयात, भभोग एवं महादशा गणना विधि

भयात् – 'भ' अर्थात् नक्षत्र एवं 'यात्' अर्थात् व्यतीत काल। अत: जन्म के समय तक वर्तमान नक्षत्र का जितना समय व्यतीत हो चुका होता है वह काल भयात् होता है।

भभोग – 'भ' अर्थात् नक्षत्र एवं 'भोग' अर्थात् सम्पूर्ण काल। अत: जन्म के समय वर्तमान नक्षत्र का सम्पूर्ण भोग काल भभोग होता है। इनके निकालने की विधि इस प्रकार है।

(१) गत नक्षत्र के धटी पलों को ६०में से घटाकर शेष को दो जगह रख लें।

(२) एक स्थान पर इष्टकाल जोड़ने पर भयात् होगा।

(३) दूसरे स्थान पर वर्तमान नक्षत्र के धटी पलों को जोड़ने पर भभोग होगा।

उदाहरण के लिये इष्टकाल १०.२३ है। उस दिन पंचांग में भरणी नक्षत्र २८.४५ पल लिखा है। पिछला (गत) नक्षत्र अश्विनी २५.५५ पल लिखा है। तव गत नक्षत्र के २५.५५ को ६० में से घटाने पर ३४.०५ शेष में एक स्थान पर इष्टकाल १०.२३ जोड़ा तो ४४.२८ भयात् हुआ। दूसरे स्थान पर शेष ३४.०५ शेष में वर्तमान नक्षत्र के २८.४५ जोड़े तो ६२.५० भभोग हुआ।

महादशा गणना विधि – विंशोत्तरी, अष्टोत्तरी या योगिनी दशा सारणी में जन्म नक्षत्र के अनुसार दशा वर्ष देखकर, भयात् का गुणा कर गुणनफल में भभोग का भाग देने पर जो भाग फल हो वह दशा भुक्तवर्ष होते हें। शंषफल में १२ गुणा करके पुन: भभोग का भाग देने पर दशा के भुक्तमास प्राप्त होते हैं। शेषफल में ३० का गुणा करके भभोग का भाग देने पर दशा के भुक्तदिन प्राप्त होते हैं। महादशा काल में से भुक्त वर्ष, मास, दिन घटाने पर भोग्य वर्ष, मास, दिन प्राप्त होते हैं। भोग्य वर्ष–मास–दिन को जन्म के संवत्–मास–तिथि में जोडते जाने पर महादशा अवधि प्राप्त होती हैं। यदि दशाक्रम ईसवी सन् में लिखना हो तो एक वर्ष ३६० दिन का एवं एक मास ३० दिन का मानकर लेना चाहिये।

महादशा फल

जातक की जन्म लग्न के अनुसार कारक चक्र में योगकारक एवं शुभ ग्रहों की दशा–अन्तर्दशा सदैव शुभ होती है। इस समय कारक ग्रह जिन– जिन वस्तुओं का कारक होता है, उनकी उपलब्धि होती है। जो ग्रह जन्म लग्न या नवांश में उच्च, वर्गोत्तम नवांश, मूलत्रिकोण, अधिमित्र की राशि में, मित्र क्षेत्र में, शुभ ग्रहों से दृष्ट या षड्वर्गों में शुभ वर्गों मे गया हो तो वह अपनी दशा–अन्तर्दशा में शुभ फल देगा। निसर्ग शुभ ग्रह प्राय: शुभ फलद होते हैं। उपरोक्त तथ्यों के विपरीत होने पर महादशा का फल अशुभ होगा। यदि पापी ग्रह जन्म के समय वक्री भी हो तो उसकी दशा अत्यंत कष्टकारी होती है। पाराशर मत से मारक ग्रहों की दशा कष्टप्रद होती है। मारक की महादशा में मृत्यु या मृत्यु तुल्य कष्ट होता है। मारक की अन्तर्दशा मृत्यु कारक नहीं होती है। शुभाशुभ का अन्तिम निर्णय दशानाथ के बल के अनुरूप करना चाहिये, उदाहरण के लिए यदि किसी राजयोगकारक ग्रह की महादशा चल रही है और उस ग्रह का विंशोपक बल ५ या उससे कम है तो उस समय कोई भी शुभ फल प्रगट नहीं होगा। इसी प्रकार बलहीन अशुभ ग्रह की महादशा में अशुभ फल अवरुद्ध रहेगा।

॥ अन्तर्दशा फल ॥

१. महादशेश जिस स्थान में बैठा हो उससे ३,४,५,९,१०,११ वें घर में स्थित ग्रह की अन्तर्दशा शुभ होती है। इसी प्रकार परस्पर मित्र ग्रहों की दशान्तर्दशा सुखद होती है। महादशानाथ जिस स्थान में बैठा हो उससे द्वितीय भाव में स्थित ग्रह की अन्तर्दशा मिश्रित फल देती है। दशानाथ से १,६,७,८,१२ भाव में स्थित ग्रह या निसर्ग पाप ग्रह या जनम लग्न से ६,८,१२ भावेशों की अन्तर्दशा अशुभ होती है।

विंशोत्तरी दशा वोधक चक्रम्

कृति,उफा,उषा				रोहि,हस्त,श्रव				मृग,चित्रा,धनि			
सूर्य ६ वर्ष				चंद्र १० वर्ष				मंगल ७ वर्ष			
अन्तर्दशा	वर्ष	मास	दिन	अंतर्दशा				अंतर्दशा			
सू	०	३	१८	चं.	०	१०	०	मं.	०	४	२७
चं.	०	६	०	मं.	०	७	०	रा.	१	०	१८
मं.	०	४	६	रा.	१	६	०	गु.	०	११	६
रा.	०	१०	२४	गु.	१	४	०	श.	१	१	९
गु.	०	९	१८	श.	१	७	०	बु.	०	११	२७
श.	०	११	१२	बु.	१	५	०	के.	०	४	२७
बु.	०	१०	६	के.	०	७	०	शु.	१	२	०
के.	०	४	६	शु.	१	८	०	सू	०	४	६
शु.	१	०	०	सू	०	६	०	चं.	०	७	०

आर्द्रा,स्वां,शत				पुन,विशा,पूभा				पुष्य,अनु,उभा			
राहु १८ वर्ष				गुरु १६ वर्ष				शनि १९ वर्ष			
अंतर्दशा				अंतर्दशा				अंतर्दशा			
रा.	२	८	१२	गु.	२	१	१८	श.	३	०	३
गु.	२	४	२४	श.	२	६	१२	बु.	२	८	९
श.	२	१०	६	बु.	२	३	६	के.	१	१	९
बु.	२	६	१८	के.	०	११	६	शु.	३	२	०
के.	१	०	१८	शु.	२	८	०	सू	०	११	१२
शु.	३	०	०	सू	०	९	१८	चं.	१	७	०
सू	०	१०	२४	चं.	१	४	०	मं.	१	१	९
चं.	१	६	०	मं.	०	११	६	रा.	२	१०	६
मं.	१	०	१८	रा.	२	४	२४	गु.	२	६	१२

श्लेषा,ज्ये रेवती				अश्वि,मघा,मूल				भर, पूषा, पूफा			
बुध १७ वर्ष				केतु ७ वर्ष				शुक्र २० वर्ष			
अंतर्दशा				अंतर्दशा				अंतर्दशा			
बु.	२	४	२७	के.	०	४	२७	शु.	३	४	०
के.	०	११	२७	शु.	१	२	०	सू	१	०	०
शु.	२	१०	०	सू	०	४	६	चं.	१	८	०
सू	०	१०	६	चं.	०	७	०	मं.	१	२	०
चं.	१	५	०	मं.	०	४	२७	रा.	३	०	०
मं.	०	११	२७	रा.	१	०	१८	गु.	२	८	०
रा.	२	६	१८	गु.	०	११	६	श.	३	२	०
गु.	२	३	६	श.	१	१	९	बु.	२	१०	०
श.	२	८	९	बु.	०	११	२७	के.	१	२	०

योगिनी दशा वोधक चक्रम्

आर्द्रा,चित्रा,श्रव.				पुन,स्वां,धनि				पुष्य,विशा,शत				अनु,आश्ले.,पूभा			
मंगला १ वर्ष				पिंगला २ वर्ष				धान्या ३ वर्ष				भ्रामरी ४ वर्ष			
अन्तर्दशा	वर्ष	मास	दिन	अन्तर्दशा	वर्ष	मास	दिन	अन्तर्दशा	वर्ष	मास	दिन	अन्तर्दशा	वर्ष	मास	दिन
मंगला	०	०	१०	पिंग.	०	१	१०	धान्या	०	३	०	भ्राम.	०	५	१०
पिंग.	०	०	२०	धान्या	०	२	०	भ्राम.	०	४	०	भद्रि.	०	६	२०
धान्या	०	१	०	भ्राम.	०	२	२०	भद्रि.	०	५	०	उल्का	०	८	०
भ्राम.	०	१	१०	भद्रि.	०	३	१०	उल्का	०	६	०	सिद्धा	०	९	१०
भद्रि.	०	१	२०	उल्का	०	४	०	सिद्धा	०	७	०	संक.	०	१०	२०
उल्का	०	२	०	सिद्धा	०	४	२०	संक.	०	८	०	मंगला	०	१	१०
सिद्धा	०	२	१०	संक.	०	५	१०	मंगला	०	१	०	पिंग.	०	२	२०
संक.	०	२	२०	मंगला	०	०	२०	पिंग.	०	२	०	धान्या	०	४	

मघा,ज्ये,उभा				पूफा,मूल,रेव				रोहि, उफा,पूषा				मृग.,हस्त,उषा			
भद्रिका ५ वर्ष				उल्का ६ वर्ष				सिद्धा ७ वर्ष				संकटा ८ वर्ष			
अन्तर्दशा	वर्ष	मास	दिन	अन्तर्दशा	वर्ष	मास	दिन	अन्तर्दशा	वर्ष	मास	दिन	अन्तर्दशा	वर्ष	मास	दिन
भद्रि.	०	८	१०	उल्का	१	०	०	सिद्धा	१	४	१०	संक.	१	९	१०
उल्का	०	१०	०	सिद्धा	१	२	०	संक.	१	६	२०	मंगला	०	२	२०
सिद्धा	०	११	२०	संक.	१	४	०	मंगला	०	२	१०	पिंग.	०	५	१०
संक.	१	१	१०	मंगला	०	२	०	पिंग.	०	४	२०	धान्या	०	८	०
मंगला	०	१	२०	पिंग.	०	४	०	धान्या	०	७	०	भ्राम.	०	१०	२०
पिंग.	०	३	१०	धान्या	०	६	०	भ्राम.	०	९	१०	भद्रि.	१	१	१०
धान्या	०	५	०	भ्राम.	०	८	०	भद्रि.	०	११	२०	उल्का	१	४	०
भ्राम.		६	२०	भद्रि.	०	०	१०	उल्का	१	२	०	सिद्धा	१	६	२०

अष्टोत्तरी दशा वोधक चक्रम्

(यदि जन्म लग्न में कोई ग्रह विद्यमान हो तो आर्द्रादि)

आर्द्रा,पुन,पुष्य,श्ले	मघा, पूफा, उफा	ह.चि,स्वा,विशा	अनु, ज्ये, मूल	पूषा उषा अभि श्र.	धनि, शत, पूभा	उभा.रेव. अश्वि.भर	कृति, रोहि, मृग
सूर्य ६ वर्ष	चंद्र १५ वर्ष	मंगल ८ वर्ष	बुध १७ वर्ष	शनि १० वर्ष	गुरु१९ वर्ष	राहु १२ वर्ष	शुक्र २१ वर्ष

(यदि जन्म लग्न ग्रह रहित हो तो कृतिकादि)

कृति, रोहि, मृग	आर्द्रा,पुन,पुष्य,श्ले	मघा, पूफा, उफा	ह.चि,स्वा,विशा	अनु, ज्ये, मूल	पूषा.उषा.अभि श्र	धनि, शत, पूभा	उभा.रेव.अश्वि.भर
सूर्य ६ वर्ष	चंद्र १५ वर्ष	मंगल ८ वर्ष	बुध १७ वर्ष	शनि १० वर्ष	गुरु१९ वर्ष	राहु १२ वर्ष	शुक्र २१ वर्ष

चन्द्र स्पष्ट से विंशोन्तरी महादशा ज्ञात करने हेतु सारणी

भाग-क

चन्द्र राशि / अंश	कला	मेष,सिंह, धनु भोग्य दशा वर्ष मास दिन	वृष,कन्या,मकर भोग्य दशा वर्ष मास दिन	मिथुन,तुला,कुंभ भोग्य दशा वर्ष मास दिन	कर्क,वृश्चि,मीन भोग्य दशा वर्ष मास दिन
०	०	केत ७,०,०	सूर्य ४, ६, ०	मंगल ३, ६, ०	गुरु ४, ०, ०
१	०	,, ६, ५, २१	,, ४, ०, १८	,, २, ११, २१	,, २, ९, १८
२	०	,, ५,११,१२	,, ३, ७, ६	,, २, ५, १२	,, १, ७, ६
३	०	,, ५, ५, ३	,, ३, १, २४	,, १, ११, ३	,, ०, ४, २४
३	२०	,, ५, ३, ०	,, ३, ०, ०	,, १, ९, ०	शनि १९, ०, ०
४	०	,, ४,१०,२४	,, २, ८, १२	,, १, ४, २४	,, १८, ०, १८
५	०	,, ४, ४,१५	,, २, ३, ०	,, ०, १०, १५	,, १६, ७, १५
६	०	,, ३, १०, ६	,, १, ९, १८	,, ०, ४, ६	,, १५, २, १२
६	४०	,, ३, ६, ०	,, १, ६, ०	राहु १८, ०, ०	,, १४, ३, ०
७	०	,, ३, ३, २७	,, १, ४, ६	,, १७, ६, १८	,, १३, ९, ९
८	०	,, २, ९, १८	,, २, ९, १८	,, १६, २, १२	,, १२, ४, ६
९	०	,, २, ३, ९	,, ०, ५, १२	,, १४, १०, ६	,, १०, ११, ३
१०	०	,, १, ९, ०	चंद्र १०, ०, ०	,, १३, ६, ०	,, ९, ६, ०
११	०	,, १, २, २१	,, ९, ३, १८	,, १२, १, २४	,, ८, ०, २७
१२	०	,, ०, ८, १२	,, ८, ६, ०	,, १०, ९, १८	,, ६, ७, २४
१३	०	,, ०, २, ३	,, ७, ९, २४	,, ९, ५, १२	,, ५, २, २१
१३	२०	शुक्र – २०,०,०	,, ७, ६, ०	,, ९, ०, ०	,, ४, ९, ०
१४	०	,, १९, ०, ०	,, ७, ०, ०	,, ८, १, ६	,, ३, ९, ४८
१५	०	,, १७, ६, ०	,, ६, ३, ०	,, ६, ९, ०	,, २, ४, १५
१६	०	,, १६, ०, ०	,, ५, ६, ०	,, ५, ४, २४	,, ०, ११, १५
१६	४०	,, १५, ०, ०	,, ५, ०, ०	,, ४, ६, ०	,, १७, ०, ०
१७	०	,, १४, ६, ०	,, ४, ९, ०	,, ४, ०, १८	,, १६, ६, २७
१८	०	,, १३, ०, ०	,, ४, ०, ०	,, २, ८, १२	,, १५, ३, १८
१९	०	,, ११, ६, ०	,, ३, ३, ०	,, १, ४, ६	,, १४, ०, ९
२०	०	,, १०, ०, ०	,, २, ६, ०	गुरु १६, ०, ०	,, १२, ९, ०
२१	०	,, ८, ६, ०	,, १, ९, ०	,, १४, ९, १८	,, ११, ५, २१
२२	०	,, ७, ०, ०	,, १, ०, ०	,, १३, ७, ६	,, १०, २, १२
२३	०	,, ५, ६, ०	,, ०, ३, ०	,, १२, ४, २४	,, ८, ११, ३
२३	२०	,, ५, ०, ०	मंगल ७, ०, ०	,, १२, ०, ०	,, ८, ६, ०
२४	०	,, ४, ०, ०	,, ६, ७, २४	,, ११, २, १२	,, ७, ७, २४
२५	०	,, २, ६, ०	,, ६, १, १५	,, १०, ०, ०	,, ६, ४, १५
२६	०	,, १, ०, ०	,, ५, ७, ६	,, ८, ९, १८	,, ५, १, ६
२६	४०	सूर्य ६, ०, ०	,, ५, ३, ०	,, ८, ०, ०	,, ४, ३, ०
२७	०	,, ५, १०, ६	,, ५, १०, ६	,, ७, ७, ६	,, ३, ९, २७
२८	०	,, ५, ४, २४	,, ५, ४, २४	,, ६, ४, २४	,, २, ६, १८
२९	०	,, ४, ११,१२	,, ४, ११, १२	,, ५, २, १२	,, १, ३, ९
३०	०	,, ४, ६, ०	,, ४, ६, ०	,, ४, ०, ०	,, ०, ०, ०

भाग- ख

चंद्र कला	केतु मा.दि.	शुक्र मा.दि.	सूर्य मा.दि.	चंद्र मा.दि.	मंगल मा.दि.	राहु मा.दि.	गुरु मा.दि.	शनि मा.दि.	बुध मा.दि.
१	०,३	०,९	**०, ३**	०, ५	०, ३	०, ८	०, ७	०, ९	०, ८
२	०,६	०,१८	**०, ५**	०, ९	०, ६	०,१६	०,१४	०,१७	०,१५
३	०,९	०,२७	**०, ८**	०,१४	०,९	०,२४	०,२२	०,२६	०,२३
४	०,१३	१,६	**०,११**	०,१८	०,१३	१, २	०,२९	१, ४	१, १
५	०,१६	१,१५	**०,१४**	०,२३	०,१६	१,११	१, ६	१,१३	१, ८
६	०,१९	१,२४	**०,१६**	०,२७	०,१९	१,१९	१,१३	१,२१	१,१६
७	०,२२	२,३	**०,१९**	१, २	०,२२	१,२७	१,२०	२, ०	१,२४
८	०,२५	२,१२	**०,२२**	१, ६	०,२५	२, ५	१,२८	२, ८	२, १
९	०,२८	२,२१	**०,२४**	१,११	०,२८	२,१३	२, ५	२,१७	२, ९
१०	१,१।।	३,०	**०,२७**	१,१५	१, १	२,२१	२,१२	२,२६	२,१७

इष्ट काल का चन्द्र स्पष्ट ज्ञातकर उसकी राशि के अंश एवं कलाओं के अनुसार विंशोत्तरी दशा का भोग्य समय (सारिणी–'क' से) निकालें। इस सारणी में १-१ अंश के अन्तर पर दशा का भोग्य समय दिया है। फिर कलाओं के अनुपात में उनका (कला सारणी – ख से) उस ग्रह के कोष्ठक में दिया समय निकालकर पहले निकाले गए समय में घटा या जोड़ कर अभीष्ट भोग्य दशा समय प्राप्त करें।

ग्रहों के संबन्धित आजीविकाएं

सूर्य – खगोल शास्त्र, नाटक या फिल्म निर्देशन, संस्था प्रमुख, चिकित्सा, वाद–विवाद, ऊन, तृण, जल, अनाज, पत्थर, ज्वेलर्स, सलाहकार, पायलट, बैंक, शेयर बाजार, मौषम विभाग, वन विभाग, दूतावास।

चंद्र – चांदी, जलजन्य बस्तुऐं जैसे शीतल पेय, मिनरल वाटर इत्यादि, बस्त्र संबन्धी नौकरी या व्यवशाय, मनोरंजन, कृषि, मिट्टी, दुग्ध डेयरी, प्लास्टिक वस्तुऐं, खाने की वस्तुऐं, कैटरिंग, जहाज, वाटर सप्लाई इत्यादि।

मंगल – सेना, पुलिस, सुरक्षा, जासूस, खिलाडी, पर्वतारोहण, साहसिक कार्य, अग्निसमन, अग्नि से संबंधित कार्य जैसे घातुकर्म, सिगरेट इत्यादि, आटो पार्टस, रसायन, मेडीकल, रक्त संचय, चाय, विद्युत् कार्य इत्यादि।

बुध – काव्य, वक्ता, वेदान्त, शिल्पकला, सेल्स, कमीसन, सम्पादन, प्रेस, समाचार पत्र, डाक कार्य, कम्प्यूटर, ब्याज अर्जन, टैक्स, गणितज्ञ, ज्योतिष, लेखक, वकील, इम्पोर्ट, आयुर्वेद, मुर्गी पालन, आर्ट कार्य, हरे रंग की वस्तुओं का व्यवशाय इत्यादि।

गुरु– अध्यापन, धार्मिक ग्रंथ, जज, मंत्री, ज्योतिषी, सामाजिक कार्य, मठाधीस, वकील, भवन निर्माण, वाहन व्यवशाय, फाईनेन्स, मेनेजर, प्रकाशक, शेयर बाजार इत्यादि।

शुक्र – कला से सम्बंधित व्यवशाय, ज्वेलर्स, सौन्दर्य प्रसाधन, मनोरंजन, विदेशी मदिरा, संगीत, अभिनय इत्यादि।

शनि – न्यायालयीन कार्य, लेवर यूनियन, लोह, तेल कवाड़े इत्यादि का व्योपार, मेकेनिकल इंजीनियरिंग। शनि अल्प बली होने पर लघु सेवाकार्य।

राहु–केतु – सट्टा, देशी शराब, गैर कानूनी कार्य, कीट नाशक, जहर, यदि राहु बलवान हो तो राजनीति, विदेश व्योपार, रेलवे, विद्युत कार्य।

अष्टक वर्ग चक्रम्

रवि अष्टकवर्ग रेखा ४८

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	ल
१	३	१	३	५	६	१	३
२	६	२	५	६	७	२	४
४	१०	४	६	९	१२	४	६
७	११	७	९	११		७	१०
८		८	१०			८	११
९		९	११			९	१२
१०		१०	१२			१०	
११		११				११	

चंद्र अष्टकवर्ग रेखा ४९

चं	मं	बु	गु	शु	श	ल	सू
१	२	१	१	३	३	३	३
३	३	३	४	४	५	६	६
६	५	४	७	५	६	१०	७
७	६	५	८	७	११	११	८
१०	९	७	१०	९			१०
११	१०	८	११	१०			११
	११	१०	१२	११			
		११					

बुध अष्टकवर्ग रेखा ५४

बु	गु	शु	श	ल	सू	चं	मं
१	६	१	१	१	५	४	१
३	८	२	२	२	६	५	२
५	११	३	४	४	९	६	४
६	१२	४	७	६	११	८	७
९		५	८	९	१२	१०	८
१०		८	९	११		११	९
११		९	१०	१२			१०
१२		११	११				११

गुरु अष्टकवर्ग रेखा ५६

गु	शु	श	ल	सू	चं	मं	बु
१	२	३	१	१	२	१	१
२	५	५	२	२	५	२	२
३	६	६	४	३	७	४	४
४	९	१२	५	४	९	७	५
७	१०		६	७	११	८	६
८	११		७	८		१०	९
१०			९	९		११	१०
११			१०	१०			११
			११	११			

शुक्र अष्टकवर्ग रेखा ५२

शु	श	ल	सू	चं	मं	बु	गु
१	३	१	८	१	३	३	५
२	४	२	११	२	५	५	८
३	५	३	१२	३	६	६	९
४	८	४		४	९	९	१०
५	९	५		५	११	११	११
८	१०	८		८	१२		
९	११	९		९			
१०		१०		११			
११				१२			

लग्न अष्टकवर्ग रेखा ४९

ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श
३	३	३	१	१	१	१	१
६	४	६	३	२	२	२	३
१०	६	१०	६	४	४	३	४
११	१०	११	१०	६	५	४	६
	११		११	८	६	५	१०
	१२			१०	७	८	११
				११	९	९	
					१०	११	
					११		

मंगल अष्टकवर्ग रेखा ३९

मं	बु	गु	शु	श	ल	सू	चं
१	३	६	६	१	१	३	३
२	५	१०	८	४	३	५	६
४	६	११	११	७	६	६	११
७	१२	१२	१२	८	१०	१०	
८				९	११	११	
१०				१०			
११				११			

शनि अष्टकवर्ग रेखा ३९

श	ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु
३	१	१	३	३	६	५	६
५	३	२	६	५	८	६	११
६	४	४	११	६	९	११	१२
११	६	७		१०	१०	१२	
	१०	८		११	११		
	११	१०		१२	१२		
		११					

अष्टक वर्ग फलित सूत्र

गोचर फल – उपरोक्त स्थानों में प्रत्येक ग्रह, उस स्थान में स्थित राशि को एक रेखा (।) प्रदान करताहै। जिस भावमें जितनी रेखाऐं हों उसी अनुपात में फल होता है। ८ रेखा में पूर्ण, ४ रेखा में आधा और २ रेखा में चौथाई फल होता है। कम रेखा युक्त राशि में गोचर होने पर उस ग्रह से संबंधित फल कम मिलते हैं। जैसे यदि गुरु कम रेखा युक्त राशि में गोचर करें तो विवाह, संतान सुख या प्रतिष्ठा में कमी होगी।

सर्वाष्टक वर्ग – प्रत्येक राशि को आठों ग्रहों द्वारा प्रदत्त रेखाओं के योग को सर्वाष्टक वर्ग कहते हैं। अशुभ (त्रिक ६,८,१२) भावों में कम रेखाऐं शुभ होती हैं। अन्य भावों में २८ से कम रेखाऐं अपुष्ट और अधिक रेखाऐं भाव को पुष्ट करती हैं। दैनिक राशिफल चंद्रमा से, मासफल का विचार सूर्य–बुध–मंगल–शुक्र से, वर्षफल गुरु–शनि–राहु–केतु से करना चाहिये।

अष्टक वर्ग से गोचर का फल अत्यंत शुद्ध होता है। इससे ज्योतिष सर्वत्र सम्मान प्राप्त करते हैं।

ग्रहस्पष्ट के राशि अंश कला से ज्ञानार्थ

होरादि सप्तवर्ग सारणी

राशि, होरा, देष्काण, सप्तमांश, नवमांश, द्वादशांश, और त्रिशांश सप्तवर्ग कहलाते हैं। इनमें से राशि का ज्ञान तो ग्रह स्पष्ट होते ही हो जाता है। शेष छह कुंडलियां यहां दी गई सारणी से बनाना सरल होगा। इस सारणी में होरादि वर्ग के प्रारंभिक अंशकला दी गई हैं। अत: ग्रह के अंश कला जिन दो कालमों के बीच में हों उनमें से पहले कालम के नीचे राशि के सामने ग्रह के होरादि सप्तवर्ग की राशि संख्या (१ मेष,२ वृष) मिलती है। उदाहरण के लिए लग्न स्पष्ट ५.२५.१५.५६ है तो, चयनित कालम कन्या राशि के सामने एवं २५ अंश ४२ कला ५१ विकला कालम के नीचे क्रमश होरा की राशि ५, देष्काण २, सप्तमांश ५, नवांश ५, द्वादशांश ४, त्रिशांश ८ होगा।

राशि	अंश	२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
	कला	३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
	विकला	०	०	८	०	०	०	१७	०	०	०	२६	०	०	०	३४	०	०	०	४३	०	०	०	५१	०	०	०
० मेष	होरा	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	देष्काण	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९
	सप्तमांश	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७
	नवमांश	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
	द्वादशांश	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२
	त्रिशांश	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
१ वृष	होरा	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	देष्काण	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
	सप्तमांश	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२
	नवमांश	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
	द्वादशांश	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१
	त्रिशांश	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
२ मिथुन	होरा	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	देष्काण	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११
	सप्तमांश	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९
	नवमांश	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
	द्वादशांश	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२
	त्रिशांश	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
३ कर्क	होरा	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	देष्काण	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
	सप्तमांश	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४
	नवमांश	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
	द्वादशांश	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३
	त्रिशांश	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
४ सिंह	होरा	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	देष्काण	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१
	सप्तमांश	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	नवमांश	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
	द्वादशांश	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४
	त्रिशांश	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
५ कन्या	होरा	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	देष्काण	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२
	सप्तमांश	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६
	नवमांश	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
	द्वादशांश	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५
	त्रिशांश	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

राशि	अंश	२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
	कला	३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
	विकला	०	०	८	०	०	०	१७	०	०	०	२६	०	०	०	३४	०	०	०	४३	०	०	०	५१	०	०	०
६ तुला	होरा	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	देष्काण	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३
	सप्तमांश	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१
	नवमांश	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
	द्वादशांश	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६
	त्रिशांश	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
७ वृश्चिक	होरा	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	देष्काण	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४
	सप्तमांश	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८
	नवमांश	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
	द्वादशांश	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७
	त्रिशांश	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
८ धनु	होरा	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	देष्काण	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५
	सप्तमांश	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३
	नवमांश	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
	द्वादशांश	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८
	त्रिशांश	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
९ मकर	होरा	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	देष्काण	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६
	सप्तमांश	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०
	नवमांश	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
	द्वादशांश	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९
	त्रिशांश	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
१० कुम्भ	होरा	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	देष्काण	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७
	सप्तमांश	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५
	नवमांश	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
	द्वादशांश	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०
	त्रिशांश	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
११ मीन	होरा	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	देष्काण	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८
	सप्तमांश	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२
	नवमांश	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
	द्वादशांश	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११
	त्रिशांश	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

सप्तवर्ग कुंडिलियों का महत्व –इन सातों कुंडलियों में जो ग्रह उच्च, मूल त्रिकोण, स्वग्रह या मित्र राशि में हो तो बलवान होता है। बलवान ग्रह अपनी दशा अंतरर्दशा में उत्तम फल देता है। अन्यथा विपरीत फल प्राप्त होता है।

卐 सप्तवर्ग में लग्न या ग्रह की संज्ञा –यदि कोई भी ग्रह इन सात वर्गों में से दो कुंडलियों में शुभ हो तो किंशुक, तीन में व्यंजन, चार में चामर, पांच में छत्र, छह में कुंडल एवं सातों वर्गों में शुभ होने पर उस ग्रह की संज्ञा मुकुट कहलाती है।

ग्रहों की बालादि अवस्थाऐं

ग्रह स्पष्ट के अंश	विषम राशि में	सम राशि में
० से ६	बाल	मृत
६ से १२	कुमार	युवा
१२ से १८	युवा	युवा
१८ से २४	युवा	कुमार
२४ से ३०	मृत	बाल

सप्तवर्गीय बल

पंचधा मैत्री	कला। वि.
स्वगृह	३० । ०
अतिमित्र	२२ । ३ ०
मित्र	१५ । ०
सम	७ । ३ ०
शत्रु	३ । ४५
अतिशत्रु	१ । ५२ । ३०

वर्गोत्तम नवांश ज्ञान

राशि	नवांश संख्या	अंश कला
मेष,कर्क तुला,मकर	प्रथम	० अंश से ३. २०
वृष,सिंह वृश्चिक,कुंभ	पंचम्	१३.२० से १६.४०
मिथु.कन्या धनु,मीन	नवम्	२६.४० से ३०.००

वर्गोत्तम नवांश – यदि कोई ग्रह लग्न कुंडली और नवांश कुंडली में समान राशि में हो तो वह ग्रह वर्गोत्तम नवांश में कहलाता है। यह ग्रह उच्च के समान फल देता है। इसी प्रकार वर्गोत्तम लग्न भी शुभ कही गई है।

वर्ष प्रवेश सारणी से इष्टकाल का ज्ञान

यहां पर नूतन वेध सिद्ध वर्षमान ३६५ दिन, १५ घटि, २२ पल, ५७ विपल तथा सौर आर्ष वर्षमान ३६५ दिन, १५ घटि, ३१ पल, ३० विपल, दोनों प्रकार से वर्ष प्रवेश सारणियां दी जा रहीं हैं। अपनी मान्यता के अनुसार सारणी का चयन करें। वर्तमान संवत् में से जन्म संवत् घटाने पर जो शेष रहता है वही गत वर्ष होता है। संवत् बदल जाने पर भी यदि सूर्य मीन राशि में है तो पूर्व संवत् में से जन्म संवत् घटाने पर गत वर्ष होता है। इस सारणी में गत वर्ष के नीचे जो वार, घटी पल विपल लिखे हैं उनमें जन्म समय के वार तथा इष्ट घटी-पल जोड़ने पर वर्ष प्रवेश का दिन, घटी पल होगा। यदि वार संख्या ७ से अधिक हो तो उसमें ७ का भाग देकर शेष को वार (वर्ष प्रवेश दिन) जानना चाहिये। यदि घटी ६० से अधिक हो तो उसमें से ६० घटाकर शेष को वर्ष प्रवेश के घटी पल जानना चाहिये तथा वार में एक जोड़ना चाहिये। वर्ष प्रवेश के वार एवं घटी पल के समय लग्न निकाल कर वार्षिक फलादेश देना चाहिये। वर्ष कुण्डली की शुद्धता की पहचान यह है कि, उस समय का सूर्य स्पष्ट, जन्म समय के सूर्य स्पष्ट के समान होता है।

मुन्था साधन विधि

जन्मलग्नात्समारभ्य गत वर्षाणि योजयेत्। द्वादशभिर्हरेद्भागं शेषा मुन्था मता बुधैः॥ अर्थात जन्म लग्न राशि में गत वर्ष जोड़कर बारह का भाग देने पर जो शेष बचे वह मुन्था राशि होती है।

मुन्थाफल

मुन्था पर मुन्थेस की दृष्टी होने, शुभ ग्रहों से युत दृष्ट होने, १, २, ३, ५, ९, १०, ११वें भाव में, जन्म लग्न से ४,६,७,८,१२ वीं राशि में व राहु स्पष्ट के अंशों तक मुन्था शुभ होती है।

समयेश

दिन में वर्ष प्रवेश हो तो सूर्य की राशि का स्वामी एवं रात्रि में जन्म हो तो चंद्र की राशि का स्वामी समयेश कहलाता है।

त्रैराशीश चक्र

वर्ष प्रवेश के समय लग्न तथा दिन या रात्रि समय के के अनुसार त्रैराशीश निम्न चक्र से जानें।

लग्न	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं	क.	तु.	वृ	ध.	म.	कुं.	मी.
दिन	सू.	शु.	श.	शु.	गु.	चं.	बु.	मं.	श.	मं.	गु.	चं.
रात्रि	गु.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	गु.	चं.

नवीन वर्ष प्रवेश सारणी (वेध सिद्ध वर्षमानानुगतम्)

गतवर्ष	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४
घटि	१५	३०	४६	१	१६	३२	४७	३	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७
पल	२२	४५	८	३१	५४	१७	४०	३	२६	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३	१६	३८
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	६०

गतवर्ष	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
वार	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१
घटि	२३	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२६	४१	५६	१२	२७	४३	५८	१३	२९	४४	५९	१५
पल	१	२४	४७	१०	३३	५६	१९	४२	५	२८	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५५	१७
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	६०

गतवर्ष	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५
घटि	३०	४६	१	१६	३२	४७	२	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७	२२
पल	४०	३	२६	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३	१६	३९	२	२५	४८	११	३४	५७
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०

गतवर्ष	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
वार	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२
घटि	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२६	४१	५६	१२	२७	४२	५८	१३	२९	४४	५९	१५	३०
पल	१९	४२	५	२८	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५५	१८	४१	४	२७	५०	१३	३५
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	६०

नवीन वर्ष प्रवेश सारणी (सौर आर्षमानानुगगतम्)

गतवर्ष	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४
घटि	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२०	५२	२४	५५	२६	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	६०	३०	०	३०	६०	३०	०

गतवर्ष	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
वार	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१
घटि	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५	१	१६	३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१
पल	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४१	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५३	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	६०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	६०	३०	०	३०	०

गतवर्ष	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	३	४	५
घटि	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१
पल	३१	३	३४	६	३७	८	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२३	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	६०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	६०	३०	०	३०	०

गतवर्ष	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
वार	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
घटि	४७	२	१८	३३	४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४	३९	५५	१०	२६	४२
पल	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४७	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	६०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

पंचवर्गी बल निर्णय

गृह, उच्च, हद्दा, द्रेष्काण व नवांश के बलों को पंचवर्गी बल कहा जाता है। इनमें से गृह, उच्च व नवांश बल वही हैं जो जन्म कुण्डली में होते हैं, परन्तु वर्ष कुण्डली में हद्दा व द्रेष्काण कुछ अलग होते हैं जो निम्न चक्र से जानें। प्रत्येक राशि में निश्चित अंशों तक हद्देश माने गए हैं, जो चक्र से स्पष्ट हैं।

द्रेष्काण चक्र

अंश	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं	क.	तु.	वृ	ध.	म.	कुं.	मी.
०-१०	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
११-२०	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.
२१-३०	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.

हद्दा चक्र (ग्रह से पूर्व अंश लिखे हैं)

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
६गु.	८शु.	६बु.	७मं.	६गु.	७बु.	६श.	७मं.	१२गु.	७बु.	७शु.	१२शु.
६शु.	६बु.	६शु.	६शु.	५शु.	१०शु.	८बु.	४ शु.	५शु.	७गु.	६बु.	४गु.
८बु.	८गु.	५गु.	६बु.	७श.	४गु.	७गु.	८बु.	४बु.	८शु.	७गु.	३बु.
५मं.	५श.	७मं.	७गु.	६बु.	७मं.	७शु.	५गु.	५मं.	४श.	५मं.	९मं.
५श.	३मं.	६श.	४श.	६मं.	२श.	२मं.	६श.	४श.	४मं.	५श.	२श.

वर्ष कुण्डली में निसर्ग एवं तात्कालिक मैत्री

सूर्य, चन्द्र, मंगल व वृहस्पति ये चारों ग्रह परस्पर नैसर्गिक मित्र हैं। इसी तरह शनि, बुध, शुक्र ये तीनों परस्पर मित्र हैं। नैसर्गिक मैत्री में सम ग्रह नहीं होते हैं।

तात्कालिक मैत्री में सभी ग्रह अपने अधिष्ठित स्थान से ३,५,९,११ भाव में स्थित ग्रहों को मित्र समझते हैं। परस्पर १,४,७,१०, भावों में स्थित सभी ग्रह शत्रु होते हैं। शेष २,६,८,१२ भावों में स्थित सभी ग्रह सम कहलाते हैं।

पंचवर्गीय बल चक्र

	स्वराशि	मित्रराशि	समराशि	शत्रुराशि
ग्रह	३०	२२.३०	१५	७.३०
हद्दा	१५	११.१५	७.३०	३.४५
द्रेष्काण	१०	७.३०	५	२.३०
नवांश	५	३.४५	२.३०	१.१५

(उच्चबल की गणना जातक विधि से ही करें)

ग्रहों के दीप्तांश एवं हर्ष स्थान

	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
स्वराशि	५	४	१,८	३,६	९,१२	२,८	१०,११
उच्च रा.अं.	०.१०	१.३	९.२८	५.१५	३.५	११.२७	६.२०
नीच रा.अं.	६.१०	६.३	३.२८	११.१५	९.५	५.२७	०.२०
दीप्तांश	१५	१२	८	७	९	७	९
हर्ष स्थान	९	३	६	१	११	५	१२

वर्ष के पांच अधिकारी – जन्म लग्नेश, वर्ष लग्नेश, मुन्थेश, समयेश व त्रैराशिश ये वर्ष के पांच अधिकारी होते हैं।

वर्षेश निर्णय – उपरोक्त पांच अधिकारियों में से कोई एक ही वर्षेश हो सकता है। इसका निर्णय इस प्रकार करें। १. पाचों में से जो ग्रह सर्वाधिक बली होकर लग्न को देख रहा हो वही वर्षेश होता है। २. यदि सर्वाधिक बली ग्रह लग्न को न देख रहा हो तो लग्न को देखने वाला कम बली ग्रह ही वर्षेश होता है। ३. यदि लग्न को कोई भी ग्रह न देख रहा हो तो सर्वाधिक बली ग्रह ही वर्षेश होता है।

वर्ष मध्ये मुद्दादशा चक्रम्

	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	१	०	१	१	१	१	०	२
दिन	१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	०

मुद्दा दशा विधि :- जन्म नक्षत्र की संख्या में गतवर्ष संख्या जोड़कर और दो घटाकर ९ का भाग देने पर यदि १ शेष हो तो सूर्य, २ में चन्द्र, ३ में मंगल, ४ में राहु, ५ में गुरु ६ में शनि, ७ में बुध, ८ में केतु, ९ में शुक्र की दशा होती है।

मास मध्ये मुद्दा दशा चक्रम्

	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
दिन	१	२	१	४	४	४	४	१	५
घटि	३०	३०	४५	३०	०	४५	१५	४५	०

मास दशा जानने के लिये गतवर्ष संख्या में १२ का गुणा कर जन्म नक्षत्र संख्या में जोड़कर दो घटाकर ९ का भाग देने पर वर्ष दशा में वर्णित क्रमशः ग्रह दशा होती है।

परमार वंशीय सम्राट विक्रमादित्य की जन्म कुण्डली

सम्राट विक्रमादित्य परमार क्षत्रीय बंश में जन्मे थे। इनका वशिष्ठ गोत्र था। विक्रमादित्य का जन्म वैशाख शुक्ल २, गुरुवार, गत कलि संवत् ३०००, युधिष्ठिर संवत् ३०३७ को मध्यान्हकाल में उज्जैन में हुआ था। जूलियन कलेण्डर के अनुसार दिनांक १४ अप्रैल १०१ ईशवी पूर्व सिद्ध होती है। सूर्यसिद्धांतीय अहर्गण ७१४४०३३९२४२० दिन।

तिथि द्वतीया १६।४५ । जन्म नक्षत्र रोहिणी २ चरण। शोभन योग। कौलव करण।

उज्जैन में स्थानीय सूर्योदय प्रात: ५।५१। दिनमान ३०।४५। जन्मकाल मध्यान्ह दोपहर १२।०० स्थानीय समय। सूर्योदयादि इष्टकाल १५।२२। ३०। जन्म लग्न कर्क। लग्न स्पष्ट ३।२६।३९।५९। जन्मकालीन भुजान्तर संस्कार रहित ग्रह स्पष्ट इस प्रकार हैं:–

सूर्यसिद्धांतीय अहर्गण (दिन संख्या) ७१४४०३३९२४२०

सूर्य स्षष्ट ००।१८।५२।५१

चंद्र स्षष्ट ०१।१५।२७।२२

मंगल स्षष्ट ००।२३।४२।०६

बुध स्षष्ट ००।२६।५३।०१ बक्री

गुरु स्षष्ट ११।११।५०।०६

शुक्र स्षष्ट ११।०४।३८।५८

५ ३ रा.
६ ४ २ चं.
७ १ सू.मं.बु.
८ १० श. १२ गु.शु.
९ के. ११

शनि स्षष्ट ०९।१३।१०।५६, राहु ०२।१९।३६।४९, केतु धनु में।

महादशा शुक्र भोग्य १६ वर्ष ९ माह।

विक्रम संवत् का प्रवर्तन समय – युधिष्ठिर संवत् ३०८२, गत कलि संवत् ३०४४। उम्र ४४ वर्ष। उस समय राहु में गुरु की अन्तरर्दशा समाप्त होने वाली थी।

-- जन्म कुण्डली का शास्त्रीय फलादेश --

लग्न भाव फलम्

निजोच्चे निजभे वर्गे, स्वकीये लग्नपे यदि। दीर्घायु: सुखसन्तृप्तो, बली भोगी प्रजायते।। (भावकुतुहलम भाव विचार अध्याय/ श्लोक ४)। लग्नेश चंद्रमा उच्चराशि में होने से विक्रमादित्य दीर्घायु एवं बलवान थे। राजा होने के कारण उन्होने संसारिक सुखों के भोग किया।

लग्नेशे लाभगे जात:, सदा लाभ समन्वित:। शुशील: ख्यातकीर्तिश्च बहुदारगुणैर्युत:॥ (वृहत्पाराशर अध्याय २५/ श्लोक ११)। लग्नेश चंद्रमा लाभ यानि एकादश भाव में होने से जातक आजीवन राजपद से लाभन्वित रहे। शुशील स्वभाव था। उनकी कीर्ति अमर है। उनकी अनेक रानियां थीं।

धन भाव फलम्

धनादिपो माननवायभावे बली यदा तिष्ठति जन्मकाले। रमा विहारालयवासिनी वा निजोच्च मित्रालयगो जनानाम्।।(भावकुतुहलम भाव विचार अध्याय/ श्लोक १०)। द्वितीय भाव के स्वामी सूर्य उच्चराशि में होकर सम्मान भाव (दशम) में हाने से रमाविहारी यानि उनके घर में सदां लक्ष्मी जी का निवास रहा।

धनेशे कर्मगे जात:, कामी मानी च पण्डित:। बहुदारधनैर्युक्त:, किंञ्च पुत्र सुखोज्झित:॥ (वृहत्पाराशर अध्याय २५/ श्लोक २२)। वे मनोकामनाओं, सम्मान एवं विद्यावान थे। विक्रमादित्य के पुत्रगण उनके समान पुण्यवान नहीं थे, यह किंचित पुत्रसुख की न्यूनता थी।

सहज भाव फलम्

दशमे सहजाधीशे, जात: सर्वसुखान्वित:। स्वभुजा-अर्जित-वित्तश्च दुष्टस्त्रीभरणे रत:॥ (वृहत्पाराशर अध्याय २५/ श्लोक ३४)। तृतीय भाव के स्वामी बुध दशम भाव में होने से सभी प्रकार के सुखों को भोगने वाले थे। उन्होंने अपने पराक्रम के बल पर राजकोष सुदृढ़ किया था। उनकी कोई एक रानी दुष्ट स्वभाव की अवश्य रही होगी, इसकी पुष्टि इतिहास विशेषज्ञ ही कर सकते हैं।

तृतीय भाव पर बलवान गुरु एवं शुक्र (ब्राम्हण ग्रह) की दृष्टि होने से उनके भाई भर्तहरि अध्यात्मिक स्वभाव के हुये। कन्या राशि राहु का स्वग्रह है। राहु उच्च के होकर द्वादश भाव में स्थित होने से भर्तहरि को वैराग्य हुआ। तृतीय भाव के कारक मंगल दशम भाव में स्वक्षेत्री एवं स्थान बली होने से पराक्रम के कारण विक्रम उपाधि प्राप्त की।

चतुर्थ भाव फलम्

त्रिकोणे वाहनाधीशे, केन्द्रे च बलसंयुते। निजोच्चादि पदे नूनं, वाहनं नूतनं भवेत्।। (भावकुतुहलम,अध्याय १५/ श्लोक १६)। सम्राट होने से सब प्रकार के वाहनों का सुख था।

वदन्ति विद्या जननी सुखानि सुगंध गो बन्धु मनोगुणानि। महीप यान क्षिति मन्दिराणि चतुर्थ भाव प्रभवानि तज्ज्ञा:।। (जातक परिजात १२/५९)। विक्रमादित्य को परिवारिक बन्धुओं, माता, गोवंश, सुगंधित द्रव्य एवं विद्या का सुख था। राजसुख, वाहनसुख, भूमि यानि राज्य क्षेत्र का लाभ एवं मंदिरों के निर्माण से आत्म सुख प्राप्त था।

पंचम् भाव का फलम्

लग्नादात्मनि पुंग्रहेक्षियुते पुंदेवताराधनं। युग्मे शुक्रनिशाकरेक्षियुते स्त्री दवेतामिच्छति।। (जातक परिजात १३/२)। लग्न से पंचम भाव पर पुरुष ग्रह गुरु की दृष्टि होने से गुरु गोरक्ष नाथ के आराधक थे। इसी प्रकार पंचम भाव में सम राशि (वृश्चिक) होने तथा पंचम भाव पर चंद्रमा (स्त्रीग्रह) की दृष्टि होने के कारण हरसिद्धि माता उनकी आराध्य देवी थीं।

सुतेशे राज्य भावस्थे, राज्ययोगो हि जायते। अनेक सुख भोगी च, ख्यातकीर्तिर्नरो भवेत्॥ (बृहत्पाराशर.., २५/५८)। पंचमेश मंगल, दशम भाव में बलवान होकर स्थित होने से प्रबल राजयोग एवं ख्याति-कीर्तिमान योग है।

षष्ठभाव फलम्

पापै: शत्रुक्षतादि ब्रणभय विपुलं जायते लांछनं वा। (जातक परिजात ७२/१३)। षष्ठ भाव में केतु होने से युद्ध के दौरान शरीर में घाव होना स्वभाविक है। केतु की दशा वृद्धावस्था में आई थी, उस समय कोई न कोई कलंक लगा होगा। इसकी पुष्टि केवल इतिहासकार ही कर सकते हैं।

सप्तम् भाव फलम्

केन्द्र त्रिकोणे दारेशे, स्वोच्च मित्र स्ववर्गगे। कर्माधिपेन वा दृष्टे, बहु स्त्री सहितो भवेत्।। कलत्राधिपतौ केन्द्रे, शुभ ग्रह निरीक्षिते। शुभांशे शुभ राशौ वा, पत्नि व्रतपारायणा।। शुभांशे शुभ संद्रष्टे, नाथे जाया शुवंशजा। (जातक परिजात २१-२२-२४/१४)। सप्तमेश शनि स्वग्रही होने से बहुपत्नि योग है। उनकी पत्नियां कुलीन एवं पतिपारायण थीं।

अष्टम् भाव फलम्

केन्द्रे कोणे अष्टमाधीशे, तुंगादिपगे तदा। दीर्घायुरु दितं पूर्वैर्व्यत्यये हीनमंगिनाम्।। (भावकुतुहलम,अध्याय १५/ श्लोक ३७)। अष्टमेश शनि केन्द्र में स्थित होने से दीर्घायु योग फलित हुआ।

स्वस्थे रन्ध्रपतौ चिरायु......., (जातक परिजात १४/४९)। **दीर्घायुर्निजतुङ्गे शुभयुते केन्द्र त्रिकोणेऽथवा।........**,(जातक परिजात १४/५२)। अष्टमेश शनि स्वराशि में केन्द्र स्थान में होने से दीर्घायु/चिरायु योग फलित हुआ।

नवम् भाव फलम्

निजोच्चे पुण्यगृहे नभगो बलिर्यदा तिष्ठति जन्मकाले। स पुण्यशाली नवरत्नमाली धराधिपो राजकुलप्रसूत:॥ (भावकुतुहलम् १५/ ४०)। नवमेश गुरु स्वग्रही होकर बलवान होने से विक्रमादित्य पुण्यशाली राजा थे। उनके दरवार में नवरत्न थे। उनका जन्म राजकुल में हुआ था।

जीवे शुक्रयुते चिरायुरधिकश्रीमान......,(जातक परिजात १४/ ७७)। नवम भाव में गुरु शुक्र युति होने से चिरायु एवं विशेष श्रीमान की कीर्ती प्राप्त हुई।

भाग्येशे भाग्य भावस्थे, बहुभाग्य समन्वित:। गुण सौन्दर्य सम्पन्नो, सहजेभ्य: सुखं बहु॥ (बृहत्पाराशर.., भावेश फलाध्याय २५/१०५)। भाग्येश गुरु भाग्य भाव में स्थित होने से सहोदर भाई भर्तहरि से राज्य सुख प्राप्त हुआ।

दशम् भाव फलम्

कर्ममेशे राज्य भावस्थे, सर्व कर्म पटु: सुखी। विक्रमी सत्यवक्ता च, गुरुभक्तिरतो नर:॥ (बृहत्पाराशर.., भावेश फलाध्याय २५/११८)। कर्मेश मंगल स्वग्रही बलवान होकर कर्मभाव में स्थित होने से **विक्रमादित्य** की पदवी प्राप्त हुई। इस योग में जन्म लेने के कारण वे सभी कार्यों में कुशल, सत्यवादी एवं गुरु-ब्राह्मणों के भक्त थे।

कर्मप: केन्द्रकोणस्थो, ज्योतिष्टोमादि यज्ञकृत्। कूपायतनकर्ता च, देवता-अतिथि पूजक:॥ (भावकुतुहलम् भाव विचार अध्याय/ श्लोक ४५)। कर्मेश केन्द्र में होने से यज्ञकर्ता, कुंआ-तालाव धर्मशाला का निर्माण कर्ता, अतिथि एवं देवताओं का सम्मान करने वाले धार्मिक स्वभाव के थे।

गंगा स्नान फलं समेति दशमे राहौ दिनेश-अथवा। (जातक परिजात २/१५)। दशम भाव में राहु या सूर्य होने पर गंगा स्नान के समान पुण्यफल (निष्पाप) थे।

व्यापार धर्म भवने शुभ खेट युक्ते तन्नाथ जीवतनुपा बलशालिनश्चेत्। आचार-धर्म-गुण-कर्म विधि प्रयुक्त श्रद्धापरो भवति विप्रकुला-अग्रगण्य:॥ (जातक परिजात ११/१५)। दशम् एवं नवम् भाव में बलवान ग्रह (स्वग्रही मंगल, उच्चराशि के सूर्य, स्वग्रही गुरु, उच्चराशि के शुक्र) होने से जातक को आचार-धर्म-गुण-कर्म एवं विधि (न्याय) में परम श्रद्धा थी। वे अपने कुल (वशिष्ठ गोत्रजों) में अग्रगण्य थे।

एकादश भाव फलम्

लाभेशे भाग्य भावस्थे, भाग्यवान् जाये नर:। चतुर: सत्यवादी च राज्यपूजो धनादिप:॥ (बृहत्पाराशर.., भावेश फलाध्याय २५/१२९)। लाभ भाव के स्वामी शुक्र उच्च के होकर भाग्य भाव में स्थित होने से जातक भग्यवान, सत्यवादी, धनवान एवं राजाओं से पूज्य (सम्राट) थे।

लाभ स्थान गत: समस्तगुणवानिष्टाधिकश्रेद्बली। जातो यान विभूषणाम्बर वधू भोगादि विद्याधिक:॥ (जातक परिजात १५/६८)। लाभ स्थान में शुभ बली उच्च का चंद्रमा होने से जातक सर्वगुण सम्पन्न, अधिक विद्वान, अच्छे मित्र (वराहमिहिर, कालीदास इत्यादि नव रत्न), अनेक प्रकार के वाहन, वस्त्राभूषण, स्त्रि इत्यादि का भोगवान योग है।

द्वादश भाव फलम्

व्ययेश राजभावस्थे, व्ययो राजकुलात् भवेत्। पितृतोऽपि सुखं तस्य, स्वल्पमेव हि जायते॥ बृहत्पाराशर.., भावेश फलाध्याय २५/१४२)।

स्याद्-उच्च-स्व-मित्र भवने तु परोपकारी ॥ (जातक परिजात १५/७७)। द्वादश भाव में उच्च राशि में राहु होने से विक्रमादित्य परोपकारी स्वभाव के थे।

अन्य राजयोग – **खेटा यदा पंच निज्जोच्च संस्था: स सर्वभौम: खलु यस्य सूतौ।**

त्रिभि: स्वतुंगोपगतै: स राजा नृपालबालो अन्य सुतस्तु मंत्री ॥ (भावकुतुहलम् ७/४५)। पांच ग्रह उच्च राशि में होने से सार्वभौम (पृथ्वी का) समृाट योग है। विक्रमादित्य की कुण्डली में सूर्य, चंद्र, शुक्र, राहु और केतु अपनी उच्चराशियों में विद्यमान हैं।

विशेष निवेदन

कहीं पर विक्रमादित्य की लग्न कुण्डली में कर्क लग्न में गुरु, चतुर्थ भाव में तुला के शनि, षष्ठ भाव में धनु के राहु, सप्तम भाव में मकर का मंगल, दशम भाव में मेष के सूर्य, एकादश भाव में वृष राशि में चंद्रमा, बुध एवं शुक्र तथा द्वादश भाव में मिथुन के केतु वताते हैं। सूर्य सिद्धान्त एवं अन्य ग्रंथों के आधार पर गणना करने पर यह ग्रह स्थिति की कुण्डली काल्पनिक पाई गई, क्योकि किसी भी गणित से कथित ग्रह उनके जन्म के १०० वर्ष आगे या पीछे के काल में भी संभव नहीं हैं। सिद्धान्त गणित के विद्वान इसका परीक्षण स्वयं गणना कर संतुष्ट हो सकते हैं।

श्री परब्रह्मं अर्पणमस्तु।। – **आचार्य राजेश मिश्र, पुष्पांजलि वेदांग पीठ।।**

वैशाख शुक्ल, पंचमी, संवत् २०७९, शुक्रवार, दिनांक ६ मई २०२२

जातक की वृत्ति (आजीविका) विचार

आयुः कर्मः वित्तं च, विद्या निधनमेव च ।
पंचैतानि हि सृज्यन्ते गर्भस्थस्यैव देहिनः ।।

अर्थात आयु, कर्म, आर्थिक स्थिति, शिक्षा एवं मृत्यु ये पांचों का निर्धारण गर्भ के समय ही हो जाता है ।

धनोपार्जन का साधन – मुख्यतः दो प्रकार का होता है – (1) व्यापार (2) नौकरी ।

(1) व्यापार योग – यदि जातक की जन्म कुण्डली में अधिक से अधिक ग्रह चर राशियों में हों तो जातक स्वतंत्र व्यापार करने वाला होता है।

(अ) यदि चन्द्रमा से केन्द्र में बुध, गुरु और शुक्र हों या इनमें से दो ग्रह हों ।

(ब) यदि चन्द्रमा से द्वितीय, तृतीय, एकादश में गुरु व शुक्र हों ।

(स) दशम में बुध या लग्नेश हो तो जातक व्यापार वृत्ति वाला होता है ।

और यदि अधिकांश ग्रह द्विस्वभाव राशियों में हों तो जातक नौकरी के साथ – साथ साईड विजनिस करता है ।

(2) नौकरी योग – यदि अधिकांश ग्रह स्थिर राशियों में हों तो नौकरी का योग होता है। निम्न लिखित योगों में जातक सरकारी विभाग या किसी मल्टी नेशनल कम्पनी में नौकरी करता है।

(अ) केन्द्र में या कारकांश लग्न में सूर्य हो ।

(ब) केन्द्र या त्रिकोण में चन्द्रमा हो ।

(स) केन्द्र या लाभ भाव में दशमेश हो ।

(द) गुरु तथा बुध का योग हो ।

(ई) लग्न में भाग्येश हो तथा वह गुरु से दृष्ट हो ।

(फ) नवमेश शुभ वर्गों में हो ।

इनमें से कम से कम दो या तीन योग होने पर एवं योग कारक ग्रह पर अशुभ दृष्टि न होने पर जातक सरकारी कार्य करता है ।

वृत्ति कारक ग्रह

निम्न लिखित स्थितियों में जो ग्रह सर्वाधिक बलवान हो वह वृत्ति का कारक होता है ।

(1) लग्न से दशम भाव स्थित ग्रह ।

(2) चन्द्रमा से दशम भाव स्थित ग्रह ।

(3) यदि लग्न या चंद्र से दशम में कोई ग्रह न हो तो सूर्य से दशमस्थ ग्रह ।

(4) दशम भाव से 5 अंश दूरी पर स्थित ग्रह ।

(5) आत्मकारक ग्रह (सर्वाधिक अंशों वाला ग्रह) ।

(6) यदि दशम भाव में कोई ग्रह न हो तो दशमेश जिस ग्रह के नवांश में हो वह ग्रह ।

वृत्ति कारक ग्रह की पहचान हो जाने पर अग्र लिखित ग्रहानुसार वृत्ति कहना चाहिए ।

सूर्य की वृत्ति– खगोल शास्त्र, नाटक या फिल्म निर्देशन, संस्था प्रधान, चिकित्सा, वाद-विवाद, ऊन, तृण, जल, धान्य, पत्थर, नारियल, ज्वेलर्स, सोना, रत्न, मंत्रणा (सलाहकार), मंत्र जाप इत्यादि से जीविका होती है। नौकरी में पायलट, बैंक, शेयर बाजार, विदेशी मुद्रा बाजार, मौसम विभाग, वन विभाग, दूतावास, इत्यादि से आजीविका होती है। सूर्य की वृत्ति में स्वतंत्र व्यवसाय होने पर भी सरकार से संबंध अवश्य होता है ।

चन्द्रमा की वृत्ति– चांदी, जलजन्य वस्तुऐं जैसे– कोल्ड ड्रिंक, मिनरल वाटर इत्यादि, वस्त्र संबंधी नौकरी या व्यवसाय जैसे रेडीमेड वस्त्र, धागा, ड्राइक्लीनिंग इत्यादि, मनोरंजन, मिट्टी संबंधी, कृषि संबंधी, दुग्ध डेयरी, प्लास्टिक वस्तुऐं, खाने की वस्तुएं जैसे अचार, जैम, कैटरिंग इत्यादि, जहाज या वाटर सप्लाई की नौकरी इत्यादि। चन्द्र आजीविका में यात्रा करना पड़ती है।

मंगल की वृत्ति– सेना, पुलिस विभाग, सिक्युरिटी, जासूस, पेशेवर खिलाड़ी, पर्वतारोहण इत्यादि साहसिक कार्य। अग्निसमन विभाग की नौकरी । यदि मंगल अशुभ ग्रह से पीड़ित हो तो जुआरी, सट्टेबाज, चोर या पेशेवर हत्यारा या नकली डाक्टर वृत्ति होती है । अग्नि से संबंधित अन्य कार्य जैसे अतिसवाजी, माचिस, बीड़ी सिगरेट, ईट भट्टा, लुहारी, धातुकर्म, तांबा इत्यादि का व्यापार होता है। ब्लड बैंक, मैकेनिक, गैराज एवं आटो पार्टस् की दुकान, रसायन, शस्त्रों की दुकान, लाल रंग की वस्तुओं का व्यापार, चाय, कॉफी, बिजली का काम, इत्यादि से आजीविका होती है।

बुध की वृत्ति– काव्य, पुरोहिताई, शास्त्र, वेदान्त, जप तथा शिल्पकला। सेल्समैन, कमीशन कार्य, ट्रेडिंग, सम्पादन, प्रिंटिंग प्रेस, समाचार पत्र, दूरसंचार कार्य, डाक कार्य, कम्प्यूटर व्यवसाय, ब्याज से वृत्ति, राजस्व संग्रहण संबंधी कार्य जैसे बैंक कैशियर, इन्कम टैक्स, सेल्स टैक्स विभाग की नौकरी, बुद्धि एवं चतुराई से किये जाने वाले कार्य जैसे गणित अध्यापक, ज्योतिषी, अनुवादक, लेखक, वकील इत्यादि। इम्पोर्ट, वर्तन, पान मसाला, अगरबत्ती, आयुर्वेद, मुर्गीपालन, कारपेट, चित्रकला, शेम्पू, दंत मंजन, पन्ना या हरे रंग की वस्तुओं का व्यापार बुध के अधीन होता है।

गुरु की वृत्ति – पुराण, शास्त्र, धार्मिक ग्रंथों के पाठ, ब्राह्मणों की सेवा या अध्यापन से वृत्ति होती है । जज, मंत्री, ज्योतिषी, मन्दिर के पुजारी, समाज सेवी, मठाधीश, बड़े वकील, होलसेलर, भवन निर्माण, उपदेशक, वाहन व्यवसाय, फाइनेंस कंपनियों, उच्चस्तरीय पद, कचहरी की नौकरी, मैनेजर, बड़ा प्रकाशन या शेयर बाजार में उच्चपद का कारक गुरु होता है । टेंट हाउस, बैंड, अनाज की दुकान एवं खेल सामाग्री की दुकान गुरु की वृत्ति होती है ।

शुक्र की वृत्ति – चावल, गुड़, हाथी, घोड़ा, गाय घी, हीरा रत्न, रेशमी वस्त्र, बूटीक, ब्यूटी पार्लर, सौन्दर्य प्रसाधन वस्तऐं, महिला चिकित्सक, मैरिज गार्डन, महंगे वस्त्र, फर्नीचर की दुकान, विदेशी मदिरा, फूलों का व्यापार, इंटीरियर डेकोरेटर एवं मनोरंजन के साधनों का व्यापार, संगीत, नाटक या फिल्मों में अभिनय कला, साईन बोर्ड, कांच, माईका एवं पेन्ट का व्यवसाय ।

शनि की वृत्ति – शनि की वृत्ति में परिश्रम अधिक होता है। यदि जन्म कुण्डली में शनि सबसे बलवान है तो जातक किसी वर्ग का नेता होता है। शनि की शुभ स्थिति में जातक किसी न किसी रूप में न्यायालयीन प्रक्रिया से जुड़ा हुआ होता है। लोहा, चमड़ा, तेल, सीसा, कोयला, गैस, काले रंग की वस्तुओं, शेयर, डीजल-पेट्रोल, खनिज पदार्थ, कबाड़खाना एवं हड्डियों का व्यापार, मजदूर यूनियन, ठेकेदार, मिस्त्री, लेवर, कुली, माली एवं अन्य निम्न स्तरीय सेवा कार्य शनि के अधीन होते हैं ।

राहू की वृत्ति– जुआ, सट्टा, देशी शराब, गैर कानूनी कार्य, मुर्गीपालन, मांस-मछली व्यापार, काला बाजारी, जहरखुरानी, कीटनाशक दवा इत्यादि वृत्ति होती है । यदि राहु शुभ स्थिति में हो तो रबड़ उद्योग, राजनीति, जिला या नगर परिषद्, विदेश व्यापार, कम्बल, पुराने वस्त्र या वाहन का व्यापार, जानवर की सवारी करवाने का काम रेलवे कर्मचारी, बिजली कार्य एवं दादा (पितामह) से धन लेकर व्यापार करने की वृत्ति होती है ।

वृत्ति की प्रकृति

प्रत्येक ग्रह कुछ शुभ तथा कुछ अशुभ (खराब) वृत्तियों का कारक होता है। यदि वृत्ति कारक ग्रह का अशुभ ग्रह से दृष्टि, युति, आदि किसी भी प्रकार का संबंध हो तो जातक अशोभनीय या पापकर्म वृत्ति वाला होता है, अन्यथा शुभ कर्म से आजीविका चलती है ।

वृत्ति का स्तर

यदि वृत्ति कारक ग्रह के साथ-साथ लग्नेश, कर्मेश, पंचमेश एवं भाग्येश प्रवल हो तो आजीविका उच्च स्तर की होती है तथा धनवान होता है । यदि इनमें से कुछ ग्रह बलहीन हों या अस्त हों तो मध्यम स्तर की वृत्ति होती है। यदि सभी ग्रह निर्वल हों तो जातक ग्रह कारक वृत्ति अपनाने पर भी असफल रहता है ।

विवाह समय ज्ञान

यदि शुभ ग्रहों से युत या दृष्ट हो तो विवाह समय पर ही होता है। यदि शुभ एवं अशुभ दोनों का योग हो तो विवाह कुछ विलम्ब से होता है। यदि सप्तमेश अस्त एवं निर्बल होकर क्रूर ग्रहों से पीडित हो तो विवाह सुख नहीं होता है।

(१) गुरु गोचर से

– लग्नेश स्पष्ट एवं सप्तमेश स्पष्ट के राशि अंशादि का योग करने पर जो राशि आवे,उसमें गुरु गोचर आने पर विवाह होता है। या

– चंद्र स्पष्ट एवं सप्तमेश स्पष्ट के राशि अंशादि का योग करने पर जो राशि आवे,उसमें गुरु गोचर आने पर विवाह होता है। या

– लग्न या चंद्रमा से त्रिकोण में गुरु गोचर आने पर विवाह होता है।

(२) महादशा या अन्तर्दशा से

– सप्तमेश जिस राशि में या जिस नवांश में स्थित हो उस राशि के स्वामी की दशा में।

– शुक्र या चंद्रमा में से जो बलवान हो उसकी दशा में विवाह कहना चाहिये।

गुरु गोचर एवं दशा देखकर सम्यक काल ज्ञान के विवाह समय का सटीक निर्णय लेना चाहिये।

ग्रह गुणधर्म

सूर्य एवं शनि में पिता पुत्र का सम्बन्ध होने से परस्पर वेध नहीं होता है। चन्द्रमा के गोचर में बुध का वेध नहीं होता है।

ग्रह	राशिभोग समय	उच्च राशिअंश	मूल त्रिकोण	नक्षत्र स्वामित्व	पूर्णदृष्टि	त्रिपाद	द्विपा.	१पाद	भाग्योदय आयुवर्ष	गोचर में शुभ स्थान	विद्ध स्थान	फल समय	तत्व	रस	गुण	स्थान	पाद	रंग	नेष्टफल समन हेतु	कारक		राजादि विभाग	लिंग	वर्ण	दिशा स्वामी	ऋतु	उदय	अवस्था	कालपुरुष	शुभ अशुभ	विफल स्थान
																				भाव	नित्य										
सूर्य	१ मास	मेष १०	सिं. १.२०	कृ.,उ.षा.उ.फा.	७ भाव	४,८	५,९	३,१०	२२ वर्ष	३, ६, १०, ११	९,१२,४,५	५ दिन पूर्व से	अग्नि	कटु	सत्व	वन	चतु.	मेहरून	हरिवंश पु. श्रवण	१,९,१०	आत्मा	राजा	पुरु.	क्ष.	पूर्व	ग्रीष्म	पृष्ट	वृद्ध	मुख सिर	उग्र	–
चन्द्र	२।दिन	वृष ३	वृ. ४.३०	रोहि.,हस्त,श्र.	७ भाव	४,८	५,९	३,१०	२४ वर्ष	३,६,७,१०,११	५,९,१२,२,४,८	३ घटी पूर्व से	जल	लवण	सत्व	जल	बहु.	गौर	त्रिपुर जाप	४	मन	रानी	स्त्री	वै.	वाय.	वर्षा	शीर्ष	प्रौढ़	हृदय	क्षीणपापी	सूर्ययुति
मंगल	४५ दिन	मक.२८	मे. १.१२	मृग.,चि.,धनि.	४,७,८	–	५,९	३,१०	२८ वर्ष	३, ६, ११	१२,९,५	८ दिन पूर्व से	अग्नि	तीखा	तम	वन	चतु.	लाल	रुद्री जाप	३, ६	पराक्रम	सेनापति	पुरु.	क्ष.	दक्षि.	ग्रीष्म	पृष्ट	युवक	पेट,पीठ	पाप ग्रह	२ भाव
बुध	१ मास	क. १५	कन्१६.२०	आश्ले.ज्ये.रेव.	७ भाव	४,८	५,९	३,१०	३२ वर्ष	२,४,६,८,१०,११	५,३,९,१,८,१२	२ दिन पूर्व से	भूमि	मिश्रित	रज	ग्राम	द्विपद	साँवला	दान	४, १०	वाणी	युवराज	नपुं.	शू.	उत्त.	शरद	शीर्ष	कुमार	हाथ पैर नस	युतिवस	४ भाव
गुरु	३६१ दि.	कर्क ५	धनु १.१०	पुन.विशा.पू.भा.	५,७, ९	४,८	–	३,१०	१६ वर्ष	२,५,७,९,११	१२,४,३,१०,८	४५ दिन पूर्व से	आका.	मीठा	सत्व	ग्राम	द्विपद	गौर	अमा. व्रत	५,१०,११	ज्ञान,सुख	मंत्री	पुरु.	ब्रा.	ईशा.	हेमन्त	उभय	वृद्ध	कमर जांघ	शुभ	५ भाव
शुक्र	१ मास	मीन २७	तुला १.१५	भर.पू.फा. पू.षा.	७ भाव	४,८	५,९	३,१०	२५ वर्ष	१,२,३,४,५, ८,९,११,१२	८,७,१,१०,९ ५,११,३,६	४ दिन पूर्व से	जल	खट्टा	रज	ग्राम	द्विपद	साँवला	गौदान	७	काम	मंत्री	स्त्री	ब्रा.	अग्नि	वसन्त	शीर्ष	प्रौढ़	गुप्तांग	शुभ	६ भाव
शनि	ढ़ाई वर्ष	तु. २०	कुं १.२०	पुष्य,अनु.उ.भा.	३,७,१०	४,८	५,९	–	३६ वर्ष	३, ६, ११	१२,९,५	६ माह पूर्व से	वायु	कसैला	तम	संधि	भुजंग	काला	मृत्युंजयजप	६,१०,१२	दुःख	सेवक	नपुं.	जरा.	पश्चि.	शिशिर	पृष्ट	अतिवृद्ध	घुटने से नीचे	पाप ग्रह	–
राहु	डेढ़ वर्ष	मिथु.१५	कुम्भ	आर्द्रा,स्वा.शत.	५,७, ९	४,८	५,९	३,१०	४२ वर्ष	३, ६, ११	१२,९,५	३ माह पूर्व से	वायु	विचित्र	तम	विवर	अपद	घूम्र	भुजंग दान	–	–	–	–	निषा.	नैऋ.	–	पृष्ट	वृद्ध	–	पाप ग्रह	–
केतु	डेढ़ वर्ष	धनु १५	सिंह	अश्व.,मघा,मूल	५,७, ९	४,८	२,१०	–	४२ वर्ष	३, ६, ११	१२,९,५	३ माह पूर्व से	वायु	विचित्र	तम	विवर	अपद	घूम्र	ध्वजा दान	–	–	–	–	निषा.		–	–	वृद्ध	–	पाप ग्रह	–

राशि गुणधर्म

राशि	राशि स्वा.	काल पुरुष	उदय	द्विपद आदि	दिग्वल भाव	स्वभाव	लिंग	दिशा स्वा.
मेष	मंगल	सिर	पृष्ट	चतु.	१० भा.	चर	पुरु.	पूर्व
वृष	शुक्र	मुख	पृष्ट	चतु.	१० भा.	स्थिर	स्त्री	दक्षि.
मिथुन	बुध	छाती	शीर्ष	द्विपद	लग्न	द्विस्व.	पुरु.	पश्चि
कर्क	चंद्र	हृदय	पृष्ट	जलच.	४ भा.	चर	स्त्री	उत्त.
सिंह	सूर्य	पेट	शीर्ष	चतु.	१० भा.	स्थिर	पुरु.	पूर्व
कन्या	बुध	कमर	शीर्ष	द्विपद	लग्न	द्विस्व.	स्त्री	दक्षि
तुला	शुक्र	आँत	शीर्ष	द्विपद	लग्न	चर	पुरु.	पश्चि.
वृश्चिक	मंगल	गुप्तांग	शीर्ष	कीट	७ भा.	स्थिर	स्त्री	उत्त.
धनु	गुरु	जॉघ	प्रष्ठ	द्वि.चतु	१, १०	द्विस्व.	पुरु.	पूर्व
मकर	शनि	घुटने	प्रष्ठ	चतु,ज.	१, ४	चर	स्त्री	दक्षि.
कुंभ	शनि	पिंडली	शीर्ष	द्विपद	लग्न	स्थिर	पुरु.	पश्चि.
मीन	गुरु	पैर	उभय	जलच.	४ भा.	द्विस्व.	स्त्री	उत्त.

राशि	बीज	सजल	तत्व	पुष्करांश	पुष्कर नवांश	आकार
मेष	अल्प	निर्जल	अग्नि	१४ वां	७,९ वां	लघु
वृष	अल्प	निर्जल	पृथ्वी	२१ वां	३,५ वां	लघु
मिथुन	वांझ	निर्जल	वायु	२४ वां	६,८ वां	दीर्घ
कर्क	सवीज	सजल	जल	७ वां	१,३ वां	सम
सिंह	वांझ	निर्जल	अग्नि	२१ वां	७,९ वां	दीर्घ
कन्या	वांझ	निर्जल	पृथ्वी	१४ वां	३,५ वां	दीर्घ
तुला	अ.,निर्वीज	सजल	वायु	२४ वां	६,८ वां	दीर्घ
वृश्चिक	नि.,सवीज	सजल	जल	७ वां	१,३ वां	दीर्घ
धनु	वांझ	निर्जल	अग्नि	२१ वां	७,९ वां	सम
मकर	सवीज	सजल	पृथ्वी	१४ वां	३,५ वां	सम
कुंभ	सवीज	सजल	वायु	२४ वां	६,८ वां	सम
मीन	सवीज	सजल	जल	७ वां	१,३ वां	सम

॥ नक्षत्र गुणधर्म एवं रोग उत्पत्ति में कष्ट समय सारणी ॥

नक्षत्र	तारा	संज्ञा	स्त्री पु.	मण्डल	शून्य संज्ञा	देवता	कष्टदिन	दान पदार्थ	चरणगत कष्ट दिन	स्वामी	जापार्थ नक्षत्र मंत्राणि
अश्वि.	३	ल.क्षि.	पु.	वायु	चैत्र,पौष	अश्विनीकु.	९	भोजन	९-११-१-२०	केतु	ॐ अश्विनौ तेजसाचक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्य्यम् वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम्। ॐ अश्विनीकुमारेभ्यो नमः।
भर.	३	उ.क्रू.	पु.	अग्नि	फाल्गुन	यमराज	११	गौअन्न	०-८०-४०-११	शुक्र	ॐ यमायत्वा मखायत्वा सूर्य्यात्वा तपसे देवस्यत्वा सवितामध्वा नक्तु पृथिव्या स ꣺ स्पृशस्पाहिअर्चिरसि शोचिरसि तपोऽसि।। ॐ यमाय नमः
कृति.	६	मिश्र	पु.	अग्नि	कार्तिक	अग्नि	९	स्वर्ण	९-११-१६-१७	सूर्य	ॐ अयमग्नि सहस्त्रिणो वाजस्य शांति ꣺ वनस्पतिः मूर्द्धा कबोरयीणाम्।। ॐ अग्नये नमः।
रोहि.	५	ध्रुव	पु.	महेन्द्र	चैत्र	ब्रम्हा	७	घृत	३-९-१८-३०	चन्द्र	ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सूरूचोवेन आवः सुबुध्न्या उपमा अस्यविष्टाः सतश्रचयोनिमसतश्चविधिः।। ॐ ब्रह्मणे नमः।
मृग.	३	मृ.मै.	पु.	वायु	--	चन्द्रमा	३०	तिल	९-५-७-१०	मंगल	ॐ सोमेधनु ꣺ सोमाअवन्तुमाशु ꣺ सोमोवीरः कर्मणयन्ददाति यदत्यविदध्य ꣺ सभेयम्पितृ श्रवणयोम ।। ॐ चन्द्रमसे नमः।
आर्द्रा	१	ती.दा.	स्त्री	वरुण	पौष	रुद्रशिव	मृ.तु.	गौदान	०-१८-०-०	राहु	ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवऽउतोत इषवे नमः बाहुभ्यां मुतते नमः ।। ॐ रूद्राय नमः।
पुन.	४	चर	स्त्री	वायु	--	अदिति	७	पीतल	७-१४-२-२१	गुरु	ॐ अदितिद्यौरदितिरन्तरिक्षमदिति र्माताः स पिता स पुत्रः विश्वेदेवा अदितिः पंचजना अदितिर्जातम अदितिर्जनित्वम् ।। ॐ आदित्याय नमः।
पुष्य	३	ल.क्षि.	स्त्री	अग्नि	ज्येष्ठ	बृहस्पति	७	तिल	६-७-१०-२१	शनि	ॐ बृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्ज्नेषु। यदि दयच्छ वसऋतप्रजातदस्मासुद्रविणं धेहि चित्रम् ।। ॐ गुरुवे नमः।
आश्ले.	५	ती.दा.	स्त्री	वरुण	--	सर्पदेव	मृ.तु.	गोऽजादि	०-०-४-१०	बुध	ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्योये के च पृथिवीमनुः। ये अन्तरिक्षे ये दिवितेभ्यः ।। ॐ सर्पेभ्यो नमः।
मघा	५	उ.क्रू.	स्त्री	अग्नि	कार्तिक	पितर	२०	वस्त्र	१५-७-१७-२०	केतु	ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः। प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः अक्षन्न पितरोऽमीमदन्त पितरोतितृपन्त पितरःशुन्धध्वम् ।। ॐ पित्रभ्ये नमः।
पू.फा.	२	उ.क्रू.	स्त्री	अग्नि	आषाण	भग सूर्य	मृ.तु.	भोजन	०-१५-०-३०	शुक्र	ॐ भगप्रणेतर्भगसत्यराधो भगे मां धियमुदवाददन्नः। भगप्रजननाय गोभिरश्वैर्भगप्रणेतृभिर्नुवन्तः स्यामः।। ॐ भगाय नमः।
उ.फा.	२	ध्रुव	स्त्री	वायु	--	अर्यमासूर्य	७	अन्न	७-१४-७-६०	सूर्य	**ॐ दैव्या वद्धव्यू च आगत ꣺ रथेन सूर्य्यत्वचा। मध्वायज्ञ ꣺ समञ्जायेतं प्रत्नया यं वेनश्चित्रं देवानाम्।। ॐ अर्यमणे नमः।**
हस्त	५	ल.क्षि.	स्त्री	वायु	चैत्र	सूर्यदेव	१५	तेल	१५-१७-१५-०	चन्द्र	ॐ विभ्राडवृहत्पिवतु सोम्यं मध्वार्य्युदधज्ञ पत्ता व विहुतम् वातजूतोयो अभिरक्षतित्मना प्रजा पुपोषः पुरूधाविराजति।। ॐ सवित्रे नमः।
चित्रा	१	मृ.मै.	स्त्री	वायु	वै.माग.	विश्वकर्मा	११	दुग्ध	११-९-९-१६	मंगल	ॐ त्वष्टातुरीयो अद्भुत इन्द्राग्री पुष्टिवर्द्धनम्। द्विपदापदायाः च्छन्द इन्द्रियमुक्षा गौत्र वयोदधुः।। त्वष्ट्रेनमः।। ॐ विश्व कर्मणे नमः।
स्वा.	१	चर	स्त्री	वायु	वैशाख	वायुदेव	मृ.तु.	गोघृत	६०-१७-३०-०	राहु	ॐ वायरन्नरदि बुधः सुमेध श्वेतः सिषीक्तिनो युतामभि श्री तं वायवे सुमनसा वितस्थुर्विश्वेनरः स्वपत्थ्या निचक्रुः।। ॐ वायवे नमः।
विशा.	४	मिश्र	नपुं.	अग्नि	मार्ग.	इन्द्रग्नि	१६	गोस्वर्ण	१५-०-४-१३	गुरु	ॐ इन्द्राग्री आगत ꣺ सुतं गार्भिर्नमो वरेण्यम्। अस्य पातं घियोषिता।। ॐ इन्द्राग्रीभ्यॉं नमः।
अनु.	४	मृ.मै.	नपुं.	महेन्द्र	--	मित्र सूर्य	स्थिर	गोघृत	६०-१२-३६-३०	शनि	ॐ नमो मित्रस्यवरूणस्य चक्षसे महो देवाय तदृत ꣺ सपर्यत दूरंदृशे देव जाताय केतवे दिवस्पुत्राय सूर्योयश ꣺ सत।। ॐ मित्राय नमः।
ज्ये.	३	ती.दा.	नपुं.	महेन्द्र	फाल्गुन	इन्द्र	मृ.तु.	तिल	६९-९-६-४	बुध	ॐ त्रातारमिंद्रमबितारमिंद्र ꣺ हवे हवेसुहव ꣺ शूरमिंद्रम् वहयामि शक्रं पुरूहुतमिंद्र ꣺ स्वास्ति नो मधवा धात्विन्द्रः ।। ॐ इन्द्राय नमः।
मूल	११	ती.दा.	पु.	वरुण	माघ	राक्षस	९	रजतपात्र	०-९-१५-६	केतु	ॐ मातेवपुत्रं पृथिवी पुरीष्यमग्नि ꣺ स्वयोनावभारूषा तां विश्वेदैवऋतुभिः संविदानः प्रजापति विश्वकर्मा विमुञ्चत ।। ॐ निऋतये नमः।
पू.षा.	२	उ.क्रू.	पु.	वरुण	--	जल	मृ.तु.	गौमुक्ता	०-१५-२४-१०	शुक्र	ॐ अपाघ मम कील्वषम् पकृल्यामपोरपः अपामार्गत्वमस्मद यदुः स्वपन्यसुवः।। ॐ अद्भ्यो नमः।
उ.षा.	२	ध्रुव	पु.	महेन्द्र	ज्ये.श्रा.	विश्वदेव	३०	भोजन	३०-२४-२६-१६	सूर्य	ॐ विश्वे अद्य मरूत विश्वऽउतो विश्वे भवत्यग्रयः समिद्धाः विश्वेनोदेवा अवसागमन्तु विश्वेमस्तु द्रविणं बाजो अस्मै।। ॐ अद्भ्यो नमः।
श्रव.	३	चर	पु.	महेन्द्र	श्रा.मा.	विष्णु	११	श्रीफल	६०-२४-६-९	चन्द्र	ॐ विष्णोरराटमसि विष्णो श्नपत्रेस्थो विष्णो स्युरसिविष्णो ध्रुवेसि वैष्णवमसि विष्णवेत्वा।। ॐ विष्णवे नमः।
धनि.	४	चर	पु.	महेन्द्र	आषाण	अष्टवसु	१५	अश्वान्न	१५-४-२०-२१	मंगल	ॐ वसोःपवित्र मसि शतधारंवसोः पवित्रमसि सहस्त्रधारम्। देवस्त्वासविता पुनातुवसोः पवित्रेणशतधारेण सुप्वाकामधुक्षः।। ॐ वसुभ्यो नमः।
शत.	१००	चर	पु.	वरुण	भाद्रपद	वरूण	११	भोजनपात्र	०-४५-३-२२	राहु	ॐ वरूणस्योत्तम्भनमसिवरूणस्यस्कुं मसर्जनी स्थोवरूणस्यऋतसदनमसि।। ॐ वरूणाय नमः।
पू.भा.	२	उ.क्रू.	पु.	अग्नि	आश्विन	अजपादसूर्य	मृ.तु.	भोजन	०-१२-२१-१९	गुरु	ॐ उतनाऽहिर्वुध्न्यः श्रृणोत्वज एकपापृथिवी समुद्रःविश्वे देवा ऋता वृधो हुवाना स्तुतामंत्राः कविशस्तता अवन्तु।। ॐ अजैकपदे नमः।
उ.भा.	२	ध्रुव	पु.	वरुण		अहिर्बुध्नयसूर्य	७	अन्न	१०-३-९-१५	शनि	ॐ शिवोनामासिस्वधितिस्तो पिता नमस्तेऽस्तुमामाहि ꣺ सो निवर्त्तयाम्यायुषेऽत्राद्याय प्रजननायर रायम्पोषाय (सुप्रजास्वाय)। ॐ अहिबुर्धाय नमः।
रेव.	३२	मृ.मै.	पु.	वरुण	भाद्रपद	पूषण सूर्य	स्थिर	बृष	१८-१०-९-२०	बुध	ॐ पूषन् तव व्रते वय नरिष्येभ कदाचन। स्तोतारस्तेइहस्मसि।। ॐ पूष्णमे नमः।

नष्ट अथवा चोरीगत वस्तु अभिज्ञानम्

नक्षत्र संज्ञा	नक्षत्र	मिलेगी या नहीं
अंधलोचन	रोहि.पुष्,उ.फा.विशा.पू.षा.धनि.रेव.	पूर्व में शीघ्रमिले
मंदलोचन	मृग,आश्ले,हस्त,अनु,उषा.शत,अश्वि	दक्षिणे ३ दिन
मध्यलोचन	आर्द्रा.मघा,चित्रा,ज्ये.अभि,पूभा.भर.	पश्चिमे ६४ दिन
सुलोचन	पुन.पूफा.स्वा.मूल,श्रव.उभा.कृति.	उत्तरे नष्टं

अंग स्फुरण फल

मस्तक-भूमि लाभ। कंधा-भोग समृद्धि। भोंह-सुख प्राप्ति। गाल-शुभ। नेत्र-धन प्राप्ति। नाक-सुख प्राप्ति। हाथ-सद् धनलाभ। छाती-विजय। हृदय-वांछितसिद्धि। कमर-आनंद। कटिपृष्ठ-प्रीति। भग-पति प्राप्ति। कोख-प्रीति। उदर-कोष प्राप्तिलिंग-स्त्री लाभ। गुदा-वाहन लाभ। वृषण-पुत्र लाभाद्ध। ओष्ट-प्रिय वस्त। हनु-भय। कण्ठ-ऐश्वर्य लाभ। ग्रीवा-रिपु भय। प्रष्ठ-युद्ध में हार। मुख-मधुर भोजन। वाहु-प्रिय प्राप्ति, वाहु मध्य-धनागम। उरू-वस्त्र लाभ। धुटने-शत्रु वृद्धि। जंधा-स्वामी प्राप्ति। पैरऊपरीभाग-स्थान लाभ।

पल्ली (छिपकली) पत्तन अंग स्थान अनुसार फल

सिर-पदलाभ। भ्रूमध्य-लाभनाक-व्याधि। दायां कान-आयु वृद्धि। वायां कान-बहु लाभ। नेत्र-धन प्राप्ति। दाया हाथ-राज्य लाभ। वायां हाथ-राज भय। नाभि-बहुधन। कमर-वाहनलाभ। गला-शत्रु नाश। स्तन-दुर्भाग्य। पीठ-वुद्धिनाशद्ध। घुटने-शुभता। जंघा-शुभ। हथेली-वस्त्र लाभ। कंधे-विजय। हृदय-धन लाभ। दाहिना पैर-यात्रा। वाया पैर-

॥ काक स्पर्श फल ॥

यदि कौआ मस्तक स्पर्श करे तो धननाश। कमर एवं कन्धे पर स्पर्श भी अशुभ होता है। स्त्री के मस्तक पर स्पर्श पति-पुत्र नाशक होता है। काक स्पर्श होने पर जो वस्त्र पहने हुए हों उन्हीं के साथ स्नान कर वस्त्रों को दान कर देना चाहिये। काक मैथुन दृष्टिगोचर हो तो ६ मास में मृत्यु तुल्य कष्ट होता है। शान्ति हेतु उड़द के आटे की काक प्रतिमा बनाकर मिट्‌टी के वर्तन में स्थापित कर उड़द की मिठाई एवं घी से पूजन कर विसर्जन

॥ स्वप्न फल ॥

स्वस्थ शारीरिक एवं मानसिक अवस्था में रात्रि कालीन स्वप्न ही फलीभूत होते हैं। रात्रि के प्रथम प्रहर या मध्यरात्रि के पहले का स्वप्न १ वर्ष में, मध्य रात्रि से ३ वजे का स्वप्न १ मास में एवं रात्रि ३ वजे से सूर्योदय तक का स्वप्न सात दिन में फलीभूत होता है। शुभ स्वप्न आने पर यदि जाग गये हों तो पुन: सोना नहीं चाहिये। अपितु सुवह तक जागते हुये इष्ट देव का स्मरण कर प्रात: देवपूजन कर किसी आदरणीय व्यक्ति को स्वप्न सुनाना चाहिये। अशुभ स्वप्न आने पर तत्काल दूसरे को सुनाकर सो जाना चाहिये। स्वप्न में आदरणीय व्यक्ति, ब्राम्हण, सन्यासी, पित्र, पिता, मित्र देवता या उच्च अधिकारी जो कुछ भी कहते हैं वह प्राय: सत्य फलित होता है।

॥ शुभ स्वप्न - फल ॥

स्वेत वस्त्रधारी स्त्री - शुभ सूचक। स्वयं की विजय देखना - लाभ। स्व रोदन,मरण दृष्य -दु:खनाशक। दूसरे का वध करना - सुख वृद्धि। बिष्ठा मैला खाना या देखना-धन वृद्धि। स्त्री सम्भोग - मनोकामना पूर्ती। सेना का दर्शन - शुभ सूचक। भोजन देखना या करना- पदोन्नति। नदी पार करलेना -दु:खों से छुटकारा। स्वच्छ आकाश, धूप - पद लाभ। लाल पुष्प - भाग्योदय। स्वबंधन, रूधिर देखना - शुभ सूचक। मांस भक्षण - शुभ सूचक। कमल देखना-महान व्यक्ति से मिलन। सर्वत्र वर्षा देखना - प्रसन्नता वृद्धि। अर्थी देखना - रोगमुक्ति, धनागम। स्वयं की मृत्यु देखना - आयु वृद्धि। अस्त्र शस्त्र देखना - लाभप्रद। वहता हुआ पानी देखना-दु:ख दूर हों। चाँदी, रत्न, दीपक, शेर, हाथी, घोड़ा, फलदार वृक्ष, दूध, दही देखना- शुभ। आकाश में उड़ना-उन्नति। पहाड़ पर चढ़ना-उन्नति। देव दर्शन - सर्वसुख। प्रज्वल्लित अग्नि- दु:खनाश। शव देखना - मनोकामनापूर्ण। सवारी करना - पदलाभ। फल फूल - शुभ समाचार। सज्जन पुरुष - सुखद। उच्च अधिकारी- सुखद। लहलहाती फसल- शुभता। कन्या, समुद्र - धनलाभ।

॥ अशुभ स्वप्न - फल ॥

ऊचे स्थान से गिरना -दुर्भाग्य। दलदल में फसना, पानी में नहीं तैर पाना या डूवना - संकट सूचक। विना अग्नि के धुआं-हानि, विवाद। भयानक जन्तु, राक्षस - अशुभ। वादलों सहित आकाश - विपत्ति। बिल्ली या बंदर काटे - रोग संकट। आग जलाकर पकड़ना- कष्ट। सूखी लकड़ी या वृक्ष - विपत्ति। आँधी में धिरना - मुसीवत। पत्थर देखना - शत्रु वृद्धि। लोमड़ी, सियार देखना -शत्रु वृद्धि। कोयला देखना - व्यर्थ झगड़ा। भूकंप देखना - संकट सूचक। दांत टूटते देखना - दु:ख सूचक। आकाश में सूर्य, ग्रहण, गिद्ध, काला वस्त्र, आकाश में विजली चमकना, स्वयं पर हंसना, गीत गाना, भूंख लगना, दूसरे के मरण का दृश्य, गधे की सवारी करना, राख देखना, घी या तेल से लिप्त होना अशुभ सूचक होते हैं।

विविध संज्ञा

त्रिदेव - ब्रम्हा, विष्णु, महेश। त्रिदेवी - महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती। पंचदेव - सूर्य, गणेश, देवी, शिव, विष्णु। पंचोपचार - गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य। पंच पल्लव - पीपल, आम, गूलर, वट, पाकर (अशोक)। पंचामृत - गोघृत, गोदुग्ध, गोदधि, मधु, शर्करा। पंचगव्य - गोबर, गोमूत्र, गोदुग्ध, गोघृत, गोदधि। सप्तधान्य - जौ, गेहूँ, चावल, कागनी, मूँग, उड़द, सावा। सप्तमृतिका-गौशाला, गजशाला, अश्वशाला, वाँवी, नदीसंगम, तालाव, राजद्वार। अष्टधातु - स्वर्ण, रजत, ताम्र, पीतल, लौह, रांगा, शीशा (पारा), आरकूट। अष्टांग अर्घ्य-जल, कुशा, पुष्प, दही, अक्षत, केशर, दूर्वा, सुपारी। नव रत्न - माणिक्य, मोती, प्रवाल, पन्ना, पुखराज, हीरा, नीलम, गोमेद, लहसुनिया। दश औषधि- कूट, जटामांसी, दोनों हल्दी, मुरा, शिलाजीत, चन्दन, बच, चम्पक और नागरमोथा ये सर्वौषधि हैं। दशमहादान - गौ, भूमि, तिल, स्वर्ण, घृत, वस्त्र, धान्य, गुड़, रजत, लवण। पंच महा पावन नारियां - अहिल्या, द्रोपती, कुन्ती, तारा, मन्दोदरी स्तथा। पंचकं नां स्मरेन्नित्यं महापातक नाशनम्॥ नव नाग - अनन्तं, वासुकं, शेषं, पद्मनाभं, च कम्वलं। शंखपालं, धृतराष्टं, तक्षकं, कालियं तथा। सप्त चिरजीवी - अश्वत्थामा वलिर्व्यासो हनुमान्श्च बिभीषण:। कृप:, परशुरामश्च, सप्तैते चिरजीविन:॥ अर्जुनस्य द्वादश नामा:॥ अर्जुन:, फाल्गुन:, पार्थ:, किरीटी:, श्वेतवाहन:, वीभत्स:, विजय:, सब्यसाची, धनञ्जय:, जिष्णु:, कृष्ण:, महात्मन:।

ग्रह स्पष्ट के राशि अंश कला से नक्षत्र चरण एवं नवांश स्वामी ज्ञान चक्र

एक नक्षत्र १३ अंश २० कला का होता है। एक नक्षत्र के चार चरण होते हैं, अत: प्रत्येक चरण ३ अंश २० कला का होता है। जैसे मेष राशि में ०.०.० से ०.३.२० तक अश्विनी नक्षत्र का प्रथम चरण हुआ। यहां सारणी में राशि अंश कला लिखे हैं, उतने राशि अंश कला पर नक्षत्र चरण प्रारम्भ समझना चाहिए। चूंकिनक्षत्र चरण एवं नवांश का मान एकसा होता है, इसलिए नक्षत्र चरण से आगे नवांश स्वामी ग्रह भी दिया गया है। नवांश स्वामी की आवश्यकता जन्म कुण्डिली के अलावा गोचर में ग्रह के वलावल ज्ञात करने में रहती है। उदाहरण के लिए किसी दिन किसी पंचांग में सूर्योदयकालीन गुरु स्पष्ट ११.२७.३६.४७ लिखा है। इस सारिणी में मीन राशि के २६ अंश ४० कला पर रेवती नक्षत्र का ४ चरण एवं नवांशेश गुरुलिखा है। अत: उस दिन गुरुका संचार रेवती के चतुर्थ चरण एवं स्व नवांश में हो रहा है। चूकि उस समय गुरुमीन राशि में होकर मीन राशि के नवांश में भी है। अत: इस समय गुरुगोचर में वली होने से मुहूर्त्तादि प्रकरण एवं जातकों के लिए अत्यन्त शुभ है।

राशि. अं कला	नक्षत्र चरण	नवांश स्वामी	राशि. अं कला	नक्षत्र चरण	नवांश स्वामी	राशि. अं कला	नक्षत्र चरण	नवांश स्वामी	राशि. अं कला	नक्षत्र चरण	नवांश स्वामी
०.०.०	अश्वि. १	मंगल	३.०.०	पुनु. ४	चन्द्र	६.०.०	चित्रा ३	शुक्र	९.०.०	उषा. २	शनि
०.३.२०	अश्वि. २	शुक्र	३.३.२०	पुष्य १	सूर्य	६.३.२०	चित्रा ४	मंगल	९.३.२०	उषा. ३	शनि
०.६.४०	अश्वि. ३	बुध	३.६.४०	पुष्य २	बुध	६.६.४०	स्वा. १	गुरु	९.६.४०	उषा. ४	गुरु
०.१०.०	अश्वि. ४	चन्द्र	३.१०.०	पुष्य ३	शुक्र	६.१०.०	स्वा. २	शनि	९.१०.०	श्रव.१	मंगल
०.१३.२०	भर. १	सूर्य	३.१३.२०	पुष्य ४	मंगल	६.१३.२०	स्वा. ३	शनि	९.१३.२०	श्रव. २	शुक्र
०.१६.४०	भर. २	बुध	३.१६.४०	आश १	गुरु	६.१६.४०	स्वा. ४	गुरु	९.१६.४०	श्रव. ३	बुध
०.२०.०	भर. ३	शुक्र	३.२०.०	आश २	शनि	६.२०.०	विशा. १	मंगल	९.२०.०	श्रव. ४	चन्द्र
०.२३.२०	भर. ४	मंगल	३.२३.२०	आश ३	शनि	६.२३.२०	विशा. २	शुक्र	९.२३.२०	धनि. १	सूर्य
०.२६.४०	कृति.१	गुरु	३.२६.४०	आश ४	गुरु	६.२६.४०	विशा. ३	बुध	९.२६.४०	धनि. २	बुध
१.०.०	कृति.२	शनि	४.०.०	मघा १	मंगल	७.०.०	विशा. ४	चन्द्र	१०.०.०	धनि. ३	शुक्र
१.३.२०	कृति.३	शनि	४.३.२०	मघा २	शुक्र	७.३.२०	अनु.१	सूर्य	१०.३.२०	धनि. ४	मंगल
१.६.४०	कृति.४	गुरु	४.६.४०	मघा ३	बुध	७.६.४०	अनु.२	बुध	१०.६.४०	शत. १	गुरु
१.१०.०	रोहि. १	मंगल	४.१०.०	मघा ४	चन्द्र	७.१०.०	अनु.३	शुक्र	१०.१०.०	शत. २	शनि
१.१३.२०	रोहि. २	शुक्र	४.१३.२०	पू.फा.१	सूर्य	७.१३.२०	अनु.४	मंगल	१०.१३.२०	शत. ३	शनि
१.१६.४०	रोहि. ३	बुध	४.१६.४०	पू.फा.२	बुध	७.१६.४०	ज्य. १	गुरु	१०.१६.४०	शत. ४	गुरु
१.२०.०	रोहि. ४	चन्द्र	४.२०.०	पू.फा.३	शुक्र	७.२०.०	ज्ये.२	शनि	१०.२०.०	पूभा.१	मंगल
१.२३.२०	मृग. १	सूर्य	४.२३.२०	पू.फा. ४	मंगल	७.२३.२०	ज्ये. ३	शनि	१०.२३.२०	पूभा. २	शुक्र
१.२६.४०	मृग. २	बुध	४.२६.४०	उ.फा. १	गुरु	७.२६.४०	ज्ये. ४	गुरु	१०.२६.४०	पूभा. ३	बुध
२.०.०	मृग. ३	शुक्र	५.०.०	उ.फा. २	शनि	८.०.०	मूल १	मंगल	११.०.०	पूभा. ४	चन्द्र
२.३.२०	मृग. ४	मंगल	५.३.२०	उ.फा. ३	शनि	८.३.२०	मूल २	शुक्र	११.३.२०	उ.भा.१	सूर्य
२.६.४०	आर्द्रा १	गुरु	५.६.४०	उ.फा. ४	गुरु	८.६.४०	मूल ३	बुध	११.६.४०	उ.भा. २	बुध
२.१०.०	आर्द्रा २	शनि	५.१०.०	हस्त १	मंगल	८.१०.०	मूल ४	चन्द्र	११.१०.०	उ.भा. ३	शुक्र
२.१३.२०	आर्द्रा ३	शनि	५.१३.२०	हस्त २	शुक्र	८.१३.२०	पूषा. १	सूर्य	११.१३.२०	उ.भा. ४	मंगल
२.१६.४०	आर्द्रा ४	गुरु	५.१६.४०	हस्त ३	बुध	८.१६.४०	पूषा. २	बुध	११.१६.४०	रेव. १	गुरु
२.२०.०	पुन.१	मंगल	५.२०.०	हस्त ४	चन्द्र	८.२०.०	पूषा. ३	शुक्र	११.२०.०	रेव. २	शनि
२.२३.२०	पुन. २	शुक्र	५.२३.२०	चित्रा १	सूर्य	८.२३.२०	पूषा. ४	मंगल	११.२३.२०	रेव. ३	शनि
२.२६.४०	पुन. ३	बुध	५.२६.४०	चित्रा २	बुध	८.२६.४०	उषा. १	गुरु	११.२६.४०	रेवती ४	गुरु

होली के समय वायु दिशा शकुन

- होली जलते समय यदि वायु का वहाव पूर्व दिशा से हो तो सुखद, अग्निकोण से आगजनी सूचक, दक्षिण से दुर्भिक्ष सूचक, नैऋत्य से फसल को हानि कारक, पश्चिम से सामान्य, वायव्य से आंधी सूचक, उत्तर एवं ईशान्य से राष्ट्रीय संकट का सूचक होता है।

नेत्र स्फुरण फल- पुरुष का दांया एवं स्त्री का बाएं नेत्र स्फुरण शुभ सूचक होता है।

व्रत का महत्व – **वेदोक्तेन प्रकारेण कृच्छचान्द्रायणादिभि।**
शरीरशोषणं यत् तत् तप इत्युच्यते बुधै।।

व्रत एक प्रकार का तप हैं। इससे मानव की लौकिक एवं परलौकिक (अध्यात्मिक) उन्नति होती है। व्रत से पापादि की निवृत्ति होती है। व्रत से शरीर तप कर शुद्ध हो जाता है। फलस्वरूप रोग निरोधक क्षमता मानसिक शक्ति, बुद्धि चतुरता, उत्साह एवं शारीरिक शक्ति बढ़ती है। आराध्यदेव के प्रसन्न होने से जीवन काल में मनोकामनाएं पूर्ण होतीं हैं एवं शरीर त्यागने के बाद सद्गति प्राप्त होती है

व्रती के गुण – **निज वर्णाश्रमाचार, निरतः शुद्ध मानसः।**
अलुब्धः सत्यवादी च, सर्वभूत हिते रतः॥
पूर्वं निश्चयमाश्रित्य, यथावत् कर्मकारकः।
अवेदनिन्दको धीमानधिकारी व्रतादिशु।।

स्कंद पुराण के अनुसार जो अपने वर्णाश्रम के आचार-विचार से रहते हैं, निष्कपट, निर्लोभी, सत्यवादी, सब प्राणियों पर दया भाव रखने वाले, वेद के अनुयायी, बुद्धिमान एवं निश्चयकर्मी ऐसे गुणवान पुरुष, स्त्री व्रत करने योग्य होते हैं

व्रत प्रारम्भ समय एवं उद्यापन –

अस्तगते च गुरौ शुक्रे, बाले वृद्धे मलिम्लुचे।
उद्यापनमुपारम्भं, व्रतानां नैव कार्येत्। (गर्ग)
सौम्यवासराः सर्वकर्मसु भवंति सिद्धदा (रत्नमाला)
हस्तमैत्रमृगपुष्यत्रयुतरा अश्विपौष्णशुभयोगसौख्यदाः। (मुक्तक संग्रह)
कुर्यादुद्यापनं चैव समाप्तौ यदुदीरितम्।
उद्यापनं विना यत्तु तद्व्रतं निष्फलं भवेत्। (नंदिपुराण)।

गुरु एवं शुक्र के उदय रहने पर भद्रादि कुयोग एवं मलमास त्याग कर, शुभ वारों में, अश्विनी, मृगशिरा, पुष्य, हस्त, तीनों उत्तरा, अनुराधा, रेवती नक्षत्रों में, शुभ योगों में व्रत प्रारंभ करने पर या उद्यापन करने पर मनोकामना पूर्ण होकर सुख मिलता है।

व्रत भंग कब होता है?

१. **क्रोधात् प्रमादाल्लोभद् वा व्रतभंगो भवेद्** ।(गरुणपुराण)
२. **असकृज्जलपानाश्च सकृत्ताम्बूलभक्षणात्।**
उपवासः प्रणश्येत दिवास्वापाच्य मैथुनात् ॥(विष्णु पुराण)

विभिन्न पुराणों के अनुसार दिन में सोने से, बार-बार जल पीने से, तांबूल (पान) चबाने से, स्त्री सहवास करने से, क्रोध, लोभ, हिंसा इत्यादि मनोविकार उत्पन्न होने पर, अयोग्य हविष्य खाने पर व्रत भंग हो जाता है।

व्रत भंग कब नहीं होता?

अष्टौ तान्य व्रतघ्नानि, आपो मूलं फलं पयः।
हविर्ब्राम्हण काम्या च, गुरोर्वचनमौषधम्॥ (पद्मपुराण)।

जल, फल, मूल, दूध, हवि, ब्राह्मण की इच्छा, ओषधी और गुरु (पूज्य जनों) के वचन – इन आठ से व्रत भंग नहीं होता है।

व्रत पर्व उपयोगी काल प्रमाण

व्रत, उत्सव एवं त्योहार के दिन के निर्णय में तिथि, नक्षत्र, योग, करण एवं कर्मकाल इत्यादि के संयोग का विचार करना होता है। कुछ प्रमुख व्रत-पर्वों का निर्णय आगे दिया जा रहा है, जिनमें शास्त्रीय पारिभाषिक शब्दों का अर्थ पहले जान लेना आवश्यक है जो कि इस प्रकार है –

दिन – आज के सूर्योदय से कल के सूर्योदय तक एक दिन होता है। एक दिन में ६० घटि(२४ घंटे) होते हैं। एक दिन में ८ प्रहर होते हैं। एक प्रहर ३ घंटे का होता है।

दिनमान एवं रात्रिमान –

सूर्योदय से सूर्यास्त तक का समय दिनमान होता है। ग्रीष्म ऋतु में दिनमान ३० घटिसे अधिक और शीत ऋतु में ३० घटि से कम होता है। दिनमान अक्षांश भेद से विभिन्न स्थानों पर पृथक-पृथक होता है। ६० घटिमें से दिनमान घटाने पर रात्रिमान होता है।

मुहूर्त –

दिनमान या रात्रिमान का १५वां भाग एक मुहूर्त होता है। अतः एक दिनमान में १५ मुहूर्त होते हैं। यदि दिनमान ३० घटि हो तो एक मुहूर्त दो घटि यानि ४८ मिनट का होगा। सूर्योदय से तीन मुहूर्त तक प्रातःकाल, तीन मुहूर्त से ६ तक संगवकाल, ६ से ९ मुहूर्त तक मध्याह्नकाल, ९ से १२ तक अपराह्नकाल, १२ से १५ मुहूर्त तक सायंकाल होता है। इस प्रकार दिनमान में ३-३ मुहूर्त के ५ भाग होते हैं।

ऊषाःकाल –

सूर्योदय से तीन मुहूर्त अर्थात् ६ घटि या २ घंटा २४ मिनट पहले से ऊषाःकाल लग जाता है। यहां रात्रिमान का १५वां भाग लेना चाहिए।

अभिजित्काल –

दिनमान का आठवां मुहूर्त अभिजित कहलाता है। यह मध्यान्हकाल से २४ मिनट पहले से २४ मिनट बाद तक होता है।

प्रदोषकाल –

प्रदोषो अस्तमया दूर्ध्वं, घटिका द्वयमिष्यते। (माधव)

सूर्यास्त से एक मुहूर्त यानि दो घटि अथवा ४८ मिनट तक प्रदोषकाल होता है। मतान्तर से तीन घटि तक भी प्रदोषकाल कहा गया है।

निशीथकाल –

ठीक अर्धरात्रि का समय निशीथकाल कहलाता है। रात्रिमान का आठवां मुहूर्त निशीथ कहलाता है। यह अर्धरात्रि से २४ मिनट पहले से २४ मिनट बाद तक होता है।

पूजन अर्चन कॉल–

पूर्वान्हो दैविकः कालो मध्यान्हश्चापि मानुषः।
अपरान्हः पितृणां तु मायान्हो राक्षसः स्मृतः।। (महिर्षी व्यास)।

प्रातः काल देवों का, मध्यान्ह मनुष्यों का, अपरान्ह पितरों का एवं सायंकाल राक्षसों का समय है। अतः यथा योग्य काल में दानादि से यथोचित फल मिलता है।

कर्म काल तिथि –

कर्मणो यस्य यः कालस्तत्कालव्यापिनीतिथिः।
तया कर्मणि कुर्वीत ह्रासवृद्धि न कारणम्।। (वृद्ध याज्ञवल्यक्य)

जिस व्रत उपवास या पर्व संबंधी कर्म के लिए शास्त्रों में जो समय नियत है, उस समय यदि व्रत की तिथि मौजूद हो तो उसी दिन व्रत संबंधी कार्य ठीक समय पर करना चाहिए।

तिथियों के प्रकार

१. अखंडा एवं खंडा तिथि – जो तिथि सूर्योदय से सूर्यास्त तक व्याप्त रहे वह अखंडा और जो सूर्योदय से दोपहर (दिनमान के आधे भाग) तक न रहे वह खंडा तिथि होती है। खंडा तिथि में व्रत प्रारंभ या उद्यापन नहीं करना चाहिए।

२. पूर्व विद्धा – आज जिस तिथि पर हम विचार कर रहे हैं यदि वह तिथि पिछली तिथि से पिछले दिन संयुक्त होकर आई हो तो आज की तिथि पूर्व विद्धा कहलाती है। उदाहरण के लिये आज मंगलवार को सूर्योदय के समय एकादशी तिथि है, पिछले दिन (सोमवार को) पिछली (दशमी तिथि) रात १ वजे तक थी और एकादशी लग गई थी। यानि की दोनों तिथियां पिछले दिन रात १ वजे संयुक्त थीं। अतः यहां एकादशी पूर्व विद्धा कहलायेगी। यह तिथि आने वाले अगले सूर्योदय के पहले ही समाप्त होती है।

३. पराविद्धा – आज जिस तिथि पर हम विचार कर रहे हैं यदि वह तिथि अगली आने वाली तिथि से अगले आने वाले दिन संयुक्त हो तो आज की तिथि परा विद्धा कहलाती है। यह तिथि आने वाले अगले सूर्योदय के वाद समाप्त होती है।

४. युक्ता तिथि – किसी एक दिन एक तिथि समाप्त होती है उसी समय दूसरी तिथि प्रारंभ होती है ऐसी स्थिति में दोनों तिथियां परस्पर युक्ता तिथियां होती हैं। उपरोक्त उदाहरण में सोमवार की रात्रि में १ वजे दशमी तथा एकादशी संयुक्त होने से हम यह कहेंगे कि सोमवार को दशमी तथा एकादशी युक्ता तिथियां हैं।

५. शुद्धा तिथि – 'सूर्योदयारंभ पुनः सूर्योदयपर्यन्ता शुद्धा – तिथिनिर्णय। अर्थात जो तिथि सूर्योदय से अगले दिन सूर्योदय तक रहे वह शुद्धा होती है, अतः स्पष्ट है कि, जो तिथि वृद्धि को प्राप्त होती है, केवल वही शुद्धा हो सकती है, अन्य सब विद्धा होतीं हैं।

कालचक्र व्यवस्था के अनुसार व्रत-पर्व के प्रकार

१. मासिक व्रत-पर्व– अधिकमास स्नान, वैशाख स्नान सर्वत्र, कार्तिक स्नान पुष्कर क्षेत्र, माघ स्नान अवध या प्रयागराज क्षेत्र। यह व्रत श्री विष्णु भगवान को समर्पित हैं।

२. प्रत्येक पक्ष की विशिष्ठ तिथियों में किये जाने वाले व्रत – संकष्ट चतुर्थी, एकादशी एवं प्रदोष व्रत पाक्षिक व्रत हैं।

३. वार्षिक पर्व – होली दिवाली इत्यादि।

प्रत्येक पक्ष की विशिष्ठ तिथियों में किये जाने वाले व्रत

१. संकष्टचतुर्थी व्रत – यह व्रत सभी मासों में कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को किया जाता है। इसमें चंद्रोदय व्यापिनी चतुर्थी ली जाती है। यदि २ दिन चंद्रोदय व्यापिनी चतुर्थी हो तो प्रथम दिन व्रत करना चाहिए। यदि कोई संकट का समय चल रहा हो या किसी संकट आने की संभावना हो तब विघ्न विनाशक श्री गणेश को समर्पित व्रत किया जाता है।

२. एकादशी व्रत – यह व्रत सभी महीनों के दोनों पक्षों की एकादशी तिथियों को किया जाता है। एकादशी में दशमी का वेध देखा जाता है। वेधकाल को लेकर विभिन्न मत हैं। कोई पहले दिन की ४५ घटि दशमी को त्यागते हैं तो कोई ५६ घटी। इस पंचांग में यदि दशमी ५६ घटि से कम हो तो एकादशी सभी मतों की होती है और यदि दशमी ५६ घटि या उससे अधिक हो तो स्मार्त उस दिन एकादशी को व्रत करते हैं एवं वैष्णव संप्रदाय का व्रत अगले दिन होता है। यदि **एकादशी का क्षय** हो तो त्रिस्पर्शस्या उपवास निषेधात् सूत्र के अनुसार आने वाले दिन (पर दिवसे) एकादशी व्रत सबका होगा।

३. प्रदोष व्रत – यह व्रत सभी महीनों के दोनों पक्षों में त्रयोदशी को भगवान शंकर की प्रसन्नता के लिए किया जाता है। इसका समय सूर्यास्त से एक मुहुर्त (दो घटि) रात्रि तक है। कृष्ण पक्ष में परविद्धा प्रदोष व्यापिनी त्रयोदशी ली जाती है और शुक्ल पक्ष में पूर्व विद्धा। (शुक्ल त्रयोदशी पूर्वा परा कृष्ण त्रयोदशी)।

वर्ष में एक बार (वार्षिक) व्रतोत्सव

प्रमुख व्रत, पर्व और उत्सवों के समय निर्णय हेतु शास्त्रीय विवेचन यहां दिया जा रहा है।

नूतन संवत्सर

चैत्रे सितप्रतिपदि यो वारोऽर्कोदये स वर्षेशः।
उदयद्वितीये पूर्वो नोदयुगलेऽपि पूर्वः स्यात्।। (ज्योतिर्निबन्ध)।

जिस दिन सूर्योदय के समय चैत्र शुक्ल प्रतिपदा हो उस दिन ही संवत्सर उत्सव एवं पूजन होता है। यदि दो दिन ऐसा हो तो पहले दिन संवत्सर मनाना चाहिए। यदि चैत्र अधिमास हो तो शुद्ध मास में संवत्सर पर्व होता है।

नवरात्र

१. प्रतिपत्सम्मुखी कार्या या भवेदापराह्विकी ।(स्कन्द पुराण)
२. अमायुक्ता न कर्त्तव्या प्रतिपत् पूजने मम ।(देवी भागवत)
३. भास्करोदयामारभ्य यावत्तु दश नाडिकाः।
प्रातःकाल इति प्रोक्तः स्थापनारोपणादिषु ।(विष्णुधर्म)।
४. सम्पूर्णा प्रतिपद्धयेव चित्रायुक्ता यदा भवेत्।
वैधृत्या वापि युक्ता स्यात् तदा माध्यन्दिने रवौ।
अभिजितु मुहूर्तं यत् तत्र स्थापनमिष्यते।(रुद्रयामल)।
५. प्रातरावाहयेद् देवीं प्रातरेव प्रवेशयेत्।
प्रातः प्रातश्च सम्पूज्य प्रातरेव विसर्जयेत।।(देवी पुराण)
६. यत्र क्षयवशादमा युक्तैव लभ्यते, न द्वितीया युता ।(तिथि चिंतामणि)।
७. दिन द्वये तद् व्याप्तौ अव्याप्तौ वा पूर्वेव ग्राह्या ।(निर्णय सिन्धु)।

भावार्थ – चैत्र, आषाढ़, आश्विन और माघ की शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक, एक वर्ष में चार नवरात्र पर्व होते हैं।

१. नवरात्र प्रतिपदा सम्मुखी शुभ होती है।
२. जिस दिन अमावस्या के बाद प्रतिपदा हो अतः उस दिन प्रतिपदा अमावस्या युक्ता होने से देवी पूजन प्रारंभ नहीं करना चाहिए।
३. सूर्योदय से दश घटी (चार घंटा) तक प्रातःकाल में घट स्थापना शुभ होती है। ४. यदि प्रातःकाल में चित्रा नक्षत्र या वैधृति योग हो तो उस समय घट स्थापना न करें। यदि उस दिन चित्रा नक्षत्र या वैधृति योग रात्रि तक रहे तो अभिजित मुहूर्त में स्थापन करें।
५. देवी का आवाहन, प्रवेशन, नित्य पूजन और विसर्जन ये सब प्रातःकाल में करना चाहिए।
६. यदि प्रतिपदा तिथि क्षय हो तो अमावस्या युक्ता प्रतिपदा को ही घट स्थापना करना चाहिए।
७. यदि प्रथमा तिथि वृद्धि हो तो प्रथम दिन घट स्थापन करना चाहिए।

गणगौर

माधव के अनुसार **मुहूर्त्तमात्रसत्वेऽपि दिने गौरीव्रतंपरा**। पराविद्धा तृतीया ग्रहण करना चाहिए।

दुर्गाष्टमी

अष्टम्या नवमी विद्धा कर्तव्या फलकांक्षिभिः।
न कुर्यान्नवमी तात दशम्या तु कदाचन।। (दीक्षित)। एवं धर्मसिन्धु।

जिस दिन नवमी युक्ता अष्टमी अर्थात अष्टमी एवं नवमी का मेल (संयुक्त) हो उस दिन शुभ फल की कामना करने वालों को दुर्गा पूजन करना चाहिए।

श्रीराम नवमी

१. **चैत्र शुक्ल नवम्यां पुनर्वसुयुतायां मध्यान्हे कर्क लग्न राश्यां श्री राम जन्मः।**

भावार्थ – जिस दिन मध्यान्ह काल में चैत्र शुक्ल प्रतिपदा एवं पुनर्वसु नक्षत्र हो उस समय रामनवमी व्रतोत्सवादि करना चाहिए।

२. **अष्टम्या नवमी विद्धा कर्तव्या फलकांक्षिभिः।**
न कुर्यान्नवमी तात दशम्या तु कदाचन।। (दीक्षित)।

भावार्थ – जिस दिन अष्टमी विद्धा अर्थात अष्टमी एवं नवमी का मेल हो उस दिन मध्यान्ह काल में राम नवमी पूजन-व्रत करना चाहिए, परन्तु जिस दिन नवमी में दशमी का वेध हो उस दिन वर्जित है।

३ **दिन द्वये मध्यान्हव्यास अव्याप्तौ वा परा, अष्टमी विद्धाया निषेधात्।** (धर्म सिन्धु)।

भावार्थ – यदि चैत्र शुक्ल नवमी दोनों दिन मध्यान्हकाल में व्याप्त हो तो दूसरे दिन रामनवमी उत्सव मनाना चाहिए।

अक्षय तृतीया

१. **वैशाख शुक्ल तृतीया अक्षया तृतीयोच्यते। सा पूर्वान्ह व्यापिनी ग्राह्या।** (निर्णय सिन्धु)।

भावार्थ – जिस दिन पूर्वान्हकाल में वैशाख शुक्ल तृतीया हो उस समय अक्षय तृतीया पर्व होत है।

२. **द्वेधा विभक्त दिन पूर्वाद्धक देश व्यापिनी दिनद्वये चेत्। त्रिमुहूर्तधिक व्याप्ति सत्वे परा** (धर्म सिन्धु)।

भावार्थ – यदि तृतीया दोनों दिन पूर्वान्हकाल में ही तो ६ घटी से अधिक व्याप्त की स्थिति में दूसरे दिन लें और यदि कम हो तो पहले दिन ही तृतीया पर्व होता है।

पशुराम जयंती

वैशाखस्य सिते पक्षे, तृतीयायां पुनर्वसौ।
निशायां प्रथमे यामे, रामाख्याः समये हरिः।।

जिस दिन प्रदोषकाल के समय (सूर्यास्त काल से २ घटि के मध्य) तृतीया तिथि हो उस दिन परशुराम जयंती मनाना चाहिए।

गंगा सप्तमी (गंगा गमन मेखलाम्)

वैशाख शुक्ल सप्तमी मध्यान्ह व्यापिनी लेना चाहिए। यदि दो दिन हो तो पहले दिन गंगा पूजन करना चाहिये।

नृसिंह जयंती

वैशाखे शुक्लपक्षे तु, चतुर्दश्यां निशा मुखे।
मजन्म संभवं पुण्यं, व्रतं पाप प्रणाशनम्।।

हेमाद्री एवं नृसिंह पुराण के अनुसार जिन दिन प्रदोषकाल के समय (सूर्यास्त काल से २ घटि तक) वैशाख शुक्ल चतुर्थी हो उस दिन नृसिंह जयंती मनाना चाहिए। यदि यह स्थिति दोनों दिन हो तो दूसरे दिन व्रतादि उत्सव मनाना चाहिए।

कदली व्रत

इस व्रत का वर्णन हेमाद्री ग्रंथ में है। यह व्रत वैशाख, माघ और कार्तिक मास में से किसी भी मास में चतुर्दशी के दिन किया जा सकता है। यह विशेष रूप से गुजरात में किया जाता है। वैशाख, माघ या कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष में जिस दिन पूर्वान्हकाल में चतुर्दशी हो उस दिन यह व्रत होता है।

रम्भातीज व्रत

ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया को जिस दिन पूर्व विद्धा तिथि हो उस दिन यह व्रत किया जाता है। पूर्व विद्धा से तात्पर्य यह है कि जिस दिन सूर्योदय से पहले ही तृतीया प्रारंभ हो चुकी हो। पिछले वार में ही पूर्व वाली तिथि (द्वितीया) का संगम हो।

गंगा दशहरा

ज्येष्ठे मासि सिते पक्षे दशभ्यां बुध हस्तयोः।
व्यतिपाते गरानन्दे कन्याचन्द्रे वृषो रवौ।
दशयोगे नरः स्नात्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते। (स्कन्द पुराण)।
ज्येष्ठे मलमासे सति तन्नैव दशहरा कार्या न तु शुद्धे। (निर्णय सिन्धु)।

ज्येष्ठ मास में शुक्ल दशमी के समय हस्त नक्षत्र, बुधवार, व्यतिपात योग, गर, करण, आनन्द योग, वृषस्थ रवि और कन्या के चंद्र हो तो यह दुर्लभ योग में गंगा स्नान या पूजनादि करने से दश प्रकार के पापों से मुक्ति मिलती है। उपरोक्त योगों में से जिस समय अधिक से अधिक योग हों उस समय का यह पूजन करना चाहिए। यदि **ज्येष्ठ अधिमास** हो तो अधिमास में ही यह पूजन पुण्यदाई होती है।

रथयात्रा जगन्नाथपुरी

यह अद्भुत रथ यात्रा आषाढ़ शुक्ल द्वितीया एवं पुष्य नक्षत्र सुयोग में होती है।

गुरु पूर्णिमा, व्यास पूजा

यह मध्यान्हव्यापिनी पूर्णिमा ग्रहण करना चाहिए। ऐसा दो दिन होने पर दूसरे दिन ग्रहण करना चाहिए।

अथैव व्यास पूजोक्ता। तत्रा त्रिमुहूर्ता चेत्परैवेति सन्यास पद्धतौ। त्रिमुहूर्ताधिकं ग्राह्यं पर्वक्षौर प्रमाणयो। (निर्णय सिन्धु)।

जिस दिन आषाढ़ पूर्णिमा कम से कम तीन मुहूर्त (६ घटि) व्याप्त रहे उस दिन व्यास पूजा का विधान है।

कजली तृतीया (श्रावण की)

तृतीया श्रावणे कृष्णा, या स्याच्छ्रवण संयुता।
तस्यां सम्पूज्य गोविन्दं, तुष्टिमग्रयामवाप्नुयात्।। (हेमाद्री एवं विष्णुधर्मोत्तर)।

श्रावण कृष्ण तृतीया को श्रवण नक्षत्र के योग में विष्णु पूजन-व्रत किया जाता है। इसमें परविद्धा तिथि ग्राह्य होती है पर तिथि से तात्पर्य चतुर्थी तिथि है।

शीतला सप्तमी

हेमाद्री एवं भविष्य पुराण के अनुसार चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ और श्रावण कृष्ण सप्तमी को मध्यान्ह व्यापिनी तिथि में शीतला देवी का पूजन किया जाता है।

दूर्वागणपति पूजन

सौर पुराण के अनुसार श्रावण शुक्ल पक्ष में मध्यान्ह व्यापिनी चतुर्थी में यह पूजन होता है।

नाग पंचमी

श्रावण शुक्ल पक्ष में पराविद्धा पंचमी को सर्प-नाग पूजन का विधान है। मदनरत्न के अनुसार, **पंचमी नाग पूजायां कार्या षष्ठी समन्विताः।**

रक्षाबंधन

भविष्योत्तर पुराण एवं मदनरत्न के अनुसार रक्षाबंधन श्रावण शुक्ल पूर्णिमा को होता है। इसमें अपरान्ह व्यापिनी तिथि ली जाती है यानि जिस दिन पूर्णिमा १८ घटी से २४ घटी तक या इससे अधिक समय तक व्याप्त रहे उस दिन रक्षाबंधन पर्व मनाना चाहिए। यदि ऐसी स्थिति दो दिन हो तो पहले दिन रक्षाबंधन सूत्र बांधना चाहिए। याद रखें कि उस समय भद्राकाल नहीं होना चाहि। **भद्रायां द्वे न कर्तव्ये श्रावणी फाल्गुनी तथा।**

कज्जली तृतीया (भाद्रपद कृष्ण पक्ष में)

यह तृतीया व्यापकरूप में मनाई जाती है। माहेश्वरी वैश्य समाज में इस व्रत को सातूड़ी तीज अथवा सतवा तीज कहा जाता है।

चन्द्रषष्ठी (भाद्रपद कृष्ण पक्ष)

भविष्यपुराण के अनुसार भाद्रपद कृष्ण पक्ष षष्ठी को चन्द्रोदय के समय चन्द्र को अर्घ्य दिया जाता है। चन्द्रमा के उदयकाल में षष्ठी का होना आवश्यक है। यह पूर्व युक्ता लेना चाहिये।

हलषष्ठी (भाद्रपद कृष्ण पक्ष)

परायुक्ता षष्ठी में हरछठ व्रत का विधान है। अर्थात् जिस दिन षष्ठी एवं सप्तमी युक्त हो उस दिन यह व्रत करना चाहिये।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (भाद्रपद कृष्ण पक्ष)

विष्णुपुराण, शिवपुराण, ब्रम्हपुराण, भविष्यपुराण इत्यादि के अनुसार भगवान श्री कृष्ण का जन्म भाद्रपद कृष्ण अष्टमी बुधवार को रोहिणी नक्षत्र में अर्धरात्रि के समय हुआ था। अधिकांश उपासक उपरोक्त योगों का मेल अपने-अपने तरीके से ग्रहण करते है इससे इस व्रत को लेकर सर्वाधिक मत-भेद सामने आते हैं। शास्त्रों में इसके शुद्धा, सप्तमी विद्धा, नवमी विद्धा, समा, न्यूना, अधिा इत्यादि से अठारह प्रकार के भेद हैं। श्री कृष्ण की जन्म स्थली मथुरा-वृन्दावन में श्रीकृष्ण जन्मोत्सव , व्रतादि प्रायः उदयकालिक अष्टमी (नवमी युक्ता अष्टमी) में ही मनाया जाता है। यह वैष्णव मत भी है।

हरितालिका तीज व्रत - (भाद्रपद शुक्ल पक्ष)

मुहूर्त्तमात्र सत्वेऽपि दिने गौरीव्रतं परेति।

माधवोक्त जिस दिन केवल एक मुहूर्त्त भी तृतीया हो उस दिन परायुक्ता तृतीया में हरितालिका व्रत करना चाहिये।

ऋषि पंचमी व्रत

भाद्रपद शुक्लपक्ष पंचमी। माधव के अनुसार, पूजाव्रतेषु सर्वेषु मध्याह्नव्यापिनी तिथिरिति। दिनद्वये मध्याह्नव्याप्ता व्याप्तौ वा पूर्वेव। सूत्र के अनुसार मध्याह्नव्यापिनी पंचमी को व्रत करना चाहिए। यदि दो दिन मध्याह्न व्यापिनी हो तो पहले दिन व्रत करना चाहिए।

गणेश चतुर्थी व्रत (भाद्रपद शुक्ल पक्ष)

कृत्यरत्नावली के अनुसार श्री गणेश का जन्म भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी को मध्यान्ह में हुआ था। अत: मध्यान्ह व्यापिनी चतुर्थी में श्री गणेश स्थापन एवं पूजन करना चाहिए। यदि दोनों दिन मध्यान्ह व्यापिनी चतुर्थी हो तो पहले दिन स्थापन-पूजन करना चाहिए। इस दिन रात्रि में चन्द्रदर्शन कर लेने से मिथ्या कलंक लगता है, ऐसी मान्यता है। उसके निवारण के लिए भागवत पुराण में उल्लेखित स्यमन्तक की कथा सुनना या पढ़ना चाहिए।

अनन्त चतुर्दशी (भाद्रपद शुक्ल पक्ष)

माधव के अनुसार, द्विमुहूर्त व्याप्तौदायिकी ग्राह्योति। जिस दिन सूर्योदय के पश्चात कम से कम दो मुहूर्त अथवा ४ घटी चतुर्दशी हो उस दिन अनन्त भगवान का पूजन व्रत करना चाहिए।

पितृपक्ष (महालय)

भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा से आश्विन कृष्ण अमावस्या तक सोलह दिन पितरों का तर्पण एवं विशेष दिन श्राद्ध करने का शास्त्रीय विधान है, इससे पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है व घर में सुख-शांति बढ़ती है। श्रुति के अनुसार

पूर्वान्हो वै देवानां मध्यान्हो मनुष्याणमपरान्हः पितृणाम्।

अर्थात अपरान्ह पितरों का समय होता है। इसलिए जिस तिथि को श्राद्ध दिन हो, यदि वह तिथि अपरान्ह व्यापिनी हो तब श्राद्ध करना चाहिए। जैसा कि पहले लिखा जा चुका है कि १८ घटि से २४ घटि के बीच व्याप्त रहने वाली तिथि में उस दिन संबंधित तिथि श्राद्ध होता है। यदि उस दिन १८ घटी से २४ घटी के बीच दो तिथियां व्याप्त हों तो दोनों तिथियों का श्राद्ध उसी दिन करना चाहिए। उदाहरण के लिए किसी दिन सूर्योदय के समय सप्तमी तिथि है तथा पंचांग में उस तिथि का समाप्तिकाल १८ घटी ३१ पल लिखा है तो सप्तमी अपरान्ह व्यापिनी है तथा अष्टमी भी इसलिए दोनों तिथियों के श्राद्ध एक ही दिन होंगे। अत: उस दिन सप्तमी के साथ-साथ अष्टमी का भी श्राद्ध होगा।

सन्यासियों का श्राद्ध द्वादशी को करना चाहिए।

युद्ध या दुर्घटना में मृत्यु को प्राप्त का श्राद्ध चतुर्दशी को करना चाहिये।

महालक्ष्मी व्रत

आश्विन कृष्ण अष्टमी को चंद्रोदय व्यापिनी तिथि में व्रत का विधान है।

विजया दशमी

शमी पूजा यात्रदौ नक्षत्रोदय व्यापिनी दशमी ग्राह्या।
नवमीशेष युक्तायां दशम्यायम पराजिता।
ददाति विजयं देवी पूजित जयवर्द्धिनी। (रत्नकोष)

अर्थात जिन दिन श्रवण नक्षत्र के प्रारंभ के समय दशमी तिथि व्याप्त हो उस दिन युद्ध में विजय की कामना रखने वाले राजा की विजय होती है। यदि श्रवण नक्षत्र न मिले तो नवमी दशमी युक्ता दिवस में विजया दशमी मनाना चाहिए।

शरद पूर्णिमा

आश्विन शुक्ल पूर्णिमा को गोदुग्ध की खीर का अर्धरात्रि के समय आराध्यदेव को भोग लगाया जाता है व अगले दिन उसे प्रसाद रूप में उसका भोजन किया जाता है। शरद पूर्णिमा का कर्मकाल रात्रि है अत:

कर्मणो यस्य यः कालस्तत्कालव्यापिनीतिथिः।

सूत्र के अनुसार इसमें प्रदोष एवं निशीथ दोनों में होने वाली पूर्णिमा ली जाती है। यदि पहले दिन निशीथव्यापिनी हो और दूसरे दिन प्रदोषव्यापिनी न हो तो पहले दिन व्रत करना चाहिए।

करवाचौथ

(कार्तिक कृष्ण पक्ष) - इस दिन सौभाग्वती महिलाएं दिनभर व्रती रहकर चन्द्रोदय के बाद अन्न-जल ग्रहण करती हैं, इसलिए इस व्रत का कर्मकाल चन्द्रोदयकाल होता है। अत: **कर्मणो यस्य यः कालस्तत्कालवयापिनीतिथिः**। नियम के अनुसार इसमें चंद्रोदय व्यापिनी चतुर्थी के दिन व्रत रखा जाता है। यही निर्णय धर्मसिन्धु में भी है।

गोवत्स द्वादशी

कार्तिक कृष्ण पक्ष। **वत्सपूजा वटश्चैव कर्तव्यौ प्रथमऽहनि** के अनुसार इसमें प्रदोष व्यापिनी पहले दिन की द्वादशी तिथि लेना चाहिए। सायंकाल में गाय एवं बछड़ों का पूजना करना चाहिए।

धन त्रयोदशी, यम दीपदान

यह त्रयोदशी प्रदोष व्यापिनी शुभ होती है। यदि वह दो दिन हो या न हो, दोनों स्थितियों में दूसरे दिन की तिथि ली जाती है।

रूप चतुर्दशी, नरक चतुर्दशी

इसमें पहले दिन की चन्द्रोदय व्यापिनी तिथि ली जाती है (निर्णय सिन्धु)।

दीपावली, श्री महालक्ष्मी पूजन

१. **प्रदोषार्धरात्रव्यापिनी मुख्या एकैक व्याप्तौ परैव** (निर्णय सिन्धु)।

प्रदोष काल एवं अर्धरात्रि व्यापिनी अमावस्या के दिन श्री महालक्ष्मी का पूजन शुभ है। इसमें प्रदोकाल का विशेष महत्व है। यदि दो दिन प्रदोष व्यापिनी हो तो दूसरे दिन की रात्रि में लक्ष्मी पूजन शुभ होता है (तदा विहाय पूर्वेद्युः परेऽन्हि सुखरात्रिका - निर्णय सिन्धु)।

यम द्वितीया

कार्तिक शुक्ल द्वितीया। यह मध्यान्हव्यापिनी पूर्व विद्धा शुभ होती है (यमद्वितीया मध्यान्हव्यापिनी पूर्वविद्धा चेति हेमाद्रिः। -निर्णय सिन्धु)।

आंवला नवमी

नवमी विद्धा कर्तव्या फलकाङ्क्षिणा।
न कुर्यान्नवमी तात दशम्या तु कदाचन।। (हेमाद्रि, देवी पुराण)

कार्तिक शुक्ल नवमी। इसमें पूर्वान्ह व्यापिनी तिथि लेना चाहिए। यदि वह दो दिन हो या न हो तो पूर्व विद्धा लेना चाहिए।

बैकुण्ठ चतुर्दशी

कार्तिक शुक्ल अरुणोदयव्यापिनी चतुर्दशी को ब्रह्म मुहूर्त में पूजन एवं व्रत करन चाहिए (तिथि निर्णयः)।

दत्त जयंती

मार्गशीर्ष शुक्ल पूर्णिमा जिस दिन प्रदोष व्यापिनी हो उस दिन दत्त जयंती मनाना चाहिए। (तिथि निर्णयः)।

वसंत पंचमी

माघ शुक्लपक्ष पंचमी। इस दिन पूर्वविद्धा पंचमी को श्रीगणेश एवं सरस्वतीजी का पूजन किया जाता है।

महाशिवरात्रि

फाल्गुन कृष्णपक्ष चतुर्दशी। जैसा कि शिवरात्रि के नाम से संकेत है कि इस व्रत का पूजन कर्मकाल रात्रि है। अत:

'कर्मणो यस्य यः कालस्तत्कालव्यापिनीतिथिः।'

नियम के अनुसार इसमें प्रदोष एवं निशीथकाल में व्याप्त पूर्वविद्धा चतुर्थी ली जाती है। पूर्व विद्धा चतुर्दशी लेने का कारण यह है कि शिवरात्रि का पारण चतुर्दशी में ही करना चाहिए। (तिथ्यन्ते पारणं कुर्याद् विना शिव चतुर्दशीम्)।

होलिका दहन (फाल्गुन पूर्णिमा)

१. प्रदोष व्यापिनी ग्राह्या पूर्णिमा फाल्गुनी सदा। निशागमे तु पूज्येत् होलिका सर्वतोमुखैः (नारदपुराण)।
२. दिनद्वये प्रदोषे चेत् पूर्णा दाहः परेऽहनि (स्मृतिसार)
३. भद्रायां द्वे न कर्तव्ये श्रावणी फाल्गुनी तथा (स्मृत्यन्तर)।
४. तस्यां भद्रामुखं त्यक्त्वा पूज्या होला निशामुखे (पृथ्वीचन्द्रोदय)।
५. पूर्णिमायाः पूर्वे भागे चतुर्थप्रहरस्य पंचघटीमध्ये भद्राया मुखं ज्ञेयम् (ज्योतिर्निबन्ध)।
६. पृथिव्यां यानि कार्यापि शुभानि ह्ययशुभानि च।
तानि सर्वाणि सिद्धयन्ति विष्टिपुच्छे न संसयः।। (आचार्य लल्ल)
७. प्रतिपद्भूतभद्रासु यार्चिता होलिका दिवा।
संवत्सरं तु तद्राष्ट्रं पुरं दहति साद्भुताम्।। (चन्द्रप्रकश)।
८. दिनार्धात् परतो या स्यात् फाल्गुनी पूर्णिमा यदि। रात्रौ भद्रावसाने तु होलिका तत्र पूजयेत्।। (भविष्यपुराण)।
९. दिवाभद्रा यदा रात्रौ रात्रिभद्रा यदा दिवा। सा भद्रा भद्रादा यस्माद् भद्रा कल्याणकारिणी।। (ज्योतिष तत्व)।
१०. ग्रहणशुद्धौ स्नात्वा कर्मणि कुर्वीत श्रतमन्नं विसर्जयेत्। (स्मृतिकौस्तुभ)।
११. स्पष्टमासविशेषाख्याविहितं वर्जयेन्मले। (धर्मसार)।

अर्थात होलिका दहन का कर्मकाल रात्रि है, इसलिए प्रदोष व्यापिनी पूर्णिमा के समय होलिका दहन करना चाहिए। यदि दोनों दिन प्रदोषकाल में पूर्णिमा व्याप्त हो तो दूसरी लेना चाहिए।

यदि प्रदोषकाल में भद्रा हो तो मुख की घटी त्यागकर प्रदोषकाल में होलिका दहन करना चाहिए। पूर्णिमा के दिन तीसरे चौथे प्रहर की आदि की ५ घटी भद्रा का मुख होता है, अत: उक्त समय में भद्रा के रहते होलिका दहन निषेध है। भद्रा का पुच्छकाल शुभ होता है। पूर्णिमा के दिन भद्रा का पुच्छकाल तीसरे प्रहर की अंतिम ३ घटी में होता है। (विशेष सूचना - भद्रा के मुख-पुच्छ प्रकरण में प्रहर की गणना सूर्योदय से न होकर तिथि के आरंभकाल से होती है।)

दिन के समय, प्रतिपदा को, चतुर्दशी को या भद्राकाल में होलिका दहन करने पर वहां के राज्य, नगर और नागरिक विचित्र उत्पातों से एक वर्ष में नष्ट हो जाते हैं। यदि दोपहर पश्चात पूर्णिमा प्रारंभ हुई हो अर्ध रात्रि तक भद्रा रहती है अत: तत्पश्चात सूर्योदय के पहले तक होलिका दहन करना चाहिए।

यदि पहले दिन रात भर भद्रा रहे और दूसरे दिन प्रदोष के समय पूर्णिमा मौजूद हो उस समय चंद्रग्रहण हो तो पहले दिन ही सूर्यास्त के बाद होलिका दहन कर देना चाहिए, क्योंकि पूर्णिमा में पूर्वार्ध की भद्रा रात्रिकाल में शुभ कही गई है।

यदि दूसरे दिन प्रदोष के समय पूर्णिमा हो और भद्राकाल समाप्त होने वाला हो, परन्तु चंद्रग्रहण हो तो ग्रहण के शुद्धिकाल उपरांत स्नान करके होलिका दहन कर देना चाहिए।

यदि फाल्गुन अधिमास हो तो शुद्ध मास (दूसरे फाल्गुन) की पूर्णिमा को होलिका दहन करना चाहिए।

शीतला अष्टमी (वासौरा)

व्रतमात्रेऽष्टमी कृष्णा पूर्वा शुक्लाष्टमी परा (माधव)।

शीतला अष्टमी कृष्ण पक्ष में होने के कारण पूर्व विद्धा (सप्तमी विद्धा) ली जाती है। इस दिन शीतला माता का व्रत एवं शीतल अन्न (पहले से पकाए हुए भोजन) का भोग लगाया जाता है।

सूर्य – वैदिक मन्त्र – ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥ (हवन समिधा – आक)। एकाक्षरी बीज मन्त्र – ॐ घृणिः सूर्याय नमः। तांत्रिक सूर्य मन्त्र – ॐ ह्रां ह्रीं ह्रों सः सूर्याय नमः। जप संख्या – ७०००(सात हजार)। जपकाल– सूर्योदय।

चन्द्र – वैदिक मन्त्र – ॐ इमं देवा असपत्न ँ सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठाय्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानां ँ राजा॥ हवन समिधा – पलास (ढ़ांक), खांकर, छोला। एकाक्षरी बीज मन्त्र – ॐ सों सोमाय नमः। तान्त्रिक मन्त्र – ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः। जप संख्या – ११०००(ग्यारह हजार)। जपकाल– संध्या।

भौम – वैदिक मन्त्र – ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम। अपा ँ रेता ँ सि जिन्वति॥(समिधा – खैर) एकाक्षरी बीज मन्त्र – ॐ अं अंगारकाय नमः। तान्त्रिक मन्त्र – ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः। जप संख्या – १००००(दस हजार)। जपकाल– सू.उ. से सवा दो घड़ी।

बुध – वैदिक मन्त्र – ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्ते स ँ सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत॥ (हवन समिधा – अपामार्ग,चिचिडा,आंधीझारा)। एकाक्षरी बीज मन्त्र – ॐ बुं बुधाय नमः। तान्त्रिक मन्त्र – ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः। जप संख्या – ९०००(नव हजार)। जपकाल– सू.उ. से पांच घड़ी तक।

बृहस्पति– वैदिक मन्त्र – ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद् द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥ (हवन समिधा – पीपल) एकाक्षरी बीज मन्त्र – ॐ बृं बृहस्पतये नमः। तान्त्रिक गुरुमन्त्र – ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः जप संख्या – १९०००(उन्नीस हजार)। जपकाल– संध्याकाल।

शुक्र – वैदिक मन्त्र – ॐ अन्नात्परिस्त्रुतो रसं ब्रम्हणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ँ शुक्रमंधस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोक्मृतं मधु॥ (हवन समिधा – गूलर)। एकाक्षरी बीज मन्त्र – ॐ शुं शुक्राय नमः। तान्त्रिक मन्त्र – ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः। जप संख्या – १६००० (सोलह हजार) जपकाल– सूर्योदय।

शनि – वैदिक मन्त्र – ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्त्रवन्तु नः ॥ (हवन समिधा – शमी) एकाक्षरी बीज मन्त्र – ॐ शं शनैश्चराय नमः। तान्त्रिक मन्त्र – ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः। जप संख्या – २३०००(तेईस हजार)। जपकाल– रात्रि।

राहु – वैदिक मन्त्र – ॐ कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता॥ (हवन समिधा – दूर्वा)। एकाक्षरी बीज मन्त्र – ॐ रां राहवे नमः। तान्त्रिक मन्त्र – ॐ भ्रा भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः। जप संख्या – १८०००(अठारह हजार)। जपकाल– रात्रि।

केतु – वैदिक मन्त्र – ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः॥ (हवन समिधा – कुशा)। एकाक्षरी बीज मन्त्र – ॐ कें केतवे नमः। तान्त्रिक मन्त्र – ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः। जप संख्या – १७०००(सत्रह हजार)। जपकाल– रात्रि।

नवग्रह शांति प्रार्थना – ॐ ब्रम्हा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च। गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु।। सूर्यः शौर्यमथेन्दुरूच्चपदवीं सन्मङ्गलं मङ्गलः





महत्व – शुभ ग्रहों के प्रभाव में वृद्धि एवं अनिष्ट कारक ग्रहों की शान्ति हेतु सुयोग्य ज्योतिषी की सलाह से विधि पूर्वक रत्न धारण करना चाहिये। कोंन सा रत्न कब पहनना चाहिये और कब हानिप्रद होगा, इस संबन्ध में विद्वानों में मतभेद हैं। इस वारे में हमारा मत है कि, तृतीयेश, षष्टेश, अष्टमेश और द्वादशेष का रत्न धारण करने की सलाह कभी नहीं देना चाहिये। लग्नेश सदैव शुभ होता है, अतः लग्न स्वामी का रत्न आजीवन धारण करना चाहिये। कारक ग्रह की महादशा में उसका रत्न विशेष लाभप्रद रहेगा। मारकेश का रत्न सदैव अशुभ कारक होगा। किसी भी रत्न को कच्चे दूध या गंगाजल में स्नान कराकर, ग्रह के मन्त्र से अभिमन्त्रित कर, धूप चंदन देकर धारण करना चाहिये। रविपुष्य योग में कोई भी रत्न धारण किया जा सकता है।

माणिक्य – सूर्य की प्रसन्नता हेतु माणिक्य धारण किया जाता है। सिंह लग्न वाले जातकों को यह आजन्म धारण करना चाहिये। मेष, कर्क, वृश्चिक, धनु, लग्न वाले जातकों के लिये माणिक्य शुभ है। माणिक्य के साथ हीरा, नीलम, गोमेद और लहसुनिया कभी भी धारण नहीं करना चाहिये। धारण विधि :– रविवार के दिन सूर्योदय के समय या सूर्य की होरा मे, शुभ योग में, सोने अथवा तांबा की अंगूठी में, सूर्य मन्त्र से अमिन्त्रित करके दाहिने हाथ की तर्जनी या अनामिका अंगुली में माणिक्य धारण करना चाहिये। माणिक्य कम से कम ढ़ाई रत्ती का होना चाहिये।

मोती – यह चन्द्र देव का रत्न है। कर्क लग्न में जन्मे जातकों को यह रत्न विशेष लाभ दायक है। मेष, कन्या, तुला, वृश्चिक, एवं मीन लग्न वाले जातकों के लिये मोती शुभ होता है। मोती के साथ हीरा, पन्ना, नीलम, गोमेद और लहसुनिया कभी भी धारण नहीं करना चाहिये। मोती धारण विधि :– सोमवार को शुक्ल पक्ष की द्वितीया से पूर्णिमा तक, चन्द्रमा की होरा में या संध्या में, चाँदी की अंगूठी में, चन्द्र मन्त्र से अमिन्त्रित करके कनिष्ठा अंगुली में मोती धारण करना चाहिये।

मूंगा – मंगल देव की कृपा प्राप्ती के लिये मूंगा धारण करना चाहिये। जिन जातकों का जन्म मेष या बृश्चिक लग्न में हुआ हो उन्हें मूंगा अवश्य धारण करना चाहिये। कर्क, सिंह, धनु, मकर, मीन लग्न के लिये मूंगा शुभ होता है। मूंगा के साथ हीरा, पन्ना, नीलम, गोमेद और लहसुनिया कभी भी धारण नहीं करना चाहिये। धारण विधि :– शुक्ल पक्ष के मंगलवार को, मंगल की होरा मे, सोने या तांबा की अंगूठी में, मंगल के मन्त्र से अमिन्त्रित करके अनामिका अंगुली में मोती धारण करना चाहिये।

पन्ना – यह बुध का रत्न है। मिथुन या कन्या लग्न के जातकों के लिये पन्ना विशेष शुभ है। वृषभ, तुला, धनु, मकर एवं कुम्भ लग्न के लिये पन्ना शुभ होता है। पन्ना कम से कम ३ रत्ती का होना चाहिये। पन्ना के साथ मोती एवं मूंगा नहीं पहनना चाहिये। धारण विधि :– शुक्ल पक्ष के बुधवार को, बुध की होरा में, बुध मन्त्र से अभिमन्त्रित कर सोने की अंगूठी में कनिष्ठा अंगुली में पन्ना धारण करना चाहिये।

पुखराज – यह गुरु का प्रमुख रत्न है। धनु या मीन लग्न राशि वाले जातकों के लिये यह रत्न विशेष शुभ है। मेष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, वृश्चिक, धनु, कुंभ एवं मीन लग्न वाले जातकों के लिये पुखराज शुभ होता है। चूंकि गुरु का रंग पीला होता है इसलिये पीला पुखराज ही शुभ कारक होता है। पुखराज कम से कम ३ रत्ती का होना चाहिये। पुखराज के साथ हीरा, नीलम, गोमेद और लहसुनिया कभी भी धारण नहीं करना चाहिये। धारण विधि :– शुक्ल पक्ष के गुरुवार को, गुरुकी होरा में, सोने की अंगूठी में, गुरुमन्त्र से अभिमन्त्रित करके तर्जनी अंगुली में पुखराज धारण करना चाहिये। गुरु का उपरत्न :– जिरकान, सुनैला।

हीरा (वज्रमणि) – वृष या तुला लग्न के जातकों को हीरा सदैव शुभ होता है। मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, मकर एवं कुंभ लग्न जातकों के लिये हीरा शुभ होता है। हीरे वजन कम से कम ढ़ाई सेन्ट होना चाहिये। हीरा के साथ माणिक्य, मोती, मूंगा या पीला पुखराज धारण नहीं करना चाहिये। धारण विधि :– शुक्ल पक्ष के शुक्रवार को शुक्र की होरा में, चाँदी की अंगूठी में, शुक्र के मन्त्र से अभिमन्त्रित कर, कनिष्ठिका या मध्यमा अंगुली में हीरा धारण करना चाहिये। शुक्र के उपरत्न :–फिरोजा, ओपल, सफेद स्फटिक।

नीलम – वृषभ, तुला, मकर, कुम्भ लग्न जातकों के लिये नीलम शुभ है। नीलम के साथ माणिक्य, मोती, मूंगा या पीला पुखराज धारण नहीं करना चाहिये। प्रायः नीलम धारण करने के २४ धंटे के भीतर अपना प्रभाव प्रारंभ कर देता है, इसलिये इसके पहनने का निर्णय सावधानी पूर्वक करना चाहिये। यदि नीलम अनुकूल न वैठे तो किसी भी प्रकार की हानि की संभावना रहती है, इसलिये परीक्षण के लिये कम से कम ३ दिन नीलम को अपने पास रखना चाहिये। यदि इस दौरान रोग, घबराहट या अशुभ स्वप्न आऐं तो नीलम धारण नहीं करना चाहिये। **धारण विधि** :– किसी भी शनिवार को शनि की होरा में, पंचधातु, लोहे या सोने की अंगूठी में, शनि के मन्त्र से अभिमन्त्रित कर, मध्यमा अंगुली में नीलम धारण करना चाहिये।

गोमेद (गोमेदक) – यह राहु का रत्न है। जिनकी लग्न कुंडली में राहु १, ४, ७, ९ या १० वें भाव में हो, उन्हें गोमेद धारण करना चाहिये। गोमेद के साथ माणिक्य, मोती, मूंगा या पीला पुखराज धारण नहीं करना चाहिये। धारण विधि :– किसी भी शनिवार को शनि की होरा में, पंचधातु की अंगूठी में, राहु के मन्त्र से अभिमन्त्रित कर, मध्यमा अंगुली में गोमेद धारण करना चाहिये।

लहसुनियां (वैदूर्य) – यह केतु का रत्न है। जिनकी लग्न कुंडली में केतु १, ३,४, ६, ७, ९, १० या ११ वें भाव में हो, उन्हें गोमेद धारण करना चाहिये। लहसुनिया के साथ माणिक्य, मोती, मूंगा या पीला पुखराज धारण नहीं करना चाहिये। धारण विधि :– बुधवार के दिन पंचधातु की अंगूठी में, केतु के बीज मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित कर कनिष्ठ अंगुली में वैदूर्य धारण करना चाहिये।

॥ महामृत्युंजय मंत्र ॥

वेदोक्त मंत्र – ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बंधनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥

प्रणव सहित महामृत्युंजय मंत्र – ॐ हौं जूँ स: ॐ भूर्भुव: स्व: ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बंधनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॐ स्व: भुव: भू: ॐ स: जूँ हौं ॐ ॥

भावार्थ – इस महामंत्र का अर्थ अथाह एवं विश्व व्यापक है, इसे भगवान शिव ही जानते हैं। तथापि कई विद्वानों के द्वारा किये गये भावार्थ पढ़ने को मिले। जिसने जिस भाव या उद्देश्य से इस महामंत्र का पढ़ा उसे वही भावार्थ अनुभूत हुआ। उदाहरण के लिये यदि किसी गंभीर रोग या अनिष्ट से निवारण हेतु इस मंत्र का जाप करते हैं तो इसका भावार्थ इस प्रकार हो सकता है। ''हम उन भगवान त्र्यम्बक (ब्रह्मा, विष्णु एवं रुद्र तीनों के जनक शिव) का यजन (उपासना) करते हैं, जो कि पुष्प रुपी संसार में सुगंध की तरह व्याप्त होकर जगत का पोषण करते हैं, ऐसे प्रभु से मेरी प्रार्थना है कि हे प्रभो! यदि समय आ गया हो तो, मृत्यु बंधन से उसी तरह मुक्ति देवें जैसे खरबूजा पक जाने पर विना कष्ट के लत्ता के बंधन से छूट जाता है। अन्यथा अमृत देकर हमें सुदीर्घ जीवन प्रदान करें।''

महामृत्युंजय जाप विधि – जिस दिन शिववास शुभ हो उस समय महामृत्युंजय जाप करना चाहिये। सर्व प्रथम आचमन, पवित्रीकरण और प्राणायाम करके '' सुमुखश्चैकदन्तश्च........'' मंत्र से भगवान श्री गणेश का स्मरण करना चाहिये। तत्पश्चात संकल्प करके विनियोग करना चाहिये। विनियोग हेतु दाहिने हाथ में जल लेकर '' ॐ अस्य श्री महामृत्युंजय मन्त्रस्य वशिष्ठऋषि: अनुष्टुप्छन्द: श्री सदाशिव महामृत्युंजय रुद्रो देवता श्रीं वीजं ह्रीं शक्ति: मम अभीष्ट सिद्धयर्थे जपे विनियोग:'' यह मंत्र पढ़कर जल नीचे पात्र में छोड़ दें।

न्यास – मंत्र को शरीर में धारण करने की क्रिया न्यास है।

ऋष्यादि न्यास – ॐ वशिष्ठ ऋषये नम: (यह मंत्र पढ़कर सिर का स्पर्श करें)। अनुष्टुप् छन्दसे नम: (यह मंत्र पढ़कर मुख का स्पर्श करें)। श्री महामृत्युंजय रुद्र देवतायै नम: (यह मंत्र पढ़कर हृदय का स्पर्श करें)। श्रीं वीजाय नम: (यह मंत्र पढ़कर गुह्य को छुएं)। हीं शक्तये नम: (यह मंत्र पढ़कर पैरों का स्पर्श करें)।

करन्यास – ॐ हौं ॐ जूँ स: भूर्भुव: स्व: त्र्यम्बकं, ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा अंगुष्ठाभ्यां नम: (यह मंत्र पढ़कर दोनों तर्जनियों से हाथ के अंगूठों का स्पर्श करें)। ॐ हौं ॐ जूँ स: भूर्भुव: स्व: यजामहे, ॐ नमो भगवते अमृत मूर्तये मां जीवाय, जीवय तर्जनीभ्यां नम: (यह मंत्र पढ़कर दोनों तर्जनियों को अंगूठे से मिलाऐं)। ॐ हौं ॐ जूँ स: भूर्भुव: स्व: सुगन्धि पुष्टिवर्धनम्, ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्र शिरसे जटिने स्वाहा, मध्यमाभ्यां वषट् (यह मंत्र पढ़कर बीच की दोनों अंगुलियों को अंगूठों से मिलाएं)। ॐ हौं ॐ जूँ स: भूर्भुव: स्व: उर्वारुकमिव बंधनात्, ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरांतकाय ह्रां ह्रीं, अनाम्यकाभ्यां हुँ (यह मंत्र पढ़कर अनामिकाओं को अंगूठे से मिलाएं)। ॐ हौं ॐ जूँ स: भूर्भुव: स्व: मृत्योर्मुक्षीय, ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजु: साममंत्राय कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् (यह मंत्र पढ़कर कनिष्ठिकाओं को अंगूठे से मिलाएं)। ॐ हौं ॐ जूँ स: भूर्भुव: स्व: मामृतात्, ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्नित्रयाय ज्वल-ज्वल मां रक्ष रक्ष अधोरास्त्राय, करतलकर पृष्ठाभ्यां फट् (यह मंत्र पढ़कर हथेलियों के पिछले भाग को परस्पर रगड़ें)।

अंग न्यास – ॐ हौं ॐ जूँ स: भूर्भुव: स्व: त्र्यम्बकं, ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा हृदयाय नम: (दाईं पांच अंगुलियों से हृदय का स्पर्श करें)। ॐ हौं ॐ जूँ स: भूर्भुव: स्व: यजामहे, ॐ नमो भगवते अमृत मूर्तये मां जीवाय, शिर से स्वाहा (सिर का स्पर्श करें)। ॐ हौं ॐ जूँ स: भूर्भुव: स्व: सुगन्धि पुष्टिवर्धनम्, ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्र शिरसे जटिने स्वाहा, शिखायै वषट् (शिखा स्पर्श)। ॐ हौं ॐ जूँ स: भूर्भुव: स्व: उर्वारुकमिव बंधनात्, ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरांतकाय ह्रां ह्रीं, कबचाय हुँ (दाएं हाथ से बायां कंधा तथा बाएं हाथ से दाएं कंधे का स्पर्श करें)। ॐ हौं ॐ जूँ स: भूर्भुव: स्व: मृत्योर्मुक्षीय, ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजु: साममंत्राय नेत्रत्रणाय वौषट् (तर्जनी तथा अनामिका से दोनों आंखों का स्पर्श करें)। ॐ हौं ॐ जूँ स: भूर्भुव: स्व: मामृतात्, ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्नित्रयाय ज्वल-ज्वल मां रक्ष रक्ष अधोरास्त्राय, करतलकर अस्त्राय फट् (दाएं हाथ की तर्जनी और मध्यमा को सिर पर से घुमाकर बाएं हथेली पर मारकर ध्वनि करें)। तत्पश्चात महादेव का ध्यान करें।

ध्यान – शिव पुराण में ध्यान मंत्र इस प्रकार है – चन्द्रार्काग्नि विलोचनं स्मितमुखं पद्मद्वयान्त: स्थितम्। मुद्रा पाश मृगाक्ष सूत्र विलसत्पाणिं हिमांशु प्रभम्॥ कोटीरेन्दुगलत्सुधा स्नुततनुं हारादि भूषोज्वलम्। कान्त्या विश्वविमोहनं पशुपतिं मृत्युंजयं भावयेत्॥

मानसपूजा एवं जप – ध्यान के पश्चात् शिवजी का मानसपूजन कर महामृत्युंजय मंत्र का संकल्प की संख्या में रुद्राक्ष की माला से संपुट सहित जाप करना चाहिये। संकल्पित जप का दशांश हवन और हवन का दशांश तर्पण और तर्पण का दशांश मार्जन, का दशांश ब्राह्मण भोजन के बाद आरती, पुष्पांजलि एवं इष्टदेव से क्षमा प्रार्थना करनी चाहिये। इस प्रकार विसर्जन के पश्चात् अनुष्ठान पूर्ण हो जाता है।

॥ मूल नक्षत्रों के वेदोक्त मन्त्र ॥

अश्विनीमंत्र –ॐ अश्विनीर्भैषज्येनतेजसे बृम्हवर्चसायाभिषिञ्चामि सरस्वत्यैभैषज्यन वार्यान्नाद्याय अभिषिञ्चीमिन्द्रिस्येन्द्रियेण वलायश्रियै यशसेऽभिषिश्चामि।

अश्लेषा मंत्र – ॐ नमोस्तुसर्पेभ्योयेकेच पृथ्वीमनु ये अन्तरिक्षे ये दिवितेभ्य: सर्पेभ्योनम:।

मघा मंत्र – ॐ पितृभ्य: स्वाधायिभ्य: स्वधानम: पितामहेभ्य: स्वधायिभ्य: स्वधानम: प्रपितामहेभ्य: स्वधायिभ्य: स्वधा नम: अक्षन्नपितरोमीमदन्त पितरोक्तीतृप्यन्त पितर: पितर: शुन्धद्ध्वम्।

ज्येष्ठा मंत्र – ॐ सजोषा इन्द्रसगणोमरूद्भि: सोममपिववृत्रहाशूरविद्वान्जहि शत्रुं रपमृधोनुदश्वाथा भयं कृणुहिविश्वतोन:।

मूल मंत्र – ॐ एषतेनिऋते भागरतांजुषस्व स्वाहाग्निनेत्रेभ्यो: देवेभ्यो: पर: सद्भ्य: स्वाहा, यमनेत्रेभ्यो दक्षिणासद्भ्य: स्वाहा, विश्वदेव नेत्रेभ्योदेवेभ्य: पश्चात्सद्भ्य: स्वाहा, मित्रावरूण नेत्रेभ्यो वामनेत्रेभ्योवा देवेभ्यऊत्तरासदभ्य: स्वाहा:, सोमनेत्रेभ्यो उपरिसद्भ्योदुखद्भ्य: स्वाहा। अथवा – ॐ उपाधम किल्विषमयकृत्या मनयोग्य: अपामार्गवमस्मदपयु: स्वप्न्ँसुव।

रेवती मंत्र – ॐ पूषन्तव्रतेजयननरिष्येमकदाचन स्तोतारस्तइहस्मसि।

॥ पंचक नक्षत्रों के वेदोक्त मन्त्र ॥

धनिष्ठा मंत्र –ॐ वसो: पवित्रमसिशतधारं वसो: पवित्रमसि सहस्त्रधारं देवस्त्वा सवितपुनातु वसो: पवित्रेण शतधारेण सुत्वा कामधुक्ष:।

शतभिषा –ॐ वरूणस्योत्तम्भन मसिव्वरूण स्यस्यस्कम्भ सर्जनीस्त्थो वरूणस्य कऋत् सदन्नयसिवव्रूणस्यऋत् सदन्नमसिव्वरूणस्यऽऋ तसदनमासीद।

पूर्वभाद्रपद – ॐ उतनोहिर्ब्बुध्न्य: श्रृणोत्वज एक पात् पृथिवि समुद्र: व्विश्वेदेवोऽऋता बृधोहुवाना स्तुता मंत्रा: कविशस्ताक्अवंतु:।

उ. भाद्रपद–ॐ शिवोनामासिस्वधितिस्ते पिता नमस्ते अस्तु मा माहिँसी: निवर्त्तयाम्यायुषेन्नाद्यायप्रजननाय रायस्पोषायसुप्रजा: –त्वायसुवीर्याय।

रेवती मंत्र – ॐ पूषन्तवब्रतेब्व्रते व्वयन्नरिस्येन कदाचन स्तोता रस्तइहस्मसि।

ग्रह	दान पदार्थ	दान समय	औषधि स्नान
सूर्य	कनक, माणिक्य, तांवा, सोना, लाल गाय, गुड़, घी, कमल, लाल वस्त्र, लाल चंदन, मूंगा, केशर।	सूर्योदय	कनेर पुष्प, केशर, खसखस, इलायच
चन्द्र	चावल, मोती, चांदी, सोना, श्वेत बैल, मिश्री, दही, श्वेतपुष्प, श्वेत वस्त्र, श्वेत चंदन, शंख, कपूर।	संध्या	पंचगव्य, गोदुग्ध, गोबर, गंगाजल, श्वेत चंदन, गोमूत्र।
मंगल	मसूर, मूंगा, तांवा, सोना, लाल बैल, गुड, घी, लाल कनेर, लाल वस्त्र, लाल चंदन, केशर, कस्तूरी।	सू.उ. से सवा २ घडी	जटामासी, मौलश्री, विल्व छाल, लाल पुष्प, सिंगरफ।
बुध	मूंग, पन्ना, कांस्य, सोना, शस्त्र, शक्कर, घी, हरा वस्त्र, अनेक फल, हाथीदांत, कपूर।	सू.उ. से पांच घडी	गोवर, अक्षत, मोती, शहद, जायफल, पीपरामूल, गंगाजल।
गुरु	पीला अनाज, पुखराज, सोना, अश्व, लवण, घी, पीले पुष्प, पीत वस्त्र, पीला फल, धर्म ग्रंथ।	संध्या	चमेली पुष्प, श्वेत सरसों, गूलर, मुलहटी, गंगाजल।
शुक्र	चावल, हीरा, चांदी, सोना, श्वेत घोड़ा, मिश्री, श्वेत पुष्प, दूध, श्वेत वस्त्र, श्वेत चंदन, दही, सुगंधित द्रव्य।	सूर्योदय	पीपरामूल, जायफल, केशर, मूली बीज, मैनशिला, श्वेत चंदन, गंगाजल
शनि	उड़द, नीलम, लोहा, सोना, कालीगाय, कुलथी, तैल, कालेपुष्प, काला वस्त्र, काले जूते, भैंस, कस्तूरी।	रात्रि	काले तिल, सुरमा, लोबान, सौंफ, खसखस।
राहु	सप्त धान्य, गोमेद, सीसा, सोना, कालाघोड़ा, ताम्रपात्र, तैल, नीलपुष्प, नीलवस्त्र, नारियल, कंबल, खड्ग।	रात्रि	लोबान, तारपीन, कस्तूरी, गजदंत, गंगाजल।
केतु	सप्त धान्य, लहसुनिया, लोहा, सोना, बकरा, तेल, धूम्र वस्त्र, नारियल, कंबल, कस्तूरी।	रात्रि	लोवान, तारपीन, तिल के पत्ते, गजदंत, लाल चंदन, गंगाजल।

संकेत -स्टैंण्डर्ड अंतर मि. से. :- भारतीय स्टैंण्डर्ड रेखांश ८२.३० से अंतर मिनट सेकण्ड में।

स्थान	अक्षांश	रेखांश	देशान्तर मि.	देशान्तर घटि.	स्टैंण्डर्ड अंतरमि.से.
ग्वालियर	२६.१२	७८.९	+३	+०.७	-१७.२४
लश्कर	२६.१२	७८.८	+३	+०.७	-१७.२८
मुरार	२६.१५	७८.१४	+३	+०.१४	-१७.४
डबरा	२५.५६	७८.२०	+४	+०.९	-१६.४०
आंतरी	२६.३	७८.१३	+३	+०.८	-१७.८
भितरवार	२५.४८	७८.६	+३	+०.७	-१७.३६
घाटीगांव	२६.३०	७७.५६	+२	+०.५	-१८.१६
पचोर	२५.५८	७८.२०	+४	+०.९	-१६.४०
मोहना	२५.५५	७७.४६	+१	+०.३	-१८.५६
विलौआ	२६.३	७८.१३	+३	+०.८	-१७.८
भिंड	२६.३३	७८.४७	+५	+०.१४	-१४.५२
फूप	२६.३७	७८.५२	+६	+०.१४	-१४,३६
अटेर	२६.४५	७८.३९	+५	+०.१२	-१५.२४
गोरमी	२६.३६	७८.३०	+४	+०.११	-१६.००
गोहद	२६.२५	७८.२६	+४	+०.१०	-१६.१६
मेहगांव	२६.३०	७८.३६	+५	+०.१२	-१५.३६
मऊ	२६.१६	७८.४०	+५	+०.१३	-१५.२०
रौन	२६.२१	७८.५८	+६	+०.१६	-१४.८
मिहौना	२६.१८	७७.५९	+२	+०.६	-१४.११
लहार	२६.१२	७८.५६	+६	+०.१५	-१४.१६
अमायन	२६.३१	७८.३५	+५	+०.१२	-१५.४०
दवोह	२६.१	७८.५३	+६	+०.१५	-१४.२८
मुरैना	२६.३०	७८.४	+३	+०.६	-१७.४४
अम्बाह	२६.४३	७८.१३	+३	+०.८	-१७.८
पोरसा	२६.४०	७८.२२	+४	+०.९	-१६.३२
जौरा	२६.२१	७७.४८	+२	+०.४	-१८.४८
कैलारस	२६.१९	७७.३७	+१	+०.२	-१९.३२
सबलगढ	२६.१५	७७.२४	०	०.०	-२०.२४
श्योपुर	२५.४१	७६.४२	-३	-०.७	-२३.१२
विजयपुर	२६.३	७७.२२	-०	-०.१	-२३.३२
पालपुर	२५.४८	७७.१०	-१	-०.३	-२१.२०
जरेरू	२६.३	७७.४१	+१	+०.३	-१९.१६
रामपुरक	२६.९	७७.२८	०	०.०	-२०.२८
बडौदा	२५.४०	७६.४०	-३	-०.८	-२३.२०
दतिया	२५.४१	७८.२८	+४	+०.११	-१६.८
बडौनी	२५.४२	७८.२३	+४	+०.१०	-१६.२८
जिगना	२५.३९	७८.२	+४	+०.९	-१६.३६
उन्नाव	२५.३६	७८.३६	+५	+०.१२	-१५.३६
भाण्डेर	२५.४४	७८.४४	+५	+०.१३	-१५.४
इन्दरगढ	२५.५५	७८.३४	+५	+०.११	-१५.४४
थरेट	२५.१	७८.३९	+५	+०.१२	-१५.२४
श्योंढा	२६.९	७८.४७	+५	+०.१४	-१४.५२
बसई	२५.९	७८.२१	+४	+०.९	-१६.३६

स्थान	अक्षांश	रेखांश	देशान्तर मि.	देशान्तर घटि.	स्टैंण्डर्ड अंतरमि.से.
शिवपुरी	२५.४०	७७.४४	+१	+०.३	-१९.४
अमोला	२५.२५	७७.५८	+२	+०.५	-१८.८
करैरा	२६.२७	७८.९	+७	+०.१४	-१७.२४
दिनारा	२४.२९	७८.१९	+४	+०.९	-१६.४४
पिछोर	२५.९	७८.१०	+३	+०.८	-१७.२०
खनियाधाना	२५.२	७८.८	+३	+०.७	-१७.२८
रन्नौद	२५.६	७७.५४	+२	+०.५	-१८.२४
बदरवास	२४.५७	७७.३४	+१	+०.१	-१९.४४
कोलारस	२५.१४	७७.३६	+१	+०.२	-१९.३६
पोहरी	२५.३२	७७.२२	-०	-०.१	-२०.३२
नरवर	२५.४०	७७.५५	+२	+०.५	-१८.२०
भोंती	२५.२१	७८.४	+३	+०.६	-१७.४४
गुना	२४.३९	७७.१८	-०	-०.१	-२०.४८
फतेहगढ	२४.४७	७७.०	-२	-०.४	-२२.००
भदौरा	२४.४७	७७.२४	०	०.०	-२०.२४
बजरंगढ	२४.३६	७७.१७	-१	-०.१	-२०.५२
राधौगढ	२४.२६	७७.१२	-१	-०.२	-२१.१२
रूठियाई	२४.३२	७७.६	-१	-०.३	-२१.३६
मकसूदन	२४.०	७७.१०	-१	-०.३	-२१.२०
बीनागंज	२४.१२	७७.१	-२	-०.४	-२१.५६
चाचौडा	२४.१०	७६.५९	-२	-०.४	-२२.०४
कुम्भराज	२४.२५	७७.०	-२	-०.४	-२२.००
आरौन	२४.२३	७७.१९	०	-०.१	-२०.४४
अशोकनगर	२४.३४	७७.४३	+१	+०.३	-१९.०८
मुद्रा	२४.४३	७७.३५	+१	+०.२	-१९.४०
ईशागढ	२४.५०	७७.५३	+२	+०.५	-१८.२८
चन्देरी	२४.४३	७८.८	+३	+०.७	-१७.२८
सहराई	२४.३३	७८.६	+३	+०.७	-१७.३६
मुन्नाली	२५.४८	७८.६	+३	+०.७	-१७.३६
मुगावली	२४.२५	७८.६	+३	+०.७	-१७.३६
टीकमगढ	२४.४४	७८.५०	+६	+०.१४	-१४.४०
दिगौडा	२५.५७	७८.५०	+६	+०.१४	-१४.४०
पृथ्वीपुर	२५.१३	७८.४४	+५	+०.१३	-१५.४
ओरछा	२५.२१	७८.३८	+५	+०.१२	-१५.२८
निवाडी	२५.२१	७८.४८	+६	+०.१४	-१४.४८
जतारा	२५.००	७९.३	+७	+०.१६	-१३.४८
पलेरा	२५.२	७९.१४	+७	+०.१८	-१३.४
खरगापुर	२४.५०	७९.९	+७	+०.१७	-१३.२४
बल्देवगढ	२४.४५	७९.३	+७	+०.१६	-१३.४८
दमोह	२३.५०	७९.३०	+८	+०.२१	-१२.००
पथरिया	२३.५३	७९.२०	+८	+०.१९	-१२.४०
बटियागढ	२४.०७	७९.२१	+८	+०.१९	-१२.३६
हट्टा	२४.०९	७९.४०	+९	+०.२३	-११.२०
तेंदूखेडा	२३.२२	७९.३२	+८	+०.२१	-११.५२

स्थान	अक्षांश	रेखांश	देशान्तर मि.	देशान्तर घटि.	स्टैंण्डर्ड अंतरमि.से.
छतरपुर	२४.५४	७९.३५	+९	+०.२२	-११.४०
नौगांव	२५.०४	७९.२७	+८	+०.२०	-१२.१२
मलेहरा	२४.३४	७९.१८	+८	+०.१९	-१२.४८
महाराजपुर	२४.३०	७९.२२	+८	+०.१९	-१२.३२
लौडी	२५.०९	८०.००	+१०	+०.२६	-१०.००
गौरीहार	२५.१४	८०.०८	+११	+०.२७	-९.२८
चन्दला	२५.०५	८०.१२	+११	+०.२८	-९.१२
राजनगर	२४.५३	७९.५४	+१०	+०.२५	-१०.२४
खजुराहो	२४.५०	७९.५८	+१०	+०.२६	-१०.८
बिजावर	२४.३६	७९.३०	+८	+०.२१	-१२.००
किशनगढ	२४.२५	७९.२२	+८	+०.१९	-१२.३२
बडा मलेहरा	२५.०२	७९.४१	+९	+०.२३	-११.१६
बक्सवाहा	२४.१५	७९.१७	+७	+०.१९	-१२.५२
रीवा	२४.३२	८१.१८	+१६	+०.३९	-४.४८
रायपुरकर्चु	२४.३४	८१.२७	+१६	+०.४०	-४.१२
गुढ	२४.४९	८१.३९	+१७	+०.४२	-३.२४
मउगंज	२४.४०	८१.५३	+१८	+०.४५	-२.२८
त्योंथर	२५.००	८१.३८	+१७	+०.४२	-३.२८
सिरमौर	२४.५०	८१.२३	+१६	+०.४०	-४.२८
डभौरा	२५.०८	८१.१८	+१६	+०.३९	-४.४८
रघुनाथगंज	२४.४१	८१.३९	+१७	+०.४२	-३.२४
बैकुंठपुर	२४.४३	८१.२५	+१६	+०.४०	-४.२०
सेमरिया	२४.४७	८१.०८	+१५	+०.३७	-५.२८
नईगढी	२४.४८	८१.४६	+१७	+०.४३	-२.५६
कोटवा	२५.०२	८१.५९	+१८	+०.४६	-२.४
पन्ना	२४.४८	८०.१४	+११	+०.२८	-९.४
अजयगढ	२४.५४	८०.१५	+११	+०.२८	-९.००
पहाडीखेरा	२४.५२	८०.३१	+१२	+०.३१	-७.५६
शाहनगर	२३.४८	८०.२२	+१२	+०.२९	-८.३२
पवई	२४.१६	८०.९	+११	+०.२७	-९.२४
अमानगंज	२४.२५	८०.२	+१०	+०.२६	-९.५२
सतना	२४.३३	८०.५०	+१४	+०.३४	-६.४०
कोटी	२४.४५	८०.४६	+१३	+०.३४	-६.५६
मझगवां	२४.५५	८०.४८	+१४	+०.३४	-६.४८
नागौद	२४.३४	८०.३४	+१३	+०.३१	-७.४४
मैहर	२४.१४	८०.५०	+१४	+०.३४	-६.४०
अमरपाटन	२४.१९	८०.५९	+१४	+०.३६	-६.४
रामपुर	२४.३१	८१.२	+१४	+०.३६	-५.५२
चित्रकूट	२५.१३	८०.४८	+१४	+०.३४	-६.४८
सींधी	२४.२४	८१.५४	+१८	+०.४५	-२.२४
सिंहावल	२४.३५	८२.१४	+१९	+०.४८	-१.०४
चुरहट	२४.२४	८०.५५	+१४	+०.३५	-६.२०
रामपुर	२४.१२	८१.०७	+१५	+०.३७	-५.३२

स्थान	अक्षांश	रेखांश	देशान्तर मि.	देशान्तर घटि.	स्टैंण्डर्ड अंतरमि.से.
देवसर	२४.१७	८२.०८	+१९	+०.४७	-१.२८
चितरंगी	२४.२३	८२.२४	+२०	+०.५०	-०.२४
सिंगरौली	२४.०८	८२.१८	+२०	+०.४९	-०.४८
बैढन	२४.०४	८२.२९	+२०	+०.५१	-०.४
कुसुमी	२३.५४	८२.०१	+१८	+०.४६	-१.५६
मझौली	२४.०६	८१.३९	+१७	+०.४२	-३.२४
सागर	२३.५०	७८.४३	+५	+०.१३	-१५.०८
राहतगढ	२३.४७	७८.२८	+४	+०.११	-१६.०८
खुरई	२४.०४	७८.१८	+४	+०.९	-१६.४८
जैसिंहनगर	२३.३८	७८.३३	+५	+०.११	-१५.४८
बीना	२४.०९	७८.१०	+३	+०.८	-१७.२०
माल्थौन	२४.१८	७८.३२	+४	+०.११	-१५.५२
बंडा	२४.०१	७८.५९	+६	+०.१६	-१४.०४
शाहगढ	२४.१८	७९.०८	+७	+०.१७	-१३.२८
गढाकोटा	२३.४७	७९.१०	+७	+०.१८	-१३.२०
रहली	२३.२८	७९.०८	+७	+०.१७	-१३.२८
गौरझामर	२३.२५	७८.५९	+६	+०.१६	-१४.०४
देवरी	२३.२३	७९.०५	+७	+०.१७	१३.४०
विदिशा	२३.३०	७७.५०	+२	+०.४	-१८.४०
ग्यारसपुर	२३.४४	७८.१०	+३	+०.८	-१७.२०
अहमदपुर	२३.२२	७७.५२	+२	+०.४	-१८.३२
गुलाबगंज	२३.४०	७७.५२	+२	+०.४	-१८.३२
बासौदा	२३.५१	७७.५६	+२	+०.५	-१८.१६
नटेरन	२३.४६	७७.५०	+२	+०.४	-१८.४०
शमशबाद	२३.४८	७७.३०	०	+०.१	-२०.००
सतपाडा	२३.४४	७७.३९	+१	+०.२	-१९.२४
लटेरी	२४.५	७७.२७	०	०	-२०.१२
सिरोंज	२४.५	७७.३९	+१	+०.२	-१९.२४
कुरवाई	२४.८	७८.१	+२	+०.६	-१७.५६
बामौरा	२४.३	७७.५८	+२	+०.५	-१८.८
पठारी	२३.५६	७८.१२	+३	+०.८	-१७.१२
होशंगाबाद	२२.४४	७७.४५	+१	+०.३	-१९.००
बाबई	२२.४४	७७.५९	+२	+०.६	-१८.०४
सुहागपुर	२२.४३	७८.१४	+३	+०.८	-१७.०४
पिपरिया	२२.४५	७८.२१	+४	+०.९	-१६.३६
बनखेडी	२२.४३	७८.१६	+३	+०.८	-१६.५६
पचमढी	२२.२९	७८.२६	+४	+०.१०	-१६.१६
इटारसी	२२.३९	७७.४८	+२	+०.४	-१८.४८
सिवनीमाल	२२.२९	७७.३१	०	+०.१	-१९.५६
हरदा	२२.२२	७७.०८	-१	-०.३	-२१.२८
खिरकिया	२२.१२	७६.५८	-२	-०.५	-२२.०८
टिमरनी	२२.२२	७७.१३	-१	-०.२	-२१.०८

स्थान	अक्षांश	रेखांश	देशान्तर मि.	देशान्तर घटि.	स्टैंण्डर्ड अंतरमि.से.
राजगढ	२४.१	७६.४२	-३	-०.७	-२३.१२
ब्यावरा	२३.५९	७६.५६	-२	-०.५	-२२.१६
नरसिंहगढ	२३.४२	७७.८	-१	-०.३	-२१.२८
कुरावर	२३.२९	७७.८	-१	-०.३	-२१.२८
पचोर	२३.४०	७६.४२	-३	-०.७	-२३.१२
तलेन	२३.३२	७६.४८	-२	-०.६	-२२.४८
सारंगपुर	२३.३५	७६.३२	-४	-०.९	-२३.५२
जीरापुर	२४.००	७५.४६	-७	-०.१७	-२६.५६
खिलचीपुर	२४.२	७६.३४	-३	-०.९	-२३.४४
माचलपुर	२४.८	७६.१८	-४	-०.११	-२४.४८
रायसेन	२३.२१	७७.४९	+२	+०.४	-१८.४४
गैरतगंज	२३.२२	७८.१०	+३	+०.८	-१७.२०
बेगमगंज	२३.३६	७८.२०	+४	+०.९	-१६.४१
सिलवानी	२३.२०	७८.२४	+४	+०.१०	-१६.२४
उदयपुरा	२३.४	७८.३०	+४	+०.११	-१६.००
बरेली	२३.००	७८.१८	+४	+०.९	-१६.४८
ओबेदुल्लागंज	२३.०२	७७.४२	+१	+०.३	-१९.१२
भोपाल	२३.१६	७७.२५	०	०	-२०.२०
बैरसिया	२३.४०	७७.२५	०	०	-२०.२०
सीहोर	२३.१२	७७.८	-१	-०.३	-२१.२८
आष्टा	२३.००	७६.४७	-३	-०.६	-२२.५२
खाचरौद	२३.२५	७५.२०	-८	-०.२१	-२८.४०
इछावर	२३.०१	७७.०१	-२	-०.४	-२१.५६
नसरूल्लागंज	२२.३६	७७.२२	०	-०.१	-२०.३२
शाहगंज	२२.५०	७७.५४	+२	+०.५	-१८.२४
बुधनी	२२.४६	७७.४७	+१	+०.४	-१८.५२
शाजापुर	२३.२७	७६.२१	-४	-०.११	-२४.३६
शुजालपुर	२३.२४	७६.४३	-३	-०.७	-२३.८
मक्सी	२३.२०	७६.३६	-३	-०.८	-२३.३६
कालापीपल	२३.२३	७६.२५	-४	-०.१०	-२४.२०
आगर	२३.४४	७६.०१	-६	-०.१४	-२५.५६
नलखेडा	२३.४६	७६.०६	-५	-०.१३	-२५.३६
सुसनेर	२३.४८	७६.०८	-५	-०.१३	-२५.२८
उज्जैन	२३.११	७५.४६	-७	-०.१७	-२६.५६
बडनगर	२३.१	७५.२८	-८	-०.२०	-२८.८
खाचरौद	२३.२५	७५.२०	-८	-०.२१	-२८.४०
नागदा	२३.३०	७५.२९	-८	-०.१९	-२८.४
महीदपुर	२३.३०	७५.४२	-७	-०.१७	-२७.१२
इन्दौर	२२.४२	७५.५४	-६	-०.१५	-२६.२४
देपालपुर	२२.५०	७५.३३	-७	-०.१९	-२७.४८
सांवेर	२२.५७	७५.५२	-६	-०.१६	-२६.३२
महू	२२.३२	७५.३९	-७	-०.१८	-२७.२४

स्थान	अक्षांश	रेखांश	देशान्तर मि.	देशान्तर घटि.	स्टैंण्डर्ड अंतरमि.से.
देवास	२२.५९	७६.०३	-५	-०.१४	-२५.४८
टोंक खुर्द	२३.११	७६.१२	-५	-०.१२	-२५.१२
सोनकच्छ	२३.००	७६.२४	-४	-०.१०	-२४.२४
बागली	२२.३९	७६.२१	-४	-०.११	-२४.३६
कन्नौज	२२.४२	७६.४५	-३	-०.७	-२३.००
खातेगांव	२२.३६	७६.५५	-२	-०.५	-२२.२०
धार	२२.३२	७५.२४	-८	-०.२०	-२८.२४
माण्डू	२२.२२	७५.२४	-८	-०.२०	-२८.२४
धर्मपुरी	२२.१५	७५.२०	-८	-०.२१	-२८.४०
मनावर	२२.१४	७५.०८	-९	-०.२३	-२९.२८
कुक्षी	२२.१०	७४.४८	-१०	-०.२६	-३०.४८
बदनावर	२३.०१	७५.१६	-९	-०.२२	-२८.५६
झाबुआ	२२.४४	७४.३७	-११	-०.२८	-३१.३२
थादला	२३.००	७४.३८	-११	-०.२८	-३१.२८
पेटलावाद	२३.००	७४.५०	-१०	-०.२६	-३०.४०
जोबट	२२.२७	७४.३४	-११	-०.२९	-३१.४४
अलीराजपु	२२.१८	७४.२२	-१२	-०.३१	-३२.३२
बडवानी	२२.०२	७४.५६	-१०	-०.२५	-३०.१६
पान सेमल	२१.४२	७४.४३	-११	-०.२७	-३१.०८
मंदसौर	२४.४	७५.४	-९	-०.२४	-२९.४४
सीतामऊ	२४.१	७५.२६	-८	-०.२०	-२८.१६
गरोठ	२४.२२	७५.४८	-६	-०.१६	-२६.४८
भानपुरा	२४.३२	७५.५०	-६	-०.१६	-२६.४०
मल्हारगढ	२४.१८	७५.२	-१०	-०.२४	-२९.५२
नीमच	२४.२७	७४.५६	-१०	-०.२५	-३०.१६
मनासा	२४.३५	७४.१६	-१३	-०.३२	-३२.५६
बुज	२४.४०	७५.३३	-७	-०.१९	-२७.४८
जावद	२४.३५	७४.५७	-१०	-०.२५	-३०.१२
रतलाम	२३.१८	७५.६	-९	-०.२३	-२९.३६
बाजना	२३.२१	७४.३९	-११	-०.२८	-३१.२४
सेलना	२३.२८	७४.५८	-१०	-०.२५	-३०.०८
पिपलौदा	२३.३६	७५.८	-९	-०.२३	-२९.२८
जावरा	२३.४०	७५.१०	-९	-०.२३	-२९.२०
आलोट	२३.५६	७५.४०	-७	-०.१८	-२७.२०
नरसिंहपुर	२२.५७	७९.१२	+७	+०.१८	-१३.१२
गोटेगांव	२३.०२	७९.२४	+८	+०.२०	-१२.२४
करेली	२२.५५	७९.०४	+७	+०.१६	-१३.४४
तेंदूखेडा	२३.८	७८.५५	+६	+०.१५	-१४.२०
गाडरवारा	२२.५२	७८.५०	+६	+०.१४	-१४.४०
खंडवा	२१.४९	७६.२३	-४	-०.१०	-२४.२८
हरसूद	२२.०२	७६.४२	-३	-०.७	-२३.१२
ओमकारेश्वर	२२.१०	७६.११	-५	-०.१२	-२५.१६

भारत के विभिन्न प्रांतों के नगरों की अक्षांश देशान्तर विवोधक सारिणी

संकेत - (१) स्टेंण्डर्ड अंतर मि. से. - भारतीय स्टेंण्डर्ड रेखांश ८२.३० से अंतर मिनट सेकण्ड में।

स्थान	अक्षांश	रेखांश	देशान्तर मि.	देशान्तर घटि.	स्टैंण्डर्ड अंतरमि.से.
पंधाना	२१.४३	७६.१५	-५	-०.१२	-२५.००
बुरहानपुर	२१.१८	७६.०८	-५	-०.१३	-२५.२८
नेपानगर	२१.२८	७६.२३	-४	-०.१०	-२४.२८
खरगौन	२१.४९	७५.३९	-७	-०.१८	-२७.२४
वडवाहा	२२.१३	७६.०१	-६	-०.१४	-२५.५६
सनावद	२२.११	७६.४	-५	-०.१४	-२५.४४
महेश्वर	२२.११	७५.४०	-७	-०.१८	-२७.२०
भीकनगांव	२१.५२	७५.५७	-६	-०.१५	-२६.१२
वैतूल	२१.५५	७७.५४	+२	+०.५	-१८.२४
शाहपुर	२२.१२	७७.५८	+२	+०.५	-१८.०८
आमला	२१.५६	७८.०७	+३	+०.७	-१७.३२
मुलताई	२१.४६	७८.२१	+४	+०.९	-१६.३६
भेंसदेही	२१.२४	७७.४२	+१	+०.३	-१९.१२
छिंदवाडा	२२.०४	७८.५८	+६	+०.१६	-१४.०८
परासिया	२२.११	७८.५०	+६	+०.१४	-१४.४०
जामई	२२.२२	७८.४०	+५	+०.१३	-१५.२०
जुन्नारदेव	२२.०९	७८.३५	+५	+०.१२	-१५.४०
अमरवाडा	२२.२०	७९.१२	+७	+०.१८	-१३.१२
चौरई	२२.२	७९.१८	+८	+०.१९	-१२.४८
सोंसर	२१.२५	७८.५५	+६	+०.१५	-१४.२०
पांढुर्ना	२१.११	७८.३४	+५	+०.११	-१५.४४
कटनी	२३.४७	८०.२९	+१२	+०.३१	-८.०४
विजेराधोग	२३.५९	८०.४१	+१३	+०.३३	-७.१६
धीमरपुरा	२३.२७	८०.२४	+१२	+०.३०	-८.२४
बहुरीबन्द	२३.३५	८०.१४	+११	+०.२८	-९.०४
जवलपुर	२३.१०	७९.५७	+१०	+०.२५	-१०.१२
कटंगी	२१.४६	७९.५०	+१०	+०.२४	-१०.४०
सीहोरा	२३.३०	८०.०९	+११	+०.२७	-९.२४
कुण्डम	२३.१३	८०.२१	+१२	+०.२९	-८.३६
पाटन	२३.१६	७९.४१	+९	+०.२३	-११.१६
मंडला	२३.३५	८०.२८	+१२	+०.३१	-८.८
नैनपुर	२२.२६	८०.१०	+११	+०.२८	-९.२०
निवास	२३.०१	८०.२८	+१२	+०.३१	-८.८
डिंडोरी	२२.५७	८१.०९	+१५	+०.३७	-५.२४
शाहपुर	२३.००	८१.०३	+१५	+०.३६	-५.४८
वालाघाट	२१.४८	८०.१६	+११	+०.२८	-८.५६
वारासिवनी	२१.४५	८०.०८	+११	+०.२७	-९.२८
कटंगी	२१.४६	७९.५०	+१०	+०.२४	-१०.४०
बैहर	२२.०४	८०.३६	+१३	+०.३२	-७.३६
लांझी	२१.३०	८०.३६	+१३	+०.३२	-७.३६
किरनापुर	२१.३५	८०.२६	+१३	+०.३२	-७.३६
सिवनी	२२.०६	७९.३६	+९	+०.२२	-११.३६
लखनादौन	२२.३४	७९.३८	+९	+०.२२	-११.२८
केवलारी	२२.१५	८०.११	+११	+०.२८	-९.१६
बडघाट	२२.०५	७९.४९	+१०	+०.२४	-१०.४४
शहडोल	२३.१९	८१.२६	+१६	+०.४०	-४.१६
जैसिंहनगर	२३.३८	७८.३३	+५	+०.११	-१५.४८
उमरिया	२३.३०	८०.५२	+१४	+०.३४	-६.३२
मानपुर	२३.४७	८०.२९	+१२	+०.३१	-८.४
अनूपपुर	२३.०५	८१.४५	+१७	+०.४३	-३.००
कोटमा	२३.१०	८२.००	+१८	+०.४६	-२.००
अमरकंटक	२२.४०	८१.४८	+१८	+०.४४	-२.४८

छत्तीसगढ़ के प्रमुख नगर

स्थान	अक्षांश	रेखांश	देशान्तर मि.	देशान्तर घटि.	स्टैंण्डर्ड अंतरमि.से.
अम्विकापुर	२३.०७	८३.११	+२३	+०.५८	+२.४४
भिलाई	२१.११	८१.२०	+१६	+०.३९	-४.४०
विलासपुर	२२.०५	८२.१३	+१९	+०.४८	-१.०८
दुर्ग	२१.११	८१.२१	+१६	+०.३९	-४.३६
जगदलपुर	१९.०५	८२.०४	+१९	+०.४६	-१.४४
रायगढ	२१.५४	८३.२६	+२४	+१.०	+३.४४
रायपुर	२१.१५	८१.३७	+१७	+०.४२	-३.३२

राजस्थान के प्रमुख नगर

स्थान	अक्षांश	रेखांश	देशान्तर मि.	देशान्तर घटि.	स्टैंण्डर्ड अंतरमि.से.
अलवर	२७.३२	७६.३५	-३	-०.८	-२३.४०
वांसवाडा	२३.३२	७४.२८	-१२	-०.३०	-३२.८
वरन	२५.८	७६.३६	-३	-०.८	-२३.३६
वाढमेर	२५.४३	७१.२५	-२४	-१.०	-४४.२०
वीकानेर	२८.१	७३.२२	-१६	-०.४१	-३६.३२
बूंदी	२५.२८	७५.४२	-७	-०.१७	-२७.१२
भरतपुर	२७.१३	७७.२९	०	-०.१	-२०.४
भीलवाडा	२५.२३	७४.३९	-११	-०.२८	-३१.२४
चित्तौडगढ	२४.५३	७४.३८	-११	-०.२८	-३१.२८
चुरू	२८.१८	७५.००	-१०	-०.२४	-३०.००
दौसा	२६.५१	७६.२१	-४	-०.११	-२४.३६
डूंगरपुर	२३.५५	७३.४८	-१४	-०.३६	-३४.४८
गंगानगर	२९.५४	७३.५६	-१४	-०.३५	-३४.१६
हनुमानगढ	२९.३३	७४.२१	-१२	-०.३१	-३२.३६
जयपुर	२६.५३	७५.५०	-६	-०.१६	-२६.४०
जैसलमेर	२६.५२	७०.५५	-२६	-१.५	-४६.२०
जालौर	२५.२१	७२.४३	-१९	-०.४७	-३९.८
झालावाड	२४.३६	७६.०९	-५	-०.१३	-२५.२४
झुनझुन	२८.०५	७५.३०	-८	-०.१९	-२८.००
जोधपुर	२६.१८	७३.०८	-१७	-०.४३	-३७.२८
करौली	२६.३०	७७.०३	-१	-०.४	-२१.४८
कोटा	२५.११	७५.५८	-६	-०.१५	-२६.८
पाली	२५.४६	७३.२६	-१६	-०.४०	-३६.१६
सवाईमाधौ	२६.००	७६.२८	-४	-०.१०	-२४.८
सीकर	२७.३३	७५.१२	-९	-०.२२	-२९.१२
टोंक	२६.१०	७५.५०	-६	०.१६	-२६.४०
उदयपुर	२४.३०	७५.५०	-६	-०.१६	-२६.४०

उत्तर प्रदेश के प्रमुख नगर

स्थान	अक्षांश	रेखांश	देशान्तर मि.	देशान्तर घटि.	स्टैंण्डर्ड अंतरमि.से.
झांसी	२५.२७	७८.३४	+५	+०.११	-१५.४४
कोंच	२५.४७	७९.६	+७	+०.१७	-१३.३६
जालौन	२६.९	७९.०२	+६	+०.१६	-१३.५२
ललितपुर	२४.४२	७८.२४	+४	+०.१०	-१६.२४
बरूआसाग	२५.२३	७८.४२	+५	+०.१३	-१५.१२
वबीना	२५.४८	७८.६	+३	+०.७	-१७.३६
मऊरानीपुर	२५.१५	७९.११	+७	+०.१८	-१३.१६
आगरा	२७.११	७८.०२	+२	+०.६	-१७.५२
अलीगढ	२७.५४	७८.०४	+३	+०.६	-१७.४४
इलाहावाद	२५.२८	८१.५२	+१८	+०.४४	-२.३२
अयोध्या	२६.४८	८२.१४	+१९	+०.४८	-१.०४
आजमगढ	२६.०३	८३.१३	+२३	+०.५८	+२.५२
वाघपत	२८.५६	७७.१४	-१	-०.२	-२१.०४
वहराईच	२७.३५	८१.३६	+१७	+०.४२	-३.३६
वलिया	२५.४४	८४.११	+२७	+१.८	+६.४४
वलरामपुर	२३.०७	८६.१३	+३५	+१.२८	+१४.५२
वंडा	२५.२०	८०.२२	+१२	+०.२९	-८.३२
बारावंकी	२६.५६	८१.१३	+१५	+०.३८	-५.८
वरेली	२८.२१	७९.२३	+८	+०.२०	-१२.२८
वस्ती	२६.४८	८२.४४	+२१	+०.५३	-०.५६
विजनौर	२९.२३	७८.११	+३	+०.८	-१७.१६
वुढौन	२८.०२	७९.०७	+७	+०.१७	-१३.३२
बुलंदशहर	२८.२४	७७.५४	+२	+०.५	-१८.२४
चांदौली	२८.२७	७८.४९	+६	+०.१४	-१४.४४
चित्रकूट	२५.१३	८०.४८	+१४	+०.३४	-६.४८
देवरिया	२७.०५	८१.१०	+१५	+०.३८	-५.२०
एटा	२७.३३	७८.३९	+५	+०.१२	-१५.२४
इटावा	२६.४७	७९.०२	+६	+०.१६	-१३.५२
फैजावाद	२६.४६	८२.०८	+१९	+०.४७	-१.२८
फर्रूखावाद	२७.२३	७९.३५	+९	+०.२२	-११.४०
फतेहपुर	२५.५५	८०.४७	+१३	+०.३४	-६.५२
फिरोजावाद	२७.०९	७८.२४	+४	+०.१०	-१६.२४
गाजियावाद	२८.४०	७७.२८	०.०	०.०	-२०.८
गाजीपुर	२५.३६	८३.३६	+२५	+१.२	+४.२४
गौंडा	२७.०९	८१.५७	+१८	+०.४५	-२.१२
गोरखपुर	२६.४५	८३.२२	+२४	+०.५९	+३.२८
हमीरपुर	२५.५७	८०.०८	+११	+०.२७	-९.२८
हरदोई	२७.२०	८०.१०	+११	+०.२८	-९.२०
हाथरस	२७.३६	७८.०६	+३	+०.७	-१७.३६
जालौन	२६.०९	७९.२०	+८	+०.१९	-१२.४०
जौनपुर	२५.४६	८२.४२	+२१	+०.५३	+०.४८
कन्नौज	२७.०२	७९.५५	+१०	+०.२५	-१०.२०
कानपुर	२६.२९	८०.२१	+१२	+०.२९	-८.३६
कौशम्वी	२५.२०	८१.२४	+१६	+०.४०	-४.२४
लखमीपुर	२७.५७	८०.४७	+१३	+०.३४	-६.५२
लखनऊ	२६.५१	८०.५६	+१४	+०.३५	-६.१६
महाराजगंज	२७.०९	८३.३४	+२५	+१.१	+४.१६
महोवा	२५.१८	७९.५३	+१०	+०.२५	-१०.२८
मैनपुरी	२७.१४	७९.०३	+७	+०.१६	-१३.४८
मथुरा	२७.२८	७७.४२	+१	+०.३	-१९.१२
मउ	२५.५७	८३.३३	+२५	+१.१	+४.१२
मेरठ	२९.०१	७७.४५	+१	+०.३	-१९.००
मिरजापुर	२५.०९	८२.३३	+२१	+०.५१	+०.१२
मुरादावाद	२८.५१	७८.४७	+५	+०.१४	-१४.५२
मुजफ्फरनगर	२९.२८	७७.४४	+१	+०.३	-१९.४
पीलीभीत	२८.३८	७९.५१	+१०	+०.२४	-१०.३६
प्रतापगढ	२५.५२	८२.०२	+१८	+०.४६	-१.५२
रायवरेली	२६.१४	८१.१३	+१५	+०.३८	-५.८
रामपुर	२८.४६	७९.०२	+६	+०.१६	-१३.५२
सहारनपुर	२९.५८	७७.३२	०.०	-०.१	-१९४२
सीतापुर	२५.११	८०.५२	+१४	+०.३४	-६.३२
सुल्तानपुर	२६.१६	८२.०७	+१९	+०.४७	-१.३२
उन्नाव	२६.३२	८०.३०	+१२	+०.३१	-८.०
वनारस	२५.१९	८३.०१	+२२	+०.५६	+२.४

देहली, पंजाव, हरियाणा एवं हिमांचल प्रदेश

स्थान	अक्षांश	रेखांश	देशान्तर मि.	देशान्तर घटि.	स्टैंण्डर्ड अंतरमि.से.
देहली	२८.३९	७७.१३	-१	-०.२	-२१.०८
न्यूदेहली	२८.३७	७७.१३	-१	-०.२	-२१.०८
अम्वाला	३०.२३	७६.४०	-३	-०.८	-२३.२०
अमृतसर	३१.३८	७४.५३	-१०	-०.२५	-३०.२८
भटिंडा	३०.१२	७४.५६	-१०	-०.२५	-३०.१६
विलासपुर	३१.२०	७६.४५	-३	-०.७	-२३.००
चंडीगढ	३०.४४	७६.५३	-२	-०.५	-२२.२८
फरीदावाद	२८.२५	७७.२२	०.०	-०.१	-२०.३२
फरीदकोट	३०.४०	७४.५७	-१०	-०.२५	-३०.१२
गुरदासपुर	३२.०३	७५.२७	-८	-०.२०	-२८.१२
गुडगांव	२८.३७	७७.०४	-१	-०.४	-२१.४४
होशियारपुर	३१.३२	७५.५७	-६	-०.१५	-२६.१२
जालंधर	३१.२०	७५.३४	-७	-०.१७	-२७.४४
लुधियाना	३०.५५	७५.५२	-६	-०.१६	-२६.३२
नंगल	३१.२३	७६.२३	-४	-०.१०	-२४.२८
पानीपत	२९.२३	७७.०१	-२	-०.४	-२१.५६
पठानकोट	३२.१७	७५.४०	-७	-०.१८	-२७.२०
पटियाला	३०.१९	७६.२४	-४	-०.१०	-२४.२४
रामपुर	३१.२६	७७.३८	+१	+०.२	-१९.२८
रोहतक	२८.५४	७६.३४	-३	-०.९	-२३.४४
शिमला	३१.०६	७७.१०	-१	-०.३	-२१.२०
थानेश्वर	२९.५९	७६.४९	-२	-०.६	-२२.४४

उत्तरांचल राज्य के प्रमुख नगर

स्थान	अक्षांश	रेखांश	देशान्तर मि.	देशान्तर घटि.	स्टैंण्डर्ड अंतरमि.से.
अल्मोडा	२९.३६	७९.४०	+९	+०.२३	-११.२०
वद्रीनाथ	३०.४४	७९.३२	+८	+०.२१	-११.५२
देहरादून	३०.१९	७८.०३	+३	+०.६	-१७.४८
गंगोत्री	३०.५६	७९.०२	+६	+०.१६	-१३.५२
हरिद्वार	२९.५६	७८.०८	+३	+०.७	-१७.२८
जमनोत्तरी	३१.०१	७८.२७	+४	+०.१०	-१६.१२
केदारनाथ	३०.४४	७९.०४	+७	+०.१६	-१३.४४
मसूरी	३०.२७	७८.०६	+३	+०.७	-१७.३६
नैनीताल	२९.२२	७९.२७	+८	+०.२०	-१२.१२
रानीखेत	२९.३८	७९.२८	+८	+०.२१	-१२.०८
रूडकी	२९.५२	७७.५३	+२	+०.५	-१८.२८
रूद्रप्रयाग	३०.१६	७८.५९	+६	+०.१६	-१४.०४

जम्वू एवं काश्मीर राज्य के प्रमुख नगर

स्थान	अक्षांश	रेखांश	देशान्तर मि.	देशान्तर घटि.	स्टैंण्डर्ड अंतरमि.से.
अमरनाथ	३४.१२	७५.३०	-८	-०.१९	-२८.००
अनंतनाग	३३.४४	७५.०९	-९	-०.२३	-२९.२४
वरमूला	३४.२४	७४.२४	-१२	-०.३०	-३२.२४
गिलगिट	३५.५५	७४.२०	-१२	-०.३१	-३२.४०
गुलमर्ग	३०.०३	७४.२३	-१२	-०.३०	-३२.२८
जम्बू	३२.४३	७४.५२	-१०	-०.२६	-३०.३२
कारगिल	३४.३१	७६.१३	-५	-०.१२	-२५.०८
लेह	३४.१०	७७.३५	+१	+०.२	-१९.४०
श्रीनगर	३४.०६	७४.४८	-१०	-०.२६	-३०.४८
ऊधमपुर	३२.५६	७५.०८	-९	-०.२३	-२९.२८

गुजरात एवं गोवा राज्य के प्रमुख नगर

स्थान	अक्षांश	रेखांश	देशान्तर मि.	देशान्तर घटि.	स्टैंण्डर्ड अंतरमि.से.
अहमदावाद	२३.०२	७२.३६	-१९	-०.४८	-३९.३६
भावनगर	२१.४६	७२.११	-२१	-०.५२	-४१.१६
भुज	२३.१६	६९.४८	-३०	-१.१६	-५०.४८
भडोंच	२१.४१	७३.०१	-१८	-०.३७	-३७.५६
दमन	२०.२५	७२.५३	-१८	-०.४५	-३८.२८
दीव	२०.४२	७१.०१	-२६	-१.४	-४५.५६
द्वारका	२२.१४	६८.५८	-३४	-१.२५	-५४.०८
गांधीनगर	२३.१५	७२.४५	-१९	-०.४७	-३९.००
जामनगर	२२.२७	७०.०७	-२९	-१.१३	-४९.३२
जूनागढ	२१.३३	७०.२७	-२८	-१.१०	-४८.१२
कंडला	२१.२१	७१.१७	-२५	-१.१	-४४.५२
खम्वात	२२.०३	७२.०६	-२१	-०.५३	-४१.३६
मोरबी	२२.४९	७०.४९	-२६	-१.६	-४६.४४
नादेड	२२.०७	७२.०९	-२१	-०.५३	-४१.२४
ओखा	२२.२४	६९.०६	-३३	-१.२३	-५३.३६
पोरबंदर	२१.३८	६९.३७	-३१	-१.१८	-५१.३२
राजकोट	२२.१८	७०.४८	-२६	-१.६	-४६.४८
सुरेन्द्रनगर	२२.४३	७१.३३	-२३	-०.५९	-४३.४८
वडौदरा	२२.१८	७३.१३	-१७	-०.४२	-३७.०८

महाराष्ट्र के प्रमुख नगर

स्थान	अक्षांश	रेखांश	देशान्तर मि.	देशान्तर घटि.	स्टैंण्डर्ड अंतरमि.से.
अहमदनगर	१९.१५	७४.४८	-१०	-०.२६	-३०.४८
आजन्त	२०.३३	७५.४८	-६	-०.१६	-२६.४८
अकोला	२०.४२	७७.०२	-२	-०.४	-२१.५२
अलीवाग	१८.३९	७२.५४	-१८	-०.४५	-३८.२४
अमरावती	२०.५६	७७.४५	+१	+०.३	-१९.००
औरंगावाद	१९.५२	७५.१८	-८	-०.२१	-२८.४८
भुसावल	२१.०२	७५.४७	-७	-०.१६	-२६.५२
ऐलोरा	२०.०२	७५.१३	-९	-०.२२	-२९.०८
जलगांव	२१.०३	७५.४०	-७	-०.१८	-२७.२०
गौंदिया	२१.२३	८०.१४	+११	+०.२८	-९.४
धूलिया	२०.५३	७४.५०	-१०	-०.२६	-३०.४०
कल्याण	१९.१४	७३.१०	-१७	-०.४३	-३७.२०
कोल्हापुर	१६.४२	७४.१४	-१३	-०.३२	-३३.०४
मुम्बई	१८.५८	७२.५१	-१८	-०.४६	-३८.३६
नागपुर	२१.०९	७९.०५	+७	+०.१७	-१३.४०
नादेड	१९.०९	७७.२७	०.०	०.०	-२०.१२
नासिक	२०.०२	७८.५०	+६	+०.१४	-१४.४०
उस्मानावाद	१८.१२	७६.०३	-५	-०.१४	-२५.४८
पुणे(पूना)	१८.३१	७३.५३	-१४	-०.३५	-३४.२८
रत्नागिरि	१७.०८	७३.१९	-१६	-०.४१	-३६.४४
सतारा	१७.४२	७४.००	-१४	-०.३४	-३४.००
शोलापुर	१७.३९	७५.५५	-६	-०.१५	-२६.२०
वर्धा	२०.४४	७८.३७	+५	+०.१२	-१५.३२

भारत के अन्य राज्यों के प्रमुख शहर

स्थान	अक्षांश	रेखांश	देशान्तर मि.	देशान्तर घटि.	स्टैंण्डर्ड अंतरमि.से.
पटना-विहार	२५.३६	८५.०८	+३१	+१.१७	+१०.३२
कोलकाता	२२.३५	८८.२३	+४४	+१.५०	+२३.३२
गोहाटी-आसाम	२६.१०	९१.४५	+५७	+२.२३	+३७.००
शिलांग-मे.	२५.३५	९१.५३	+५८	+२.२५	+३७.३२
रांची-झार.	२३.२२	८५.२१	+३२	+१.१९	+११.२४
इम्फाल-मणी	२४.४८	९३.५७	+६६	+२.४५	+४५.४८
भुवनेश्वर	२०.१५	८५.५०	+३४	+१.२४	+१३.२०
वेंगलौर	१२.५८	७७.३६	+१	+०.२	-१९.३६
चेन्नई	१३.१४	८०.१५	+११	+०.२८	-९.००
रामेश्वरम्	९.१८	७९.१८	+८	+०.१९	-१२.४८
तिरूवनंतपुरम्	८.३१	७७.००	-२	-०.४	-२२.००
हैदरावाद	१७.२६	७८.२७	+४	+०.१०	-१६.१२
विशाखापटनम्	१७.४३	८३.१९	+२४	+०.५९	+३.१६
पोडिचेरी	११.५६	७९.५०	+१०	+०.२४	-१०.४०
जगन्नाथपुरी	१९.४८	८५.५०	+३४	+१.२४	+१३.२०
राउरकेला	२२.२५	८४.५२	+३०	+१.१४	+९.२८
पोर्टब्लेयर	११.४०	९२.४६	+६१	+२.२४	+४१.०४
पणजी गोवा	१५.२९	७३.४९	-१४	-०.३६	-३४.४४

विभिन्न नगरों में लग्न प्रवेश समय संस्कार सारणी (मिनट में)

इस पंचांग के पक्ष पृष्ठ पर प्रतिदिन भोपाल में लग्नों का प्रारंभ समय दिया गया है। अन्य शहरों में लग्न प्रारंभ समय जानने के लिये निम्न सारणी में लिखे मिनट चिन्ह के अनुसार संस्कार करें। अन्य शहरों के लिए इस सारणी में दिये गये निकटतम शहर या अक्षांश सारणी में दिये गये देशान्तर मिनट का उपयोग करें।

शहर	मेष	वृष	मिथु	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि	धनु	मक	कुंभ	मीन
इन्दौर	७	७	७	७	७	६	६	५	५	५	६	६
देवास	६	६	६	६	६	६	५	५	५	५	५	५
धार	९	९	१०	९	९	८	७	७	७	७	७	८
झाबुआ	१२	१२	१२	१२	१२	११	११	१०	१०	१०	११	११
उज्जैन	७	७	७	७	७	७	७	६	६	६	७	७
मंदसौर	९	८	८	८	८	९	१०	११	११	११	१०	१०
ग्वालियर	−५	−८	−९	−९	−६	−४	−१	२	३	३	०	−२
दतिया	−६	−८	−९	−९	−७	−५	−२	०	१	०	−१	−४
भिंड	−८	−११	−१२	−१२	−९	−६	−३	०	२	१	−२	−५
मुरैना	−५	−८	−१०	−९	−६	−३	०	३	४	४	१	−२
शिवपुरी	−३	−५	−६	−६	−४	−२	१	३	४	३	२	−१
गुना	−१	−२	−२	−२	−१	−०	२	३	३	३	२	१
राजगढ	२	२	१	१	२	३	३	४	४	४	४	३
सागर	−६	−६	−६	−६	−६	−५	−५	−४	−४	−४	−५	−५
दमोह	−९	−९	−१०	−९	−९	−८	−८	−७	−७	−७	−८	−८
छतरपुर	−१०	−११	−१२	−१२	−११	−९	−७	−६	−५	−६	−७	−८
टीकमगढ	−७	−८	−९	−८	−७	−६	−५	−३	−३	−३	−४	−५
रीवा	−१७	−१८	−१८	−१८	−१७	−१६	−१५	−१३	−१३	−१३	−१४	−१५
पन्ना	−१२	−१४	−१४	−१४	−१३	−१२	−१०	−९	−८	−८	−९	−११
कटनी	−१३	−१३	−१३	−१३	−१३	−१२	−१२	−११	−११	−११	−१२	−१२
जबलपुर	−१०	−१०	−१०	−१०	−१०	−१०	−१०	−१०	−१०	−१०	−१०	−१०
सिवनी	−८	−७	−६	−७	−७	−९	−१०	−११	−११	−११	−१०	−९
बालाघाट	−१०	−९	−८	−९	−१०	−११	−१३	−१४	−१४	−१४	−१३	−१२
छिंदवाडा	−५	−४	−४	−४	−५	−६	−७	−८	−९	−८	−८	−६
नरसिंहपुर	−७	−७	−६	−७	−७	−७	−७	−८	−८	−८	−७	−७
बैतूल	−१	०	१	१	०	−२	−३	−४	−५	−४	−३	−२
हरदा	२	३	३	३	२	१	०	०	−१	−१	०	−१
खंडवा	५	६	७	७	६	४	३	२	१	१	२	४
खरगौन	८	९	१०	१०	९	७	६	५	४	४	५	७
विदिशा	−२	−२	−२	−२	−२	−२	−१	−१	−१	−१	−१	−२
गंजवासौदा	−३	−३	−३	−३	−३	−२	−२	−१	−१	−१	−१	−२

शहर	मेष	वृष	मिथु	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि	धनु	मक	कुंभ	मीन
रायपुर	−१५	−१४	−१३	−१३	−१५	−१६	−१८	−२०	−२१	−२१	−१९	−१७
विलासपुर	−१८	−१७	−१७	−१७	−१८	−१९	−२०	−२१	−२२	−२१	−२१	−१९
जगदलपुर	−१५	−१२	−१०	−११	−१४	−१८	−२२	−२५	−२७	−२६	−२३	−१९
झांसी	−६	−८	−९	−९	−७	−५	−३	−१	०	−१	−२	−४
इलाहाबाद	−२०	−२१	−२२	−२२	−२०	−१८	−१६	−१४	−१३	−१४	−१५	−१७
बनारस	−२४	−२६	−२७	−२६	−२५	−२३	−२१	−१९	−१८	−१८	−२०	−२२
अयोध्या	−२२	−२५	−२७	−२६	−२३	−२०	−१६	−१३	−१२	−१२	−१५	−१९
गोरखपुर	−२७	−३०	−३१	−३१	−२८	−२५	−२१	−१८	−१६	−१७	−२०	−२३
मुंबई	२२	२५	२७	२६	२३	१९	१५	११	१०	१०	१३	१७
पुणे(पूना)	१८	२२	२४	२३	१९	१५	११	७	६	७	९	१३
नागपुर	−५	−३	−२	−३	−४	−६	−८	−१०	−११	−११	−९	−७
नासिक	−३	−११	१	०	−२	−५	−८	−११	−१२	−१२	−९	−६
जयपुर	३	०	−१	−१	२	६	९	१२	१४	१३	११	७
भरतपुर	−३	−७	−९	−८	−५	−१	३	६	८	७	४	१
जोधपुर	१५	१२	११	११	१४	१७	२०	२२	२४	२३	२१	१८
दिल्ली	−४	−८	−११	−१०	−६	०	५	१०	१३	११	७	२
हरिद्वार	−८	−१४	−१८	−१६	−११	४	३	९	१२	१०	५	−१



दिनांक अनुसार दैनिक वेलान्तर सारणी (मिनट में)

दिनांक	जन.	फर.	मार्च	अप्रै.	मई	जून	जुला.	अग.	सित.	अक्टू	नव.	दिस.
१	−३	−१३	−१२	−४	+३	+२	−४	−६	−०	+१०	+१६	+११
२	−४	−१४	−१२	−४	+३	+२	−४	−६	+०	+१०	+१६	+११
३	−४	−१४	−१२	−३	+३	+२	−४	−६	+०	+११	+१६	+१०
४	−५	−१४	−१२	−३	+३	+२	−४	−६	+१	+११	+१६	+१०
५	−५	−१४	−११	−३	+३	+२	−४	−६	+१	+११	+१६	+९
६	−६	−१४	−११	−२	+३	+१	−५	−६	+१	+१२	+१६	+९
७	−६	−१४	−११	−२	+३	+१	−५	−६	+२	+१२	+१६	+९
८	−७	−१४	−११	−२	+४	+१	−५	−६	+२	+१२	+१६	+८
९	−७	−१४	−१०	−२	+४	+१	−५	−६	+२	+१२	+१६	+८
१०	−७	−१४	−१०	−१	+४	+१	−५	−५	+३	+१३	+१६	+७
११	−८	−१४	−१०	−१	+४	+०	−५	−५	+३	+१३	+१६	+७
१२	−८	−१४	−१०	−१	+४	+०	−६	−५	+३	+१३	+१६	+६
१३	−८	−१४	−९	−१	+४	+०	−६	−५	+४	+१३	+१६	+६
१४	−९	−१४	−९	−०	+४	−०	−६	−५	+४	+१४	+१५	+५
१५	−९	−१४	−९	−०	+४	−०	−६	−५	+५	+१४	+१५	+५
१६	−१०	−१४	−९	+०	+४	−१	−६	−४	+५	+१४	+१५	+४
१७	−१०	−१४	−८	+०	+४	−१	−६	−४	+५	+१४	+१५	+४
१८	−१०	−१४	−८	+१	+४	−१	−६	−४	+६	+१४	+१५	+४
१९	−११	−१४	−८	+१	+४	−१	−६	−४	+६	+१५	+१४	+३
२०	−११	−१४	−७	+१	+४	−१	−६	−३	+६	+१५	+१४	+३
२१	−११	−१३	−७	+१	+३	−२	−६	−३	+७	+१५	+१४	+२
२२	−११	−१३	−७	+२	+३	−२	−६	−३	+७	+१५	+१४	+२
२३	−१२	−१३	−७	+२	+३	−२	−६	−३	+७	+१५	+१३	+१
२४	−१२	−१३	−६	+२	+३	−२	−६	−२	+८	+१५	+१३	+१
२५	−१२	−१३	−६	+२	+३	−३	−६	−२	+८	+१६	+१३	+०
२६	−१२	−१३	−६	+२	+३	−३	−६	−२	+८	+१६	+१३	−०
२७	−१३	−१३	−५	+२	+३	−३	−६	−२	+९	+१६	+१२	−१
२८	−१३	−१२	−५	+३	+३	−३	−६	−१	+९	+१६	+१२	−१
२९	−१३	−१२	−५	+३	+३	−३	−६	−१	+९	+१६	+१२	−२
३०	−१३		−४	+३	+३	−४	−६	−१	+१०	+१६	+११	−२
३१	−१३		−४		+२		−६	−०		+१६		−३

प्रयोग विधि

किसी दिनांक के स्थानीय मध्यम समय को स्थानीय स्पष्ट समय बनाने के लिये सारणी के अनुसार उस दिन का संस्कार चिन्ह के अनुसार करें। उदाहरण के लिए यह पंचांग ७७.२५ रेखांश पर बना है। १ जनवरी को पंचांग में स्टेंडर्ड सूर्योदय ५.५१ वजे लिखा है। देशान्तर सारिणी में देखने पर ७७.२५ रेखांश का स्टेंडर्ड अंतर –२०.२० मिला। स्टेंडर्ड सूर्योदय में से स्टेंडर्ड अंतर घटाने पर ५.३०.४० स्थानीय मध्यम सूर्योदय हुआ। उपरोक्त सारिणी में १ जनवरी को वेलान्तर – ३ मिनट मिला इसे स्थानीय मध्यम सूर्योदय में से घटाने पर ५.२७.४० स्थानीय स्पष्ट सूर्योदय होगा। यदि स्थानीय स्पष्ट समय को स्टेंडर्ड समय में वदलना हो तो स्टेंडर्ड अंतर एवं वेलान्तर दोनों के विपरीत चिन्ह (अर्थात् ऋण चिन्ह के स्थान पर धन करें और धन के स्थान पर ऋण) से संस्कार करें।

समय पद्धतियां – भारतीय पंचांगों में समय प्रदर्शन कीं तीन पद्धतियां प्रचलित हैं। किसी एक समय को तीन तरीकों से प्रदर्शित किया जा सकता है, ये हैं – १. स्थानीय स्पष्ट काल (Tru Time), २. स्थानीय मध्यम काल (Local Mean Time), ३. भारतीय मानक समय (Indian Standard Time), प्राचीन भारत के समस्त पंचांगों में स्थानीय स्पष्ट काल का ही उपयोग होता रहा है। इसकी मुख्य विशेषता यह है कि, प्रदत्त समय किसी एक अक्षांश के समस्त स्थानों पर अपरिवर्तित रहता है। उदाहरण के लिये यदि भोपाल के किसी पंचांग में स्थानीय सूर्योदय ६: ५५ लिखा है तो भोपाल से ठीक पूर्व या पश्चिम दिशा के भूमण्डल के समस्त नगरों में भी स्थानीय सूर्योदय ६: ५५ माना जायगा। इससे इन नगरों में भोपाल के अक्षांश के आधार पर बना पंचांग उपयोगी रहता है। परन्तु व्यवहार में हम जानते हैं कि समस्त स्थानों पर सूर्योय काल अलग-अलग होता है। पूर्व के स्थानों की अपेक्षा पश्चिम की ओर वाले स्थानों में सूर्योदय काल वढ़ता जाता है। किसी दिन कलकत्ता में प्रात: ५ वजे सूर्योदय होता जाता है, जवकि अहमदावाद में ६ वजे होता है। स्थानीय समय को स्टेंडर्ड बनाने के लिये दो संस्कार (वेलान्तर एवं स्टेंडर्ड) करना पड़ते हैं। यदि स्थानीय काल में वेलान्तर संस्कार कर दिया जाय तो वह स्थानीय मध्यम काल बन जाता है। स्थानीय मध्यम काल में स्टेंडर्ड अंतर संस्कार करने पर वह स्टेंडर्ड धड़ी का समय बन जाता है। दैनिक व्यवहार में स्टेंडर्ड समय का ही उपयोग होता है। यजमान द्वारा जो जन्म समय वताया जाता है वह स्टेंडर्ड समय होता है। यदि किसी पंचांग में तिथि नक्षत्रादि का स्टेंडर्ड समय दिया है तो उसमें भारत के किसी भी स्थान के लिये कोई भी संस्कार करने की आवश्यकता नहीं होती है।

वास्तुदेव परिचय

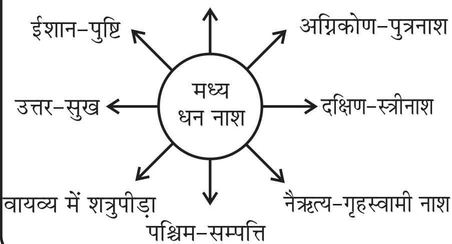
भवन एवं उसमें रहने वाले मनुष्यों की रक्षा करने वाले देवता वास्तु पुरुष हैं। वास्तुपुरुष वेदोक्त देव हैं। ऋग्वेद के सातवें मंडल के ५४ वें सूक्त में वास्तोष्पतिदेव कहा गया है एवं उनकी स्तुति की गई है। इनका मस्तक ईशान्य में एवं पैर नैऋत्य में रहते हैं। वे भवन को संवारकर औंधे मुंह सोए हुए हैं। शतपथ ब्राम्हण में वास्तु देवता को आत्मवर्धनशील कहा गया है। मंत्राणायी संहिता में वास्तु के अधिष्ठाता देवता रूद्र देव माने गए हैं। गृह निर्माण के प्रारम्भ में, द्वार वनाने के देवकी पूजन में, गृह प्रवेश के समय, किसी कारण से घर के दूषित होने पर, हर प्रकार के यज्ञ के प्रारम्भ होने पर वास्तु पुरुष का विधि विधान से पूजन एवं पायस बलि करना चाहिए। गृह निर्माण स्थान में ८१ पद, मंदिर या प्रसाद मंडपों में ६४ या १०० पद एवं शिव लिंग या दुर्गा की प्रतिष्ठा में १००० पद वाले वास्तु पीठ का पूजन करना चाहिए।

भूखण्ड का चयन

(१) विश्वकर्मा प्रकाश के अनुसार वर्गाकार अर्थात् जिसकी लम्बाई-चौड़ाई बरावर हो एवं वृत्ताकार भूखंड अत्यंत शुभ होते हैं।

(२) वराह मिहिर के अनुसार उत्तर की ओर ढ़लान वाली भूमि आरोग्य कारक,, ईशान ओर ढ़लान वाली भूमि सदा शुभ कारक, पूर्व की ओर ढ़लान वाला भूखंड सन्तान शुभ कारक है। जिस भूमि पर नेवले का निवास हो, गाय घोड़ा आदि पशुओं का वास रहा हो वह जगह शुभ है। जिस जमीन पर सर्प की बामीं या कटीले वृक्ष हों, हिंसक जानवरों का वास रहा हो स्थान वह अशुभ होता है। जिस भूखंड पर सार्वजनिक रास्ता जाकर समाप्त होता है वह अशुभ होता है।

गृहकूप दिशा फल



नाम राशि से ग्राम वास विचार

व्यक्ति को अपनी राशि के सम्मुख लिखी राशियों वाले ग्राम में निवास शुभ होता है। परन्तु शुभ राशि वाले ग्राम या शहर में भी सम्मुख लिखी दिशा में निवास नहीं करना चाहिए।

व्यक्ति राशि	शुभ ग्राम-शहर की राशि	अशुभ दिशा
मेष	वृष, सिंह, धनु, मक, कुंभ	उत्तर
वृष	मिथु, कन्या, मक, कुंभ, मीन	ग्राम मध्य
मिथुन	कर्क, तुला, कुंभ, मीन, मेष	ग्राम मध्य
कर्क	सिंह, वृश्चि, मीन, मेष, वृष	नैऋत्य
सिंह	कन्या, धनु, मेष, वृष, मिथु	ग्राम मध्य
कन्या	तुला, मक, वृष, मिथु, कर्क	दक्षिण
तुला	वृश्चि, कुंभ, मिथु, कर्क, सिंह	वायव्य
वृश्चिक	धनु, मीन, कर्क, सिंह, कन्या	पूर्व
धनु	मक, मेष, सिंह, कन्या, तुला	पश्चिम
मकर	कुंभ, वृष, कन्या, तुला, वृश्चि	ग्राम मध्य
कुंभ	मीन, मिथु, तुला, वृश्चि, धनु	ईशान
मीन	मेष, कर्क, वृश्चि, धनु, मकर	अग्नि

गृह पिण्ड से आय आदि विचार

भूखंड पर निर्मित भाग (छत एरिया) की लम्बाई एवं चौड़ाई का गुणा करने पर गृह पिण्ड प्राप्त होता है। गृह पिण्ड में ८ का भाग देने पर जो शेष बचे उसके अनुसार निम्न चक्र से गृह की आय एवं फल जानना चाहिए। गृह पिण्ड में उपरोक्त चक्र में दिए गए गुणक से गुणा कर, भाजक से भाग देने पर गृह की आय आदि प्राप्त होती है।

ग्रह पिण्ड		
शेष	आय	फल
१	ध्वज	शुभ
२	धूम	अशुभ
३	सिंह	शुभ
४	श्वान	अशुभ
५	वृषभ	शुभ
६	गदर्भ	अशुभ
७	गज	शुभ
८	ध्वांक्ष	अशुभ

ग्रह आय इत्यादि		
गुणक	भाजक	आय आदि
९	८	आय
९	७	वार
६	९	अंश
८	१२	धन
३	८	ऋण
८	२७	नक्षत्र
८	१५	तिथि
४	२७	योग
८	१२०	आयुर्दाय

देव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त

समय शुद्धि- उत्तरायन सूर्य में, गुरुशुक्र व चन्द्रमा के उदित रहने पर।

तिथियां- शुक्ल पक्ष की द्वितीया से लेकर कृष्ण पक्ष की पंचमी तक रिक्ता तिथियां छोड़कर ।

नक्षत्र- हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती, अश्विनी, पुनर्वसु, तीनों उत्तरा, रोहिणी, मृगशिरा नक्षत्रों में, वार - मंगलवार को छोड़कर अन्य वारों में, ।

लग्न -मध्यान्ह समय तक, स्थिर या द्विस्वभाव बलवान लग्न में, अष्टम राशि, लग्न छोड़कर देव प्रतिष्ठा शुभ है।

अन्य - नवरात्र में दुर्गा की, चतुर्थी में गणेश की, भाद्रपद में श्री कृष्ण की, चतुर्दशी में शिवजी की प्रतिष्ठा सुखद है। इसी प्रकार उग्रप्रकृति के देवता जैसे भैरव, मातृका, वराह, नृसिंह, वामन, महिषासुर मर्दिनी आदि की प्रतिष्ठा दक्षिणायन सूर्य में भी शुभ है।

ग्राम वास में काकिणी विचार

निम्न लिखित सारणी से अपने नाम तथा ग्राम के नाम के प्रथम अक्षर से वर्ग संख्या के अनुसार मिलान कर ग्राम वास में लाभ-हानि जानें।

प्रथम अक्षर	वर्ग संख्या	प्रथम अक्षर	वर्ग संख्या
अ इ उ ए	१	त थ द ध न	५
क ख ग घ ङ	२	प फ व भ म	६
च छ ज झ	३	य र ल व	७
ट ठ ड ढ ण	४	श ष स ह	८

काकिणी		ग्राम या नगर की वर्ग संख्या							
		१	२	३	४	५	६	७	८
जातक के नाम की वर्ग संख्या	१	सम	लाभ	लाभ	हानि	हानि	लाभ	लाभ	हानि
	२	हानि	सम	हानि	लाभ	लाभ	लाभ	हानि	हानि
	३	हानि	लाभ	सम	लाभ	लाभ	लाभ	हानि	हानि
	४	लाभ	हानि	हानि	सम	लाभ	हानि	हानि	लाभ
	५	लाभ	हानि	हानि	हानि	सम	लाभ	लाभ	लाभ
	६	हानि	हानि	हानि	लाभ	हानि	सम	लाभ	लाभ
	७	हानि	लाभ	लाभ	लाभ	हानि	हानि	सम	लाभ
	८	लाभ	लाभ	लाभ	हानि	हानि	हानि	हानि	सम

खात या नींव खुदाई प्रारंभ की दिशा

खात या नींव खुदाई प्रारंभ की दिशा सूर्य की राशि से निर्धारित होती है। गृह और देवालय में खात की दिशा सूर्य की राशि के अनुसार नीचे लिखी सारणी से निर्धारित करें।

खात की दिशा	ईशान कोण	वायव्य कोण	नैऋत्य कोण	अग्नि कोण
गृहारंभ में	वृश्चिक, धनु, मकर	कुंभ, मीन, मेष	वृष, मिथुन, कर्क	सिंह, कन्या, तुला
देवालय में	मिथुन, कर्क, सिंह	कन्या, तुला, वृश्चिक	धनु, मकर, कुंभ	मीन, मेष, वृष

शिलान्यास ;या नींव भरने की दिशा - शिलान्यास हमेशा अग्निकोण या ईशान कोण में किया जाता है। नाग नागिन के जोड़े का मुंह हमेशा पूर्व की ओर रखना चाहिये।

गृहारम्भ मुहूर्त्त

शुभ चंद्रमास- वैशाख, श्रावण, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ, एवं फाल्गुन।

शुभसौरमास - मेष, वृष, कर्क, सिंह, तुला, वृश्चिक, मकर एवं कुंभ राशि के सूर्य होने पर गृहारंभ शुभ है।

शुभ तिथियां - २,३,५,७,१०,११,१२,१३, १५ । **शुभ वार** - सोम, बुध, गुरु शुक्र एवं शनि।

शुभ नक्षत्र - मूल, तीनों उत्तरा, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, अनुराधा, धनिष्ठा, शतभिषा, हस्त, चित्रा, स्वाति, तथा रेवती शुभ हैं। मतान्तर से अन्य नक्षत्र भी। **भूशयन**- जिस नक्षत्र में सूर्य हो उससे ५, ७, ९, १२, १९ और २६ वाँ इन नक्षत्रों पृथ्वी शयन करती है, इसलिये इन नक्षत्रों में गृहारम्भ न करें। **वृषभचक्र शुद्धि**- सूर्य अधिष्ठित नक्षत्र से गृहारंभ नक्षत्र ८ वां, ९वां, १० वां, ११ वां, १२वां, १३ वां, १४ वां, १५ वां १६वां, १७ वां या १८ वां होने पर वृषभ चक्र शुभ होता है।

गृह प्रवेश मुहूर्त्त

समय शुद्धि- नूतन गृह प्रवेश के समय गुरु-शुक्र उदित हों। परन्तु सपूर्व गृह प्रवेश में गुरु-शुक्र उदित रहना आवश्यक नहीं है।

मास- नव निर्मित गृह में वैशाख, ज्येष्ठ, माघ एवं फाल्गुन मासों में गृह प्रवेश शुभ होता है। परन्तु पुनर्निर्मित गृह में श्रावण, कार्तिक, मार्गशीर्ष मासों में भी गृह प्रवेश शुभ है। **सूर्य** - कर्क, कन्या और कुंभ त्यागकर ।

तिथि- रिक्ता, अमावस्या छोड़कर।

वार- सोम, बुध, गुरु शुक्र, शनि।

नक्षत्र- नूतन गृह में तीनों उत्तरा, रोहिणी, मृगशिरा, अनुराधा, चित्रा, रेवती एवं द्वार दिशा के नक्षत्रों में गृह प्रवेश शुभ है। पुनर्निर्मित गृह या सपूर्व गृह प्रवेश में उपरोक्त नक्षत्रों के अतिरिक्त पुष्य, स्वाती, धनिष्ठा, एवं शतभिषा नक्षत्रों में भी किया जा सकता है।

कुंभक चक्र के अनुसार गृह प्रवेश के समय का नक्षत्र, सूर्य के नक्षत्र से ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १३, २२, २३, २४, २५, २६ या २७ वां होना चाहिये।

चन्द्र वल- गृह स्वामी की राशि से चौथा, आठवां निषेध।

लग्न- स्थिर लग्न में उत्तम, द्विस्वभाव में मध्यम। लग्न में चन्द्रमा न हो। प्रवेश लग्न में सूर्य वायां एवं शुक्र पृष्ट हो। शुक्र की दिशा यात्रा मुहूर्त्त में वर्णित है।

अन्य- यात्रा मुहूर्त्त की तरह ग्रहप्रवेश की दिशा से राहु, योगिनी, दिशासूल एवं काल-पांस का विचार करना चाहिए।

गृह प्रवेश काले रवि वाम दिशा - गृह प्रवेश लग्न के समय रवि ८, ९, १०, ११, १२ भाव में हों तो पूर्व दिशा, ५, ६, ७, ८, ९ भाव में हों तो दक्षिण दिशा, २, ३, ४, ५, ६ भाव में हों तो पश्चिम दिशा और लग्न से १, १२,१, २, ३ भाव में हों तो उत्तर दिशा के घर में प्रवेश शुभ होता है।

वर्गाकार एवं विना झुकी दिशा के भूखण्ड में गृह के मुख्य द्वार हेतु शुभ स्थान

वायव्य				उत्तर				ईशान्य
रोग	नाग	मुख्य ↑	भल्लाट ↑	कुवेर ↑	चरक	अदिति	दिति	शिखि
पाप	रुद्र	मुख्य	भल्लाट	कुवेर	चरक	अदिति	आप	पर्जन्य
शोष	शोष	यक्ष्मा		पृथ्वीधर		आपवत्स	जयंत	जयंत →
असुर	असुर		ब्रह्मा	ब्रह्मा	ब्रह्मा		इन्द्र	इन्द्र →
← वरुण	वरुण	मित्र	ब्रह्मा	ब्रह्मा	ब्रह्मा	अर्यमा	सूर्य	सूर्य
← पुष्पदन्त	पुष्पदन्त		ब्रह्मा	ब्रह्मा	ब्रह्मा		सत्य	सत्य
दौवारिक	दौवारिक	इन्द्र		विवस्वान्		सविता	भ्रंश	भ्रंश
सुग्रीव	जय	भृंगराज	गंधर्व	यम	वृहत्क्षत	वितथ	सवित्र	आकाश
पितृ	मृग	भृंगराज	गंधर्व	यम	वृहत्क्षत ↓	वितथ	पूषा	अनल
नैऋत्य				दक्षिण				आग्नेय

(पश्चिम — बायीं ओर; पूर्व — दायीं ओर)

वर्गाकार भूखण्ड के पद –
वर्गाकार अर्थात् समान लम्बाई–चौड़ाई एवं विना झुके हुये भूखंड की लम्बाई या चौड़ाई का ९वां भाग पद होता है। उदाहरण के लिए किसी भूखंड की पूर्व दिशा में माप २७ फिट है। २९ का ९वां हिस्सा ३ फीट का एक पद हुआ। प्रत्येक दिशा में तीर द्वारा प्रदर्शित पद पर मुख्य द्वार बनाना शुभ होता है। पूर्व दिशा में इन्द्र एवं जयंत पद में, दक्षिण में वृहत्क्षत् पद में, पश्चिम में वरुण एवं पुष्पदंत पद में, उत्तर में मुख्य, भल्लाट एवं कुवेर पद में मुख्य द्वार शुभ होता है।

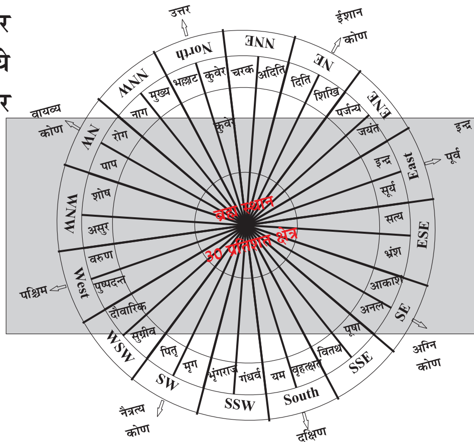
मुख्य द्वार का आकार – द्वार की उंचाई, उसकी चौड़ाई से दुगनी होना चाहिए।

मुख्य द्वार हेतु शुभ पद का फल – पूर्व दिशा में जयंत स्थान पर मुख्य द्वार बनाने से धनलाभ, इन्द्र पर राज्यप्रियता, दक्षिण दिशा में वृहत्क्षत पर द्वार बनाने से संतति वृद्धि, पश्चिम दिशा में पुष्पदंत पर द्वारा वनाने से धनवृद्धि, वरूण पर द्वार वनाने से योग प्राप्ती होती है। उत्तर दिशा में मुख्य पर द्वार से धनलाभ, भल्लाट पर विपुल लक्ष्मी एवं कुवेर स्थान पर मुख्य द्वारा वनाने से धर्म –शील में वृद्धि होती है।

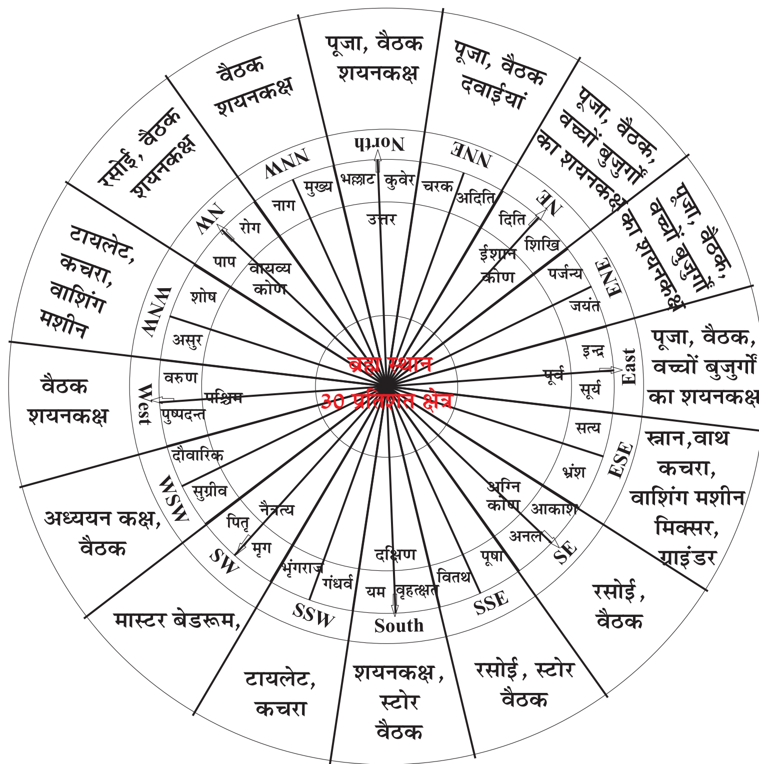
मुख्य द्वार में गुण–दोष – मुख्य द्वार के सामने वृक्ष, खंभा, हेंडपंप, टंकी, पिलर इत्यादि से वेध दोष होता है। दरवाजे में यथा संभव दो पल्ले होना चाहिए। दरवाजे लगाते–खोलते समय आवाज रहित होना चाहिए अन्यथा भय पैदा होता है। यदि दरवाजा अपने आप बंद होता हो तो वह अशुभ होता है। मुख्य द्वार के ठीक सीध में मकान में अंदर की तरफ अन्य दरवाजा नहीं होना चाहिए। शीशम, महुआ, शाक, अशोक, नीम, सागवान, खैर इत्यादि का दरवाजा शुभ होता है। पीपल, वरगद या किसी अधजली लकड़ी का दरवाजा अशुभ होता है। दरवाजों में दरार दरिद्रता का कारण होती है। प्रमुख दरवाजे पर दहलीज अवश्य होनी चाहिए, अन्यथा घर में बचत नहीं होती है। यथा संभव दरवाजे एवं चौखट लकड़ी के होना चाहिए। अज्ञात वास्तुदोष निवारण हेतु मुख्य द्वार पर श्री गणेश या स्वस्तिक चिन्ह वनाना चाहिए। मुख्य प्रवेश द्वार की चौखट के ऊपर झरोखा होने से घर में आनन्द मंगल रहता है। दरवाजे अंदर की ओर खुलने वाले होना चाहिए अन्यथा समस्याओं का सिलसिला लगा रहता है।

असमान लम्बाई चौडाई, आयताकार असमान कोण एवं विदिशा झुके हुये भूखण्डों के लिये वृत्त वास्तु द्वारा मुख्य द्वार के पदों का ८१ पद वास्तु चक्र

इस चित्र में चक्र में प्रदर्शित देवताओं के पद भूखण्ड से वाहर या अन्दर दिखाई दे रहे हैं। वास्तव में बृम्ह स्थान से पद की ओर देखने पर वह कोणीय क्षेत्र भूखण्ड की भुजा पर जहां दिख रहा है, वहां पर उस देवता का क्षेत्र है। चित्र में कुवेर एवं इन्द्र पदों को भूखण्ड पर दर्शाया गया है।



१६ क्षेत्रों में निर्माण हेतु गृह विभाग वास्तु



ईशान	पूर्व					अग्नि
उत्तर	देवस्थान	सर्व संग्रह	स्नानगृह	मन्थन	रसोईघर	दक्षिण
	औषधि				घृतसंग्रह	
	भंडार		आंगन		शयनगृह	
	स्त्रीप्रसंग				पयखाना	
	धान्य सं.	रोदनगृह	भोजन सं.	विद्या	शस्त्रागार	
वायव्य	पश्चिम्					नैऋत्य

वास्तुदोष शांति के उपाय

(१) मुख्यद्वार पर मांगलिक ओम या स्वस्तिक चिन्ह का उपयोग करना चाहिए। धर में नमक से पौंछा लगायें। कपूर जलाऐं।
(२) प्रतिदिन अग्निहोत्र, हवन करना चाहिए।
(३) प्रतिदिन गाय, कौआ, कुत्ते को यथा शक्ति भोजन का भाग, ग्रास खिलाना चाहिये।
(४) वर्ष में एक वार अमावस्या के दिन दही–चावल एवं नारियल पूरे घर से उतार कर बाहर फेंक देना चाहिए। यह बली का स्वरूप है। वास्तु पूजन एवं बलि से शांति होती है।
(५) वर्ष में एक वार हवन–पूजन करवाना चाहिए।
(६) घर को सदैव स्वच्छ रखना चाहिए।

गृह वास्तु के सामान्य नियम

भूखंड के दक्षिण पश्चिम भाग में अधिकाधिक निर्माण करना चाहिए। पूर्वोत्तर यथा संभव खाली छोड़ना चाहिए।
उत्तर या ईशान्य में भूमिगत टेंक वनाना या कुआ– नलकूप खुदवाना चाहिए। ओवरहेड टैंक छत पर पश्चिम में या वायव्य में बनाना चाहिए। शयन कक्ष में भगवान के चित्र न लगाएं। वीम के नीचे न सोएं। शयनकक्ष में पलंग इस प्रकार विछाएं कि सोते समय सिर दक्षिण या पूर्व में रहे। काले एवं लाल रंग का प्रयोग मकान में नहीं करना चाहिए। जमीन एवं छत का ढ़लान पूर्व ईशान या उत्तर में करवाना चाहिए। प्रकृति में धनात्मक शुभ ऊर्जा का प्रवाह पूर्व से पश्चिम दिशा की ओर है, इसलिए पूर्व एवं उत्तर दिशा में मकान की खिड़की इस प्रकार वनाऐं कि इन दिशाओं से अधिक से अधिक सकारात्मक ऊर्जा घर में प्रवेश कर सके। दक्षिण पश्चिम में कम से कम खिड़कियां रखना चाहिए। खिड़कियां सम संख्या में होना चाहिए। मकान के सभी कोने समकोण होने चाहिए अन्यथा कोण वेध होता है। दक्षिण पश्चिम भरी होना चाहिए इसलिए इन दिशाओं की दीवारें मोटी होना चाहिए तथा भारी सामान इन्हीं दिशाओं में रखा जाना चाहिए। इन दिशाओं में भारी पेढ़ लगाऐं। घर में तुलसी का पौधा अवश्य होना चाहिए। नैऋत्य में सैप्टिक टेंक या किसी भी प्रकार का गड्ढा नहीं होना चाहिए। टायलेट, स्नानग्रह भृंगराज या असुर के पद में वनाएं। टायलेट का पॉट इस प्रकार रहे कि शौच के लिए बैठते समय व्यक्ति का मुंह उत्तर या दक्षिण की तरफ रहे। दो मंजिल मकान में दरवाजे के ऊपर दरवाजा होना चाहिए। ऊपरी मंजिल के छत की ऊचाई, निचली मंजिल की ऊचाई का बारहवां भाग कम होना चाहिए। रसोईघर मुख्यद्वार के ठीक सामने नहीं होना चाहिए।

कारखाने में वास्तु–पूर्व में मुख्यद्वार, खुली जगह। अग्निकोण में ट्रांसफार्मर, वायलर। दक्षिण में मशीनरी, मार्केटिंग मैनेजर, नैऋत्य में भारी मशीनरी, पश्चिम में कच्चा माल एवं कर्मचारियों के लिए कैंटीन, वायव्य में पक्का माल, उत्तर में मुख्य दरवाजा, कैशियर के कागजात, कम्प्यूटर, मालिक के बैठने का कमरा, ईशान्य में जल स्टोर, कम्प्यूटर, मालिक के बैठने का कमरा होना चाहिए।

प्रमुख वास्तु दोष

(१) **नैऋत्य दिशा में गड्ढा** – यदि नैऋत्य दिशा में गड्ढा हो तो परिवार के मुखिया की असमय मृत्यु, नींद न आना, व्यवसाय में हानि एवं कई समस्याऐं आती हैं।
(२) **ईशान्य, अग्नि या नैऋत्य कोण में टायलेट** – ऐसी स्थिति में बुद्धि ठीक से काम नहीं करती व ज्यादातर गलत निर्णय लेने से परेशानियां आती रहतीं हैं। आर्थिक एवं रोग समस्या और गृहस्थी में नाना प्रकार कीं समस्याऐं आती हैं।
(३) **उत्तर में मिट्टी का टीला होना।**

सोपान वास्तु की वैज्ञानिक उपपत्ति

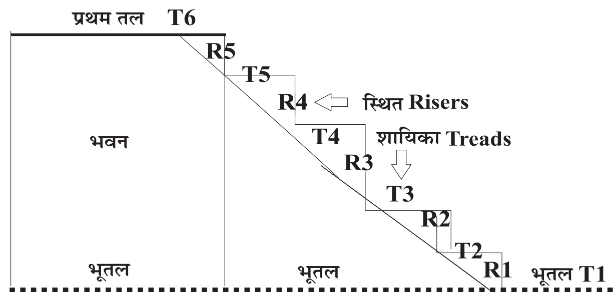
Scientifical Derivation of Staircase Vastu

वास + अस्तु = वास्तु। इस प्रकार निवास करने की कला या विधा को वास्तुशास्त्र कहते हैं। भारतीय मनीषियों ने प्रकृति के बीच रहकर कुछ अनुभव प्राप्त किये जिनसे विभिन्न शास्त्रों का क्रमिक विकाश हुआ। भारतीय वास्तुशास्त्र भी एक प्राकृतिक विज्ञान है। पर्यावरण, भूगोल, अभियान्त्रिकी, भौतिकी, रसायन, पादप विज्ञान, जीव विज्ञान, खगोल, विकिरण, समस्त प्रकार की दृश्य एवं अदृश्य उर्जाऐं जैसे प्रकाश तरंग, चुम्बकीय तरंग, कोस्मिक तरंग, गुरुत्वाकर्षण तरंग, क्वान्टम् इत्यादि विषयों में वर्णित नियमों का ब्रम्हाण्ड के चराचर जगत पर पड़ने वाले प्रभाव के सम्यक अध्ययन ही वास्तुशास्त्र की विषयवस्तु है।

प्राचीनकाल में लेखन सामग्री की न्यून उपलब्धता के कारण गुरु कुल में विद्यार्थियों को विषय का अभ्यास कण्ठस्थ रूप से कराया जाता था। मूल विषय वस्तु को कण्ठस्थ रूप से एवं उपपत्ति को मौखिक रूप से समझाई जाती थी। कालान्तर में गुरुकुल समाप्त हो गये इससे परिणाम स्वरूप मूल नियम तो विद्यमान हैं, लेकिन उपपत्ति का लोप हो गया। उपपत्ति के अभाव में भारतीय विज्ञान या शास्त्रों के विषयों को वर्तमान में शंका की दृष्टि से देखा जाने लगा है। अत:अव यह आवस्यक है कि विद्यार्थियों को वास्तुशास्त्र के साथ-साथ आधुनिक विज्ञान का ज्ञान भी कराया जाये, इससे उनका सभ्यक विकास होकर वे क्यों और कैसे का उत्तर देने में सक्षम हो सकेंगे।

वास्तुशास्त्र के अनुसार भवन में **सोपान** का अत्यधिक महत्व होता है। सोपान को सीढ़ी, जीना या स्टेयरकेस भी कहते हैं। सोपान के माध्यम से उर्जा तरंगों का प्रवाह भूतल से उच्च तलों की ओर या विपरीत दिशा में अनवरत विद्यमान रहता है। सोपान के वारे में प्राचीन वास्तु ग्रंथों में बहुत कम विवरण मिलता है, इस कारण अनेक भ्रान्तियां व्याप्त हैं। इस लेख में प्राचीन वास्तु शास्त्रीय सूत्रों एवं विद्यमान भवनों के सोपान विन्यास का आधुनिक विज्ञान की दृष्टि से विश्लेषण प्रस्तुत किया जा रहा है।

सोपान संख्या:- सोपान में खड़े हुये फलक को '**स्थित**' या Riser कहते हैं तथा लेटे हुये फलक को '**शायिन**' या Tread कहते हैं। प्रस्तुत चित्र में '**स्थित**' को R से तथा '**शायिन**' को T से प्रदर्शित किया गया है।



मयमतम् : अध्याय २१, श्लोक क्रमांक ९४ के अनुसार –

अयुग्मेव सोपानं गुह्या-अगुह्य वशात्ततः।

एकभक्तिविनिष्क्रान्तं मण्डपादिषु वाह्यतः।।

अर्थात सोपान के '**स्थित**' Risers की संख्या विषम होना चाहिये। इसमें भूतल को मिलाने पर कुल '**शायिन**' Tread संख्या सम हो जाती है। भारतीय ज्योतिष शास्त्रों में गिनती की विषम-सम संख्याओं को क्रमश: '**क्रूराक्रूरौ**' कहा है। अत: '**शायिन**' (पदतल) संख्या सम होने से **अक्रूर (शुभ)** होती है।

समराङ्गणसूत्रधार : अध्याय १८, श्लोक क्रमांक ११ के अनुसार –

काष्ठकैर्यत्र रचितं स्थूयोरधिरोहणम्।

सा नि:क्षेणिरिति प्रोक्ता सोपानैर्विपुलै: पदे।।

इस प्रकार समराङ्गणसूत्रधार में सोपानों की संख्या '**विपुल**' अर्थात् अनेक मात्र संकेत है, सम-विषम संख्या का स्पष्ट निर्देश नहीं है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण से पदताल लय **(रिदम्)** पूर्ण होने पर सोपानों पर चढ़ने-उतरने में श्रम का कम अनुभव होगा। अत: विषम संख्यक '**स्थित**' Risers **शुभ** होना स्वभाविक है।

सोपान आरोहण में आवर्त (दक्षिणावर्त-वामावर्त) भ्रांति समाधान

मयमतम् : अध्याय २१, श्लोक क्रमांक ९५ के अनुसार –

सोपानं सर्ववर्णानां प्रादक्षिण्याधिरोहणम्।

प्रशस्तं विपरीतं तद् विनाशाय भवेदिह।।

इस श्लोक के अनुसार सभी वर्णो के सोपान दक्षिणावर्ती होना चाहिये अन्यथा विनाश होता है। यह तथ्य बहुप्रचलित है। लेकिन इस श्लोक से पहले श्लोक क्रमांक ८६ से ९० के वीच चार प्रकार के सोपानों का वर्णन है, इनमें से केवल श्लोक क्रमांक ८९ में दक्षिणावर्ती सोपान ('**अश्वपादोपरि स्थित्यारोहणं दक्षिणाङ्घ्रिणा**') आदेशित है। अन्य तीन प्रकार के सोपानों के साथ यह नियम नहीं है।

अत: सम्यक रूप से यह कह सकते हैं कि सभी वर्ण के लोग को केवल अश्वपद (अर्धचंद्राकार) प्रकार के सोपान को दक्षिणावर्ती वनाना चाहिये।

हमारे पूर्वज विद्वानों के निर्देशन में वनाये गये प्रचीन मंदिरों और दुर्गों में भी वामावर्ती एवं दक्षिणावर्ती दोनों प्रकार के सोपान विद्यमान हैं।

अत: अव हम निश्चित रूप से यह कह सकते हैं कि **वामावर्ती एवं दक्षिणावर्ती दोनों प्रकार के सोपान** होते हैं।

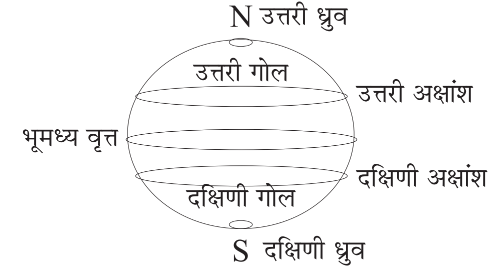
सोपान केवल दक्षिणावर्ती होना चाहिये यह भ्रांति है।

सोपान आरोहण में आवर्त (दक्षिणावर्त-वामावर्त) : वैदिक ए भूगोलीय मापदंड

किसी वास्तुपद में सोपान आरोहण दक्षिणावर्ती हो या वामावर्ती? इसका निर्धारण भूखण्ड की पृथ्वी के गोलार्ध में स्थिति (उत्तर या दक्षिण अक्षांश), उस गोलार्ध में चक्रवात की विशेषता एवं भूखण्ड के वास्तुपद से किया जाता है। विन्दुवार विवरण इस प्रकार है :-

(एक) भूखण्ड की भौगोलिक स्थिति – (उत्तर या दक्षिण अक्षांश)।

पृथ्वी की भूमध्य रेखा (शून्य अक्षांश) से उत्तरी ध्रुव तक का क्षेत्र उत्तरी गोल कहलाता है, तथा भूमध्य रेखा से दक्षिणी ध्रुव तक का क्षेत्र दक्षिणी गोल कहलाता है। इसमें भूमध्यरेखा वृत्त के समानान्तर ९० अक्षांश होते हैं।



(दो) मरुद्गणों (चक्रवात) की प्रकृति के वैदिक प्रमाण

प्रकृति में ऊर्जा का प्रवाह मरुद्गणों के माध्यम से होता है। या ऐसा भी कह सकते हैं कि, प्रकृति के निकायों (नेचुरल सिस्टम) में जिस ऊर्जा से कार्य संपादन होता है वह मरुद्गण हैं। इसका प्रमाण वेदों और पुराणों में मिलता है। मरुद्गणों को उनके वैमात्रिक भाई इन्द्र द्वारा दिति के गर्भ में उनन्चास भागों में खण्डित करने वृत्तांत सर्वत्र कथित है। ४९ प्रकार के मरुद्गणों में से ७ प्रकार के मरुद्गण चक्रवात स्वरूप होते हैं। इन्हें भारत में चक्रवात, बेस्टइन्डीज में प्रभंजन, फिलीपिन्स में बबंडर एवं अमेरिका में टोर्नेडो कहा जाता है। मरुद्गणों के अन्य लघु स्वरूप सामान्य वात एवं सूक्ष्म वात के ऊर्जा प्रवाह पृथ्वी पर निरन्तर विद्यमान रहते हैं। वात (वायु) की ऊर्जा के श्रोत्र मरुद्गण ही हैं, इसके प्रमाण हेतु ऋग्वेद के कुछ सूत्र इस प्रकार हैं –

(1) सत्यं त्वेषा अमवन्तो धन्वञ्चिदा रुद्रियासः।

मिहं कृण्वन्त्यवाताम्।। (ऋग्वेद 1.38.7)

भावार्थ – यह सत्य है कि वे कान्तिमान, बलिष्ठ रुद्रदेव के पुत्र वे मरुद्गण वात (पवन) सहित वर्षा करते हैं।

(2) को वो वर्षिष्ठ आ नरो दिवश्च ग्मश्च धूतयः। यत्सीमन्तं न धूनुथ।। (ऋग्वेद 1.37.6)

भावार्थ –क्षितिज धरा को कम्पायमान करने वाले मरुतो! तुमसे वड़ा कौन है? तुम वृक्ष की डालियों के तुल्य संसार को हिलाते हो।

मस्तो यद्ध वो बलं जनां अचुच्यवीतन। गिरींरचुच्यवीतन।। (ऋग्वेद 1.37.12)

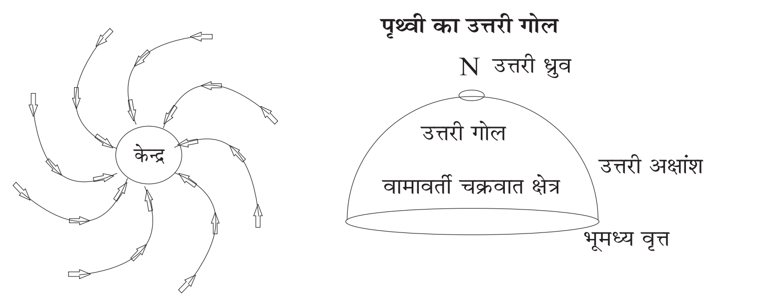
भावार्थ – हे मरुतो ! आप अपने बल से लोगों को विचलित कर देते हैं, आप पर्वतों को भी विचलित करने में समर्थ हैं।

(इस तथ्य से सभी परिचत हैं कि जव चक्रवात आता है तव भीषण वर्षा भी होती है। वृक्ष उखड़ जाते हैं। जनजीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है)

चक्रवात दो प्रकार के होते हैं – वामावर्ती एवं दक्षिणावर्ती।

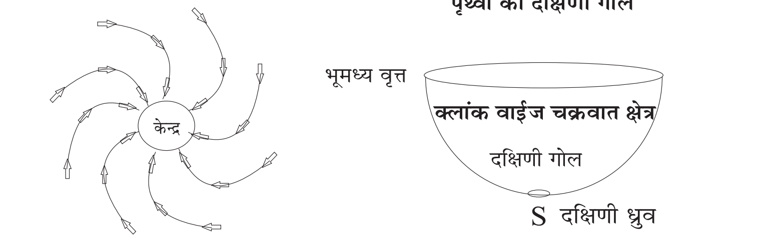
1 – उत्तरी अक्षांश वाले देशों में वामावर्ती चक्रवात या प्रतिचक्रवात (एन्टी क्लाँक वाईज) –

इसमें वायु का प्रवाह, घड़ी की सुई की विपरीत दिशा में बाहर से केन्द्र की ओर होता है। इस प्रकार के चक्रवात भूतल पर पृथ्वी के उत्तरी गोल में सक्रिय रहते हैं। इस प्रकार के चक्रवात प्राय: उत्तरी अक्षांश वाले देशों जैसे भारत, चीन, जापान, यूरोप, उत्तरी अमेरिका इत्यादि में आते हैं।



2 – दक्षिणी अक्षांश के देशों में दक्षिणावर्ती (क्लांक वाईज चक्रवात)–

इसमें वात यानि वायु का प्रवाह घड़ी की सुई की दिशा में, बाहर की ओर से केन्द्र की ओर होता है। इस प्रकार के चक्रवात भूतल पर पृथ्वी के दक्षिणी गोल में सक्रिय रहते हैं। यह चक्रवात आस्ट्रेलिया, दक्षिणी अमेरिका, अफ्रीका का दक्षिण भाग इत्यादि दक्षिणी अक्षांश वाले क्षेत्रों में आता है।



निष्कर्ष – दक्षिणी अक्षांश वाले देशों में दक्षिणावर्ती चक्रवात होते हैं, इनमें भी ऊर्जा का प्रवाह बाहर से केन्द्र की ओर होता है। अत: उत्तरी अक्षांशें के समान प्रकृति से शुभ ऊर्जा प्रवाह **(पोजीटिव इनर्जी)** प्राप्त करने के लिये शुभ वास्तु देवताओं के पद में सोपान का आरोहण **दक्षिणावर्ती (क्लाँक वाईज)** वनाना शुभ होता है। इसी प्रकार अशुभ ऊर्जा **(निगेटिव इनर्जी)** कार्य प्रदाता असुर पदों की ऊर्जा को भवन से बाहर करने हेतु इन स्थानों पर **वामावर्ती (एन्टी क्लाँक वाईज)** सोपान वनाना शुभ होता है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि, सोपान आरोहण का आवर्त दक्षिण एवं उत्तर गोल में परस्पर विपरीत दिशा में शुभाशुभ होता है।

(तीन) वास्तु देवता का या असुर का पद –

वास्तु मण्डल में सुर एवं असुर दोनों प्रकार के देवता हैं। वास्तुपद मण्डल में जहां पर सुर देवता हों वहां सोपान इस प्रकार वनाऐं जिससे प्रकृति की धनात्मक ऊर्जा भवन में प्रवेश करे। जहां पर असुर या उग्र पद हो वहां सोपान इस प्रकार वनाऐं कि असुर पद की ऋणात्मक ऊर्जा भवन से वाहर विसरित हो। 81 पदवास्तु में देवताओं की स्थिति चक्र में प्रदर्शित है।

उत्तर

वायव्य कोण — ईशान कोण

रोग	नाग	मुख्य	भल्लाट	कुवेर	चरक	अदिति	दिति	शिखि
पाप	रुद्र	मुख्य	भल्लाट	कुवेर	चरक	अदिति	आप	पर्जन्य
शोष	शोष	यक्ष्मा	पृथ्वीधर	पृथ्वीधर	पृथ्वीधर	आपवत्स	जयंत	जयंत
असुर	असुर	मित्र	ब्रह्मा	ब्रह्मा	ब्रह्मा	अर्यमा	इन्द्र	इन्द्र
वरुण	वरुण	मित्र	ब्रह्मा	ब्रह्मा	ब्रह्मा	अर्यमा	सूर्य	सूर्य
पुष्पदन्त	पुष्पदन्त	मित्र	ब्रह्मा	ब्रह्मा	ब्रह्मा	अर्यमा	सत्य	सत्य
दौवारिक	दौवारिक	इन्द्र	विवस्वान्	विवस्वान्	विवस्वान्	सविता	भ्रंश	भ्रंश
सुग्रीव	जय	भृंगराज	गंधर्व	यम	वृहत्क्षत	वितथ	सवित्र	आकाश
पितृ	मृग	भृंगराज	गंधर्व	यम	वृहत्क्षत	वितथ	पूषा	अनल

पश्चिम — पूर्व

नैऋत्य कोण — अग्नि कोण

दक्षिण

गोलार्ध के अनुसार दक्षिणावर्ती/ वामावर्ती सोपान का निर्णय

समराङ्गणसूत्रधार ग्रंथ के १४ वे अध्याय के श्लोक क्रमांक १३ से ३० तक वास्तुदेवों का निघण्टु वर्णित है। तदानुसार देवताओं की प्रकृति का वोध होता है। अत: उक्त आश्रय से असुर या उग्र (निगेटिव इनर्जी वाले) पद निम्न लिखित हैं।

1. भृश (मन्मथ), घर्षण 2. वितथ (कलियुग पुत्र) 3. यम। 4. भृङ्गराज (नैऋति नामक राक्षसी का पुत्र) 5. पितृ 6. शोष (शनि) 7. पापयक्ष्मा 8. रोग 9. विवस्वान (मृत्यु)

शेष ईशानादि अन्य 36 वास्तु देवताओं के पद धनात्मक ऊर्जा के स्त्रोत हैं।।

उत्तरी गोलार्ध के देशों में – उपरोक्त उल्लेखित 9 असुर/ अशुभ पदों पर दक्षिणावर्ती/ क्लाँकवाईज सोपान वनाना चाहिये। अन्य शुभ पदों पर वामावर्ती/ एन्टी क्लाँकवाइज सोपान वनाना चाहिये।

दक्षिणी गोलार्ध में – (उत्तरी गोलार्ध के विपरीत) असुर पदों में वामावर्ती तथा शुभ पदों में दक्षिणावर्ती सोपान वनाना चाहिये।

असमान भुजाओं एवं विदिशा भूखण्डों पर पद विन्यास

वास्तु का मूल आधार दिशाऐं हैं। वास्तु देवताओं का स्थान दिशाओं में है। दिशाओं को कोणीय अंशों में नापा जाता है। पिछले पृष्ठ पर जो वास्तुपद विन्यास चक्र दिया है, वह निम्न लिखित विशेषताओं वाले भूखण्ड पर शुद्ध होता है।

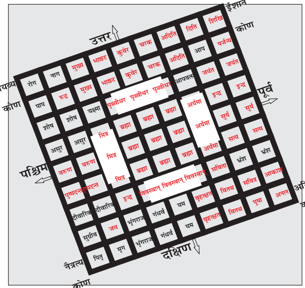
(1) पूर्वादि दिशाऐं भूखण्ड की भुजाओं के मध्य में हों। एवं

(2) भूखण्ड चतुरस्त्र (वर्गाकार) हो। यानि लम्बाई–चौड़ाई बराबर हो।

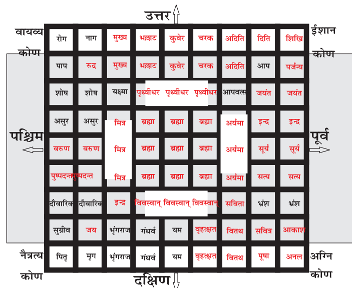
उक्त दोनों शर्तों में से किसी भी एक शर्त के अभाव में, प्रचलित चौकोर पद विन्यास पद्धति से विन्यास करने पर वास्तु देवताओं की भूखण्ड में वास्तविक स्थिति प्रदर्शित नही होती है। अत: यह गंभीर अशुद्धि होती है। त्रिकोणमिति के सामान्य जानकार इस तथ्य से भलीभांति परिचित हैं। इस त्रुटि का प्रदर्शन चित्र द्वारा किया जा रहा है।

चित्रों से स्पष्ट है कि प्रचलित पद्धति से किया गया पद विन्यास पूर्णत: अशुद्ध होता है। अत: विदिशा, झुकी हुई दिशा एवं असमान भुजा वाले भूखण्डों में शुद्ध वास्तुपद विन्यास हेतु हमारे वास्तु ग्रंथों में **वृत्तवास्तु विधान** का स्पष्ट निर्देश विद्यमान हैं। इसका वर्णन आगामी पृष्ठ पर दिया जा रहा है।

यदि भूखण्ड वर्गाकार तो हो,
लेकिन दिशा में झुकाव हो



यदि भूखण्ड की दिशा ठीक हो,
लेकिन वर्गाकार न हो



ज्यामिति Geometery गणित द्वारा वृत्त वास्तु विधान

– **अथोच्यते वृत्तवास्तुर्वृत्तप्रासाद हेतवे।** समराङ्गणसूत्रधार–द्वादश अध्याय, श्लोक 13

भवार्थ – अव गोलाकार प्रासादों–भवनों, मंदिरों के लिये वृत्तवास्तु कहा जाता है।

– देवता पद संक्षिप्तिरनयोश्चतुरश्रवत्।
एवं कार्यवशात् कार्या वास्तवो–अन्ये–अपि धीमता।।
समराङ्गणसूत्रधार–द्वादश अध्याय, श्लोक 19

भवार्थ – उक्त (वृत्तवास्तु) विन्यासों में चतुरस्त्र वास्तु के अनुसार देवताओं का विन्यास करना चाहिये। बुद्धिमान वास्तुविद् को इसी प्रकार अन्य कार्यों के लिये वास्तु न्यासों की कल्पना करना चाहिये। अन्य कार्य आगे के श्लोक में कहे जा रहे हैं।

– त्र्यश्रे षडषे चाष्टाश्रे, षोडशाश्रे च वृत्तवत्।
वृत्तायते–अर्धचन्द्रे च, वास्तौ पद विभाजनम्।। समराङ्गणसूत्रधार–द्वादश अध्याय, श्लोक 13

भवार्थ – वृत्तवास्तु त्रिकोणीय, षडकोणीय, षोडषकोणीय एवं अर्धचन्द्राकार भूखण्डों में प्रयोजनीय होता है। आशय यह है कि, वर्गाकार एवं शुद्ध दिशा के भूखण्ड को छोड़कर अन्य सभी प्रकार के भूखण्डों के लिये **वृत्तवास्तु पदविन्यास** करना चाहिये।

८१ पद वृत्तवास्तु विधान

81 पद का वृत्त वास्तु विन्यास बाहरी परिधि में 32 पद होते हैं। प्रत्येक पद 360 / 32 = 11.25 अंश का होता है। दो–दो पदों को मिलाने पर 22.5 अंश का एक क्षेत्र (वास्तु जोन) होता है।

इसी प्रकार कम्प्यूटर द्वारा ड्राइंग की साईज से वृत्त वास्तु पदों का विन्यास करना चाहिये। यह विधि निम्न लिखित एवं आगामी चित्रों से स्पष्ट है।

ज्यामिति Geometery गणित द्वारा वृत्त वास्तु विधान चित्र

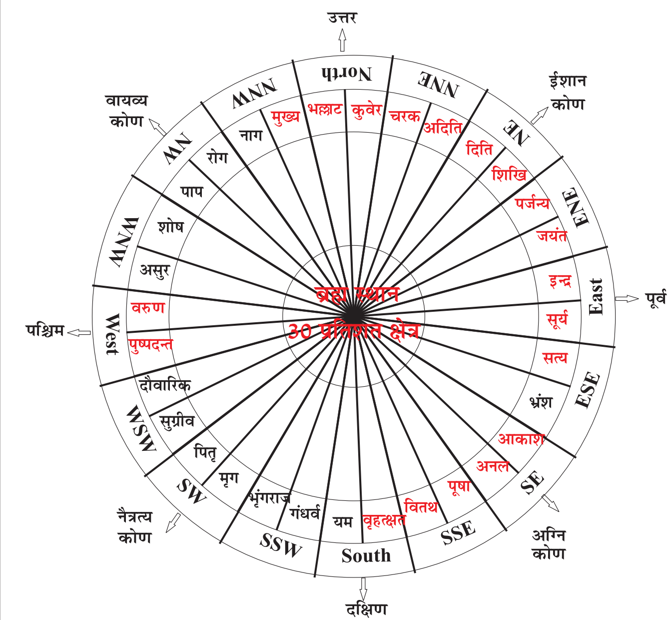
रोग	नाग	मुख्य	भल्लाट	कुवेर	चरक	अदिति	दिति	शिखि
पाप	रुद्र	मुख्य	भल्लाट	कुवेर	चरक	अदिति	आप	पर्जन्य
शोषे	शोषे	यक्ष्मा	पृथ्वीधर	पृथ्वीधर	पृथ्वीधर	आपवत्स	जयंत	जयंत
असुर	असुर	मित्र	ब्रह्मा	ब्रह्मा	ब्रह्मा	अर्यमा	इन्द्र	इन्द्र
वरुण	वरुण	मित्र	ब्रह्मा		ब्रह्मा	अर्यमा	सूर्य	सूर्य
पुष्पदन्त	पुष्पदन्त	मित्र	ब्रह्मा	ब्रह्मा	ब्रह्मा	अर्यमा	सत्य	सत्य
दौवारिक	दौवारिक	इन्द्र	विवस्वान्	विवस्वान्	विवस्वान्	सविता	भ्रंश	भ्रंश
सुग्रीव	जय	भृंगराज	गंधर्व	यम	वृहत्क्षत	वितथ	सवित्र	आकाश
पितृ	मृग	भृंगराज	गंधर्व	यम	वृहत्क्षत	वितथ	पूषा	अनल

(1) १६ जौन वास्तु चक्र से स्पष्ट है कि, आयताकार भूखण्ड पर कुछ जोन का क्षेत्रफल बहुत ज्यादा और कुछ का कम होता है। इसलिये वास्तु ग्रंथों में प्लाट की चौड़ाई से उसकी लम्बाई दुगने से अधिक का निषेध किया है। लेकिन यदि एसे भूखण्ड पर सावधानी पूर्वक वास्तु देवताओं के क्षेत्रों का ध्यान रखते हूये नक्सा वनाया जाये तो दोष की संभावना नही रहती है।

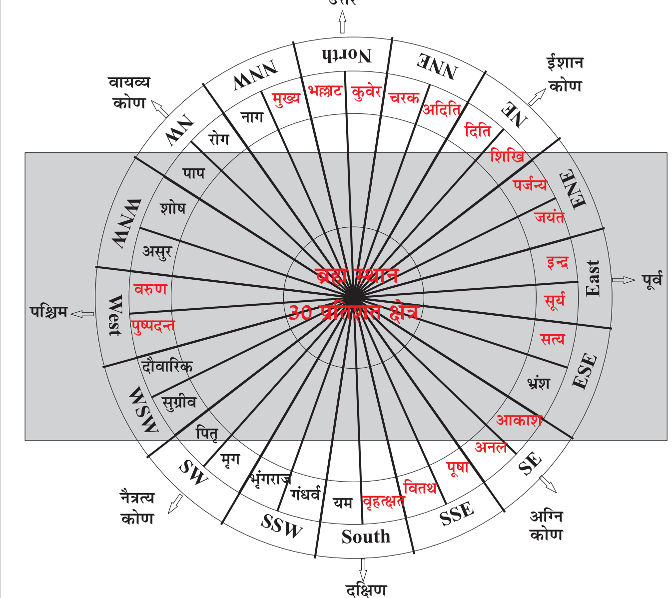
(२) सोपान के वारे में वास्तु ग्रंथों में न्यूनतम् विवरण उपलब्ध होने से समाज में सम्पूर्ण वास्तु नियमों की अनभिज्ञता देखने में आई है। सवसे ज्यादा भ्रम इस वात को लेकर है कि सोपान का आरोहण केवल दक्षिणावर्ती होना चाहिये। जवकि यह पृथ्वी के गोलार्ध एवं वास्तुपदों पर निर्भर है। इसके निर्धारण में मरुद्‌गणों का महत्वपूर्ण योगदान है। वेद वाक्यों एवं चक्रवातों के विज्ञान से इसभ्रम का निवारण किया गया है।

(३) दूसरा भ्रम मुख्य द्वार के निर्धारण में प्रचलित पद्धति (भूखण्ड की भुजा की लम्बाई में 9 का भाग) से करने का है। यह विधि केवल चतुरस्त्र (वर्गाकार)एवं शुद्ध दिशा के भूखण्ड हेतु ही होती है। विदिशा एवं वर्गाकार को छांड़कर अन्य सभी प्रकार के भूखण्डों हेतु प्राचीन वास्तु ग्रंथ समराङ्गणसूत्रधार के अनुसार वृत्तवास्तु चक्र से वास्तु पदों का स्थान निर्धारित करना चाहिये।

समराङ्गणसूत्रधार ग्रंथ के अनुसार 81 पद का वृत्तवास्तु एवं 16 वास्तु जोन चक्र



असमान आयताकार भूखण्ड पर 81 पद का वृत्तवास्तु एवं 16 वास्तु जोन चक्र



पंचांग की प्रमुख विशेषताऐं

- ➡ विद्वानों की सलाह के परिपालन में प्रतिदिन नक्षत्र चरण का समाप्ती काल दिया गया है।
- ➡ प्रतिदिन के 51 से अधिक प्रकार के मुहुर्तो को शोधित कर दिया गया है।
- ➡ विवाह मुहुर्तो में परिहार सहित विवाह मुहुर्त भी लिखे जा रहे हैं, इससे विवाह मुहुर्तो की संख्या में वृद्धि हुई है।
- ➡ प्रतिदिन पृथ्वी पर अग्निवास, ग्रह मुख आहुति एवं शुभ शिव वास का शोधन कर दिये गये हैं।
- ➡ पाठकों की सुविधा के लिए किसी भी एक विषय से संबंधित विषय–बस्तु एक साथ रखी गई है, जैसे मुहूर्त्त खण्ड में केवल मुहूर्त्तों से संबंधित विषय सामग्री एक साथ दी गई है।
- ➡ भारतीय मौसम विज्ञान विभाग, भारत सरकार द्वारा स्वीकार्य वेध सिद्ध दृश्य ग्रह गणित से तिथि नक्षत्रादि का समय, दृश्य अयनांश एवं धर्मशास्त्र सम्मत विधि से पंचांग का निर्माण किया गया है।
- ➡ व्रत–पर्व–त्योहारों के निर्णय हेतु विभिन्न शास्त्रों एवं पुराणों का विस्तृत संदर्भ दिया गया है, इससे विद्वान पाठक स्वयं व्रत–पर्व का निर्णय करने में सक्षम होंगे।
- ➡ भारतीय स्टेंडर्ड टाईम में पंचांग का निर्माण होने से तिथि, नक्षत्र इत्यादि के घंटा मिनट समाप्ती काल में स्थानीय समय संस्कार करने की आवश्यकता नहीं है। इसलिये यह पंचांग सम्पूर्ण भारत में उपयोगी है।
- ➡ २१ से २८ अक्षांश के मध्य स्थित समस्त स्थानों केलिये पृथक- पृथक मध्यम सूर्योदय एवं सूर्यास्त काल तथा लग्न सारणियां दी गईं हैं।
- ➡ जन्म कुण्डली निर्माण हेतु विशेष विषय सामग्री संग्रहति की गई है।
- ➡ दैनिक उपयोगी ग्रह शान्ति कर्मकाण्ड हेतु आवश्यक विषय सामग्री दी गई है।
- ➡ इस पंचांग की विषय सामग्री में विद्वान पाठकों की आवश्यकता एवं सलाह के अनुसार
- ➡ परिवर्तनशीलता है।

हरिद्वार कुंभ पर्व -पद्मिनी नायकं मेषे,कुंभ राशि गते गुरौ। गंगा द्वारे भवेद् योगः,कुंभ नामा तदोत्तना।।

प्रयागराज कुंभ पर्व- मेष राशि गते जीवे, मकरे चंद्र भास्करौ। अमावस्या तदा योगः, कुंभास्व तीर्थ नायके।। मकरे च दिना नाथे, वृष राशि स्थिते गुरौ। प्रयागे कुंभ योगो, वै माघ मासे विधुक्षये।।

नासिक कुंभ पर्व - कर्के गुरुस्तथा भानुश्चंद्रश्चंद्र क्षये तथा। गोदावर्या तदा कुंभो जायते अवनि मण्डले।।

उज्जैन कुंभ पर्व -मेष राशि गते सूर्ये, सिंह राश्या बृहस्पति। अवंतिकायां भवे कुंभ:,सदा मुक्ति प्रदायकः।कुंभ स्थली महाक्षेत्रं, योगिनां स्नान दुर्लभम्। माधवे धवले पक्षे, सिंहे जीवे अजे रवौ।। तुला राशौ निशानाये, पूर्णायां पूर्णिमा तिथौ। व्यतिपाते तु संजाते, चंद्रवासर संयुते।उज्जयिन्यां महायोगे, स्नाने मोक्षं वाभुयात्।।